

نام كمّاب: فجلبات صغود (جلد عشم)

مصنف : مولانا محداثين مقدرا دكاز وي رحمه الله

مرتب : مولاناهيم احمد صاحب

عدثل جاموتج المدادش لمكان

کمپوزر: حافظ محرنعمان حا<u>م</u>

ناشر : كتبه الداديه، في بي ميتال رودُ ملاكان، بإكستان

+ :: ={0}@**(0}=:: +**

ملنسسے کے پتی

مکتیدر مهانی، ارده باز ارلابور کتب خاندرشیدید، داجه باز ارراو لینذگ

مكننة العلم، اردو بازار لاجور اسلامي كتب خانه ارود بازار لاجور

فهرست تجلياتِ صفدر

(جلد ششمر)

| صفحه | مضامین | لعيرشمار |
|------|---|----------|
| ir | اشتهار" نظير نماز كاجواز" پرايك نظر | t |
| IA | 🖈 داؤدفر نوی کا جواب | i . |
| IA | الله ميال نذ برحسين كاجواب | |
| 19 | الله محد شرف الدين شاكر وميال مذير مسين كافتوى | |
| 19 | الله فيرمقلدين ك في الاسلام ثناءالله امرتسرى كافتوى | |
| 19 | 2350373584× \$ | |
| r. | اللهُ وَاطِيْعُوا اللَّهُ وَاطِيْعُوا الرَّسُولِ ﴿ | |
| r. | PKin to | |
| rı | الله محدثين كاتوال الله الله الله الله الله الله الله ا | |
| rr | 🛠 محداسا ميل سافي كافتوى | |
| rr | الله الماعت قرياه المن حديث كافتوى | |
| rr | رسالهٔ "سورة فاتحداوراحناف" پرایک نظر | r |
| ro | 🖈 ءرة فاخر کی حیثیت | |
| 14 | الله عديث رسول موالية عن فير مقلدين كافريب | |
| PA | الله خداع | |
| ra | الله اصطلاعات | 100 |

| + | خالد گرجا کھی اور جز مرفع یدین (۱) | rr |
|---|--|-----|
| | S1. ★ | rr |
| | P 12 | rr |
| ۴ | خالد گرجا کھی اور جز مرفع یدین (۲) | ۴. |
| | జేరంగ ∻ | rr |
| ۵ | منكرين حديث كے بخارى پراعتراضات كے جوابات | 64 |
| | الله عديث ومنت كيا ٢٠٠ | m |
| | الله عنت کی حفاظت | M9 |
| | الله الله مدين | ۵٠ |
| | الله ويشاب بين كالقلم | 4. |
| ۲ | دساله صراط متنقيم برايك أظر | 41 |
| | الله المنظمة المناطقة | 40 |
| | این طریق انتحان | ۷٠ |
| | الله فاتح فظف اللهام | 41 |
| | UZT 12 | 21 |
| | الله ين اليدين | ۷۵ |
| | Sit to | 22 |
| | र्शास च | 29 |
| 4 | جواب مكتوب مفتوح مفتى عبدالزمن | ٨٢ |
| | الله حالم مناظر | AC. |
| | الله وومراشوق | NΥ |

| 14 | 🕁 سائل مناظر | |
|-------|--------------------------------|--|
| AA | الله المادي | |
| qi | اجتبادی مسائل کون کون سے ہیں؟ | |
| 9r | الله طریق اتحان | |
| 90 | بن وسور فمبر (١) اوراس كاازاله | |
| 90 | الله يبلافريب | |
| 94 | الله مطاق تقايد كاعتم | |
| 9.0 | الله تقديقتي | |
| 9.4 | الله دورافريب | |
| 99 | الله تيرافريب | |
| 99 | الله على متعلق موالات | |
| 1-1 | 🖈 ومور فمبرا داوراس كا ازال | |
| 1.7 | المن وموسرتيس اوراس كالذال | |
| 1.0 | الله مفق صاحب بيندسوالات | |
| 1-0 | عند وموسرتين اوراس كالزال | |
| 1•A | الله وسورتيره اورال كازاله | |
| 1•4 | ولا وموسفيرة اوراس كازال | |
| 1.9 | الله وموسقيرك اوراس كالزال | |
| III | الله وموسر فير ٨ اوراس كالزال | |
| nr i | الله وموسقيره اوراس كازال | |
| nr nr | بنان وموسقبره اوراس كالذال | |
| II4 | الله وسرتبراا لموراس كاازال | |

| 114 | الا وموسر فيمراد الدائل كالذال | |
|-------------|--|----|
| HA | الميت ومورفيراً الدراس كالذال | |
| 04 | 🖈 وموسفيرا اورائ كااذال | |
| 11. | ين وسيستنبرها اودائ كااذال | |
| J rr | الراداد | |
| Itr | المناز والمراجع الودائل كالفرائد | |
| IFF | 🕸 صرف امام المقم صاحب كي تتليد | |
| IFF | المئة والوسرقيم عا الدائل كالمؤاف | |
| IFO | الله وجووز في شرك بولت اوراتحاد | |
| (AT-ITA) | 🕸 وموسفيريما تا وموسقيم من اوران كا اذال | |
| 102 | 😭 آهراداواديث | |
| 104 | ن وورفيره تا وورفيروه اودان كالال | |
| 174 | عله وسوسيتمره ۵ أوداس كاازال | |
| 144 | كاب مورى كمصلى قانون البي اور قانون في ارتظر | A |
| IA+ | حضور پر جموت کیوں؟ (کیا مدیث میں کہتی ہے) | 9 |
| IAT | غيرمقلدين سيسند ي متعلق سوالات | 1+ |
| IAZ | اخراد بواور خدمت دين | ıı |
| 18.8 | یه علی سند والجماعت کے باب دائل شرعہ جاریں | |
| 14+ | s والکی المرح مسائل کی بی چارتشیں ہیں | |
| (9r | المركان كالمام ماكل اجتباديك المواد | |
| | | |

| 197 | الله سوال: حضور كي وقات اور الندار بعد يك ورميان والعرصه | |
|------|--|------|
| | ين مسلمانون كامسلك كيافقا؟ | |
| 194 | الله دور مصطفوي | |
| | | _ |
| r | الله (درمدیق" | |
| r | ا مرافروق* | |
| r+1 | الله ودور مثاني "ودور مراستوي | |
| r•r | الله المحاركة الم | |
| r•r | الله علاسة على الله الله الله الله الله الله الله ال | |
| r.r | الله الشخ السنر بن عبد السلام | |
| r.r | الله شادولي الله | le l |
| r•r | المام الحريين | |
| ror. | الله المام و في | |
| r•1" | - 12 Feb. 92 | |
| r-1" | 1182 A | |
| 1.0 | الله الاعتناخ ليقيل | |
| r•0 | ¥ ★ | |
| 1.4 | 100 100 | |
| r=2 | الله موال و التعام مع ك بعدائد كى فرورت كون محسول يونى؟ | |
| ri- | الله موال ٣٠ النافتد كرام كاورجيك في تفويض كيا؟ | |
| rii | الله موال ١٠ ان كوافقه كبلاغ كاماس مطركيا تقا؟ اوركيا اس كر بعديه Institution فتم يوكيا | |
| FIT | غيرمقلدين كودعوت فكروعمل | 11 |

| | الله تنايد كاتويف | 717 |
|-----|---|-----|
| | الله معرفت وليل | FIT |
| | الله تعليدكاتكم الله الله الله الله الله الله الله الل | 114 |
| | الله البوت تقلير شعني | rrr |
| | الله الله الله الله الله الله الله الله | rry |
| | الله الله المحتدر اوت | rry |
| | الله تقليد تحص | rr2 |
| | الم الله الله الله الله الله الله الله ا | tro |
| 11- | غيرمقلدين كاكارنامه | rra |
| 10 | غیرمقلدین کی سنت نبوی کے واضح وشنی | rei |
| | م بنه سنت نبوی کاطریقه | rrr |
| | الك بزادره پيدانعام | rrr |
| | الله فقيارا حناف كوكاليال | rra |
| | الك ياد تجات يا مخ ك ك الخد الك ياد تجاست يا مخ ك ك الخد | tra |
| | مرا کے گالعاب، بیٹاب، پاخانداور ٹون چاروں کا ایک بیالہ آپ کی نظریں | ro• |
| | اللارنفاس من المازمعاف | rai |
| | الله الحير مقلدين كي سنت نبوي عن واضح وثنتي | ror |
| | الله الجمن الل حديث إكتان سنة و كومنائ ك لئة بنائي كلي | ror |
| | 🛊 نماز ميد وقر باني ش احناف پرستم ظر افي | ror |
| | الله الجمن الل حديث علم حديث عكوري ب | rar |
| | الله الدها الخزير المك كى كان من كركر فلك بن جائة علال ب | POT |

| | الله منليكاهل وجواب تلاش كري | 101 |
|-----|---|---------|
| | عد بادعائل وخول سے پہلے شمل فرض فیس ہوء | 104 |
| | الله المازيد على الله الله الله الله الله الله الله ال | ron |
| 7.0 | اهاب ببيدر باتفاءتب مجى فماز جائز ب- | LCST IV |
| | が 発生しょりがなり | 109 |
| 10 | آیک غیر مقلد اور حقی کے درمیان دلیپ ماناقات (مفرورت فقد پر) | 441 |
| 14 | نام الل حديث پرولچىپ مكالمه | r+r |
| 14 | متارقر أت اور ينتخ بازيال | r•A |
| IA | نام نبادال حديث في بالكبيرة يات قدب كاجد كاكرويا | ric |
| 19 | دور برطانييس وال النة والجلمة عليحده بوف والفرق | 112 |
| r- | عبداللدرويزي كقرآني معارف | rr. |
| | الله يوي كي مقلب | rrr |
| | 13.50 \$7 | rr |
| | الله معارف قرآن | rrr |
| | الله عورتون كوخاص أفيحت | rrA . |
| rı | معودی فتنے بے دلیل سوالات کا دلائل شرعیہ سے جواب | ٠٠. |
| rr | برأة ابل حديث پيرجينڈا | rr |
| | الله تفارف بين مبتدا | rr |
| | الله مجلى عالات | - |
| | 🖈 فرد کی ابتداء | 2 |
| | الأراك والجماعة | +1 |

| rry | عائد الحي قرآن |
|-----|--------------------------------|
| rrz | الله المن صيف |
| rra | الم محرفة الم |
| rer | الله والوت برأة المل حديث ثل ب |
| ree | الله محمري بماحت |
| rrr | الله مكمديد |
| rra | ئة امتيا <i>ن كريجي</i> |
| rra | A 12 |
| rry | الله ولايديت |
| FFA | الا جات |
| FFA | 2h # |
| rrx | اين وسول كالذبب |
| rra | الله جبال كا تجا |
| ro. | الله غرب شقى |
| ro. | المناز والإيشار كالفظ وكصادو |
| Pai | 3,7,7 U to |
| ror | * PV-18" \$\$ |
| ror | الله الأمني الإيوسات |
| ror | 40% 100 |
| ror | الم مغيان بن جيية |
| ror | الله منت اورافل حديث |
| raa | الله المشين كوني |
| roy | ع تجريف قرآن ع |

| | 🖈 بشن و یو بنداورگاندگی | -01 |
|----|---|-----|
| | 🖈 اصول کرخی | -09 |
| | ئە ئەيلىكى شال ئە | -29 |
| | J#3 5 20 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 | -09 |
| | J& 5 \$ \$ \$ | 4. |
| | الأسل الأسل | 4. |
| | 🕸 سنوغ کی مثال | ٠4٠ |
| | الله معارضة كي مثال | -41 |
| | الله عاويل كي دوسرى مثال | .41 |
| | 🖈 تدوين فقة شخى | 71 |
| | الله الل مكد عفر يب كي بدر ين مثال | 70 |
| | الله عقمت قرآن الله الله الله الله الله الله الله الل | 77 |
| | الله المقرن عليث | 1A |
| | يني المام عبدالله بن ادريس | 4. |
| | الله محدثين كي كماب الصلوة | 4r |
| | 🖈 جيوني کوادي | |
| - | الله وي | 40 |
| | الله معود آلين | ir |
| | الله المتم فيوت | . ~ |
| | לגונינוני | -0" |
| rr | جواب برأة ابل حديث ييرجيندًا | 14 |
| | الله فقد يرامر اشات كربوايت | 22 |
| rr | موضوع من جانب ابل السنة والجماعت (مسئلة تقليد) | ٠4 |

| . — | . ———————————————————————————————————— | |
|-------------|--|-----|
| ?4 ₫ | شرائعة من ظرها بين الل السنة والبريات وفييز تلعه نينه (مسئوتة بيد) | ra |
| ۱۳۱۳ | انجیر مقلد میں ہے دین ہے تعلق امام سوالات | FY |
| MOVA | غير مقلدين عدوين ت متعمل وهم سوالات | 12 |
| 0113 | مبعوث کا بول کس گیر معموث کا بول کس گیر | *A |
| 577 | ارد العروبية في في مات بيامة الله ت المدين المراوبية ا | |
| 266 | 3,000 | - — |
| 377 | + + جدي کے درے من حقیق مق | +4 |
| 374 | ان مول هديول بالأص با | |
| _3^a | | |
| 26% | | |
| 23. | | |
| sar | | ——. |
| 00~ | - ان فيدان ش ان فيدان ش | |
| 254 | | |
| 003 | ر در خداین می از دیم | - — |
| <u> </u> | ي وازد درمان محمد فارد رو طالن درمان درمان محمد فارد رو طالن | - – |
| 241 | - از مقرت <u>- از مقرت و ا</u> | |
| 317 | | - |
| 244 | | |
| ے ۲۵ | از کیش و مزاخره | |
| 24: j_ | | |
| 34" | | |
| · | المقدمه الجين برنياس | . • |

I

 $\langle n^2 \rangle$

اشتهار" <mark>ننگے سرنماز کا جواز" پرت</mark>بسرہ

أسرال فالإنبال فإما

تخفذة وتعبلي على زشوله الكريم أثابعد :

جواب: اسلام سچا دین ہے۔ اہل المند والجماعة فرقہ ناجیہ ہے۔ وینا شن اس وسلاتی المرائی وسلاتی المرائی وسلاتی المرائی وسلاتی المرائی و انتقاد ان کا مش ہے۔ بیشت سے میل صدی بھی ہیں المرائی فرقہ پیدا ہو گیا۔ اس فرقہ کا ہر جابل اسپٹر آ ب کوسید اکا رسحاب اور اہل بیت سے بواوی ن دار اور برنا اس کم تحت تھا۔ اکا ہر مین کے تعاف بدگائی جمیلا نا ادر ان پر بدز بانی کر ہما ان کا وین و ایسان تھا۔ بیفرق کانی عرصہ الل سنت کے لئے در وسر بنا رہا ، آخر مت من شمیا۔ انگر پر انتقاد میں شرعہ میں انتقاد کے اللہ ویسان کے انتقاد کے اللہ دوسر بنا رہا ، آخر مت من شمیا۔ انگر پر انتقاد جمید ملک ہندہ متنان کئے کیا تو اس فرقہ کا ایک بر ایڈیشن تیار کیا ورائی کا مرائی

مدیث رکھ دیا۔ اسمالف کی فیبت ، کھ یکٹی ، ان سے بدکھائی ، ان ہر جدلیائی ، ان سے خلاف بغض، حسد، كيند يميلانا وان مب برائيون كالامثمل بالحديث وكعاب ادرجر فيك کام کے بارے علی وہوے کھیلانا ، لمالی کوکہنا کہ ٹیری فماز فلد ہے، جعد فلد ہے، جنازہ فلا ہے ، موسمن کوکہنا کہ ٹیرا ایران فلا ہے ، سلم کوکہنا کہ ٹیرا اسلام فلا ہے ، حاتی كوكينا كرتيران كلاب، اورمسلمانول على قتة والناس فرقة كامش ب، إلى فرق ف مساجد کو عبادت گاہ کی بھیائے میوان بنگ عاکر دکا دیا ہے۔ بیفرق اگری سے پیواکیا، اس کے زیر سابید یا؛ بوحا اور صاحب اوا و ہوا۔ نیچری، منظرین مدیث اور مرزال اس ك عن فتر برور سے بيد ابوے قرآن إك شي جرآيات كفارك ياد سے مي كالل ہو کی ان کو ائلہ وین برنٹ کرنا اور قرآنی ختابہات سے مسلمانوں کے واول میں وسوسد والناان كي قرآن والى بيدمنن عليه سنول كومنانا اور النف فيدروامات عن مسلمانوں کوٹڑانا ان کاعمل بالحدیث ہے۔ ان سے دری قرآن شری فقیا ، اسلام کا تستوہ ان كا درى مديث موفيات كرام كالمتبيزاء، ان كى برميدا خلاني اشتبادات بي بداده ان کا جالی دین کے سیاکی بھی دموسے ڈالنے کا امام ہے۔

مشتبر کا بیکن کرفراز علی سرؤ حافکنا شرط نیس۔ ہم بی چینے جی کہ آ پ کے نہ ہب علی نماز کی کل کتی شرعیں جی ؟ بیفرقہ اپنا کوئی شبت پروگرام نیس دکھتا۔ اہل مند جس کوشرط کیس سے بیان کے شرط ہوئے کا افکاد کردے گا۔

(۱) ہل سنت نے کہا کرفماؤی کا بدن پاک ہونا شرط ہے۔ تواب صدیق صن خان نے کہا کہ تحد رویدن سے پڑھی موئی نماز باخل ٹیں۔ (بدورالابلہ ص ۲۸) (۲) ہل سنت سے کہا کہ نایاک کیڑوں بھی تمازی تھیں۔ بھرفورائس نے کہا کہ نایاک کیزوں بھی نماز سے ہے۔ (عرف الحادی میں ۲۲)

(r) الل منت نے کہا کدنماز کی جگہ کا یاک ہونا نماز کے مجھے ہونے کے لئے شرط

ب، أنبول نے كہا كرجك كاياك بونامحت فماذ كا ترمائيل ۔ (عرف الحادي ميس) (٣) الل منت في كياك تفي يوكر فعاد مج جين رأنيون في كياك فعاد عن شرم كار

آگی دیے تو نماز میچ ہے۔ (مرف الحادي ص ۴۶)

 (۵) الل سنت نے کہا کہ وقت ہے پہلے نمازنیں ہوئی۔ انہوں نے کہا کہ عمر ك ونت ف بالم كميان موقو عصر كما تماز وقت س يميل يزعالور

(((لوی کا کے جائیں اس)

(1) الل منت كيتے جي كه لماز كے لئے نيت شرط ہے۔ يدمب بغير نيت كے زماز

ياست بيساعاد جموت يوسلت بيس كرجم نيت كرع بيس جوفير متلد يرجموت يوسي

أست فوراً كانذ بنسل وو كونكسوتم ول شي كيا نبية كرية بور مثلاً فرض بإهنا بول يا

سنت ادا تماز يزمنا بول يا فغنا وتها يزمنا بول يا اقداء على رظير يزمنا بول ياعمر؟ ج

تھے، اب کہ برحدیث علی بکھاؤ۔ وہ شنیت تھے گانہ حدیث علی دکھا شکہ گار جب

اس كونيت آتى عاكل قوم كري كاكر ؟ اس لخ ان كى يلانيت لما زيحت ياطل بــــ

(۵) افل سنت منی خون وفزر اور شراب کونایاک کیتے ہیں۔ انہوں نے مند میں

آ كران مب كوياك كبيره يا_ (نزل الايران خ/ص٣٩)

ہم مشترصاحب ہے ہو ہے ہیں کرکیا لماز کی محت کے لئے سرزی کرنا آپ کے ال شرط ہے؟ ہے تو ذراویل ارشاد فرما کیں۔

مشتهر صاحب سنة سارا إشتهاد اس جعوث كى بنياد براكها ب كرايل ملت مر

ذھا تکنے کوفراز کی شرط کتے ہیں اور چھے شرم گاہ کے لگے تو نے سے نماز کو باطل قرار دیے ہیں ، دیسے می نظیمر فراز کو باطش کتے ہیں۔ خود ایک جموٹ گھڑ نا ، پھر فاسے اہل سنت ک ذر رنگا کر اس کی تر ، یوکر ٹا اور اپنے گھر میں مناظر اسلام میں بیشنا ان کے مواد اول کا کے انا شعار ہے۔

مشتبرها حب الرابل منت كي كابون سے جالى تقاق كم ازكم اسط فرق كي اسٹاپ ہی ایکھ کینے۔اس قرق کے بیر سرکزیہ جمعیت اہل حدیث مولوی جمرا ٹامیش ملفی فَرِياتَ مِن السر جِنْكِ بِالأَعْلَقِ العنبائِ سرَ بِمِنْهِي اللَّهِ لِلْحَالَمُ مِن وقت تَظْهِر نماز میر حمی جائے قو نماز بادا تفاق جائز ہوگی واس کے سنے شد بحث کی ضرورت سے نہ اجادیث کی ٹول کی ضرورت رالیکن اسے عادت ٹیمل بٹانا جائے ۔ امام اگر نماز کے بعد ہاؤں آ سان کی طرف کرے یا مقدی کوئی ایک مرکت کریں تو مدیث میں اس ہے ز کاٹ ٹابت ٹیں ہوگی بیٹن مقل مندالیا کرنے سے پر بیز کرے گا۔ تھے سرکی مادت جی قریباً اسی نومیت کی ہے۔ جو زے یا دہودائی عادات مثل وقیم کے خلاف ہیں۔ عمل مندادر مندي أوي كوال ب يريز أرنا جائيند أنخفرت المنظمة اسخابة الدائل علم كاخريق وي ب جوب يك مساجد عن متوارث اورمعمول بها ب- كولى مرفوع حدیث تھنج میری نظر سے نبیس گزرق جس ہے اس عادت کا جواز کابت مور نصوصاً بابر عند فرائعل بي بلك عاديت مبارك بي تمي كه يوريده لباس بيد فماز اوا فريات.

عام ہ بین کے لوگوں کو اس حتم کی صدیت سے تسطی گئی ہے کہ ایک کپٹر سے بیش شماز اداکی جائے قو سر چھار ہے گا، حالاتک ایک کپٹر سے واٹسر پوری طرح پیٹا جائے تو سر ڈسکا جا سکتا ہے۔ اس مشمون کی اداو بھے آم بانی "وابو بربرتی، جابر میں عبداللہ مسلمہ بن

الا كوع "مترين الي سلمة، طلق بن على وغيره _ يحج بغاري، سنن ابودادٌ دوغيره دواوسن سنت میں موجود میں (جوشتیر نے بھی اکشی کی جن) لیکن کمی میں سرنگا رکھے کا ذکر نہیں ،خصوصاً جس میں عادت یا کثرت عمل ثابت ءو (اس کا کسی حدیث میں اشارہ تک نہیں) کچراحادیث میں آئخضرت ﷺ کے ارشادے (صرف یہ) خاہر ہوتا ہے کہ (ایک کیڑے میں تماز بڑھنے کی) بیصورت یا تو صرف اظہار جواز کے لئے ہے (بیسے لڑکی کو ثماز میں اُٹھانا، فماز پڑھتے ہوئے درواز و کھولنا، قماز پڑھتے ہوئے متبر پر چڑھنا آمرٌ نا، نماز میں تکھیوں ہے ادھر أدھر دی کچنا، وضو کے بعد بیوی ہے یوں و کنار کرنا، روز ہ میں بیوی سے مباشرت کرنا وغیرہ) یا کیڑوں کی کم یانی کی وجہ ے۔ ان طالت سے جواز اور اباحت تو ثابت ہو علق ہے مگر سنت اور استحیاب خلا ہزئیل ہوتا۔

غرض کی بھی مدیث ہے باا عذر نگے سر نماز کی عادت افتیار کرنا ٹابت نہیں۔ تحض مے ملی یا بھلی کی ویہ سے بدروائ بوھ رہاہے، بگا۔ جبلا وتو اے سنت بھنے کھے ہیں،العماد باللہ کیٹر اموجود ہوتو نگے سرنماز ادا کرنا یا ضدے ہوگا یا قلت مقتل ہے۔ متعمد یہ ہے کہ سم نگا رکھنے کی عادت اور بلا وجہ ایسا کرنا اجھافعل نہیں ہے۔ یہ مل فیشن کے طور میروز بروز بردھ رہاہے، یہ اور بھی نامناس ہے۔ ویسے یہ مسللہ سکابوں سے زیادہ مثل وفراست ہے متعلق ہے۔ اگر اس جنس لطیف ہے طبیعت محروم نہ ہوتو تنگے سرنماز ویسے ی مکروہ معلوم ہوتی ہے۔ ضرورت اوراضطرار کا باب اس ہے (فاَوِيُ على عَريث عهم/ص٢٨٩) ووسر اجواب: عظے سر نماز ہوجاتی ہے، سحابہ ہے جواز ملتا ہے تکر بطور فیش لا پر وائ اور تعصّب کی بناہ پرمستقل اور ابدالآباد کے لئے بیدعادت بنالین جیسا کہ آئ کل

رهز لے سے کیا جارہا ہے اہمارے مزویک سیجے نہیں۔ نبی عظیفے نے خود رعمل نہیں کیا۔ (فَأُوكُ عَلَائِے حدیث رہے المراض (۲۸)

آ ب نے اوپران کے امیر جماعت اور شیخ الحدیث مولوی مجمد اساعیل سلفی کا مفصل فتویٰ بڑھا۔ اس فتویٰ کے جینے کے بعدان کے دوسرے امیر جماعت سید داؤ د غو ٹوی (جو اپو کمرغو ٹوی پائی جامعہ ابو کر گلشن اقبال کراچی کے والد میں) نے بھی اس کی مزید توثیق فرمادی فرمات بن:

داۇدغر نوى كاجواب:

ابتداء اسلام کو چیوز کر جبکہ کیڑوں کی قلت بھی اس کے بعد اس عاجز کی نظر ے کوئی الی روایت قیس گزری جس میں اصراحت نہ کور ہو کہ تی منافقہ نے یا سحایہ نے محد میں اور وو بھی نماز باجماعت میں منگے سرنماز پڑھی ہور چہ جائیکہ معمول بنالیا ہو۔ اس کے اس بررسم کو جو تھیل رہی ہے، بند کرنا جائے۔ اگر فیشن کی وجے نگے سرنماز يرهى جائے تو نماز كرده موكى - اكر تعبد اور خضوع اور خشوع و عاجزى كے خيال = برھی جائے تو یہ نصاری کے ساتھ تھتے ہوگا۔ اسلام میں تنگے سرر بہنا سوائے احرام کے تعبد باخشوع فحضوع كي علامت نهين اوراً كرمسل اورستي كي ويدس بهاتو بيه منافقون كَ الكِ طَلَقَت عِينَاكِ وَلَا يَأْتُونَ اللَّهِ وَهُمْ تُحْسَالِي. لِعِنَ اور ثمارُ كُواّ تِ بِس تو ست اور کابل ہوکر ۔غرض ہر لحاظ ہے یہ ناپسندید وقمل ہے ۔ فقط سیدمحمد داؤ دالغزنوی ، (فَأُوكُ عَلَمَا يَ حَدِيث جَ مَرَاس ٢٩١) ٢٩ يتمادي الاوتي ١٤٧٩ ه

ميال نذر حسين كاجواب:

میاں نڈ برحسین (۱۹۰۰ء) فرماتے ہیں: نو بی و نمامہ سے نماز پڑھتا اولی ہے،

کینک امرمسنون ب (فاوئی نذیرین انهم ۱۳۳۰) السدے تماز پر حن انظل ب کینک رمول الله ملکی اورمحالیہ اور من بعد هم سام طور پرای مرکی موجود کی بین المار سے ماتھ فاز پر معترضے ہوگی نماز ہو یا کوئی اور نمازہ حضور ملکی اور صحابہ اللہ میں باندہ کر فراز پڑھتے تھے۔ (فاوئی نذیرین میں میں میں ا

ابوسعيد تحد شرف المدين شاكردميان غذير حسين كافتوى:

ا ہوسعید محد شرف الدین شاگرہ میان نذ بر سین مدرسہ بلی بھٹی والی قرما کے جس ، پگڑی اور ٹوبلی قصد آ کار کرنماز پڑھن فلٹ ہے۔ پیشل سنت سے نابت تیس۔ (فَاَوَیْ شَائیہ بِنَ الْمِسِ ٥٣٣)

غيرمقلدين كي في الاسلام مولانا تناء الله امرتسري كافتوى:

نماز کا مسنون طریقہ وی ہے جو آخضرت ﷺ سے بالدوام کابت ہے۔ مینی بدن پر کیزا اور سر: حکا ہوا گجڑی سے یا ٹوپی سے۔ (فادی ٹائیٹ آ/ص۲۵۵) جامعہ الی بکر کراچی کے بانی سید الویکر غر ٹوکی کی تحریر:

جامعہ ابی بھر کرا ہی کے بانی سید ابی کر فرنوی تکھنے ہیں: ننگے سر تماز پڑھنا مولانا (داؤد فرنوی) کو بہت نا گوادگز منا تھا۔ مولانا کے ایک مقیدے مند ملک محر ریش صاحب مولانا کی موجودگی ہیں چیپانوالی ہیں بیٹھے سر لزاز پڑھنے سکے۔ تمازے فراقت کے بعد مولانا نے فربایا کہ ملک صاحب! ننگے سرتماز ندیز ماکریں۔

(داۋە ئزنۇى مىسىمىم جدايو كرغزنوي)

یہ آبادی میاں غام حسین میاں شرف الدین ، موادی گا والشد امرتسری ، موادی علامات مرتسری ، موادی عجد استاعین سنتی ، موادی واور خراوی اور موادی ایم کر فرانوی سے بیں۔ جن کا خلاصہ ب

ب كدمر ير مكرى يا نوني د كاكر نماز يزهنا امر مسنون هيد ني ياك مكلك ادرسخاب كا وائی ممل ہے۔ اُمت عمل متوارث اور معمول بہا ہے۔ نظے سر نماز جا اُڑ ہے مگر اس کو عادت بہتانا مکروہ ہے، تفت مقتل ہے، میسانیوں سے مشاہبت ہے ومنافقوں کی روش ے۔ الفرض برطرت تابیندید اے۔ بیسب فادی غیر مقلدین کے اکار کے ہیں۔ ان کے علاوہ علامہ وحیراتر مان نے بھی بھیریکسٹی نیکے سرنمازیز ہے کوکھرو والکھا ہے۔

﴿ كَنْزَاكُمْنَا نُنْ صِ عِلَا مِزْنِلِ الإيرارِيِّ الْإِصْ18)

أطبيعُوا اللَّهُ وَأَطِيعُوا الرُّسُولُ:

مشتهر نے ۔ دو جملے اشتبار کی میشانی پر ککھے ہیں، ماناکلہ بٹھے سرتماز کی عادت كانتكم الله تعالى في ليس ويا اورن عي رسول الله وكانته في عنه وياسداس فرف ك يدعادت ك ين أنى ب كد جب محل وين عمر كونى غلد مسكد بنا، وإسبع بين فو يهل اطبغوا الله وأطبغوا الرشول بزعالية إلى-الرفرق كابرقص ابيئة آب كوضاه رمول مجملة منيارة سيدان في بات كوند ما نين توحية سياكو خدا اوردمولُ كاستكر كهذا نثروت کرونل کے۔

الله تعانى كأتفكم:

ينسني ادم قدة أنولك عليكم لبات يُؤاري سُوُ الكُمْ وَربُكُ (١٩٠٦ اللافراف: ۴۶) اے اولاد آ وہ ایم نے تم بر لباس فتارا کہ تمباری ستر ہوتی کرے اور زینت(بخش) ہور

بیبال الفدتونی نے انسان کے لیس کی دونتھیں بیان قرما کیں: لیک ستر ہوشی کے لئے جو ہر ونت فرض ہے اور نماز کے لئے شرط ہے اور دومرالیاں جوزیہنت بخش ہو اور پُرتِمَ ویا: اے اولاو آوم! مُحلِدُوا زِنْیَتَکُمْ عِنْد کُلِّ مَسْجِدِ که بِرنماز کے وقت زینت (کالباس) مکن لیا کرو۔

ظاہر ہے جوزیت کرے گا، ستر پوشی پہلے کرے گا۔ صاف طور پر معلوم ہوا کرستر پوشی کے علاوہ بھی زینت کا تھم ہے۔ اور رسول اللہ عظیمی فریاتے ہیں کہ اللہ تعالی جس کو نعبتوں کا اگر بندے پر جس کو نعبتوں سے نوازیں تو اللہ تعالی پئد فریاتے ہیں کہ اپنی نعبتوں کا اگر بندے پر دیکھیں۔ (منداحم)

محدثین کے اقوال:

فیخ الاسلام این تیمیہ فرمات بیں: اللہ تعالی نے نماز کے لئے ستے مورت کے علاوہ ایک اور عم میں دیا ہا اور وہ ہا تھا لہاں پہنا۔ فرمایا: خیلوا زیست کی م عقد کئی منسجد اس کی سریدتا کید حضرت می کے اس قول ہے بھی ہوتی ہے جے صاحب مغنی نے ابن عبدالبر ہے نقل کیا ہے کہ حضرت می نے نافع کو دیکھا کہ ایک کپڑے میں نماز پڑھ رہے تھے۔ فرمایا: تم دو کپڑے نیس بین سکتے ؟ نافع نے مرض کیا: بی بال میں مال اور یہ جا جائے قوتم بین سکتا ہوں۔ پھر حضرت می نے فرمایا: اگر محط میں تمہیں کسی کے پاس بیجا جائے قوتم ایک کپڑے کہا ایک کپڑے کہا ایک کپڑے کہا ایک کپڑے کہا جائے قوتم ایک کپڑے کہا ایک کپڑے کہا جائے کہا تھا ہے کہا تافع نے مرض کیا کہ ایسا تو نہیں کروں گا۔ اس پر حضرت می ایک کپڑے کہا دیت کا ایک کپڑے کہا دائ کی حاضری کے لئے زینت کا لیاں پہنا جائے یالوگ اس کے زیادہ ستحق جی کہاں کی حاضری کے لئے زینت کا لیاں پہنا جائے یالوگ اس کے متحق جی ؟ نافع نے عرض کیا جیس حضور اللہ بی اس ک

(افتیارات این تیمیدی الص ۱۲۱ بحواله فآوی علائے حدیث جم/ص ۲۹۱) خوف: اسنن الکبری میں ہے کہ میر تفتیکو حضرت عبداللہ بن تمر اور نافع سے درمیان

جۇرغ*انىيات*

المام ، لکٹ نے جسولا بھی فرمایا ہے : اوگوں کو اس کی اجازے گیں ، بی جاسکتی کروہ ایک کیڑے نے بھی نماز بھا عند سے ساتھ بڑھیں ، چہ جا ٹیک ان کام مجد بھی اجازے وی جائے ، کیونک افضائق کی کا فرمان ہے کہ خوفوا ڈیٹنٹ ٹھٹے جنگ کی مشہول

مولا نامحمرا سوعيل سلقي كافتوى:

نابت موتا ہے کہ ایکھے کیڑوں کے ماتھر تجل سے قبار پڑھنا سنتھ اور سنون ہے۔ آیت مُحَفَّوًا ڈیٹنٹکٹم کے معمون سے بھی اس کی وضاعت ہو جاتی ہے۔ (فَادِنْ عَلائے مدیدے نے سامی 1884)

جماعت قرباءابل حديث كافتوى:

مولان البدالفارسادب نائب سفق تخدة الفنغا الاسلامية بناعت غرباء بل حديث كرابك فرمات مين: توفي يا محاسب كرم توزماز بإحنا اولى اور المعل ب كونك غربي اور محامد باعمة زيب وزينت ب- (فلادى مزريدج مهام ٥٠٠)

ائیں کیڑا جواز تھاڑ کے لئے کافی ہے ، دو کیڑے بہتر ہیں ، جار ہوں تو تھاڑ اور کافل جوگی قیص ، پاچامہ، چکاری اوراز اور

(فَأَدِيَ مَا. نَهُ مِدِيثُ جَ مِبْرُصُ ١٨٩ بحوالِ مَعْنَى مِن لَدَّ الله جَارُصُ ١٩٣٠)

ŵ..... ŵ..... ŵ

رسالهُ **ْسورة فانحهاوراحناف** 'پرایک نظر



تخمدة وتصلى غلى وشؤله الكريم أمابغه

آیک رسال" مورة فاتی اوراحناف" یو نشکته انحد به سرخراز کالونی می فی دود موجزانواله به شافع کیا ہے ،نظر سے گفررا،جس میں فیرمظلد باستر میر مناسد بن منافورا جر ساکن سرفراز کالونی کی فی روڈ گوجزانوار ، عبدالمنان صاحب نور بوری ساکن جاسد محدید گوجزانوالد اور مولانا عبدالسلام بعنوی صاحب عدس جاسد محدید کوجزانوال کے مضابین درج بیس به بدلاک کوجرانواله میں اپنی جماعت کی دین مدکی بنوی کی حیثیت رکھتے جی۔

امی فرق کے چھوٹ بڑے ہزرگوں کا ایک میں سٹن ہے کہ فاڑیوں کے دفوں میں وہوسے پیدا کئے ہا کی گرفرداری فرازشیں او تی سیدان کی زندگی کا مقصد ہے ور کی ان کا دوزھنا چھونانہ

به هنزات بگام لوگ کو کیتے ہیں کہ ہم قرآن وحد پیشانیہ ہیئے ہیں۔ ان رسالہ بھی تکھا ہے کہ '' وین بیس بجے صرف کتاب و سامنہ ہے۔'' (حسم) کا ہے "اصرف" كالفظاقر" ن وحديث من كهير أبيل)

زیرنفردمالہ بیں نماز بیں قرآت کی حیثیت پر بحث کی ہے۔ آ ہے قرآن و عدیت کی ددلتی جی ویکھیں!

قرآن یاک چی الانتخالی فردت چی طباقیزهٔ ؤ اساخینسو مِن الْفَوْرَان (مورة الرخل: ۴) "پرچو چومبر دو قرآن سے " (ترجیہ مولوی عبدالسلام بھٹوی صاحب کا ہے۔(س۴)

آ مخضرت عَلِمُنَا کَ عَبْرِت عَلَمُنَا اللهِ عَلَمْ اللهِ مَنْ اللهِ عَلَمَ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله الله كمز الدولة تجيم كرد نسع السوء بسعب ليسمسو صعف من القبو آن. (تَحَيَّ بَهُارِقُ اللهُ اللهِ ١٠٥) " مِحرَرَ آن اللهِ عِنْ مِعْمِرِ مِنْ فِينَا."

قرآن پرکی ای آیت او بنادی تربیف کی ای آیت او بنادی تربیف کی ای آی صدیت سے ایت ہو۔
کہ جہال سے بھی میسر ہوقرآن پاک پڑھ نے۔ قرآت کا قرش او بوجائے گا گر فیر استان نے بار کی بنا ہے۔
منسلد مین نہ خدا کی مائے میں اندرسول پاک جھاٹے گی۔ وہ کہتے جی کرقرآن فرش میں استان فرش میں استان کی مائے کے ایک جو استان کی مائے کے سنا تیار میں۔ ان کا منت کے سنا تیار میں۔ ان کا منت کے سنا تیار میں۔ ان کے نہ بب میں قرآن وہ مائے کے خلاف کی اعمال ہے۔ قرآن او مدیت کہتے جی کہ جہنا میں اور تی بار میں اور اور آوی میں مورہ فاقد بھی پڑھالوہ تو جی فرش ادا نہ جائے گا۔ یہ کہتے جی کر آن پاک کی جو بیری ایک سوتی والی اور آوی بیری اور اور آوی سورہ فاقد بھی پڑھالوہ تھی فرش ادا نہ ہوگ ہوں گا ہے۔
موق بایوں بھی کہ بعض قرآن سناقرآن باک کی آنات کی قتداد جی جزار جو سر جیاستان

اگر كوئى نمازى اپنى نماز مين سورة فاتحدى ايك آيت چيود كرقر آن ياك كى باقى جد بزار چوسو پینیلد (۲۷۷۵) آیات بڑھ لے تو قرائت کا فرض ادانہ ہوگا اور چھ بزار چیاسو ينيشه (١٩٦٥) آيات پڙهنه والے کو پيشين کہا جائے گا که اس کو جتنا قرآن ميسر تھا أس في يردوليا وعترت المام اعظم في جوكداس آيت اور حديث كو مان ليا باس لے ان غیر مقلدین نے امام صاحبؓ سے حمد دلغف کی وجہ سے آیت اور حدیث مجھے کو مانية عدا تكاركرويا بداورقر آن وحديث كالكاركانام عمل بالحديث ركها ب يرعس نبندنام زعلى كافور

مولان عبدالسلام بعنوى صاحب لكيت بين كه أتخضرت الكلفة في ال (سورة فاتحركو) نماز كا ايما ركن قرار ديا بي جس ك بغيركوكي نماز عي فيس عوتي (ص ٤) _ مولانا عبدالسلام بعثوى اسية دونون سأتعبون كوساتهد ملاكر ميكمل مثليث حديث رمول النطقة عن الغظ ركن وكلها و عدريد ركن اس كوشوافع مقلدين في كها ب-مولانا تقليد من محض كي بين ليكن شوافع توايد امام كانام ليت بين اور ي بولت بين ک ہمارے امام کا اجتماد ہے کہ یہ تماز کا رکن ہے۔ موادی عبدالسلام صاحب نے آ تخضرت علی مرجوث بول ویا مولوی صاحب کا فرض ہے کدر کن کا لفظ حدیث میں وکھائیں اور رکن کی جامع مافع تعریف بھی قرآن و صدیث ے دکھائیں۔ اُمتوں کے اصول فقد سے جوری ند کریں ، ورند چوری بران کا باتھ کے جائے گا۔ سورة فاتحد كي حيثيت:

مواوی عبدالسلام معنوی لکھتے میں کدام صاحب کے باس تو عدیث ندی فینے یا

اجتمادی تعظی کا مذر ہوسکتے ہے۔ (اص ۸)

سول : البدا المام صاحب! آیک طرف آپ مورة فاقی کونماز کارگز فر رہے بیں واومرق طرف بدہمی فردارے بیں کہ ادام صاحب کو بدعد بدی تیں جُہُی ۔ مواد تا! امام ساحب کوج افوالد بھی ٹیمن رہتے تھے جہاں بہنی سمید والی حدیث قربہا ۲۵۸۱، بھی فی اور ۱۹۳۸ وقف سرف تھی سماجہ تھیں اور ان کا یہد جلس ۱۹۱۵ ۔ بھی بابوعظ تھر کی گڑئی ہے وار ۱۹۳۱ ، بھی موال کی اسائش سنگی کوائن شرط بے فطارت وی گئی کہ وہ کی کو

(عداحٌ مولانا نورمسين كرجاكمي من ١٩٠٨، ٩٩.٠)

لین ۱۵۵۱ء سے ایکر ۱۹۴ مقل سی شرعی مسلک ایل مدید آتیا ہے۔ صندوق میں بندریا۔ پہنے تھا تائی تیں۔ ام صاحب آس شہر میں رہیجے تھے جو سیاری مسکل تھا۔ آخری ضیفہ اشد صنرت علی کا دارالخلاف تھا۔ آپ نے تیجی کے بھی کے ایکن میڈماز کے ارکان کی حدیثیں ضیوں کی نمی خلافت کی خرج ایک پوٹید و تھیں کہ معاذ اللہ الاسے جرے اوم کو کی نے بھی نہ بھائیں۔ اگر بھی بات ہے تو سکرین صدیت جو آپ سے علی ہے جی صحیح کہتے ہیں کہ حدیثیں خیرالغرون کے بعد بالی گیا ہیں ومعاذ اللہ ۔

سَيِّعَ ! المام صاحب كو بداحا: يث كَوْلُن إلى :

ابنو حمديدقة عن التي سفيان عن ابن نضرة عن ابن سعيد الخدري رضى الله عنه ان النبي اللائم قال الوضوء مفتاح الصلوة و التكبير تحريسها و التسليم محليلها و كل ركعتين نسلم ولا مجزئ صلوة الايفانحة الكتاب ومعها غيوها. (عقود الجوابر المنيد ص ٥١ مندامام المعتم ص ٥٨)

اب و حنيفة عن عطاء بن ابي دياح عي ابي هويرة وطبي الله عنه شادى مشادى وسول اللَّه مَثَلِثُ بالمعلينة لا صلَّوة الابقواء ة ولو يقالحة الكتاب. ﴿ مُوّدَاتُوامِ الْمَائِدِ مَن عَادِمَ ثَامَ الْمُعْمَى ٥٨)

و يكف الهام معاحب كوحديثين بتخين اور كمل يتخين .

حدیث رسول علیہ سے غیر مقلدین کا فریب:

اسر خالد نے جو حدیث بخاری سے تقل کی موانا عیدالسلام صاحب نے حدیث کی تقریباً تمام کتابوں کا حوالہ دیا (ص عے) محر نہ اسر صاحب نے بتایا اور دہی موان عیدالسلام کی تقریباً علی کتاب حدیث میں حضور موان عیدالسلام کی تول نے بات واضح کی کہ کتب حدیث میں حضور معلین کا کھل فرمان یہ ہے کہ نماز میں صورة فاتحہ اور اس کے ہم سی الفاظ سلم، نمائی ، ایوداؤر، نماز (کالل) نمیں ہوتی ۔ یہ فیصل علیہ اور اس کے ہم سی الفاظ سلم، نمائی ، ایوداؤر، ترخی میں بیان بید، ابر محافظ میں موجود ہیں بدان میں سے اکثر کتابی آ ب کے حدمد میں موجود ہیں بدان میں سے اکثر کتابی آ ب کے حدمد میں موجود ہیں بدان میں سے اکثر کتابی آ ب کے حدمد میں موجود ہیں بدان میں سے اکثر کتابی آ ب کے حدمد میں موجود ہیں بدان میں سے اکثر کتابی آ ب کے حدمد میں موجود ہیں بدان میں دیا ہے۔

القرض عدیث رسول النظاف علی دو چیزول کا فرکر ہے، فاتح اور فاتح کے علاوہ قرآن کا ۔ اگر آ پ کا خیال ہے ہے کہ اس میں ارکان تماز کا ذکر ہے فو جس طرح فاتح کو رکن بائے ہو، جد والی قرارت کو یکی نماز کا دکن مانو۔ یہ کیما عمل بالحد یہ ہے کہ جی ا عَنْظِيْنَةً كِي آ وَكِي بِاسْتِهُونَ مُا مُالِورَ آوَكِ باسْدِ كُونَ مَا نَا بَكُدَاسُ كَاذَكُونَكَ شَكَرَ مُرَا مَن سَنَ فَرَ به يهود كاطر يقد بَنايا بِ الْفُنُومِ مُنُونَ مِنْعَعِي الْجَنَامِ وَتَنْكُفُرُونَ مَنْعِينَ . كُراَ نَ كُل بِ شيوه الحل عديث كابن كيا بب .

حدیث کو مانے کا طریقہ معزت المام اعظم سے سیکھنے۔ وہ پوری حدیث کو مانے میں اور حدیث میں شکور دونوں چیزوں کو ایک تی ورجہ پر مانے میں۔ وہ فرمائے میں کہ قاتی کے ترک سے بھی مجدوم کو لازم آئے ہے اور جعدوالی قر کت سے ترک سے مجمی مجدوم کو لازم آٹا ہے۔ کو یا دونوں واجب میں۔

الم صاحب کے زو کیے۔ آگر فاتھ کو رکن فاز کیا جائے قرآن پاک کی آیے۔ سے بظاہر تعارض آسنے گا، کونکر قرآن مجید اور اوسر کی مجمع حدیثیں کمٹی ٹیں کو قرآن سے جو بھی میسر ہو پڑھ لواور خدا کے ٹی خدا کے خلاف بات ٹیمی فریا تھے، اس لئے فرضیت مراوٹیمی ٹی جائے گی۔

فدان:

مولوی عبدالملام جنوی صاحب نے ص یہ پر میچے مسلم ن انس و عاسے ایک حدیث قبل کی ہے ، گراس جس شان کا ذکر تھا، ودھیم مادر مجھ کر پی میے ہیں ۔ کوک خدد ن غیر تمام کا مطلب ناقص ہے بالل نہیں اور بھی مفہوم وجوب کا ہے ۔ آ مخضہ تفظیفہ نے مثال سے بات مجمال ہے کہ جس طرح ایک حالمہ اوش کیا کی چینک و سے، ایمن تماز اوش ہے اور قائی نہ ہونا کو یا اوش کیا چیڈ کرا دے اور ٹیا ہر ہے کہ بچینک و سے بعد اوش مرتبیں جاتی ۔ بکراس کی صحت تاقعی جو جاتی ہے ۔ مین مثنا ، وجوب کا ہے۔ ایم جیسا کہ حدیث پاک گزدی کہ آئخشرت میکھٹے نے قربالا کیلی ہوتی نماز بغیر قرآت کے، اگر چہوہ قرآئے فاتح می ہو۔ اگر چہالا لفتہ بتا رہا ہے کہ اگر فاتح نہ ہواور فاتح کے علاوہ اور قرآن ہوتو بھی ہوجائے گی۔ کہنا ان سب احادیث کو طرکر فرمان رسول بھٹے کا خلاصہ درکالا:

جس تمازین فاقع نہ ہو وہ ناتھ ہے کالی کس بوقی۔ بالکل بھی بات امام صدحبؓ فرمارے جیں کرفاقی واجب ہے، اس کے بغیر نماز باتھ ہے، کالی نیس ہوتی۔ ان وہ باتوں میں تعنادنیں بلکہ بالکل موافقت ہے۔ بال کس بھیٹی کو اگر ایک کے دونظر آ کیل تو اے اپنے بھیٹھے بن کا علاج کرنا جاہتے نہ یہ کہ تقدرست آ تھوں والوں ہے لڑائی کرے یا جیٹی بازی برائز آئے۔

اب عمل حدیث کو مائٹ دکھ کر فرمان دسول ہے کہ جو سورہ فاتحہ کے بعد میں کچھ قرآن ندیج ہے اس کی نز زمیس موگی اور غیر مقلدین کہتے ہیں کہ جو فاتحہ کے بعد پھھ قرآن ندیج ہے اس کی نماز موجائے گی۔ بدشناہ ہے جس کو غیر مقلدین رفع نمیس کر بچکتے اور صدیث کی مخالفت م بردہ ڈالنے کے لئے حدیث می آدگی ہے ہیں، محلیا کا نفوذ تو العضاف فرقیمل ہے اور انگنے شکاری سے بخادت ہے۔

اصطلاحات:

مولوی عبدالسلام صاحب بعثوی تقصة بین: فرش اور واجب کی به نشیم بهت بعد کے لوگوں نے مدیث کی مخالفت پر پردہ ڈالنے کے لئے ایجاد کی ہے (ص ۸) میر تقصة بین: الواجب كا دوجہ جو آپ نے ذکر كيا ہے، كوئی شرق دوجہ ہے اور دسول اللہ

مالانتخ کے زمانہ میں موجود تھا۔ سرف وُ لے تو کول کافن اور سطارے ہے؟'' (ص 15) مواه نام القد منفئ موار شانعی، وکلی جو با منبلی به صد ق مسن فررنسن ه وحبدالزمان کی ڈنڈ کی کتابیں ہوں، سب میں احکام کی یشتیم موجود ہے۔ محدثین بھی یہ اصطلاحات مشمال کرتے ہیں۔ ایم بخارتی باب پائدھتے ہیں وجنوب النصيطوری فی الثياب بن أحمرات كراهية النعري لي الصبوة بن أحمات كراهية الصلوة في المقابر الثالات ما يكوه من السمر الثالات وجوب صلوة الحماعة عُ الصَّامَ، ابيحاب النكبيو عَ الصَّاءوجوب القراء ق عُ الرُّصَّاء، ما مكوه من حمل السلاح ﴿ الإس ١٣٤ مَا يَكُوهُ مَنِ النَّسُدِيدُ فِي تُعَبَادُهُ الْمُأْكُرُ مُوَّاءُ ما بكيره من نبرك فينام الليل لص كان يقومه الت^{اليم} ٢٥ مما يكر عمر اللهاجة إناا/"راندا، ما يكودهن الخاذ المسجد على القبور النااش 221، ما يكي و مار المصلوبة على المنافقين الأالا الاجوب الوكوة عَالَالَ ١٩٤٤، وحول الحج عَالَالِ ١٩٠٥ قبرض صافقة الفعور عَالال ١٩٩٠. وجوب النصفا والمعووة ﴿ أَمُّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَحَوْفَ الْعَمُوةُ ﴿ اللَّهُ ١٣٨٨ وَجُوفَ صه ورمصان ١٤/٣٥٣٠٥٠ ما ينكوه من البحلف ١٤/٣٠٠٠ ما ينكوه من العلماع بي الصابح المنامونيس

ا مغرض محد ثین بھی اس تھیم کے قائل ہیں۔ باب بستا نیسا بھی اور میوو بھی کی اوکام کی کتابوں بھی میں لیکھیم ٹیس فتی۔ آپ اگر ارص کے سکھر موکر دوز فی ہنتے ہیں قر ووم وں کو تو ووز ٹی بین وحکا ندو زیں۔ مون نا! العنول مدیت کے تمام اسطلاک الفاظ ان بل اسطان کی معنوں میں رسل پاک منطقہ کے زمانے میں موجود تھے یا تھی احادیث کے انکار پر پردوڈ الکے کے سلتے غیر مقلد بن استمال کرتے ہیں۔

موادی عبدانسان مساحب اگر آشاد کا معن تیمی جائے تو وہ سی چرا تری سکول میں داخلہ نے لیس اور اگر جائے بیس تو غور کریں۔

(لف) البداید میں ہے: ۱۰۰۰ تا تھ آزاد کارکن ٹیس آ پ سرے سمجے غیر معارض حدیث انعیس کے معنور مطالح کے فریان ہو کہ قانق فرز کا ڈکن ہے۔ مدخود قیاس کریں کہ آپ سے خدیب میں قیاس کار افتیس ہے اور ندکسی اعتما کا قول بیش کریں کہ آپ سے نزویک ہیا شرک تقلیدی ہے۔

(ب) مدایا میں لکھا ہے کہ فاتحہ قماز میں داھی ہے۔ آپ کی صریح نیر معارض مدیث بیش کریں کہ فماز میں فاتحہ واجب نیس ر

القد تعالى آسية كومل بالت قبول كرائية كي توفيق عطا فرمائية ، آثان



خالد گرچانھی اور جزءر فع پدین (۱)



تخمدة وتصلى على وسوله الكريم أفابعد:

الیدر مالیا می ارفع الیدین امر جانالدار با کلی افزیزم سید مشاق مل شاه نے تھے۔ ویا اندان رسال کے بارے میں مجھر ما تیسر پھر ایکر دارا مال کے بیابید اللہ تجربو کی اُن ایسا۔

(۱) وځوځي:

مناب فالد الرباعي في 197 سخات كي اس الناب بين أيب من ايك من ابنا الناب بين الناب من الميك من البيا الناب بين الناب بين الميا و بين من الميك في المناب بين الناب بين أيا و بين من الميك في الما الناب بين المواجع بين أيل و بين الميك في المناب الميك بين أيل و بين الميك الميك بين أيل الميك الميك بين أيل الميك الميك بين أيل الميك الميك الميك بين أيل الميك ال

do.

خالدصاحب في تكعاب ارفع يدين كرفي دالول من كي تدابب بين

(١) رفع يدين واجب ب، ال ع مجود ف ع فراد قاسد بوجائ كى

(ص ۱۲) _ تیکن وہ ایک محی آیت یا حدیث سے ثابت نیس کر سکے کر رفع پدین واجب سے ایک کر رفع پدین واجب سے ایک کی فراز فاسد ہے۔

. (۲) رفع پدین (متازمه نیه) منت مؤکده ب، اگر فلطی سه ره جائے تو نماز

ہوجاتی ہے۔ اگر ویدہ دانت چیوڑ وے تو سنت مؤ کدہ کا تارک گناہ گار ضرور ہوتا ہے

(ص ١٥) _ يعلم بحي كن آيت يا حديث كالرّبر فيس - كناب من مندرج احاديث من

ے آیک حدیث یم بھی اس رفع یدین کوست مؤکدوئیس کہا گیا مندی اس کے تارک

كو كنياركها كياب، يص خالدصاحب كي دائ ب-

(٣) خالد صاحب نے وجوب کو سرجوج اور سنت سؤ کدہ کو رائع محض اپنی رائے

ے قرار دیا ہے کی حدیث سے تابت شیس کیا۔

(٣) خالد صاحب نے يه برگر تين بتايا كه دومرى اور پي كى ركعت كے شروع مين

اور محدول من جائے اور مجدول سے سرأ تھائے وقت دفع بدين كرنا مكروہ ب يا حرام اور

اس جدر فع يدين كرف على الماء موكى يانس ؟ ان كافرض قدا كريد ميان كرت.

(a) خالد صاحب كافرض تعاكر قرآن وحديث عدواجب اورسنت موكده كي

جامع مانع تعريف اور تارك كالحكم يمى نقل كرت_

(۲) فیرمقلدین کے ذہب میں دلیل شرق صرف قرآن اور مدیث ہے۔خالد

صاحب نے اپنی کتاب میں بعض احادیث کو سی اور بعض کو ضعیف یا جمونی قرار دیا

ے ، مر يوري كتاب ميں ايك حديث كا بھي سي يا ضعف اونا وليل شرى يعني قرآن و عدیت سے تابت نیس کیا، اس میں محض انی دائے و قیال سے کام لیا ہے جو فیر مقلدوں کے ندجب میں کار اعجیس ہے یا امتیاں کی تقلید سے کام لیا ہے جو ان کے الديب من شرك بيد معلوم موتاب كرائيس فير مقلديت كالمعني نيس أتابه خالد صاحب جب خدا اور رسول کے ملاووکسی کی بات کودیکل شرق میکن مائے تو وو بتا کمیں کہ جن اوگوں کے اقوال أنہوں نے بطور ولیل لکھے جن ان میں ہے کن کن کو وہ خدا مائے بل اور کن کن کورسول مانتے ہیں۔

- (2) فيرمقلدين روزشور مياتي بين كديم قرآن وحديث كيسوا كجيشن مات ا ليكن ان ع مواوي محض افي رائ يا أمتول كي تكليد عديثول كو تح ياضعف قرار وح بن أو كوئي بهي ان كَ خلاف آ واز ثين أفيات، طالاتك المساكت عن المحق شيه طان اخدوس كك كها كيا بيد معلوم دواكر آن وحديث كانام حض واوك ك الخ لعة جن-
- (A) "كرجا كلي صاحب ١٣٤ صفحات اور ٣٩٨ نمبرول عن الكِ آيت بحي قرآن کی چیش نیس کر سے جس کا ترجدان کا مندرجہ بالانکسل دموی جو۔ کو یا قرآن نے اس مئله من ان کویتم قراروے دیا ہے۔
- (4) ص ٢٠١٧ رِقْرَ آن كَي آيت فصل لوبك والنحر عدق يري الابت كرنے كى كوشش كى ئے گرنے تو نساجسو كامھنى رفع يدين ہے۔ نسجسو كامھنى إجماع أمت قرباني ب_ جس جبوثي روايت بي معنى إكازات ال كو قيامت تك يديج عابت خيي كريكة . اليي خلاف اجهاع اورجهوني روايات عي اس منين ندجب كا أسرايي -

- (۱۰) احادیث عمل سے ایک مجمی قبل حدیث فیش کرری کرری کے معزے کو انتظام سے تھم فرما یا تھا کہ کوکلی اور تیمری رکعت کے شروع میں بھیشہ رفع بدین کرنا اور دومری اور چوقی رکھت کے شروع میں مجمی وقع بدین خدارتا ود رکوع میں جاتے اور رکوع میں سرانگ تے وقت بھیشہ رفع بدین کرنا ورمجہ وال میں جاتے اور سرانتھاتے وقت مجمی رفع یہ بن شاکری۔
- (۱۱) اس عیم مقالت امرسه مغیرون میں نیک بھی تقریری مدیدہ فیمیں ہے کہ حفرت رسول اقدیں مُفَقِعُ کے سامنے سرف الیک ہی محالی نے اس عرق فرز پڑھی ہو جس طرق محل وقوی میں ہندا ورحفرت مُفِقِعُ نے شاش دی ہو۔
- (۱۲) مادق عمر شنازر کا فی دفع بیرین نے لئے صرف ایک مدیدہ بھٹائل کی ہے۔ (میں ۸۲۵۷۷) جو بالکل جھوٹی ہے۔ اس کا کئی ہو: خدا یا دسول سے قوانیا ہو ہے ہونا ، اس کی سعد کے سب دادیوں کا بلاا فقل فسائلت دن ہے تھیدہ آئی کا بہت ندار دیا۔
- (۱۳) خالد گر جانگی نے میں ۸۰ پر تمریعین غید کی آناب درامیات اللہیب کے حوالہ سے جو شد قبل کی ہے دوائل منت دائما میت کی کسی مشد حدیث کی آنا ہے ہیں موجود می نمیس جموعت پر تل سادا گزارہ ہے۔
- (۱۳۷) ۔ اس جمونی سدیدہ جس بھی ان کا نورا والوی اندکورٹیس ہے۔ وکتل اور انوی کی موافقت کا معنی میں مشیس ما بھتا ہے
- (۱۵) سے فعنی احادیث شربا ہے بھی کی آیا۔ مسلح حدیث میں بھی تدیمس وٹون موجود ہے نہ بھیشد یا ساری عمر کا خفا سوجود ہے۔ ایس اس غریب خداسی کے پاس کال اور مسلح کیے۔ بھی دلیل نہیں ۔

(11) - مودم کودهوکا و با ب تدعیش و بیشر و یشدان عمل مشد کومرفوعاً و وابعت کیا ہے انگر حصر بنائی المعرب معد این الیا وقاحی المعشرت عمدالرحلی این فوقت المعشرت و بیرات العود کر معضرت علی معشرت معید المعشرت الانتهیدة الن معاقول سے کی سند سے حصابے

افق کانٹیں زرکا شکمل نہ چکمل یہ ان کا نام بھی جوکا کے لئے تعمامے۔

(12) - اعترت صدیق * کی مند کا انسال نایت نبیس کیا۔ منترت کم کی مند سے بھالت کورفع نبیس کیا۔ منترت کم کی مند سے جہالت کورفع نبیس نیار منترت مثل کی حدیث سے اختیاط کی جرح کو جواب کنیں ویا۔ ان میں پتھیل جوٹل سے زمین شاہرت ہے۔

(۱۰) من الدامه حب من معترید ملی اور بوهید ما مدی کے بعض طرق بین افا فسیام مین المسیعید نیس دوایت کیا ہے ، جس مندسراحاً تا بہت دو کدوومر کیا اور بوقتی مگر مکت کے شروع بین بھی معنور المائے وقع یہ بن کیا کرتے تھے اور جن اصوابیت بھی برمجم بر ساتھ اور ہراو نچ نچ پر رفع یدین کا ذکر ہے، ان سب ہے بھی دوسری اور چیتھی رکھت ك شروع من رفع يدين ثابت ب، مكر غير مقلدين ندتو ودسرى اور چراني ركعت ك شروع میں رفع یدین کرتے ہیں اور نداس کے منع کی کوئی سی صریح صدیث ویش کرتے ہیں، تو ان کی تماز خلاف سنت ہوئی ادر یہ گنہ گار ہوئے یانیس؟

(۲۱) جناب خالد صاحب نے اس کتاب میں حضرت عبداللہ بن عزار حضرت عبداللہ بن زبيرٌ، حضرت عبدالله بن عباسٌ، حضرت الوجريرة، حضرت النسُّ، حضرت ما لك بن الحويرے"، حضرت واکل بن مجڑ ہے یہ احادیث بھی نقل فرمائی میں کہ رسول اقدیں ﷺ تجدول کے وقت بھی رفع یدین کیا کرتے تھے اور جن احادیث میں ہر تکبیر کے ساتھ اور ہراو کچ ننچ کے وقت رفع پدین کا ذکر ہے، ان ہے بھی محدول کی رفع پدین ٹابت ہوتی ہے۔ غیر مقلدین ان احادیث برعمل نہیں کرتے۔ کیارسول اقدیں ﷺ نے منع کردیا تھا کدان احادیث برعمل ند کرنا یا تھٹ کی کی رائے تی ہے؟

 (۲۲) خالدصاحب نے جزور فع الیدین منسوب الی النفاری کے حوالے بھی دیے ہیں اور اس رسالے اور بڑنے القرآۃ کوملیحہ وبھی چھیوایا ہے، حالانکہ ان دونوں رسالوں كرادى محمود بن الحق كا الله موتاكس أمتى كى تقليد بي بعى ثابت تبيرا.

(٣٣) · حضرت واكل بن حجرٌ اور حضرت ما لك بن الحوميثُ كا 9 هه يا •اهه ش اسلام لانا اور 9 مدیا ۱۰ مدین رفع بدین کا دیکینا کی سیح سندے تابت کریں ،محض کی اُمتی ك بسدوا ليش دري-

(۲۴) حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص، حضرت عبدالله بن جابر البياضي، حضرت ابان الحاربي "، حضرت الوالمة البابلي "، حضرت الوسعيد خدريٌ، حضرت الومسعود

العماري ، حضرت المودواني حضرت الي بن كعب، حضرت بريدة ، حضرت حسن بان فأني ا حضرت حسين بين فلي الفضرت زياد بن حارث الفخرة ويد بن الابث المضرت سلمان فاري العضرت عائشة وهفرت عمارة حضرت عمران بن تعيين المعفرت عثمان المعفرت معدد بن الي وقاعل العفرت عبد الرحن بن عوف المعفرت زيرة وهفرت طلية معفرت سعيد اور حضرت الوهيدة كانام محض بي سندنق كياب احتازت فيدرن بدين ان سي بركز سند

- (۲۵) معنرے تھم بن عمیرٌ معنرے عقبہ بن عامرٌ معنرت فلتان سے بھی شاز یہ فیہ رفتح پو من کی دوایت نہیں ہے۔
- (۲۷) تقریباً دی سحابہ سے جود یاتمام تجمیرات کی رفع پیرین ہے، ان کو اپنے ولائل میں ذکر کرنا بھی غیر مقلدین کا دموکا ہے۔
- (21) مستدمیدی کی میچ حدیث کا انکاد کرنے کے لئے صرف کالیاں لکو دی ہیں، اگرمطبور شخوں بڑگر جاکئی ساحب کواعماؤنیں توجیعے جائے ہیں نے وسیعے ہیں، وہ ال سب کرایوں سے مطبوعہ اور لکمی نتنے چیش کرے۔ ہم بھی مستدمیدی کا مطبوعہ اور تکمی نسخہ چش کرد ترا ہے۔
- (۱۸) آنتخفرت مُنْظَافِنَا كُورْ بِهِ مِوكُورِ بِيتَابِ فَرِها فِي وَضُو كَ بِعَدِ رَبِي كَا اِبْسِ لِيقِ ا نهاز عِن إِنِّى كَوَ أَنْهَا بِيَّهِ ، فَرَوْ عِن وروازُ و كُولِي وَلِيقٍ ، حاكثه بِيرِي سے سِهَرا لَكَاكر الابوت قرآن فریا تے ، حالت جنابت عِن اور ان کے منع کی بھی کوئی حدیث فیس قرکز کیا ہے سب فریا تے ، ہے سب افعال نابت عِن اور ان کے منع کی بھی کوئی حدیث فیس قرکز کیا ہے سب افعال سنت مؤکرہ عِن اور ان کا تارک کُنٹِگار ہے ؟

(۲۹) ۔ ڈک دنج یدین کی جن احادیث کوشعیف کہا ہے وہ کی دلیل شرق ہے نیس کیاد شمی اورضعیف حدیث کی کوئی جامع مافع تعربید قرآن وحدیث سے بیان کی ہے۔ ببروال اينا دموني فابت كرئے على فالد صاحب موفيعد ناكام رب يي، الميكن جبالب مزب كي ويدے اپني ناكائي كوكامياني محدرے يور الشاقعالي جارت تعيب فريائين.



خالدگرجانهی اور جزءرفع بدین (۲)

بكالمالك

ننحندا فی و تصلی علی دستوانه الکی نیم. افادهد فیر مثله بن کے مشہور عالم جناب خاند گرجا کی صاحب نے ایک بڑے درخ الیو بن مرتب قربانی سب اور ادارہ احیاء البنتہ گرجا کہ گوبڑا ٹوالہ سند شاکع کیا ہے۔ اس شبرگوبرا نوائد میں قرقہ غیر مقلد بن کی عمر ایمی ایک صدی بھی ٹیم ہوئی، میں سادس کی عدد مصدرال سرمتجان سید کا داور کی گرم انواق میں بھرف تیں ایک

جبر اسلام کی عمر چودہ موسال ہے متجاوز ہے۔ ۱۹۰۸ء کی گوجرا نوالد میں سرف تین الل صدیت کی سما جد تھیں، لیکن جد مرف نیا کی چوک والی سجد بھی می ہوتا تھا۔ ۱۹۱۳ء بھی یا قاعد والجس اللی حدیث بنائی گئی۔ ان کا پہلا جنسہ ۱۹۱۵ء میں پایوہ طامحہ کی گئی ہ دوا اور ۱۹۱۰ء میں ان کا پہلا عدر رقائم ہوا (سیریت مولانا جداس بھل علی میں عادات مولانا عال ڈالدین میں ماہ (۲۸) ۱۹۲۰ء تک شہر گوجرا تو لہ بھی صرف مولانا مولوی علاؤالدین صاحب تبعد کی نماز بھی جیسپ کر دفع پر بن کرتا تھا، دن کولوگوں کے ساست میمی تبییر کی اور بھی حال تقدر میہاں تھی بھی مولانا خلام دسول صاحب کا تھا (سیریت تور نیا کمی گوجرانواندگی خطابت اوراماست میروکی تو انجمن الی مدیث نے یا تا عدہ طور پر یہ پاس کیا کدمولانا وسائیل صاحب کمی کو رفع الیوین اور آئین پانجر پر مجبود ش کریں (سوائح مولانا ملافائدین می ۴۹)

کویا ۱۹۱۱ء بھے یہ جماعت تقیہ بازی پر پیری طرح عمل کرتی رہی ہوں۔
بیں سعودی محکوان شاہ عبد دھنو ہو تجازی تا بیش ہوئے۔ یہ واک اگرچہ منبل ہیں مگر ان
الوکوں نے بہتنہ بچائے اصاف سے لیا تھا اس کے ان کومبادک باد دیسینے کے لئے ۱۹۳۳ء
بیں مولانا اساعیل سنی اور خالد کر جا تھی کے والد مستری نور حسین کچ پر مسے ان کی
جہانوں کرکے مود و زکو تا کی رقم از انی شروع کی۔ اس فیر کھی سرماسے کی بنیاد پر
کوجرانوالہ بیس فیر متعلد میں نے تقید کا قتاب آتاد کر اس فیر کھی سرماسے کی بنیاد پر
1977ء برطابق کے 1900ء میں دنع ہے ہیں پر خالد کرجا کی کے باپ مستری لور حسین نے انہاں درخع الید بن کے عام سے رسالہ کو دیا اورائی۔ رسالہ قرق انسین تھا۔

بیستری نور حسین کی تغی خاندان کا قرد نیمی خاندان کے بعد انہیں سال کی حربی پڑھنا شروع کیا تھا۔ حربی زبان اور سرف تھ پڑھے بیٹیر ساتھ تی سنگلؤ تا کا ترجہ شروع کرویا تھا (سیرت نور حسین ص11) با تا عدہ دیٹی تعلیم کہیں حاصل نیس کی بیکن اس کے یادجود دوا پی جماحت میں مناظر بلکہ جمد سمجھے جاتے تھے۔ کسی نے فورس کیا ہے: اندھوں میں کانا راہد۔

وہ چونکہ حالم نہیں متھاس کے دلیل اور دموی بین مطابقت یا سیجے اور متبم بیں اقبیاز ان کے لیس کا روگ شاتھا۔ آنہوں نے نام کوتو رفع بدین پر دو رسائے لکھے مگر اپنا دموی بھی تمل طور پر شاقکہ شکے رموی کے بعض حصوں کو چھیا جانا اس بھا ہے۔ کے علمار

کی سب ہے بڑی کمزودی ہے ۔ تو مستری ھا دب ہو عام بھی نہ تھے وہ وقوی کھے دامنے کرستے اور وائنل عمل ان کی تا کائی کا میا عالم ہے کہ انگ میں تھے اصری ، قیم سوارش حدیث پیش نمیس کرینکے جو 161م رفع ید بن بوقت دکوع ناد ایندا درکفت اتال و موم برنص بهورنور روام ترک رفع پیرمین اینکها مرکعت دوم از جهارم اور اوام ترک رفع پیران) لیت بنود برنف بوادروه روابيته مالم عن المعارضة مجي جويهمية ي فورحمين كالزكا غايد * رجائعی یا کوئی اوران کامشند عالم آثر ان دوز ب رمانوں سے ایک بھی ایسی سمج مرتع غیرسعارض مدیث وکھا ویں جو دعولی کے شبت اورمنفی کھل پینوؤں میں دورم برنف حريج ودتو ہم رتع اليدين شرور كرديں مے يكن كوئى فيرمقلدمتند عالم آج تك ايسا غامتەنە كەركايە

مِلَدِ مَمَةِ يَ نُورِ مُسْمِن نِيْ مُعَلِّ وَهُو فِي جِهُوزُ كُرْ مِرْفُ وَهُو فِي كَ جِوفَعَا فِي حصر برج دوام کی آص چیش کی ہے، وہ بھی اس سند کے ساتھو کی حدیث کی کناب میں موجو بشیس (قرة العنين ص ٩٠٨) اور اثبات رفع البدين من ٢٠ بر حضرت وأكلُّ كي ويك عديث مي عسلسي حسيرة بينيز بر باتد باء سن كالفاظ ذكر ك بين ادر مح مسلم م ١٤٢٠ همن بالدين الأروزري عن 20 زروار قطشي ص 14 ارايوداؤو مين **الص 19**0 و 7 م زخاري عمل 14 م مند احمد ج ۱۲ من ۱۲۷۷ میلی ج ۱۲ من ۴۱ مرکز ب انام ج ۸ من ۱۸۸۱ بز ویکی س.م. المنظوة "مباروا كمايون كالعوابية بالمصارة الأكب برعماره "تأبول برالكل جهوث ہے۔ اس حدیث میں عبلسے صفوہ مرتزمین، ایک علی رنس میں گیارو کیایوں برجوٹ اول حاتا واس کی مثال ینڈے شروھا نند کے باب بھی فیس کی ۔

والغرش بيادة نول رسامي تدليس وتمييس كالمرقع بيناء اننا بركسي وبهري مجلس شر

ان شامانند العزية تعليل بحث كي جائد كي-اب خالد مرجا تحي كي كتب كاجاز إيرا يجد

نالدے باپ مستری تورفسین نے عدامات میں دفع الیدین م رسالہ تکھا تھا۔ اس کے بینے خالد نے 20 سال بعدہ اس سامت کا رسالہ اسمارہ شراکسار وعویٰ کی شفیع :

خالد صاحب اور کا جرائوالد کے غیر مقلد بن کا غرب اور گل ہے ہے کہ بدلوگ جمل اور تیسر کی رکھت کے شروع میں جیٹ رفع یہ بن کرتے ہیں اور دوسر کی اور چوکی رکھت کے شروع میں مجھی رفع ید بن ٹیس کرتے اور رکوع جائے اور رکوع سے سر افعائے وقت جیٹ رفع ید بن کرتے ہیں اور مجدول میں جائے اور مجدول سے سر افعائے وقت بھی رقع ید بن ٹیس کرتے خالد صاحب کا فرض تھا کہ اس بورے دکوئی کا تھم بیان کرتے۔

- (۱) خالد صاحب نے بیٹو بٹایا کر کہل اور تیمری رکعت کے شروع میں رفع یو بن سنت مؤکدہ ہے لیکن بیٹنی بٹایا کر وہسری اور بڑتی رکعت کے شروع میں دفع یو بن کمردہ ہے یا جزام؟

احکام میں امتی ل کی اصول فقد کی کریوں سے تعربیدست اور ادکام پورک کریا ان کے سنتے سائز نہیں۔

- (أ) سنت مو كوفلطى بره جائة قرز بوجالى بر
 - (ب) ديده دانسته منت مؤكده كالتارك گنهگاه خرور جوگار
- (۵) سن محویز دنوان میں غیر مقد بین کی مہلی مجد ۵۱ ماہ میں بنی۔ ۱۹۴۱ و تک ۱۹۴ سال تک جو آپ کے خراب کے خوا وادر مجام جن میں مواد تا علاؤ الدین صاحب مواد تا خدم رسوں قلعوق اور آپ کے انو جان مسترکی نور حسین بھی شام جن واضعی ہے وقع یع بن کے تارک رہے و والستیج ان کی تمازوں کا کیا بنامی
 - (۲) شاه و فی الله اوران کا خاندان تنطی ب دفع الیدینا کا تارک تعایه واشد؟
- (۵) سنامہ سندگی: خالد صاحب نے احتاف کے فداہب بیان کرتے ہوئے صاعباء ۱۹ پر طامہ سندگی کی مجادات ویک کی جن اور عام کو دحوکا و یا ہے کہ طامہ سندگی حتی میں، حالانکہ بیا بوانحن سندھی فیر مقلد تھا (افتہائے ہند ج2/می ۱۵ – ۱ سا، حصہ دوم) ان کی دفات ۱۳ اللہ عمل ہے۔ بیادی اوائمن سندھی جی جو بیٹے پر ہاتھ و ہند ہنے اور رقع بیا بین کرنے کے جرم عمل یہ بینہ شورہ عمل چوان کے رکے جمل جمعے ممک تھے (ایستا میں ۱۵۲۱) اس کے خاند صاحب کان کو حتی گہا فریب ہے۔

ال والتداعة بيم معلوم بواك بارجوي صعلى اجرى بش مديد مؤرد شن عين



منکر بن حدیث کے بخاری پر اِعتراضات کا جواب



منحصلة والمصلى على وشؤاله الكوليم الخاصف تحري ريئائزة يجزاعكم فان صاحب معرفت يجرزي إسلم «كراچي مجاة لي السنام ليكم ودهمة القدا

آپ نے قریر آبا ہے کہ میں خود مشکر حدیث فیش ہواں ایک کتاب پڑھ کر انگوک کے جس ۔ 10 رکی ول ایک کتاب پڑھ کر اس ف آپ بلکہ کوئی خض بھی مشکر حدیث نہ ابوجی ہے ایک وحد ف آپ بلکہ کوئی خض بھی مشکر حدیث نہ ابوجی ہے آبونکہ انگار حدیث کا تجرا کرے تھے کہ حضور الدی میں بھٹے گئے کی بات (حدیث) نہ نہنا ہ گرائن سے بہتے گئے کا گلہ پڑھتے تھے ان می آپ میکھٹے کی بات رحدیث) بائے تھے ان می آپ میکھٹے کی جائے اور ان نے ابوجی کا انگار کیا کہ بھٹے خواد ان کے بعد کھٹے گؤگوں ہیں ۔ سب سے پہلے خواد ان نے میان کرد والد یہ ہے کا انگار کیا کہ کہا اور کہا گئے ہور والفی نے سے ہر روافعی نے سے ہر روافعی نے ان کی بیان کرد والد یہ ہے انگار کیا اور کہا کہ رہے کی وہ سے کافر ہوگئے ہیں اس لئے ان کی بیان کرد والد یہ ہے انگار کیا اور کہا کہ ہوگئے کی اجاز ہے کہ داخان کے داخوان کا داخل کی داخل کے داخل کے داخان کی داخان کے داخان کی کے داخان کے

بعدا لک عقل برست فرقہ بیدا ہوا، یعنی معتزلہ، أنہوں نے بعض اعادیث کوخلاف مقل قرار دیا گراسلامی حکومت میں وہ بل ندسکا۔ان کا سرف نام رو گیا،اب دور حاضر میں ا تکار مدیث کا بیز استشرقین نے أفهایا۔ یاک و بتدیس انکار مدیث کے ابواب یاوری فاطرر کی کتاب میزان الحق اور اس کے بعد یاوری ماوالدین کی کتاب محقیق الاویا میں لکھے گئے جیں۔علائے اسلام نے اس فتد کا ای وقت روکیا۔

(١) آپ جس كتاب مقام مديث عظوك جي يو محك يون ال جي يروي سا اب کا اینا کار کی فین واس نے جو کھا کھا ہے دومنتشر قبن و پارٹ کا تاروا ور پادری ماوالدين إلى بياب باليون والمحل وجن نشين رب كدآج كل كم محروب وديث كى بنياد كونى على مقالطة تبين بلكه ويد صرف يد بياكه صديث وسنت والا اسلام مغرفي تہذیب کے ساتھ میل نبیں کھا تا۔ ای لئے آپ دیکھیں گے کہ ان میں اکثریت تہذیب مغرب کے دلداگان کی ہے اور ان حضرات کا شور اور کشریج اگر چہ کافی پھیلایا جا ر ہا ہے مگر ان کی تعداد وی ان کا کے مقابلہ میں ایک کی نسبت نہیں بنی۔ آب اس بارہ ين مندرجه ولي كتب كا مطالعه فرما كين: جيت حديث مولانا محد اوريس صاحب كاندهلوي ، نصرة القرآن اور نصرة الحديث مولانا عبيب الرحلن الأعظى ، مقدمة ترجمان النة ، مقدمه معارف الحديث، اسلام من سنت و حديث كا مقام أشيخ مصطفّى الباعي، قرآن كريم ادرسنت نبويد الدكة رحبيب الله مخذار، رئيس جامعة العلوم الاسلامية كرايق

(r) آپ نے فرمایا ہے دین کیا ہے؟ عام مسلمانوں کے نزدیک قرآن وحدیث ك مجموع كودين عجما جاتا ب- يحرى اقرآن كيا ب؟ الله تعالى كا آخرى كلام جويين

الدقتين موجود ب، اس كظم اور معنى كوسب مسلمان بلكد تمام ونيا قرآن اتى ب،اس کی آجوں بلکہ مورتوں تک کی ترتیب اللہ جل شائد کی طرف سے سب سلمان روزانہ اس کی علاوت کرتے ہیں مبرزمان می لا کھول حفاظ قرآن رہے ہیں، سے میس تواز کے ساتھ بنجاہے جس بیں کسی فلک اور شبر کا گز رٹیس۔

حدیث وسنت کیاہے؟

الله تعالى في سكاب (قرآن) اور حكمت (سنة) وواول كو نازل قرمايا (القران ۱۳: ۴،۲۳۱) الله تماني في بس طرح بيدة مدواري في كدة ب يقطّ كسيد مِن الفاظ قرآن كو تحقوظ قرما ويا جائة الى طرت بيلحى قد دارى في فُسَمُّ إِنَّ عَلَيْسَا مِّيَالَهُ كداس قرآن كا بيان انترت وضاحت كى محى جم حفاظت كى ومدوارى ليت يرى اى بيان كوسنت كيت بين _ رسول اقدى مع الله تعالى عدقر آن كم ساته بيان اور كنّاب كرما تو تلت سيكه لي اورة ب أمت كونجي ماري تمركناب كرما تو ملت كي تعليم دية رب ويُعلَمهُ مُ الْكِسَابُ وَالْحِكُمَة اورقر آن كَسَاتُه ما إن جي عَماح رب لتبيّن للنّاس ما فول النهم (مورة أفل: ١٠٨) اي حكمت اوريان كو سنت اور حدیث کہا جاتا ہے۔معلوم ہوا کہ سنت اور حدیث آپ میں کا کی ذاتی ہاتھی نیں بلکہ ووجھی اللہ تعالیٰ کے بی محماع ہوئے احکام بیں۔ کتاب وسفت کا تعلق چولی اور دامن ،جسم اور جان ، الفظ اور معنی سا ہے۔ قر آن اور حدیث دونوں اللہ تعالیٰ کی طرف ے ہیں اور ان میں فرق ایسا ہے جیے قط اور پیغام میں فرق ہوتا ہے۔ قط میں کا تب ك اجدنه الفاظ كمتوب اليدتك بيني جات جن كريفام من بيفام لح جان والحالية الفاظ من پیغام وینے والے کا مطلب آب بھک پینجا دیتے ہیں، اس کے قرآن یاک

ص ہے: وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَى إِنْ هُوَ إِلَّا وَحُيِّ يُؤْخِي (الْجُم) تُعَا كَا الْكَارَجِي تُط والے کا انکار ہے اور پیغام کا انکار مجی پیغام دینے والے کا انکار ہے۔ ای لئے رسول الله عظافة في مايا: يمن تم من دو جيزي تحور كرجار بابول كتماب الله وسنتى جب تك تم ان دونوں يرمضوطى سے قائم رہو كے تو تم كراونيس ہو كے۔ (موطا) حضرت ابو بكر صديق رضى الله عند في بعى كتاب الله اورسنت رسول الله كو مانا (ابوداؤون الم س ۲۰۰۱) حضرت مرسعت نبوی ﷺ کی تعلیم کا اہتمام فرمائے (مسلم خاہم ۴۰۱) تج ختنع کے ذکر میں بھی هنرت مر فے کتاب اللہ اور سنت نبوی کا بی ذکر فرمایا (بخاری ج الص ٢٣٣) اورآب فرمايا كرت تعيد لا نصوك كتماب الله وسنة نبينا مَثَاثِيَّة (مسلم ج الرص ١٨٥) بهم الله كي كتاب اور اسيع في كي سنت نبين چيوژ يكته _ صنرت عنمان الوسنب نبوى عَنْ الله كسا ما تدسنت العرين كوجى مان تقد الغرش سحاب مي ایک بھی منگر حدیث ندتھا اور ساری اُمت کتاب وسنت کو ہی دین مانتی آ رہی ہے۔

سنت کی حفاظت:

جس طرح قرآن پاک تواز افظی ے بم تک پینچا، ای طرح سنت تواز مملی كے ساتھ ہم تك پیچى، جس قدرالفاظ قرآن اقيموا الصلوة متواتر بين، رسول اقدس عَلِينَةً نِي اس آيت كي تفصيل وتشريح مِن جونماز يوهي اورسكماني ووان الفاظ يريجي زیاد و تواتر عملی کے ساتھ محفوظ ہے، ای دن ہے ہر محیداور ہر اسلامی گھریش میڈماز تواتر کے ساتھ روھی جا رہی ہے۔ پڑھے ہوئے ان پڑھ مرد افورتی، بوڑھے بچ د پہاتی،شہری،سب میں بیمتواتر ہے۔جس قدر کج کی آیت،روزوں کی آیت، زکوۃ ک آیت متوار ب، لفظار سے برد کر مملی توار سے آئنسرت اللہ کا بتایا مواطریقہ

عُ بفريقة روزه اورخريقة زكوة الابت ب- آباس متوارّ فماز متوارّ طريقة ع كوفلا يحق یں یا بھیج؟ اگر آب متوانزات کو غلط بھیس کے تو کتاب اللہ شریف سے بھی ہاتھ دھونا پڑے گا۔ اُرسیج بھتے ہیں تو بیطریقہ سنت ہے ہی ثابت ہے، پھرانکار کیے ہو سکے گا۔

 (۳) آپ نے لکھا ہے کہ حدیث کے بارے میں اللہ تعالی نے قرآن کے علاوہ تھی چیز کی حفاظت کا ذمہ نبیں لیا محترم اسنت قرآن کا ہی بیان ہے، آپ یہی فرمانا چاہتے ہیں کہ اند تعالی نے آیات نماز کی حفاظت کا ذمہ لیا ہے محرطر یقد نماز کی حفاظت فيل مولّى - آيات ع كي حفاظت كا ذمه ليا بي تيكن طريقة ع بالكل محفوظ نبيس ربا ميجر صاحب! آب ہے کوئی کیے کہ آپ فکرنہ کریں میں آپ کے مکان کی تفاعت کروں گا۔ اب خدانہ کرے ذخمن آپ کے سارے مکان کی اینٹ سے اینٹ بجا دے، محروہ حنى جس برتكها بي مكان مجر الملم خال صاحب وومحفوظ رب تو كيا آپ مكان كي حفاظت كاليمي مطلب بجحت مين محترم إخدان كرے كيا آب بحثيت مجرياكستان كى حفاظت كا مطلب صرف افظ بإكسّان كى حفاظت مجصة جين يا يودے ملك بإكسّان كى حفاظت_سب مسلمان اللم اورمعني دونوں كوقر آن مائے ين، اس لئے اللہ تعالى في قرآن پاک کے الفاظ اور اس کے معانی وونوں کی حفاظت فرمانی ہے، ای معنی ومفہوم کو سنت كيتے بيں۔

كتابت حديث:

(٣) آپ نے صنور اقدی عظیم کی حدیث میان فرمائی ہے کہ قرآن کے علادہ کوئی اور چیز ناکلسور جس نے قرآن کے علاوہ اور کوئی چیز کلسی ہے اسے مٹادے (مسلم) مجرصا حب؛ آپ نے برویز صاحب کی کتاب پرامتا و قرمالیا، ورنداگر سیح مسلم شریف

خود کیے لیے تو آ بو الفاظ بھی ملے کرآ ب عظم نے فرمایا میری مدیثیں مان کروہ اں بیں حرج نہیں، بال جس نے جھ پر جبوٹ بولداس کا لھ کاند دوز نے ہے (مسلم ج ۲/ ص٨١٣) محترم! كيا قرآن ياك بي ال قتم كي خيانت كي اجازت ہے؟ خيس اور يقيعًا نہیں۔ آپ نے کتابت حدیث ہے منع کے لئے کوئی قر آئی تھم بیان نہیں فر مایا، ایک عدیث کاعی سارالیا ہے۔ محترم! ہم آپ سے اس انساف کی توقع رکھ سکتے ہیں کہ النابت مديده ك جوازى احاديث كوجى ويش نظر ركة كركوني سي فيعل فرما كي ك-جب رسول الله ع عن عفرت مرو بن حرم كويس كا عامل بناكر بيجا تو ايك كماب مجى لكوكروى جس مي فرائض اسن اورويت ك مسائل ستے (نسائى ج الص ١٦٨) آب عظی فی فرمایا: اکتبوا لابسی شاه. ابوشاه کولکو کروے دو (بخاری خااص۲۲) حضرت عبدالله بن مروين العاص في اصاديث كالكفف ك بارويل إو يحا آب علي نے قربایا لکھا کرو، غدا کی متم اس مندے حق کے سوا دوسری بات نیس لگلتی (ابوداؤرج ا/ ص ۱۵۸) ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ نے زکوۃ کی احادیث لکھ کر دس (بخاری جًا/ ص ۱۹۴) صنرت مرا نے ریشم کی حرمت کی حدیث لکے کر بھیٹی (مسلم ع ۱/می ۱۹۱) حضرت علیٰ کے باس کلھی ہوئی اصادیث کا صحیفہ تھا (بخاری ج ا/ص۲۲) حضرت عبداللہ بن مروًّا عادیث لکھا کرتے تھے (بٹاری جا/ص۲۲) حسرت ابوہریرہ کے پاس حدیث کی بہت سی کتابیں لکھی ہوئی تھیں (جامع بیان انعلم ج الرس ۲۲) ھفرت سمرۃ نے احادیث کاصحینهٔ لکھا تھا (ترزی کاپ الدیوع خ/ص ۴۸ م) حضرت سعد بن عبادة کی حدیث کی کتاب بھی (ترندی فی الاحکام) حضرت ابوسعید خدری جومنع کی حدیث کے رادی ہیں وہ خود فرماتے ہیں کہ ہم حضور ملطقہ کے باس بیٹھ کرآپ کے ارشادات لکھا

کرتے تھے (منداحمر) خود حضرت الوسعيد خدريؓ نے • ڪالا أحاديث روايت کی جيں۔ ان سب احادیث کوسائے رکھ کرعلاء اُمت نے مجی فیعلہ کیا ہے کہ قرآن کی آیات ہے اس طرح خلط ملط کرے احادیث لکھنا کہ قرآن اور خیر قرآن میں لوگ امتیاز نہ کرسکیں اس منع فرمایا اورانگ احادیث لکھوا ئیں، لکھنے کا تلم بھی دیا (نو دی ج ۴/ص ۲۱۵) (۵) آپ نے تر مرفر مایا ہا حادیث کے بیٹ کرنے دالوں کو بھی بہت ی احادیث یں قبک تھا اور اُنہوں نے کتاب میں شامل نہ کیا۔ محترم! یہ عد ثین پر بہت بڑا بہتان ے۔ کسی محدث نے یہ بات نہیں فرمائی۔ آپ جب محدثین کی بات کریں تو ان کی اسطلاحات کا مجمنا ضروری ہے، محدثین سند کو حدیث کہتے ہیں، مثلاً حضرت کا قرمان ہے جو جھے پر جھوٹ بولے وہ دوز فی ہے۔ آیک محدث نے بیریان جارسواسا تذو سے سنا تو وه اي اصطلاح بين ان كو جارسواحاديث كيه كا-اب أكر وه كتاب بين أيك يا دو استادول کے واسط سے برفر مان درج کروے تو ای یاک عظ کے فرمان کا ایک لفظ مجی خیس چھوڑا، اگر چھوڑا ہے تو اسے اساتذہ کے ناموں کو، ند کی شک کی وجہ سے بلک طوالت کی وبدے۔اب جب ایک ووج سندوں سے اُسے نقل کردیا تو جمیں اس کی صحت کا یقین آ گیالیکن اگراس محدث نے بیجی بتادیا کدمیرے پاس تواس کی جارسو سند س تھیں، میں نے بیاں صرف دولکھیں تو جارا لفین ادر بزھے گا نہ کہ شک پیدا ہوگا۔ تو محدثین نے لاکھول اسانید کاؤکرائے اورطلباء کے یقین کو بڑھائے کے لئے کیا ب ر کر فلکوک کے بیان کے لئے۔ بال فلکی مزاج کا کوئی علاج مبیں ، أے تو ہر يقين مظلوك نظراً تاب-

(٧) آپ تر يرفرمات بين كداهاديث ك جموع رسول كريم كي وفات ك ٢٠٠

ے ۲۵۰ سال بعد مرتب ہوئے۔ یہ انسانوں نے مرتب کئے ،اس لئے ان میں تلطی ہوسکتی ہے۔ محترم! اُگر محسوں شافر ما تمیں تو مجھے یہ بات عرض کرنے کی اجازت دیں کہ آپ کی عبارت پڑھ کر میں اس بتیجہ پر پہنچا ءوں کہ آپ کا دینی مطالع بحض محدود ہی نہیں بلك كالمعدوم ب- دوسرت بدكة آب في صحابة كرام كي حضور اقدى عظافي ي عقيدت ،عظمت اور محبت كانمهايت حقير انداز ولكايا يب مصابه كرام اين محبوب اورمعظم چغبر ملط کے ایک ایک بات کو یاد کرتے۔اس کے خدا کرہ کے لئے علقہ بات دران قائم كرتية ، ذرا أن كي مرويات كا انداز و لكا تين ـ

حفزت الوهريرةُ (۵۷ه) كي احاديث ۵۳۷۳، حفزت الوسعيد خدريًّا (٣٦) تعداد • كاا، حضرت جابرين عبدالله (٣٠٠ه) تعداد ١٥٢٠، حضرت الس بن مالك (٩٣هـ) تعداد ١٢٨ ، حضرت أم المؤمنين مالشه صديقة (٥٩هـ) تعداد ٢٢١٠ ، حضرت عبدالله بن عباسٌ (٦٨ هـ) تعداد ١٧٢٠، حضرت عبدالله بن عمرٌ (• ٧هـ) تعداد ١٦٣٠، حضرت عبدالله بن عمرةٌ (٦٣ هـ) تعداد ٥٠٠، حضرت عبدالله بن مسعودٌ (٣٣ هـ) تعداد ۸۴۸، طبقات این سعد کے مطابق جن تابعین نے اپنا مقصد حیات ہی اشاعت حدیث بنالیا قعا ان کی تعداد مدینه منورو مین ۴۸۸ ، مکه مکرمه مین ۱۳۱ ، اور کوفیه مین ۳۱۳ تھی۔احادیث مقدسہ کے جومجنوعے آج مطبوعہ شکل میں دستیاب ہیں ان میں صحیفہ ہمام بن منيه (١١١ه)، مندامام اعظمٌ (٥٠١هه)، مؤطأ امام ما لكُ (٤٥١هه)، كتاب الآثار اني يوسف (١٨٢هه)، كتاب الآثار امام محدٌ (١٨٩هه)، مؤطا امام محد (١٨٩هه)، كتاب الجية على الل المدينة (١٨٩هـ)

جناب مجرصاحب! جس طرح ونیاکی تاری فی سمی ایک ون کی مجمی نشان د ہی نہیں کی جاسکتی جس ون سورج طلوع نہ ہوا ہو، ای طرح اسلامی تاریخ میں ایک ون

بھی ایا نہیں بتایا جا سکتا جس دن سنت وحدیث کی دراں و تدریس میں مسلمانوں نے کوتای کی ہوئے ترم! آج پوری دنیا میں قرآن سات قاریوں کی متواتر قر اُنوں میں علاوت تورباب، كياآب ال عي يتي تكالح بين كدان قارى صاحبان عديم مسلمانوں کے باس قرآن تیس قارمحترم البلی صدیوں میں احادیث کے وجود اور حفاظت كا الكار ايها بن ب جيك كوئى عقل مند يون كيدوك كداسلام كى ابتدائى دو حند يول بين جائدادر سورج كا وجود فين قعابه

(4) آب نے قربایا ہے احادیث بر ضرور عمل کریں لیکن ان پر جو قرآن کی آهایم ے نہ کرا کس (ص)۔

بخاری شریف کی تمام احادیث آ تکھیں اور دماغ بند کرے مائے والی قبیں، ان احادیث کو بھی سویج بجوکر اور قرآن کی تعلیمات کے ساتھ مقابلہ کرتے پھران پر عمل کیا جائے (من٥) گویا احادیث آپ کے نزویک بھی واجب العمل ہیں تگر جو احادیث قرآن کے خلاف ہوں ان برعمل ند کیا جائے ۔اس کے بعد آ پ نے بیخ بخاری شریف کی 1277 أحادیث میں صرف 11 أحادیث کے بارے می فرمایا ہے کہ جھ جیسا برااور یا لی انسان بھی سوچ نہیں سکتا کہ بیاحادیث رسول کر پر انتخاف کی ہیں۔

محترم! جمیں کتنی خوشی ہوتی اگر آب ان ١٧- أحادیث کے خلاف ایک ایک آیت قرآنی لکھ کر بھیج ویتے اور بخاری شریف کی باتی ۲۷۴- احادیث برقمل اور ان كى اشاعت اور وعوت مين مصروف موجات يمين بحى اندازه موجاتا كرآب في قرآن ياك اور بخاري شريف كا مطالعة أتحليس اور دماغ بندكر كينيس فرمايا محترم! بخاری شریف کو مرتب ہوئے تقریباً ١٤ صديال دونے والى جي ، برصدي من كروزون

مسلمان رہے، کیا آپ ہرصدی میں کروڑوں مسلمانوں میں سے صرف ایک ایک نام باحوالہ ویش فرما سکتے ہیں جس نے قرآن اور بخاری شریف کا مطالعہ آپ کی طرح آتھ ہیں اور دیاغ کھول کر کیا ہو یا ان ۱۲ صدیوں کے کروڑیا مسلمان صرف آتھ ہیں اور و ماغ بند كر كے قرآن ياك اور بخارى شريف كا مطالعة كرتے رہے ہيں۔ تمام مسلمانوں کے بارے میں میدر بھارتھ آپ کی تھوگ ایجٹسی سے ڈی تکل رہے جن اور ایٹا یہ گناہ آ ب علماء كي مرتحوب رب بي -اب جم نبرواران احاديث كوليت بن :

(۱) آپ نے لکھا ہے پھر کا کیڑے لے کر بھاگنا (بخاری ج)/ص ۲۰۰ جا/ ص ٨٣) آب نے بیٹین تحریر فرمایا کہ بیکس آیت کے ظاف ہے۔ اللہ تعالی فرماتے ہیں: بعض پھر ایسے ہیں جواللہ کے خوف ے گر پڑتے ہیں (سورۃ البقرہ ۲۰۰۷) اور فرماتے ہیں جم نے پہاڑوں کو حفزت واؤ وعلیہ السلام کے ساتھ منز کردیا، وو پہاڑتیج پڑھا کرتے تھے(الانبیاء: 24) اور ملکہ بلقیس کے تخت کا ہزاروں میل ہے آ تکو جھیکتے آ جانا (انمل)۔ کیا قرآن باک کی ان آیات اورانشر تعالی کی لامحدود قدرت کا اکار کرو گے۔

 (۲) مؤی علیه السلام کا ملک الموت کوظها نیجه مارنا (بخاری جا/ص ۱۷۸ می آ) ص ٨٨٨) اس مي اعتراض كيا ب اوريكس آيت كے خلاف ب_ فرشتوں كا انساني فنل میں معزرت ابراہیم علیہ السلام اور نی فی مریم کے پاس آنا آپ نے قرآن میں برها ب اور معترت موی علید السلام كا حال كدايك آ دي كو مكم ماركر مار والا (سورة القصص: ١٥) بزے بعائي كوسر اور وازهى سے بكر ليزا (سورة ط: ٩٣) آب نے يقيينا قرآن میں پڑھا ہے اور جو جان لینے آجائے اس انسان کو دفاعاً طمانچہ مار دینا کس آیت کے خلاف ہے۔

میں تعداد مختلف ہے: ۹۰،۷۰،۹۰،۷۰ کمر آخر بیکس آیت قرآ فی سے فلاف ہے وائز کہو أكه يخل شرفيض آنا تؤكيا هفرت بليمان طبيه السلام كالرندوب كي بولي جائة وان تحقق

كالمبح شام أيك ابك روى مسافت في كرن مدقر آلي بيان آب كي عمّل عن آيا ہے..

ا حضرت ازا تاہم سایہ المان ما کا فقائد (بھاری ج الس النام) بر ممل آیت کے شاف ہے، جب اند تعانی کا محتم آیہ آ ہیں نے خود اینا ختند کرایاں

المعفرت ابراہیم عابہ السلام کے تین بھوت (بخاری خالم من ۲۸۲) یہاں تع پٹل مراہ ہے نہ کہ حجوث خیتل ہیمی اپنے ابچاؤے کے لئے کی بات کہنا کہ شکلم کے ذ مكن على مراه ادر يو اور مخاطب اور مجووجات وجيب معفرت الوبكر في الجريد كي رات فرباله وجسل بصلبيني سعين أكبزك وبن عراتها كرهنور علي محصانك أراه وكعا رے ہیں۔ ٹی طبیعن سیجے جنگل ہیں داستہ بتا رہے ہیں، چنانچے معترت ابرائیم طبیہ اسوام نے جب قرمایا: بال فقلة تخبار فقر آب عليدالمارم كى مراديتى كريرب سے بزے (الله) كَيْمُ مَع مِن بُوارِ وَوَ مَجِع لِرَابِتِهِ مِرَادِ مِنْ أَبِ مِنْ فَرَوْيا: السي مسفيع. آب عليداسلام كى مرادتمى من تمبار _ كفروسرك بيدور بدل، دو سمج بارين وحفرت سارہ کو آ بٹ نے ویٹی بہن فر مایا ء والمنتقی بہن سمجھے۔ ڈکر لفظ کندے ہے آ ب پریشان بوكة بْلَوْ قُرْدُون بِأَكُ كَلَّ إِلَا عَبْسَنَ وُمُولُسِي الْ حَلَّهُ أَالْاعْمَى (مورة الصلى ١) وَالسَّمَعُ قِبْلِ لِلدَّسِكُ (مورة حمد ١٩) عَنصَنِي آدُمُ وبَّلَهُ فِعُوى (مورة ط: ١٢٠) هندًا مِنْ عَهُلِ الشَّيْطُن (مودة التّعقم: ١٦) جمل طرح آبِ وَمِب رصيالته عمل شیطان کی تاویل کریں سکے ڈاکٹریپ کی جسی جو بل فرولیں۔

- (۲) 💎 گر گفت کو تھے بھاری می فولیق فرمایا ہے (بھاری، خ انزم ۴۲۹) اور اس کے زام ہوئے کی بھی وہر ہے، بیٹی اس کا زہر بند اور موؤ کی ہونا، تو ہے یات قرآن یاک كَ مَن آيت كَ فَاف بِ كَن بِي آيت كَ فلاف نين، بكدآيت يُدخرو فليهد اللغنانية كانتال كاتغير ب- بان آب أركزكت كوصال بجيته بين قرقر آن ياك ے اس کا جوت بیش فرما کیں۔ رہائر کا صفرت ارائیم علیہ السلام کی آگ کو چھونک مارنا ق باس کی حرمت کی جدایس بک اس کے خانف عل سے آیک خانف کا ڈر ہے۔ باندی شریف کی حدیث عمران کوحرست کی طبت برگز قرارشین دما۔ بشرطیندرد دن کوآنم کلیسیں کول - کریز**ھا**جائے۔
- (۵) معزت آدم عليه السلام كه قد كالأكرمة بث بخارك ينا المن ١٨ جمير بيعات آپ سندامتراش کی وجہ تہ کی مصاور نہ ہی اس کے خلاف کو کی آبیت قر آ فی ویش فر ، کی ے اور آب خود فروستے ہیں کہ جوجہ بے قرآن سے زیمراتی ہواں کو بانا ضروری ہے۔ (۸) – نمازیں کیجے فرض ہو کمی (ہؤری، خالاص اع^م) اس پر بھی جناب نے تہ ہد اعتراض بیان فرمائی ہے اور شانق الی کافر آن یاک کے خلاف ہونا فابت فرمایا ہے۔ آپ تو اندجیرے میں پھر پینکنے کے عادی ہیں۔
- آ تخضرت علی کا ایک دوسرتید ایک می رات محمد از داج مطبرات کے بال ودروقرمانا اور معزت الن كافرانا كدة ب عَلِينة كونمي مردول كي طاقت وي في حَي (بغاری ن اُرس ۱۹۰۳) ای جگه مجی آپ نے اعتراض کی جد بیان ٹیس فر انی کہ آپ کے لزديك مودركا خاشة كاليدور وكزاوتها تؤكم أيت قرائل ك فلاف ووف كي وجديدي حعرت اسُ کا فرین قرآن یاک کی کس آرہ کے طاف ہے۔ میجرمیا ہے! آپ

اسے کسی ہاتھے کو جاری شیٹ یا شوکا زانگس ای طرح مہم بی دیا کرتے ہیں، ہرگز گزیں ، ہجہ بوری تنصیل سے بیان فرمائے ہیں۔ بیبار بھی دل کی بات بیان فرمائیں۔ (۱۰ ام) - هالت خيش پيل مراشرت (بخاري ٿِ الرص ۾) روز و پيل مراشرت (بخاري (164 J/12)

میجرصا ﴿ بِ الحديث مبافرت ع احرّاض بيها نيون اشيعوما بيمراً دمج مبائث کیا تحر مباشرے کا تفیق معنی بوس و کنار چھوڑ کر اس سے مجامعت مراہ لے کر واکر آپ مجی اس اعتراض میں اُن کے ہم نوا ہیں تو بیائیٹ سفید جوٹ ہے ، کوئل جب مہاشرے کی آزیر ٹودیٹنکسنے فرمادی کیان یہ فیسلھا ویسسٹ لیسامھا وہو صائع (شغش نٹ) اور بھاں تا بھت کے منٹی ہے مدافر آئی کے لئے ایکے بھلک اوید (بھار ک جَارُهُ ٢٣٠، مسلم ج أص ١٦٠) موجود إن قو اب ان كا ترجيه محامعت كرنا إخاري شریف اور رمول اقد می مانشگه مرجوب سے ویلکہ میج بخاری ج الم من ۴ مرود ت ہے۔ حطرت أم الهوشين ما نشر مدينة قرماتي جين كبان بالعربي فانؤر فبها شوني آب مَنْ فَيْنَا مُحِينَا إِذَارِ بِنَدِي مِنْدِ مِنْ وَعَنْهِ وَالِينَّةِ وَبِكُو مِنْ الشَّرِينَ فَرِياتِينَ وَجمل عبل مباشر = بمعنى رتهارة كي صاف تفي بينه مهند جس كا انجام ووزين بينه اورة ب أثر ان معاويت على معنى ہوں و کار بن مواد بیٹے ہیں تو فرائے ہے گئی کس آ بعث قرآ تی کے فااف سے۔ پھھ صاحب الدينا کے اردگرو ميرو آياو تھے، جو مالت ميش ميں مورت کوالگ کرے ميں رہنے پر بچیور کرتے ، وو ہے جاری ان دؤن میں سب سے کی گی رہتی اس مجاورت کا الرُّ على مدينة يربمي تماية بيه و مُلِكُّ لِيهُ الرُّحُلِم كَهُ خلاف آواز أَحَاقُ مُرجِوفِهِ عِنْسِ اس ہرینج تھیں ان کے ذہن میں ہیر ویشاتھی کہ بیو میود کی طرح و نکل اس کو الگ نہ کر دکھر

پر مجى طبيعت من كرابت تو تقى - آ مخضرت عليك يه غير شرى كرابت بعى طبائع س تكالنا طاع يت قي آب ملك في جب فود بيندايك مرتبد يفعل فرمايا توسب ك ول ے بے کشک نقل گئی۔ پیجر صاحب ا آپ بات صاف نیس کرتے ، بے فرمایے که اگر آپ کوآ خضرت عظیف کا یکھل قابل احتراض نظر آتا ہے تو آپ اس کے مقابلہ میں میودی معاشره كوزنده كرناجاج بيل-

(١٣) آپ نے لوٹھ بول سے جماع کی سرقی جمائی ہے اور بخاری ج ا/ص ٢٩٥٠، ج العن ٢٨٥ = الوسعيد كى مديث كا حوالدويا ب، الرآب اوطرى = جماع كوجائز میں ہجھے تو پہلے قرآن پر اعتراض فرماتے جس میں اس کی اجازت ہے۔اس حدیث من جواصل سند تحاوه يرتفاكركيا بم اوغريال عرال كرعة جن؟ آب الله في فرمایا: اس کا کیا قائمہ جو بچہ پیدا ہونا ہے وہ ہو کررے گا۔فرمائے ایس کس آیت قرآنی کے طلاف ہے۔ آپ کے ناقعی حوالہ جات و کی کر یہ یقین ہوتا ہے کہ آپ نے سیج بخاری شریف کا مطالعہ شصرف د مان بلکہ آئیں تھی بند کر کے کیا ہے۔

(۱۳) آپ نے عنوان ایوں لکھا ہے " شرم گاہ کے علاوہ کی دوسری جگہ ہے مباشرت ۔ "معلوم ہوتا ہے کہ آ ب کے ذہن میں یہ ہے کہ عالمہ اولا کی سے فیر فطری مقام می سجت کرنا جائز ہے۔ اگر برمطلب ہے تو بالکل جھوٹ ہے۔ یہاں برمسلدہ كدائك مال فنيمت مين مسلمان كوالي اونذي ملى جو پہلے سے حاملہ ہے،اب اس سے صحبت کرنا باجماع آمت حرام ہے، جب تک اس کارقم خالی نہ ہوں کیا اس ہے بوس و کنار جائز ہے یانبیں؟ اس میں اختلاف امام این سیرین امام مالک امام لیٹ ، امام ابوطنیفنہ امام شافعی رحمیم اللہ اس حاملہ ہے اول و کنار کو بھی مکرووفر مات ہیں۔امام عطالًا اس ہیں و کنار کو جائز نے والے ہیں۔ ان کا یک قول بخاری ج الوس ۲۹۸ پرکھل ہے۔ آب اس سناد كاعتم مراح آيت بيش أرمادين تاكدان كالفقاف بحي تتم براورآب ک قرآن وانی کا بھی ہمیں بید چل سکے۔

(۱۴) - آب نے تُر بر قربایا ہے متعد کی اجازت (بخاری ریم / ۱۹۳۸) یہ احادیث سنسوغ ہیں، امام ماذوی فرمائے ہیں متعد ابتدائے اسلام میں متع نہ تھا، چراس کو متع و منسوخ کردیا ممیا اوراس بر اجهاع بوگیابه من ش هند ۸ داور بخاری نیج و گرفس ۱۹۰۰ میر متن إفاري من سبِّه قال الموهسة الله ومينة على هن النبي لَلَيْكُ الله منسوخ. اس سے معلوم ہوا کہ آ ہے ہے بخاری شریف کا مطالعہ بالکل خیس فرمایا، ورنہ جس کے منبوخ ہونے کی مراحت بھاری ہیں ہے، اس کا جواز آ ہے بھاری کی طرف منبوب 2 1

(10) ۔ آپ نے عنوان کھا ہے ہاں کی بدوعا بورٹی ہوٹی اورٹز کے کوڑائے کا مندو یکنا یزار کئین میزیس بتایا کدآب کوامترامل مال برے کدائی نے جدعا کیوں کی یا مشاتعاتی مرکہ خدا نے ماں کی جوما کو تبول کیوں کیا جا اس مرکز ایک ٹیک آ دی کی صفائی کے لئے شرخواريك كيول بوالا اور بالآخراس كي عزت وعظمت لوكون شل كيول قائم بوقي -جس ثق براعتراض بواس کوداهیج فرما کردن کاخلاف قر آن جویا تابیت کرین تا که قود کیا جائے۔ (١٠) بيتاب ين كاظم:

علال جانوروں کے بیٹا ب کے پاک یا ٹایاک ہونے کا متلاقر آن پاک بی نبیں ہے، اس لئے اس بی جمیدین کا اختاف بوار امام اعظم ابر منیفہ اس کو نجاست خفید فروجے میں اور امام محمد پاک فرائے میں ، حالت اصطرار میں تعلق حرام اور نجس مثلا خزر تک کے کھانے گی اجازت قرآن پاک میں موجود ہے، کیا آپ یہاں بھی اضطراد

کا ذکر حذف کر کے قرآن پر احتراض کریں گے کہ خزر کھانے کی اجازت قرآن کیے

دے مکتا ہے جھے جیسا پائی انسان قویہ موجود ہے، تو آ مخضرت ملکے قوصاحب دق بخس قطعی کے استعال کی گئیائش قرآن میں موجود ہے، تو آ مخضرت ملکے قوصاحب دق سخے ان کو اگر بذراید دقی لیقین ہوگیا ہو کہ ان کی شفاای میں ہے اور آپ علیہ نے مالت اضطراد میں اجازت دے دئی تو اس میں کس آرے قرآن کی شاخت لازم آئی کہ مالت اضطراد میں اجازت کو بائے گئے کے تیار نیس۔ آپ قرآن پاک سے طال جانوروں کے بیٹا ہو کہ استعال حالت اضطراد میں بھی جائز نیس فابت کریں۔

آپ اس حدیث کو بائے کے لئے تیار نیس۔ آپ قرآن پاک سے طال جانوروں کے بیٹا ہو کہ استعال حالت اضطراد میں بھی جائز نیس فابت کریں۔

آپ نے بھی جنادی کی ۱۲۵۲ مادید میں سے ان ۱۲ - روایات کو بائے نے انکاد کیا گران کو فلا ف قرآن فابت کرئے میں آپ سوفیصد ناکام رہے ہیں اب تو نویوری بخاد کیا گئی داجب ہوگئی۔

آپ نے آخریں ہیں جی تحریز رایا ہے کہ علاء جھے پر کفر کا فتو کی وائر کرنے کی موجی سے بحض میں ہوتا، ورنہ علاء تو آج سے تقریباً موجی رہا ہے۔ موجی رہا ہوتا، ورنہ علاء تو آج سے تقریباً موجی سال پہلے اس فرض سے سبکہ وش ہو بچھے۔ مؤلف کتاب مقام مدیث کے بارے میں کتاب شائع فرما بچکے۔ علاء آمت کا متفقہ فتو کی پرویز کا فر ہے، شعبہ تصنیف مدرسہ عربیا سلامیہ جامع مہم نیوٹاؤں کرا چی فمبرہ، یہ تقریباً ۲۵ مفات کی کتاب ہے۔ اس میں علائے عرب و جھم کے تقریباً ۵۰ مالاء کے و جھلا ہیں۔ پہلی فرصت میں اس کا مطالعہ فرمائی اور اپنی ایمان کی و وات کو محفوظ فرمائیں۔ اس کا کوئی میں جواب اب میک فیل آ

آخر میں آپ نے علاء کے بارے میں بدگمائی ظاہر کی نے کہ ووکفر کے تھوک فروش ہیں۔ مجرصاحب! علام کی گواس وقت تک کافرشیں کہتے جب تک اس کے کفر کی وجد دو پہر کے آگاب سے زیادہ واضح شاور دیکھتے علاء نے قادیا تیوں کے كفر بر حنفتہ فیصلہ دیا ہ آپ جیسے ایک کروڑ میں ہے ایک فرد نے یہ بدگمانی ظاہر کی گھر جب عدالتوں میں قادیانیوں کا كفرزىر جحث آیا تومسلم نتج صاحبان نے بھی ان سے كفرير عى نصلے دیئے۔ اسمیلی عیں بحث آخی تو تمام قانون دانوں کی موجود کی عی ان کے کافر ہوئے کا بن فیصلہ ہوا۔ پرویز پر جب علماء نے متفقہ کفر کا فتوی دیا پرویز کتنے سال زندہ ر ہالیکن دواس فتوے کو نہ عدالت ٹیس چیلنج کر سکا نہ آمیلی میں۔ دو جانتا تھا کہ علماء نے میرے کفرے نوٹی میں کوئی اندجرے میں تیرنیس مادا، بلکہ ہر وجہ کفر کو روز روثن کی طرح وانفح کرتے فیصلہ ویا ہے۔محترم! جیسے ڈاکٹر صاحبان کی کومریش بناتے نہیں بلکہ اں کا مرض بتاتے میں ای طرح علما یکی کو کافر بناتے نہیں ، باں اگر کوئی بدشتی ہے خود كافرين جائ تواس كاكفريتا ويت ميں-كياآپ كے خيال ميں قرآن ياك في كافرول ك كفركا ذكرنيس كيا- يقينا كيا ب- تو آب كفركو كفر كين يول عارمحسون كرتے ہیں۔ ميجر صاحب! آب متوارّات كو مانتے ہیں یانبیں،مسلمانوں كى متوارّ المازكوة بقرآن كے خلاف ثابت كر كئے بول توجت كريں ، اگر متواتر المازكوني مائے مِن تو وه قرآن ے ثابت کردیں۔ مجرصاحب آپ بیتح میفرمائیں کہ دفات برآپ كونسل ديا جائے يانبيں ، كفن كتناويا جائے ، جنازہ كالكمل طريقة لكه دي اور قبر كس زُخ کووی جائے، قبر میں آ ب کو کس زخ لٹایا جائے۔ یہ سب قرآ ن پاک سے ثابت فرمادیں۔ بیفرمائی گدھا، کنا، چیتا، اومزی، آلو، گدھ، بندر، پچوا، سانب، چیکلی طال مِيں يا حرام؟ قرآن ياك كى آيات سے ان كا طلال يا حرام بونا ثابت فرماديں ۔

رساله "صراطِ تنقيم" پرایک نظر

بساسيارتمن الرحم

تَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكُرِيْمِ. أَمَّابَعْد :

تحرى! السلام عليكم ورحمة الله!

آپ کامرسلا اصراط متعقم "رساله کا تراشا ملا جو کسی فیر مقلد رساله سے لیا گیا ب-اس کے مند دجات کے بارے میں چندگز ارشات معروض ہیں:

چندخوش فہمیوں کے جوابات:

(۱) میرصاحب فرماتے ہیں کدونوت اہل حدیث خالص کتاب وسنت کی اتباع کا نام ہے۔

جواب: مير صاحب! قرآن وحديث مين كى فدتبى فرق كانام الل حديث فدكو رئيس - آخضرت عطي في ميني في في في في في الكرميرى أمت من الكر جهونا سا قرقه بوگا جس كاجر عالم، جابل، فاسق، فاجر، بچه، بوژها، مرد، مورت الل حديث كهلايا كرے گا اور اس كى دموت خالص كتاب وسنت كى انباخ بوگ - جس فرقه كانام من كتاب وسنت سے نابت فيس اس كى دموت اور كام كاكتاب وسنت سے كيا تعلق؟

(٢) الل حديث كالفظ قرآن وحديث ثمن تو موجود بي تبين، البيته بعض أمتع ل كي

كر يول ش الل حديث كالفقال بيد

چواب: ده کی زبی فرقه کا نام بین بکنلی ابتدکانام ہے، جس طرح مغسرین کو پیل قرآ منا لکھتے تھے اس طرح محدثین کو اٹل حدیث تھا جاتا ہے۔ یہ محدثین اٹل سنت والجماعت كماب وسنت واجماع اور قاس شرقی كے وسنے والے اور شرواران ش ہے کی وکن کے مقلہ تھے جیسا کہ کئی طبقات میں موجود ہے۔ ان محدثیں نے این کابوں میں نقہ کی تعریف سے باب باتھ ہے۔ فقیمی سیاکی بیان سے۔ ان لوگوں نے ا ٹِی کمایوں میں جمقدین کی تقلید کے شرک وائروم ہونے کا کوئی باب نیس باند حا، زیمی انزیدار ہو کے قباس کوشیطانی قباس کیا ، ندان کے مقلد بن کوابوشیں اور بیود وفساری ک طررتا مشرک و کافر کیا، البتہ انگریز کے دور ہیں جس طرح مشر بنا حدیث نے اینا : م الل قرآن رقعاً كريدا ملان كيا كراهل قرآن كي دموت خاص قرآن كي دموت سنان کی دہوت میں خالص تو بیعہ ہے، شرک کا شائیہ تک نہیں وای طرح انگریز کے دور میں الک فرقد نے اپنا ایم ایک حدیث رکھ کر بیشور مجایا کہ ایادی دموت خاص کاب وست ہے ، ان عمل ندی دنین کی تُرافکا موجود جیں ندی ٹھی کی طورے سافقہ کو ماسنتے ہیں بکر شیعہ وخوراج کی طرح کھل کر اجمال و قیاس کے مشمر اور فقہ نے کانف ہیں۔ انسہ جہزریٰ کے قباس کو شیط ٹی قبامی اور انتہار دید کے مقلدین کومشرک اور ہدگی کہتے ہیں ۔ جس طرح تا و باقی قرآن میں عمل لمظار وہ و تیجھے میں تو اوٹوں کو دعوکا و ہے ہیں الدويكود قرآك يك على عادب شرريوه كانام به مرتبه دب شركراجي وراو پيندي، عغروکا نام کیں قرآن مدیث میں نیں۔شیعہ قرآن باک تیں جہال انغاشیعہ و کھائیں اس ہے اپنے فرقہ مراد لیتے ہیں۔منکرین حدیث جہاں کمایہ انتدیش قرق ن کا لفظ و کھیے لين يا حديث شن الل قر آن كالنفا و كيه لين و وحوكا ديية بين كه يه جارت فرقه منكرينا صدیت کا ذکر ہے۔ ای طرح بیفرقہ جہاں الل مدیث کا تفظ دیکھ ہے اپنا فرقہ مراد لے

کرلوگوں کو دھوکا دیا ہے۔ محدثین علی ادران علی ایسا علی فرق ہے جیسا فرق حضرت
ایرا ہم علیہ السلام اور مشرکیین کے بنائے ہوئے بت علی تھا جس کا نام وہ ایرا ہیم دکھ
لیسے تھے۔ یہ اس مقدل نام کا ایسا علی غلو استعال کرتے ہیں جیسے مرزا کا دیائی مبدی
کے مقدس افظ کا اپنے لئے غلو استعال کرنا تھا۔ انھریز کے دور سے پہلے کی علی مدیت
سے جال داسا والرجال سے ناواقف بنم جرح وقعد یل سے بر بہرہ پر کھی دال مدیث
کا افظ استعال تیس ہوا۔ یہ تیامت تک بھی ایسا عوالہ ویش تیس لرنے والے والے دور

قیام حثر کیوں نہ ہو کہ اِک کلیجڑی میخی کرسے سے حضور بلیل جنتاں اوا ایخی

(٣) یہ وہ ہوا عدت ہے جو تو حیر کو ہر کم کے شرک کی آ میزش سے جدا کرتی ہے۔
جواب:

ہواب:

اس فرق کی تو حید کو اہل می اہل سنت والجماعت کی تو حید ہے کوئی تعلق فیصل سے تو حید سے کوئی تعلق فیصل سے تو حید سے تام پر جوزات میں تاہ بیات باطلہ کرتے ہیں (دیکھوا مولوی تاہ اللہ کی تغییر المقرآن یکام الرحمٰن) کرامات اولیاء کا خداق آزات ہیں، حالانکہ مجزات و کرامات کا تعداق آزات میں اللہ تعداق آن ازان خدات آن ازان خدات آن کے حلم و قدرت کا قداق آزات خدات آن ازان خدات آن کے حلم و قدرت کا قداق آزان خدات آن ازان ہے کہا اللہ تعداق کی کے حلم و قدرت کا قداق آزان کا تام می تو حید ہے؟ ان کی تو حید ہے کہ اللہ کے کام سے تعرک ماصل کرنا شرک ہے۔ ان کی تو حید کا حید کا حید کا تاریخ ورسلم و شرک ہے۔ ان کی تو حید کا حید کا تاریخ ورسلم و شرک ہے۔ ان کی تو حید کا حید کا تاریخ ورسلم و شرک ہے۔ ان کی تو حید کا حید کی تو مید کا در فاعت اپنی تو ورسلم و شرک حیات نیس (دیکھوا اسائیل سنتی کی کاریک کا ان کی تو حید ہید ہے کہ ایک کی تحد کیا ہے۔

بخادت کی جائے والی لئے الن کی قرمید کا تعلق الل منت والجماعت ہے کھوٹیل۔ آگر بیان کر بی خالص توحید کئے جی قرمان مستبش کو حید معتزلہ کی توجید تجریوں کی قرحید وقد ریوں کی توجیدان سے زیادہ خاص ہوگی۔

(۴) ۔ یہ هاعت منت کو بوعث ہے وک کرنے کی وجوت و بی ہے۔

جوائی۔ آ بیٹرق تو تو ہو ہائی ہے رسیا، وحرائیدان کی خانہ ساز بیداوار ہے اور بیالاک خود دور برطان یہ کی بیداوار چیں۔ فقد کا انگاء بدمت ہے ۔ جمائ کا انگار بدعت ہے ، تی ک شرق کا انگار بدعت ہے۔ اس فرق کے بطن فقت پرور ہے انگار حدیث ، انگار حیات، انگار فتم نیوے ، انگار مجزات وکرایات ، انگار سحاب انگار افل بیت کی برائیوں نے جم لیند جیس بات ہے کہ جو خود مرایا بدعت ہو، اسٹے برقتی کچوں کی باس ہودہ بدعت سے پاک ہوئے اور باک کرنے کا دخوتی کرے ، برقس نہذا مرفق کا فور۔

ہاں اگر بیر صاحب کیتے ہیں کہ ہم نے افل سنت میں فتنہ ڈالا ، انگریز سے چہاد کو حوام کرد کے اور سنت میں فتنہ ڈالا ، انگریز سے چہاد کو حوام کرد کے اگریز کے باتھ مغبوط کے تو ہم بیر شکیم کر لیلتے کہ اس جماعت میں بھی کوئی انسان کی بات کرسکتا ہے۔ بدیارت کوفا یے فرقہ کہا کا آن فرائنش تک اٹرا او بے سرکی بجائے ٹوئی پڑھے ، واڈل وجونے کی بجائے باریک براہوں پر سمح کردا کے وضو کے دو فرائنش ضائع کردے جس سے سینکڑ دول تو گوئی شائع کردے جس سے سینکڑ دول کوگول کی قمادی خارج س

> اندے یا تو محفتم و بغم دل ترسیدم که آذردہ طول ورنه خن بسیار ست

(ش) ۔ یہ جماعت کسی ایک امام کی تھلید کو اپنے اور واجب قرار دینے کی جو نے تر م امکر کے افکار واجتماد کی قدر کرتی ہے۔ جواب: تقلید تحقی کے واجب (بلغیر) ہوئے پر آمت کا اجماع ہو چکا ہے، اس اجھام کا فرکہ علامہ اس اجھام کا فرکہ علامہ اس جواب (بلغیر) ہوئے پر آمت کا اجماع ہو چکا ہے، اس اجھام کا فرکہ علامہ اس جائے گئے نے الا شباہ والظائر میں مطاحہ تو فرق نے شرح جامع اصغیر میں مطاحہ ابن جرحستال فی آئے فرق آلمین میں مطاحہ مناوی نے شرح جامع اصغیر میں وصرے ملاجون نے تقریر مظہری میں اور شاہ وقی ابنہ نے امان ایو مقد الجید ہیں، قامی شاہ دی ابنہ نے مجی وہی اپنی کتابوں میں فرایا ہے۔ خارتی اجماح اور تارک واجب کے وہی مورے ہیں ہورے ہیں فرو ہم بھی شریعیں۔ جب ہے کہ آب اس کناہ پر فقر کر رہ ہیں اور اور اس گناہ کے وہی میں فرہ ہم تیں اور اس گناہ کے وہی اور اس کناہ پر فقر کر رہ ہیں۔ اور اس گناہ کے وہی ہوئے ہیں۔ اور اس گناہ کے ماتھ یہ جبوت بھی بولا کہ ہم تمام اند کے افکار کا احز ام کرتے ہیں۔ میر صاحب! اگر چہ جبتہ بن بہت سے ہوئے ہیں میکن مرف چارائے کا فرہب مدون اور متواز ہے۔ آ پ نے بہت سے ممائل میں جاروں اماموں کو چوز رکھا ہے۔ مثلاً اور متواز ہے۔ آ پ نے بہت سے ممائل میں جاروں اماموں کو چوز رکھا ہے۔ مثلاً اور متواز ہے۔ آ پ نے بہت سے ممائل میں جاروں اماموں کو چوز رکھا ہے۔ مثلاً

- (۱) چاروں امام ایک جس کی علی طلاقوں تو عمل میں جم اس کوجیس ما ہے۔ (نو وی شرح مسلم)
- (*) میاردن او ماجاع کو جمت شرقی النے میں بقم سب کے خلاف اجاری کے متکر ہو۔
 - (٣) عبارون امام قياس شرقي كوجمت . في تين بتم مكر ءو .
- (٣) ۔ جاروں ماموں نے اپنی فقہ کے مسائل کو اس طرح مرتب کروایا کہ صرف مسائل ہوں وائل کا ذکر شکیا تا کہ لوگ بلامغالبہ ولیل کمل کرکے تعلید کریں ہتم اس تعلید کوشرک اور حرام کہتے ہو۔
- (۵) میلادوں اہام کہتے ہیں کہ جو تھی دکوئ میں اللہ جائے اس کی وہ رکعت بوری شار ہوگی بتم اس کے منکر ہو۔

- (۱) میارون اشد کا افغال ہے کہ بار یک جرابوں برمنے جائز تیں ہم اس سے مشر ہو۔
- (ع) ۔ وَدُول المامول عَمَا سے كُونَى المام مِحى ثَمَان سے كم تر لوت كے سنت يونے كا اللّ تَعِيْن بِتَمَاس كَن كَالْف بور
 - (٨) عبارون الم قال بين كدا الحرقرة ان عن شال بي يتم متر بور
 - (1) 💎 چارول امامول کی فلا حیات النبی ﷺ کومانتی برم بم مشر ہور
- (۱۰) سے اوروں اماموں کے نزویک ادام نماز جنازہ آ بستد کا واز سے برحائے، تم جاروں کے مقلاف بلند آ واز سے برحائے ہوں

کیا ای بات کو آپ کہتے ہیں کہ جم سب انٹر کا احرام کرتے ہیں۔ پھر یہ مجموعت نہ پولونا کیونکہ جموعت جولز منافق کی علامت ہے نہ کہ الل حدیث (محدث) کی۔ (۲) ۔ انگر جمجند میں کا جوجمی خیال قرآن وصدیث سے قریب تر جو معنبوط ولائل پر تاتم ہوں یہ جماعت اس کو بلاجون و چراقول کرتی ہے۔

چواب: اس کا مطلب قرید جواک اند جمتدین کے تمام اختلافات اور مسائل اور والاً ل پر جماعت لا فرہب کے برفرد کو مجاد ہے اور اس جماعت کا برفروائٹ جمتدین کے سمائل کی چوبی چینگ کرسکتا ہے۔ کس قد وجموعت، دینہ ولیری اور جرائت رندان ہے۔ بیدوائی قوائر سمحاج سنت شرکہ میکے سافتہ اس جمر، عظار نودی، این عبدالبر، علامہ این و قبق العید، عظار بینی ، علامہ زیاجی ، علامہ این الرکمائی ، صاحب مفکلو قامعال مد بنول رحم م اللہ کے جیسے حدید کے امام سادل عرفت یوشی جس کر اور کے مگر اتنا بڑا وجوی کس کے زبان وظم پر ش آیا۔ تیروسوسال کے عرصہ جس جم و کیھتے تیں کہ سب محد شین ، اوبیا واللہ ، فتہا و، سلاطین ، مجاہدین ان کی چوکف سے سعید نوی کے بیائے فوش کر دہے تیں۔ جب آب جیسے

عالم کوہم ان سب کے خلاف بغاوت کرتے دیکھتے ہیں تو ووثقشہ یاد آ جاتا ہے کہ جب آ مان وزمین کے سب فرشتے تو محدہ ریز بتھے گرایک ان سب کے خلاف "المسا محیسو حنه" كانعرور تداند لكار بالقا- اياز قدرخويش بشاس كتني يدى كتافى اورب حيالًى ب کہ اس جماعت کا ہر فرد اپنی جہالت اور کم علمی کی سوچ کو قر آن وحدیث کا نام دے، ا بني خرافات كومضوط ولاكل كا نام دے اور ائر مجتبدين كومور دالزام تخبرائے۔ بدايما بي ہے جیسے کوئی اعق مریض کے کہ میں سب ؛ اکثر وال کی قدر کرتا ہوں، ان میں ہے جس كانسخة قانون طب سے قريب تر ہواور مضبوط دلائل پر قائم ہواس كو بلاچوں و چرا قبول كرتا ہوں۔ ڈاكٹرى كى كتاب كا أردور جمہ لے كرسب ڈاكٹروں كا نذاق أڑائے ،ان كا مشخراً ژائے تو اس کی جگہ یاگل خانے کے سوا اور کیا ہو یکتی ہے؟ آپ کی یہ بات الیمی ی ہے کہ کوئی مزم چیف جسٹس صاحبان کے فیعلوں کا غداق اُڑائے ، ان کا استہزاء کرے، کمیا وہ تو تین مدالت کا مرتکب نیں؟ یہ جماعت اپنی اس بے جاحرکت کو حقیق کا نام وے کرخوش ہولے مگران کی بیر ترکت کناو کیرو ہے۔ آ مخضرت عظافۃ اس آمر بے بيعت لياكرت تحد أن لا مسازع الامو اهله (شائيج ١٥٩ ١٥٩) كركوني ناالل ابل کے ساتھ منازعت نہیں کرے گا۔ اس جماعت کے ہر فرد کا ناالی ہونا ہمارے مشابد واورتجریہ ہے ثابت ہے اور ائتدار بعد کا الحس اجتماد میں سے ہوتا ایراع أمت ہے ا بت ہے۔ اس لئے ان ناالوں کی منازعت مدیث نبوی عظی کے کالفت ہے۔ ای طرح آ تخضرت علية قرمات جي: اذا وسد الامنو السي غيسو اهله فانتظم الساعة العين من جب معاملات نااولول كريرو و في لليس تو قيامت يرآ لي- ويجهو-" جس طرح قیامت اس دنیا کو تباه و بر یاد کر کے رکاد ہے گی ای طرح بیانا بل لوگ وسن

الل کوچاہ اور باو کر کے دیکھو ایس گے۔

طريق امتحان:

مير مد حب آئي الرآب واولى على ع بين توجم ايك كيني مناكر آب كا امتحان لیں گے۔ایک طب کی کتاب آ ب تو دیں مجے اور دس مرایش پیش کریں شے کہ ان کی ہے رک کے نیخ تھوں کھروہ نیخ حجہ پورڈ میں بیش کرتے فیصلہ لیں ہے، ای طرتُ آب کوتھو رہائت کا کستان کا آرد و ترجہ ایس محے اور دس مقد ہے آپ کے سامنے ویش کرے فیصفہ کروائیں گے اور بیج صاحبان کے بورڈ سے ان فیصلوں کا فیصد لیس ے۔ دی احادیث مند دل میں گڑج کرئے آپ کے مناہنے کھیں جے، جن کی منت و ضعف آپ مقلدان نیں بلکہ جمہون انداز میں بیان فرمائمیں کے اور ہیں شیوخ النا عادیث جو نہ میں اربعہ سے تعلق رکھتے ہواں کے دو اس کو چیک کریں کے ور وس مسائل قانون اسلامی کے آپ کے سامنے دکھیں مجھاور ٹین مفتی معاصبان کے ووڑ میں جس جی ہر غامب کے باٹھ یانچ مفتیان کرام شرکیہ ہوں گے۔ آپ ہر دم کا غامب ا بنا ایس مسائل بیما میان آ رے ان کے طبیعہ اعظیمہ و لااکل میان آ مریں گے۔ تھم آنک پہلو کوڑجے ایں شے اوا دیں منتیان کرام فیصفہ کریں ہے کہ بیٹر جج قرآن وحدیث ہے قریب قرادر مشوط والک برخی سے رائل حقان کی فیم کھی آ سیاکوتن کرائی ہوگ ۔

میر صاحب جب سب محدثین اور فقها و ادر آمت کے سب طبقہ بازمان آسته تقلید تخص کرتے جلے سرب بقوتو آپ کوقرآن پاک کی کس آیت اور کس متواتر حدیث نے اس اشان کی مخالفت پرآ ۱۰۰ کیا اور ۱۰کون کی آیت ہے کہ جس میں بدیو کہ عالی سے نئے آیک جمقہ کی تقلید شرک ، کفراور حرام ہے اور آمت کا ایما نے قرآن وسنت کے طلاف ہے۔ مواشے ملکہ وکنوریہ کے اشتہار آندادی فدیب جس کونواب صدیق المحن غیر مطلع نے ترجمان وہاہیہ عمل ورج کیا ہے اور کوئی وکیل شرقی اس اجماع سے تبعی محراقی۔

اس کے بعد آپ نے پائی فقیم سمال کھے ہیں۔ آپ کو جائے تو بیا تھا کہ
ان پانچیں سمائل ہیں پہلے سب انتراکا سفک بیان کرتے، پھر چر آیک کے والاگل پر
مضوط ولا کی طرف جائے گر آپ نے بکری کی شکیا۔ تخشیر منقف جن خلاف اُن
عفو گؤا ما آلا فلفنگون (الآج) بھی آپ کو یاو شدری۔ آپ نے قو بلا دلیل بیسائل لکھ
دیجے۔ اب کوئی آوی آپ کے یہ بلا ولیل سمائل پڑھ کرعمل کر لے تو وہ آپ کی تھید
شخص کی دید ہے مشرک ہو کھا اور آپ بلا ولیل سائل پڑھ کر کل کر دے مشرک کرین میں۔

فالخد ظف الإمام:

(2) مقترى كوچاسية كديس ركعت بي اس كى سورة فاتحر چوت كى سب ووالم

ك ملام بصرت ك بعداس دكست كوهمل كرالي _

جواب: میرصاحب: آپ نے مسئلہ تو لکھ دیالیکن اس کی دلیل عمل نے آ آن کی آیت چین کی اور نہ حدیث تھی ویش کی۔ ہم تو پہنے ہی کہتے تھے کہ جس طرن منکرین حدیث (ہل قرآن) قرآن کا نام تھن وموے کے لئے لئیتے ہیں ایسے ی منکرین فقہ قرآن و صدیث کا نام تحق دحوے کے لئے لیتے تیں۔ برسنلد تھے وقت آب نے کی امام وجی یک جاروں اماموں کو چھوڑ ویا، کیوک جاروں امام اس کے قائل جی کے رکوئ میں ملتے والے کی بورل رکعت تار ہوتی ہے اور طاہر ہے کہ اس نے شاخود فاتھ بڑھی ہے شامام ک فاتو کی ہے۔ آپ تو جماعت فریاء اہل صدیث کو بھی چھوڈ مگنے ، کرکد ان کے نز دیک بھی رکوع میں ملنے والے کی رکھت ہوری ہے، ڈبرانے کی شرورت خیس (فآونی سناریہ) سب معالہ " کوجمی چیوڑ تھے، کیانگہ معالہ" دکوع میں ٹل کر مکعت فہیں فہراتے یتے (ویکھو! مؤطین اور مجح الزوائد) اور اللہ ہائے آخری ٹی کہمی چیوز میے ، کیزنکہ آنہوں نے حفرت ابو بکرہ کورکھت وہرانے کا تھمنیں دیا (بخاری) ۔ میر صاحب! دیکھا تھایہ جھوڑنے کا بر نیمیں سب کچھ کیا، اب ایک پہنا باتھ میں ے او اور گل ہزار میں جما بجائے چرد اور گائے محرو۔

> بجو سب ہے الل ہے د جوہ ہے شالا ہے

آ مين:

(٨) - وورو مئلا قائن كا جھيزا ب حرمتيوط ولائل قو كو وقر آن وحديث سے كوئى ايك مضوط وليل بھي بيان نيس كي و بلك مئله بھي پورا بيان نيس ايا ، و يكھنے: آپ كاشل یہ ہے، اس برہم صرف ایک ایک سیج صریح فیر معارض حدیث کا مطالبہ کرتے ہیں:

- (۱) آباوگ جب الكيانماز بزهته بين و آمين آسته كت بين ايك حديث معج صری فیرمعارض فیش کریں کہ تخضرت ملط کے فرمایا ہوکدا کیلے تمازی کے لئے آمین آہتہ کہناست مؤکدہے۔
- (٢) آپ بب امام ك ويجه فماز يزعة بين تو فجر ، مغرب اور عشاه كي جه ركعتون على بلند آوازے آمين كتے بي اور باقى كياروركعتول على آستد آمين كتے بيل-آب ایک حدیث سی مرت فیر معارض ایس جی کریں جس میں آنخضرت الله فی فرمایا ہو کہ مقتذی کے لئے چھ رکعتوں میں آمین بلند آوازے سنت مؤکدہ ہے اور گیارہ ركعتون من آسته واز است مؤكدي
- (٣) آب صرف ایک حدیث مح صراع غیر معارض پیش کریں که دور نبوت میں آ خضرت الله كاك كاك على محالي في الك على ون آب الله كاك على وال ين بلندآ دازے اور كيار وركھتول عن آجته آوازے آين كى جور
- (٣) آب ايك بي حديث مح صرت فيرمعارض اليي فايش كرين كد يورت تين سالد دور خلافت راشدہ میں جاروں طفائے راشدین میں سے سی ایک بی طلیفدراشد ك كسى أيك بى معتدى في سرف أيك بى دن جد ركعت مي بلند أواز س اور حمياره ر كعتول من آسته آوازے آمين كي مو-
- (۵) آب ایک ی سیح صرت فیرمعارض حدیث بیش فرما کین کد آ مخضرت منافقه في بيتكم ديا موكدامام كے لئے چوركعتول على بلندة وازے آمن كبنا سنت مؤكده ب اور گیاره رکھتوں بل آ ہت، آ وازے آ بین کبنا سنت مؤ کده ب۔

- (۱) ۔ ایک می سدیدہ محص سریح قبر معارض ایک بیش کرد کر فود آ مخضرت مقطعہ نے اپنی بوری زندگی علی ایک می دل ایم بن کر چورکھوں علی بلند آ واز سے اور تمیارہ رکھوں میں آ ہند آ واز سے آئین کی ہور
- (4) ۔ آلیک کی حدیث میچ صرت غیر معارض اٹری پیٹی کر زن کے چور نے تیس سامہ دور عمل خلافت را شد و ش کمی آلیک می خلیفہ را شد نے صرف آلیک می ون امام میں کر چیہ رکھتوں بھی بلند آواز سے اور نمیارہ رکھتوں عمل آ ہوتی واز سے آ شن کی عور

میر ساحب! " پ کی ماری جماعت آل کرجمی الی احادیث فیل نیس مرعمی وں لئے قرآی وصدیت کا نام لئے کر فوام کو وجوکا نہ و نا کرو بلکہ میرامشوں ہوں ہے کہ اگر آب مندرد رسانته معاویت ویش نه ترسکیل دور مرکز نه کرسکیل کے توایقا ہم افی مدیت آگریز کو وائیں کروو کہ جذب نے تیم اٹل حدیث نام الاٹ کیا تھ محرمیں صدیث آ کوئی آتی می نبیں واس لئے یہ نام مہر ہائی کر کے دائیں لئے لیں۔ میر صاحب! آپ آ بین کے مشتنے بر کیا خاک تحقیق کریں ہے ،آ پ وٹو آ مین کامعنی بھی ٹیک آ تا۔ آ بین کا معنی ہے: اے اللہ قبول فرما۔ یہ ذعا ہے اور قر ؟ انا یاک میں اللہ فعال کا حکم موجود ہے أَدْعَوْا وَلِنكُمْ فِي تَصَرُّعُا وَحُفِّيةً (سورة الاحراف)" الشَّمَالَ بِعَدُما لِهِ عِنْ وَجَرُقَ ے اور خنبہ بعنی آ ہت کیا کرویا اور آ ہت۔ این کی حدیث جومند احمری ۳/می ۱۱۱۰ ر الطنق بينية النماية علاد منه البوداؤر شرقعي عن ١٣٨ ويعلق ج مواعق ٢٥٠ مندرك عالم ن ۲۴ س ۲۲۴ پر ۲۲ دود سبت آب اس کوند مان کر کیول قرآن و حدیث سنته منظر بن . ہے ہور و کیجوا قرآن وریدیٹ جارے ساتھ ہے۔

رقع البيدين:

۔ آ ہے نے تیسرا متندر فع میدین لکھا ہے۔ پیلافریب ٹوبیا کیا ہے کے متلہ ہی بورانبیں فلعا۔ آ ب هغرات کاعمل وعقید و یہ ہے کہ مہی اور تبییری رکعت کے نثروع میں رفع پرین سنت مؤکدہ سے اور واسری اور چوکی دیکھنٹ سے نثرو مٹا بھی دفعے یہ بن تاجائز اور تحروه ہے۔ رکوع جاتے اور رکوع ہے سر اُٹھائے وقت رفع پدین سنت سؤ کھو ہے الموسحيدون بيس جائے اور محدول سے سر أغمائے وات برقع بدان تاج تز اور تكرو سے م آ ب کے اس دعویٰ پر نہ کوئی قرآ ان واک کی آیت آ ب فیٹس سر کتے جس ندآ تحضرت عَلَيْكُ كَى كُولُ تَوْلُ صِدِيثِ مِينُ كُرِيكَةٍ مِن مِنْ كُونُ تَقِرِينَ حديثِ مِينَ كُرِيكَةٍ مِن فعلي حدیث ہیں بھی آ ب قنفائے راشدین اور عشرہ ہشرو ہے کو کی سجے حدیث کمل وع ہے م فیٹر نہیں کر نکتے۔ ہاں بعض معارض احادیث میں انکین مواظبت کی حدیث ہے بھی عبت نیں۔میرماحب! روز ویں بیوی کا بوسر نینے کی حدیث سیج بھی ہے اور فیر معارض بھی، وضو کے بعد ہوڑیا کا بوسہ ہننے کی حدیث سبجے بھی ہے اور غیر معارض بھیء ترزیل ہے ہوئے درواز و کھول دینے کی حدیث بی سے اور غیر معارض بھی، یکی کو اُنفا کرنماز یز ہنے کی حدیث سمجھ ہمل ہے اور فیرسد رض بھی ، ٹیمر بھی '' ب بیٹیس کیتے کہ روز و جیں بور لینا سنت مؤکدہ ہے۔ وغو کے بعد بورہ بینا سنت مؤکدہ ہے، نماز مِنْ بِيعَ ہوئے درواز وکھولنا منت مؤکدہ ہے، ایک واُٹھا کرنماز بڑھڑ سنت اوکدہ ہے، ان افعال کے بغیر روز وہ دنسو در نماز غناف سنت ہوں کے نیکن بیش عدین کوآ ہے۔ سنت مؤكدہ كيے تابت كريں محربہ بحرصاحب! بدمنلہ خامشكل تيں، بينتے! تجبير تحرير کے وقت رفع یدین کری اعاد بث سے جارت ہے اور اس کا ترک کی حدیث سے فارت

نہیں ،جس سے ثابت ہوا کہ آ میہ منگانا تحمیر تحریمہ کے وقت رفع پو بن اوا کرتے ہے۔ محیوزی نمیں، اس لیئے ہم نے بھی یہ رفع پیرنیا جھوزی نمیں۔ محدوں کے وقت ٱلمُنْفِرِتِ مَلِّيْكُ كَا رَفِعَ يَدِينَ كَرَةَ مُعَرِّتِ مَا مِكَ مَن الْحُومِيثُ، مَعْرِت وإلَّ مِن بَرَّهُ خفرت عموالله بين عمائلٌ وتفرت عموالقد بين زيرٌ فغرت الإبرراء ففرت اسْرُ. حضرت جابز وحضرت محبير بن حبيب اور حضرت حميدافله بن عمرٌ ہے نابت ہے کین ایک وو حدیثوں میں مچھوڑ ویٹا بھی عابت ہے۔ جس سے معلوم ہوا کہ آپ مرابطے کے کرنے ے جد کیمیزز ای تھی والن بلنے آئے۔ نے بھی تیموز وی اور بھی سنے بھی جیموز وی۔ باسک وی هراث رکول کی رائع پیران جمی جنش مشکم فراهه دیت شد ندگور سے کم اس کا نیموز را على العاديث على موجود ب بس كالمطلب بيائية كالمفور علي الله في تجوز وقي وال الله ہم نے میمی چیوز دی، آ ہے کیول کیوں مجھوڑ تے ؟ میر صاحب آ ہے کے مغروط اوائل کا بعب توبيت ذالاتفا تمريس مديث كيطرف اشروكيا سي كرمنود عَلَيْقُة القال ألك رفع بدان کرتے رہے وو والکن جمونی ہے۔ اس کا مبلا راوی متحصب شالی ہے۔ (طبقات شاقب)، دوسرا راوق رافعتی خبیت ب (الذائرة الافا)، تبسرا، باليال، یٰعنار وی من کے طااب بی نیس لمنے واس لئے مجول میں۔ چوقے واوی عبد ارحمٰن بن قر کیٹی مجھوٹی محادیث ہے نے ہے متعم ہے (میزان ایا عتد ل نے ۱۳ سر ۵۸۲) ساتہ ای رادی مصمت بن تھ ارائساری میونی احادیث کمزا کرہ تی (میزان الاعتدال نے سو س ۱۸) وغور مير ها حب! پهرچي تير به مضبوط دياک و حادانگ است کا اجها يي منزله ت کہ ایکی جمولی حدیث کو بیان کرہ حرام ہے اور اللہ کے بی پر جموت یوانا ہے۔

آوا شم تھے کو کمر نہیں آئی

بری عقل د واقی بیایه محریست زبال ادف رموا سیکھ باقش کمالا ترا که دوبرد خاک بالا یر فطائی بست بالا نرا

: 70 }10

(۱۰) اس کے بعد آپ نے لماۃ وقر کے بارے ش وسرساندادی کی آب ایکن قرآن و صدیت سے کوئی حوالہ قبیل دیا۔ ہم تو پہلے سند ہی جانے ہیں کد آپ کی جماعت کا ہر فروقر آن وصدیت کا نام محمل وجو کے کے لئے لیتا ہے۔ میر صاحب! آپ وترکی اصاد بھ کا اخذات تی جیان کر کے محران بھی تھیل کی کوئی صورت بیان ترک سے۔ یہ بات علم سے تعلق دکھتی ہے، جائل کیا تھیل بیان کرے گا۔ اگر آپ کو شاآئی تھی تو تھید کرلیتے دیکن آپ نے تو یہ عادرہ پوراکرد کھائی: "ان مقتل شروع"

میرصاحب؛ اتنا تو ہرسلمان جانا ہے کہ فرائض، داجہات مورسن مؤکدہ کی رکھتیں مقرر ہوئی ہیں، ان می کی بیٹی ٹیس ہوئی، کین نوائل میں کوئی تعیمن ٹیس ہوئی، جس قدر کوئی بڑھ کے۔ وز کے بارے ہی دوھم کی اصادیت ہیں: ایک اسکا جن سے ان کاففل ہونا فابت ہوتا ہے، دومری وہ جن سے وزوں کا داجب ہونا فابت ہوتا ہے جب تک وزلال ہے، دو تجد کے ساتھ شال کرکے ٹیار کے جائے تھے۔ ایک، ٹین، پانچ، سات، کیادہ دغیرہ اور جب داجب ہو کئے تو اب رکھتیں مقررہ ونا ضروری تھیں۔

بيخ ﴿ وَاجِهِ إِنَّ أَوْ لَعْمَا كُرْجِنُونَ ﴾ وجونا ہے، قرض نمازون میں فجر وورکعت افہر عار رکعت ا عمر جار رکعت ،عشاء جار رکعت ، بد ب رکعتیں بغت تھیں مطاق رتھی کدان کو ور کبا جاتا۔ سرف مغرب کے تین فرض طاق ہے ، اس کئے ان کو بی وٹر کیا گیا۔ جانی آ تخفرت ﷺ نے مغرب کی نماز کو دن کے دفت ویز قرار دیا ادرا میے بی دات کے تین وز قرار و یے (وارقطنی ،طبراتی ،طباوی) اور طاہر ہے کہ نماز مغرب تین رکھت میں اور یہ دو تشہد اور ایک سلام کے ساتھ برهمی جاتی ہے، پس تمن ور دس بر بی ممل جاری ر با۔ وور فارو تی ، عثمانی ، علوی عی از ان رکھت تر اور کے کے ساتھ تھیں ہی وٹر پر اجماع رہا۔ اس لنے امام حسن بھرٹی بھی فرمائے ہیں: مسلمانوں کا اضاع ہے کہ وقر تین دکھت ہیں اور صرف آخری فقدے میں ملام ہے (این الی شیدج الس ۲۹۳) آپ جو تحن رکعت ين دو برسلام پيمبرت بين، اس طريق كودورسحاب و تابعين رشي الشمنيم بين وم كي تماز کہا جاتا تن (محاوی ج الحص افا) آب نے جولکھا ہے کے درمیان می قعدہ ندکرے مید سنلہ فرقرآ ان عل ہے، دیمارے سزیمی، مذبق کی ادرکناب عم کوگ سمج صریرے ہے۔ حاکم کے کسی نننے کا حوالہ ہے ہیں،لیکن اس کو آئ نکس مجھے ٹابت کیس کر تھے۔ یہ ہے آ ب کی معبوط دلیل دانک تن صدیال کے نام سے ب عادم عوام کو وحوکا دیے اور فنزش جماكرتيء

> زیم نہ رک بکب اے ہر کیس راہ کہ تو میردی بہ الگنٹان ست

آ پ نے تکھا ہے کہ رمول اقدی چیک آکٹر آیک رکھت چھا کرتے تھے۔ بیکٹس آ پ کا جموٹ ہیں۔ آ پ کو بیکن تو بیان کرنا جا ہے تھا کہ حضرت ایس مید خدد کی ا فریاتے میں کہ دمول اقدی تھی نے فریلیا: ؤم کی نماز مدین حاکر داور دم کی نماز مید ہے۔ کرائیک وقر پڑھ جائے (کفا تی انتہیں)۔ اور پہلی بتانا چاہئے تھا کر فضرے عمیدات بن مہاسؓ نے ایک وقر پڑھنے والے کو کوسا فربایا (طحاوی) ، اور فضرے عمیدات بن مسئوڈ نے فر، یا کرئم از کم تمن وفر ہیں ، شن ایک وقر کو جرگز جائز فیس مجھٹا (سز ط مجھر) مائیا حق بوشی بی آ پ کے مضبوط والکل ہیں؟ آپ جیسے لوگوں کے بارے میں بی کمی نے کہا ہے اینم ملاقعے والایان۔

تحدومهو:

ذاا) سے جدہ ہو کے بارے میں آپ نے ایک مدید آقل کی ہے جس ش سمام ہے تو ایک مدید آقل کی ہے جس ش سمام ہے تقل مجدہ سور کرنے کا ذکر ہے بھر جروان ہوں کرمنام کے بعد مجدہ سور کی اعادیری ہو بخاری اسلم، ابوداؤد، شائی ، احد مائی بنیہ ، طحادی ، فتلی میں موجود میں ، وہ آپ کو کوں نظر نیس آ کی دیا تھ ہے گئی جا گئی ہے اور دوسال موالی مدیدے این مسعود آئی ہے کہ بخاری میں کوں نظر میں کول نظر میں آئی اور دوسال والی مدیدے این مسعود آئی ہے کہ بخاری میں کول نظر میں کول نظر میں اور دوسال موالی مدیدے حضرت عمران بن محید گئی مسلم میں اور حضرت مغیرہ بن شعید گئی تر ندی میں نظر کیوں ندا آئی ، حق بھر گئی کی محل میں اور حضرت مغیرہ بن شعید گئی تر ندی میں ہوئی ہے۔ ہم تو سب اعادیدے پر مال میں بھر کہ اعادیدے کی مخالف کر میں ۔ جس کی مدید کی مخالف کر میں ۔

میرصاحب! جاروں امام اس بات پر متفق بین کدفراز اور تمام او کام بھی ورجہ رندگ ہے، لیکن آپ کی سرمری جماعت اس سے دجز سے کد مرف قرآن و عدرے کو سامنے رکھ کر فراز کی رکھیں ، فراز کی شرائکا ، ارکان ، واجبات، منن استحبات ، مبرعات، محروبات اور مفسدات کی تفصیل بنا سخر آن تک آپ کی جماعت فراز کا تعمل طریقہ مجی ایت فیل کرشی و آپ سے اور کیا تو تع دوسکل ہے۔

یا شوخیل امکائے کا اے تھتر جول عدت سے ایک دخم میکر می چھا تہیں

عیرف حب! آپ کی مرادی عماحت دادست الات کی مقریق ہے۔ آپ ای مندرجہ ڈیٹر مسائل پرائیک دیک محتج حرش فیرموارش حدیث بیش کر کے اپنی جماعت کواس قرض کے جانجے سے اٹالیس میآ ہے کا آئی جہ عت پر بہت بردا صال ہوگا۔

- (1) فاز كي تعمل شرا تعاشى ايك مديث شي وتعاوي ، شرط كي مراحت وور
 - (٢) أنهاذ كم عمل اركان كي ايك حديث شي مراحثاً وكها دين ـ
- (۳) نماز کے تعمل داجبات جس طرح کتب فقد بیس ترشیب دار جی کمی ایک حدیث جس دکھاد ک۔
- (۴) نمازی کھل منتیں جس مرح فذیص کیجائز تیب سے فکہ ہیں مدیث بھی اکھ ہیں۔
- (٥) فَمَادُ كَ مُمَلِ مُسْتَهَات وأواب بس المرح كتب فقد عما يجاز تيب ما فاور

بین معدیث میں وکھادیں۔

- (۲) منازے تھل محروبات جس طرح کتب فقد بیل قرنیب دار ہیں، کمی ایک است
 - حديث بش کجا دکھاديں۔
- (2) نماز کے تمل مفیدات جس حرخ کتب فقہ میں تکجا موجود ہیں ، مدیث ہیں تبچا دکھا دیں۔
- (A) ۔ پانچوں نمازوں کی عمل وکھیں سے تفعیل سنت مؤکدہ، سنت غیر مؤکدہ، فرض، واجب افل، کمی ایک حدیث عمل تکجا دکھا دیں۔

(۱) آپ کا دام تکبیرات نماز اور سلام بلند آواز سے کہا ہے اور متعلق آبستد، یہ غرق کی صدید علی دکھاویں۔

(۱۳٬۱۲٬۱۱) - آپ جورکوع، مجدود جنسه در قوستی دُعامَی و تبیهات آبستد رِد هنته جین اس کی ایک آیک هدیت دکھا دیں۔

(۱۵۰۱۳) آب جوقعدہ میں درودادر دُعا آبت پڑھتے ہیں، اس کی صدیف دکھا دیں۔ میر صاحب! آپ کی جاعت آج تک انٹی کمل نمازی قرآن و صدیت سے جُوت ہیں کرنے سے عالا ہے۔ إس آر آن و صدیت کے نام پر گئز پر ہم، مردار شرم کاوکی رطوبت، کئے کی تے ہنون، بیٹا ہے، کئے کے پافائے ، کوشت تک کو پاک کر رہی ہے (ویکھوا یو درالابلہ وزل الاہرار، کمز الحقائی) یہ ہے جوقر آن و صدیت کے نام پر عود ہا ہے۔

جناب بیرصاحب! الل مدیت کا نام تو بہت ہے فرقے استهال کر دہ ہیں۔ مولانا گنا واللہ امرفری بھی اپنے آپ کو الی مدیت کتے ہے گر - ۸ علائے الل مدیت ہے ہے گر - ۸ علائے الل مدیت ہے ہی ایک ایک کو میں۔ نے بھی اے الل مدیت ہے فارج کیا (دیکھو افیصلہ کما، فیصلہ سلطانی، اربعین، ٹنائی فزائ، اظہار کفر تنا و اللہ تحدیث ہے فارج کیا ہے اللہ مدیث ہے گر ۸۳ ملائے الل مدیث ہے گر اللہ عدیث ہے فارق کی ہے گر اللہ عدیث ہے فارق کی ہے کا اللہ مدیث ہے فارق کر دیا اور ایمن علائے اللہ مدیث ان کو کے کے کا فرول ہے ہے کر اور مسیلہ کا آب اور ایمن کے ماقیوں کی طرح واجب الحتل جائے ہیں۔ دوہ کی صفاحیان بھی اسپنے آپ کو الل مدیث کہتے ہیں گر واجب الحتل جائے الل مدیث کہتے ہیں گر

کے چیچے مماز جائز ہے اور نداس کی نماز جنازہ پڑھی جائز ہے (ویکھوا کاب مظام روپزی) میرصاحب! بیسب فرقے آپ کی طرح پرجمونا دموئی کرتے جی کہ ہماری راوٹ خالص قرآن و مدیدے ہے، محر ویکھوائی غلاف کے پینچے کیسے کیسے کفر چیپ دیکھے جی ۔القائعان اینے فریب کاروس ہے برمسلمان کومخولاد کے آپین بالڈ العائمین ۔



جواب بمتوب مفتوح مفتى عبدالرحمان



نَحْمَدُهُ وَنُصْلَى عَلَى وَسُولِهِ الْكُرِيْمِ. امَّابِغُد:

معترت مولاتا فيدالعي صاحب حاكملاكي معرفت ايك دمال بنام كمتحاب مفترح ملاء عمل کے مصنف کا نام ہول درج ہے: "مفتی عبدالرحن الرحالی فیج الحدیث جامعه وجها ديره بدائليم، سابق مدرس حرم مكة المكرّ مد، فاحتل عربي و فاحق فارى ، لا جور و للنان بورة ول بين أوّل، فأضل علوم اسلامية المتأوّر!"

است بجمل القاب كے بعد رسال كے مندرجات كو يز مناتو بي ساخت زبان يرآياه في دكان يعيكا بكوان.

معنف دماله يبله مماني (منفر حيات الني عَلَيْكُ) قدادراً مَعْ كُل فيرمغلد ب، سے فرقہ عی شہرے ماسل کرنے کے لئے فقاکی خست اورفتہاء کی کاللہ واقع كل ان كا روزمره كامغول سيداورقرمان رسول عَلِيَّةٌ "لعن أحو صله الامة او لها" (ترزی) کوالس أمت كر يجيل وك الكول كو براكيل كال كال ظهور بداكت كل أنيى مناظر بين كابدا شوق بي يكن أن سناظره كما بجد شاى مى كيس إلى - مناظرہ میں وہ مناظر ہوتے ہیں۔ آیک مناظر کو عدی کہتے ہیں، وہرے مناظر کو سرکل کہتے ہیں۔

يه عي مناظر:

مدئی مناظر کی تعریف یہ ہے ''جو اپنے خدیب کی صدافت دائاگ سے ثابت اگرو ہے۔'' میس مصدافت دائاگ سے ثابت اگرو ہے۔'' میس مصنف دسالہ اپنے خدیب کی صدافت ثابت کر نے سے بالکل عاجز ہے۔ ملک میں غیر مقلدیت کا بیٹازہ اُٹھے چکا ہے۔ ان کو بار با چینج و کے محک کر اپنا ٹام ای قرآن یا میسی معد بہت سے ثابت کردہ کر الشد تعالی یا رسول اللہ تلکظے نے فر مایا ہو کہ میری اُست میں ایک فرق بہیا ہوگا جس کے جال عالم سب فقد کی خدمت کیا مرب فقد کی خدمت کیا کریں ہے، مسائل اجتہادی میں جمہتدین کی تقلید کو شرک کہنا کریں ہے، مسائل اجتہادی میں جمہتدین کی تقلید کو شرک کہنا کریں ہے، مسائل اجتہادی میں جمہتدین کی تقلید کو شرک کہنا کریں ہے، مسائل اجتہادی میں جمہتدین کی تقلید کو شرک کہنا کریں ہے۔ مسائل عالم عابد نہ کریکے۔ اُن کا نام اہل حدیث ہوگا، وہی نجات پانے دانے ہول کے محکم دو اب تک

اس کے بعد ملک جریں یہ مغالب کیا گھیا کہ تاریخی طور پر انگریز کے دور سے
پہلے اپنے فرقہ کا دجود می ٹابت کردیں۔ جس طرح رادہ بہنی مکورک ختم نبوت کا شہرہ
اہل قرآ ان بہنی مکرین مدیت کا دجہ ملد و کور یہ کے دور سے پہلے ٹیس تھا ، ای طرح
انگ مدیدے بہنی مکرین فقہ اٹھیر کا دجود آگھریز کے دور سے پہلے ٹیس تھا۔ آل با ٹیول اور
مکرین مدیدے کی طرح شدائٹر یز سکے دور سے پہلے کا ان کا ترجہ قرآ ہی اس جود ہے ، شائلیر
قرآ این ، شرح مدیدے ، شائر یز سکے دور سے پہلے کا ان کا ترجہ قرآ ہی اس جود ہے ، شائلیر
قرآ این ، شرح مدیدے ، شائر میں مدیدے ، شرکی مجد کا ذکرہ شد مدرسے کا دیکری تمام بھی

عبادات يس سب سے يوى عبدت تماز بدان كا دعوى ب كد دارى نماز

کا ایک ایک سنگدتر آن یاک کی مرتع آیات اور سیح مرتع غیر معارض احادیث سے الإرت ہے۔ کو بات ، کرا ہی ، بیٹاور ، غوسعیدآ باد ، دھیم یار خان ، لا ہور ، او کا زو ، مقافر کڑھ ، سمویہ سکتے شیروں میں یہ بھا محم اور نماز کا تکمل طریقہ کا رہت کرنے ہے عاجز آ سکے ۔ جو فرقہ اپنی تماز کا کھل طریقہ ٹابت کرنے ہے عاج ہے، اس کے مجونے ہونے بھی کہا شربوسكة براعلاق مغلز كروش مناظر اسلام حفرت مولانا محراهم مساحب مبتهم جامع ه نب من چیننج کرویا که فیرسقلدین جس طرح سے نماز جنازه ادا کرتے ہیں، یا کمال طریقہ مالٹرنیب حدیث سے برگز برگز تابت نیس ۔ غیرمقلدین نے بڑے 🕏 و تا ب کھائے واپنے بزے بزے علاموں کوجی کیا محروو نماز جناد وی کھل ترتیب صدیت سے ن دکھا شکے۔ مرکودحاش مناظر اسمام معترت مولانا عبدالمعید صاحب نے بڈر لیواشتہاد چینج ویا که غیر مقلدین جونماز ترادیکی ادا فرماتے جی، اس کا تکمی طریق که آنمخفیرت و المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المن المناعمة المنطقة المنظمة المنظم قرآن یاک بھی فتم فرمائے تھے اور مرسال بورا ماہ میں قبل میارک تھا۔ فیر مقلدین نے جوانی اشتهارات عیں گائی گلونٹ تو خرب تکھیں تمرموں ، میدالمعید صاحب برفلہ العالی کے معتول سوال سے موافق اینا طریقہ صدیت سے تابت شاکر میکے اور موز تا یکی مختشاتے دے:

> ها کہ تم صیل ہو ہے در کے گئی ٹیمل عاشق کے ایک سوال کو بیرہ نہ کرتھے

مال صدیت بیش کرنے کی جمائے ایک خلیقا ریان استعال کر کی شرورشا مردی كرشبر كحشرفاء بلكه فودا تتفامية وكهنا يزاب کے یو منہ چانے دیتے ویتے کالیاں سامب زباں کجری تو گزی تمی فیر کچھ دائن گجڑا

الغرض اپنے تدہب کی صداقت اور قدامت کابت کرنے سے بد ذہب ایسا عی عابز ہے چیے مشرین حدیث ملتی عیدار من کا فرض تھا کہ ود اپنی جماعت کو اس قرض سے سبکروش فرمات محروہ مجھی بھی اپنے ندہب کی صدالت وقدامت را پی کھل نماز ، نماز جمازہ ، نماز تراویج و بیرہ کابت کرنے پر تیار تیس ہوئے۔ جس طرح باقی قیر مقدین کو اپنے ندہب کے جمولے ہوئے کا بھین ہے، این سب سے براہ کرمشق عیدار حمد کی اپنے ندہب کے جمولے ہوئے کا بھین ہے، این سب سے براہ کرمشق حیدار حمد کرنے کے اپنے تیار ہوئے جس مشاول سے۔

دوسراشوق:

اپ ندب کوجونا یقین کر لینے کے بعداس پر پردہ والے کے لئے ان کا برا شوق یہ ہے کہ ذرب حق کو آر آن وحدیث کے خلاف کا بٹ کریں۔ اس بادے شی بھی مفتی عبدالرحن دورس کے فرقہ کو ہم نے چینے و سے دکھا ہے کہ آسیے! ایک طالت طے کرکے عالمشیری لے کر بینے جا کیں ، ہم بالتر تیب دیک آیک مسئلہ تھوائے جا گیں ہے ، سفتی عبدالرحن صاحب وہ مسئلہ لکھ کر اس کے مقابلہ عمل مرتع آبت قرآتی یا میج مرتع فیر معارض حدیث تعمیں ہے۔ اس طرح فقہ کے اس مسئلہ کو خلا کا بٹ کرنے ہے بعد اس صورت مسئلہ کا میج عظم شرق قرآن بائے کی مرتع آبت یا میج مرتع فیر معادش حدیث سے تا بت کریں ہے۔ اس طرح عالمشیری ہے تعمل مسائل کو خلا قابت کرتے ہر صورت کا میج عظم تھوا تیں ہے اورا ہے آرآن و مدیث سے قابت کرتی ہے اسکار تیں اسے اسٹی مقتل عبدالرحن ادراس کا فرقد اس معقول اورعلی بحث کے لئے بھی شبھی تیار ہوا ہے ند ہوگا۔ ساکل منا ظر:

دوسرے مناظر کوسائل مناظر کہتے ہیں۔ اس کی تقریق ہے ہے کہ وہ مدی کے دنونی کی نئی کرتا ہے اور تین کئم کے موالات کرتا ہے:

- (1) مدی کے دموی کو پی شلیم نیس کرتا ، مدی دلیل شری ہے اس کو ٹابت کر ہے۔
 - (r) گرجب مال دنگل بیان کرے تو دواس دیکل کوتو زنا ہے۔
- (r) ۔ گھرای مل کی وٹیل کے معادش ولیل بیان کر کے اس کو ساقط کرتا ہے۔ '

مثلاً مفتی عبدالرحن اور اس کے قرقہ کا دعوی ہے کے عوام مسائل اجتباد یہ علی جو جميد أن كى تطيد كرت إلى المدائرك ب المدموس الموحد كي الا كل إلى - جميد ك بت كى بيجابات باست المعلاين علام بيربهره بيتميز ، يروز ف بين و (موال نبراله ۲۲ م ۹۳ مام ۲۷ و د ان کا یا جی وگوئی ہے کہ ایم خدا اور دسول 🥰 کے مواکسی کی بات نیس بانے ۔ اب علی صاحب اور اس کے فرقہ کا فرض ہے کہ وہ قرآن پاک کے مرت آیت یا مجھ مرت غیرموارش مدیت چٹ کریں کے مسائل اجتبادیہ چی ہوہم کے لئے جہتدین کا تھلید مرک ہے، کفرے اور جہتد کے بت کی بوجا یات ہے وفیرو۔ ا بیے سوالات کو تھی سوالات کہا جاتا ہے۔ جن سوالات علی عدی سے وجوی کو مفطرت رکھا بیائے ووسوالات ملذ ہوتے ہیں۔اس لئے مفتی عبدالرحمٰن مراحب کا فرض تما کدوہ ان مسائل عِن يبلِ فقاحتي كالمعل منتي باقول اعلى عبادت عن عيش كرنا ، يكراس كا نزجمه كرتاء بحرب لكمتاكد مدكى المي سنت واجماحت جؤنك اولد اربعه (كماب الله سنت رمول الله عظی ارجاح أمت، قبال شرق) كومائة بين اورفقدان مساكل كا مجومد ب

جوادلہ اور مدینیں ہے کئی دلیل ہے ہیں۔ ہیں۔ میں نے فقہ کے مسائل اور دلائل کا تمل مطاعہ کیا ہے کئیں آج کلے کسی مٹی نے ادارار بعد میں سے کسی ویمل سنہ اس کو تا بہت نہیں کیا، اُٹرنگی کاپ ہے کوئی عنل وکھا دے کہ اس سنلہ کی کوئی الیل کمی حنی نے قلعی ے قومی تح میاا بی جہالت کا اقراد کرلول کا بنگہ نیجا اگر شائع کروں گا اور یاک بیسنلہ فلان آیت قرآنی کے مربع خلاف ہے و فعال مدیث تھی مربع فیر-حارض کے ملاف ے ورا ج تک کی حتی نے اس آیت ما حدیث نے بارے میں کوئی وخاجت تیں فرزنی۔ اکر کوئی تخص محصر دکھا دے کے فلاس منفی عام نے اس آب یا مدیت کی اضاحت خرادی ہے تو میں اپنے عال ہوئے کو ترینی خور ہا ٹاکٹ کروں کا اور پھر بھی تائے کہ مین صورت سنیداُریش آ جائے قران کامیج علم نیاسے اور اوغیم میں گا آیت و میج میں آ نجر معارض حدیث سے تاہر کرے ۔ اگر راہر بیٹ ہونا تو ہم جھے سے کہ رطر میں اصول من غرہ دور معقول کے موافق ہے اور رائعتا مفتل صاحب کی کوڑی ایک ملمی تحقیق ہے وابسنة ہے تگر ريكام عالم الى لرسكانے بعض صاحب َ واس كوچه كى جرابھى تيرس تكى۔

وساول:

افد توال نے بے کام یاک ہی خاص سے بناہ استنے کا تھم دیا ہے۔ ختاس کی سازی محت صرف وموریہ ڈالٹا ہے۔ مولانا نے ابن دساوی کو موال کا عنوائن و ہے دیا ے۔ جب ان لوگوں کو یقین ہوگیا کہ ہم اسپے فرڈ کی نہ قدامت ثابت کر کئے ہیں، شہ صداقت ، ريكمل نماز ، ينكمل جنازه ، يُنمل عمر بقدة اويخ وغيرواور زمعتول ملمي الديز میں فقتہ کی تر دید کر کئتے میں تو آخروں نے الی سنت واقح ماعت کے عوام کے واول میں وموسدة النيد كا ازار افتيار كيد الي طريق كاصل وفي تو مواي دياند سرى تي جنہوں نے بعض شاذ ومتروک قرآنوں کو لے کر قرآن پاک کے بارے بی آئیے سوال نامہ مرتب کیا۔ بیسبق ان سے محد جوء گریمی قیر متلفہ نے سیکھا اور فقہ کے خلاف بھی بعض شاذ ومتروک اور غیرسنتی بہا اقوال کی بناء پر سوال نامہ مرتب کر ڈالا اور پھر قیر مقلع بن جی سے بہت سے لوگ متکر مدیث بن سے آنہوں نے بھی متوافر سنت کے خلاف بعض متروک و شاذ روایات کو بنیاد بناکر منت کے خلاف مجاز قائم کرلیا۔ فعشا بھت فلا معدد

كند بم حيش بابم حيش برواز

منتی عبدار تمل صاحب نے اپنے جائل قوام کے سامنے بار بار برتا آر ویا ہے کہ اس مرف قرآن وحدیث کو بائنے ہیں اور اس محران سوال من میں سے آیک سوال ہی ندقر آن کا ہے ندھ بیٹ کا ۔ جس خرب شکر سن سلت کے بار سہ میں رمولی اقدی علی ندقر آن کا ہے ندھ بیٹ کا ۔ جس خرب شکر میں سلت کے بار سہ میں رمولی اقدی علی نوال نے فریا کہ ان سے سوال کرتا کہ گھٹھ حال ہے یا حرام؟ ای طرح کوئی موال آخو مشرت میں جہندین کی تطرح کرنے والی ساکس میں جہندین کی تطرح کرنے والوں سے برموال خرور کرتا تو و مسوال کو و سیة محران مواز مت میں ایک سوال مجی خوا اور رمول کی طرف ہے نہیں ہے، بلک تمام موالات غیر مقلدین کے ولی وساوی ہیں ، اور رمول کی طرف ہے نہیں ہے، بلک تمام موالات غیر مقلدین کے ولی وساوی این کے درمان مواز میں کہ میں تام و مراوی این کے مدمدے تکس سے برمانشوہ ہیں ۔

ان میں ہے ؛ کو وساوی محد جونا گڑھی اور تھر بیسف ہے بیرری کی کتابوں ہے چوری کیے گئے میں۔ اگر منتی عبدالرحمٰن صاحب اس کا انکار فرما کیں تو وواعلام پر تحریر کرومی کہ اگر ان موادات میں ہے کوئی موال انتظام معن میں نے چوری کیا ہوتہ الابت ہوئے پر میں دونوں ماتھ کو اسٹے پر تیار ہون تو ہم نشاندی کرے پر تیار ہیں۔

یاد سے کریہ موالات شامحات میں تست کے ڈیمن بھی آئے شافتہا مار ہو۔ کے ڈیمن بھی کہ ان کو اجتہادی موالات کا نام بھی دیا جا سکتے، بلکہ بیسرف اور صرف الحادی فقر کے دساوی ہیں۔

چوکہ پہلے بچاس وساوی سنگہ تھابدے تعلق رکھتے ہیں، اس لئے پہنے سنکہ تھنیدے بارے میں ہم وضاحت عرض کرتے ہیں۔

مینکہ تھید سے بارے بھی تین باتوں کا جانا مفروری ہے: (۱) کن سمائل میں تھید ہوتی ہے، (۲) تھید کس کی کی جائے اور (۲) تھید کون کرے؟

اس کا جواب ہیا ہے کے تقلید مسائل اجتنادیہ بھی ہوئی ہے اور جمبتد کی تقلید کی مبائی ہے اور وہ لوگ تقلید کرتے ہیں جوخود ایستہاد ٹیس کر نیکتے۔ اجتبادی مسائل میں بھی '' لوگوں کی تھی تشمیس ہوگئیں:

- (۱) جوخود اجتهاد کے اعل میں ود جمجته کملات میں۔
- (۱) ۔ جو خود اجتہار کے الی نمیں محر مجہتد کے اجتہاد پر مگن کرتے ہیں، ان کو مقلد کیا رہ تاہے۔
- (۳) جوند نود اجتهاد کرسکتے ہیں، نہ می کمی جمیّد کی تھید کرستے ہیں، ان کو فیر مقلد کہتے ہیں ۔

اس کے کی کوغیر مقلد ثابت کرنے کے لئے وہ چیزوں فاٹیوت مردری ہے: (۱) وہ تخص مجید نیس ور (۲) دومقلد مجی تیس ر

جے ملک میں ایک مائم ہوتا ہے اور باقی اوگ رعایا میں، جو تدخود ما کم موت

عائم کوشلیم کرئے ، ماہا ہے «اے یا فی کھاجا تا ہے۔ یہ حال غیر مقلدین کا ہے۔ اجتہادی مسائل کون کون سے میں ؟

حدیث معاذ رمنی التدعن ہے صاف طور پرمعلوم ہوا کہ جومشہ نہ کی ہے اہتد عم صراحناً ہو، شدی سنت رسول التسکیفی تنی وہ سننداجتیاد ہے مل کیا جائے کا رمعلوم ہوا کہ اجتماد نہ آر اُن کیائی ملت کا نام ہے ، نہ سنت کی ٹالفت کا ، بلکہ کڑے وسنت کے قواعدیش ایوشید ومساک وظاہر کرنے کا نام اجتماد ہے۔ حزید وف صت کے لئے مجھیں کے سائل اٹر بید دائتم کے جی متعوضا اور غیر متعوض ۔ گھر متعوض دوقتم کے جی متعارض اور غیر متعارض ۔ مجر غیر متعارض دوختم کے جس بحتمل اور تھکھے۔

ساکل منصوصہ تیر متعارض محکمہ جی نہ اجتہاد کی ضرورت ہے ، نہ تصید کی امثالاً تحبیرتج ہمہے وتت رفع پدین کرنامنعوش ہمی ہے اور وی کے معادم کیا کی ضعیف حدیث بھی ٹیس کے حضرت ﷺ نے ٹیس کی اور اس میں کوئی احمالیا بھی ٹیس، اس لئے بیدر فیج یدین شده افرواجتها و بحس سیده منددا فروتفنید بحس، بنگه اختصار بود کا ای بر اتفاق سید

مسائل منصوصہ متعارف وہ ہوتے ہیں جن میں واضح تشم شرکی قرآن وصدیث میں مذکور نہ ہونے کی وجہ ہے اجتماد اور تعلید کی ضرورت بزتی ہے، مثلہ بعض حادیث میں رکوع وجود کے وقت رفع یو بن کرنے کا ذکر ہے بعض میں نہ کرنے کا باس نفارخ کے رفع کے لئے کوئی مدیث تبیں ہے کہ آئخفرٹ ملکھ نے نم مایا ہو کہ فال مدید صحح ہے اس یومس کرہ وقلال ضعیف ہے اس بڑھل شکرتا با فلاں صدیث نامیخ ہے وقل ہ منسوق سب بباس بهتمادى ساكيكورائ اوردوسرى كومرجوح قراروي جائك اس کے بھتھ ین نے کی ایک پہلوگ دائع گراہ دیا، اب ایام صاحبؑ ہے'

ترک رفع ید بن کو رائع قرار و یا ہے، اس لنظ اس بر عاص حتی کہا تہ ہے۔ غیر مقلد بن ا کے مولوگ نے رفع ید بن کورون قرار و یا دیکن غیر مقدد بن اپنے آپ کو محدی کیج بیں، کو تک ان دو بہلوؤں سے ایک بہلو کا انتخاب معنود علی ہے نے نہیں قربایا ، اس لئے بد موگ اپنے مولوی کو محد رسول احت بائے بیں اور اپنے مولوی کی بات بال کر محدی کہوں تے بیس جو حضور میں تھے برجموت ہے۔ بہر عال ان سیائل بھی جہند دفع تحارض کرتے ، ویک نعم برخمل کرتا ہے اور مقلد بھی اس کی بہندائی بھی رائع تعمل بھی کرتے ہے۔

طريقة امتحان

بعض حرام ہیں یا تکردہ وغیرہ رجیند آواعد اجتہادیدی بنا و پر نظید سراد رمول النظافہ کو خاہر کر سے اس کا تھم بتان ہے اور مقلدان پر عمل کرتا ہے کہ مراور سول النظافہ ہیں ہے۔

طريقة المتحان:

مقتی عبدار حمل الراسی بات پر تیاد ہوں اور سفر والن کو الفاح الله و الكود سے كہ اللہ و الكود سے كه علی مقتی عبدار حمل الرود و اللہ و ال

(*) ۔ فیر منعوص مسائل کا میم جہزد کتاب وسات سے تاش کرکے فا ہر کرتا ہے۔ اور مقلم سیجھ کرشل کرتا ہے کہ جہزر نے بیستم خوالیس بنایا بلکہ کتاب وسندہ کا فتی تھم فا ہر کرکے بنایا ہے۔

طريقة امتحال:

ہم قیر متعوض مسائل چی کرتے جا کیں ہے ، منتی عبدالرش ان کا تھم مراحنا مدید ہے مجھ مرجع قیر معادض ہے ہمیں وکھ تے جا کیں ہے ، شاڈ پہلے ہم ہے چیس کے کہ اگر وہوں چی کھی گر جائے تو کیا کریں؟ وہ مدیت دکھا کیں ہے کہ فوخ و سے کر تھال کر چینک دوء گھرہم مطابد کریں ہے کہ جس طرح کا کھی کا تفظ مراحنا مدیت ہیں ہے ای طرح چین ٹیورے ہی کر جائے یہ ہم خربت ہی کر جائے یہ ٹیکم جائے ہے گھر جائے ہے مس کر جائے یا چینو پانی ہیں کر جائے تو کیا مولانا موصوف کوئی مرتج مدیت وکھا کیں گے؟ اگر وہ ترام فیر منعوص مسائل می اس طرح کی صرح حدیث دکھادی تو ہم بالکل تعلید تھوڑ دیں ہے۔ اب اگر اس سعقول طرحے ہے وہ بھاگ کے اور تعلید ہم ہے نہ چنزوائی تو قیامت کو جارا ہاتھ ہوگا اور منتی صاحب کا کر بیان ہوگا کہ یا اخذا ہم اجتبادی مسائل جہند ہے لینے تھاور ریک تھا کہتم مشرک ہو، کا فرجو، ایاموں کی نوجا پاٹ کرتے ہو، میرے پاس آ ڈر میں سرف خدا اور دسول کے صاف تھم سے قیعلہ بناؤں گا، ہم نے بذر بھا شتھار پہنلند اس سے ورخواست کی لیکن اجتبادی سائل میں بہندا اور دسول کا مرت فیعلہ بیش نہ کر سکا ہ تھا تھا ہے جہوت بولنا اور نی تھی کی است کو کا فروشرک

منتی صاحب نے ترصابی کے خلاف کوئی موال ناسر شائع کیا ۔ تر میرا ہوں کے خلاف بچنکہ دو ممائی سے نے نے نیم متلاب کے خلاف بیت کے خلاف بچنکہ دو ممائی سے نے نے نیم متلاب بیل کے خلاف بیت کے خلاف بی میں اور تقریرال میں اور تقریرال متلابی کی تعلق بیل اور ترائے کے لئے یہ ومادی مرتب کے جی اور تقریرال شی متلابی کی ایش فیا دیر سب وقتم کر کے اسپے فرقہ کو بیٹین دلا رہے جی کہ دیکھوا میں کتا بڑا فیر متلاب ول کروئن سے واقف لوگ ان کی تقریر شی جوٹ و خیانت ورست وشتم من کر مان درست وشتم من کر مان درست وشتم من کر مان درست و شام کا کال معمدان میں کہ اس واقا اعتماد کا کال معمدان میں کہ اس کا کا کال معمدان میں نے جی ۔

وسومہ تمبر(۱): مستلیق تحقی جس کی تعریف مقلدین کے نزدیک ہے : تقید ہے ہے : کرانسان بلادلیل دوسرے کے قول دھل کوئل جان کروس کی بیروی کا طوق اسپنے کے عمل بیمن لے (حاشہ الحسامی اسلم الثبوت) جناب نے اس تھیدکوکون می خرق دلیل سے اسلام علی داخل کیا ہے؟ از الد: منتی عبدالرطن کے افغاب تو آپ پڑھ ہی آئے ہیں اور تقریروں ہی وہ شور چہا کرتے ہیں اور تقریروں ہی وہ شور چہا کرتے ہیں کہ جم نے بائیس سال فقد اور آصول فقد پڑھائی ہے۔ بہاں آنہوں نے نہ ماشیر حسائی کی حہادت تھی ہے اور نہ سلم الثبوت کی اور جو آورو لکھا ہے وہ نہ حسائی کے حاشیہ کی حمادت کا اور نہ ہی این کما ہیں حسائی کے حاشیہ کی تعریف کہی ہے: المصفلید النباع المفیر علی طن الله صحی بدلا مظر لمی المند فیار محتاج کی شرح حسائی میں ۱۹۳۰ تقلیم المند فی عسفیہ (نامی شرح حسائی میں ۱۹) " تقلیم فیرک اجائ کا نام ہے اس کمان پر کہوہ الل می عسفیہ (نامی شرح حسائی میں ۱۹) " تقلیم فیرک اجائ کا نام ہے اس کمان پر کہوہ الل می سال کی خاص وکیل (تفصیل) کی طرف وحیان کے افغیر کو یا کہ مقلد نے فیرے کول کو این کے افغیر کو یا کہ معالم کی اس وکیل (تفصیل) کی طرف وحیان کے افغیر کو یا کہ مقلد نے فیرے کول کو این کے افغیر کو یا کہ مقلد نے فیرے کول کو این کے افغیر کو یا کہ مقلد نے فیرے کول کو این کے افغیر کو یا کہ مقلد نے فیرے کول کو این کے کا اور دیا لیا۔"

يبلافريب:

منتی صاحب نے مطلق تھید کی تعریف کوتلیوٹیٹس کی تعریف قرار دیا جو بہت ہوا فریب ہے۔ بھول ملتی عبدالوطن: سجان اللہ، کیا خوب، بر کذب واختراء، بروجل و فریب، بریکرشیطانی، برتلویس ایلیس،جہیں خداسجے۔ (موال نیر پرسم جس ۸)

شاید ان سے بہت کا نام ہے جہا یا ہے تو دہاں ہی وہ فض اور مطاق انسان کو ایک ہے وہ فض اور مطاق انسان کو ایک ہے تا ہو تیں ۔ اگر مرنی کتب کا ترجہ تیں ایک ہی دو تا ہے تا ہو ایک ہے تا ہو تیں ۔ اگر مرنی کتب کا ترجہ تیں انتقاب مطاق کی تحریف ہے اور ایک ہورٹ کا خاری کا فاوی میں جدد لیتے ، فرما ہے ہیں : تقلید مطاق ہے ہے کہ ایک ہورٹ کا خریب ہے اور انتقاب کے معالد بن محلوث کی بات الله جا سے اور انتقاب ہے کہ مقالد بن کا خریب ہے کہ ایک انام کی بات الله جا تا جو مقالد بن کا خریب ہے کہ ایک ہورٹ کی مواد نا محمد کا ترب ہے (المانی شائر ہوں کا مراہ مواد نا محمد ایر ایم میا کوئی فیر مقاد فرد ہے ہیں: کیا اوارے میں ہمائی ہم امل مدرفوں کے بارے ایر ایم میا کوئی فیر مقاد فرد ہے ہیں: کیا اوارے میں ہمائی ہم امل مدرفوں کے بارے

عمی بیرخیال رکھتے ہیں کہ ہم تھایہ ہے مطلقا اٹنا دکر ہے ہیں ادر حوام کہ تھیں کرتے ہیں کہ بادجود رسول الفیقی کی حدیث یا اقوال سحابہ نہ لئے کے اور خود بھی کتب متدا دلہ معید روشن طمی قابلیت شدر کھتے ہے اقوال اٹند کو معاذ الشرائکرا ویا کریں اور مادر بیرا آزاد موکر جو چاہیں سوکیا کریں۔ اگر ان کا کئی خیال ہے تو ہم ساف الفاظ میں اعلان کرتے ہیں کہ آئیوں نے اعادا سلک بھے میں تحقیق ہے کا تھیں لیا۔

(١٨٠٤ أل مديك ك١١١١)

مولانا محدداد وفر لوی (فیرمقلد) قربات میں: اگر کوئی بیس بحث ہے کہ بم تقاید سے مطلقاً الکار کرتے ہیں اور حوام کو بی تعلیم دیتے ہیں کروہ تشیر معدیت اور فقد سے ب بہرہ ہوئے کے باویود اکر کرائم کے اقوال کو تھڑا دیا کریں اور سے زمام اور سے مہار ہوجایا کریں تو دہ صریحاً فللد تھی علی جڑا ہے (داؤر فرزلوی می تا این م

دیکھوسٹنی صاحب؛ موددنامحہ ابراہیم سیالکوئی اورسولانا واڈو قرنوی نے الی مدیٹوں کا مسلک بدیڑیا ہے کہ مطلق آنٹیو کا تارک باور پورآ زاو ہے اورشتر سام مہار ہے۔ میادک ہوآ ہے کم فریقے عمل ٹائل ہو گئے۔

مولانا محد سمین بٹائوی آپ جیے طام کا ذکر کرتے ہوئے فراجے جیں: جو (اُوگ) نفظ تغییر اور مقلد کے نام سے چونک آشنے ہیں اور بیافغالا شنے تی ایسے چے تے اور جلنے جی جیسے دیر تی سکھ ہا تک کے شنے سے یا شعصب ہنے وکل پڑھنے ہے۔ (اشاعة الذنہ نے ۱۲ میں ۱۳ میں ۱۳ میں)

د کیجیئے احوال کا محد حسین شائوی تھیے کواڈان اور کھر جیریا قراروے دہے ایل احراس سے چانے والوں کو پیمائی سکھ اور حسسس ہندوفر ماسے جی رجرت اعبرت! عبرت! سوادا بنالول مزید قربات میں اصادے بھائیوں میں اب ترک تھیداور عمل بالحدیث میں نعوبو کیا ہے اور افرا فاشدید نے ان پر غیداور تسلفہ بایا، وو تھید کا نام من کر اس سے دیسے چونک پڑتے ہیں جیسے آم سے کا خوفز دہ کرک صید تاب کو دیکے کر ڈر جاتا ہے۔ تھید کو بازا استھا بھلو تھی سناتے ہیں اور مقلد بن کو دیلا برائی سے دوکرتے ہیں۔ (اشدہ المندج باالم میں میں ا

عزید فرمائے ہیں: میکوں برک کے قرید سے ہم کو یہ و مت معلوم ہو گی ہے کہ جولوگ ہے علی کے ساتھ جمہر مطلق اور مطلق تقلید کے ڈارک ہوجائے ہیں وہ آخر اسلام کوسنام کر بیٹھتے ہیں۔ (اشاعة السنة جناالم صصح)

الار فرمائے ہیں: اہل حدیث سطنق تھید سے عشر ہوکر اعترال، کیمریت، مرزائیت، چکزالویت اور دہریت میں جاپڑے کا (اشاعة السنة ن ۲۳٪م س ۱۲۵) و نیستے! ازکی تشکید کے اطن خشد پرور سے کیے کیے سبتے پیدا ہوئے ہیں۔ جادو وہ جو اسر اچڑھ کر ابوالے

مطلق تعليد كالتقلم:

میال نذر جسین دانوی (۱۳۲۰ه)، مولانا محد حسین بنالوی، مورانا نگاه الله امرتسری (۱۳۲۸ء)، مولانا سیدمجد داؤه غرنوی (۱۹۹۳ء) مولانا محد ایرانیم سیالکوئی، موزنا نور حسین گرجانکی فرندیتے ہیں: تقلیهِ مطلق کمی جمیته کی جوافی سنت یو واجب سید - (معیادائی حسامه، اشاعة السنة ج۳۳/ حس ۱۳۴، ایل حدیث امرتسره داؤه غزنوی صفیره ۳۲۰ نادیخ ایل حدیث می ۱۳۵، ارکان اسلام) این فرمد وارعلام سنے مطلق تقید کو داجب کی سیداد دکمی اسردار عالم نے ان پرفتوکی کفره شرک کافیوس لگایاد

محوما براس جهاعت کا اینای منظرے۔

اميان نذر حسين معاحب معباراتي من ٢٠، مولاية شاه الله صاحب فخاوي شائه ج الرمن و بي مويا نا محمد الراميم سالكوفي تاريخ الن حديث مني ۱۲۵ ومولا نا داؤه غزلوی ملی ۲۷۵ بر تشید شخص کو مبارج فره یتی بیر به میان نذیر مسین ویوی جاسع الغواد سے فقل فر، نے ہیں. جو کوئی مجتبد کے قبل پر عمل کرے گا، وولوں جہان میں تواب، دے میں (معادالحق من M)

مولا نامحر مسین خالوی فرمائے تیں تھلید نہ ہب معین جائز وممارک ہے اس - (الشعة المنع نيّاا/س ٣٣٠) المراكوفي نتصان فيين

عمال تذريمسين والوك فرائع جن: قبال السنسه عبع اللي: فبالمستكوَّا أهُلَ السَيْرَ تَحْدِ إِنْ تَحْتُلُهُ لَا فَعَلَمُونَ. نَعِنَ لِمِن مِوال كروالل وَكر سے الكر تدم سنتے موتم _ اور يمي آيت وليل منه وجوب تطيد بر (سعيارالحق ص ٣٤)

دومرا فريب:

ماشر حسای می تعلید کی تعریف میں اجائے کا اغلام وجود سب جس سے تابت ہوا کہ تشید اور اتاع ایک ی چز ہے ۔ مفتی عبدالرحن چونکہ تعلید اور انتاع کو ایک نہیں وقاداس لئے اس نے امل عرب فیس کسی جبراتات کامعنی می تعدید ہے۔

لَوْ آيت وَالْبُسِعُ صَبِيلٌ مَنْ أَمَاتِ إِلَىٰ كَاتَرْجِرِ مِوكُونُ السِيخَاطِبِ! لَعَبِيدَكُر اس فخص کے ذہب کی جو میری طرف رج مع کرتا ہے ۔" منتی مدحب کومعنوم ہے کہ قرآن باک نے کٹان کٹ کو میود کی علامت قراد دیا ہے۔ مغنی صاحب کو ضا جانے

ان کی رئیس کیوں پیند ہے۔

تيرافريب:

تقليد كے متعلق سوالات:

- (۱) آپ کے علماء نے تقلید کو واجب کہا ہے، کیا واقعی طوق گلے میں ڈالٹا واجب ہے؟
- (۲) واجب کی تعریف اوراس سے تارک کا حکم میان فرما کی مگر اُمنتوں کے اصولِ فقد سے چوری ندکریں؟
- (٣) تعلیر مطلق کے داجب ہونے کا عبوت قرآن پاک کی ایک آیت یا ایک صدیث تھے ہے دیں؟
- (٣) اگرآپ اس تقلید کو کفر وشرک کہتے ہیں تو عوام کے لئے سائل اجتہادیہ ش جمتند کی تقلید کا شرک ہونا قرآن پاک کی صریح آبت یا ایک می صریح فیر معارض

مدیث ہے ڈبٹ کریں؟

(۵) بيمي فرماكي كرآب كيجن طامن التقليدكودا جب كات ياجوعلامادر

عوام اس آول پر خاموش رے میں ، کیاوہ سب کافر وسٹرک ہوت یائش؟

(۱) تکلید تنسی کوآپ کے علام نے میان فر ایز ہے، مباح کی جامع مانع تعریف اوراس کا تعمر میان کریں؟

(2) جوفض مہان کوشرک و کفر کیے یا جوشش کفر وشرک کومہان کیے ، ان دونوں کا قرآن احدیث بٹس کیا تھم ہے اور کیا حدیث

(A) آپ کے جن ملاء نے اس کومیات کیا ہے اس کی دلیل قرآن کی کسی صرتا کا بعد یا مدید کی مرتا کا دلیا ہے۔
 آب یہ باحد یا حد مدید محتاج کے خیر معادش سے بیان کریں؟

(۱) برسلمان پر برجزنی مندی دلیل جانز فرش ب یاداجب یاست یا کیا ہے؟ لوث: دلیل تنسیل کا مطلب ہے ہے کہ مج جودور نقش منع ادر معادمہ سے سالم ہو۔

(۱۰) معنف عبدارزاق تی تقریباً ۲۰۰۰ کا سے زائد محالیاتیا البیلین کے قزولی درج البیاد میں میں میں کا استفاد کی میں البیاد میں میں البیاد کی میں البیاد کی میں میں میں میں البیاد کی میں کا می

ہیں۔ چن سک ساتھ کو گئی آ بہت یا صدیدہ بھور ولیل اُنہوں سنے بھان ٹیس کی۔ کیا دہ محایہ وہائیسن بلہ دلیل فؤٹی دینے سے کاخر ومشرک ہوئے پائیس؟

(۱۱) ان متره بزاد سے ذائد فآد کی بھی سوال یا روایت کرنے والے نے بھی آیت

یا حدیث کا مطالبہ بھیں کیا۔ کیا وہ سب لوگ جنہوں نے بلاصلا لیدوٹیل ان بڑا رول فٹاوئ کوشلیم کیا یا کھا یا تھل کیا، وہ کا فرتھے یا شرک؟

(۱۲) ۔ وکٹو غیر مثلد موام جرنماز پڑھتے ہیں، نماز کے اکثر مساکل کے ولاکل نہیں جانے۔ کیاد وسب کافر ومشرک ہیں وائیں؟

(۱۳) جب مطلق تقلید واجب ہے اور اس کے دوفرو ہیں جمعی اور غیر شخصی راب ان یں سے جو تھید بھی کرے کا وہ واجب تن اوا ہوگا جے روزہ کا کفارہ افام آزاد کرنا یا ساخدره زير د كمتايا ساخه مسكينون كوكهانا كلانا بب الب جومورية بهي انقيار كريكا، فرض عى الداجوكا اوربيكها كرسا تحدود في فرض بين، قلام أزاوكم المراح ب بالكل فلط ب-وموسدغیراً: 💎 تخلیفنی اصطائی کا تشودقرآ کن دست سے ٹابت ہے یا جناب كاخود ما خنة؟ بعودت اولى قرآن تيم كى كوئى ايك آيت يا ايك عل مديث مج بيان فرما كي جس عن الله تعالى بارسول الله مكافئة في خكورة تعليد تحفى كانتم فرما يا مور الزاليه: بناب! مُهتَدِيَ تَعْلِيدُ وَتُرك وَمُغرِبُهَا ٱبِ كَا خُودِ مَا خَدْ مسئله بِدانَ هَلِيهُ كا د بوب قر آن احدیث سے تابت ہے۔ قیامت کے وان میکولگ صرب سے کیل محر لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ فَصُهِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّيِيرُ (١٥٥ الملك)" (أكرام ہوتے سنتے (مقلم) یا مجھتے (جمبتہ) تو ند ہوتے دوز خ دالول میں۔"

شاہ میرانسزیز ساحب محدث وہاوئ فرماتے ہیں۔ بعض منسرین نے تسمع کو تقلید اور معلق کو اجتماد برحمل کیا ہے (تقبیر مزیزی من ۱۲) اور مدیث یاک جی ہے کہ منافق كوجب تبرش قرشة مارسكا لا ركيكا: كا عَلَيْتُ وَكَا عَوْلِتُ. الوَرْسَى مَرْ يَجِيد لَكُمَّا ثَمَا (نَدْتَطَيُوكُمَا ثَمَا) إور نَدُوْ تُواصاحب ورايت (مجتِد) قار

آیت اور مدیث جمیا تمن حم کے لوگوں کا ذکر ہے۔ (۱) عاقل اور ماحب ردایت لینی جمبتد اور (۴) جمبتد کی س کر مان کینے والا (سقلد)۔ان دونوں کی نجات ہوگی اور (m) جوندخود بجتھ ہوند مقلد، وہ غیر مقلد ہے، دہ تبر بھل بھی مار کھائے کا اور آیا مند جی بھی دوئے کا مولانا محرحسین بٹالوی فرماتے میں: جوخالص اہل صدیث ہوئے کے لئے شاقعی یاحقی نہ کہلانا اور اپنالقب ساؤج اہل عدیث مقرر کرنا شروری سجھا گیا ہے، بیٹلم اصول فقہ وفروع فقہید اور سیرت وحالات سلف أمت اور کتب طبقات واساء الرجال سے لاعلمی اور وفری کا نقسہ سامہ ای بطرور احتاد کا شرحہ سراہ شامہ المرت براہ سام (۱۳۸۰ میں اس)

ب خبری کا نتیجه به اورای طوران اجتماد کا شروب (اشاعة الهندج ۲۳/س ۱۳۸)

نیز فرماتے ہیں: زیادہ وسرس نہ ہوتو جیتہ اللہ البالغہ (شاہ ولی اللہ صاحب)، بستان المحد عین (شاہ عبدالعزیز)، اتعاف الدیلاء (نواب صدیق حسن خان) اور فوائد البہیہ (موادی عبدالحق لکھنوی) ملاحظہ کرہ اور ان میں اہل حدیث (محدث) ہوکر حقی شافع کہلانے والوں کے صدیانام و کیلو (ج۳۳/ص۱۳۹) پھر قرماتے ہیں: لوگ آئ کل ایسے پیدا ہو گئے ہیں جو تنی یا شاقعی ہوئے کو خاتص اہل صدیت ہوئے کے برخلاف جائے ہیں۔ ان کے اس خیال پر سف اُمت ہے کوئی شاپر نیس ہے۔ ان کے اس ضط خیاں کا خشاہ اور سیداء (آگر من کے حق شل حسن تنگی اختیار کی جادے اور ویدا وائٹ چھل سازی اور افتر اور چوازی کا ان پر گمان نہ ہو) ہے ہے کہ وہ کئی اصور قتہ و کشب فتہ و آوار نے واساء اگر جال پر پوری نظر نمیس رکھتے ہ ان جم چی ظیل کی ہو ہمی تمیس ر (ج عام امریسا)

نیز فرماتے ہیں: غیر منصوصہ مسائل میں حتی یا شاقعی غیب کیا تھلید کر لیڈ اور اس تھر سے اہل صدیث (محدث) ہوکر حتی کہل تا بھی جائز ہے اور اس پر تعقد و اور ا تکار محتی تعصب اور اصول و فروع ہے جہالت کا انتہد ہے۔ (ج ۲۶ مرمی ۱۳۳۰)

اور کھیتے ہیں: زون گزشتہ علی صدیا الل حدیث (محد قین) حتی، ماکی، شانعی جنبلی کھوانے والے مقر(ج ۴۳/مرے)

اور سکتے تیں :اس وقت حاری جراعت علی پر تھ و دکھل کی ہے کہ کافی کہا تے کو ملاقا ما جا کر سمجھا جا تا ہے چیسے مشرک کہلا سٹ کو، کو دس وقت منگی جاش قعی کہلا ہوان کے رفع جہانت وقتد دیکے ملئے مشرور کی ہے (ج ۲۲/میں ۱۲۰)

سنتی عبدالرحل صاحب فور قربا کی کرموازنا بٹانوی نے آپ کے تعصب اور جہالت اجعل سازی اور افتراء پروازی کو کھیے دائنج فرمایا ہے اور بٹانوی صاحب کی بات نہایت ورست ہے، کیونکہ خود محدثین نے جو کرآئیں محدثین کے حالات میں مرجب فرائل جین دوہ چار بی تھم کی جین: طبقات حنیہ طبقات شافیر، طبقات مالکی، خبقات حالیہ، جس سے واضح ہوا کرتمام محدثین مقند نقد سنتی عبدالرحل صاحب سے مطاب ے کہ دوا کیک تماہ کی سفم محدث کی فیش کریں، جس کا نام طبقات قیر مقلدین ہو، بیٹینا آپ یک کمیں ہے ۔ اسے لاے جہاں جس کو کی نہیں اورا

د ہا پر مسئلہ کہ ایستہادی مسئلہ کی تعبیت جہتد کی طرف جائز ہے یا تیس آو ہاسکل درست ہے۔ معنوت معاد رضی اللہ عند سے صفور الدس مطاق ہے عرض کیا اسلام معادمیں ہوالیں۔ اسٹس ابنی رائے سے استہاد کروں گا۔

ا پی دائے گانست اپی طرف کی و تعنور پی نے نے بید نروایا کراس طرح تم محد کا شریعت کے مقابلہ بھی اپنی شریعت بناؤ کے بکساس پراننہ تعالیٰ کا شکراء افر بایا اور معنورت معد فریش انقہ عند سے خوش ہوئے ۔ جب اس نبست سے تھا چھٹھ اور محابہ نوش جی ہوئے آپ کیوں ناماض ہیں، پھر است بالکیر مسائل اجتہ دید کی نبست سے تھا، شانی، ماکی بطنی کھائی آ رہی ہے اور کی افرائوں نے انکار ٹیس کیا جو اجماع سکوئی ہے، جو مسئلہ حدیث واجماع سے جاہت ہوائی کے شرقی مسئنہ ہوئے تھی کیا جنگ ہے اور ک نور کی کمایوں میں جو مشعوص مسائل ہیں ان کہ ظاہر کرنے کے لئے ہم اہل الدیو کھائے جی اور اجماع کی مسائل کو ماسے کی وجہ سے والجماعت اور اجتہادی مسائل کی وجہ سے تنی۔ اس طرح جارے کال نام عمل جاروں ولیلوں کا ذکر ہے، تہا دے تام عمل شرقر آن کا

مفتی صاحب سے چندسوالات:

سوال تمیر (۱): - انر جهندی کاعام اعلان ب: "الفیدام معنه لا منبت ک تیاں کے دریعے ہم دی کی نفیہ مراد کو فاہر کرتے ہیں، خودکی سندیش گھڑتے۔" آپ نے اند چھتھ ہے، پرسنلہ کھڑنے اور شادع ہوئے کا افرام لگایا ہے، اس کا ثبوت دو۔ سوال نمبر (۶): - ایک مرزمی آیت باسمج مرزع غیر معارض مدیث ویش کروی اجتمادی سئلہ کی جمتد کی طرف نسبت کرنا کفر وٹڑک ہے؟

سوال نمبر (۳) - مسیح بواری جا/م ۴۳۳ ہے جن محالہ یا تاہین کا علیٰ قا عنوی کہا نا ندور ہے وہ امتع ل کی طرف نسبت کرنے کی وجہ سے کافر ومشرک تھے نہیں؟ بوسعائے تا بعین اور محدثینی ان القاب پر خاسوش رہے وان کا تقعم شرق کیا ہے؟ سوال نمبر (م): - ۱٫ م ترندیٰ نے اجتمادی مسائل کی نسبت امتوں کی طرف کی ہے أيابية كتاب يزيعنه يزحات والمسلمان بيل يا كافر؟

وسوسہ قبیرہ: 💎 مجیلی اُمتوں میں آپنے نوموں نے رسولوں کے مقابلہ میں کیا ق فَ الْمُوا حَسُلُكُ مَا وَجَدُنَا عَلَيْهِ أَمَا فَمَا سَرَهِينِ بِإِنهِ وادون كاوين كافي بهراة مشرک وکافرنی ہے بھر جب آپ نے نہوں صفلدوں الع (تقریرز خان میں 9-محود دسن و یو بندی) مینی حق و مواب و شافعی کے ساتھ ہے مگر ہم اعرها وهند ا الوطيفية كي يايروي كرين محرقو آب كا واين واليمان سلامت رباه بياتها و يكولها؟ ا قرالیہ : معنی عبدالرحن ائر مجتدین کی تعلید کوشرک کابٹ کرتے آنھا ہے ور آن مشرکین و کا فرین والی چیش کی ہے۔

(1)منتی صاحب! قرآن ان باب دادوں کو کافر،مشرک، بے مثل، بے وا ب عَمْ كَا يَبِينْ كُوكُلِ بِمِي قُراكَ ناف جَهَرَفِينَ كِهَا أَبِ سَدَانَ وَكَن وَلِيلِ سَدَا مان لیا؟ دوآیت یا حدیث وش کروجس سے ثابت ہو کہ دوجھتا کی تھے ہر ند بانخراً ا المكنية غن لمواضعه كاخيال بمين.

(۴) کیا بیدشرکین اجتهادی مسائل شی ان کی تقلید کرتے تھے یا کنروشرک

عقائد على ؟ آب البت كرين كران كي تقيير اجتبادي مسائل جي تحي -

(۳).....مشرکین غدا اور رمول کی بات کی تروید کے لئے باریا ہے گانام لیتے تھے، ہم جھتے بن سے متعا ورموں کی بات کی تشریح مجھ کر خد: ورموں کی بات برعمل کرتے ہیں وان ووٹوں کو ایک وی قرار و ہے سکتا ہے جو دن کو رات و أجائے کو اند حیرا، وواج کو ہ پٹاپ کہتا ہو۔

(*)منتی میانب زیمی قرآن وحدیث ہے بنائم کر کرمشرکین فومورشرکیہ شد اسينة أباء كي جوتقنيد كرسة بيني دوفعل في يا غيرُنعي؟ أثر فضي في انوان كي تقييدي نسبير قرة ن وحديث سے تعمر۔ اگر ان کي تقنيد غير شخصي تني جس مي نسبتيں نه تعمي تو بغول مولا؟ شُواللهُ بِياً بِياكُ غَرِبِ بِهِ.

(٥)......قرآن يأك في بيعقل، بيعلم، بيه رينة باه كالتعبيد سيرت كيا كياد، خيب دِب كَ تَمْيِد كَاعُم رَوِ سے، والينع سبيق من اناب الي. مِجْهُد خيب ١٠٦ هـ ١٠٠ کے مثرک جیے جموے خدا کو مانیا تنا ہے ہی کریے خدا کو مانا ضروری ہے، جمولے کی کو مانتا منع اور سیچے تمی کو مانتا مغروری ہے، جھوٹی مدیث کو مانتا نامیا کڑ اور تجی کو مانتا مغروری ہے۔ ایسے بی ہے وین آ ہو کی ختید ہے دینی اور مجنوزین کی مسائل اجتہاد ہے شن تنايد فيرجمته يرادزم ہے۔

(1) مفتى مناسب! أب ف الل أيت كو مجتدين ك خلاف بيش كما ب الل میں آ ب نے اپنے اکا برشوکا کی اور محرجوۃ محرض کی تطلید دی کی ہے، آ پ اس تعلید کی دجہ ے كافر ومشرك كول تين تغيير سدة بياتشا و كور؟

(٤).....مفقی صاحب! آپ غیرمقلد میرد، اگرآپ کے پیچے غیر مقلدی رہیں ہو وہ

تظید آباء کی وجہ عشرک ہوں کے بانہیں؟

(٨) حضرت مجع البند (أستاذ موادي ثناه الله امرتسري) كي طرف آب في ي یات منسوب کی ہے کہ ہم حدیث رمول کے مقابلہ ش اسے امام کی تقلید کریں مے کیا ب حفرت کی این تحریر ہے؟ ہر گرفتیں ۔جس تقریر تر فدی کا آپ نے توالہ دیا ہے، دو کس نے کاسی ہے؟ سمجے شخیل سے تکھیں۔ آپ کہیں کد کی شاگر و نے کلعی ہے تو شاہ اللہ جیسے غیرمقلد بھی ان کے شاگر و تھے۔ آخراس شاگر دئے اپنا م کیوں نیس لکھا؟

(٩) حضرت مولانا محدا براتيم بلياوي في قرير يضح البند جواينا نام لكه كرأرده ش شائع کی ہے،اس میں ایک عبارت کا نشان تک تبیں۔

(١٠) في البند كراية الفاظ يه بين خدا اور رسول كرمقا بله من خواه كوني ايك کی تعلید کرے یا جزار کی واس کے بطلان میں کس کو کلام ہے (ایضاح الاولدص عود) ان کی اٹی تحریر کے خلاف ان یہ بہتان یا عرصنا:

این کار از تو آید و مردان چین کند

(۱۱)جس مجبول مؤلف كى كماب كاحوالية بي في الياس من مجرى صاف فقره موجود ہے کہ ہم مدیث کی خالفت فیس کرتے۔ جناب نے اس کوفق بی ٹیس کیا؟ یہ بدویانتی منافق کی نشانی ہے بھی حدیث۔

(۱۲) بيقول كـ "حق اس مسئد مين امام شافعي كـ ساته يه يـ " كيار حضور عظي کا ارشاد ہے کہ اس کے خلاف تحن مقلدون کہنا رسول کی مخالفت مجمی جائے۔ جناب کی كتاب يزه كريمي زبان يرآتا ب:

اونٹ رے اونٹ تیری کون ی کل سیدھی

ومومد قمير 🙉 📖 مجيلي أحول بحرش كين قيامت ميں نبايت ہے ہي بح مالم عَى كَبِينِ هِذَا وَقُفَا إِنَّا أَخَلَعُنَا صَاوَلُنَا وَكُبُزَا مَا أَنْ حُرْمَ وَإِلْمِن بِي كُلِهُ وَبِراستِ ما رے ہو۔ فریائے! وہاں کیا کو مے؟

از البرن(۱) ہے آ بت ہی حل آ بت بالا کند کے بارے میں ہے۔ آ ب نے اکا جملة ثمراً ن كالبحي جهورٌ وما: فأحَمَلُونا السَّبيّاتِ كدوه كبراه راستد عركم الأكرف وال بھے اورا تھر جھٹر نین تو راستے پر چائے والے جیں۔ آپ کا بھی جمل یُسخر خُلُونَ الْحَکِلِمَ غن مُوَ اجْعِهِ كَامِعِدالْ بِ جِيثِين ويهود بيد

(۲) بہمجی جموٹ اور بہتان ہے کہ مقلدین ونیا تیں مجی کلیدؤ ہوائے ہیں۔ کسی مقلد نے جمبتدین کی تندید کے لئے کھی اس آیت کوچش نہیں کیا۔ آگر اسعامة اللّٰه علی السكافيين سے بھاؤ ما ہے ہولوايك مشكر والريش كروه ورند فعا سے ڈرو، بہتان بازى -4:4

(٣) الل سلت يد كيت جي كدكفاد اكارك اطاعت وتعليد سي من كيا ب محر قرآن في الامرك اخاصت كانتم وياب ادراولي الامريت مراوخود الله تعالى في بنايا بيك اللي اشتراط بين اوراشنها اجتهاء كوكت بين جوساف اجتهادي مسائل ش تميد كأهم ب-

ومومدتمير؟ : ضا تحاق لِعُوْجِن وَكِلا مُؤْجِنَةٍ إِذَا قَطَى اللَّهُ وَوَسُولُهُ أَمَوَّا أَنْ بَنْكُوْنَ لَهُمُ الْحِيْرَةُ مِنْ الْمُرِهِمُ (مورة الاحزاب)" الشَّاقِ الْ اور رمول الشَّكْ كَ فیلے کے بعد کسی مؤمن مرد و تورت کورائے کا اختیار مامل نہیں۔" محرتم نے رائے کو اصل وین کیااورانل افرائے نامرکھا۔ فرہ سیکے اٹھیس قرآن وحدیث سے کیا شد ہے؟ ازالد: جوآیت آپ نے تھی، اس میں سائل متعوصہ کا تھم ہے اور ہم مسائل متعوصہ میں کی جہتر کی تھید نہیں کرتے۔ عدیث معاذ رضی اللہ عند میں پہلے کتاب و سنت کا ذکر ہے۔ یہ سائل متعوصہ ہیں، پھر دائے کا ذکر ہے۔ اس عدیث کے موافق مجہتد الل الرائے ہے۔ جب حضرت معاذ رضی اللہ عند نے اجتہاد بوالی فرمایا تو نی اللہ عنائی نے لئے ہیں جس نے رسول اللہ علیہ اگرم علیہ نے قرمایا تھا کہ سب تعریفی اللہ تعالی کے لئے ہیں جس نے رسول اللہ علیہ کے تاصد کو اس بات کی تو فیق عطافر مائی جس سے اللہ تعالی کا رسول راضی ہے (ابوداؤد و فیرہ) جس رائے پر اللہ کا رسول راضی ہے، ہم بھی اس سے راضی ہیں۔ آ تخضرت و فیرہ) جس رائے پر اللہ کا رسول راضی ہے، ہم بھی اس سے راضی ہیں۔ آ تخضرت میں اللہ کا رسول راضی ہیں۔ آ تخضرت میں اللہ کا رسول راضی ہیں۔ آ تخضرت میں اللہ کا رسول راضی ہے مشورہ کرتے ان کی تقلید کرتا۔ "ان الل الرائے کے براے بی کا رسول رائے کے مشورہ کرتے ان کی تقلید کرتا۔" ان الل الرائے کے بارے بی کیا تو تی ہے؟

آپ علی اور این الله اور ایل الرائ نام رکھا۔ فرمائی الله عند کو بیٹیس فرمایا که "اے معاذا تم

الله علی کو اصل دین کہا اور اہل الرائ نام رکھا۔ فرمائے اجمہیں قرآن وحدیث بے

کیا صد ہے؟" مفتی صاحب! آپ کورسول پاک میں ہے کہ وہ

جس چیز سے فوش ہوں آپ اے قرآن وحدیث کی ضدفرما کیں۔ کیا واقعی اپنی کسی ہوئی

آبت پرآپ کا ایمان ہے؟ اور آپ حضور میں کا فیصلہ بائے کا اطلان کریں گے۔

وسوسہ فمبرک: الْبَوْمُ اَتَحْمَلْكُ اَلَّحُمْ فِینَكُمْ (سورة المائدہ)" آج میں نے

وسوسہ فمبرک: الْبَوْمُ اَتَحْمَلْكُ اَلَّمُ فِینَكُمْ (سورة المائدہ)" آج میں نے

تہارا دین محل کر دیا۔" کیا اس آبت کے نزول کے وقت قرآن وسنت کے سوا دین

میں کوئی چیز موجود تھی؟ اگر نہیں اور یقینا نہیں تو رائے اور قیاس کہاں سے ورآ مہ ہوئے

اوران برجی دین کیے وہی محری تھیرا؟

ازاليه؛ يه آيت هنور ﷺ يرنازل بولي هي، پمريحي آپﷺ نے فرياد: اذا حكم الحاكم فاجتهد فاصاب فله اجران وان اخطأ فله اجر واحد. (بخارى ومسلم)''جب حاتم فیصله کرے تو اجتہاد کرے ، اگر اس کا اجتہاد درست ہوا تو اللہ تعالی کی طرف ہے دواجرملیں گے اوراگر خطا ہوا تو آیک اجر _'' پھر حدیث معاذ رمنی اللہ عند ص اجتهاد ورائ كاذكر ب، قرآن ياك ص بحى فسأغضروا بنآ أولى الأبضار اور علامة ميوطي والله الله عن قرمات بن الاعتباد هو القياس. الله تعالى في اسحاب بعيرت كوتياس كاعم ويا ـ الله تعالى في قرآن ياك من عم ويا: لِيَعَفَقُهُوا فِي الدِّين. اور فقد قیاس می ہے۔ اللہ تعالی نے بعض صحاب کو اہل استناط فرمایا جو اجتماد ہے۔ حضرت الويكروض الله عندن اسية دورخلافت من فرمايا: اجتهد بسوائسي (طبقات این سعدج ۱۳ / ۱۳ ۲) حفرت عمر رضی الله عنه نے قاضی شریح کو تھم نامه بھیجا کہ قیاس كرو (وارمى ص ٢٠ يمايق ج ارص ١١٥) عبدالله بن مسعود رضى الله عندكوفه مي رائ س فتوی دیے تھے (متدرک جم/م ۹۲) ابن عباس رضی اللہ عند مکد میں رائے سے فتو کی ویتے تھے (نیکٹی ج ارس ۱۱۵) مطرت زیدین ثابت رضی اللہ عنہ یدیش رائے ہے فنوی ویتے تھے (بیبی ج ا/ص ۱۱۵) حضرت علی رضی اللہ عندرائے سے فتوی ویتے تھے (شرح فقد اكبرس ٥٠) اور سحابة و تابعين ك بزارون فاوى كتب حديث ين موجود میں جو اجتہادے دیتے گئے اور کوئی ولیل (آیت یا صدف) ویش قیم کی۔ کیا یہ سب كي حضور اللطاقة اور محاليات وورين ندتها؟ اصل بات بيرب كرقر آن وسنت من بعض مائل صراحة ملت بين، ان كومسائل متصوصه كها جاتا باور ببت سيسائل كى علت کے مضمن میں جیسے ہوتے ہیں، ان کو مجتبد ظاہر کرتا ہے، ان کو مسائل اجتباد ہے کہا جاتا

ے، مثلاً حفرت کی کا ارشاد کہ یکی پینے کی چیز عمی گرجائے تو فوط دے کر تکال دو۔ اس حدیث ش بیر مشتر مشعوص ہے کمرائ مدیث ش ایک علمت بمی ہوشیدہ ہے کہ ہر دہ جا فور جس کی مرکوں عمل دوڑنے بھرنے والا خون نہ ہوگاء ان سب کا تھم تھی جیسا ہے، یہ علمت جمہد نے عمال کی اور پڑونی، مجمر، بھڑ، بھنو وغیرہ سینٹواں جانوروں کا تھم دریا خت کریا۔

- (1) آپ ایک مدیث چی فرما کی کدائ آیت کے فزول کے بعد صنور ﷺ نے اچنے دو تفاقہ سے روک دیا ہو۔
- (۲)۔۔۔۔۔۔۔۔ آپ ایک مدیث پیٹر کر پی کہ جب طلفائے واشدین اور محابرًدائے کا ڈکر فرمائے تو لغال محالی نے بدآ بہت ان کے طاف پڑھی تھی۔
- (۳) اگر آپ اس آیت کا مطلب به تکھتے ہیں کہ قنام سے کی مسائل کے امکام مراحق قرآن وحدیث میں موجود ہیں تؤ فرمائے انگر ہم چومسائل پوچیس تؤ آپ ہر مسئلہ کا جواب منز جم قرآن اور منز جم حدیث ہے مراحقا دکھا کیں گے؟

وسوسد تمير المنسس آپ في خود ماخند وس من تعيد كائكم ادر دليل نوج كاب ا از الدن تغيير مطلق داجب بالذات ب ادر تغيير شخص داجب باغير ب، بيس حد سه رسول كي سندك تحقق كا وجوب بالغير ب.

میلی آیت موانی، آیت نسست او نعقل، آیت اجازی، آیت اطاعت سے ولیل گزریکی ہے۔ اللہ تعالی نے سورۃ الوب عمل ایک طاکنہ کو تھم وید ہے کہ وہ فقیہ بنیں، مجرائی قرم عمل ہوکر (وہ فقیمی اورکام) سنا کر ان کو ڈواکس نے فاہر ہے کہ ان کے فقیمی اسکام کو باننا تقلیدی ہے اور ای طاکف کے بڑاروں فقیمی احکام کتب مدیث عمل موجود

یں، جن عمل ولیل کا شارہ تک نبیں۔

یسومد قبیر ۹: انتدار بدنے اپنی تھلید سے فتن کے ساتھ منع کیا ہے اور لوگوں کو قرآن و حدیث کی اجاع کی تنقین کی اور وی طرح امام ابوطنیڈ کے فر مایا (شامی ج اُرُ عن ۱۳) ہے محرتم قرآن وحدیث کی جائے تھلید انکر کی تعلیم وسے ہو ۔ کیا حسسلا ہو؟ فاصلو ا کے معدداتی تم می تونیوس ہو؟

! ڈالیہ (۱):منتی صاحب نے بالکل جموت ہوتا ہے۔ یمی امام نے عوام کوسرائل رجیٹا دید ہیں جمجہ کی تھلید سے منع نہیں کیا۔ شامی عمل بالکل برٹیش تکھا۔ اندار بور نے عوام سے عمل کے لئے جو لاکھول مسائل شرکر دوں کوکھوائے ان سے ساتھ دلائل بالکٹل منبی تھوائے ، میں وعمدت تھید ہے۔

(۲)ان کا فربان مجی سیس: امام ابوطیفید، امام ابو بوسفت اور امام محد فرمات بیس که عالی پر مغنی (مجتبد) کی تقلید امازم ہے اگر چرمنتی سے خطا ہوئی ہو (الکفاریسی البدایہ ج ۱۶ مرمن ۱۹۱۹) اس سے بزید کر تقلید کے تقم عمل منتی کیا ہوگی؟

(۳)...... جب ان کے قربان عمل مائی کا لفظ مراحثاً آسمیا کو معلم ہوا کرتنے والے اقوال عالی کے لئے ہرگز فیس – ان کے کا غیب ان کے جہتد ثما کرو تھے۔ ان اقوال سے موام کے لئے تکلیدکوئع کا بیت کرنا یُنعِرَ کُون الکیکیف عَنْ عُوْ اجبرہ ہے ۔

(۴)......مثنی صاحب کاریکھٹا کہ" تم قرآن وصدیت کی بجائے انٹر کی تھید کی تنظیم دیتے ہو" بیکی جموعہ ہے۔ ہم قرآن وصدیت سے قبل ا مکانات پڑھل کرنے سے لئے مجہدے رہنمائی حاصل کر کے قرآن وصدیت پڑھل کرتے ہیں۔

(٥)...... على صاحب كايدكسة كركياتم حسلوا فاصلوا كصداق لانين - بينتي

صاحب کی برختی ہے۔ حضور ﷺ کا پورا قربان ہے کہ لوگ جا الوں کو دیتی چیٹوا ما کیں۔ سے وہ وخود کراہ ہول سے اور لوگول کو کراہ کریں ہے۔ ہارے و بی راہنا الرجمت ہے۔ جافی تھی جی اور ندی کراہ جی ۔ نہ ہم ان کی تقلید عیں کمراہ جی، البت فیر مقلدین جمتہ بن کو چھوٹر کرجی جائل موادیوں ہے سنائل ہو چھتے جی دہ خود بھی کمراہ جیں اور ان کو بھی کمود کرد ہے ہیں، وہ اس کا حصداتی شرور ہیں۔

ومومد تمبر انس... کیا تھی بختی رسول اللہ میں اور محابر وتا بھی کے زیانوں میں موجود تمی؟ اگر تبیں اور برگز نہیں تو قرمائیے! بناب نے اس کو مشر کھیں جم سے ور آ مد کرکے دین کا حد کیاں اور کس وکیل سے منایا جبکہ ہم سیکٹڑ واں ولائل سے اس کو ورقہ مرک وین فاہت کرتے ہیں۔

از الد: تعلید مطلق جس کے دونرد میں جنعی فیر خضی شروع اسلام ہے ہی تابت ہے۔ معنی بے جاروانی تمایوں سے بھی جال ہے۔

(۱)......میاں نڈریشین صاحب لتق فراتے ہیں: ذبانہ محابدے لے کرزہ ندامحاب خاہب بھے بچک چال حمی کہ یہ ول تھیم آیک ذہب کی تھید کیا کرتے تھے۔

(معيادالتق ص٥٥)

(۲) يقينا معلوم ب كرسب نوك قرون اوقى عى يمي كى كالى تقيد كرتي بمي كى كالدرك بمي كى كالدرك بمي كى كالدرك المديد كون مراه)

(۳) محابث فراندے کے کرآن تک میں مال ادرسسک بلاآ رہاہے کہ کمی سمی کی تقلید کرتے ادر کمی کمی کی بدول انگار کے (معیارالحق می عدد)

(۴) اليك مئل عما ايك جميدك تعليد كرنا اورودس على كى ووسر ع جميدكى

تختید کرنا تھا مالے فرون او گ ہے تارت ہے، کیونکہ یقیناً معلوم ہے کی قرون اوٹی ثبی اسا على دا قتي تھا۔ (معارالتي من 11)

(۵) ... يامين دره بيتين كو به بات تيني كن بين كرز بات مي ويمي تواني تماه كونكه لوگ جرعبد میں حسب الفاق بلد التراب منتق واحد کے آؤی النتے دے ور یہ رہے خوب پیمنی رق (معادالي مرو)

(١) محليةً ارتابعينَ بياعثَة دركيع تنه كراس أمت شرافعش واذل ابوكر شء يمر عمرا دران کا بر ما نیاتھا کہ بہت مسئوں میں ان کے قوں کے برخان نوروں کی تعبید کرتے تے اوراس پر کی نے الکارٹیس کیا تو جارے آول براجائ**ے ہو**گیا (معیار لیق م) ۔)

(4)ا بمانا محالہ کا جرنٹر اٹی نے نقش کیا ہے: ''اور جمع ہو کئے ہیں محام میں مرکبہ جو مختل ابو بكر صديّ رضى القد عندا در عمر فاروق رضى القد عند سے فو كما يو چوكر النا كے قول یر تمل کر ہے ہے وہ اے کرفتو کی ہو تھ نے ابو ہرمیرہ رشی اللہ عشداور معاذ بن جیل رشی الله عندية (معاراتي من ۹)

(٨) مول فالمحرحسين بتانوي أروات جين تحليد أنخطرت علي كالمريد علي كالموات متوادث چلی آئی ہے۔ایک تشید ہیشہ کے لئے کے مخص کی ہویا کمجی کسی کی بہمی کسی ا کی این شد کوئی فرق نبین (اشهاه لینه ئ)، /من۴۱۹)

(٩) معنور خَصُطُ کے زیائے میں بورے بین میں حضرت معاذ رضی امتا عنہ کے انصلے و فذیتھے۔ ان کی تقلید شخص ہوتی تھی۔

(۱۰).....شاہ و فیا انقدّ محابۃ کے ذکر شن فریائے ہیں کہ دوآ فاق میں منتشر ہو مجھے اور برسحالي: بينغ علاقه كالمقترى بن كي (الانعياف بس٣) (١١)...... مكه مكرمه من حفرت اين عباس رضى الله عدقة كل وسية - فعال فيسه بوأيسه (بیعتی) اورسب ایل مکدان کی تطلید شخص کرتے تھے۔

(۱۲) مدينة متوره ش حضرت زيد بن ثابت رضي الله عند فتو كل وسية اور فرمات: انسعسا افول بسرأيسي (جامع بيان أحلم ج٢/ص ٥٨) سب ابل ويندان كي تقليد شخصي كرتي بتي كرحفرت ابن عمال كوكه ديا: لا نساخيذ بيقولك وندع قول زيد (بخارى ج الص ٢٣٥) " بم زيد كے مقابلے عن آب كا قول نيس مائيں عرف

(١٣) بعره يس حضرت الس كا فتوى جالا تفار آب ك فقادي كتب حديث يس بلاؤ کر دلیل جی، بھی تعلید شخص ہے۔

(١٧٧)......دارالعلم كوفد مي حضرت عيدالله بن مسعودٌ فتو كل ويت اور قرمات: اقسول فيه بوايي (جامع بيان العلم ج الم ٥٨) ان كينتكرول قرادي كتب حديث من با ذكر دليل موجود جير _ يهال اين مسعودٌ كي تقليد شخص بوتي تقي _

(10) تابعين ك دور مي برشم عن ايك صاحب قدب امام تعار اوك اى كى تَطَيدِ كُرتِے عِنْ (الانساف من ٢ ، از شاہ ولی اللہ") مکہ ش عطاء، لدینہ بی نافع ، بعر ہ ميں حسن بعري، كوفيه ميں ابراہيم فخفي، يمن ميں طاؤس، بمامه ميں يجيٰ، شام ميں كھول، عراق میں میمون ،خراسان میں شحاک (مناقب موفق ج۴/ص ٤، معرفة علوم الحدیث ص ۱۹۸) ان حضرات کی تظلید شخصی ہوتی تھی۔ ان حضرات کے فآوی مجی مصنف عبدالرزاق ادرمصنف ابن ابي شيبه جي موجود جين جو بلا ذكر دليل جين ـ لوگ ان پر بلا مطالبہ دلیل عمل کرتے تھے، یمی تعلید تخفی ہے۔

(١٧)اب آپ بھی ایک آیت پیش کریں جس میں مجتمد کی تقلید شخصی کوحرام یا کفر

ره شرک قراره باهما بو_

(۱۵). ... دایک مدیده میچ صرح غیر معارض ویی فره کین جس بین جیند کی تقلید تنعی کو حرام یا کفر یا شرکه ما که می جو

(۱۸).... مجرے دور توت اور دور خلافت داشدہ میں صرف ایک غیر مظار کا نام نابت کریں جو چھتند کی تقنید کوشرک اور فرام کے۔

(۱۹).....محابر ارتابعین می سے مرف ایک غیر مقلد کا ام چی کریں جس نے اس تقدد کوشک، کفر باحرام کہا ہوں

(۴۰) یہ می جارت کریں کہ انتساد بعد کی تقدیر شخص کن مشرکین کھر ہے، کس کن عمل انکوائے درآ مد کی تھی ؟

وسوسه قمیسر أل: كيا انتراز بعد سے پہلے تقليد شخص جاري تھی يائيس؟ اُ رُقِی تو کس امام ک؟ اور تيرمنسوخ کيول جو ئي؟ نائخ کيز چيز ہے؟ وہ امام کون شقع؟ کيا انجی بھی ان کی تقليد جا کز ہے؟ اگر ٹيين قر کس نے منع کی؟ اور ان کے منصب ۾ انگر اربورکوکس نے فائز کما؟ قرآن وسنت سے واضح کيجة ۔

ا زالیہ: به وسر محض کج نبی کی بدواوار ہے۔

(۱) بینق دسوسر نبره ایس واضح او همیا که خبرالترون عمل کن کی تعلید موتی تمی ر ازام مدا حب ّ نے سخاب و تابعین کے ان فرآوئی کو مشورج قبیم کیا یک حدون کروایا (ویکھو: سماج الآثار امام مخرار کماب الآثار امام ابو بوست گامی لئے وقد کی تعلید کے حمل جمل ان کی مجمی تعلید ہوری ہے۔ انرکی تعلید کومحاب کی تعلید سے الگ مجمع عن اصل کور باطنی ہے۔ برجع برات ان کے شارح ہیں تہ کہ تائج۔ (جودالله الباخرج العراسع)

معنوم ہوا کہ امام صاحب کا مسلک ایرا ہیم بخل والا ان کا مسلک معنوت عبداللہ بن مسعود اور معنوت می والا تھا۔ معنوت مسروق " فرمائے ہیں: جس نے استخفرت میں کا کم کوئوش کیا تو چہسحاب عمل جع بابا۔ ہمران چر کا علم ووصحاب عمل جع ہو کمیا ومعنوت میں اور معنوت عبداللہ بن مسعود (مقدمہ این العملان وجی براہم) این می ووقوں سحابہ کے عم پر خامس منٹی کی بنیو ہے۔

 اس بحث ے خارج باورمسائل اجتبادید بی اہل استباط اول الامرک اطاعت كا بھى حمد ديا كيا۔ اَفْتُو مِنُونَ بِبَعْصِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْصَ.

(٣) ائمه جبتدین کی تقلید کونه قرآن میں شرک کہا حمیا، ند حدیث میں، ند کی خلیفہ راشد نے شرک کہانہ کسی سحالی یا تاہمی نے۔

(٣) مقلدین الرکورسول ائے بین شدرسولوں کا مقد مقابل۔ کیا حضرت ملکی اللہ مقابل کے حضرت ملکی اللہ جب حاکم کو اجتہاد کرنے کا حکم ویا تو اے رسول بنے کا حکم ویا؟ اور حضرت معافہ * نے جب اجتھاد ہو آبی کہا تو حضور ملکی نے قربایا تھا کہ تو میرے مدمقا بل رسول بن بیٹھا ہے۔ جموث اور بہتان کے علاوہ اور کچی بھی تہارے سیلی جب

وسومد تمبر ۱۳ تم لوگول کو بے وقوف بنائے کے لئے قرآن و حدیث ہے کوئی دلیل نہ پانے کے بعد بیراگ الا پتے ہو کہ تکلید شخصی پر اجماع ، و چکا ہے۔ فرمائے ! کیا مقلدین کا اجماع مراو ہے؟ چٹم کورگر نمیند آفقاب را چہ گناو۔ اجماع کی تعریف ، شرا لکا اور ارکان پر بھی نظر ہے؟ یا اجماع آمت مراد ہے، وہ کب ہوا؟ کس نے کیا؟ جبکہ بڑارول لا کھول محد قین اور کروڑوں اہل صدیث تکلید نہ کورکوشرک بڑائے ہیں۔

بزارول الطول محد مين اور اروزول الل صديت سليد فداور اوس المحاف بين اقرالهد(۱) المحد وقد كتاب وسنت عن تقليد كا جوت كرر چكا اوراس براجماع مجمى المحدوثة كرا براجماع المحروث في روضة الطالبين مي فرمات جي كرامام الحريث في التدريش من المام الحريث في التدريش القدريش من المام المحروث في القدريش القدريش من المام من المحاص المن المجام في المحروث المحروث

مو بيك بين اور تحرير من آ بيك بين، تمام أمت يا دولوك جواس أمت من قامل اختبار ہیں سب اس زمانہ میں ان کی تھلید کے جائز اور درست ہونے پرمتفق ہیں اور اس تھلید على بهت ي مسلحتن جي جوم ين على مير، خاص كراس زباندش جس بي الوك نهايت عي پست بهت جو محت بن اوران كوقلوب خوابش نفسانى سے ير بو محت بيل اور برخض اپني ى رائ يرنازكرن لكا ب- (جود الله البالغد،مرجم، ج الص ٣١١)

(٣)...... آپ ذرا أمتع ل كي اصول فلته كوچيوژ كرصرف قر آن وحديث ہے اجماع كي تعریف،شرا نظ اورار کان تحریر فرمادیں۔

(٣) حديث كي سند كالتحقيق ببلي قرن مين نبين هوتي تقى (صحح سبلم) پجراجهاع ہوگیا کہ مختبق ضروری ہے۔ بداجا ال کب اور کہاں ہوا؟

(٣)قرآن ماک کے بعد محج بخاری سب تابوں سے زیادہ محج ہے۔ اس بر اجماع کب، ٹس جگہ، کن لوگوں نے کیا؟

(۵)......آپ نے ہزاروں لاکھوں محدثین پر تبوٹ بولا کہ وہ مجتبدین کی تقلید کوشرک كتے ہیں، كم اذكم صرف صحاح ستہ ميں ہے ہى جميتدين كى تقليد كے شرك ہونے كا باب وکھادیں۔محدثین تو سب مقلد تھے جیسا کہ کتب طبقات سے ظاہر ہے۔

(٢) كروژول الجحديث مثل فير مقلدين مراد بي توبي مجى محيح نبيل _ آب ك ا كابرين تومطلق تقليد كو داجب كيته بين ، جيها كه كزرا_

وسوسه فمبر ١٦ : اور محى تم لفظ مجتهد عفريب دية بو مجتدى تعريف كياب؟ ہر مجتمد کی تقلید فرض ہوتی ہے؟ اگر ہے تو کیا اسلام میں صرف یجی چار مجتبد ہوئے ہیں۔ اگر اور بھی جی تو ان کی تقلید کیول نہیں کرتے؟ اگر بھی جار جی تو بد فیصلہ آپ نے کہاں

ميزكر كراميا ؟

از الد (۱) قرون ادنی شی بہت سے بجہدین ہوئے۔ اخد تعالیٰ کا تفریق تھم کی ہے ۔ اخد تعالیٰ کا تفریق تھم کی ہے کہ ہے کہ اخد تعالیٰ کا تفریق تھم ہے کہ ہے کہ الد تعالیٰ کی تھویں یہ ہے کہ الن شک سے مرف عال می کھویں یہ ہے کہ الن شک سے مرف عال می مسائل اور اصول تقدیم لی طور پر مرقب ہوکر آست کو سے اور باتی جمعندی سے اصول اجتباد اور سمائل اجتباد بید تکھل طور پر مدة ان ہوئے ، نہ اقوار و شہرت سے ہم تک بہتے ، اس النے الن کی تقلید ممکن می نیس بال آ ب است کر کے ایک بی اور جہد چی کرد ہی جن کے اصول افتدان مسائل فضای طرح منع صورت میں ایک بی اور جس الن کو جا دیں شائل کرنے میں کوئی عذر نہ ہوگا۔

د ان اور متو از جول تو ہمیں ان کو جا دیں شائل کرنے میں کوئی عذر نہ ہوگا۔

د ان اور متو از جول تو ہمیں ان کو جا دیں شائل کرنے میں کوئی عذر نہ ہوگا۔

(۲)درانگ کی جہالت کا موال ہے بیٹے اون کے کیا اسلام میں مرق مات کی اداری ہوئے بین؟ ان کے علادہ مجی توجوئے ہیں، ان کی قر اُسٹی کیول ٹیس پڑی جا تیں؟ (۳)مفتی صاحب الیک طرف تو آپ اس پرناداش بیل کہ ہم نے امام ابوضیفہ کی تھید کیوں کی۔ اب آپ ناداش ہیں کہ باتی بڑاروں جبھرین کی تقلید کیوں چھوڑی۔ کیا ایک بت کی جوجا شرک اور بڑاروں کی جوجا تو حید ہے؟

(۳)آپ مرف قرآن وحدیث سے جمہد کی تعربیب، اجتہاد کی شرائط و ارکان عالنافراد می۔

وسوسر تمبسر ہا۔.....رمول اللہ عَلَيْقُ کے جیل الندرسحابِ و تابعین عظام بھی جہتہ ہے یا نیمن؟ وکرفیمن جے قو صرف میہ تاز دین کرآب کا دین جُم کا درآ ہدی مال ہے یا روم کا ا کرکٹ عربی دین تو دنیا ہائی ہے کہ مرف سحاب رمول عظیمتے کے ذریابے دنیا کے ہاتھوں میں چھجا۔ ا ز السه....(۱)....شاه ولی افلهٔ فرمات میں محابہ کے دوکرہ دیجے وجمبته اور مقله (قرق العینین) نبی حال تابعین کا تعالیان میں غیرمقلد ایک مجمی نیشانہ

(٣) يحم اور مرسه كا تقاتل توسنا تها ، تم اور روم كا تفايل نياسنا هير_

(۳)..... السعبعد لله بمارے ایام صاحب کے محاب کا زمان پایا این سے ما قاتی فرما کمی جیمرہ سیاکا وین ملکروکٹوری سے زمانے کا ہے۔

الرازنامه:

آپ سکے بیوں نے ملکہ وکٹوریہ کو بھی جو کھا پر جوب سی تامہ جی فرمایا،
آپ کو جاہیے کہ فراز و تعلیہ جھر ہی بلکہ روزانداس کی طاوت فرمایا کریں: یحفور فین سلطینا! ہم مجران گروہ اللہ عدیث اللہ فی سلطین! ہم مجران گروہ اللہ عدیث البینة گروہ کے کل افتاص کی طرف سے حضور وارائی فدمت عالی جی بھی جوبی کی و فی مسرت سے مبارک باوجی کرتے ہیں۔ آپ کی سلفت بی جوارت فاجی آفا رہا ہے۔ یہ آزادی (غیر مقلدیت) کی حاصل ہے اس سے مروہ فاص نعید آفا رہا ہے۔ یہ فرائی آزادی اس کروہ کو فاص اس سلفت بی حاصل ہے۔ یہ فرائی آزادی اس کروہ کو فاص اس سلفت بی حاصل ہے، بخلاف ووسرے اسلامی فرائی آزادی اس کروہ کو فاص اس سلفت بی جا زادی حاصل ہے۔ اس محمومیت فرائی ہو کہ اس کروہ کو اس سلفت کے قیام واستحام سے زیادہ مسرت ہے۔ ایس محمومیت کے ایک در اس مرد کے مداخت میں اس استحام سے زیادہ مسرت ہے۔ اوران کے دل سے میادک باد کی مدا کی زیادہ فرد کے ساتھ تعروز دن ہیں۔

(الثامة المنة ع ٩/ مل ٢٠١)

میاں نڈ پر سین کو جب مکوسید مکہ نے گرفاد کیا کہ بدفتہ کا مکر ہے ہی ہے ہدائیکا نام سلے کرجان چیزائی اور حرم ہاکہ شرک کھڑے ، دوکر کہا کہ گورنمشٹ (پھر بری) ہندوستان شک ہم مسلمانوں کے سلٹے خداکی رحمت ہے (العج 3 بعدالحما 5 ص ۱۹۳) مولانا! اخبار الل حديث امرتسركي شبادتول عابت بكد ١٣٨٥ء ي قبل مكه مدينه بين غير مقلد مذهب كوجانية تك نه تقهه مولانا! فرمائي عجى وين كن كا ے؟ صحابدوالا وين عجى ب ما برطانيدوالا؟

وسوسه تمير ١٦ جب محابة وتابعينٌ مِن عِيثار مجتمد تقية و پرائمداريد كي تقليد سس بناء ير؟ اور ائد اربع يس ع بحى صرف ايك كى كس كى بناء ير؟ كيا وه جارون رسول تھے کہ ایک کی شریعت برایمان لائے کے لئے دوسرے سے انتظاع واجب ہے اور ایک کی غلامی کا فقادہ (طوق) گلے میں ڈالنے سے دوسرے کا طوق آتار پھینکنا

ازالیه ... (۱) ... یبان مفتی صاحب رسولوں کی تابعداری کا نام بھی قلادہ اور طوق جویز فرمارے ہیں۔ ضع میں ہوش فعکائے نہیں رہے۔

(٢) سحابة وتا بعين والى بات كاجواب وسوسة بمره المن كررج كاب

صرف امام صاحبٌ كي تعليد:

(٣) جس طرح يمن من صرف حضرت معاد كي تقليد بوتي تقى، كوتك ان ك سائل آسانی و سوات سے دستیاب تھے۔ ای طرح یمان صرف فدیب خنی تل ہے۔ ای لئے شاہ ولی انشرصاحب محدث وہلوئ قرماتے ہیں: (یاک و بند) میں جولوگ آباد جي، يبال ند ماكل علماء جين ندشاقعي و خطيل (كدعوام ال عدان غابب كموافق سائل ہو چیکیں) یبان صرف حق علاء بین، اس لئے يبان واجب بے كاصرف امام صاحب کی عی تھید کی جائے اور امام ابوضیف کی تھید سے لکنا حرام ہے، جوامام صاحب ك تعليد الكاءاس في شريت كى رق على التا العيني اوروه مهل اورب كار ره كيا (الانساف، ص٢١) جے ایک علاقہ می ایک ہی ڈاکٹر ہوتو اس سے علاج کروائے می علاقے والوں کو سہوات ہے، بہال میسی فرجب حقی برعمل میں سہوات ہے۔

(٣) سبوات ك ساتهد أمت كا اتفاق يمي مد نظر ب_ يهال سب لوك حتى ين دامرے قدیب کی وجہ اختلاف اور قتنہ پیدا ہوگا اور الفصنة اشد من الفتل ، اس لئے أمت من فتد والناحرام ب، اس سے بھاؤ كا واحد ورايد بهال امام صاحب كى تھيد تخص ب۔ چنانید برتاریخی حقیقت ہے کہ فتد فیر مقلدیت ہے قبل اس ملک میں نہ ندہی منافرت تھی ندوین بیزاری۔ غیرمقلدین نے آ کراس ملک میں ندہی منافرت اوردین سے بیزاری پیدا کی۔

وسوسد تمبر كا المداربد من اكى ايك كى تعدد بريائ وليل ي يا يا وليل مصورت اولى من بيتقليد شررى اور مقلد ندر بار كيونك مقلد تو صرف وه ب جويا طلب وليل كى كا الدحى يروى كرے كما سبق اور صورت ثاني ش ارجى بار مرخ الام آئے کی جوقطعی محال ہے۔

ازالیہ(۱) ائمہ اربعہ کی تھایہ دلیل ہے تابت ہے جیسے قرآن میں مومنوں کو خطاب ہے کہ تماز پڑھواور مفتی عبدالرحمٰن کا مؤمن ہوتا ان کے اقرار یا شہادت ہے البت بي تو مفتى عبدالرمن كا فماز يرهنا ير بنائ دليل عي جوارا يسي عي قرآن ياك میں اہل و کر اہل استباط فتها می تقلید کا تلم ان کو ہے جو استباط نیس کر سکتے۔ اب امتر اربد کا مجتزد ہونا بھی اجماع أمت ے ثابت ہے۔ان كے مسائل بھی تو انزعلمی اور عملی ے ثابت میں اور عمارا اور آپ کا شرائط اجتہادے خالی مونا بھی مشاہدہ سے ثابت ہے۔ ہیں ان کی تھیدولیل سے ثابت ہوئی۔ (٢).....رہا ایک اوم کا مشدتر طاہر ہے کہ جب مطلق تنم ہوگا تو اس میں ایک تو بقیبة واخل ہے ، ذائد لا زمین راس کے لئے تی ولیل کی طرورت ہے رمندا علم ہے کر مند معلوم داود والم عدو يولود اب ايك عالم عدمتد و جوليا و عمر مورافل بوكيا-شردری قبیل کے ہر مسئلے تمام علاءے پر جینے کے بعد عمل کی باری آئے۔

 (۳) ... ، پیداراتواکید ی خرمید کے حادث اورمنتی ہیں۔ ماکی شافق منبئی حادث اورمند اور مقتی موجود عی نبیل _ بدهار کان مراح کرسوال کرنای خلط ب_

(٣). آب في آرايا كرز في بارق مازم آع كي فرق كا موال وجب بوك پہال کم اذکم وہ غذابہ ہے حادی ومقتی ہوئے۔ بہال مرف اورموف طنی ندہب ہے، باتی چندلوگ لا زہب ہیں۔ جیسے یمن جم صرف حضرت معاد ' کا نو کی جیل تھا، يهال مرف غرب حق ہے۔

(٥) بيال قابب ارجه تو موجودتين ، مرف ايك الله ذبب ب، البت فير مقلدين كافرق كي فرقول بمل شابوا بيد چناني مولان عبدالو إب ماحب واوي امير جماعت فرباہ ال حدیث نے اپنے خلیدامارے میں ۳۹ بھی ان فرتوں اوران کی تارنگ پیدائش کا بھی ذکر فرمایہ ہے: (۱) جما حت فریاء الی حدیث (۱۳۱۳ ہے)، (۲) کا تغرفس الل حدیث (۱۳۱۷ه)، (۲) امپرشربیت صوبه بهاد (۱۳۲۹ه) (۴) فرقد نگائیه (۱۳۲۸ ه.)، (۵) فردّ معنيف عطائه (۲۳۸ ه.)، (۱) فرقه شريف (۱۳۴۹ ه.) ، (۷) فرق تولور (۱۳۵۳ه) ، (۸) جميت الل حديث (۲۷ه ۵) ، (خطبرا بارت حم) ۲) سم یا صرف مناه ن (۵۵) مال شما بیفرق آنو فرقول میں بٹ ممیالودایعی به تغریق جاری ہے۔ (۹) بیخیم الی حدیث، (۱۰) شان الل حدیث، (۱۱) الل حدیث

بیتھ نوری۔ ان ممیارہ فرقول میں لفظ الل مدیرے قر موجود نفا محرمسود احر غیر مقلہ نے 1990ء على ايك اورقرق عايا: (١٢) جماحت أسعين _ يديينية مي روفرق كومسغمان تل نیں مجمنا اور اس کے بعد مولوی اشرف سلیم نے فلاح انسانیت کے نام سے جرحوال اداره منایاه کو یاده بیلی باره فرقول کوانسان بحی نیس محمدار

آب ان تیرہ فرقوں میں ہے کس فرقے جمیا شاقل میں اور کس وکیل ہے الك قرق على شال بوك اوركى وليل مد باره كوجهود الرقي إسراع كول كاج

وجره ترجيح ش سيولت اور إتعاد

(٢).....دو د جوارتر جي پينينه ذكر او يكي جي ريمي كوافغنل مجمنا مجي ويدتر جي بيه جس طرع تعلید تھی کامورت بھی أمت تھے سے محوظ رہتی ہے ای طرح خود فرد بھی تسلاعب باللدين سي كلونا وبتاب - جم لمرح فيرمتلدي نے فواہشات نغسائی ك التاح كانام كل بالحديث ركها بواب وه بحي تلاعب بالمدين كانام تشيدا ترركه في علا ائں کئے این محامدہ اسیع آب کوانیان مون ہے ہے سے اور اُمت کو نشر ہے بھانے کا ذربوتشيخنى بى ہے۔

- (4) تب حفرات نے جو مح بخاری کو باتی لام کتب مدیث پرتر مج دی ہے، یہ بلا وليل ب يا با وليل ، وه آيت يا حديث بيان كرو.
- (٨) أيك المام سے أيك منظر بوجي كے بعد دومرا تيرا منظر بوجينا جائز ہے و تشير فضى دوليًا واكر دومراستله يوجها حرام بياة الراكي دليل كياب؟

وموسدتمبر ۱۸ اگرکی ایک امام که ترج کا سبب مام عماء کا فیسلد ہے تو بھی سوال علما و پر وارد جو کا کر آنہوں نے ترجی کا فیصلہ دلیل کی بنیاد راکیا یا با ولیل _ کالی صر یہ میں دو مقلد ندر ہے بلک ولیل کے ویرد کار بیٹے۔ پھر دوسروں ؟ تعاید کا کلہ کیوں پر هاتے دواور دوسری صورت شمیان علما مقد مین کا ہے بھرورے وقوف مے تعمیر ہوتا عابت ہو کیا جس کا خود نہیں اقرار ہے (فاوی شای جا اُص اے)

ا فہ اللہ(۱) علی بار بار ذکر کر چکا جوں کہ اس ملک علی علیہ علی کے عنادہ کوئی غرب ہے ہی گئیں، فرجیج کا سوال می حماقت ہے۔

(٣)...... تعليد كي تعريف عن جوافظ الدليل آيا ہے، اس عن الف لام عبد كا ہے جس ے مراہ جھنے کی وہ خص تعمیلی الیل ہے جس سے اس نے فیعلدا شنیا کا کیا ہے ۔ اس کی مثال ہوں مجمیں کہ کی حقومہ عمالیک مقدمہ کی معلی ہوتی ہے جس میں ومویٰ ، کواہوں کی ُوائن ، اس پر جرح وغیرہ سب بکوٹ مل ہوتا ہے اور ایک فیصلہ ہوتا ہے کہ شاکی طزم ہری ہے۔ اب اس وری من مقدمہ کا مطالعہ کئے بغیر مرف فیصلہ من کر حملیم کر جا کھلید ین اور نج کے سامنے اگر ہونا کہ پہلے یوری میل سناؤ، بھریہ بناؤ کہ یہ فیصلہ من طرح اشنباط كياسيره ورزير بمن نبيمها مامناه بيترك فتليد ب ابيافخف توجن عدالت كالجمي بحرم ے ۔اس کے طاوہ اُیک ابھالی دلیل ہوتی ہے کہ ریاج ماحب قانون کے ماہر ہیں اور حقدمہ کے ہر پہلو کو مجمد مکتے ہیں ، اس لئے فیسنہ مان اور مقلد خود مجہد کی اس مسل کا مطال کرے تو رتقلید کے خلاف ہے اور اوسنل محفوظ عی ٹیس مسرف طبیلے محفوظ جی ۔ (٣) آب ڈاکٹری کافن ٹیس و نئے محر سریق ہونے پر آپ کو ڈاکٹر سے دوائی لينے كى ضرورت يونى بيارة ب وہ دوائى محق بيد دليل كر استعال كرتے جين يا خوہ ڈاکٹری کی تمام کمایوں کوسائے رکوکر ہر گوٹی کے اجزاء کے خواص اور اپنی ہے ری کے ہر پہلو کی تشخیص کرتے ہیں ۔ اقال صورت میں آپ مشرک چین کدا اکٹر کو خدا مجھ

د کا ہے۔ دومری مودت آب کے بس عرفیں۔ آپ بھول اینے بے تیز بی وے. ب وقوف مجی سے بہر م بھی مولوی مدحب ایکی بات سیج ہے کدر کیل تفصیل بھیا آ ب کے یاس کیل ہوتی۔ ہاں وکیل ابعالی ہوتی ہے کہ اس ڈاکٹر کے ہاتھ سے خدا تعالیٰ نے ہزاروں مریضوں کومعت عط فرمائی ہے۔ادراس فن والے ڈاکٹر اس فن جس اس کو ماہر جالتا كرمعورے كرتے إلى - روبھالي وكيل تعليد كے خلاف بيس بلكة تعيد كى بنياد ہے ـ تحليد كي تعريف على عدلني هن الله حديق الن كي بنياد يكن دليل اجماني بهاور يادر محس تحتيد عدم نفم بالدليل كانام فيهن، ورنه عله مه زياني ، ابن جَرِّ الوويّ ، مرغيا لي " راين رشدٌ تم من مقعد ند كهلات بكنه عدم مطالبه وليل تغييل خاص جميته كا وافعل البيت تقليد ،

(٣) آپ جوامام بخارتی کو تھو قین پر قریج وسیتے جی وہ ہے ونیل ہے یا ہو وکیل آ

(۵)...... آپ نے طبقات فقہا وکو دیکھ کر جو طاہ مقلومین کو بے بہروہ ہے وقوف ہے

تبزکیا ہے ہے آپ نے کن الغاظ کا ترجد کیا ہے؟

(1) آب بہمی فرما کیں کہ آپ ان مات طبقات تیں ہے کس طبقہ بھی جی تأكرآب كااحجان لياجا تتحي

وسوسية تمبر 1 اغدار ابد صاحب وي اور معموم من انفذ وستع يا ترين؟ الريني إ وہ تی اور رسول بغیرے بس کا کوئی قائل فیٹس۔ اگر فیس تے تو صاحب وی اور معموم وسول کی مجائے افر کی تعلید جرمعتی دارد؟ اگر کہا ہےئے کہ ائٹر کی تعلید احتاج رسول کا عین متراوف ہے۔

اقرال (۱) انتداد بوساعب وتي نين هي كدان يروي براه راست نازل موه و و مراود کی کے اعمیٰ ضرور تھے۔ اجتہادا در استنباط ہم ہی دمی کی تخلی سرادوں کو ظاہر کرنے

كالب: القياس مظهر لا مثبت.

(۲) ائتسار نبومصوم عن انتظا وتیل ہے، وہ عادل ہے۔ ان کومواب پر دو اجراور قطاء رہی ایک اجر ملاسب سبر بہال وہ معموم نیس ہے مرمطون بھی تیل ، کیونک وہ ہر حال میں ماجور ہیں، خواد ایک اجرالے یا دو۔

 (٣) جب ان ئے بی اور رسول ہونے کا کوئی ٹائل تا نیس قرائی احتفاذ یا تھی
 اس محث علی لانے کا کیا مقصد؟ بال ٹائر یاد رکھ لوگ وہ نی اور رسول بیٹیٹاٹ منے کر نی اور رسول کی شریعت کے شارح اور محافظ اور مدفن ضرور منھے۔

(م) ۔ رسول کی بجائے ٹیس رسول کی بات سجھانے والے ۔ ند اُنہوں نے بھی رسول کے میڈ مقائل ہونے کا دعویٰ کیا۔ بیدا کے کا حیث باطن ہے۔

(۵) سیاب عی جہلانسوال ہے جے آپ کے دومرے ہمائی اہل قرآن کیا کرتے چیں کہ کیا راہ یانی حدیث اورامحاب محارج ستر دامحاب دی اور مسموم کن الخفاء ہے؟ اگر تہ متھ تو بجائے رمول کے آپ ان کے چیچے کول گلے ہوئے جی برجوب بھی ہے کہ یہ عادل جی اور ٹی کے دمغائل جیس ایک تی کے الفاظ کے محافظ جیں۔ جس طرح الفاظ رمول کے محافظ کو رمول کا دمغائل مجمدا ہر لے درجہ کی جہالت ہے، ایسے بی مراد رمول کے محافظ کو رمول کا دمغائل مجمدا حافظ اور جہالت کی ابجا ہے۔

وسوسرہ تمبر ۲۰ تو پھر سودل ہوگا کہ انتہار ہدنے بین ہزرگوں سے علم سیکھا وہ بقیقاً علم وفضل میں ان انتہ سے بڑے تھے۔ پھران سے ہڑے ان کے استاذ اور معلم سحابہ تھے ، پھرکیا دید ہے کہ افضل ترین اور افضل کو چھوز کرتیسرے درسیے سے معضول کی تھلید کو

و ين منالها جائے۔

ا ڈالیہ ... (۲) ۔ وہ یقیع علم وفقعل میں جے تھے تحران کی زعرتماں جہاد میں گزریں اور ووفقہ یا حدیث کی کتابیں تعییلا مرتب نہ کریتھے۔ اندار مدینے ان کو چھوڑائیں ، مکرجیما کرتھیلا کزراہ اُن کو مدة ان کیا اور ان کے ذریعیان کی روایت کوتوانز اورهمرت نعیب ہوئی۔

(٣) معرين مديث كابعي بكاسوال بركدامحاب محارة سترك اساتذه أوران کے اس مذہ عبدالرز الل، این انی تبید، ایونعی، ارام محد، ارام زید، قاضی ابو بوست، ارام اعظم رهم الشدان علم ونعش على فاكل تتع يالبين؟ به نبرانقرون والمصريح إورمحاح ستہ دائے خمرالقرون کے بعدوالے مرجم بھاتھ اور اسحاب سحاح ستہ درجہ اجتماد پر فائز شہ تھے، ان کی اسانیہ امحاب محارج سنہ کے مقابلہ عیں عالی ہیں، ان میں عربی ہجی جے جَبُدامحاب محارث سترتجى جِيء كِراك كَا كَايول وَجِهِوْكِ إِن كَا كَآوِل وَيْن كِول بنالياميا ہے؟

وسومسه تميم ٢٤ موال يديب كه ظفا ماد بعد منسرينا، محدثين مهيد، عثر ومبشره، شهواء بدر وأحده كاتبين وحي الني اور وفقاه كارتبيت كي موج وكي بين عبد بين بعد منظر عام يراسط جائے والے اللہ كى والىل وروى كانتهل وقل عمل كيا جواز بيع؟ وقعاف فرمائے **کا**۔

اڑالہ منتی ساحب کی عاجزی کی دئیل ہے کہ معمولی قرق کے ساتھ و اتا سوالات فرہرا رہے جیں۔

مفتی صاحب! آب سے سوال کا مقصد مدے کہ ہم انکدار بور کی اُقلید چھوڑ کر خلفائے راشعہ بینا ،عشرہ بیشرہ ،شہرائے بدر و أحد ، کائبین وقی کی تقلید کریں ۔ کیا آ ب ال

حزات کی تقلید کررے ہیں؟

- (۲) آپ کے وسوسہ تمبر ۱۹ سے مقاہر ہے کہ تھلید کے لئے مشروری ہے کہ وہ صاحب وئی استعمام عن انتظام ، تی ورسول ہو۔ آپ نے واقعتا ان حضرات کو صاحب وٹی استعمام عن انتظا واور تی اور رسول مان نیا ہے؟
- (٣) رہا ہے کہ ہم ان کی ہراہ راست تھنید کریں تو آپ ان کی مدوّن و مرخب متوارّ فقد اور اصول فقد ہمیں لا ویں جو ہراہ راست ان کا اپنا مرتب کردہ ہویا مرتب کروایا ہو، ہم ایک سیکنڈ بھی درنہیں کریں گے ، ائتدار بدکوچیوز کرفورا ان کی تقلید کریں گے۔ اب ہم امام ایومنیفڈ کے واسطے ہے ان کے مسائل برعمل کررہے ہیں۔
- (٣) آپ کا بید و موسد ایما ای ہے جیے اہل قرآن کہتے ہیں کد سحاح سند کی بجائے تم خلفائے راشدین، عشرہ میشرہ، کا تبین وق کی عدیث کی کتابیں کیوں نہیں پڑھتے۔ ہم ان ہے بھی بھی کہتے ہیں کدای طرح کی مفسل کتابیں ان کی لا دو، ہم مانے کو تیار ہیں۔ (۵) ہم ہار یار واضح کر بچکے ہیں کدائمدار بعد نے ان سحابہ کے مسلک کو ای مدون کیا ہے۔
- (۱) ائداربد پہلی دوسری صدی کے بیں ادرآپ کا فرقہ چودھویں صدی کا۔ آپ اپنے آپ کوان سے افغل کیوں بجھتے ہیں؟

وسوسه فمبر ۲۲ کیاائدار اجدی پری ایان میں ہے مرف ایک؟ اگر ایک ہے تو اس کا علم کیے ہوگا، کیونکہ مقلد دلیل کی دنیا ہے ناآشنا ہے، لبندا وہ چھے چلنا جانا ہے۔ فیصلہ کا کوئی اعتیار نہیں رکھتا، اس لئے مقلدین نے بدعوای میں اعتراف کرلیا کہ ائر۔ اربعہ برمین میں (نورالانوار، می ۲۲۷)

برايرش فيس

ازاله(۱) ملتى صاحب مقلدين كوائدها كيتے جي، تكريمال نورالانوار كي عبارت ان كونفريس آئى رصاف لكما ب: ان كلهم مصيب في العمل دون الواقع (ص ١٣٧٧) يعني واقع مي تؤسب مصيب تبين ، عمل مين سب مصيب بين _ (٢) مفتى صاحب اليه بات مقلدين في بدحواى شي ديس كا مديث من ب كه جميّة مصيب كو دواجر اور تطلى كوانيك اجر مطى كا اور اجر مننا وليل قبوليت بيرجس طرح قبلہ کا اشتباہ ہوجائے اور جارنمازی تحری سے نماز عصر جار رکعت برحیں۔ ایک مشرق كومنه كرے، دومرامغرب كو، تيسرا شال كو، چوقها جؤب كوتو واقع ميں قبلے جارفيس یں ایک عل ب مرفاز سب کی قبول ہے۔ فرق بدے کہ جس نے واقتا اس طرف مند كياجس طرف تبله بإلا اے دواج لے ، دومروں كوايك اجر كرنماز كى تبوليت ميں ذرو

(٣) علم كيے ووگا الخ مقلدكواس بكيزے ميں يؤنے كى كيا ضرورت؟ اس كو يقين بكريرامل مقول ب-خطاء بحى موتواك اجركبين نيس كيا-

 (٣) آپکوان مار میں اختلاف کا برا خیال ہے۔ آپ کے تیرہ فرقوں میں تو کفر اسلام کا اختلاف موجود ہے۔

(٥) لعض اطاويث ك مح ياضعف موت من محدثين كا سخت اختلاف ب-وبان دونول جانب حق بياليك جانب؟ عاى كوحق كاليسيعلم موكا؟

وسوسه تمبر٢٣٠ سوال بير بي كرجب ائتدار بديرجن بين لو آب ايك امام ي تقليد اور تحن کی مخالفت کر کے 1/4 جن کو قبول کرتے میں اور اس کے ساتھ 3/4 باطل ملات بن _ آخر مد كول؟ اور اصل عن (اطاعت رسول على) سے بعاوت كرك اڑالہ(۱)اشدار جائے برق ہوئے کا مطلب تعمیں بھوڑ یا تاہیں ۔جموت ولئے رہیج ہوکرش نے پائیس میل فقادرامول فقد ج مایا ہے .

- (۱) انشه جمته بینا می من و وظف کا انتقاف علی تین، مواب و خطار کا ب. (سیمین، دریندر) آجر برحال می ال ریا ہے۔
- (٣) کیا سافوں فرائھی جن میں یا نمیں ؟ بیٹینا حق بیں قو آپ کے اصول پر ایک قرآت پر قرآن پڑھنے اور کے کی علاوت میں 1/7 جی اور 6/7 باطن کی طاوت ہے۔
 (٣) آپ کے تیرہ فرقے حق پر جیں یا نہیں قو ایک فرقے کا غیر مقلد آپ کے
- (۵) مسیمی نے تحری کرے ایک طرف نماز پڑھ کی اور جار کھٹیں اوا کیں تو آ پ محمد سد سے اس کی ایک رکست محج ہے اور تھی رکھتیں ماطل میں ۔

منب ہے 1/13 کن 1/2/13/1 باتل کا آمیزو ہے۔

- (*) جن احادیث کے میچ فاضعیف ہوئے ہیں محدثین کا اخترف سینہ ایک معربت برخل کرنے والا آ ب کے نزویک حق وباطل کو مازئے والا ہے۔

قرآن؟ جسبہ براہام بمنل دین پرعال ہے تو آب دن مات پرجموت کیوں ہولئے ہیں کرد<u>ین تعلیم کرلیا ہے۔</u>

(A) ۔ اجتماد کورموں سے بغاوت کہنا خود رمول سے بغاوت ہے۔ حدیث سجیمین و مدیث معاذ^ه کا تملم کماا الکارے.

وسوسد تمبر ما الا اورلهي آب يافوي دية إلى كه جارا كدمب من بيم رياص مي بوسكا ب اور مدے كالفن كا شرب باطل ب كرين مى موسكا ب، يوكا منطق وہ کُی '' مال رہتم پرغضب الٰبی ہے کہ دسول انٹینٹ ہے سے منہ کھیرنے والے قیامت تک شک کے اندمیروں میں بعکیں میے (شای ج الم ہے)

ا ڈالیہ(۱) ۔ یکھن جموے ہے۔ شای عمد ندہب کے یاد سے عمل بیعق وباطل کی تعلیم پرکزئیس ہے۔

- (۲) در مخار اور شامی شراصواب و خطاه کا ذکر ہے اور بر حال میں ایر لیے کا ذکر ے، کی بات میمین کی صدیث میں ہے۔
- (٣) ۔ ہم اللہ تعالی کے خضب سے بناہ ما گلتے ہیں۔ ہم پراللہ کی رحمت ہے کہ ہر حال میں اجر مطافر ، رہے ہیں۔
 - (m) ہمیں یقین کال ہے کہ جارا ہر عمل مقبول ہے اور پرعمل براج ہے۔

وسوسد فمبر ۲۵ قرآن وحدیث برعمل کرنا قام مسلمالور، پرفرش ہے۔ امرئیس ل کیوں ٹیمر ؟ اگر فرض ہے تو آپ کے فقیاء کرائم نے رکھے فیعل کیا کہ مدیث پڑھل كرف سه راسة ورقياس كا وروازه بند بوجائة كا (فورالافوار من اهام) عام آدى کے لئے مفروری ہے کہ مرف فقہاء کی جروی کرتا چلا جائے (جاب می ۲۶) کہا ایک تقليدان برسول كي خدفتي اوركيا اليا مقلدمؤمن اورموحد ووسكرًا عيد؟

اٹرالیہ (۱) مغتی صاحب موام کوتا تر دیا کرتے میں کر بھی نے پانھی سہل فقد اور العمول فقد من معالم محرة ب بصول فقد كو جائعة مجي شيرب ورالابوار عن ي مدیث معاد * موجود ہے جس عمل محتمد کے دائل کی ترتیب ہے: کاب الله مات رمول الشريكية واجهاح أور قياس اور معفرت المام أعقم منعة الركيساني البرك ش مِلِ كنَّابِ الله سنة مسئل لِمَا يول، جَرِسَت رمول الشريخة سنة ، جَرِمين سنة ، مُعَ فاكن سنطب

- المام البعنيفة كے فزوكيك تو ضعيف حديث بحق قياس برمقدم ہے۔ جنا تي نماز على قبتيد لكاسة سن وخوافو مند باست كى مديث خميف سنيد اور قياس برسب كروضوت وُلَّ الرَّاحِ قَالَ كُولَ لِيكِن الم صاحبُ فَضَعِف عديث ك مقابلِ على آناس كوجيوز ديابه
- (۳) منتی ما دب نے بات ایسے کھی ہے کو با جہاں بھی مدیث اور فیاس کا مقابلہ و کا و تن قیاس کو مانے میں اور مدیث کوچھوڑتے ہیں، حالانکہ بدافتر ا واور بہتان ہے۔ خورالانوار میں بن حدیث اور آیاس میں فرق واضح کیا ہے: حدیث اصل کے اعتبار ہے تو بھی ہے، شہراس کے طریق وصول میں ہے کہ ہم تک کتھے کا طریق قاتل اعماد ہے یا نہی اور تی س اس کے امتیاد سے بھی مشکوک ہے (کرجس کو جبتد نے علمت مجما ہے ثايد واقعناه وطن شريو) اورومف كراعتباء ي يحي مفكوك بيد لي قيال مديث كا مقابل تيس كرسكا (أورالالواروس ١٤٩) بال جيد عديث كي سند ضعف جو اورضعيف مديث اور قياس عمل تعارض موقو كم رجحل موكا ؟ تمام محدثين اور غير حكى عفاء كيتم بير

کہ قیاس بڑھل ہوگا: لیکن امام صاحب قرماتے ہیں کہ صدیث بڑھل ہوگا۔ اب بحدثین کا ر تاعدہ حدیث کی ایک خاص تھے کے بارے میں ہے۔ اس کو عام حدیث کے بارے ض خابر کرے محدثین کے خلاف یہ برد پیکٹرہ کرنا کہ وہ مدیث برتیاس کو مقدم کرتے یں ایک فریب ہے۔ ایسے بی ایک مدیث جس کوفیر فنیدراوی نے روایت با^{کم} تی کے خور پر بیان کیا ہے ، اسک حدیث جل ووقعے پیدا او محلے جی ۔ ایک قومتن ایک کرشاید غیر فقید دادی نے حضور مکھنے کے ارشاد کو مجھ منبط کیا ہے یانبیں؟ دومرا شیداس کے فوت عل برائ مديد ادر قياس عن الرخراة موم عن توكي صورت اختيار ك جاسة؟ ل منسلی من ابان فرماتے میں کرائی دوشہوں والی مدیث کے متابلہ میں آیاس کوڑجے دی عائے گیا۔ جسے امام شافق وغیروضعیف حدیث کے مقالیلے میں قباس کو تر جھ وسیتے میں اور ایام کرفی فریائے ہیں کہ صوبے کو ترجے وی جائے گی کھٹی نو دالافوارص 4 ساء حاشيه ٢ يريسني بن ابان كرقول كوستحدث قراره ي بيداود فرمايا ب كرامام عين بن ابان کار قول خود ماحب خرب الم اومنید کے قول سے محراتا ہے، اس اللے تالی ا مناونيس _ اكر مفتى صاحب يول بات يوري بيان فرما دسينة فو نه تود محراه ووسته اور نه اورول کو گھواہ کرتے۔

مغتی صاحب نے بدیریکا حوال بھی ولا ہے کہ مامی کو مدیث کے مقابلہ میں منتی کی بات برعمل کرنا جا بینته انگین ایودی بات تیم لکعی - صدیث بخاری شرب سید کریکی لكواتي يت على لكافي والي اوريكل لكوات واله وولول كاروزه ثوث جاتا مبيمحريه حدیث منسوخ ہے۔ اے کمی عامی نے تکی گوائی اور اس نے وس منسوخ حدیث کی بناء ير مجها كديمرا روزه وُت كيامُ اس برقضا ق آئے كى ، كناره بھى آئے كا بالمين؟ لينى كيا

عالی و کھلی چھٹی دے دی جائے گی کرا ہے بغیر ختین ٹائٹے منسوخ ہر مدیرہ یہ قمل جائز ے عثل بناری میں معرت مزہ کے شراب ینے کا ذکر ہے الماز بیت المقدس کی طرف مذكرك يزعف كافكريب المازعي جان إوجه كرباقي كرسف كالكريب وهدكرسف كا ذكريه براب كوئي آ وي شماب في كرحد كريه كالربيت المقدى كي طرف مندكر كے فماز م صحاور تماز میں جان ہو جو کر ہاتمی کرے اور ہذری کی صدیثیں بر حتا جائے اور کے ک جھےان کے منسوخ ہونے کا علم نیمی تو اس کومعندور سمجا حائے کا یافتکر؟ و من ووزیا کا کوئی قانون جمالت کو عذر ترکیل دانیا۔ جاریہ یک اسکی صورت کے بارے پیل ختم ہے کہ عالى يرلازم ب كرووفتها من رجول كريد ، كينك يرتحم قرآن ب- ايك طاكف كو ليصفقهوا هي اللين بثل تَعْيِرُ مَا إِن وصريدان كَى طرف دجوع كري او مجافران ربول ہے: رب حامل الله غیر الله (الحریث)

 (۵) قرآن و صدیدے برعش سب مسلمانوں برخرض ہے، جم کتاب وسنت یمی جو سائل اسے داشتے ہیں کران میں ایمنیاد کوکوئی ڈل ٹیٹن، وہ مسائل منصومہ کہلاتے ہیں اور جن عن اجتباد کی مخواکش ہے، وہاں جمیدا نی اجتبادی بھیرت ہے قر آن وحدیث بر عل كرناب ادر غير جيمة جميت كي واندائي شي قر آن وحديث يرهم كرناب.

وموسر تمسر ٢٦ انتهار معدك علاوه بحي اسلام من ي شارفتها والمحدثين التمد و کن گزرے میں، وہ سب انراز ہو ہے علم دفعل عمل زیادہ تھے یا کمتر؟ اگر زیادہ ہے تو اتد برلازم تنا كدان كي تليدكرے ، كيول دى؟ اگركم تر يحق أنبول نے انساد بدك تقليد كيون نه كى؟ كيااي الزنيس كرائد وين في مرف رسول الله علي كي اجار كي ادر فقا قرآن وحدیث کے بیودکار ہے رہے، محر جناب نے خابی اجارہ داری کے لئے

بابائيت کي ڏکا نين کھول کيں۔

ازالہ(۱)..... متی ساحب پہلے تو موام کوجی جمتد کی تقید بر کا فرومشرک کتے ہتے۔ اب جہترین بربھی تعلید لازم قرباد ہے جیں۔ سفتی صاحب ابراہ ٹوازش وہ آئے یا مدیث غیش فر ما کمیں جس میں اینتها دی مسائل میں جمتند بریمی بڑے جمتند کی تقلید لازم ہو۔

۔ جو فقتیا ہو، تھر ثین اعمد اربعہ ہے آم تر تھے، وہ انتمدار بعہ کے مقلعہ ہے، کتب طيق شدكا مطالع قريانس.

(٣) ۔ پاپائیت سے کیا متعدہ کیا آپ انٹر جہتہ ہے کو بیپ کی المرح کا فریجے ہیں یا بيب كوجمجتدين عن شاركرت بين؟

(٣) ۔ جب آب نے تلیم کرلیا کہ ائر اربد قرآن و مدیث کے جروکار تے 8 مقلد بن بھی ان کی رہنما کی شن تر آن وحدیث قائے پیروکار ہوئے۔

وسوسد تمبر کا بھول آپ کے الم جار بیں اور ان عمل سے ایک کی تھید خروری ہے اور مقند جالل ہے باعالم ، آگر عالم ہے ، قر آن مدیث کو جاتا ہے تو وہ اعرصا بنے کی بجائے ان دولوں روشنیوں کی بی وی کیاں تدکر سے اور اگر جالی برائر یا فیصلہ کیے کرے کا کدکون سانام فن رہے یا فن کریب رہے تا کداس کی تھی کرے، اكرية فيعلد عالم يكرائ تو يجروه عالم سنداء مول كارات يو جين كي بجائ المام افظم حفرت محملات كادرواز أيول ندايوهم؟

از اک_س (۱) ، بہال انام ایک می ہے، ای کی تھید اجب ہے۔

مقلد کرے بیٹان ہونے کی ضرورت ٹیں اسے بیٹین ہے کہ اس کاعمل حقبول ہے اوراً جرضرور کے گا۔ (۱) برحدیث میچ ب و ضعیف، آب اس کا میچ یا ضعیف ہو، خدا یا رمول کے فرمان سے بتائے جا کی گے۔

(۲) بیا صدید کمی وومری دلیل شرق کے معادش آ جیں، آپ خدایا رسول کے مرک فیعنے سے اس تعادش کا جواب ویں گے۔

(٣) ...ان حدیث علی جوستار ہے، اس کا ورجہ کیا ہے، فرض واجب، سنت ہمستی ہے۔ آپ دکھاتے جا کیں گے۔ سنت ہمستی ہم ہات کو دویا حرام وغیرا مرت حدیث ہے۔ (٣) ۔ گھرآپ عالم بیں، ہم قرآن پاک کول ٹی گے اور فر مان رسول اللّظ کہ ہر آ ہے۔ آ ہے کا ایک فاہر ہے، ایک باطن، ہم آیک آیک آ ہے چاہے جا کیں گے اور آپ ہے وجعے جا کی گار اس ہے کا ایک فاہر ہے کئے مرائل فاہر ہے کئے مرائل فاہر ہے کئے مرائل فاہر ہے گئے مرائل فاہر ہے کئے مرائل فاہر ہے کئے مرائل فاہر ہے۔ ایک مرائل فاہر ہے گئے مرائل فاہر ہے۔ اور یاطن سے کئے مرائل فاہر ہے۔

(0) ہمریم بیشن زیور کے لیس کے اورا نکام بالترتیب پڑھنا شروح کرویں گے۔ آپ ہرسنلہ کے خلاف ایک ایک آیت با آیک ایک مرزع مین فیر معاوش عدید فیل کرتے جا کیں کے اور آگر آپ ہے کہیں کہ اس کے بعش مسائل مین میں اور بعض غلاق آپ مسئلہ کے موافق عدیدے مکھوا کیں کے اور غلامسند کے خلاف عدید کھوا کیں گے۔ آپ شروداس کے لئے وقت دیں۔ اللہ نئی تی ہو ووؤں جہاتوں شما ایر ویں گے۔ وسوسر فمبر 184 ۔ ۔۔۔ انکہ اربد کے مسائل میں طال جرام کا فرق ہے۔ اگر جاروں کو گا۔ یہ اجماع ضدین ہے اور امر محال ہے۔ اب بتائے کہ مقلد بے طارہ کدھر جائے كوتك وه جال ب- اكر عالمون ع قدب حق كا فيصله كرائع كا توجوامام شافعي اور امام الوصيف وغيروك ورميان محاكم كرسكاب ووتو خود جميد وكا، بحر مقلد منى، شافعى بنے کی بچائے ای زندہ امام کا مقلد کیوں نہ ہے؟

از الیہ(۱).... جن کے حلال یا حرام ہوئے میں تصوص میں کوئی تعارض نہیں ، جیسے خزیر کی حرمت اور بکری کی حلت ۔ ان میں اجتہاد کو کوئی وظل نہیں ، اس لئے ان کی حلت و حرمت اجماعی ہے اور جن کے طال حرام ہوئے میں خود نصوص میں تعارض ہے، ان میں رفع تعارض کے لئے اجتہاد کا وغل ہے۔ جیسے گوہ کا حلال یا حرام ہوتا، کھوڑے کی حلت یا کرایت دفیرو بهال مجتمد تو اعداجتها دیدے ایک کوراج اور دوسرے کو مرجوح قراروے گا تو اجماع تقیمین کیے ہوا؟ مقلد بھی اپنے امام کے اجتباد کورائ محملت ہے، دوسرے كوم جوح تو اجماع تقيصين كيے ہوگا؟

 (۲) مفتی صاحب! احادیث یم بھی حرام وطال کا اختلاف ہے۔ مثلاً گووطال ب يا حرام، اب في علية ك كام من بداختلاف ب، غير مقلد كدهر جائ كا؟ كسى أمتى في ايك حديث كوسيح ياضعف كها جو ياكس أمتى في بية قاعده بيان كيا جوكة رمت اباحت کے بعد ہوتی ہے، بیتو غیر مقلد مانے گانہیں ۔خود حضور مقافقے سے براو راست بیہ ٹابت نبیس کہ قلال عدیث سجح ہے، فلال ضعیف یا فلال ٹائخ ہے، فلال منسوخ ہے۔ وہ یا تو گوه کوایک بن وقت میں طلال بھی کہے گا اور حرام بھی کیے گا یا وہ کیے گا کہ طلال والی حديث مح ب، حرام والى ضعف ب، ليكن ابية الى فيصل كو في كا فيصله كر، كر دعوى نبوت كرے كايا بى تقالمة برجموت بولے كا، كونكەبە فيصلە نبوي ہرگز نبيل۔

- ا) ۔ ہیں انداد بود کا مسلک بھال سے تی ٹیس صرف ایک انام کا مسلک ہے تو یہ
 - مولا ہے نے جو ہے ، وجو ہے جو ہے ۔
- (m) ۔ ہاں آ ہے کے بال فرنوں کا اختلاف علال وحرام عمد اس ملک عمد موجود ے. خۇ:
 - (۱) منتی ملال سے ہاترام؟ ووٹول میں (فقائل یہ)
- (۳) ، مینتاک طال ہے یا حرام؟ تھر جرنا گڑھی اور مولوی گیاہ اللہ میں الخلاف ہے۔ اول فرام توروومرا طلال كا ہے۔
 - (m).... ہاتھی طائل ہے یا حرام؟ کنزالحقائق جی دوتول جس۔
- (٣) ... بنک کا سود حلال ہے یا حرام؟ حبداللہ رویزی اور ٹنا واللہ عل

اختلاف ہے۔

(٥) ... كَثِمرى الرب كرا في حكى زناك كمائى طال بي إحرام؟ سامردوى اور مبدانلد فازى بورك كالنسكاف بيد بير ماره فيرستلد كدهر جاسة؟

وسوسه تمبسر ٢٩ائمه ويوري تقليد چيخي مدي پي شروع بولي (جيد الله البالله) _ اس نے آبل لوگ ال مدیث تھے۔مرف قرآن و مدیث کا انٹارڈ کرتے تھے، قرآن تین مدیوں کے مسلمان کال تھے یا ناتعی؟ اور تشکید شخص کی برعت ایجاد کرنے کی کیا ا ضرورت ويش آكي ?

- الإاليه ...(١) لعنة الله على الكاذبين، ج: الداليال شي كبير يتين تكسر
- (٢) ع ح في مدى بمن ع اجتهاداد وكليد فيرتخى بدئ النائ بوي سي من كي كيا-
- (٣) ایک ہی غیرمتلاز تھا۔ مادے معلمان یا تو خود مجتھ بتھ یا کمی مجتھ کی تھا یہ

' كرتے متحر(قرة العنين) وسب نقا كو مانتے ہتھے۔

(٣) - قرآن وحديث اورفقدع عال تھے۔قرآن باك بحي ميں ان كے واسط ے ملہ کتب مدیث میں ادکام کے متون تقریباً جار بڑار ہیں اور من کے تعلی تباوی میں بزار سنه زائد جین معیوانرزاق اور این انی شیر کا مطالعه کرنیس به طار بزار عدید کی روایت ہے اگر وہ مدیث کے ہائے والے تابت ہوئے تو جس بڑار ہے زائد فقہی فآوی این کی انیش نها که دو نه تقلید کے منکر تھے نہ فقہ کے۔

(۵) — تمن صدیوں کےمسلمان ونکل کال تھے کہ قرآن مدیری اجماع اور قاس جارون دليلون کو مائے تھے۔ اب بعض نے نقه و قياس داجاع کا افاد کيا، دو يقينا ناتعل مسلمان ہیں۔ بعض نے حدیث کا افکار کیا، وہ بھی ناتعی ہومنے ۔ جوادئے اربعہ کو بانے تیں وہ کائن تیں اور مرف وئی الل سنت والجماعت ہیں۔

(١) المام نے تی منگلفا اور محابثہ کے طریقہ کو مدة ن فرمایا، فقد استفاط ہے برصات نيس، البنة فيرمقله بت كيا بدعت جودمو ين صدى من ايجاد بوني ـ

وسومية تمبير 🕶 🥟 وي انبي حضور ﷺ ير بند يوڭي، فرائض اسلام تمل جو مجھے 🛚 وين عن آفآب کمال کے ساتھ جلوہ کر ہوگیا اور ندیجی فجارہ وار ایوں اور مونو نول اور ورو ایٹوں کی برستش کے تمام درواز سے مشغل ہو گئے ، صرف ایک اللہ کی بندگی اور ایک رسول کی اطاعت ایمان واسلام قرار پائی۔سوال میہ ہے کہ ڈاتوں اور مخصیتوں کا بھی بتد ار وازہ تھیجیں نہ بھایا اور اوجا باٹ کے لئے اس کو تھول کرین رم لیا لئے! اس کے بغيراطام تكمل كيول فغا؟

ا تر البد(۱) وي بند ہو كئى برحق وہ بن كى تخييل ہوگئى لاريب يہ كين انجى دو كام باقى

تنه ایک دین کی حکین جو خاافت راشده اور غیر سحایهٔ می بولی اور دومراءین کی مدوین حویترار بعد کے ذریعہ ہوئی۔ اگر آپ عبد رسالت کی مکمل مذوین وجویب لا وس تو ہم ائتدار بعداور سحاح سترب کوچھوڑ کراہے قبول کرلیں کے ،کوئی ضدفیں کریں گے۔

(r) الله کی بندگی، رسول کی اطاعت اور ایمانیات اجتبادی مسائل ہی نہیں۔ ان کو تقلید کی بحث میں لانا جہالت ہے۔

٧٣) ﴿ تَعْلَيْهُ وَيَنْتُقُ ادر يُوجِا ياتُ كَبِنَا كُونَى قَرْ ٱنْ وحديث كالمسْلَيْسِ محضَ مغترى صاحب کے دل کا بغض اور جیٹ ہے۔

 (٣) اگر کی کی وی برشش اور بوجا یات ہے تو پھر تو نبی کی ویروی بھی شرک موكى _كيا آب عبادت اوراطاعت من فرق تين جانع؟

 (۵) ائدے پہلے اسلام چھل ٹین تھا البتہ فیریدؤن تھا۔ اُنہوں نے تھل ٹین فرمايا بلكه عدة ك فرمايات.

(٦) کبلی دومری صدی کے مسلمان جوسحاح ستدکو جائے بھی نہ تھے، ان کاایمان آب كے خيال مي تمل تها يا وقعي؟ آج كوئي اگر صحاح سته كوند مانے تو اس كا ايمان نامكىل َ إن سجها جاتا ہے؟

(٤) وي يقيناً بند موكى محر حوادث زماندتو بند فيس موت_ان ع حوادث ك احكام بھى يشينا كتاب وسلت يلى مستور بين - ائد يروق فيلى موتى مكر دووى كے يوشيده احكام كوظا بركروية بيل-

وسوسة تمبرا ٣٠رسول اقدى عَلَيْ ك بعد سحاب اتباع مديث كرت تع يا تليد تحقی ؟ اگر پہلی صورت ہے تو وہ آپ کے لئے کیول اور کب سے نا قابل عمل ہوگی اور

دوری صورت ہے تو جس کی تھلید سحابہ ارتے تھ، آپ ان امامول سے کیوں ناراض وے اوران کے بالقائل جارخود ساختہ امام زائے پر کیوں مجبور ہوئے؟ قرآن و حدیث کے داختے دلائل سے سحایہ کالی امامول سے تارائمنگی کے اسپاب میں مفصل روشنی ڈالئے۔ ازالہ(۱) یاایا ی جابلانہ وسوسے جیسے آپ کے بھائی کہتے ہیں کے حضور على ك بعد سحابة قرآن يمل كرت في يا بخارى يره آفرآب في قرآن ا ناراض ہوکر سحاع ستر کے بت کیوں تراشے؟ قرآن سے نارانتگی کی وجہ قرآن سے واضح فرماتي _

 (۲) مسائل منصوصه بین صحابه و تا بعین جی قرآن و حدیث برهمل کرتے تھے اور بم بھی قرآن وحدیث پر عمل کرتے ہیں۔ مسائل اجتبادیہ عمل ان کے لئے دو ہی راہے تھے۔ مجہزراجہ بناوکرتے تھے۔ چنانچہ ان میں تیوسخابہ فتو کی وینے میں معروف تھے اور باتی ان کی تظلید کرتے تھے۔ سحایہ و تابعین کے جس بزارے زائد فادی کتب مدیث یں موجود ہیں جن میں دلیل آیت و صدیث کا ذکر ٹیس، بلا ڈکر دلیل فتو کی دینا وعوت تظلید ہے اور بلامطالیہ ولیل اس بر عمل کرنا تھلید ہے۔

 (٣) مفترى صاحب كاافتراء بكرتهم جبتدين صحابة عدائل بين لمعسنة السلُّ على الكاذبين. يملِّ وضاحت كزريكل بيكامم في ان ك فآوي كورون

وسوسية تمبر ٣٢٠ ائمه ابل بيت مثلاً الم حن "المام حمين" المام زين العابدين" المام باقر"، امام جعفر صادق" كى تقليد شخصى كرف والے بقول آپ كاس تقليد شخصى اور نسب یری کی وجہ سے رافشی اورمشرک خبرے (تخدا ٹناعشریہ، شاہ عبدالعزیز) تو پھران سے

ائم رہا ہے انکہ کی تھید کرنے کو کون می وقی نے تو حید وسنت قرار دیا ہے۔ شرک تو وونوں مے تر ہوآ ب نے کرایا ای وا مازل او کیا ؟

ا ز البه(۱) به انساتل بیت دافقتاً مجتمد که حضه مسائل اجتماد سرخی ان کی تقلید کوش وجد جب نے شرک نیس کھا میرشاہ صاحب پر جموث ہے۔

(۲) - تخذا تُنافِعُ رد ماب اوْل (مكاكه شيعه) مِن شاه صاحبٌ نے شيعه كا الكار تھنید ائمہ اربید کائفل کیا ہے اور تقریباً اپنے می وہوے شیعہ نے قبل کئے ہیں جیسے آپ نقل کرد ہے ہیں۔

(r) - شاہ صاحب فریاتے ہیں: تمیانیکہ اطاعت آنیا بھی خدا فرض است مشش مره داند از الجمله مجتدين ثريت وهيوخ طريقت الدكةهم ايثان بغريق واجب تخ لازم انبارً سنت بربوم زیرا کرهم امراد شریعت و دکائل طریقت بیژن ایسرست خَاسْطَوْ آ اَعْلُ الذِّحْرِ إِنْ مُحَنَّمْ لَا فَعَلَمُونَ (تَمْيرِمَزِيزَى)

(٣) — نيز فرمات بين: اما غراجه. مختلفه اللي اسنة والجماعة مثل افسع به وما قريد بدور عقائد وحش هني شافعي مائكي صبلي ورافعهات ومثل قادري وجنتي نتشيندي مهروروي ورسلوك اس ہمدرافقیر برحق سے داند (فَأَوَلُ عَزِيزِيدِيَّ ٣/من ٤٦) حق كا مطلبٌ تزريجا ہے۔ مفتری صاحب! شاہ صاحب کا قول اور وہ بھی جموت آپ نے کس لئے عُيْنَ كُونِ بِهِ كُولِ أَبِيهِ إِن مُوصُوا مُكِينَةٍ عِن إِير مول ؟

وسوسه فميرساس محابة المنسل از مت تع (برش اى لئے آب كا قدمب ب در موتوفات محارة جحت نيست عرف الجادي) أنهول نے برانیک فساکا فيعله قر آن مدیث ے کو او میں براد سے زائد اجتمادی فنادی کون سے آگئے) اور کس معالی کا ک

دوسرے صحابی نے تقلید نہیں کی (اس کا کوئی شہوت) مثلاً تدفین رسول ،استحقاق خلافت، سئلہ میراث نبوی ﷺ ،میراث مدہ وغیرہ جسے بے شارسائل ہیں۔اختلا فات کا فیصلہ عدیث رسول سے کیا گیا (بدیمام مسائل منصوص فیرمتعارض ہیں، اس کے اجتہادی خیس۔ یہاں یہ مثالیں بے موقع میں۔ ان کے بزاروں اجتبادی فاوی کتب حدیث يس معقول بي) تو آب كوسحابة كى يه عدالت كيون نامنظور بوكى؟ (بالكل جبوث_ منصوص مسائل میں جارا بھی بھی طریقہ کارہے) اور تین صدیاں بعد تقلید تخفی کا بت س خاطر تراشا میا۔ (بالکل مجوث۔ جہتر کی تقلید کو نہ قر آن نے بت کہا، نہ حدیث نے، یہ آپ کا شیطانی قیاس ہے اور یہ بھی جبوٹ ہے کہ تقلید تین صدی بعد شروع موئی ۔ تھنید تو اسلام میں پہلے دن سے جاری ہے، کیونکہ افتاء اور استختاء پر ایک ون بھی يابندى نيس لكائى كى اورند مجى مفتى كو يابندكيا كياكدوه آيت يا حديث سائ بغيرفوى ندد ساورند متفقى كومجوركيا كياب كدوه وليل تنصيل طلب كے بغير فق في رحمل كرے۔ كتب حديث مين بزارون فآوي بلاؤكر وليل موجود بين جواس برشابدعدل بين _) از البهعابات بارے میں فیرمتلدین مجب دورگی حال جل رہے ہیں،تھاید کی بحث میں تو اس بات برزور ہوتا ہے کہ سب صحابہ اہل مدیث تھے، وہ مدیث کے علاوہ پچوشیں مانتے تھےلیکن مسائل کی بحث میں جب ہم سحابہ اور تابعینؑ کے اتوال پیش كرتے إلى تو حبث كهدو بيتے إلى كرقر آن وحديث كے خلاف بم سحابة و تابعين ك اقوال نبیں مانتے ،اب محابط کوقر آن وحدیث کے مخالف کہددیتے ہیں۔ وسوسد تمبر ١٣٣ كيا سحابة كي عدالت عاليه كومسر دكرنے كى خاطر اى جناب نے ورج ذيل باير عطيه: الوبريرة اورانس بن ما لك غير فقيد تقد افيين رسول الله عظية كى بات کا مطلب مجدشہ تا تھا اس لیے ہم نے صدیق کو چوڈ دیا اور حتم اور قیاس پرعمل کیا (فورالافوارص) کا) سیمان الڈ! کیا خوب ایر کذب واقتر اور پروجل وقریب میر کمر شیطانی، پیتلیس ایلیس جمہیں ضدا سمجے۔

اؤ ال (۱) براصول المام صاحب سے مردی کنن ہے بکد براصول المام ما لک کے شاگردھیٹی بن اہان کا ہے اور جمہور احناف نے اس کو رو کرویا ہے (ٹورالا ٹوار میں اعاد حاشر فہرم) بان و دا آ ہے خود فرما کی کہ محدثین کا جو بداصول ہے کہ محت سند بھوے مثن کوشٹرم فہر اور محج السند احادیث کوسطول کھ کردہ کردیتے ہیں اور معلول محق اسیے آنای قواعد کی بنا و ہر کہتے ہیں، کیا ہے حدیث کو قبامی سے رو کرنائیں؟

(۲) سیسی بن ابان کا قول تق کرسة جم بھی مفتری صاحب نے کی خیاشتی کی بیار مفتری صاحب نے کی خیاشتی کی بیس مفتر کی صاحب کو بیسات کو بر مفتر کی کار مفتر کی کار مفتر کی معالمت کو بر دولوں عدالت دور شبط میں معتروف بین مفتری کو افتراد کا شول کیوں ہوا؟

(٣) سفتر کی لے بیکی تاثر دیا ہے کر حضرت الن اور معفرت الاہر ہے کہ تھر لقیہ۔ کہا ہے، حالا کہ محابہ بہت سے بھی تاثر دیا ہے کہ حضرت الن الدین دینے ہیں معروف تھے۔ ان کے آدائی مسعند میدالرزاق، مسئل این الی شیر، کتاب قا جار بھی سفتے ہیں۔ بداقادیٰ اسے معروف ندشے کہ ان کے لکوئی کتابول بھی خدکو ہول، الیسے متروک و مرجوح اقوال برامیز اش کرنا اس بات کی ولیل ہے کہ ادارے دائے خدیب پرامیز اش جیس کرسا۔ وموسر تم ہر 100 ۔۔۔۔۔ محابہ مدینوں کا جومئی بیان کریں ہم برادان جیس کہ اے لول کریں۔ کیوں ؟ اس لئے کہ محابہ قرابار کی مدیدی کودین تھے تھے اور تم لے چھی صدی یں دین ممل کیا اور مجمی عازوں ہے اس کے ٹوک بلک سنوارے، پھر جب سحایار سول والا دين قبول نيس توحب سحايد كے بلندو بالك دعووں كا منافقاند متعلد كس تاريخ سے ترک فرماؤ کے ، توبہ موت سے پہلے ہی قبول ہوگی۔

از البه(۱) بعض فقهاء ہےمفتری صاحب کا تن بدن جل أثفا ہے۔قرآن و حدیث کی بجائے جھوٹ اور گالی پر اُٹر آئے ہیں۔اصل عبارت نقل نبیں کرتا ،اصل بد ہے: اور راوی کا حدیث کے متعدومحتل معنوں میں بعض کومتعین کردینا اس طور پر کہ صدیث کا لفظ متعدد معنوں میں مشترک تھا، راوی نے ایک معنی لیا اور اس پر عمل کرایا تو اس حدیث کے دوسر مے متل معنی برعمل کرنے سے تیس روکٹا (تورالانوار أردوس ٢٤٥) فرماية! جم مين متعدد معانى بين، أكر لِسنحُسلَ وجَهَةُ هَوَ مُولِيْهَا فَسَاسَتَهِ فُوا السننيسو ات يرعمل كرايا توكيا جرم كيا؟ بتاسية! بدأصول كس آيت يا مديث كے خلاف ے؟ بال آب جائے ہیں كدمحد شين كامشبوراصول ہے كہ جت رواسب راوى ميں ہے نه كه درايت راوي ميل _ فرمائية إمحد ثين كوكب صلو تيل سناؤ سمي؟

وسوسه تمبر ۲۳۷معقل بن سنان محاني ديهاتي مخوارتها ادرايزيول ير پيشاب كرتا تھا اونٹ کی طرح (نورالانوارص• ۱۸) اورسلمان فارتی سحالی تو ضرور تقه تکرعلم واجتہاد، نشروین اور قدوین احکام میں ابوطنیف کے برابر برگز نہ تھے۔ نیز امام ابوطنیفہ قر آن کے بعد حفرت محد الله كاب سريدام جروي (شاى حام ٥٢،٢٨) اب كيا عاجت اپوبکر وعمر وعثان وعلی کی؟

ار اله(١) ... حضرت على في برملاس (معقل بن سنان) كى ترديد كى اور فرماياك ہم بدوی کی بات پر کان نہیں لگاتے جو اپنی ایڑیوں پر موتنا ہو۔ (نورالانوار مترجم ص٢٦٢) مفترى صاحب نے حضرت على كانام چھيا كراس قول كى نبيت حفيول كى طرف کردی ،اصل میں اب مفتری صاحب تھک چکے ہیں۔جھوٹ گالی کے بعد بھی ول ملامت كرتا ب كدهنيول كاكيا بكراء ابنا في مدكالا كياء السلة خيانش بعي كرتا ب تا كه نفاق كي حديث والي تيون نشانيان يوري جوجا تين ،كوني كي ندره جائي_

 (۲) دوسری بات میں مفتری صاحب نے وجداعتراض بیان نمیں کی۔ اس میں تو سمی کوشک نبیس که علم وین اور اهکام وین کی مقدوین اور اشاعت میں جو مقام امام صاحب کو نصیب ہوا ہے وہ سب حاسدین مل کر ہمی ختم نہ کر سکے اور اگر مفتری کا العرّاض يدب كداس بناء يرحق امام صاحبٌ كوحفرت سلمان فارئ سے أفغل سجحة بين توبيهي بالكل جبوث ب-شاى بمن ساتحدى لكهاب: وقيد يوجد في المفضول ما لا يوجد في الفاصل (ع/ص ٢٨) إس من صاف طور يرحضرت سلمان كوفاضل اورامام صاحب كومففول فرمايا بي محرمفترى صاحب اس كها سطح بيل _

382×000ととなりたりはにしまりたくかとて (r)

(١)اس جكد بعي مفترى ساحب في وجدا عتراض بيان فيس فرمائي كديد بات كن آيت يا حديث كے فلاف ب_

(٢)دخرت مولانا كنكوى في أيك جيونا سا رساله سيل الرشاد لكها تها جس کے جواب میں م بہ صفحات کی ایک کتاب الارشاد الی سبیل الرشاد میاں نذر جسین صاحب مدت د بلوى ك شاكر ومكيم حافظ الويكي في المعى جس يرموانا بدرالحن سوانى نے بھی نظر ٹانی فرمائی ، پھر مواا نامحد حسین بٹالوی نے اشاعة السنة ج ١٠/ص ١١٥١-٢٠٠ یراس کی خوب تا ئید فرمائی۔ گار مولانا عطاء اللہ حنیف بھوجیانوی نے نظر فرمائی اور حافظ

محد حسن المام جامع سجد مبارک لا مور نے ویش لفظ تلماء مویا یا نی علاء نے اس کو تتح فرمایا۔ بجیب یات ہے کہ اس کمآب ہی مول نا مخطوبی کے دسائے کا کوئی جواب نیس بداس كاب على لكعاب كريد بكي عاد مع وفيم صاحب كا أيك عجود ب كران كي أمت على الل قدر اوراي عالم بوع جواجتهاد كي بوب يؤب يدير بيني اورببت ے صاحب خدمب مشقل کہلائے (مر ۱۲ ملیع ٹائی) کیجے: آپ کے بایخ علاء مجزہ حالن وستيه بيميزر

(r) مُعْرَى صاحب. نے رعبادے بھی کی ۔ ہے من کاکھی ہے ، کوکھ امل میارت در مخار کی ہے نہ کہ شامی کی اور شامی نے آوا کیا۔ قول ش اس کو کرامت آلما هيه، شايد مفتري صاحب كودريخارا درشامي مين فرق معلوم نيين ..

(۱۳) ۔ اب ابو بکر، عمر دهنان ، علی کی حاجت نہ ہوئے کے متعلق بکوائن مفتری کا اپنا ہ عبث والمن ہے، ہم ان حضرات کی قرمثال ہی کی اسل عمالیمی است

وموسر فمبر ۲۳ کیا قرآن د مدیث دین بنی جت ہے یائیں؟ (احور فقہ ک سب كايون على جمت موناكلون بي بق كتف باللي مو) يعرفهم النانون ك لئ تال فهم ہے یانا قائل فهم؟ ﴿ قائل فهم ہے لیکن برخض استنباذیس کرسکنا، فسفیل منسقہ الْسلانین ينتجطونة)

ارُ الله مِعْرَى ما حب فرمائية! آپ انسان بين يانبين؟ آپينه بم تُلَف ابداب کے ایک سونے مسائل آپ کے سامنے رکھیں گھے۔ آپ کوعر لی خیر مترجم قرآن یزک ویں مے اور حدیث کی معرفی کہائیں جن مر ضاشیہ ہوند شرح ، آب ان نے سومساک کے احکام استنباط کرد ہیں۔ اگر آ ب نے بیٹیٹنی تبول ند کی قو سب لوگ جان ٹیس سے کہ

آ پانسان بیں ہیں۔

وسوسد تميمر ١٣٨ _... ب تارآ إن داماد يث الشقاني ادراس كرمول كا الباخ كا عم كرتى بين (مسائل منسوسر عن) راكي كوني اليسا عن يا مح مديث النداد بو ك حق عن مجى بيان قرما كي -

ازالہ (۱) ... مغزی صاحب! آپ پہلے کی بات کی آعد یا مج مدین سے ابت فرادیں کہ مجھ کا مشوص اونا شرط ہے ، اس کے جب تک مجھ مشوص نہ اواس کی تھید مائز نیں۔

- (۲) الم م م في منعوص موت كى شرط دوافق كا حقيده ب- آب وافعنى كب سريد؟
- (٣) آب كول اليدة بعديا مح مديث وثر فراكي كرمحاح من كامانا خروري ب
- (۳) اعماع الل سنت کے إلى وليل مرق ہے۔ انتماد بدكا بجند ہو؟ اعماع أمت سے ابت ہے اور ایماع أمد كا مكر اعمر آل أن وحد برشيجني ہے۔

وسومد فمير اسوسول الشيك كل الحامث كاستوكا قراور جنى ب(ب عاد

آيات واحاديث) الكي كوني اليدي آيت بإحديث الندار بدك شان شي وكر يجيد .

ا ذالد(۱) آب دخاصت قرما كي كدآب التداد بدادران كم علدين كوكافريا جني مجمعة جن إرمول مقلقة كافرمانيردار؟

- (1) الشرقواني في تعم دياك بين دعا ما أثا كرد كداست الشرا ان ك داستة ي جاد
 جن يرجي والعام بوار انزراد بو با جماع أست منعم عليهم شاف بين.
- (٣) الله تعالى في التنباط (مجترين) كما لمرف داورا كرف كانكم ديا: وكسؤ

وَكُوْهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْآصَرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُولَهُ بِنَهُمُ (الآلية) اورا عداد بو باجماع أمت الل استنباط بس س جير.

(۱۳) — اللي وَكر من موان كانتكم و يا اورائر اربيه با جماع أمت الل وُ مر جِل .

ومومدتم پر 🚧مرف اللہ ادراک کے ربول کی اطاعت نجات کے لئے کافی ہے۔ (ب ٹارآیات و مُعادیث) تیسری کوئی اطاعت لانے کی شرط کی ایک آیت یا حدیث سے ہوان کیجے۔

وَلَ الْ "مَعَرَفُ" كَيْ حِلْ كَيَا بِ؟ "مَعَرَفَ" كَي ايك آيت يَا مِديك عِن وكما ویں۔ بیمی ذہن میں تھیں کہ الل قرآن کہتے ہیں مرف اللہ کا تھم ماننا کافی ہے ال الحكم الإلله.

- (1) الشرتوائي في القداور رسول كي اخاعت ك بعد اولي الامركي اطاعت كالملم قَرْ آن شي دياست: وأولى الآخر مِسْتُكُمُ (الآية) ادراد لي الامرك مطلب تودقر آن یاک نے السلین بنسقه کونه کرے متایا ہے کے مراد مجتدین میں راس آیت برآ ب کا يكالحان كيول فكردا
- (۴) 💎 حدیث معاذ " می مساکل متعومہ شریا کتاب وسنت کے بعد مساکل اجتماد یہ یں اہتباد کا ذکرموجود ہے۔ آپ حضرت معاذ * کو خدا مجھتے ہیں یا رمول یا نیسرا نمبر وسيتح جميا ا
- (٣) آنخفرت 🗱 نے فریان:العلم للاقة آیة مسحکمة سنة قائمة فویعشة عادلة (ابن ماجه) فرمائية! تمن جزس يوكي باود؟
- (٣) مديث ميمين الأاحسكم العاكم فاجتهد (الديث) ابتهادكوآب قرآن

الميتية بين ياحديث يالتيموانمبر ديية جين.

(۵) — آپ بھی ایک آیت یا مدیث سجے چش قرما کس کر آن وسنت کے بعد اجماع کو باننے دالہ یا جماع کو باننے کا تکم وسیتے والا کا فراور جبلی ہے۔

(۱) ۔ آب ایک آبت و مدیث مجھ فیش فرمائی که مسائل اجتمادیہ شراہ تباد کرنے وال یا اجتہاد پر قبل کرنے والا کا فراور جبنی ہے۔

وسومد تم مر امم کیا سحاب نے احد تعال اور اس سے رسول کی اطاعت سے ساتھ تيري كوني اطاعت طائي تلي؟ طائي تلي تاكس كي؟ نيس عائي تلي الآي . خ کہاں ہے دریافت کی؟

ا **رُ الله بم الل المنه والجماعة اول**، أد بوكو ماستنغ فيل رسحاب معي الن اول اربوكو مانتے تھے۔ مبائل منعومہ میں خدا در سول کی اطاعت کرتے تنے (بہت می آبات) ساکل اہمامیہ میں اہمارہ کو بائے تھے، میے خلافت میدائل شرافان اوّل عہد المارك، بورا ، و بين تراويج كي جناحت، ليك وقيد وي بوكي قين طلاقون كا تين مونا دخیرہ ادر مسائل اجتہاد ہے، اجتہاد کرتے تھے اور دوسرے کے اجتہاو کو مانے بھی تھے جیے حدیث معاذ ^ط و معفرت عمر کا نھا **ہ من**ی شرق کے نام ۔ سنن اکٹیر کالنج تھی جلدہ ابیں سخابی اجتماد کا صاف ذکر ہے اور کتب صدیث شن تقریعاً جس بزار ہے زیادہ محالیہ تابعین کے نقبی فادی مذکور میں جن کا افکار رو پیر کے سورج کے اٹکار کے مترادف ہے۔ اب جائے! آپ محابات طریقہ سے کیوبا مخرف ہوگئے؟

وموسدتمبراً اللهحطرت عبدالله بن مسحهٌ نے فرمایا کدادگرا تهبیل بدخوف نبیما کہ عدّاب بیں ڈانے ماؤر زمین میں دھنسا دیتے جاؤاس جرم پر کرتم ہوں کہتے ہوکہ دمول التستطيعة في فريدا إورفال في كها (داري) محرتم بدخوف وعلم كيتر اور كفين بواقسال وسول الله وقال موحيفة كذا حمين كرا تظاري؟

ا زاليه(و) ... يبلغ ټول اين مسود کي همچنش منردري ___

(۴) ۔ بیاتول این مسعود " ب کی کون می دلیل ہے۔ آ ب تو کہتے جن کہ ہم صرف خدا اور رسول کی بات مانتے ہیں۔ کوئی تبسری اطاعت نہیں مانتے کیا این مسعود کوتم من خدا مانا يا رسول يا تيسرا؟

 ادی می روابعد نمبراندا می کنفرنیس آئی جس میں حضرت عبداللہ بن مسعود رشى القد تعالى عندف كأنب وسنت اوراء ماع ك بعد طاجعهد برأيك فراي ب (۴) - بهم ساکل معومدی خال وصول الله کلیا ادر ساکل اینهادیدی خال ابو حنیفه محله کیتے ہیں۔فرہ میکیا پرس آیت یا کس حدیث میج کے خلاف ہے؟

ا مام دکیج " مدید م مارے تھے کی نے کہا کہ ام ابوطیقے" سے قطا ہوگی۔ ا مام وکیلئے نے فرمایا کہ امام ابرطیفہ سے کیسے فطا ہوسکتی ہے جبکدان کی مجلس عیل امام ا ہو پوسٹ اور ایام زفر '' جسے باہر ت س اور امام کیلی بن الی زائدہ، حفص بن خمات ادر حبان بن مندل جيمے تفاظ مديث اور قاسم بن معن جيمے اوم الماخة العربيداور الأم واؤ و خالی اور حضرت نفیش بن عباض جیے زاہد اور میں حب ورج سم جود ہوتے تھے۔ جس کے سائلی ایسے ماہرین فی ہوں وہ کیے قطا پر قائم روسکتا ہے؟ اگر وہ فطا کرتا تو بیاوگ اسے کل کی طرف مجبر لیتے (عاری بقدادی ۱۳ اُرمی ۱۳۷۷) اور نیام وکی " نے اسے ب سمی فرمان کرتیرے جے لوگوں کے بارے جی جی تر آن یاک بی آیا ہے کہ برنوگ مِ نُور بَلْدَانَ سے بھی زیارہ محراہ ہیں۔ ﴿ جامع السائیدِ نَالْمِی ٣٣٠)

المام يزيد عن بإدون المام ابراليم كن كا توكي قول شاريب يتح، ايك فخش نے آ تُع كركيا: ال في الم سعد رمول الفيكية كي وماديث بيان كين، الأكول كي اقوال مجوز کے۔ بزید بن دارون نے ناراش ہوکرفر مایا: اے آئی! مہ جناب رسول اللہ علیہ ک احادیث کی تغییر ہے اور تو حضور الڈس 🗱 کی احادیث کوکیا کرے گا؟ جب تک تے نے اس کی تغییر زیمجی، تم مرف بارج مدیث کی کاشش کرتے ہو۔ اگرتم مدیث کو بھیے کی کوشش کرتے تو تم امام ایو خیفہ کی کہائیں اور بقوال دیکھیے اور تھیں احادیث رسول 🐗 کی تغییر کا پیدیکل جاتا. میکرانام بزیدین باردن نے اس بخش کو زائش ڈیٹ کر ا في جل عديث سنه فال وإ (مناقب موتى ج المحي ١٦٠). بدهام يزيدين إدول ود جلل القدر محدث إلى جن كى مجلس عمل المام يكي عن معين (ول الا كدهديث كر حافظ)، المام في بن الديني . المام اهر بن طبل ، المام زبير عن حرب ادر ويكر محدثين كي جماحت ما مزری تی الیکن جب کول تو کل ہے تھے آتا تو فرائے کرایل علم سے جا کرتو کل ہے ہو۔ ا مام کی بن المدیق نے آیک دن کہا کہ کہا آ ہے کے باس بیانل علم موجود بس جی - قرایل ك الل عم قوامام الدهنية كم ما تني إلى رقم فوينساري وو ـ (حول ج واص ١٥٥)

المام حیداللہ عن مبارک نے احادیث پر حاسقہ ہوئے امام اصفام کا آیک قرمان تش فریایا کہ "علم کے مغز امام الاصفیۃ بیرفرماتے ہیں"، ایک آ دی نے بدند کھما، ایام این انہارک نے قرمایا: اے لوگو: تم اند کرانم کی شان ہیں کتنے ہے ادب ہو ہوران کی عقمت سے کتنے جاتی ہوادوالی طم اور طم کی مجان ہیں کرتے ، امام الاصفیۃ سے زیادہ کوئی حق نہیں رکھا کہ اس کی تحقید کی جائے۔ وہ حقی، صاحب ورخ اور ایسے عالم ہے کہ آنہوں نے ملم (قرآن و حدیث) کے دہ خفیر امراد کھونے ہوگوئی ند کھول

سكار يُعرقهم عَيالَى كرابِ ايك ممينه معديث نيم يؤحاؤس كا (الخيرات الحسان ص ١٩). ادفرائے تھے کریند کی طول ہی حنیفة بلک ہوں کیا کرد کرمدیث کی تعمیرے (الجوابر المعید ج اص ۱۳ مغتری صاحب الن مدنین کے بارے میں کیا لؤی ہے؟

وسومیہ تمبر سامعرسول اللہ 🗱 کی مدیثر ن کے ساتھ دوسرے لوگوں کی باقرار کو ملائے سے تمیارے ایمان کو کو خطرو تیس او پارشم نیوت کے داووں سے قریب کیوں 912.

از اله(۱)...منتري صاحب! فقدي كمايون كوتر چيوز يجه احاديث كي كمايون بش مجی محادیث رسول کے ساتھ ووسروں کے اقوال کے جیں۔ امام ترفدی او تقریباً ہر حدیث سکے بعد خاصب بیان قراستے ہیں، کیا بیرتمام محدثین فتم نوت کے منکر ہیں؟

- (۲) بیکس آیت یا مدیث ش ب کراینماد ترت ب اور خدانسو النبیین کامنی خالم المجتهدين ہوار لا نبی بعدی کامٹی لا محمد بعدی ہے۔
- (ع) کیا آپ کے فزویک قنام ایک مجتمدین اور تمام مقلدین واقعی مرزا اور مرزائيون كيالمرث كافريس؟
- (٣) مفترى صاحب إكيا الكارقم نوت آب ك فرديك أجتبادي منك بيك اس میں خلام ہمی اجر ہے۔

وموسرتمبرهم کیا دین کا عادقراً کن دحدیث برهیں؟ اگر ہے اور بیٹیا ہے ہ قرآن حربي على عبداور ميح احاديث كي تعداد بزارباب، جبك انام ايومنينه عابد وزابد ہوئے کے یاد جودار فی عی تبایت کرور تھے اور ان کے پاس مرف سر واحادیث تھی۔ (تاریخ ادب حربی مقدمه این خلدان)

آ آ الد (۱) انام این خلکان شائل نے صفی ۲۰۰ سے ۱۳۳ تک انام صاحب کے فعال اس کے دائل ہے۔ ان ان قرائے جا مغتری صاحب کونظر ٹیس آ سے۔ گلب حربیت کا جواب بھی وہاں فغائل بیان قرائے جا مغتری صاحب کونظر ٹیس آ سے۔ گلب حربیت کا جواب بھی وہاں فرکورے کہ وہ چھائنت گوئین کے موافق ہے اس نئے اعتراض کرنے والا خود تست عربیت کا مریض ہیں۔ ہیں جہاں کی مرتب زبان عربی تھی ۔ آ ب را ب انام صاحب کوفہ ہیں چھا ہوئے جی جہاں کی مرتب زبان عربی تھی ۔ آ ب نے فقد اکبر وغیرہ کا بھی حربی ہی عربی ہی عربی ہی اس جی جہا ہی مرتب کا بھی ہی عربی ہی اس جی ہیں جہاں کی مرتب زبان عربی تھی عربی ہی اس جی جہاں کی مرتب زبان می عربی ہی عربی ہی اس جی تعدد کی گئی ہی اس جی تا کہ حربی ہی عربی ہی اس جی جی جہاں کی حربی ہی تعربی جائے جی جی جہاں کی حربی ہی تعربی ہی است تیں جی کومنی ہی تعربی ہیں۔ گئی ہیں می اس کے بارے بھی ہے کہنا کہ حربی تعین ہیں جائے دوری گئی ہیں۔ گئی ہیں جائے دوری گئی ہیں۔ گئی ہی

- (٣) سترہ احادیث کا کائل جمہول ہے۔ ائن طعون نے اس کی ترہ ید کی ہے جو مفتر کی صاحب کونفرنیں آئی۔
- (۳) سمنتری ساحب؛ کیر ہے جیب ہات ٹیں سے کہ جس کو مرف سرہ (۱۷) احادیث کمیں ای نے بارہ لاکھ نوستہ بڑاد مسائل بیان فرمائے اور جن کو بڑار ہا کمیں وہ ایک دکھ نماز کا کمل طریقہ بتائے ہے بھی عاجز ہیں۔

يرتمام محدثين كوفه كاعمل بو (الخيرات الحسان ص٠٠) محرافسوس كراصحاب سحاح ستداس معياركو يوران كريحي

 (۲) تعداد احاديث: امام سفيان توريّ، امام شعبه يجي القطان، ابن مهديّ، امام احمد بن عنبل فرماتے ہیں كرآ تخضرت الله كى كل احاديث (احاديث ادكام) جار بزار مِن (توضِّح الافكارس ٦٣، امير يماني غير مقلد) ادرامام صاحب كوجار بزار احاديث ياد تحيل - (مناقب موفق ، الجوابرج ١١/ص ١٧٥٨)

(٤) فودام صاحبٌ في اسية صاحبزاد عكو يتايا كد جمي يا في الكواحاديث ياد ایں (کتاب الوصیة) ان میں جار ہزار احکام کی بیں اور باقی دیگر ابواب سے متعلق ہیں۔ وسوسيتم سر ٢٥امام الوطنية ك ياس مديثين ببت كم تي اورامام صاحب في زیادہ صدیقیں بیان کرنے کی قدمت فرمائی ہے (شای ج المع عدد)

ازالد(١) ...علامد شائ فرمات بي كدام صاحب فن مديث كامام تصادر ائمہ تابعین وغیرہ میں سے جار ہزار شیوخ حدیث سے علم حدیث حاصل کیا، ای لئے علامدوبي في " تذكرة الحفاظ" ش آب كوهاظ عديث ش ع اركيا باورجس كا خیال ہے کدامام صاحب کے پاس احادیث کم تھی ایسا محض یا تو تسامل ہے کہ تحقیق نبیں کرے ایا محص صدے ایسی غلد بات کہدر ہا ب (شامی ج الس m)

(r) صدیث روایت كرنے كے دوطريقے بن: الفاظ رسول اللہ علی كوروایت كرنا يا مراد رسول عليه كوأمت تك بانتيانا - حديث رسول عليه "رب حامل فقد غير فقیه" كموافق اصل متعدمديث كافترى ب-امام صاحب في الفاظ رسول علية كوبهى روايت فرمايا (ديكمو! مندامام اعظمٌ اورعقو دالجوا برالمدينه) اور حيار بزار احاديث

ے کتاب الد کا رکا انتخاب قرائی (مناقب کی من عمر) اور مراد رمونی علی کی روایت عمی تو آ ہے کا کوئی شر کے بی تیس ہے تھ وہیں بارہ لا کھانوے ہزار مسائل مراہ رسول سیجنے میں بیان فرمائے ۔مغتری صاحب نے بانکل جموت بولا ہے کہ شامی میں کھیا ہے کہ امام میاحث کے ماس احادیث بہت کم تھیں و وال تو اس کی تر وید ہے۔

 (۳) مفتری صاحب کا بیلکمنا کدامام صاحب نے زیادہ احدیث عان کرنے کی غامت قرمانی ہے، باہمی شامی عمد ادام صاحب سے معقول نہیں ہے بلکہ شامی نے ق علامہ بن میدالبرے کنل کیا ہے کہ ہے موسیع تھے کشریب دوایت کوئی قاتل تعریف چز 'نیں ہے۔ آپ کی ایک آیت ما**مجی مدیث ہے ٹابت کرد کیا کہ بے سوچ سمجے ک**ڑت ردایت قابل تعریف ہے تو ہم تعلیم کرلیں مے کراین عبدالبر کا قول محج نیں ہے۔

مفتری صاحب نے کھا ہے کہ امام ابو منیفہ نے مدیث کی کوئی کتا ہے جمع نهیں قرونی (نورانانوادم ۹۰ ۸۱) اصل عمارت ملاحظہ فرو کیں: طبیا حدیث عمل عزیمیت یہ ہے کہ تمینہ مموع مدیث کو یاد رہے بین حال کے دفت سے لے کراوا کے دفت تک سموع مدین کوزیانی بادر محداد کتاب برجم وسرکرے اسے (مدیث منظ کرتے کو) نہ چیوزے ، بھی ہجہ ہے کہ ا، م افظم نے فن حدیث ش ایک کماہ، بھی تھ و بن نیل فریائی اور نہ کٹ ہے براعثا وکر کے روایت کرنے کی احازیت وقی ۔ روایت حدیث جس آ ب كا بكيا ووتشدد سے جو تيامت تك كے لئے كوتا ونظر متحصب لوكوں كے طعن وتشنيع کا سبب بن کر رہ کیا اور ء و آ ب کے غیر معمولی تقویل اور بر بیز کاری اور اعلی کروار اور راست بازی کو بچه نه یکے (نورالانوار مترجم أرود من ۱۷۲۲) یاد رہے کہ مند شانعی بھی امام شافعتی کی سرتب کردہ نیٹیں ، مند احربھی امام احمد بینامنبل کی اپنی مرتب کردہ

تبیل اور سندامام المعم مجی آب کے حلالدہ نے مرتب کی۔

وسوسه تميم ۲۲ سيري وحردان امام ابويوست وامام بخير المام زقر" وفيروجي امام المعلمة كم مقلد تع يافيين؟ أكر مقلد تقواتو أنهول في الأم ايومنية كي نقد ك أيك تها في سیائل کو کیوں درکردیا؟ (شامی ن الم صالا) دواہو منیفہ کے ترقیق چرکس کے مقلد ہے؟ از الیہمفتری صاحب تقریروں میں تو روز مہوت بولنے رہیے جیں کہ میں نے اليس سال شامي يرحائي ب و آب كوي كرمعني بين كرش ي عل الكعاب كرامام الوبيست"، المام عنَّ، المام زفر " وفيره اسحاب المم جميَّد عن (منَّ الم ص٣٦) مجميَّد في المذيب على (ح) أس 10) امول مريب على واسقلد عله اورفروع على خود مجتدية چونکہ جمبتد پڑھلید لازم ٹیس الک الیل کا اجاع کرہ ہے اس لئے امام اعظم نے اسے ال تُنامُروور) كو قفاب كرك قرباليا: أن توجه لكم دليل فقولوا به. چانچ بيدعزات بحي اجتباد شراكی شدكرتے ہے۔ چنانچہ دو قبالی فروق مسائل شروقو ان كا اجتباد بھی امام المظمّ ے میں موافق ، إ، آیک تبائی فروق مسائل شی امام صاحب جب احکام میان فرمات جن شن بعض كااستنباط انتا وقبل موتا كران مجتدين كا وَمَن بحي وبال تك ريني سكما، كيونك امام اعظم كالملي برواز قرارا تك تحي قوامام جب اليد جمتدين كالجزو كيحته لواي سئله کا دوسراتھم میان فریاد ہے جس کا اشغیاط اور دلیل ان کے ڈبمن کے سوافق ہوتی تو پیلا دقیق قول الم صاحب کی ی طرف منسوب موتا اور المام کے دوسرے قول کو مجازآ ٹاگروا فی طرف نسیت کر لیلتے ۔ چانچے ٹائی عمل بی ہے کہ امام ابو یوسف ، امامی '، امام حسنّ ، امام زفر " سب نے بوی مطبوط تشہیں کھاکر بیان کیا کہ ادا ہر تول امام مساحبٌ ہے بن مفتول ہے۔مفتری صاحب کوندان کی قسموں براعتبار ہے ندشای کی ریمیارت تَقْرَآ كَيْ: فَلَيْسِنَ لِأَحَدُ مِنْهِمَ أُولَ خَارِجٍ عَنْ الوَالَّهِ. ادِرَيْهُمَّا كَي يَرْبَارت تَظْر آ لَيَ: اللهو ما ملكوا طريق المحلاف. كروه المصحب كخلاف بين اور زع به كَثَرَآيَةِ وَمَا نَسِبَ الِّي غَيْرِهِ الْإِبْطُوبِقِ الْمَجَازِ لَلْمُوافِقَة (٣٦٣)يُكِلُّ انْ مساکل کی تسبت صاحبین وفیرہ کی طرف مجازی ہے کیونکہ ان میں ان کا وجتہاد امام مدحب كيمواتل ربالين مفترى سفاس كانام روكرة ركعاب، فيها للعجب.

وسوسد تمبر عهم أكر شاكردان العضيف ثير مقلد تتحاد آب سنة بغايا أست برهنيد کا بھادی ہوجد کیوں الاووغ؟ آب کے یاس کون می شرقی دلیل ہے کہا تر اربوء ان کے شاكر داور ويكر قيام ائتر اسفام تو صرف دسول الله الملك كي انباع كرين اور آب ان ائر كو اوبابًا من دون الله عائك بينے إلى ـ

ا زالہ....(۱)...،مغتری صاحب! آپ کوکن نے نتایا کدوہ فیرمقلد ہے ، شای ٹیں ڈ صاف کھا ہے کہ دہ اصول کی مقلد تھے ،فرد رہا میں مجتمد تھے۔ آپ کوغیر مقلد کا اسمٰی بھی نہیں '' نا۔ غیرمقلد تو وہ ہوتا ہے جونہ خود اجتہاد کا الل ہونہ تھلید کرے۔ غیر مقلد عای لاغرہب کو کہتے ہیں جسے نماز باجماعت عمل ایک ایام ہوتا ہے ہاتی مقتدی رتیسرا نارك جناعت رامام جيتدى جكرب، شترى مطلدى جكده دونون كياتفك ك فرمانبرداد میں اور تارک جماعت غیر مظلمہ کی مجد ہے تی کا نافر مان ہے۔ یا ملک عمی آیک حاکم دونا ے، وہرے رعایا ہور تیسرے باغی حکومت ہوتے ہیں۔ مجتبقہ حاکم ہے، مقلد قرمانبر دار دعایا ہے اور باغی نافر ماننا فیرسفند ہے۔

 (۲) مماکل منعومہ چی جمیّدین و مقلدینا سب امتیاع رمورا کرئے تیرا۔ مماکل اجتهاديه على جميتدين اسيد اجتهاد كى اجاع كرت ين جس سد كراب وسند كا يبشيده مئله كابربوتا بهادر مقلدين ان كابحقاد كالقليد كرت بي

وسوسة تمير ١٧٨ كيا يبود ونعادي انبياء كم مقابله من اين علاه ومشارع ك ای طرح میردی کرے کاخر ومشرک نہیں تنمیرے۔ وہ تو زیرہ ملیاہ کی تھید کر کے جن بي جومردول كى خاك ميات كايمان آينى تكله بي جومردول كى خاك مات كا بھی زعب آلود جس ہوئے۔

اڑالیہ(۱) ...مفتری نے اب ایتا امل ماز بیان کیا ہے۔ جس طرح روائض کے تزديك حب ال بيث كا معياريه ب كرسحابه كومعاذ الشهب ايمان كابت كي جاسة _ مفتري وبنذكو كيدنزو يكاعل بالحديث كاسعيار بيب كدلهام جمتدين ادرمقندين كوكافر اورمشرک کہا ہے۔

- جن احیار در بیان کا آب نے ذکر کیا ہے ال کوٹر آن نے حرام خور کھا ہے اور جميدين ترام تو كاشرے مى يريمزكرتے تھے۔
- ان احباد در بیان کوفر آن نے جو نے کیا ہے جبکہ جہتد ہی نہایت سے تھے۔ (r)
- وہ خود خدا رسول میک خلاف مسئلہ بنائے تھے، پیرخدا ورسول کی بات سمجاتے (*)
 - الإسام مظهر لامنيت.
- وه خدا ورسول كي بات من كركيته يقيع: منسبه غلاً وَعُصَيْدًا لِينَ مِن الماء ما في (a) كريس . فَانْوا فَلُونِهَا غَلْف اورجهَدين كرول فوف الى سرجريور حمد
- وہ خدا ورمول کے درواز ہے ہے بہلائے تھے، پیضا ورمول کے درواز ہے (1)<u> رو ت يس ـ</u>
- کیا آب ان کوجمتد مانتے ہیں اور آر آن وحدیث سے ان کا جمتد ہونا اور (4)

كريكة بينا-

- (A) کیا ان کی تکلید سائل اجتهادید علی بوتی تحقی ؟ کوئی آیت یا حدیث محکی عشر کریں۔
- (9) یہاں آپ نے تھید کے ساتھ خمی کا خانوں لگایا۔ آپ ان کی تھید شخص کی ۔
 شبیس قرآن وحدیث ہے ڈاما کی ۔
- (+) سٹایہ کہیں کے نفظ تھلید علی تو اشتراک ہے تو اگر بھی ہے تو فرما کی کہ لفظ "دووید" جینس کے دووید اور کنیا کے دووید شمامشترک ہے۔ کیا آپ کے تزویک دونوں کا ایک تھم ہے؟ لفظ" کوشت" کجری کے گوشت اور فنزیر کے کوشت دونوں پر بولا جاتا ہے۔ کیا بیک ہی تھم ہے؟ لفظ" سجدہ" فدا کے مجدے اور بت کے مجدے دونوں پر ہوما ہے تا ہے۔ کیا ایک ہی تھم ہے؟

وسوسه تمبر 9 س.... بم الل حديث المداد بعد كے ساتھ ساتھ ديگر تمام اندا سالام كی دل و جان سنت قدر كرتے بين كراتياع صرف الله اور رسول كی كرتے بين _قرآن و حديث كو كمل جارت اور واحد شريعت ماستے بين ر ادشاد فرما ينظيا حاد سے ايمان جن كون كى كى سند؟

ا ڈوالیہ ... (۱) ... مسائلِ منسومہ علی جمتدین ادر مقد میں سب صرف اللہ اور دسوں کی بیروی کرتے ہیں۔ ہاں غیر مقلدین سسائل منصومہ عمیا بھی تھات کو چھوڑ کر منتہ بہات کے بیچنے کے دوئے ہیں اور موام عمل منٹ کمٹرا کرتے ہیں۔ قرآن یاک نے ایسے لوگول کوالی زیغ فردیا ہے۔

(والما الذين في للويهم زية فيتيمون ما نشابه منه ابتقاء الفصلة ﴿ ٱلرَّارَانِ ﴾

- (r) ۔ آب اوک اجماعی مسائل کے متر ہیں، ای لئے آپ کے کمی عالم نے ایک کوئی کٹاب نیس لکھی جس کو آپ کا بیرا فرقہ قابل اعتاد قرار دیا ہواور اس میں اجا می مسائل بیان ہوں۔ابھا فی مسائل کے اٹلاسے پڑک اُمٹ میں منز چھا ہے اور قرآن ياك عمل بين: السفنسنة الشبيد حين السفنيل. الل للخليم العاديث عمل قروع فن الجراحت کی دغوی مز اکل آئی ہے اور اجماع کے محرکو شیطان بھی کہا کیا ہے اور آخر ت عي تارك اجمارًا كي مزاينس قر وَ ن وحديث دوز رخ سيد
- محناه کمیروہے۔
- (٣) مساكل اجتباديد عن آب نا المول كي فيمنول كو ماسنة إلى ادر جهال كواسية رؤس بناتے میں جس کا تقیر مدیث یاک ش مسلوا شاهلوا آ باہ اوراس دین ہے قيامت لُوكَل سبه: الما، وصد الامر الى غير اعله فانعظر المساعة(الديث)
- (a) ائر جمقدین کوآب دین کے گلاے کرنے دالے کہتے ہیں۔ ان کے قیاس شرق كوآب تياس شيطاني كيت بي اورمديث قدى مسن هنادى لمي ولمنا فقد آذات بالمعوب سے زرائش ڈریے۔
- ۔ تمبارے بڑھے ہوئے ، اُن بڑھ مب جہتدین ہے منازعت کرتے ہیں اور قرمان دمول ﷺ ان لا شنسازع الاصر احله (بناري) کي کالفت کرے گناه کيروکا ارتکاب کرتے ہیں۔
- جس مديث الكر مجتدين برسال عن ماهد بين والله تعالى أكيل ابزعطا قرمات بين الم ملعن كرك مديث معين كالخاطب كرت بواور ابين آخو هلا الامة

اولها كامعدالَ شِحْ ہو_

(٨) ائر جميتارين کے بارے شي کتے ہو کہ وہ محصوم تيم کين اچي موج کو اينا معصوم تيم کين اچي موج کو اينا معصوم تيم کين ہو گئي ہو جي کہ اينا خدا اور رسوں کی موج جمعے ہو۔
 چنا نچر تبہاری رائے اور موج کا کوئی افکار کرے تو اے خدا اور رسول کا مشکر کہتے ہو۔
 شہم اچي وائے اور موج پرا آنا نا زے کہ جرفیر مقلد اعداد کیل دی والی ہو آیہ کا جمہہے ہو۔
 کا مجمہہے ہور موافق فرمان رسول میں ایسے لوگوں پر تو باکا ورواز وہند ہے۔

(۱۰) ماں قرآن پاک کے بارے عمل آپ کی جماعت کا اظافی بیہ ہے کہ اس عمل بیتنی آبات عمل احررور بیان ، آبائے مشرکین کا ذکر ہے اس کے معداق اندار بعد میں اور چنٹی آیات میں کفار کا ذکر ہے ان سے مراد انتہار ہو۔ کے مقلدین ہیں۔ ای طرح خوارج کی طرح ? ب لوک کافرول والی آیات مسلمانول بر جیبال کرتے ہیں۔ اس ناده آب كانس باخران ديمين جي تيس آيا-

آ ب بے عمل بالحدیث کا دموئی مجمی علو ہے۔ مدیث برعمل کرنے کے ہے بہلے مدیث کا ماننا خروری ہے گر آپ کا فرقہ سج حدیثوں کوخیف کیہ کر مائے سے الكامركروية إسياران يرشري شبادتين سيرو

حولانا عبدالبجار غزنوى والدسولانا والأدغزنوي اورمولانا عبوالتواب ملكأتي فرائے بیں: حارے اس زمانے عمل آیک فرقہ نیا کھڑا ہوا ہے جوانیانی حدیث کا دھوئی ر کھنا ہے اور در حقیقت وہ لوگ ا جائے مدیث ہے کنارے (اِبر) بی ۔ جرمد جی ساف اور طلف کے بال معمول بہا بیں ان کو اوٹی کی قدرت اور کمروری جری بر مروود کر و بیج جیں اور سحابہ کے اقوال اور اتھا ماکوایک بے طاقت سے قانون اور بینور سے قون کے سبب بھینک ویتے ہیں اور ان برایے بے جودہ خیالوں اور بھار کھرول کو مقدم کرتے ہیں اور اینانام محقق رکھتے ہیں۔ ساشا دکا انشاکی قتم اید دعیانوگ ہیں جوشریعت فحد میا کی مد بندی کے نشان گرائے میں اور ملت معیند کی بنیادول کوہند کرتے ہیں اور معد مصطلوب كرفتانون كومنات بي اور احاد ميد عرفوت كوجهوز ركعا بيداد دمتعل الاسانيد آخاركو مھینک دیا ہے اور ان کے دفع کرنے کے لئے کا وہ طلے بنائے ہیں کرجن کے لئے کس یقین کرنے والے کا شرح مدرنیں ہوتا اور نہ کی مؤمن کا مر آفعتا ہے۔

(نآوق على عديث ج عاص مدره)

یے عال آپ کے سارے فرقوں کا آپ کے دو علماء کی شہادتوں سے داہت

ے۔ آپ کے مابیناڑ وکیل اہل مدیث ہند فرمایا کرتے بھے کہ رانوک اسبے مولویوں ے مقلد ہیں اور تام بھٹی رکھتے ہیں ۔ ان کے بارید بیں کھیتے ہیں: برمقلد تام سے محتق جیسے احادیث غیر حجمتہ کے تسلیم میں ہے منبطی کر رہے میں ویسے می احادیث معجمتہ وحسنہ لائق عمل کوروکرنے میں بے منبط ہورہے ہیں۔ بہت می احادیث کو جوائشہ مجتمد کن ادر کھ شن کے زویک مانی ہوئی اور فائل ممل قرار دی منی جیں، بدمرف ان کے بعض راد ہوں کو بحروح وملعون و کی کرضیف قرار دیتے ہیں اور بیعی کیہ بیٹیتے ہیں کہ جواس صدیت سے فلاں امام یا مجتبہ نے نکالہ ہے اس کی کوئی اصل نیس انٹے (امثرہ: البنة ج اا) ص ١٠٠٠) مفتری صاحب! به ہے آپ کے فرقہ کے ممل بالحدیث کا حال جس پر جناب نازفرمارے ہیں۔

(۱۳) — احادیث متعارضه شن د وفول فریش ایک پیلوکی احادیث پر عال بین بهم ان ا ماہ یے برقمان کرتے ہیں جن کے موافق فقدامام ابوطیقہ بیں سنلہ خاکور ہے، کیوفندامام صاحبؓ نے سحایا کو کمل کرتے ویکھا، چھر لاکھوں محدثین ان کے موافق کمل کرتے آ ر ہے جس ۔ النا احادیث برعمل کرنے والول کوغیر مقلعہ عالی بالرائے کہتے ہیں اور سال کے مقابلہ ٹین ایک احادیث برعمل کرتے ہیں جن پر وورصحابہ و آلھین میں جمہور نے عمل زک کردکھا تھا اور حمل کرنے پر تھیر ہوتی تھی، ان پر عمل کرنے کا نام قبل بالحدیث وكعاشيعان

(۱۳) کی کرنم ملک کا قربان ہے کہ آخری زبان میں فریب کرنے والے جوئے ملاً دلوگ لا کمیں مے حمیارے باس بعض الی حدیثیں کے نہائی جوال کی تم نے اور نہ تمبارے باب دادوں نے (بیٹی یا تو ووجوٹی مدل کی یامشوخ دای لئے علاء الی سنت نے بھی جوام کونے بنائی ہول گی) موقم بھاؤ اپنے آ بے کوان سے اوران کو دھٹار دواہینے یاس سے درنہ وہ حمیس محمولہ کردیں مے اور کھنے شن ڈال دیں مے (میج مسلم) ہے ہے آب كفرد كا وال كرمديث كيام ي كمراه كرت بوع فندأ ثمات بور

" (١٣) - قرآن ياك كم مرتك قريت "ليعف فيهوا لمي اللين: " عمل فتركو ما شيخ كانتم ے اورا ماوید متواتر و می تقد کی عقمت قد کورے گر آب دن رات نقد کا نام نے لے كراس يرلعنت مبيج بين، مالاكه حديث سے فقد كے كالف كا شيطان اور منافق مونا

(١٥) ﴿ رُبِ تَعْلِد كِي فَنْهِ بِي وَيْن يَوْارِلُ مِيلًى فَنْهِ الْكَارِ مَعْوَاتِهِ الْكَارِ مِدِيقٍ ، الكارميات، الماحيت، نجريت، چكز الويت، مرزانيت اي مَندَك ترتّى بإفذ شكل بير، ورندامفام كواس فتندسته كوئي فاكدوكش بهنجار

وموسد تمبر • ۵ اگر ہارے ہائ تمل حق قبین ہے تو قرآن احدیث ہے ہیر عقابات حل كانشاعى كيخ مال مركلب وسنت بدائل وو

ا زالهآپ پیلے قرآن وحدیث ہے دیناتعلق قابت کریں۔

- (۱) ۔ انگریز کے دور سے پیپلے جس طرح عوزا تجل اور منکرین مدیث کا شقر آن کا ترجدها بينه حاشيه زتنير اى طرح دورير طانيات يبليندآب كاأددوتر جدترآن ندحا ثبيدته تغييرر
- (۲) ۔ جس طمرح انگریزوں کے دور ہے پہلے مردائیوں ادر منکرین مدیث کا کوئی اردونز جمەمەيت تبين ملا بالكل اى خرح آپ كالمحى كوئى ترجمەمە يەپىنىي مايە
- جس طرح محریزی دور سے پہلے مرزائیوں اور منکرین حدیث کی کن معجدیا

مرسہ کا نشان تیں مایا بالک بھی حال آپ کا ہے۔ دور برطانیہ سے قبل باک و ہند میں آپ کی کسی مجد باحد سرکا نشان تیس مایہ

 (۳) عد ثین سک حالات علی محدثین کی تکمی جوئی کتابی طبقات حنید، خیشات ماکنید، طبقات شانعید، طبقات حنابلرتو علی جی انگر طبقات غیر مقله یک تا ی کمی کتاب کا پیوٹیش مانا کرکہاں سے دمتیاب ہے۔

الغدرب المعرت سے دما ہے کہ جس جمہور المی المن والجماعة كا حقيد و تعيب فريائے و آھن _



کتاب ''چوری کے متعلق قانونِ الٰہن اور قانونِ حنفی'' **پد ایک نظر**

تخفقة وَنُصَيِّي عَلَى وَشُولِهِ الْكُرِيْمِ. الثابغد .

(۱) سنتماب کا نام" قالون البی اور قانون حتی" دکھا ہے۔ بیانقائل قرقان حدیث سند بتایا ہے تیکے کنر اور اسلام باسنت اور بدھت تو وہ آ بہت یا صدیث وَکُن فرما کیں؟ یا ب انتابل ایسا ہے جیسے بھرین حدیث کہتے ہیں" قانون قرآن اور قانون حدیث" اور کہتے اس کہ جدیث قرآن کی صدور کوختم کرنے کے لئے بنائی گئی ہے۔

(*) ۔ آ ہے اس کے بعد ایک کماہ بھی لکھ رہے ہیں کہ فرمان نبوی اور صدیت بن ، قرقان البي الارقرافت عامم منت توق اور فياوي لدّ بريه ارتزاه رسالت اور الآه في نُناسَد، بيان نبوت اور فيآوي متاريد، في نون نبوت اور فيآه في غز نوب. قانون اسلام ور في بل علوية حديث و قانون اللي الدرقانون عنبلي، قانون اللي الدرقانون شرفعي، يَّا نون البي ااديَّة نون ﴿ كُلِّي؟ الرَّمْيمِ الكور عِيرَةِ قرآن وحديث بيِّن وكهادُ كدير سب '' مَا مِن سَجِي مِينِ اور صرف ققة حَقَى غلط ہے۔

ر ١٣٠ - أبياتُ أيت بريد الألهُ به خُبِر كَانُهُ هُبِرِ عُوا لَهُ بِهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ عَالِم جافان مد اللَّه (۱۰۴۰ ۴۰ انامن لوگوں نے اللہ کے تر کیب ہور تھے ہیں جوان کو وارن کا وور ستر بھائے جی جس کا اللہ نے تکم نیس ورا " (وحدی)

اس آیت کے نقل ہے آ ہے کا مقصد کیا ہے؟ کیا فقد اور اجتہا دواتی شرک بالله ہے ورسب جمبتدین خدا کے شریک ان الوو آیٹ ماحدیث کھیں جس میں فقہ اور ہمتہاد کوشرک کماشما ہواور جمتید ان کوشریک خدا کہا تما ہوں

(۴) ۔ آپ کے اور یہ بھائی اہل قرآن کتے جن کہ اصول حدیث ملم امار الرجال جمي اجتباد امراني دور شرك جن بداتات فردائمي كرهلم احام امرحال ادر اصول الديث ويورق تنسيلات سن جوت مات ووكس آيت إصديث كالمنمرات

(١٠) - اكن قرأت كالبيت قاري فياطرف كرنا مثلا بهم قاري مالهم كوفي كي قرأت ہِ قُرِ آن ہِ جارہے ہیں یا حدیث کی نہیں محدث کی طرف کرنا احتفا حدیث بخاری یا سنله الاته دی کی نسبت مجتبد کی طرف کرنا مثلاً فقه حکی دفقه شایعی اید نسبت شرک ہے تو

قران یاک کی عربے آیت یا سیح مرتع غیر معارض صدیث سے اس کا شرک وحرام ہونا ، گفر بهوی تابت کر ایا ب

- (۱) 💎 کما اعفرت ابو کمرعد فل "رهفرت فلانے ایستاری مشد کی مست ران ا كبركرفريال بالمحين اوردهم منه معاذ " منه احتصاد سر أبسي أجدكرا مينة اجتهاء أن سينت ا يُح طرف كَي مانتين؟ كيا به لؤك مثرك يظه؟
- (۷) کیا جس طرح بیودی اهمار و ربیان خود مسائل گفزائیا کرتے <u>تھ</u> کہ مدندا ے احکام بیں ای طرح بیستند کہ جبتد کی طرف اس سے جبتا دی مسئار کی نسبت کو آخر، الأك ومدانت وحرام كمينا وساجي فمل يؤمنين ^{الا}
- (٨) آب نے اپنی کتاب میں بھٹن احادیث کو تھی کہا ہے، بعض کومسن ، بمن کو سعیف را مانیعی خدا اور رمول کے توشیل بنائے راآ ہے بعض صدیقول آواجی رائے ہے سنج بعض وصن باضعیف که کر نرکز و قایت کے معداق تونییں بن شیع ؟
- (9) ۔ جن احادیث کو آپ نے میج کہا ہے، اگر کوئی تنعی ان ٹوضعیف کے یاجن احادیث کوآئیہ نے ضعیب کہائے ، ان کوکٹی میچ قرار دیے تو اس کوآئی واپے کا عجالف کین کرد بارس این تنگیج کا خانف قراروس میمید
- (۱۰) ۔ جس هرخ قرآن ياك كي قرأتوں جي متوائر اور شاذ كي تقتيم ہے، احاديث مِن عَجَ اورضعیف کی تقیم ہے، ای طرح فقہ میں مفنی مداور فیرمفنی یہ کی تقیم ہے۔ آ ب ے اسینہ رمالناش ۱۸ پرموال فرایا ہے کہ بیفریفرکون مرانجام دیں ہے؟ اورافیس ب منصب کس نے تفویق کیا ہے، حد حب غرب نے یا ان کے شاگردوں نے یا احماف ے ؟ موال مید ہے کہ آ ب نے جربعض احادیث رمول کو سمج مبعض کو ضعیف قرار ویا مید

معب آب و رمون و مبعضی ب تغریجی ایاست و سخامهٔ یو آب یک ان بزد سَ أَرْهِ وَلَ عَنْهُ الورَجِينَ عِلَامِ عِنْ أَعَدُ مِنْ الرَّاوَ فَي أَمِيرَ بِمَا أَيْ السَّمَاءِ بِمنصب أثيمي هذا ئے وہا تھا تو ان کے : موں اور تفویض دائی قریت تحر برفر ہا تھی۔

(١١) - متواتر قرأت كو فيهورُ كرش: قرأت بهمُل كرناه حجج احاديث كو پيوز كرمنيف ان اب با برحم الرنا الدفقه جي معتیٰ به سے مقابله جي غير مفتی به برحمل کرنا قرآن و م حصایت کے کارت کے واقع میں

و ۱۴) - منشرین قرآن متوبز قرأت کی بجائے شاد قرأت پر اهتراض کر کے شور کایا کرتے ہیں کہ ہم نے قرآن پر اعتراض کرویا (دیکھوا سوامی ویانٹد، باسٹر رام پیور، یاوری فاغرر کی کناجی) اور کہا کر نے جی کرمتو متر اور شاؤ کی تقلیم خدا نے نہیں کی بکیہ قام ہوں کی اپنی مناوٹ ہے ۔ اس کئے شاذ قر اُت پر عمر اُس ہے قرآ ان مجمی غلط ہے۔ اس کے جواب بل آیت ہیں کریں۔

(۱۳) - الل قرآن بعض ضعیف احادیث براستریش کرکے تمام سیجے احادیث کو بھی خلط قرار است بن اور کہنے میں کر بیٹی منعید صفور مطلق ساؤنیں فرایا۔ آپ برسی عدیت کاصیح ہونا اور ہرضعیف حدیث کاضعیف ہونا حضوباتک ہے جہت فرر کمیں تو ہم ائیں 2 ورنہ بیاری تعلیمیں خود فرمنی کے ہے ہیں۔ کیا آپ ہر مدیث کا سمج یا مضعف ہونا کلام رسول علیکھ سے ٹابٹ کریں گے!"

(۱۳) – آ ہے کا فرش تھا کہ بھلے آ ہے بیوری کی جائع باقع تھوی**یں** کرتے ، کمرآ ہے کو پوری کی حامع بانع تعریف تی نیس آتی داس لئے آپ کی کتاب المنساس اعتداء لمعا حصلوا کا نمونہ ہے ورنداب ہی تعریف لکھ وی محرکس امتی کے امول فقہ ہے چوری

نہ کرنا ورند آ سے کا باتھ کٹ جائے گا۔

(10) - آب نے تعماے کہ خمہ کاری کے آوائی بورا خذ التوٹی 20 دھ کے مؤلف کی اكتاب الافصاح عن معاني الصحاح المسائم المساكن على التدميرة المساق الوال محيح متعروب ہے تدکور ایس والجا معد نہ کورائی اور آب صاحب الاقصائی کو ایس جران ہے ۔ منصب تغویکش فرماه یا تھا کہ ہمارے جواتو کی قریقی کردیک وہ قابل امتاه ہوں ہے۔

(١٦) - آب کی آباب سے بعد جز کرانند شالی کے ہر جور کے ماتحد کاننے کا تھم ویا ہے (ص11) مُرفد تعالٰ کے ملاف رس پاک کیلئے فرماتے ہیں کسی درخت پر تھے ہ نے پھل کی چورق پر ماتھ ٹیس کا تا ہ نے گا (ص ۱۱) اہل قرآن کئے ہیں کہ بس حد کو ضائے وجب قرار دیا تھا، ہے کی نے باطل کردیا ہیں گئے رسدے قرآن کے طاف ہوئے کی جیسے باش ہے۔ کیونک ٹی خدا کا پیغام مکنیا؟ ہے ناک خدا کے طرکو باخر کری ہے۔

(٤٤) - قرآن كبنائ كرېر چورن ير . تمو كونا ديئ گاه اس كے خلاف هديث كبتي ے کہ باہر کے لئے ہوئے جانور جورک کرنے پر باتھو کیل کا مانے کا(ص ۲۹)

(١٨) - آب ئے لکھا ہے۔ درخت ہے آتا و کر پچل ساتھ کے دائے و تواہر آپھل ہو، منكنتره، بالنا وغيره يا نشك مثلًا باوام، نيسة، جانوزه وغيره تو بالتيونيس كانا عان كا

(مر۴۶) کیارقرآن کیامریج آیت کی کانفت نبیساز (١٩) - آ ب ایک حدیث نگفتا جن کرتمی ادبم ہے کم قبت کی چڑ جرائے پر اتو خیس کا نا جائے گا ، ووسری صدیت نصح جس کرانڈ ہے اور دی کی چورٹ پر ہاتھ کا ج بائے کا کیا کوئی اٹا الدرکوئی کی تین درہم ہے تھی تیست نہیں ہوتی ر

- (1) ۔ ایک جور بڑاروں بھیز ریکریاں اونٹ رکا ٹیں بھیسیں وہر میں نے اوے جوا اگر سے تیاداس بر صفیص اکیا تھئی چھٹی ہے؟
- (rr) ۔ سوچے را کھنے ہوکر چرا ہائے قوز کر لے مکے ان پر کوئی معرفیں۔قرآن کی کھنی صربے خالفت ہے۔
- د ۱۶۰۱ آپ نے مسیدہ پر جوحدیث معمرت عائلاً سے قبل فردنی ہے، بیدان انفاظ کے ساتھ این ابی ثیبہ میں ٹیس می - آپ کھل سٹن شد کے ساتھ ففل کو یں اور این الجا شیدہ باہب، جند اور حدیث نبرتم بیزم ما کیں -
- (PP) ۔ آپ نے تقب الرائے کا عوالہ دیا ہے۔ اس کے دیکھنے سے چاہ جا کہ دیشام کے تین شاگرد وکیج ماہن جرائ اور قبینی بن بیٹس اس مدیث کو مرسط روایت کرتے جی ۔ آپ نے یہ بات تقل شکر کے بدویائی کی ہے۔ یہ کوس؟
- (۱۳۳) العنور مَنْ اللَّهُ المحالِدُ أو تمام أمت الربات كَ تَاكُل هِ كَ حدوه تَبْهِات سے ساتھ وہائی جیں۔ جناب نے سب کے خارف تمام قانونوں کے خلاف آیک کی شرایت ویعاد کی ہے جس کا کوئی توسید تیں۔
- (۲۵) سنون کے پر حفرت مائنڈ کی حدیث ترزی سے تقل کی ہے اور امام ترزی کا اور امام ترزی کا کا در امام ترزی کا کا در دھنوں عود اللہ بن میں اور بھی مدری اور معنوں عہدا اللہ بن عمرہ بن العام ہے تھی بیان کی ہے اور بیاسنا کہ شہبات سے مدسا آماہ بوجا تی ہے آ تحضرت تعلق ہے تاریخ اس کے شارت تعلق ہے اور بیان سے موجی ہے (ترزی) بیرمبادت آ سیدورمیوں سے مجھوز سے کیا اور ایسمان فلمن اور امانہ فلہ بروزرن ٹیم ؟ کیا بیرجود یائی الی مدیث کی

ناامت ہے؟

(۲۲) ۔ حدیث عائش کے سرکزی راول اہام زیری بھی کی فرزے ان کہ فیرے ص ماتعاً كردو (ابن الى تنسيرج ٩/ص ٢٥٠) .

(عدد) - معرف من م فوع صريف كي بارك شر لكها ك القار تمار كي معلق نقریب میں فکھا ہے ضعیف اور جاری نے فرویا ہے محروبی ہے (ص 22) عالاتک تقریب میں سے مقبول (ص ۳۳۰)کیسی بردیائتی ہے۔

(۴۸) - گیران کی تائدان ہے مجی ہوتی ہے کہ حضرے مکی خود مدود کوشیمات ہے ماها قرمادين تفرأ كماب الأعاد)

(٢٩) - حفرت الوريرة كى مرفوع صديث كوضعيف قرار ويا بي- أب جوان احادیث کوضعیف قرار دے رہے ہیں میکنش تھیدا ہے، کیونکہ جن لوگوں ہے آ ب نے اربیم بن فنٹل کا ضعیف ہونا تھا ہے الن ش سے کئ سے بھی ند براہیم کا زرنہ ہے ہے الارتداس كي تعيف مون أن كوني ولل وور بنائي بيد

(۲۰۰) ۔ ہیمیری نے بھی جاریس تک کوئی سیج سندنظل ٹیس کی ، اس لیے آپ تو تعلید در تتسدين مبتلا زرره

(٣١) - سفر ما نمير كه اروا والغليق وتبذيب وتقريب وبيزان اباعتدان وتذكرة الحفاظ میں جن ر ویوں کوشنہ یا ضعیف کھا گہا ہے ان کی کوئی منجی سند یہ رجین نکے نہیں ملق تا کہا ان کابوں کی ماہ یو کسی رادی کوفت و ضعیف و نا محمین ہے یا تعلید؟

(٣٤) - تاريخ بغداد وغيره جن كمابول عن جاريمن تك ان اقوال كي سندين جي ان سندول کے انکثر راوی ایسے ہیں ہمن کا اُقد ہونا ان ہے سند کمایوں ہے بھی ٹابت کمیس تو فرهائية مختيق تمييرو؟ (٣٣) مومًا نا! تنهذيب النبذيب شن ثقة اور ضعيف تنام راوي تقريهاً ساز سع باره برار جن اور ميزان الاعتدال تكل صفيف راوي تُعَرِّيها محمياره بزار جن تو كل ثقته راوي حرف تغزیباً وَبِرُو بِزار بنجِ ، ان کا گذیبونا بھی تحق بے سندمتقول ہے۔ کیا اس بناہ پر حديثون كي منفق ومحت كاليتين ممكن سيد

(٣٣) - حفزت تمر بن عيداعزيز کي حديث توكفن مرسل لكھا ہے ليكن ہے كى حديث ے جہت تیں کیا کہ مرحل جمعت تیں۔

(۲۵) مولانا! آپ کو اتنا بھی محم تکل کدید مرسل معتقد ہے اور مرسل معتقد بالا تفاق جمت ہے (فحقیق الا کلام)

(٣٦) - بعض راديون كومحض بدريلل اور بيدمند غيرمعروف كهدرينا وليل ضعف کیے بنا؟ یہ کن مدیث کا قاعددے؟

(P2) - معترت مبداللہ بن عباس کو بھٹل میٹ نامرافلہ بن سے بے سند اور ہے ویس قول کی بناہ برضعیف مجدد یا ہے جبکہ آب سے نزویک شدا اور دسول کے سواسمی کا قول جمعت توں والمانی كواكب في شدا مان ليا ب إرواج

(٣٨) مولانا! آب على الرجمت بية مرف الدمرف ايك محيح مرزع فيرمعارض حدیث بی کروی کرصفور علی فی فی مایا ہو کرشہات سے مدسا قانین ہوتی۔

(mg) مولانا! آپ کوتو این محر کی جی خرنین - آپ کے شوکانی تصف بین که مد شبهات سے ساقط موجاتی ہے۔ اس کی دلیل عمد آپ کے بائی مبانی جناب تواب صد مق حسن خان صاحب حضرت الوجرية اور حضرت علي كي احاديث نقل كرتے جي اور لكحظ بيراكدا كاطرع حفرت عرافه وميدالله بن مسعود علي مند عد عابت سبداوداس

باب كى احاديث أيك دوسر ، كوقوت ويتى بين اورخود بخارى وسلم كى حديث لو محست واجمها احدًا بغير بينة لوجمتها مجى الى مئلكى مؤيد ب(الروضة النديين ال ص ١٧٠) الي احاديث جواليك دوسرى تقويت عاصل كرلين بإجماع أمت جب یں اور اجماع کوچھوڑئے والا یقیتاً دوزتی ہے۔ (وصن پشافق الرسول من بعد ها تبيين لنه الهندي ويتبنع غينر سبيل النمؤمنيين تولِّه ما تولِّي وتصله جهنَّم

(۴٠) حطرت عرف عقد عبدالله بن مسعود اعفرت معاذ " احفرت عقيد بن عامرة ے بھی مروی ہے۔ ان کی روایات ابن الی شیبہ عبدالرزاق، كتاب الآثار، مجمع الزوائدوغيره مين بين-

(m) آپ میں اگر علم ہے تو ایک ہی سحالی کا قول ابتد سمجے پیش فرما دیں کہ شہبات ے حدساقط نیں ہوتی۔

(٣٢) آپ نے بار باراپ رسالہ میں بیتا رادینے کی کوشش کی ہے کدائمہ عاد عند کے خلاف بیں لیکن اس بحث میں آیک امام بھی اشدار بعد میں سے آپ کے مربر بالتحدر كف والاجيس يحسى أيك امام كامنتى برتول بيش كروية -

(۳۲) ان احادیث کا شعف نه فیرمقلدوں نے اصول پر ثابت ہے نہ اہل سنت والجماعت کے اصول پر، کیونکہ جس قدر چروحات نقل کرتے ہیں وہ سب بے دلیل اور بے سند ہیں۔ بے دلیل بات کو مانتا ان کے غد جب میں شرک ہے اور بے سند بات کو مانتا ب وینی ہے، تو احادیث تو شعیف ثابت نه ہوئیں، البته مولوی صاحب مشرک اور ہے دین ثابت ہو گئے اور اہل سنت والجماعت کے مزدیک بید سنلہ اجما تی ہے اور ایسے

مسّله بين سند كاضعف معتر تبين _ أيك مثال عرض كرنا مون: و يكين أنماز تمام عبادات ے بری عبادت ہے اور وضونماز کے لئے فرض ہے اور وضو کا تعلق یاک یانی ہے ہے تحرياك ناياك ياني كالدارجس مديث يرب وه باتفاق محدثين شعيف ب: السمساء طهور لا يسجسه شئ الا ما غلب على ربحه او لونه او طعمه. تواب مديق حسن خال صاحب باني جماعت فيرمقلد من فرمات إلى: وقعد اتفق اهل الحديث عالمي ضعف هذه اازيادة. لكنه قد وقع الاجماع على مضمونها كما نقله ابن المنفر وابن الملقن في البدر العنير والمهدى في البحر فمن كان يقول بحجية الاجماع كان الدليل عندة على ما افادته تلك الزيادة هوالاجماع ومن كان لا يقول بحجية الاجماع كان هذا الاجماع مفيد لصحة تلك الزيادة لكونها قد صارت مما اجمع على معناها وتلقى بالقبول فالاستدلال بها لا بالاجماع (الروضة النديين الص ١٠٥) اكرآب ال اصول كو منیں مانتے تو ایسے دودھ اور یانی کوئس ولیل سے نایاک کبوئے جس کا رنگ، یو، مزا سب نجاست سے بدل کیا ہو۔

(۳۳) عدیث ش برک لیس علی خائن ولا منتهب ولا مختلس قطع (مكلوق)" غائن ، لو في والے ادرائيكے كا باتھ نبيل كا تا جائے گا۔"

کیا اس حدیث کا به مطلب ب کداملام می خیانت، اوث ماراورا مح ین کی تعلی چھٹی ہے۔

(٣٥) مولانا! خائن،منجب اور حكس كى جامع مانع تعريف فرما كم _ بي بهى بتاكي كرآب في يتريفات كس آيت يا حديث عاخذكى بي، كوتكدآب كاعلى اصول ے (ویکھتے! اپنارسالدایک وین اور جار فدہب ص١٦)

(٣٧) آپ کی کتاب سے بیمی معلوم ہوتا ہے کہ چوری دو تھم کی ہوتی ہے۔ ایک

وہ جس میں حدیے لینی باتھ کا تا جائے گا اور دوسری وہ جس میں حدثیں، لینی باتھ نیس كانا جاتا بكك كوئى اورتعويرلكتي ب-آب ان وونول قسمول كى جامع مانع تعريف تحرير فرمائیں اور وہ تعریف قر آن و حدیث ہے ہو، کسی اُستی سے سرقہ نہ ہواور نہ اپنی قیاس

- (PL) حرز القطاور شيركي جامع مانع تعريف قرآن وصديث كي حوالد عي حرفرما كس-
- (PA) عديث متواتر بنجج ،حسن ، مرسل ،ضعيف كي جامع مانع تعريف قر آن وحديث
- (٣٩) آپ كے ذہب ميں دليل صرف خدا اور رسول كا قول ہے ليكن آپ ايني تحریر میں ۵ نیمدا بی قیاس آرائیاں کرتے ہیں۔ کیا اس وقت آب اسے آپ کوخدا مجھتے ہیں یا رسول؟
- (۵۰) آپ این کتابوں میں ۳۰ فیصد اقوال الرجال لکھتے ہیں۔ کیا آپ ان کوخدا مجحة بن يارسول؟

جوابات سب باحواله بول، باسندمع توثيق روات بول...

ابھی سوالات کی دوسری قسط باقی ہے۔ چونکہ ہمیں یقین ہے کہ آ ہے چوری کی تقسیم اور برقتم کی تعریف حرز، لقط، شیر، خیانت اور حدیث سیح وضعیف کی جامع مانع تعریفات سے بالكل ناداقف بين، اس لئے نه حدیث کو بچھتے ہیں نه فقه کو۔ جب آپ به تعریفات بحوالہ آیات واحادیث لکتیجیس عراقو سوالات کی دوسری قسط بھی حاضر ہوگی الیکن:

نہ تینج اُٹھے گا نہ کوار ان سے یہ بازو میرے آزماتے ہوئے ہی

حضور علیہ الله پر جھوٹ کیوں؟ (کیامدیث بی کہتی ہے؟)

تَحْمَلُهُ وَنُعْلِي عَلَى وَمُوْلِهِ الْكُرِيْمِ. أَمَّابَقد :

سب مسمان و سنظ إلى كدافيان كے بعد سب اہم ركن تماز سند - آج كل مسلمان نماز سے بہت عائل إلى، چند مسلمان چوتماز پڑھنے إلى وہ فقد شق ك مطابق نماز پڑھنے ہيں، جا ذكہ ہوتا ہے كہ جب فقد تحرى موجود ہے تو فقد شق كى كيا ضرورت ر لقد تحرى كى جياد مرف قرآن اور حدیث سبب (فزل اللا ہراد من فقد اللي الحار) مؤرخ الل حدیث موال المام خان الديكي فوجردى نے اپنى كتاب ہندوستان شى الل حدیث كی على فعد مات منح به ميان كا ذكر كيا ہے۔ دومرى كتاب عرف الجادى من جنان جى الہادى لواب معد بن حسن خان سے صاحز ادہ كي مؤتف ہے۔

خمازے پہلے بیاک ٹاپاک چیزوں کا جانا خروری ہے۔ متی یاک، مورت کی شرم گاہ کی رطوبت بیاک، خون سواے جیش کے سب بیاک، شراب بیاک، خزیر کے علاوہ جرطال وحرام جافر کا بیٹناب پاک، کئے اور فٹزیر کا نعاب بیاک (زنل الما برورج الم من ۲۰۱۹) اب وقع کے لئے بیانی کی ضرورت ہے، بیانی شس کندگی (صرف انسان کا پیشاب، یا خاند یا خون میش) بر جائے جب تک محد کی کا رنگ، بو، مزہ تینوں یانی میں مُلاہر نہ ہوں یانی باک ہے (صلوۃ الرسول صفحۃ ۵) اگر کسی نے شراب کی تے کی تو وضو اُو شِنْ مِين اختلاف ہے۔ پيشاب كى قے كى تو وضواوث جائے گا (زن الا برارس ١٩) ، مردیا عورت کے چھونے اور تھے موکرشم گائیں طانے سے وضوفیل اُوقا۔عورت نے كنزى يالو با واشل كيا، مختك كلل آيا تو وشونيس ثو نا (ززل الا برارص ٢٠) ، مشت. زنى واجب ب(عرف الجادي ص ٢٠٤)، أكر عضو تضوص كوآع سے دباليا اور شہوت تم بونے ك بعد منی خارج ہوئی تو عنسل فرض قبیس (مزل الا برار ج الرص ٣٣) مردہ عورت ہے محبت کی توطنسل فرض نبیس (نزل الا برارص ۴۳) اگر عضو مخصوص اینی و برینس وافل کیا تو بغیر انزال کے منسل فرض میں (ترزل الا برار، صفحہ ۳۳) اب نماز بردہ لیں، گندے جم سے نماز بردھنا مناہ ہے محر نماز باطل تیں (بدورالابلدص ٣٨) جو كندے كيروں سے نماز يرد سے نماز مج ب اور جو (مرد يا عورت) بالكل عظ فماز روهيس تو نماز سي ب (عرف الجادي ص٢١) اب نماز باجماعت كمام كامتخاب كرليس المام في كازياده حق دار قارى، پعرعالم، پعر عرض برا، محراق عراق نب والا، محر زياده يرييز كار (زن الابرارج الص ٩٦) رافش، خارتی،معزی اورمقلد کے بیجے تماز جائز ب (زنل الابرارج الص عه) امام نے تماز يرْ حالى ، بعد يس يد جا كدام ب وضو تما يجنى تماجس برهسل فرض تماياس في مادك کوئی شرط یا رکن اوائیں کیا تو مقتد ہوں کی نماز ورست ہے، ووبارہ ند پر عیس اور اگر امام نے قماز پڑھانے کے بعد کہا کہ میں کافر ہوں تو بھی مقتدیوں کی فماز سیج ہے، وویارہ نہ یر حییں (نزل الا برارج الم ص۱۰۱) بال فقد حتی ساری فلط نبیں ،اس کے جو مسائل فقد نبوی یں قبول کر لئے گئے ہوں ان پراہل حدیث حضرات کو فقہ حقی مجھ کر نہ تکی فقہ محمد کر مل کری طروری ہوگیا ہے۔ چنانچرزل الابراد میں امامت کے ستی کے لئے پہلے پانچ ورجوں کے بعد لکھا ہے: چرا قصے اخلاق والا، چرخوبصورت چرے والا، چرزیادہ اللہ چرزیدہ والا، چرزیدہ والا، چرزیدہ وال چ سے والا، چراجیے حسب و نسب والا، چرا تھی جوئی والا، چرزیادہ اللہ و جاہ والا، چر صاف کیڑوں والا، چرج ہے سراور چونے قدم والا، چرمقیم مسافری، چرا واد قلامیں اگر غیرادتی کو آگے کردیا تو جراکی واکری کناوجیں۔

(فزل الما برارس فقوالني الخارج (م) ٩٦)



غیرمقلدین سے سند کی شخفیق کے ہارے میں سوالات

تَحْمَدُهُ وَتُصْلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكُويُمِ. أَمَّا بَعْد :

کرگیا ہے چھملی موالات بین ان کے جوابات مرف قر آن پاک یا عدیدی سیح سے مزایت فریا نیں چھرید۔

(۱).......فام مسلم * منح مسلم مؤرا برايام ابين ميرين التوفّ «الصاب تملّ قراسط جي: لسبه يسكنونوا يستسفلون عن الإستساد المعا وقعت المصنة فالوا مسقولنا وجداله يحتج فينظو الى اهل العبنة فيؤشف صليتهم وينظو الى اهل المعددة فلا يؤخف صليتهم. اورايام عبرالله بمن المبارك (۱۸ حرّما سنة جي: الاستناد عن المدين ولو لا الاستاد لقال من شاء ما شاء (منح مسلم خ)/ص1)

سوال یہ ہے کہ جب بہلی صدی عی سند و بن بھی تھی تو دہمری صدی عی کس وقی ہے اسے دین قرار دیا کیا ، کیا بھی صدی کے لوگ معاد اللہ ہے دین ای تھے؟ (ع)سند کی تحقیق فرض ہے یا سنت یا داجب یا مستحب، سرف ایک معربے آ ہے یا صبح صرت معدیث ویش فرما کیں جس ہے سند کے مطالبہ دھیق کا فرض مونا فارت وواور م بھی فرمائیں کہ پہلی صدی والے مسلمان اس آیت یا حدیث کو کیوں نہیں مانتے تھے؟ این سیرین اوراین مبارک نے بھی کوئی آیت یا حدیث ویش فیس کی جھن قماسی وجہ بیان

- (٣) فيرالقرون والول في اسية قياس بيداصول عايا كدابل بدعت ب حدیث ندلی جائے گر بعد والوں نے خصوصاً اسحاب صحاح سند نے این اصول کونہیں مان، مثلاً امام بخاري مندرجه ذيل راويون عن حديث لات إن:
 - (۱) ترین ذرالبمد انی جوم جند کے سردار تھے (تبذیب نے کام ۱۳۸۳، ۱۳۸۵)
 - (۲) ابومعاوریجی خبیث مرجعیه کے ریکس تھ (تبذیب ج ۱۳ص ۱۳۹)
 - (T) عبدالعزيز بن الى رواد غالى مرجلي سے تھ (تبذيب ع٢/ص٢٣٩)
 - (٣) اسحاق بن مويد حضرت على كاسخت دشمن قبا (تهذيب ج الس٢٣٦)
- (۵) حریز بن مثمان صح وشام حضرت علی پر ستر ستر مرتبه لعنت بھیتبا تھا اور اینے نديب كادائي تفا (تبذيب ن٢/ص ٢٢٠)
 - (١) جرمير بن عبدالحميد حضرت معاوية واعلانه كاليال ويتاتفا (تبذيب ج ١/ص ٢٤٤)
 - (٤) بنزين اسد حفرت عثمان كالخالف بدغيب قعا (تبذيب ج الص ٢٩٨)
- (٨) عبادين يعقوب عالى شيعه تعا، حضرت عثان كوگاليال ديتا تحا (تهذيب خ دام ١٠٥)
 - (9) عوف بن الى جميله قدرى رافضى شيطان تما (تهذيب ن ٨/ص ١٦٧)
- (۱۰) عبدالملك بن ائتن، زراه اور تمران مَنول بعاني رأفتني يتح اور ان مِن برا خبيث قول والاعبدالملك عي تحا (تبذيب ج١/ص٣٨٦،١٨٥)
 - بدوس راوی بطور مثال کلھے ہیں ، ورثہ بخاری مسلم میں اپنے راوی بہت ہیں۔

(۴) خیرالقرون کے خلاف جس طرح اہام بخاریؓ نے بہت سے اہل بدعت کی مدیث لی ہے، خرالقرون کا اصول تھا کہ اہل سنت سے حدید ہی لی جائے مگر امام بخار کی نے بہت سال منت بكدائمدال منت سويث تيس لى۔

(۵) جب اسناد دين بياتو تعليقات بخاري جن كي اسانيد تحدثين كونيس مليس يا تر قدى ك في الباب كى بعض سندين أثين لمين اس بارويس معاد الله امام بخارى اورامام تر ندى كو بي وين كها جائے گا يا جد والے سب محدثين كو كم علم كها جائے گا۔

(٧)....... آج کل جولوگ اپنی تقریر یا تحریر شن اهادیث چیش کرتے جی وہ ند سند میان كرت إن ندروات كى تويش بيان كرت إن الكوكراب للحف وال يا الى تقرير كرف والاوران كريد عن من والدسب بوين إلى والنيس؟

(٤) تقريب التهذيب، تهذيب التهذيب، خلاص، تذكرة التفاظ، ميزان الاعتدال وغيره كتب اساء الرجال جن برآج كل محفيذ حديث كالدارب بيرب ب سند اقوال کا مجموعہ ہیں اور اکثر جرمیں ہے دلیل بھی ہیں، ان کے لکھنے یا پڑھنے والوں کے دین کے بارہ میں کیا تھم ہے؟ مثلاً آ ٹھویں صدی کا ایک آ دمی بغیر سند کے دوسری صدی کے آدی کا قول نقل کرتا ہے۔

(٨) جب بهل صدى ك اصول حديث (كرسند كا مطالب ضروري تبيس) دوسرى صدى والول فينيس مانا (كرسندكودين قراروے ديا) اور دوسرى صدى والے اصول صدیث که ایل سنت کی حدیث تبول اور الل بدعت کی حدیث مردود بے کوسحاح ست والول تے تبیل مانا کر بہت سے اہل بدعت کی احادیث لے لیں اور بہت سے احمد اہل سنت كى احاديث ردكردين تو بعد والول كا بنايا ،وااصول حديث جو آج رائج باس كا

مانا کس آن مند یا حدیث منح کی مناه پر ضروری ہے اور پہلے واک اس آیت و صدیت پر گل سے کیون محروم دے۔

(9) ایک طرف تو یکها جاتا ہے کہ الاصناط عن الملیق و دسری طرف محدثین ہے میمی فریا تے بیس کرصحت سند محت سنن کوشنز مہیں ۔ کیا پیمنی اعاد بیٹ کے انکار کا چود درواز واتونہیں ۔

(۱۰) محدثین بیمی فرمائے ہیں کہ حدیث کی ستر کی نہ دیں گئی امت میں تکی پانٹول حاصل ہوتو وہ صدیدے بھی کی ہے (تدریب الراوی) اب سندکی کیا سیٹیٹ دہی؟ (۱۱) تبقدیب المجذب میں سحارۃ سند کے دااۃ کا ذکر ہے جمن کی تعداد تقریباً ساز ہے بارہ بڑار ہے اس میران الماعتدال "ضعیف راوجی کے لئے مرتب کی گئی ہے جس میں تعداد تقریباً ممیارہ بڑار ہے، کمیا سحاج سند کے دواۃ کا آگر بیا حال ہے تو باتی سمت حدیث کا کیا حال بوگا اور سندکی تحقیق و تحقید میں اقابات دادی کو تا ماصل ہے، باتی عیوب سندانگ دئے۔



ائمهاربعهاورخدمت دين



محترم القام جناب مولانا عصاء الرحن صاحب مرفله العاليا

السارم عليكم ورحمة أبغه وبركايتان

آمید ہے آپ فیریت ہے ہوں گے اگل ایک مول پر بھٹ ہوری تھی قائیں۔ نے وہ دھٹے اس بٹ پر قبلز کی کہ بھی ایک سوال ناسے کی تکلی تیں ہنوری کا آن ہے۔ احتفاد کے فرایعے متعد شکل میں اس کا او ب آپ دھزا سے نک ایکی ووں کو البنا ا برائے استفاد دارمان خدمت ہے۔

(1) - - .. حضور مليد العلوة والسلام كى وقات كے بحد ائد الرياب في ورسيان والے

ع ہے جس مسلمانوں کو مسلک تیاتی ؟

(٢) مديده التي توات إحداثها كالمرورة كيون محمور جوليا ال

(٤٠٠) ــــ ان كوائمه كا درجه كس ف تغويض كيا؟

(م) ۔۔ ، بن کو انکہ کھو نے کا پیمی منفر کیا ہے۔ النا کے بعد یہ Institution ایر اللہ

کیوں شمقہ بواء جا رکن این سے بہتے اور جدیش بھی بڑے جید مل وکر مرکز رہے ہیں۔

معيدابومعيد بأعيا

دَائزَ يَكُثرُ بِرِامْرِي: نَهِ يَيْشَنْ بِرَاحِيكِتْ (۱۱) دُنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ الْمِيكِتْ (۱۱)

- 🕯 🗕 🎜 بيار (۱) پيټور

سمرالله الرحمن الوحيمر

سرى إ والسلام عليكم ورحمة الله ويركانة السراج كرامي

معترت مولانا عطاء الرحمٰن صاحب وامت بركاتهم كى ومناطبت سے آب كا

گرائی نامہ باعث فرات افزائی ہوا۔ آپ نے چند موالات تحریر فرمائے ہیں، چانکہ مقصد کئن افہام وتعبیم ہے، اس لئے ضروری سمجھا کہ تقریب فیم کے لئے چند تمہیدی وقعی کیلیم طبی کردوں:

الل سنت والجماعت ك بان دلائل شرعيه جار بين:

(۱) ۔۔۔۔ الل الند والجماعة كائل بات ركل القاق ہے كروائل شربيد جاريں. ()
كتاب الله (ع) سنت رسول الله (٣) اجماع اور (٣) قياس شرق دان ہے يہلے وو
ولائل تشريعي (بنيادي) كملائة بين اور بعد كے دونول تفريعي اليمني ان ہے ي استنباط
كتا ہوئ ۔ يہلے دولول اصل جڑكى حقيت ركت جيل، ابعد والے اى جڑكى شائيس
بين: يَنْ يُنْهَا اللّهِ يَنْ آمَنُوا اَجَلِيْهُوا اللّهُ وَاَجَلِيْهُوا الوَّمُولَ وَاُولِيَ الْاَهُمِ جِنْكُمُ فَانَ اللّهِ وَالْوَلْمُولِ إِنْ تَحْتَمُ تَوْجِمُونَ بِاللّهِ وَالْمَدُولِ اِنْ تَحْتَمُ تَوْجِمُونَ بِاللّهِ وَالْمَدُولُ اِنْ اللّهِ وَالْمَدُولُ اِنْ تَحْتَمُ تَوْجُمُونَ بِاللّهِ وَالْمَدُولُ اللّهِ وَالْمَدُولُ اِنْ تَحْتَمُ تَوْجُمُونَ بِاللّهِ وَالْمَدُولُ اللّهِ وَالْمَدُولُ اللّهِ وَالْمَدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اِنْ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهُ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهُ وَالْمُدُولُ اللّهِ وَالْمُدُولُ اللّهُ وَالْمُدُولُ اللّهُ وَالْمُدُولُ اللّهُ وَالْمُدُولُولُ اللّهُ وَالْمُدُولُولُ اللّهُ وَالْمُولُ اللّهُ وَالْمُولُولُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَالْمُدُولُولُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَالْمُدُولُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّه

تر جمہ: الے دیمان والوائقم مانو الشاکا رسول کا اور اول اللہ رکا جو تہ میں ہے عواور۔ اگر جنگز پڑو تو اس کو رجوع کرو المرف اللہ کے اور رسول کے اگر بھین و کہتے ہو اللہ براہر آیا مت کے دن بر، یہ یات الجھی ہے اور بہت بہتر ہے اس کا انجام۔

اس آیت جی جارد رایاول کی طرف انثارہ ہے: آجلہ غوا اللّٰہ سے مراد قرآ کن ہے آجلہ توا انوٹشول سے مرادست ہے اور اُولی اُکامُو سے مراداہل استنباط مجتمدین میں (سورۃ النساء: ۸۳) ان مجتمدین میں اگر اختلاف اور تنازع نہ ہو بلکہ انقاق ،وجائے اے اہماع کہتے میں اور اگر ان میں اختلاف ہے تو ہرایک کے اجتماد کو قیاس شرعی کہتے ہیں۔

مثال: موجودہ قانون کے مطابق قرآن پاک کی حیثیت آئین اور متن قانون کی ے، سنت کی حیثیت الی ہے جیسے ملک کی قانون ساز آمبلی خود آ کمن کے بعض مجملات کی تغییراور شکلات کی تشریح کردی تو وی مسلّم رئتی ہے۔ اس کے خلاف کسی کی تعبیر و تشریح لائق احماد نیم ۔ مجتمد کی حیثیت شریعت ساز کی نہیں بلکہ ماہرشریعت کی ہوتی ہے، جے بائی کورٹ کے چیف جسٹس صاحب قانون سازنہیں ہوتے، بال ملک کے قانون ك النه البرسجين والتي بن كدان ك فيل جوآ كن ب عي مستهد و تي با قاعده P.L.D کتابوں میں محفوظ کر لئے جاتے ہیں اور ماتحت عدالتیں P.L.D کے ریزنس ے فیصل کھتی ہیں۔ای طرح ائتدار بعدے فیصلوں کو اُمت نے بطور نظیر کے محفوظ کرایا اور مفتی صاحبان قال ابوحنیفہ کے ریفرنس سے فتوی لکھتے ہیں اور اگر کوئی فیصلہ چیف جسٹس صاحبان کا فل ﷺ کرے تو اس کو سریم کورٹ کہا جاتا ہے اور اسلامی اصطلاح یں جب ائر اربد کافل کے فیصلہ دے دے تو اے اجماع اُمت کہا جاتا ہے۔ جس طرح ملک اینے قانون کے احترام میں سریم کورٹ کے فیصلوں کو نہ ماننے والوں کو باغی قرار دیتا ہے، آنخضرت ﷺ نے اجماعی فیعلوں سے انحاف کرنے والے کو شیطان اور دوزخی قرار دیا ہے (مکلوة) جس طرح بائی کورٹ کے فیصلوں میں کیڑے نكالنے والا تو بين عدالت كا مجرم ب، اى طرح حديث من فقد ك مخالف كوشيطان اور منافق قرارویا ب(ملکلوة)

الل سنت والجماعت كے بال ولاگل كى طرح مسائل كى بھى جارفتمييں ہيں: (٢) ---- الل النت واقعالة كن ويك جس طرح ولاگل جارفتم كے ہيں، اى طرح سائل بھى جارفتم كے ہيں، اى طرح سائل بھى جارفتم كے بيں: مسائل فرجيہ يا منعوص ہوں كے يا غير منعوص، جمر منعوص سائل منعارض ہوں كے يا محتل سمائل منعارض ہوں كے يا محتل

(*) ۔ جو مسائل منعوص بھی ہوں فیر متعادض بھی ہوں اور محکم بھی ہوں الم محکم بھی ہوں ان جی ند جہند کے لئے اجتہاد کی مخوائش نہ غیر چہند کے لئے تھید کی جیسے روزانہ پارٹی فہازی فرض جی ۔ کیبرتر کر بھد کے وقت دفع یدین سنت ہے، پانی وغیرہ شن کھی کر جائے تو اے نکال کر چینک دورو و چیز پاک ہے۔

 وغیرہ بیبوں ایسے جانوروں میں سے کوئی جانور پینے کی چیز میں اگر جائے تو وہ پاٹی ناپاک نہ ہوگا اور جولوگ خود اجتہاد کی الجیت نہ رکھتے تھے آنہوں نے ان کتاب وسنت سے لکھے ہوئے مسائل میں مجتبد کی تقلید کرلی اور مجتبد کی رینمائی میں کتاب وسنت سے تکلے ہوئے مسائل رعمل کرلیا۔

(ع) سائل مضوصه متعارضه كتب مديث عن بعض مبائل مضوى توجي كر متعارض ہیں۔ مثلاً رکوع جود کے وقت رفع یدین کرنا یا نہ کرنا اور ان احادیث کے بارے میں خود رسول اللہ علظ ہے کوئی فیصلہ منقول شہو کہ کون ی سیج ہے؟ کون می ضعیف یا کون ی ناع بے اور کون ی منسوخ؟ اختلاف کے وقت آنخضرت علیہ نے فرمایا کدمیری سنت اور میرے خلفائے راشدین کی سنت کو لازم پکڑتا۔ اس لئے سیدنا امام اعظم ابوصنیفہ ان احادیث برعمل کورائع قرار دیتے ہیں جن برآ یہ عظافہ کے بعد خلفاء راشدین اور آ کابر صحابه کامل جاری رہا ہو، کیونک بیسب سنت کے عاشق اور نبی یاک عظیم کی اداؤل پر مر منت والے تھے۔ ان متعارض احادیث میں سے جن بر خلفائ راشدين اوراكابرسحاية كالمل جارى شرباده كام سنت بركز شين يناني خلفاء ماشدين اوراكابرسحاب من سے كى الك كا بھى نماز من فيخ برانا ابت نبين ـ اى طرح ظفائے راشدین اور اکا برسحابہ میں ہے کی ایک ہے بھی ایک دفعہ بھی کیڑے ہوتے ہوئے نظر مراز برحتا ثابت ثبیں ، نہ ہی ان میں سے سینے پر ہاتھ باندھنا، ند بلندآ وازے آمین کہنا، ندرگوع کے وقت رفع یدین کرنا، ندی جلساسر مت کرنا، ن بی جراہم اللہ کی فلیفد داشد یا اکا برصحابے عابت ہے، ندبی کسی فلیفد داشد یا اکابر محابہ سے بیٹابت ہے کدانہوں نے قرمایا ہو کہ جوامام کے پیچھے فاتحد نہ پڑے اس کی نماز باطل اور بے کار ہے، ایسے متعارض مسائل میں مجتبد رائع نص پر عمل کرنا ہے اور مقلد بھی اس کی رہنمائی میں رائے تص پر بی عمل کرتا ہے۔

توت ضروری: جولوگ اجتهادادر قیاس کودلیل شری نیس مائنة ان کوکوئی حق تیس کرسی حدیث کوسی است ان کوکوئی حق تیس کرسی حدیث کوسی اضعیف و فیرو کند ، کیونک احادیث کی صحت وضعف کی بر کوئے اسول محدثین نے محض قیاس اور رائے سے بنائے ، کسی حدیث کا محج یا شعیف ہوتا قرآن وحدیث میں مصوص میں ۔
قرآن وحدیث میں مصوص میں ۔

الغرض اجتهاد وتھلید کا دائرہ کارتین ہی قتم کے مسائل ہیں: (۱) فیرمنصوص، (۲) منصوص متعارض، (۳) منصوص محتل۔ ان ہی مسائل کو اجتهادی مسائل کہا جا تا ہے، اب دویا تیمی عرض کی ہیں: دلائل کی فتسیس، مسائل کی فتسیس۔

(r)_____اوگوں کی قسمیں اجتہادی مسائل کے اعتبار ہے:

لوگول کی اس زمانه میں تین قشمیں ہیں:

(ن جيد:

جو محض چین آ مسئلہ میں خود اجتباد کی اہلیت رکھتا ہے، آپ چونکہ ایج کیشن معلق ہیں، اس لمے آپ کے ماحول کے موافق مثال عرض کرتا ہوں۔ حساب کے یکی قواعد ہوتے ہیں، جو اِن قواعد کا ماہر ہوائی کو حساب دان کہتے ہیں، اس حساب دان کے لئے کوئی مشکل ٹیمیں، آپ ہیں سوال اس کے سامنے رکھ دیں وہ فورا دیکھ لے گا کہ بیتی عوال اس کے سامنے رکھ دیں وہ فورا دیکھ لے گا کہ بیتی کا اور اِن قواعد کے مطابق جواب نیال کے گا اور اِن قواعد کے مطابق جواب نکال کے گا اور اِن قواعد کر مطابق اِن جواب نکال کے گا اور اِن جواب کو حساب کا بی جواب کہا جاتا ہے نہ کہ اِس کی ذاتی رائے۔ ای طرح ججہد اے کہتے ہیں جو قواعد شرعید کا ماہر ہو، اے آپ سومسائل دے دیں وہ فورا قواعد شرعید کے تحت واقل کر کے اِس کا حکم بتا دے گا اور وہ حکم شری ہوگا نہ کہ اس کی ذاتی رائے۔

(ب)عامی:

جواجتہاد کی خود اہلیت نیمیں رکھتا ،جس طرح جو مخفص خود حساب کے قواعد میں ماہر شہو و و حساب دان سے حساب کردالیتا ہے ، اس کے مطابق Payment کردیتا ہے ، تو اس نے بھی حساب کو بی مانا ، اسی پڑھل کیا ، البت ماہر حساب کی رہنمائی میں ۔ اسی طرح جو اجتہاد می شرکی پر مجہد کی رہنمائی میں عمل کرتا ہے وہ عرف میں اس مجہد کا مقلد کمانا تا ہے۔

(ق) ایک شخص ندخود حساب میں مہارت رکھتا ہے، ند ہی کسی حساب دان سے حساب دان سے حساب کروا تا ہے، یک مساب دان سے حساب کروا تا ہے، یک کا عامد واستعمال کرتا ہے مل کی جگر تقییم شروع کردیا۔ ضرب کے مل کی جگر تقییم شروع کر لیتا ہے، آتھ یم کے سوال میں آ میزش کا قاعد واستعمال کرتا ہے اور اپنی کے نبی اور بدنی پر نازاں ہے۔ ایسے ہی جو محض اجتہاد کی مسائل میں ندخو داجتہاد کی الجیت رکھے ند مجتبد کی مائے ، فقہا و آسے لا غذیب کہتے ہیں اور عرف عام میں اسے فیر مقلد کہا جاتا ہے۔ بیدخو درائی گرائی اور ہلا کت کا چیش فیمد ہے۔ رسول اقدس مائی فیم

قررات وراءاها المهنكات فهري منبع وضح مطاع واعجاب المراد بتقلمه و هيپر امنده هن (رويونيسيتي في شعب: ايمان) اروفرماه بلاكت كريث والي چيز زراتين میں اول خوبھی تش قش کی بیرای کی تی ہوا اوروسری قبل وحرص کی قرمانپرواری کی تی ا تیسری محینید کرنا مراکا ماتحان بے کس کے ور یانساے بیب مخت تر اور ماز حصانول ا للأوروب بيرين بالقروان كالنزو ورصر رزباروب والل بنظ كدفورة في متروصة فمن اور فرائ بکن ہے بتھمور ہے، بھارتی فرب کے کہ قب والامقرور ہوتا ہے اورا ہے تل کو ا بھا ہات سے اور روائیوں جوڑ ہے گئی اُسید ہوتی ان کے آبار کہ کی (مظامرات جَ هَارِسَ ١٨٨) يَهُ وَ لِي تَقِينَتُ اللَّهُ مِلْهِ مَرْتُونُونِ وَلَيْكُو كَانْكُم لَرْمَاوِرِينَ إِلَانَ سَتَكُنَّ آرہ ایکن ہے۔ ویکھوکہ وک بخل کی تابعداری کرتے ہیں ورخو بھی آئی کے چینے لگ ب من واعتلامات كل هاي واي نوايه أو الجصيص كرة يرضما ه الله الاستان وين شي تو يجي پزينيا في تروادر موام كومجهنز ۱۱، ان كونجي كا كول فائدونه وكا لا تشفيك امن وليه ﴾ يعني وإن بترز انسان و برين كي تفهيد تيجوز كر ريني خو در كي ميز ز كريث كي قر میں کو ریڈینج فالدہ دیسے دیتو کی توثیق آمیات ہور کیونٹ وووا فی مون آلار ایل رائے وہیں عد اور را ول کی مونی بیانتا ہے۔ او مخص اس کی خور رہنی کو عدائے است شدا اور رموز ہاگا مَثَرَكَبُوّا بِي الرَيْكُنِ فِي إِرْمَالِ الدَّمُنِيَّةِ فِي أَنْ وَسِنَهُ الإصواءَ مِنْ عِبُو العسم في المسلطة السناعة (إيقاري ف أحمراه) إبسيال في معافدة الن كي يروعونو قيامت (جای) کا انتظار کے جینے مورتی آج انتمان کے اکا دیکے جا کیں ایجالے سے کیا محمدت مکل فَيْطِ وَبِينَا بِهِ مِينَهِ عِلا مِن مِنانَى إِنْ مُكَ الْهِي أَوْ أَوْمَ مَرْجُ لَكُيْسٍ وَ بِرَهْرِف قيامت بريا بودائے کی فرون رسول کتا ہی الااد جب سے بدخوور فی ادر ترک تعلید ک ادام بھی ا

کہیں نیچری فرقہ بن گیا، کہیں مظرین حدیث، کہیں قادیائی۔ وین پر بربادی کی آندسیاں چل گئیں۔القد تعالی ان فتوں سے اپنے دین کی مفاظت فرما گیں۔

بعض ناامل غیر مقلدین الی جسارت کرتے میں کدائنہ جبتدین کی غلطیاں
کیڑتے میں اوراس گناد کا نام تحقیق رکھا ہوا ہے:

قیام حشر کیوں نہ ہو کہ اک کھیمزی سیخی کرے ہے صنور پلیل بنتاں توا کی

عالاتكه أتخضرت عَلِيْقَة جب بيت ليت تواس مِن أيك يبحي شرط قرمات: ان لا نسازع الاهو اهله (بخارى ج م ص ١٥٠٥) كديم جس فن ك ناابل دول اللي فن سے جھکڑانیں کریں گے۔ آج ترک تعلید نے توگوں کواپیا مادر بدر آ زاد کردیا ہے كە كوئى منكر حديث امام بخارى كى غلطيال ئكال رباہے، كوئى منكر فقد ابوطنيف يربرس ربا ب، كونى منكر صحابه الوبكرام مشق ستم كرويا ب اورسب كى اليك من آواز ب كديد كونى معصوم تھے؟ ہم کہتے ہیں معصوم تونمیں تھے گراہے اپنے فن کے ماہر ضرور تھے اور آپ اعتراض كرنے والے ندمعصوم بين نه ماہر، بلكه بحض اناڑى، جينے دَاكمْ اگر چەمعصوم نبين لیکن اے آپریشن کی اتھارٹی ہے،اب کوئی او ہار آپریشن شروع کردے تو دہ قانونی مجرم ہے، ڈرائیور آگر چہ معموم نیس محراس کے پاس مہارت کا لائسٹس ہے، لیکن M.P.A اگر انسنس ڈرائيونگ كانبين ركھتا، وواڻي بارات كي بس خود جلار با بنو وه قانوني جرم ہے۔ مقابلہ معصوم اور غیر معصوم کا نہیں ہے بلکہ اہل اور نااہل کا ہے۔ اسلامی حکومتوں على جمى ايسے ناابلوں كو دين كا يوست مارقم كرتے كى اجازت فيس ب- تاريخى كابول عن علاء اسلام كي تذكره عين جاري تتم كي كتابين ملتي بين: طبقات هنيه، طبقات مالكيه،

سوال: حضور مليه العبوّة والسلام كل مؤات كے جعد المَداَد مد ك درميان والے مرجع عن سلمانوں كاشكك كا تقالا

م کما ہے ان کے زویس تکھی اور مولانا عبد العمد کی بیٹاوری نے مشروب می**ٹ تا**ی کما ہے ال

کے مرد میں نکھی جن کا جوائے آج کئے نئیے مقید مراکبیں لکھ سکے۔

جواب: آپ نے سوال میں ائمدار بعد کا ذکر فربایا ہے جو ائمد مجتدین تھے۔اس سے
معلوم جوا کداس درمیانی زباند میں اجتہادی مسائل میں مسلمان کیا طریقہ اختیار کرتے
تھے۔ اجتہادی مسائل کون سے ہیں ان کی تنصیل گزشتہ اوراق میں آ چکی ہے۔ غیر
منصوص مسائل کا تھم تلاش کرنایا رفع تعارض یا رفع احتال۔

دورمصطفوی:

آ مخضرت ملك كي حيات مبادك من تمن طريق ته:

(۱) ذات الذي على جولوگ آپ ك قريب رہتے ہے ان كو جب كوئى نيا مئل مثل آ نادوآپ على سے يوجے ليتے:

> اے لقائے تو جواب ہر سوال حشکل از تو عل شود بے قبل و قال

ا کا آوٹی منز کار یورے و نجرو حدیث ادری دی منز کھی کا کا منہیں مائی فرمان خدا ہے۔

(1) وَافَا جَمَاءَ هَمَهُ مَرُ مَن الْاَمْسِ أَوَ الْمَعُوفِ افَاعُوْا بِهِ وَلَوْ رَدُّوْهُ اللَّي السَّمَولُ وَالْمَا وَاللَّمَ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ وَاللَّمَ اللَّهِ عَلَيْكُ (اللَّهِ عَلَيْكُ وَاللَّمَ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ الشَّيْطُانِ اللَّهِ قَلْيُلًا (اللَّهِ عَلَيْهُ (اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ الشَّيْطُانِ اللَّهِ عَلَيْكُ (اللهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ الشَّيْطُانِ اللَّهِ عَلَيْهُ (اللهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ السَّمْعُ اللَّهُ عَلَيْهُ (اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ (اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْكُ (اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْكُ (اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ (اللّهُ عَلَيْكُ اللّهُ عَلَيْكُ اللّهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلَيْكُ (اللّهُ عَلَيْكُ اللّهُ عَلَيْكُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْكُولُولُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ ا

ترجمہ اور جسان (سنافین) کے بائی کوئی میر (وین یادین) کے وائن کی باخوف کی کیچنی ہے قوامے (بلائفین) مشہور کردھتے ہیں اور اگر اس کو کینچ دیئے رمول نف (اور ترب اور) یا صاحبان امر تک قوتشیق کرتے ان میں سے جوتفیق کرتے والے ہیں میں کی اور اگر نہ ہوئیا فعل انفہ کا تم پر اور میں کی میرونی قوتم پیچے ہو لیتے شیطان کے تحرقموز ہے۔

اس آیت کریں سے صاف معنوم جواک سند اگر رسوبا پاک مفطیقہ سے

پر چھامکن ہوتو ان سے ہو جولی ، ورند اہل اشتباط (بھتدین) سے ہو چھ لیس ، برخدا کا

دسول اور یہ جیندین خدا کا خاص فعل اور رست ہیں۔ اگر ان سے کت جاؤ ہے تو تم

شیمان کے چھے جلوے ۔ آپ خلاقے نے یہ بھی فرون فیصلہ واحد انساد عملی
الشیمان میں افق عابیہ (مشتوح) ایک فیر بڑ ر ما بدسے زیادہ شیمان پر زیادہ بخت سے الشیمان میں افق عابیہ (مشتوح) ایک فیر بڑ ر ما بدسے زیادہ شیمان پر زیادہ بخت سے انتخاب کر تکار کر تک ہر

سے - انتخابا کا معنی بیر ہے کہ جو بائل زیمن کے بیٹھے چھپا ہوا ہے اس کو تکار کر تک ہر
کروبینا۔ اللہ تو و نے استہاد کے لاکا سے دو بائی آئی اسمجما ویں ، آیک تو یہ کہ جس طرح

بائی کے بغیر انسان کی زندگی تیس گزر کئی ، ای طرح فت کے بغیر اصال کی زندگی تبیس گزر

ا كالنه والا ب، اى طرح مجتد فقد كاخالق اور كفرن والانبيل بوتا بلك كتاب وست كى تبہے خدا اور رسول کے بی احکام کو تماش کر کے ٹکالیا ہے۔ اس کا اعلان ہوتا ہے البقياس مطهو لا عنبت (نورالانوار) قياس استلكم أنيس جانا بلكة تاش كرك بیان کیا جاتا ہے۔الغرض هنرت اقدس الله کے زمانہ میں ان مسائل کی دریافت کے تمن طريق تحية: ذات اقدى علي ، اجتهاد اورتعليد، آب علي كان وصال كربعد يبلا طريقة فتم ہوگيا،اب اجتمادي مسائل كے لئے دوي طريق باتى رو ك جميت كے لئے اجتباد، عامی کے لئے تقلید۔

 (٢) وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِينْفِرُوا كَآفَةً. فَلَوْلًا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمُ طَـَاتُفَةٌ لِيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْفِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجِعُواۤ الَّبِهِمُ لَعَلَّهُمْ يَحَدُّرُوْنَ (mr: 1/2 -: 171)

ترجمه: ادرايسے تونيي مسلمان كه كوچ كريس سارے ، سوكيوں نه نكا بر فرقد عي ان کا ایک حصد تا که فقیه بنے دین میں اور تا کہ خبر پینچادیں اپنی قوم کو جب لوٹ کر آئیں ان کی طرف تا کدوہ بچتے رہیں۔

آب عظا کے ان صحاب کی ماوری زبان او بی تھی ، ووقر آن وحدیث من کرہم ے بہت اچھا مطلب مجھ ماتے تھے۔ اللہ تعالی ان عربی دان سحابہ سے فرمارہ میں كه برقوم بن عديم ازكم ايك آوى فقيد بند معلوم بواك فقد صرف رجمه جان كانام مبين، وواليك خاص كبرائي كانام ب، جرعر بي دان بجي فقية نبين، چه جائيكه جر «خاني يا پشتو والاجبتدين جائراس آيت كريد عاف معلوم بواكه برقوم ش ايك يا چندايك فقید بنتے تھے، جب وہ اپنی قوم میں جاتے تو ساری قوم ای فقید کے فاوی پھل کرے

اس کی تعلیہ تحقق کرتی معلوم دوا کہ دور زبوت میں احق میں جینے محاب اجتباد کرتے تھے۔ بائی سب مسلمان مقلعہ تھے۔ اپنے اسپنا ملائے اور ایک این قوم کے جمتید کیا تھا یہ مختص اس کرتے تھے۔ بیری احلام و نیازش کولی میں مقلعہ ناتھ۔

رسانی الآن بھیجھ سک پاک ہا تصاباک تعداد ایک لاکھ سے داکھتی ہوسب کے سب عربی وال بھے، کر این الٹیم فروٹ جی کد ان جس سے فوق کا دینے والے حرف ۱۳۰ صحابہ بھے۔ جن شل سے حرف سائٹ محابہ بکٹرٹ فوق دینے بھے، تیرہ محابہ کمی تصارفوق وسیع بھے اور ایک مودر سحابہ نے ساری زندگی عمل ایک ایک پارو ووفوے دیئے۔ باتی سحابہ سے ایک فوق کی دینا بھی تابت تھی (املام الوقعین مٹانی) عن الا) افسوس کے ڈیٹر جالم فیر مقلد بھی جہتر میں میشا ہے

دور صديقي رضي الله عند:

* معترت محد تفطیح کے وصال کے بعد معترت صدیق آکیز طابعہ بینے امعترت عمر رضی الشاتھاتی عند نے امامت کبرٹی (خلافت) کو امامت معتری ہر قیاس فرماؤر س سیا بائے اس قیاس کو بائد فرینیا اور معترت ابو بحر رضی الشاتھائی عند کی بیات کر لی۔ آپ کی خلافت کا دستور میں تھا کہ سنلہ کتاب و سبت سے نہ مانا کو اجتہادہ راہتے ہے بتات (جاتی بیان العلم نے انجم میں ای معتمر فقات این سعد نے سامس ۱۳۱۷ وارقی اس ۵۸ کی آپ کے بیارے دورخلافت بھی کی مقرفتہ اور مشر تقلید غیر مقلد کا فشال تھی مان۔

وور فاروقی رضی الله عند:

آ ب کی خادت بھن صدیق آ کبڑ کی تکلید محقق میں منعلقہ ہوئی، کیوکر حضرت صدیق آکبڑنے ان کو : مزد فر ، دیا اور ساتھ کوئی وئیل آ بیت قر آئی یا حدیث نہوی وثی ش فرمائی، سب نے بلا مطالبہ دلیل اس کو مان لیا، یبی تغلید ہے۔ حضرت مرا نے اینا منشور جو قاضي شريح اور ديگر مجتهد قاضي صاحبان كو بيجها اس ميں جاروں دليلوں "ماب، سنت، اجماع، قیاس شرق کی پابندی لازی قرار دی (نسائی ج۴/ص۲۹۴، جامع بیان اهلم ع الراس ٦ ٥) اس منهر كي دور يس يحي يوري اسلامي ممثلت ميس سي قير مقلد كا نشان نبيس ملتاجونه جمتيد جون تقليد كرتاجو

دورعثاني رضي الله عنه:

آپ کی بیت خلافت تن اس شرط پر ہو گی تھی کہ دو کتاب وسنت کے بعد سة العرين كا اتباع كرين ك (شرع فقد اكبرص ٤٥) آب ك دور خلافت يس بحى مجتبدین اجتباد کرتے اور باقی ان کی تعلید ، فود آپ نے جمعہ کی اوّل اوْان شروع کرائی اوركوني آيت يا حديث اس كي وليل من ويش شفر ماني، يوري أمت في ما مطالبه وليل اس پرمل کیا۔اس دور میں بھی نہ کوئی منکر حدیث تھانہ منکر فقہ نہ منکر تقدیہ

دورمرتضوی رضی الله عنه:

جب عفرت عثمان كى بيت بوئى تو آپ نے فرمايا تھا: احكم بكتاب الله وسنة رسوله واجنهد بوابي (فقداكبرس 2) من كتاب وسنت اورائ اجتهادك موافق محم كرول گا۔ آپ كيسكارول فآوى كتب حديث مي درج بيں جن مين آپ نے صرف مسئلہ بتایا، کوئی دلیل میان تبین فرمائی اور لوگوں نے باا مطالبہ دلیل ان فقاوی برعمل کیا، اى كا نام تطليد ب- بال بعض أوادح في تطليد ب أخراف كيا- حضرت على في ان ي جہاوفر مایا۔

مسحاب رضى الغدعتيم

مُناءَ فِي القَامَ مِنا شَافِرِيا كَمَ شَيْرًا لِعِيمَ وَالْمُصَاحِدَاتِهُمْ فَقُو قُوا فَي الْبِيلَاد و صبار كيل و احد مقتلاي فاحية من اليو اسي (الرفعاف يسخي) مجرسي مختف شروب میں بھیل شنہ اور بر محالی اسینہ ایک ایک علاقے کا مقتری بن کیا۔ مدیث ک "تبایون مصنف مبدارداق، مصنف، این ال شید، تبذیب الآ دار طبری، ترت معانی و تعاریحی وی مشاب الآخار المام محرور کران الآخار ولی بیست میں سی به اور تا جمین کے ہڑور یا آباد کیا درٹ ہیں جن کے ساتھ وااکل ندکورٹیمیں یا آمیوں نے باا ڈکر دیمل یہ آنہوں صاور قربائے اور سید اوگوں سے باہ مطالب ولیٹن ان کھیل کیرے بیٹس اسلام بھی پہلے وق ے آین تک تواز ہے جارت ہے۔ ای سے امام فزانی رحمہ اللہ فرمائے ہیں: تقلیم تو اجہ رہ محالہ ہے بھی ٹابت ہے، کیونک وہ موام کو فتو ٹی دینے ادر عوام کو مانٹر نہیں دیتے ہتھے کرتم (خود مر لی دان زو) خود اجتماد کرد اور یہ بات ان کے ملماء اور عوام کے تواتر (منصفي خ 1/س ٢٨٥) ے محل مفرد ریاہت و کن گابت ہے۔

علامه آمدگُ:

علاسة مرئ قربات إلى الما الاجتماع فهو انته لم قول العامة لي زمس التصحابه و التابعين قبل حدوث المخالفين يستقدن المجتهدين ويتسعونهم في الاحكام التسرعية والعلماء منهم يبادرون الى اجامة سوالهم من غير اشارة الى فكرالدليل ولا ينهونهم عن ذالك فكان اجماعًا على جواز اتباع العامي للمجتهد مطلقاً (قوام الاذكام عام العمام)

شيخ ولسارين عبدالسالة:

من المستحدة المستحددة المستحد المستحدد المستحدات الاربعة بقلدون من الفق من العلماء من عبر نكير من احد يعتبر انكارة ولو كان ذلك باطلاً لانكروه (قراعدالاتكام ج٢/٣٥٥٥) شاه و في القدمة حداً :

شاده في الشاعا حيث قرائد على: وكيف بسنسكسر عنفا احدّ منع ال الاستنفتاه و الافعاء لم يزل بين المسلمين من عهد النبي عَنْكُ، ولا فرق بين ان يستفتى علما دائمًا او ان بستفتى عندًا حيثًا وذاك حينا (الاثماف)

امام الحريين:

المام المونين قريات بين المسندى فعسب البسه البسال التسعفيق ان مسكوى الشيساس لا يصغون من علماء الاحة و جملة الشريعة النهم معانلون سباهتون فيسما لبث استفاحة وقوائرًا لان معظم الشريعة صائدة عن الاجتهاد ولا تفى النصوص بعشر معشارها وهؤلاءٍ ملتحقون مع النوام (ثمة يب الاماد، أووى) المام مرتى رخر الله:

امام حرَّنَ قرباتُ فِينَ الصَفَهَاءُ مِن عصر رسولَ اللَّهُ مَنْكُ الْسُنَّةُ الَّي يومنا هنذا وصلتُ جرَّ استعملوا المقانيس في الفقه في جميع الاحكام في امرٍ دينهم قال واجمعوا ان نظير الحق حق ونظير الباطل باطل.

(جامع بيان العلم ج ١٠/س١٢)

خلاصدان عبادات کا بہ ہے کہ رسول اقدی ﷺ کے مبادک زبان ہے لے کر ائد ربیدنک جمتی بن با ذکر دلیل فؤے دیتے رہے اورعوام بلا مطالبہ ان برقمل کرتے رہے، ای برعجابیہ وتا بعین رضی الشعنیم کا اجماع ہے اور یہ علاء اور موام کے قرار ے حل مراریات وین عابت ہے، یورے اس موصد میں کی قابل اخبار مخص نے تعلید کا الکارٹیس کیا ہ آج جوالکار کرتے میں وہ متواتر ات کا اٹکار کر رہے ہیں۔

ربیان معفرت میداننه بن عبائ کا فتوی جان قعا (داری ج^{ار} س۵۹، جیعتی ے ۱۰/م ۱۵۵ عالم خالص مهم، جامع بیان العلم ج۴/م ۲۵) ملاؤس فرماتے ہیں ''عَن مکدِص • عملیہ ہے ملہ بیسب تول این میاں کی طرف ہی رہوے کرتے ہے (اعلام الموقعين غ المحرب) معترت عبدالله بن عبال كي بعد تابعين كي زياز بين ارم عطاه بن الی رہاری کی تقلید فخصی بیال ہوتی تقی۔ مصنف عبدالرزاق حدیث کی کتاب ش معزت اور البائل اور معنزت مطاء کے سینکڑ دل آبادی میں جن کے ساتھ ولیل کا ذکرنہیں۔ کچر اوم شافق بیول فتوی دیتے رہے مگر وہ معرتشریف لے مجے، حضرت سنیان بن میبنداور دیگر احزاف کے ذرایعہ یم ل هنین کا غلبہ ہوگیا۔

مدينة منورنا:

مدینه آدره جمی مهدمتحایه عمل جمنزت زیرین تابت کی تعلیر شخصی بوتی تعی. چنانچيالي مريدنے معرت مهر نفرين عبائ تک کولېدو پاتھا: لا نسانحنه بيقولک و نمادع قبولی دید (بخاری جا انس ۲۳۷) ہم هفرت زیدٌ کے مقابلہ می آب کی تقلید نہیں کریں مجے دور حضرت ذیہ جب فوق ایسے تو فروتے: انسمیا افول موانسی (جامع

بیاں انعلم بنی الرص ۵۸) میں اپنی رائے ہے لؤ کی ویٹا بیوں چھر کا بھین کے زبانہ میں يهان حضرت سعيد بن المسيب كافتوي جلمًا مّنا - ميدالرحمن بن زيد كا مان . مركز عمادا علاہ کے بعد تمام شہوں میں فقہ موالی کے پاس میل مئی متمام اہل کمہ کا فقیہ موال میں الی ر ماج غیر، تمام ایل نیمن کا طاواک، تمام اثل بماعه کا مجلی بن الی کثیر، تمام ایل کوفی کا ابرازیم تخبی، تمام جل بصرو کا حسن بصری، تئام جل شام کا تحول، تمام اہل فرامان کا عظاء الخراصاني أثمر مدينة منورو بمن قريق جوال سعير بن المسبيب بلا مقابليد فترتجا (اينام الموقعين علائص وم)

حرمين شريفين:

اسلامی فکومتوں وولت مماہیہ کے زبانہ بھی تمام اسلامی ممالک میں اُکٹر قامنی حنٰق تھے۔ان کی عکومت تغریباً پاٹٹ سو مال میں۔ بھر طبوتی حکمران ہوئے ، وہ مجی سب حنق ہتے ، پھرخوارز کیا حکمہ ان ہوئے ، ووجھی سے حنگ تھے ۔ پھرسلاطین آل عثان بھی حنگی ہے (درختار ج اُرص ۳۸) ان کی حکومت تقریباً ۱۳۸۶ ہے تک رعی۔ اس کے بعد آل سعود آ ہے جومنیل ہیں ۔ حرشت شایقین کی ناریخ میں مذکوئی نشرون غیر مقلوم را نہ کوئی قامني شان ڪيمعلي ڪاکيين ڏکرندان ڪاکوڏي منتي۔

کوز :

کوفہ بٹس دور سخالہ بیس معزبت عبداللہ بن مسعود کا فتوی بیلٹا تھا، ان کے وصال کے بعد حصرت علی کا، بھر تابعین میں اوم ایرا ٹیم کھٹی کار صاحب ورمخڈار فرمائے جیں حصرت عبداللہ بن مسعود کے فقہ کا بیج ہویا، ملقہ نے اس کوسینیا، ایراہیم کنی نے اس کی مولی قصل کو کانام صاویت وائے مجموعی کو انگ کیا، امام ابوشیفا نے بڑیا، امام

ا ہو بوسف ہے اس آئے کو توندھا، امام مجھ کے روٹی پکائی واپ ساری و ٹیا ہے روٹی کھاری ہے (ٹ البس ۲۳)

يصره:

بھر وہی بید سحاب میں حضرت آئی گی تھلید ہوتی تھی ، یکرتا بھین کے زمان ہیں مام اسٹ بھر کی کہ بچر جب مام زفر فقد حتی ہے کر چھچے تو سب مام ابوصلیفیا کے مقلد ہو گئے ۔

خلاصہ بدنگاہ کہ معزت میکھنے کے زمانہ یکن تین طریعے ہے: ڈریتے قدس منظی اجتماد تکلید رخفزت کے دصال کے بعد دوطر کتے ججتمہ کے لئے اجتماد اور فواح ے نئے تقلید باقی رہ مجھے۔ آخر میں بیڈلزارش کروں کا کدآپ کے وہمن میں بیاموال ائدار ہورے ورے بی جا مامی کوکر زال کیا۔ آن ای مک میں جو قرآن ہم سب ج هدرے ہیں اور شاہ ٹیر جو قرآن جائی معاصان شراقع ہم کرا رہے ہیں، یہ قاری عاصم کوٹی کی قرائت اور قاری حفص کوئی کی روازت ہے۔ آب کے ذہن میں بیاسواں کیوں پیدائیمیں ہوا کہ جن سات قاریوں کے ذریعہ سارق دنیا میں قرآن کیمیاہ ان ہے پہلے مسلماءُ مِن كا قرآ ل كون ما تعا- آب بي فره كيمي شير قرآ ن تو بي تعا، البنة اس كو قرأت عاسم نیس کہتے تھے۔ آپ کے ذہن میں رسوال کیوں ندا لھا کہ محاح ستا کے مدؤن ہونے سے پہلے مسمان تھی مسئک پر تھے۔ آپ یکی فرما تھی تھے کہ بیاحادیث مّ سب چیس ابسته ان کو بغاری کی حدیث ، ترخدی کی حدیث کوئی نبیس کبنر تھا۔ اس طرح فلتہ کیا ۔ وسنت کے تلی مساکل کا ذہم ہے، جب کن ۔ وسنت موجود تھی تو اس میں یہ سب نہتی مسائل ہمی موجود ہتے، ہاں ان سب مسائل کا نام فتدمنی بُرز تھا۔ آ فرآ پ کی آیت یا صریت ہے یہ جابت کر کئے جن کہ دواہ البخاری کہ کر حدیث رسول کی

نسبت بخاری کی طرف کرناج تزیبه قرآت عاصم کیدگر عاصم کی طرف تو نسبت جائز ہے دکیش فقد کی نسبت ایوطیف کی طرف جا گزشیں، جبکہ بینسست سمایہ سے ٹابت ہے۔ حطرت معافی ہے حضور علیقت کے ماستے عرض کیا اسعیصید سوایسی اوراسیٹ ایتجاد کی نسبت ایق طرف کی جھڑت صدیق آگرے جسسا والیسی فرمایا۔ جھڑت بھڑے آئی طرح کی کھیا: (جیتھسند ہو آیک حضرت بن عمامی اور مھڑت بھٹی نے واستے الی کو اور دائے قرفر فایا۔ تو اجتہادی مسائی کی نسبت جہتد کی طرف یاد کھے محاب میں اجماعاً سیلم متی رصور میکھیٹ نے میں حضرت معاف میں انکارند فرمایا بلدتھو یہ فرد کی۔ موال (۲): سیسے عرصے جدائر کی ضرور سے کوں محدوی بائی ؟

جواب۔ وین اسلام اللہ تعالیٰ کا آخری درکائل دیں ہے۔ اس کی حفاظت نبایت شروری تھی وٹا کہ قیامت تک سے لوگ اس پر آسانی سے عمل کرتھیں۔ حفاظت سے تین میں طریعے تھے۔ (۱) دبانی یاد ترزو میسے میں محفوظ کرنا۔ (۲) ان مسائل پر عمل شرور (۳) ان مسائل کوڑ تھیں کے ماٹھو کناب تھی مدوّن کرنا۔

" با (سخصاً بای بی خ ۱۱ س ۴۵ ما) ای خرن کیسے زمانہ میں احادیث کی مند کوئی تیس الوميمة تقوله جنائدا للهاب الأكراث بين المهرينك وموا بمسالون عن الاستاد فشمنا وفعلت العدمة فالواصموا البارجالكم فينظر المراهق انسمة فيؤجد حيدينهم ويعطو الي اهل المناعة للابؤ خلاحه بنهيد (محيح مسمرن العن) مط سند کے مارے میں اور کیس میں جہتا تھا ہے۔ لکنہ میدا ہو او تو س شرورے کا حراس موجو تَّ الْمَيْمُ لِلْكُرِي وَوَيِلِ مِنْ وَمِ مِينَاحِ كُرُوهِ الْأَرْزُولِي اللَّهِ مِنْ جُوكُا الْوَالِيدِيثُ تَقِولِ فِي جائے کی مآمر روق وال بدعت سے جو کا تو اس کی حدیث رو کی جائے کی اور دست کتند الارشوانة اختياركركما تو هنزت ويداند أن الهيادك بياني يجدل تكد فرماويا الإسسالا من البلدين له لا الاسبياد لقال من طباء ما شباء (من سمرة) أس به العلوم موا کے سند کی تحقیق واجب مالذات نہیں ، واجب باغیر ہے ، اور یہ وجوب ٹیم ٹی ٹیمیں مقل ے ور در سحالہ 17 بھی معافرات منز کی جمیل نے کرنے سے اب اس قرار یہ کمیں گئے۔ العمل بت مين بنه كه اين وقت غرورت محسون نه موفئ تقي و أيانكه الل مدعت كالقندن تم واب شرورت بوگیا۔

فقدة تعمقر آن باك اورصديت توازوسة بهت به اورها المحي نقد بالمرما المحي نقد بالمرما المحي نقد بالمس من رور و بسيم جيسا كركز شد مغور على وش كريك دول. و فضيف علينكم نغيم في في ويل ويك كالدان فروي تماد البُورُ في المحيفات المحفر دين كوفي لبنسة بحسن لها في ويسته في الحساف خوف راشدو على محاليات وريوهم كان ابن موفي لبنسة بحسن لها في في في في الحساف الأفضلي لها في محل آب منظمة كالايادوا وين معبولي ت ساتيرو الماسي والم موامن محاليا كي زندكي ل جهاد على أذر كم كل العراق العراق والتاريخ التناسية التناس المناس العرائل والتاريخ التناسية التناسية خوارج نے سر نکالا، کہیں روانفل بن مجنے، کسی طرف جیمیہ کا زور ہونے لگارکہیں معزلہ بیدا ہو مے۔ بدعت کا شدید آ مرهیاں مارون طرف سے مطے لیس تو مرورت محس ہوئی کہ نقہ اسکامی جس پرمسلہ لوں کا ستونز تعمل ہے جس کے اکثر مسائل مسلمانوں کو يادين ال فقاكوبا تلفده مرتب كرديا جائك أيك قرمول الدِّسُ مَنْ عَلَيْكُ كَامْوَارَ منت اس طرح محقوظ ہوجائے ، دوسرے منت علی بدعت کی آمیوش کا خطروش ما ساتے اور تی مت تک سے لوگوںا سے سامنے سنت کا تھمرا ہوا چرو واضح رہے۔ عدالتوں بل م معاملات عمل سنظ سنة مسائل أثه رب تقرران كفتي اورقانوني عل كاخرورت تھی۔الغرض اس ضرورت کا احساس شدید ہے شدیوٹر ہوتا جاریا تھا۔ تحرموج سٹنی کہ ه اکون آ دی موسکل ہے جس سکے فقی فرادی پر اتنا وطور مو کرجوام ، علاء ، فضاق ، سفاطین یں بکسان آبول عام مام ل ہوتا کہ گانون اسلامی میں طوائف کملو کی کی کیفیت پیدا ن ہوجائے۔ آتخفرت ﷺ کے بعد أمت کو اپیا کال احماد خففائے واشدین بے تھا کیکن وہ جہاد کی مشغوبیت کی ہود ہے فقہ کی کھن بڈوئن ند کرائے۔اب نہ سماطین ہر لوگول کوگل احتر دخیانه کمی قاضی کوابیا احتماد حاصل غیار آخر ده وقت آسکیا که جس و بین کی تحميل آتخترت علي كالمربع عرف المربع المولي وجس كوتكين خلفائ والشدين اورمحابيرضي الله عنیم سے وربیدنسیب مولی آس کی تدوین کا سیر دام اعظم ابیعتید کے سر باندها جائد الشاتعال كافر إن: و الحوقيل ملهم الى إلى مُلَكُ كُو كَتْمِر الو كان الدين عبشه النويا لتناوله رحل او رجال من اهل فارس او كمال فال ككالرتزين معدل اور معزت علی کی دعائے برکت کے مغلیر جب مختمیل علم ہے فارغ ہوئے تو آپ وایک خواب کے در بعید روین وین کی طرف متیب کم عمل جس کی تعبیر امام قن این

انہ این سے بیادی کہ بیٹنس کی یاک ملطق کی سنوں کو ای تفصیل سے مرتب کرے **کا** کہ پہلے کی حافیس کیں (اخبرات انصان ص ۴۰) چنانچ آپ نے معرت معایق ا کہؓ کے طرز پر 'مُدفِّن کی ایک کمپنی تفکیل دی جس جس انٹرافشت، امّر حدیث، امّر قیای، ایمه آغیبر، فضاۃ ادرائر آضوف کوشر یک کر مجے سنند کی مگروئ شروع کی اور یغیر تسى عكومت كى الفيائ بارولا كالكوف بزرة توفى مسائل كومرتب كراويا أمت ك تضاة محدثين بمنسرين ونقهاه وملاطين اورعوام كوائل فقدير جواع كاونعيب بواصديوب تک بدخته اسفای مکول کا قانون دیں۔ جب انگریز آیا تو بھی تمام عبادات اور بستل لا وفتر حتى على رك - يكى شهرت عام إدر بقائدة دوام قربان خداد على منيس جسف لل أنهات الرِّ تعسن وفرا كي تعلي تغيير ب- وي اسلام كادوم المام لحت منيف ب، اس كي تدوين سب سے بہنے آپ نے قربانی ای لئے بوری است میں ابوطیفہ کی وسل کنیت ہے شرت بالی ، آب ک فقہ کا معید ، جامعیت در دانگیریت می سب سے براد کرے، اس لنے آپ کا لغب انام اعظم قرار بایار برسب قدا کافغل ،حضور مُنظِّفًة کی چیش کوئی اور حضرت علي كي وعاكى بركت كاظهور ب، فانحمد لله على ذلك

سوال (٣): ان كوائد كا درج س في تفويض كيا؟

جواب: آپ مطالعہ قربا مجلے ہیں کہ دلائل شرعیہ جاد ہیں: ان علی ایک وٹیل اجماع اُمت بھی ہے، و نیا کے سب قادیوں کے امام سات قادی ہیں۔ ان کو بے درجہ اجماع اُمت نے مطافر مایا۔ اسحاب سحات سند کا محدث ہو، قرآن مدید علی منعوص نہیں محر بعد کے اہل فن محدثین نے ان کولیتا اوم مان لیاء ای طرح انتراد بعد کا امام ہونا اہلی فن کے اجماع سے ٹابت ہے۔ آپ قماز باجماعت اوا فرہائے موں سمے۔ آپ کو معلوم ہے امام کی تا بعداری کتی اہم ہے۔ آپ اچی مجد کے امام کو یہ عبد وخود تفویض کرتے ہیں گر جب وہ امام بن گیا تو اب آپ پر اس کی تا بعداری خدا ورسول کے عظم سے لازم ہوگئا۔ ای طرح ان کو امامت میرے اور آپ جیے دو چار آ دمیوں نے شیس تفویض کی، بلکہ اجماع اُمت ان کی امامت پر ہے اور اجماع اُمت کا منکر ہس کتاب وسنت دوزخی ہے۔

سوال (٣): ان كو ائد كبلاف كا بس منظر كيا تحا؟ ان ك إحد يه Institution كيون قتم بوا، حالانكدان س يهل اور بعد ص بحى بز بيد علات كرام بوع؟

جواب: تم اسوال كودرج ويل سوالات من معتم كر كت بين:

سوال (الف): ان كوائر كبلان كابس منظر كيا تفا؟

جواب: ان حضرات نے جب دین کو مرتب الاز مدون فرمایا اور لوگوں نے ان کی رہنمائی میں دین پر قمل کیا تو ای رہنمائی کی وجہ سے ووامام کہلائے۔ امام کے لفظ میں یہ بھی بات کو ظافت کرج مماز با جماعت میں امام بھی خدا کی ہی مباوت کرتا ہا اور مقتدی بھی خدا کی ہی عباوت کرتے ہیں گر امام کی تابعداری میں ، ای طرح بیامام جبتد بھی خدا ورسول کی ہی اطاعت کرتا ہے اور اس کے مقلدین بھی خدا اور رسول کی ہی اطاعت کرتا ہے اور اس کے مقلدین بھی خدا اور رسول کی ہی اطاعت کرتا ہے اور اس کے مقلدین بھی خدا اور رسول کی ہی اطاعت کرتا ہے اور اس کے مقلدین بھی خدا اور رسول کی ہی اطاعت کرتا ہے۔

سوال (ب): ان ائدار بدے بعدید Institution کیوں ٹتم ہوگیا؟ جواب: بیاتو ایک تاریخی حقیقت ہے کہ ائدار بدے بعد ایک بھی ایسا شخص نہیں ہوا جس کو اُمت نے ائد اربد کی طرح مجتبد مان لیا ہواور اس کی تقلید جاری رہی ہو۔ امام أمت نے بیٹرس کے بیٹرس کی کے اب جہتد اون کال شرق ہے کہ جس طرح قرآن پاک سے نیم جس طرح قرآن پاک سے نیم میرے کو اعلان قرار دیا اس طرح شرف سے بید مطان قرار دیا کہ ندان عمدی کے جد جہتد نیم میں ہوگا نہ ہی آمت اس کو کال علی کہتی ہے۔ ہاں بید کال عادی مغرور ہے۔ اللہ تعالیٰ کی عادت ہے کہ جب کی چیز کی ضرورت ہوتا وہ عطاقر مائے جی اور جب شرورت قدم جو جو بی کا عادت ہے کہ جب کی چیز کی ضرورت ہوتا وہ عطاقر مائے جی اور جب شرورت قدم جو جو بی آئی اللہ جس کی جیز کی ضرورت بیا ہوئے ایکن جب سے جمع جو دی آئی اس زمانہ جی گیسے کیے عاققہ والے لوگ بیدا ہوئے ایکن جب اطاویت میں جو بی ایکن جب اطاویت میں جو بی اور اپنے حافظہ والے لوگ اطافہ کی شروی کا در ایک حافظہ والے لوگ آئیت میں جو بیا ہوئے دیا ہوئے بدر ہوگئے۔ اپنے تھا بہ دین کی ٹروین کا در بدرا یا تو اللہ المدت میں جب سے افراد کو تعمیل اجتماد سے فوازا اور جب شرورت جو میں ہوگئی تو آئیت است دین کی ٹروین کا در بدرا یا تو اللہ تھا ہوئی کی جو بی ہوگئی تو آئیت

دو مربی وب مید که خیراغتر وان شان جمیته مین ایستیاد کرنے تھے اور موام تقلیدہ ہے۔ متواتر تعلی تھا۔ جب انگر اربعہ کے اصوال وفروٹ مدؤان دو کے اور شروارت قدویان پارگ ہوگئی مرادھر فیز انظرون کھی فہتر ہوگیا تر ابعض ناائل لوگوں کے بھی دونتیاد میں نا گف از السے کاکوششیں شروع کردیں جوامت کے لئے ٹھند بنے میکے فوامت نے سوچا کہ اس مقیم فتندے آمت کو پیانے کے لیے ضروری ہے کہ اب اجتماد کی اجازت کو ی فتم کردیا جائے۔ بنانچ آمت کے سامنے اس کی نظیر موجود تھی کد آنخفرت مین کے ہو ترآن یاک : زل ہونا شروع ہوا تو و ولفت قریش میں تھا لیکن دوسری عرب تو میں جن کیا لات القعدة البش بين لننف بني ان كے لئے عادت مشكل في قو آ تخفرت واللہ اللہ تعالى ے اوازے وامل کرلی کر فرب کی ساتوں الالت علی قرآن کی عاوت جاتز ہے۔ جِنْ نِيرَ أَسِيعَ فَكُفُّهُ اور طَالْبِ صديقي وظافيه قاروتي اور خذافت عناني عن بكر مراوك سات النات برقر آن بزیجے و ہے۔ دور مثانی میں بعض علاقوں سے بیر شکایت آئی کہ الل عرب آواد ہے کے انتقاف کو تھے تھے لیکن اہل جم اس سے تشدیش پڑنے کے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ مسلمانوں کے مات قرآن ہیں۔ تر دور مثانی میں سب محار کا اس براہمارع ہوگیا کداب صرف لفت قریش برقرة ن یاک بڑھ، جائے گا، باقی لغات بر قر آن یاک کی طاوت کی اجازت قتم کردی گیء کیزنکہ جن بوڈ مصلوگوں کی زبان مر للت فرنش نیس ج متن عملی وه نوت ، و میکه متصاور بنه برلغت یاد کریکتے تھے۔ اس کئے اب ای اجازت کی خردرت بھی ہاتی نہ رہی تھی۔ ہاں بیدا جازت اب آمت جس نہتے کا حب بن رق حمل والمفتعة الصد من القعل الرائح أمت والارت بهائے ك لئے اس اجازت کوختم کرنا بڑا اور بوری اُست نے اس فیصلہ کو تبول کیا۔ می صورت اب اجتباد شی ویش آ ل کرائدار بورک فقد عدن موت کے بعداب اجتباد کی شرورت یاتی شروق تھی، بال ناولوں کا اجتماد أصت کے لئے تنوین رہا تھا، اس لئے اس اجازت کوشتم کرویا حمیا اور تمام اُمت نے اس فیصلہ کو تبول کرلیا۔ بینا نیرا شدار بعد کے بعد جینے

جیا علی رکڈ رے دومتعلدی رہے، جیسا کرکنب طبقات سے پیتا جات ان جیا علی کا ذکر آپ کو یا طبقات حضیاتی سلے گا یا حیقات مالک میں یا طبقات شافعیہ شیں یا حیقات حنابلہ علی ۔ اس جورست باہرطبقات غیرمقلدین نامی کوئی کماپ کی تحدث نے تیمیں تکھی۔ جمعہ شیران جہاں بستۂ ایس سسلہ اند روباہ جہ وائم کر میکسل ایس سلسلہ را

وس فصلے کے جد جب اجتماد تتم ہوگیا تو اب مرف ایک تقلید کا بل راستہ ہاتی واکیا جو میلے ون سے اسلام جس مملا متواتر اور ضرور یامت وین کی طرح علاء اور وا پی سنم ہے۔ دے انداد ہوے پہلے جہتہ ہن ہ ان کے مسائل انداد ہوگی فنہ پی آ کے جن جوائر اربعہ نے قبول کی کے ان کا ثبوت ان سے شاذ ہے۔ اس کو بول سمجیں کہ آپ جس قرآن کی حمادت کر دہے ہیں اس قر اُست کا نام قاری عاصم کی قرأت على برحمر آب بدمجي ماسنط بإن كه هنرت عبدالله بن مسعودٌ، حضرت عزمُ حعرت على وغيرتم بھى يكى قرآن يزھنے تھے۔ تا بم لوگ مذاس كو قارى عمر كى قرآت کہتے میں نہ می قادی بنودی کی قرآت کہتے ہیں۔ بیسات قرآ تی سات قادیوں نے محارے توافر سے حاصل کیں اور این سات قاربوں کے بعد ان سے اُست نے توافر ے حامل کیں۔ اب کی محالی کے نام سے کوئی الی قرائت کمی کماب تھی خاور ہوجو ان ساب قاربوں ہے نہیں کی تو دہ اس لئے نہیں کی کدائں محافی ہے اس کا ثبوت متواتر سی تها اور قرآن معوار ہے۔ آج آپ بھی ان شاذ قرآتوں کی وجہ سے اس متواز قرة ن كوئيس چيوز ير معے ـ اي طرح شاہب اربعہ انتسار بعد ہے ثملاً وعلمہٰ متواتر ہيں ۽ سے بیدعلاء کے دواتونل جوائد کوتواڑ سے لے دوان بی ندا ہب میں شامل ہو گئے اور

جوالن فراہب شی تیں آئے وہ ان صحابہ سے جوت کے اعتبار سے شاؤ جیں۔ مقابعہ صحابہ اور ائمہ کانجیں بلکہ تو اثر دورشاؤ کا ہے۔



غيرمقلد ن كودعوت فكرفمل



اسلام عمل بہنے وان ہے: آج تھے، تھلید کا قمل متواتر اور سسل جاری ہے اور رہے گا ، کیونک موام کوالیہ ون بھی فتو کی ہو ہے ہے ٹیس دوکا کمیا ، نر می مفتی کوفتو کی دیے ے روکا کیا ہے اور اسلام نے نہ منتی رجملی ہوندی نگائی کہ وہ ہرفتوی میں دلیل تقسیلی الیان کرے اور شدی ساکن ہر ایندی نکائی میں ہے کہ ایس تک وو دلیل تفصیلی نہ مان ے کی فتوی برنمل مدکرے۔ یس ٹروخ سام ہے آن تھے مفتی مدحدن (محابية ما بجيمن و تن ما بعين واعمدار جدا غيرتهم) بارزكر وليل لنوي وسنة ريبة إورعوام بلا مطابہ دلیل عمل کرتے رہے ، ای عمل کا نام تقلیدے جس کا مجھی ا نکارٹیس کیا حمل۔ تعريف تنليد:

حعرات فیرمقلدین کے فیج تناسلام موما تا ثناه اللہ امرتسری تحریر فرماتے ہیں: تحلید کہتے میں کسی کا قبل تعنل آس مستنظمت میں مان لینا کہ میرولیل کے موافق علاوے کا ادراس ہے دلیل کی تحقیق نہ کری۔ (فیادی ٹاری نے کھی 1 ہے۔ ۴۸ مارہ ۴۸ مارہ ۴۸ م معرفت وليل:

مولانا موصوف تکھتے تیں: معرفت ویل اس کو کہتے ہیں کہ الیش کو لیورے طور

رٍ جاننا ، بالغانا دگر به جاننا کداک کا معارض کوئی نبیل اور به مشوع بعی نیس و قیره ایسا جاننا بحبشد کا خاصه سبته - (قباوی ثنا ئیدج الرص ۲۵۷)

نوٹ بدیاور ہے کہ تقلیم کا تعلق ایمٹھا وی اسمائل سے ہے اور صدیث معاق^ہ سے صاف پید چن ہے کہ اجتمادی مسائل وہ میں جو صراحثاً قرمین وسنت ہیں موجود نہ ہول ۔ ایسے سرائل عمل جمتد براجتما و واجب ہے اور مقعد پرتقلید واجب ہے۔

تشید کی تعریف ہے ہیجی معلوم ہوا کے تقنید کا مدار اگر جمیقہ زینا پر حسن کل ہے۔ اور ترک تھلید کا پہلا قدم اسمناف ہے بدگمائی اور دوسرا قدم ان پر بدنیائی ہے۔ ''تقنید کا تھکم :

الل النه والجملة كنزويك قوايك بن تتم ب كرابيته وي سائل بن جيته يرابيته وي سائل بن جيته يرابيتها و واجب ب اور عالى (غير جيته) برتقيد واجب ب البنة وور برطانيه بن جب غير- تلدي كافرته بيدا مواق التي حياس) مواة نامحه ايراتيم سيالكول في جي الل يرصاء قرائي- واجب ب (معياد التي حياس) مواة نامحه ايراتيم سيالكول في جي الل يرصاء قرائي- (تاريخ الجمد بين من ۱۳۵) كن بالب مواة ناوتو غزلوى في كيار (واؤه غزلوى من ۱۳۵) كن بالب مواة ناوتو غزلوى في كيار (واؤه غزلوى من من ۱۳۵) كن الرواة المواق غزلوى الله يومند وي المواق غزلوى الله يومند وي المواق غزلوى الله يم منزى لورهيم منزى الرحمة علاي المواق المواقق المواق المواق

بالاوان.

(٢) _ _ _ _ تضيير مطلل كرواجب بوف كاشوت آيت قرآ في يا حديث مجع صرع فير

معارض ہے ویں۔

(٣) د مناب المعين وتع تابعين الدواجب بي من كرت ت من ياداجب كتارك

اور گنهگار ہے؟

(٣)۔۔۔اگراس واجب پرفس کرتے تھے تاکس کی تعلید کرتے تھے؟

۵)____اس واجب کو اگر کوئی بدعت ادر حرام اور شرک کیے تو اس کی قرآن و حدیث

ڪيمو فق کيا مزاجي؟ درون درون درون درون

(۳)۔ رور جو تھیر مقلدین کہتے ہیں کہ تقلید کا لقظ انسان کے لئے قرآن وصدیت ہیں۔ آئیس آیا، بیانوروں اور کوں کے بینے کو کہتے ہیں دوہ واجب کہنے والوں کے لئے کیا۔ مزامقر رکر نے جزیا؟

(۷)۔۔۔۔ چونکہ زم بحث جمبتہ کی تقلید ہے اس لئے قرآن و مدیث ہے جمبتہ کی تعریف بیان کرس؟

(٨) ـ ـ ـ ـ ـ قرآن وحديث من جمتِد كي شراطًا كيا جير؟ اس كي وضاحت فرما كي ـ

(٩) ـــــ اساء الرجال كى كتابول بيعيمة ريب العبديب وظاهد تذكرة الحفاظ عريزان

الاعتدال وغيروهي بالمعند كادر جيروليل وكرك بعض راويون كومعترا وبعض كوقير

معتركم ب، ان اقوال كو مانة تقليد ب يائيس؟

(۱۰)۔۔۔۔ اصول حدیث کے قواعد و اسطاا عات محدثین نے محض اپنی رائے ہے ابنائے میں اقر آن وحدیث میں میدا صطلاحات وقواعد اس مفہوم میں کمیں استعمال نہیں ہوئے وان تواعد کو ونا تھید ہے یائیں؟

(18)۔۔۔۔مید عمین نے جن احادیث کو تیج یا ضعیف کہا دو بھی ایسیے اصولوں کی ہا ہ پر کبہ جن کا مخل رائے ہے وقر کمیا ان احادیث کو تحد ثین کے کہتے ہے تیج یا ضعیف بائنا محدثین کی تھلند ہے ۔شیس^{انا}

(۱۲)۔۔۔۔ آرا وکی ان پڑھ غیر مقلد ضد کرے کہ اصول صدیت کی ہر اصطلاح قرآن وصدیت میں ان معتول ہی موجود ہے تو وہ بالتر تیب ہر اصطلاح کا حوالہ قرآن پاک وحدیث مجمع مرتع غیر معارض ہے دکھادے۔

(۱۳) ۔۔۔۔ ہالم کوفرق مسئلہ بناتے وقت ہر ہرمسئلہ کی دلیل تا م بیان کرنا فرش ہے یا داجب ادراس کی دلیل قرآن پاک یاسیج صرت فیرمعادش حدیث سے چیش کریں۔ (۱۵۲)۔۔۔۔ حدیث کی مشبور کما ہے مصنف عبدالرزاق ادرمعنف این فی شیبہ شی سترہ بنرار سے زاکد محابہ و تابعین کے نگاوی درین جی جن بھی این محابہ و تابعین نے مسائل کے ساتھ شاآ بہت قرآ فی بیان کی ہے نہ حدیث نبول الکا تھا ۔ کیا دومحابہ و تابعین تا رک قرض دواجب بی ادر تمثمگار ہی بائیس؟

(۱۵) ۔۔۔۔ ان ستر و ہزار ہے زائد فقادئی جس سنٹھ ہے چینے والوں نے بھی مفتی صاحبان سے دیس کا مطالبہ ٹیس فر بایار ان کا بلا معاب دلیس ان مسائل کوشسیم کر لیٹا ہی تھلید ہے رکی بیرسب محاب وج بھین ولیس کا مطالبہ شرکرنے کی اجد سے فاحق س کافر؟ ولیل مدین مجھے ہے ہو۔

(۱۱)۔۔۔۔ انکہ اربعہ نے بڑاروں کا کھول مسائل توام کے ممل کے لئے موت کرواستے۔ کیا نہوں نے ہر برمسئلہ کے ساتھ وکل ٹام بھی قرآن و مدیرے ہے۔ مرجب الرواني وتعيم " الرولاك مرتب كروائ جيل قوان كمايون كايد ويا جائ ر

(ع) ---- اثر انتهار بعد سے تام اور مقعن ولائل مرتب نیس کردات نؤ به لاکون

مهاک ان کی طرف سے دعوت تعلید ہوئی مانہ؟

(۱۸) ۔۔۔۔ کیا آ ب کے نز ویک ہر برخمض جمتیہ سے وابعش مجتبد ہیں اور بعض غیر مجتبد

عَ قُرْ أَن مِنْ تُؤْرِدُونِ رَدِينَا جَالِمَا أَنْ مِنْ

لعلمه الدين يستبطونه منهم ادر فاسئلوا اهل اللكر ان كنتم لاتعلمون.

ك آسان آبات كمائخ ش؟

(١٩)اب غير جميد ودحال سے خال مين ، يا تو ناال موكر اول اوب سے احكام

استهاداكر يدكا تووه بعن حديث: ين يرقيامت (حاسة كار

آ تخضرت على غرب في الأوسياد الأحسر السي غيب الهياسة لمسانه في انتظير الساعة_(يقاري)

(۲۰) _ _ _ غير مجتملا حب شرائط اجتباد سنه كورا بوكر اجتباد كر سه كا تو يقيباً مصدمات

اس حدیث ٹریف کا ہوگا کہ آخری زبانہ میں ٹوگ جابلوں کو دینی چیٹوا بنا کمیں کے، وہ خود گمراہ بوں جے اور لوگوں کو تمراہ کرس ہے۔ (ہفاری)

(٢١) ____ البيخف كم إيم اجتهادات جمع عن شرائط جنهاد ند بول البيدي الماسول

کے جے کوئی ٹر زشرافکا نماز کے بغیر نایاک جسم اور نایاک کیڑوں کے ساتھ باوشو

٤ ياك جكر يرفراز يزهج تواس كي نماز بالحق يبجه

(۲۲)۔۔۔۔ دو نادلی محض اگر اپنے باعش اجتہاداں سے مقابلہ ائتساد ہو کا کرنے کھے

گاجن کا جمیّد ہونا دلیل شرقی (اجماع است) ہے ثابت ہے قرمان رمول ﷺ "ان لا

خنساؤع الاصو اعلیہ کرکوئی کائل اہل آن ہے چکڑا شکرے'' کے موافق کن دکھیرہ کا مرتکب ہوگا یائیس''

(۱۳) ۔ ۔ ۔ ایک طرف فیر مقلدین کیتے ہیں کہ تھید کا لفظ قرآن و مدیث جی انسانوں کے لئے کہیں استہال نہیں ہو، اورسری طرف تھید کا لفظ قرآن و مدیث جی انسانوں کے لئے کہیں استہال نہیں ہو، اورسری طرف تھید کو تشرک جہالت ، جرام، انسانوں کے لئے بیاد کام کس آیت یا حدیث جی اور تقدید کو بین کا بیٹ، اور تقدید کو رہے کا بیٹ، جانوں کا کام، جہالت ، بدھت ، حرام اور شرک کھنے والے بھی الجمدرے کہناتے ہیں۔ کہناتے ہیں۔ کہناتے ہیں۔ کہنا ہے تھی۔ کہنا ہے ہیں۔ کہنا ہے ہیں کہنا ہے ہیں۔ کہنا ہے ہیں کہنا ہے ہیں کہنا ہے ہیں کہنا ہے ہیں کہنا ہے کہ کہنا ہے ہیں۔ کہنا ہے کہ کہنا ہے کہ کہنا ہے کہنا ہے کہنا ہے کہنا ہے کہنا ہے کہنا ہے کہ کہنا ہے کہنا ہے کہنا ہے کہ کہنا ہے کہنا ہے کہ کہنا ہے کہ کہنا ہے کہ کہنا ہے کہ کہنا ہے کہنا ہے کہ کہ کہنا ہے کہ ک

(12) ۔۔۔۔ آتھلید کو واجب مائے کے بعد غیر مقلد بنا ترکب واجب اور حمناہ ہے یا ضمیر ہ

(۲۶)۔ ۔۔۔ تھلید واجاح والع من وغیرہ الفاظ ایم سی بیں یا ان بھی قر آن وحد یہ نے فرق بیان کیا ہے تو ووفرق کیا ہے؟

(عا)۔۔۔۔ بعض غیر مقلد ن کہا کرتے ہیں کے دجائ یادلیل ہے دی کو کہتے ہیں اور تشاید بدولیل میردی کو۔ بیفرق کس آ ہت یا حدیث علی سب

(14)۔۔۔۔ قرآن پاک علی ہے کہ کفاد اسپنے سیدعلم، ہے مقل اور ہے وین باپ دادول کی انباع کرتے تھے۔ کیا وہ ان کی انباع بادلین اور علی وجہ البعیرت کرتے بھے؟ (۲۹)۔۔۔۔ قرآن پاک نے سبہ وین و بیامتل، سبند کم، کالانعام باپ دادول کی انباع سے روکا ہے اور 'او انبسیع سبیسل میں انساب الی،' عمل خدوکی طرف ریورع کرنے والول کی انباع کا تھم ویا ہے۔ آپ انکہ جمتہ مین کم پہلے غمر عمل شارکرتے ہیں

والمراسعة عملك

﴿ وَهِ إِلَى مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مُعَامِرُ الْمُرَامُونِ فِي الطاهب مِنْ مُعِ فَرَوَقِ الْبِي مُكَرَ الولوالامر كي الطاهب كاعتم ويالب ما آب جمبته بن كوكن عن ثقاد كرست مين ?

(٣١) _ _ _ _ _ آرا آن ہا کے نے اہل کتاب میں دوختم کے علاء کا تذکر و کیا ہے ۔ آئیف دوجو امہارہ و بہان جیل جوجوام خور مجموعے ، گؤئی فروش ، کتا بیں اپنی طرف سے تھو کر غدا کے ذمہ رنگانے والے ، کتل باش، طال کوجوام و حرام کو طال کرنے والے ، دوسر سے رہا بین (انتہار) کتاب الحق کے کافظ و شارج ۔ آپ انتہ جہند میں قررہ واول میں جہر کرتے میں باکرہ و جاتی بیں جورکس آیت اورکس حدیث ہے ؟

(۳۴)۔۔۔۔ کفار مکداور احبار و رہبان خدا اور رمول کے صریح : فکام کا انگار کرتے تھے اور بھیند خدا اور رمول کے پوشید وقتم کو خاہر کرتا ہے۔ کمیا آپ کے نزو یک دوؤی برابر ہیں؟

(۴۳)۔۔۔۔ قرآن واک نے جور جاعنوں کو افعام یافتہ قرار دیا ہے، معزات ابنیاء کرام، صدیقین ، طبراء ، صافین اور ان کے رائے پر ملئے کا علم ویا ہے مگر انڈیس ٹوکوں نے اپنے موٹولوں کی تھید میں بعد والے میوں کی راوم میلئے ہے۔ انکارکر دیا ہے۔

(۱۳۳)۔۔۔۔ قرآن وجدیث عمرا اہمائ است کے وسنے کی تاکید ہے اور اس کے تارک کو دوزئی کیا ہے مگر لاخدیب لوگ اپنے واحظوں کی تنکید عمل خداو رسوں کے عظم سے انکار کرر ہے جیں۔

(ra)۔۔۔۔قرآن پاک اور اعلایت متواتر و ٹل فقہ کو ماننے کا حکم ہے تکر لاغے ہب

لوگ اینے واعظویٰ کی تشکید میں فضکو مائے ہے ازکار کر رہے ہیں۔

(٣٧). _ _ _ قرأن و هديث بن سنت كو ما ننځ كا نتم ہے كمر غير مقلدين عجادي شريف ، موطالهام محمر، كتاب الآلار ، ابن الى تيب عبدالر ، ال وغير وكتب مديث کا مینظروں احادیث برکل کرنے ہے انکار مرف اینے مولونوں کی تنکیر ایس مرد ہے بیل یا

(٣٤) ____ آگر کوئی کافر إنا مطالبه دلیل اسلام تول کر لے تو وہ مسلمان ہو جائے ج یا كافريق ريب كابا إلى كافريو عائبة كاء الكياسلي تشر، الك تقلوي كفر؟

(٣٨) آن کل محرّ مسلمان ایسے ہیں کہ معمانوں کے محمر پیدا ہوئے ، اسلام کی صدانت کے دلاک نبیں جانے مرف باب دادا کی تنتید میں سلمان ہیں۔ کیا ان کا المان درست ہے یا نہیں؟ اگر اصول ایمان میں تھلید جائز ہے تو فروع میں کیوں شرک ہے؟

(٣٩) ۔ ۔ ۔ ۔ جولوک بانج وقت بابندی کے ساتھ نماز پڑھتے ہیں ان جس ہے جمی سو فیصد لمازی آئ" ایسے بیں کہ ہر ہر بڑئی سمند کی تنعیلی ولیل تبیس جائے ، کیا ان کی ہ تعلیدنماز قبول ہو جاتی ہے پر نہیں؟ آگر کسی کوشک ہوتو ساری بن عت غیر مقلد بن ہے صرف دي تمازي مين البيرنال دي جو برجزي منله كاتنعيلي دليل بيان كريكي،؟ (۴۰)۔۔۔۔ آن کل موفیعد مائی صاحبان ایسے ہیں جوئے کربھی آئے ہیں کی کئے کے ہر ہر جز کی مسئلہ کی دلیل تفصیلی بیان نہیں کر کئتے یہ کی ان کا بچے ہو کمیا یانہیں؟ کما غیر مظارین اینے بورے فرقے سے صرف دی حاتی ایسے نکال سکتے ہیں جو بچ کے ہر ہر جزفُ مسئلہ کی دیس تنعیل بیان تریکیں؟ (٣١) آج كل سلمان قرآن ياك كي تلادت كرت بين ليكن ان كي اكثريت

قر آن پاک کے اعراب اور اوقاف کے ولاگ نیس جائق ، کیا ان کواس جوورت پر تواپ -

ملنا ہے یا محمدہ اور شرک میں طوٹ میں؟

﴿ ٣٠) آخضرت مُلَكِفًا كَمُ حَامِدٍ بِأَكَ فَي القداد اللَّهِ لا تُعَدِينَ وَالْحَيْدِ النَّا ثَلَ النَّوَى وَسِينَةِ وَاللَّهِ عَلَمْ طُورِ بِرَكْتِرِينَا بِهِم تَقْدِ

تبوت تفيية شخص:

(۳۳)۔۔۔۔ تعلیہ تھی ہی ہے کہ وین کے تمام مسائل ایک جمیدے نے کر جمل کر فے میاں نذیر حسین وہلوگ، موادنا اہراہیم سیالکو ٹی، موادنا واؤد فرانوی، مستری نور حسین گرجا تھی اس کومیارج فرماتے ہیں۔ (معیار الحق می امیر تاریخ الجحدید عرصی 180، واقد فرنوی منورہ عصر ارکان اصلام)

(۱۳۳) - --- عبدالقادر معهاردی، محد جونا کرهی این کوحرام ادر شرک فرمات جین-(سیامند البیمان من ۵ مطریق محمری من ۱۳ ۵۰) کیا بید دونوی متضاد تکم قرآن ادر حدیث عن موجود بین؟ دورآیات یا احادیث یکمیس -

(٣٥) ـــــ كوفى ايك على آيت قرآ في عيش فرما كي جس على تعليد تعلى كوشرك كمها هميا بور

(۳۱)۔۔۔۔ ایک قاصح مرزع غیرمعادش حدیث ڈیش فرما کیں جس بی تقلید تختی کو شرک کہا ممیا ہو۔

(24)۔۔۔۔ قرآ ل پاک چی تھم ہے کہ برقوم چی ہے کم از کم ایک فیض فقیہ ہے ، ہجر ایٹی قوم جس جا کر دین تکھائے۔ (انوب) آنخفرت نہجے کے زرنے جی عود ایک قوم می ایک می نظیم ع تنا در ساری قوم ای ایک سے قام سائل پر چر کوعل کرنی تنی دیں ۔ تنکیر فتی ہے۔

(۴۸)۔۔۔۔ آ تخضرت میں آیک طلق بھی ایک معام میں جینے ہے ہے۔ ای سے سائل دریافت کر کے مل کرتے ہتے۔ اس طرح برطاقہ بھی تعلید محفق باری تھی دیسے میں بھی معترت معاد ' کی۔

(٣٩)۔۔۔ معزت صدیق اکبڑ کی خاشت کا انعقاد اس طرب ہوا کہ معزت مڑنے امامت کبری کوامامت صفری پر قیاس فردیا ، سبانے آپ کے قیاس کو مان لیا اور معد پیّل اکبڑ کی بیعت کرلی کیا بیرها فت مجے ہوئی؟ قیاس کرنے والے اور قیاس کو مانے والوں کا کیا تھم ہے؟

(۵۰)۔۔۔۔هنرت مدین آگر جب فق کی دینے آؤ فرمایا کرتے تنے کہ بیافوی بی اپنے ایت و دائے ہے دے رہا ہوں۔ (جامع بیان العلم ج ۱/س ۵۰) سب لوگ ان کے نوکی کو جا مطالبہ دلیل شنیم کرتے تنے ، بی تعلید شخص ہے۔

(۵۱)۔۔۔۔ معنزت کڑ کو جب معنزت ابو بکر نے محص اپنی رائے سے خلیف نامز و کر دیا اور سب لوگوں نے صدیق اکبڑ کی تعدید تھن میں اس کو منظور کر لیا۔

رو صب و دول سے معدیں ، برس مید سی میں میں و حرر رہا۔ (۵۴)۔۔۔۔ حضرت عمر میمی اجتہاد و رائے سے نوالی دیش تھے۔ (میزان شعرانیا حالی ۴س)دہ بلاؤ کرولیل نوائی دیتے ، نواک باز مطالب دئیل ان نواز کی پر عمل کرتے ، یک تقلیر شخص ہے۔

(۵۳) حضرت مرا این مجتمد قاضع را کوملی علم میجید کددائ سے تو تل دور۔ (جائع بیان اعلم نع ۱/مر ۵۲) دو قاضی صاحبان بلاؤ کر ایش وی دائے سے نصلے صاور فریائے اور سیالوگ اور مطالبہ الیل ان کوشنیم کرتے ، یکی مُثلبہ تُفعی ہے کیوفک ملاقہ کے لئے اللہ اور کامنی ہوتا تھا۔

تنمن طلاق

حديث كو بهميايا -

(۵۵)...... جن مهاجرین والعداد سے جنول غیر مقلدین اس طلاف قرآن وحدیث اعظم کرتشیم ترکیزیہ سنوے کیاوان کے بارے اس قرآن وحدیث کا بیافیعد ہے! اجیس رکھنٹ قرار ویکے:

(24))...... دور فاروق دور عنائی دور مرآهن یک سمجد نوی بین شجه نوی بین جو توگ مین تراوش پزشت میتر بخوان خبر مقلدی بیاست نوی کے مخالف منظ دان کا کیا تا م ہے؟ (20) ان میتوان ریافون شر "هندے ما کشار میں مدینه مؤرد میں کو جو تون میں مدینہ مؤرد میں کا میں مدینہ ماتھ دہتی تھی اور بیا حدیث میں فیان فراد کر کرنا تھی کہتر کا اور قائمون شرک کے میں اور مادر قائمون اور کا کو ک

(۵۸)...... این قیمان زیانوں پین «حزیت جابزیگی بدیده موده نیس بی مقیم بنتے ہو بنوال فیرمقلدین آ نیوٹر اوس کی حدیث ہوئے تھے اود بدھ بہت دوایت کی کرتے نئے کہ شعب الاحود حدید شاتھا کم انہوں نے ثیش رکھت ڈ اوس کی بدھت کو دکھ

8. 17

تقليد:

(۵۹)..... معرت عمان جب طيف بين آس شرط يرب كديس كماب وسنت ك سات مطريق صديق" و قارون "كي مجي ما يعداري كرون كا والى كانام تعليد ب-

تقليد تتخصى:

(۱۰)...... جعنرت حتان " نے جعد کی نماز کے لئے ایک اذان زائد فرمائی جس کا ثبوت نہ قرآن میں ہے نہ حدیث میں مجمن رائے سے ہے۔ سب مہاجرین وانسار نے بلامطالبہ دلیل اس کوقبول فرمالیا اور ساری اسلاق و نیامیں اس پر قبل جاری ہو گیا۔ یمی تقلید شخصے ہے۔

(11)...... آ تخضرت ﷺ کے زمانہ میں شراب کے لئے کوئی عدمقرر نہ تھی۔ حضرت تعریّ نے ۸۰ کوڑے حدمقرر فرمادی اساری امت نے اس کو قبول کر لیا۔ بیمی تقلید شخصی ہے۔

(٦٢)....... آنخضرت عَلِيْقَةً نے خاص اُماز تر اور کا جارے مُں تکم ویا تھا کہ گھر میں پڑھا کرو۔ حضرت افرائے اس کے طلاف مجد میں پڑھنے کا تکم دیا ،سب امت نے اس کو قبول کرایا ، میں تھلید شخص ہے

اس ویوں رئیا، جبی طلید سی ہے (۱۳)....... آنخضرت ملطقے فرمایا کرتے تھے کہ عورتوں کو سجد میں آئے ہے نہ روکو محرصة عرال اور حضرت عائشائے روک ویا، آج ساری امت کا عمل ای پر ہے، بھی تھید شخص ہے۔

(١٨٧)...... آ تخضرت عظيف مصديق اكبراور فاروق اعظم الك زمانون من قرآن

یاک سات نفات بر برها جا تا تعار معرب ممان نے افست قریش کے مفاور مب قرار توں کومنوغ قرار و ہے دیا اور ماری امت نے ان کی تقییر میں واسھالیہ دلیل اس کوقبول المراماه بمي تفند فخفي ہے۔

و 10) حضرت على ك يهت ب في والى بلاة كر وليل كتب صديث على موجود جہ ۔ وگ ان پر وامطالہ دلیل کمل کریت تھے، ای کا نام آفلیر مخص ہے۔

(٩٦)..... مَدَمَرِد فِي حفرت مهدات بن مبئ كا نَوْنَ جِلْ قدر آب كا مُوْنُ و بنے کا معمول پر تھا کہ مقاب و مزت کے بعد حضرت اور کئر و تمرز کے بقوال پر نتو گا ہے ، ان ہے بھی مشہرنہ ملکہ تو اپنی رائے ہے نتو تی دیتے ۔ (داری ج اُنس ۵۹ مواکم ج اُنس ويهيج ع والإس ١١١٥، جامع بيان أحلم ج البحرية) مصنف عيدارزاق استنت این الی شعبہ میں مینکٹروں فرآوئی ہیں کے بلاؤ کر دکمل موجود میں اور مل مک بلامطالیہ ولین ان برعمل کرتے تھے، ای کا نام تھید تحص ہے۔

(٢٢) ، يدمنور و ش معرت زيد بن البيت كي الفيد تحقى بول حمى د ال ك فَقِي لَى: ينه كالمعمول تما كه فو ل كروت قرمات انسها اقول مو أي . وجامع بيان العلم نَّ ٢/ص ٥٨)سب الله لدينه بلامطاليه وليل ان فَوْزَل يرتمل كريّة . اي كانام نظيمه

(۱۸)..... و، تعلید تحقی این استے پہنتا ہے کہ معنزت این عمیائ کو صاف فرماد یا کہ زید کے خلاف ہم آ ہے کے قبل کو قبول نہیں کریں گے۔ (بخاری ج انہم ۲۳۷ء عمد 5 القاري اج م*انس 22م وقع* الباري ج م*انس ۲۸۳*۳)

(٩٤)..... دارالعلم كوف من حضرت عبدالله بن مسعودٌ كي تعليد من بوتي على بيت ب وله

مربعہ سے فتو ق دیتے تھے۔ (آرائی ص ۴۹۳) اور کو فرمائے تھے۔ الحوق فیسے ہو ای (جامع بیان العلم ۱/م ۵۸) آپ کے پینکڑوں فاکوی مستقد عبد الرزاق ، مستف این افی ٹیبر، کتاب فاع رفاع مجر، کتاب فاعارانی بوسف بھی بازا کرولیل خدکور ہیں۔ لوگ بلامطالبہ ولیل ان بیکس کرتے تھے۔ ای کا ناستھید چھنی ہے۔

(* 2) امام فرد الآخر مات بین تھیدتو اجماع سحاب عارت ہے کینکہ وہ عوام کو خوتی و بینے نے اور عوام کوخو و بین تم کیل و بینے نے کہ خود درید اجتما و تک مین تیس اور بیا بات ال کے عواد ور عوام کے قوائز سے شل متروریات و بن کے نابت ہے۔ (استعمال ج سام ۲۵ میں میں میں استعمال میں استعمال میں استعمال میں استعمال میں میں استعمال میں استعمال میں میں

(2) شاہ ولی الفَّهُ فرمائے میں میر محالی شیرول میں چیل مجے اور ایک ایک محانی ایک ایک علاقے کا مقتراء بن میار (الانصاف س) مولا برشر میں تقلیہ شخص مولی تحق

الغرض عهد محاب بين تقليد مخصى بلانكير جاري تمي ادرايك فير مقلد كانام بمي اس دور مين پيش نميل مياجا سكنا.

ندون : مسائل اجتهاد یر بمی ایک جمیّد بوتا ب جو خداد رسول کے تفی تھم کو ظاہر کرتا ہے، باقی مقلد جو خدا ورسوں کے اس بخی تھم پر جمیّد کی رہنمائی بھی قمل کرتے ہیں اور فیر مقلد اسے کہتے ہیں جو تہ خود اجتهاد کا اہل ہو، تہ جمیّد کی تقلید کرے جسے نماز برجماعت شمی ایک امام ہے اور باقی مقتدی اور جو نہ امام ہو، نہ القداء کرے بلکہ جماعت والول سے لڑے وہ فیرمقند ہے یا جسے ملک بھی ایک حاکم ہوتا ہے باقی دعانے اور فیرمقلد مثل بافی کے ہوتا ہے۔

الرام کا ڈرز میں متناہ وی اللہ فرمائے ہیں۔ تا بعین کے زمانے میں ایک ایک عالم کا ایک غرب قائم ہو کیا اور برشیروا سے الباء کے قاب برخمال کرتے تھے۔ (الاحاف ص ۱) پئی تفسیقتی ہے۔

(۲۴۰)...... دور تا بعیمن میں ترمین شریفین میں حضرت عطا وین انی رہاج و بھن میں خادیس بن کیبان مصریف بزیدین الی حبیب مثام میں نمول مراق میں میمون مین حمد ان وخراسان شروخهاک بن مزاتم ، اهر و شرحسن بصری ادر کوف پش اوم ایر اهیم قبلی کی تقلید جمنی ہوتی تھی۔ (منا آب موثق بنا ایس ۸ معرف طوم الدیدیشام ۱۹۸) ان مفتی صاممان کے بیننووں قرآوی مصنف عبدالرزاق مصنف این دلی شیبہ کمایہ اق تاریمی بلا ذکر ولیل موجود میں اور لوگ ان بر بلامغالب ولیل محل کرنے ہتے ، ای کا نام تھا۔ همخفی ہے۔

(۵۴) شاہ ولی اللہ '' فرمائے میں : جب سمایہ و پہیمین کے خدا ہے میں المُقَالِق يونا توبر عالم كونزوك إلى مكاسية شركات بب مخارقرادي تد (الانساف م ک) بھی تقلیہ شخعی ہے۔

(40) طلامة وي فريات بين تقليد براجاع بوين كي وكيل بدين كرمحانه و تابعین کے زیافہ میں عوام علاء سے مسائل ہو جینے اور وہ دلیل کا اشارو کئے بغیر مسئلہ ہتا ہے۔ درخوام پر مطالبہ ولیل اس برعمل کرتے۔ اس خریق پر کی ہے اس زمانہ میں ا تكارندك _ ثابت بواكداك زباندش الريرايزياع تعار(الإحكام بن ٣/١٥١) (۲ ہے)...... ﷺ فَنْ فَرَازُلُد بِن مِن مَلَامِ قَرِياً کے بین، زیانہ محالیہ سے سالے کر ڈالیب اد بو کی مّد دین تک تخلید جاری دی اور کمی نے اس بر انکارٹ کیا۔ (مقد انجید ص ۳۶)

(۷۷)..... شاه ولی الله " فرماتے ہیں" تقلید کا اٹکارکون کرسکتا ہے جبکہ زمانہ نبوت ے لے كرة ج كل فقى لينے وسين كاقمل جارى باوراس يس كوكى فرق ميس كا عاى سب سائل ایک سے ای ہو چھے یا کوئی کی ہے، کوئی کی ہے '۔ (عقد الجیدس ٣٩) (44)..... ثابت ہوا کہ پورے خیرالقرون میں آیک بھی مخص غیر مقلد نہ تھا۔ یا مجتبدین تنے یا مقلدین ۔ اگر ہمت ہے تو ایک ہی ایسے فخص کا نام پیش کروجونہ مجتبد ہو نەمقلدېلكەغىرمقلد بوپ

(29)..... امام بشر بن وليد فرمات جي كه بهم مكه ك محدث امام سفيان بن عيينه ك یاس تھے کہ ایک مشکل مسلہ پیش آیا۔ امام مفیان نے یو پھا کیا مجلس میں امام ابوحذیث ك ساتيول يس سے كوئى ہے؟ كہا كيا كديشرين _فرمايا: جواب دو_انبول في جواب دیا تو فرمایا کدفتها می بات کوشلیم کرنای دین می سلامتی ہے۔

(الجوابرالمضيّد ٢١/١١)

(٨٠).....امام الليث بن معدمصرى في يبلا عج الدين فرمايا فرمات بين كد س لوك مكد مكرمد من الوطيف" فقوى يوجد رب تق اور أو في رب تقد -(مناقب ذہبی ص۲۲)

(٨١)...... ائمدار بعد ين عسب على فديب امام الوطنيفة كالدون جوا_ال کواتنی مقبولیت نصیب ہوئی کدامام مفیان بن عیبینه محدث مکه مکر مدفر ماتے ہیں ابوحذیفہ کا فدب كوف علا اورا فاق مك يحيل كيا- (مناقب وبين م٠٠) نوت: امام مفيان كى بيدائش او حاور وفات ١٩٨ ه ب

(٨٢)..... امام الجرح والتحديل امام يكي بن معين كى پيدائش ١٥٨ ه ص ب، قرمايا

کرنے نے میں نے لوگوں کو فقہ حق پری گل کرتے پایا ہے۔ (افٹیرات الحمال میں) اگر آپ کی یاداشت سامت سال کی عمر سے مائی جائے تو آپ نے 170ھ سے لوگوں کو برچکہ فقہ حق برجمع بیائے جبکہ فیرالترون 170ھ تک ہے۔

(Ar)......انن النديم (۱۷۷۵) فرمات تين المصليم بدوا و به حوا شرقا و غريباً بعداً و فرماً تلوينه و مني الله عنه . (اهم سن من ۲۹۹) تنظل وترکي بشرق و مغرب ادور ونزو کيک برمکنام و ين آب کي کي تواين سن پنجار

(۸۴)...... دورتابعین میں لاکھوں کا مجمع کے برہوتا تھا۔ خلیفہ وقت سرکاری طور پر احلان كردانا كدامام عطاء اور امام مجابع كے علاوه كوئي فخص فقو كاندو __ (شذرات الذہب ج ا/ ۱۳۸۸ }ان ودنوں حضرات کے ہزاروں فآونی کتب مدیث میں باوڈ کروسل موجود ہیں اورلوگ باد مطالبہ دلیل ان برعمل کرتے ہے ، (یکی قتلیہ تحقی ہے) (٨٥)...... علامہ فائن خلاول (٨٠٨هـ) تحرير قرباتے ہيں: فاہم احد بن حتملُ (الهويد) كے بعد قبام شرول بن تقليد كا دائر واخي جار ندايب جي محمور وميرود ہوگيا اور ووسرے غراب کے مقلد سن سنا مجھے اور مینی سے اسکاف طرق و غراب کا دروازه بند بوكيا اوراهتهادي راويجي مسدود بوكي كيونك اكر اجتهاد كا دروازه جريمي كملا ربتا قو سخت خطره تما كه ماالل بحي اجتها د كا دعويّ كرينيس اور مجتهد مونيه كا دم تجرير. اس کے لوگوں نے انہی جہتدین میں ہے کی گفتید کو جائز رکھا بلکہ یہاں تک رواز ر کھا کہ ایک کی تقلید اختیار کر کے بحرکس دوسرے امام کی تقلید کی جائے اور بال وین کو ایک تھیل منایا جائے۔ اب فقد کا ماحسل میں ہے کہ بیان کرنے کو فو سب آ تر کے غرابب بیان سے جا کیم بیکن برسٹلدائڈ ارمرف ایک ہی آمام کی کرے اور هیج امول ادر اتسال سند کا چرا چرا فاظ دی کے اور اب اجتہادی رہ والی یند ہوئی کر اگر ہے کہ کی الا انتخاد کا دوجوئی سائے کا انتخاد کی دوجوئی اس کے دوجوئی کو اس سے منا لک اسلام پر بیش اب انتخاب ندا ہو ہو ہو ہے کہ سار سے مما لک اسلام پر بیش اب انتخاب ندا ہو ہو ہو ہوئی منا اور بادیجم بی بخترت بھلے ہوئے ہیں وال کی کوئی کی دید دراصل ہے ہوئی کہ اول تو اس فریس ہوئی کے دار الماسلام عراق بی بھی کو قد رہ متبولیت عار تھیب ہوئی اس فریس ہوئی ہے دار الماسلام عراق بی بھی جس کی درہ متبولیت عار تھیب ہوئی بھی بھی اور انتخابی کے مباسدی محبت میں رہ کر تا ایفات کے بھی بھی تو گئی دور انتخابی کو درجوئی انتخر بن سائل میں انتخاب کے ساتھ ان کے زیروست مناظرے دے اور انتخابی سائل میں انتخاب کے درجوئی انتخر بن سائل میں انتخاب کے درجوئی کو درخوئی دوست مناظرے درجوئی کے درجوئی انتخر بن سائل میں ان کی تعدید اور درخوئی دوست مناظرے درجوئی کوئی درجوئی کھی دوست میں کوئی کے درجوئی کھی درجوئی کھی

(مقدمه این خلودن می ۳۶۹)

(۸۷)......شاہ ولی القد محدث وہاؤیؒ فرماتے ہیں: اس میں شک نہیں کہ ان جار خاہب کی تعلید کے جائز ہونے پراب تک امت کا اہماج ہے اس کے کہ بیدھ ڈن ہوکر تحریری صورت میں موجود ہے۔ (ج-اللہ الباللہ ج العمی ۱۵۳)

(۸۷)...... نیز فرمات بین: ان جارون خامب کی تعلید کرنا مواد مظم کی ا تباع ب(جس کا تعم خود رسول الشریک نے دیا) اور ان سے باہر انکناسوا واسمنعم سے یا ہر تکانا ب(ایسے اوگوں کر تی اکرم میک نے دوز قی فرمایا ہے) (مقد ولیمید ص سے)

(۸۸)..... طامدا بن نجيم فرماتے ہيں: شُخ ابن بينامٌ نے تحرير اللصول بيں مراحت فرمانی ہے کداس پر ابواع مشعقہ ہو چکا ہے کہ فراہب ادبو کے فالف کسی فدہب برخمل جائز تین کیونگ یہ جاروں ندا ہب مدون ہو کر ساری دنیا میں پیل بچھے ہیں اور ان کے مقلد من بکترے ہیں۔ (الاشاہ ہے الاشاہ)

(۸۹)...... ملاحد منا : ی شرح جامع الصغیر جی فرماتے بین آج کل انکر اربعہ کے علاوہ کمی امام کی تقاید جائز تیں انداقاتی کے لیسلے میں اندائش کے فتو سے میں ۔ (نمبالیة الراؤس ۲۳)

(۹۰)...... مونسہ السيد طبطا وي شرح ورفقار على فرمات بين: انگر اربعه كي تقليد ہے۔ باہر نُطنے والما جدمی اور دوزنی ہے۔

(۱۱)...... شارح می سلم علاسنودی فرماتے ہیں کدامام افر مین نے انتدار بدیں ہے کسی ایک امام کی تعلیہ شخص کرنے پر اہمائ عل کیا ہے۔ (روضت الطالبین)

(۹۴)...... تشنید فخعی پر است کا اجهامی مونا ایک ایک دستی تشیقت ہے کہ اسلام میں جیار می قسم کی کرائیں ہیں، ملبقات صغید ملبقات مالئید، طبقات شافسید، طبقات معاجد المبقات فیرمقلدین کا کی کوئی کیا ہے، سلام عمل ٹیس تسمی کی۔

(۹۳)..... علد مدعبدالقادر قرخی (۱۹۳۱) نے طبقات حند و وجلدوں جس تحریر فرمائی جس میں ساتو یں صد کا تک دو بزار تین مو پہلی (۴۳۵۰) سٹ تیر صند کا ذکر ہے جس میں محدثین ، فقہا ، فضالاء مجاہرین، سلاھین اور ادلیاء اشد شاقل جیں۔ فیم مقلدین کوئی سمتاب طبقات فیر مقلدین نامی وکھا کمی جس میں ساتویں صدی تک سرف سات اق مشہور فیم مقددین کا ذکر ہو۔

(٩٣)...... آپ سکامام کسی دیوبندی او بریون مالم سے مسئل نبش نا چھتے بلک غیر مقلد اجان سے مسئلہ ہو چھتے ہیں ایر تقلیر شخصی کی حتم ہے یا غیر شخصی کی ا (90)...... آب كا اینا ته اصول حدیث نه اصول فقد _ اب احزاف كے مقابله ميں خاص شوافع كاصول كو ماننا تقليد شخصى ب يانبين؟

(٩٦).....ا انتاف كى جمع كردوكت حديث كو مائة عد الكاركرنا اور شوافع كى جمع كرده احاديث كوماننا تقليد خنسي كالرّب ماغير خنس كا؟

(ع٩).....فيب حنى من أكثر ساكل مين فتوى امام اعلم م يحقل يرب بعض میں صاحبین کے قول پر ابعض میں زفر" وحسن کے قول پر۔ اس کو تقلید مطلق کہا جائے كا ما تقليد تخصي؟

(٩٨).....احاديث كى صحت وضعف كے بارے ميں اينے فرقد كے متعصب مولوى پرامتا دکرنا اور حنی محدثین پرامتا دند کرنا تعلید شخص کا اثر ہے ہے یا تعلید مطلق کا؟

(99).....يهودي جوايئے احبار وربهان کی تقليد کرتے تھے يامشرکين جواينے باپ دادوں کی تقلید کرتے تھے وہ اعتقادیات میں کرتے تھے یا اجتمادیات میں؟ ان احبارو ربیان اور آبا و کا مجتمد ہونا قرآن وحدیث ے ابت کریں؟

(١٠٠)...... يه لوگ تقليد مطلق كرت تنصيا تقليد شخص؟ قرآن وحديث سے

(١٠١).....اگر تقلير شخص كرت شيخ اين جميمترين كى طرف نبعت كرت كيا كيالقب

ر کھتے تھے ، ووقر آن وحدیث سے دکھا کیں۔

- تقلع کماے؟

(١٠٢)......ايدون ايك فيرمقلد كمية وكاكد مسلد تقليد كيا بي؟ من في كما كديم حضرت امام الحظم ك مقلد بين، اين امام ب يوجيد كريمًا وينا جول- بعارك امام

صرحت فروت میں کدمٹس میں ہے سند سنٹر تھا ۔ ابغو ترایف ہے لیتر ہوں را اب فریا میں کدئنی ماہر قرم ان کی رہنما تی جی قرآ ان رغمل کرنا گفر ہے یا حرام یا ہوہ جب و کوئی آیت یا حدیث بیش فرائمی ، اس نے کہا بیتھلید تو بائل مائز بلکہ ضروری ہے۔ میں ے کہا الحمد لذ آب ایک چوتھان مقاد ہو گئے جیں۔ چرمیں نے کہا کہ جورے اہام صاحب تن و ت جن وور ہے نہر پر جن سنت رمول الذحلق القدمند وسلم ہے سنلہ ایج ہوں۔ ب آپ ہی قرم لیں کہ دوہرے مبر جر اہر سند کی روہنمائی میں سد رسول ا عَلَيْهِ بِمُلِيلًا لِمِنْ مِنَا أَدِي كُنُوا أَسْبُهُ رَبِونَا ہِلِيانَ نِهُ كِي كُولِيَّا وَالْب بكسفروري ہے۔ ش نے کہا کہ آ ہے تعف مقلع ہو گئے۔ تیم میں نے کہا کہ ہادے ، معدا دئے فر ہاتے ہیں کہ اگر مسئلہ کماپ وسنت ہے تہ مطے تو میں ویکھ ہوں کہ معیار نے اس عاریت بلی کرا ارشاد فرملایے، اگر اس بش صحابہ کا اجماع ہو گیا ہوتو اس بش ارہے قبور كر ليتنا بول اوراً مراضًّا ف بوتو جس ظرف ملغائ رسَّندين بول اس سنله برحمل كرة بوں۔ اب آیب آنیا فرمائیں کداگر سند آناب وسنت سے نہ لے فوسخا ۔ کرام وخلفائے راشدین کے طریق کو اختیار کر: کتا بزا گناہ ہے؟ دہ کینے نگا کہ بہ گناہ کیے ؟ بہ ق ضروری ہے ۔ ہیں نے کہا کہ الحدیث آب جن چیفائی مقلد ہو مجے ہیں ۔ پھر میں نے کیا کہ بہارے امام صاحب قربائے ہیں کہ اگر سٹلہ کماپ اللہ ،سنت رسول تفکی اور حجاب سے شدہے قوش اہت و کے ڈریو ہے کراب دسنت کے بیٹیدہ تھم کو تلاش کر کے ظاہر کرتا ہوں اور ہم لوگ المام سا حب کی دائیشائی بش کیّاب وسفت سکھائی جم معمّل ا کرتے ہیں اس بھر کیا گناہ ہے؟ وہ کہنے لگا کہ بیانو ضروری ہے۔ میں نے کہا الحمالات ا آپ تو پیرے مقلد ہو گئے جیں۔ (میزان عمرانی جمیر ۷

(۱۰۴)....... ایک دن ایک غیر مقلد کھنے لگا کہ تھید کی ضرورت کیا ہے؟ میں نے کہا کے فروق سائل دولتم کے بین ایک منصوص اور دوسرے غیر منصوص عجر منصوص دولتم کے ہیں، متعارض اور غیر متعارض ۔ پھر غیر متعارض ودھم کے ہیں، جمکم اور محسک ۔

(.) جومسئل منعوص بھی ہو، فیر متعارض بھی ہو، تھکم بھی ہو اس بھی نہ اجتہاد کی شخیائش ہے اور نہ تھید کی ۔ شغا میل تھیر کے وقت رفع یہ بن کرنا، حری ، افغاوی وفیرہ۔ (۲) جومسائل فیر منعوص ہوں ان کے بارے بھی ہم یہ بھیتے ہیں کہ یہ اگر چہ صاف الغاظ بھی کتاہے وسنت ہیں فہ کوئیس کوان کی تبدیعی مستور ہیں مکن علت بھی نہنے ہوئے ہیں ۔ ایسے مسائل بھی جمہتد ان مستور ادکام کو تھا ہر کرتا ہے اور مقالہ اس کی

راہنمائی میں کتاب یا سنت کے اس پوٹید استم پر قمل کرتا ہے ۔ کیا آپ کوئی آپ یہ عدیت ویش کر منکتے میں کہ فیرمنعوص مساکل سکا احکام کو تلاش کرتا ، ہر سکے لئے حرام م

ے یاان رعمل کرنا مقلہ کے سلے حرام ہے۔

 (۳) جہ سہ کل منعوص تو ہیں گر متعارض ہیں جہتہ تواعد شرعیہ کے موائن رفع نفادش کر کے دائج فس پر لمل کرتا ہے اور متعلد یکی اس کی داہنمائی ہیں راہ فی نفس پر بی عمل کرتا ہے۔ اب کوئی آبت یا حدیث ایک چیش قرما کی کہ متعارضات ہیں رفع نفادش حرام یا کفرے یا رائج نفس بڑگل کرنا حرام یا کفریا جدعت ہے۔

(") المُوكِيَّ مَنْدَمْعُوم جَي بِ الْجِرِ مِنْ الْمِنْ بِي بِاللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ

الغرض اجتهاد وتقليدكا متعمد وحيدمرف ادرمرف كماب وسنت يركس بيد

غیر مقلدین کا کارنامہ

الحمد بناء رب العالمين والصاوة والنسلام على سيد المرسلين وعلى آلدالمقوبين واصحابه المكرمين اهابعا:

ملک کواحناف نے تی روشناس کرایا۔

اليكن جب الحمرية كے مخوص قدم يهال أے تو والي ب سے وہني آ واركى ، ماور بدرآ زادل اور و نی مے راہ روی کی موفات ساتھ لائے۔ مذہبی آ زادی اور ندیبی حمقیق کے خوش نر اور ملفریب عنوالوں ہے مسلم نوں جی افترال کی مہم شروع کی گئی، تحقیق اور بسری کے مام سے متواثر قرآن یاک کے بارے میں شہرات والے مھے۔ متروک اور شاذ قرآ توں کو حواز قرآن ہے تکرا دیا گیے۔ انگریز کے زیر ماہ یاور یوں نے اس مم کا آغازی اور دوائش نے س کوکول تک پہنیا دیا۔ رسول اقدس ملک کے ک متواخر سنت کے خلاف یاوری فاغرر نے میزان اُنکِ بی اور کھر یا وری محاوالدان نے جوة وارتحقيق ازمان جي الحاتي الى كوبرسيد مدخان فيرمقعد سف ازب ديجراسلم جيراجيودي سابل غير مقلّه اورخنام احمد برايز ساق غير مقلد ہے اس تح بيك كو بروان؛ ج حایا۔ قرآن وسنت برحموں کے جعد اب فقہ اسلامی کی باری تھی، جس کے ذرید احکام ہوئی ﷺ فحوڈ اود لماز نبوی ﷺ ضوحاً تؤارتم کی کے ماتھ امست علی محل ہوں تھی۔ یہ نماز جس طرح ایک بہت بوی روحانی عبادت ہے ای طرح مسلمانوں میں اتحار و یک جبتی کا بہت بڑا ذریعہ ہے۔مسلمان نماز کیلئے پانچ وقت سچہ بیں جمع ہوتے جن - افتراق بوند حکومت برهانه کوجس کی پالیسی علی بدشی که لزاؤ اور حکومت کرو، مسلمانوں کا پیاتھاد کیے پہندا تا۔ آ قرایک فرقہ ایہ پیدا کیا گیا جوان متواتر نماز کوغلط کیے، نماز بول کے دلوں عمل شہبات پیرا کرے، متر دک مشاذ اور مرجوح روایات کو متواتر نماز ہے نکرا دے اور جوحشر یادری فاغرر نے قرآن کا کیا تھا وی حشر نمازی بوبائے ۔ چانچ ال سلسلہ على عكومت برطانيے نے وكيل الجديث بندكو جا كيوى۔ آپ نے ایک رہائی جہاد کے طاف تھے جمراکا نام الدقتف دفی سائل اجہاد ہے وہ رسائل اجہاد ہے وہ رسائل اجہاد ہے وہ رسائل اجہاد ہے وہ رسائل اجہاد ہے ہے۔ اس جی سادا زورائل است بانگانا عملا کہ انتہار اہل سنت کی متوانز فرز کے خلاف شائع آئی اور ایک اشتہار اہل سنت کی متوانز فرز کے خلاف شائع آئیا اور اس متوانز فراز کو فعد قرار دو یا در شرشر گائیں گائی تشیم کر کے جرمجہ کو میدان جبک بنادیا۔ اس فرق کی کارگرائی کا خلاصاد ہی کا سنتے۔ انگریز کے خلاف جہاد حرام اور سلمانوں کی مساجد جی اندونش۔



غیرمقلدین کی سنت نبوی علیه سله سے واضح وشمنی

A PAPATA

نْحَمَدُهُ وْنُصْلِّى عَلَى وْسُولِهِ الْكُولِيْوِ الْمَّالِيعَلَا: تَحَرَى إِ السِيمَ الْمُحَمُّ والشَّمَانِيْ وَبِرُكَامِهِ

ئے نمالف کا شعفانہ اور منافق ہونا تو حدیث ٹن ہے ۔(تریدی) کیکن متعمر فقہ کوحتمور المُنْفِقَةُ لِنَّا لِهِي الجعديثِ فرقها ما الرائك حديث أثن كروس كراك بالمنطقة المنظملا یم کے مشکر فقہ کو ابھہ یہ کے کہنا تو ہم تم کو الجعد بہت بھی میں کے اور میزار رویب افعام میں : أن كُ _اي طرية في مقلد إن جماع كي مكر من أبليد رسال التنافيح في حديث سب اجماع کے ٹولف وجہنی وہ کا بت ہے۔ (مفلوم) آپ کیسا مدیث قابل کردیں کہ حضر کالجنے نے ٹروہ ہو کہ مکر اجمال کواجھ یٹ سراہم میں کوالجھ دیت مجمی کہیں گ الدرايك بزار روبرالد مرجى وي شك العاطرين يك حدوث النك وثن كرير كما أب لَلْكُ لِيهُ مُعْرَادِتِهِ ، وَالْحِدِيثَ مَا مِو بِكُمَهُ عَارَا فِيْنَ لِيهِ كُمَا أَعِلَى مُعَالِمُ كُن حايل مثكر نتي مشر الفال مت مثل ابتقوه وتقليد كو فحمد يث كبياً ثبا اوتو بم في حواله يك ج اور دید افعام و س کے دید وہایہ

ا بيعوام بكر ما شناقياً من عديث كان الجليقة في الكرتماً أن ياك سندان بكر حديث متنابيات آفي جي اور عديث المعارف حدق آن مك شراحتي آبات کنار کے بارہ میں جو اشدا ہی اور مقلد بن پر جہاں کرنے میں جیسا کیا ک ویٹ می عن بھی کیا آیا ہے۔ اب ان مساکل کی طرف آ سینے جوائل بیند تل میں درہے ہیں۔

سنت نبوی کا طریقه ا

(۱)..... وغلوا آبنتی زیر میں وضو کائمل باز عیب طریقه اری ہے جس میں قرائض ، سنن استخبات سب تین به بیرونسو کا کال طریقه ہے مقام دنیے میں حفق این کال طریقة ے انسوکرتے ہیں۔ بہ خریقہ آٹ فقہ و عدیث نٹسابھی قوائز کے ساتھ ہج ہت ہواور عملاً بھی ہر گینہ کی طرح وضوکر نے تایا۔ س کے بعد ہے ترتیب وضو کے بارے میں

فریایا کہ نے ترتبیب وضوحت کے موافق انمونیٹس ہوتا اور اس میں گزاہ کا خوف ہے۔ (ج اُرُص ٣١ م) اور يدمجي لكها ہے كەسلىت كويلا غذر چيوز نے والا اور اس كى ما وت كرنے والا فاحق اور مختبگار برید اور نبی منتی کی شفاصت سے محروم رب کا۔ (جبمتی کوبر ص الای کے حتی سنت کے مطابق ہیشہ دنسو کرتے ہیں لیکن مید خیر مقند منت نبوی کا اشمن خلاف سنت وضوكرنے كى دموت سے ديا ہے ۔ ميا يہ كداس ناتھى خلاف سنت وضو ئے ساتھو یہ کز کا لفظ کوکٹر لکھا تا ہے تر تیب وضو کی حدیث معدیث کیا کاب معتقب این الی شیبه (۲۲۵ه)، ابوداؤد (۲۵۵هه) دار تطنی (۲۸۵هه) فی آنس کی ہے۔ اب ی جندنل دا لے کو بہتے اعتراض معنور منگاتھ پر کرنا جائے تھا پھران حدیث کی کنارل یرتا که کام بھی بوا ہوتا اور نام بھی بواہوتا۔ احماف نے سب مدیثوں کو بانا جس ظریقہ مرموا کلیت تابت ہوئی اسے منت کہا اور جو فلاف عاوت ایک آ وھ مرجہ ہوا است جائز كب حمرة وت بنائے كوغلاف سنت كبااور على حضور باك عليك كى عادت كى طرع بيث مطابق سنت کرتے میں اور بیسنت کا دخمن سلت نبی کومنانے کی وقوت ویتا ہے۔ انسویں کہ نام الحدیث اور کام ستوں کو مثانا ، بھی کے دانت کھانے اور وکھانے کے اور

ايك بزور رويد انعام:

(۲) ووسرا مسئلہ: آنخضرت عظی ہے قربان کا طاحہ یہ ہے کہ وہ اند بب تک بوش چی شدہ ہے مویا ہوا ہے تک بیدار ندیوا ہے بسبتک بالغ شہواس پر یکھ لازم نیس ہوتا۔ (ایوداؤد) اس لئے ختباء نے بیسٹلاکھا چھوٹی لڑک سے اگر کس مرد نے محبت کی جوابعی جوان نہیں ہوئی تو اس پڑھش واجب نیس لیکن عادت ڈالنے کے لئے اسے عشل کرا: چاہیئے۔ (جا اُس 24) جید بی سنلہ فیرمقلدین کی کماب زل الاہراد ے انہم ۱۳ پر بھی سے بلکہ اس میں یہ بھی کھیا ہے کہ معنی محابد اور نفار سے بھی اس ب الجمد بیٹ اور المام زفاری تو یہ فریائے ہیں کہ اس جوان مروی بھی بغیر انزال سے تسنی الازم تمیں و یہ یا کستان سے الجمد بیٹ کے لئے سرویوں کا انمون تخذ ہے۔ الجمد بٹ کا فرش ہے کہ فقت کے مسئلہ کو غلوہ تابت کرنے کے لئے ایک مجھے مرت فیر معاوض در بٹ لاکس کہ نابالغ پر بھی فسن فرص ہے وہم اسپنے سنلہ کو غلوہ بھی مان لیس سے اور ان کو ایک جزار دو پر افعام بھی ویں ک۔

(٣)...... تيسرا مسئله . ناياك چيز واطرن كيا بوني سے يېس انعين جوغوا ناياك عی بوجیسے بیشاب، بإخان ان کوخواہ کتنا جونو یہ پاکسٹیں ہو تکتے ، دومرے کا باک کیز ا اس کو جوئے سے پاک ہو جاتا ہے۔ ای طرح نزیر کی کھال کے علاوہ جانوروں کی کوں بنائے (وباخت) ہے باک ہو جاتی ہے۔ فرمان رمول میں دنند علیہ اسلم ہے ابسسا احداب وبسغ فقله طلهو معنوم بواكه كمال الإك كيثر مسك طرح باك كوثبول كر کے پاک ہوجوتی ہے۔ اوھر تر آن پاک میں اٹام افٹیٹم میں ڈیچ کوڈ کات اور یا کی کا ذریعہ قرار ویا ہے، اس نے احتاف کئیے جیں کہ ان کے سے بھی کھیال پاک ہوجاتی ہے۔ ای لئے بہتنی زیور میں مہمئدے کہ کما، ہندر، بلی شیر وغیرہ جن کی کھال رہ نے ے پاک بر جاتی ہے ، ہم انڈ کہ کرؤئ کرنے ہے مجی پاک ہوجاتی ہے ، جات بال اونی ہو جا ہے ہنائی ابت و نے کرنے سے ان کا کوشت پر کے نہیں ہوتا اوراس کا کھانا درست ٹیس ۔ (ٹٹائیس ۲) اور ٹووان کی کتاب میں بھی کھاں کے باریب میں بعینہ بھی سَئَرَكُمَا ہے، و منابطهر بالدباغة يطهر بالذكوة ، (لال الابربرج الاس) يعني جو کھال دیا خت سے یاک ہوئی ہے وہ ؤاٹ ہے مجھ یاک ہوجاتی ہے بلکہ یہ بھی تکھا ہے کے فتور کے علاوہ (''آباء ہندرا کی ، چینہ دریجھا شیر) کا گوشت کی فرق سے پاک ہو جاتا ہے ۔ (نزل الا براریٰ الرس ۳۰) کیجئے ان کے گوشت کی دکا ٹیس کھوں کر جماعت کی دعوے کیجئے۔

فقنهاءاحناف توكالبيال:

(سم)...... چوتھا مسئلہ بیانجا ست کے ساتھ فراز پڑھنے کے بارے میں ہے۔ اٹھن الاحدیث پاکستان کا دلای ہے کہ ہم وگوں کو تھنی تھواں سے بھا کر خاص خدا در سول کی طرف آنے کی دلامت دسیتے ہیں، واقعی کی کو تعطی سند بھا کر سیدھی داہ پر کانا بہت بڑی نگی ہے لیکن اس کئی کو جھیانا تو بہت بڑا کھاہ ہے ، انہوں نے فظار کئی گیا گیا۔ عظمان نگائیں یہ

 صرف مسلک المحدید و تھا ہاد کے تعروں ہے اس آ دازکو دیائے کی کوشش کی جاتی ہے، حتی جب کہتے ہیں کہ ان دس جیزوں کے پاک ہونے کی ایک ایک آیک کیے مرجع، خیر معارض حدیث سنا دو تو اس کے جواب میں فقیاء احمالے کو گالیاں دینا شروع کرویتے ہیں۔ تماز کی جگہ پافائے سے لیمی ہو، تمام بدن پرفیش کا خون اور بیشاب ما ہوتو فہاز حدیث کے بیمن مطابق۔

اس طرح فقد حتی میں نمازی کے ہدن کا پاک ہونا شرط تھا، انہوں نے کہا، پی مصلی بانجاست بدن آئم مت نمازش باطل نیست _ (م ۴۸) کرنجس بدن کے ساتھ تمازیزے والا تحتیار ہے تحراس کی نماز باطن تیں۔ فقد حقی بی تمازی کے کیزوں کا یاک ہونا شرط ہے۔ان لوگوں نے فقہ ہوئ کے نام سے فیل الکھا ہر کہ درجامہ نا یاک نماز گذاره نمازش مجمح باشد _ (عرف الجادي منيه ٢٠) يعني گند _ كيثرول عن نمزز سجح ___ ند منى شرائماز يزعن كى جكد كاياك بونا شرط تق البول في فقد الحديث ك عام سے ب الکھا کہ خیارت مکان واجب ست ندشر ہوسحت نماز کہ نما زیکے لئے مگر کا یاک ہونا شرطنيس - (بدورالبلد سقدام) فقة حتى عن فرازى كوستركا جميانا شرط تعام كرفته الديث ے ابر کہ درنماز مورش نمایاں شد تمازش میج باشد۔ (مرف الجادی صفر ۲۰) کہ نماز میں شرم کا دنگی رہے تا نمازیمج ہے۔ نیز نواب مدین حس ساحب نے کھما ہے کہ جولوگ کیتے میں کہ حمرت اگر اکیل ہوا درنگی ہوکر پڑھے یا چند مورنس ایمنی نگی ہوکر لماز يُرْحِيسَ يَا مِيلِلَ بَيْنِ الْمُصْعِ نَظَمَارُ يَرْحِيسَ يَا بَهِنَ بِعَالَى اور بَابِ بَثِي الْمَشِع نَظَرَهُ وَإ برمیں توان کی نماز مج حبیں ہوتی ہم ان مسائل کو برگز تسلیم نیس کرتے۔

(بدورالهارس۳۹)

فقة حنَّى مِن يقا كرتماز وقت سے يميل ادائيں ہوسكن محرفقة الديث مِن سے كداكر عصر كي وتت فت بال كميانا بوقو فهاز عمر وقت سي يبلخ ظبر يكرماته يزه في (الآوي تحاليد ج ا/٢٣١) وب و يجيع قرآن وحديث كام بركيا بكو ووبا مع ان کے کیے نجاست صرف جوان مردعودت کا بیٹاب، باخان سے یا جینس کا خوان کونک استمان كا فون الو ال كالل وكال بالكل وكال بداس لئة أكر فيرسقلد باب بني عظم ال يزهيس مفازي جك ياخان سے ليميل موء تمام بدن يرحيش كا خون ما مواور پيشاب بحي علا ہوتو بے نماز فقہ الحدیث سکے عین مطابق ہے۔ مسلک الجحدیث زندہ باد کے نعروں میں ان کومیزرک باد کہا جائے گا۔ اور فقہ منکی وٹن بھوگئی کے نعر دل ہے اچھلیں مے اور نہ منغہ ئەجىغىرىيە، قىمە يېچىدىد كے فلک بول فعودال سىھ ان ئوفراج قىيىن يېش كرس سىم لىكن ۋرا ائنی اختباط رکھیں مے کہ کسی حنل نے سیٹماز دیکھ کی تو نعرے بھول جا کمیں مے اور فتنباء کو گالیاں شروع ہو جائیں گی جن غیرمقلدین نے ٹی پاک ﷺ کی طرف بے کندے مسائل منسوب سئے ، من پرجھوٹ اورافتر اوبا تدسیروان کو بھی گالیان تیک و بر مے ، ند آئ تك ان كے روش كما بيل تكوير بن تقريرين كيس، إن كابول اور تقريرول بي صرف فقها والل منت كوگاليان وي حاتي جن روريس..

ان کے بان تو ہورا پائی فٹ کا جائیاز اور پوراچونٹ کاجسم بیشاب ، پائیائے اور جیش کے قون سے لت بت ہوتو میمی نی زمیج ہے تمر احزاف پر درہم کے مسئد بیل احتراش کر دیا اور بددیائی سے سنلے می پوراٹ تفصار بہتی زبور بی بی کھیا تھا کہ درہم مجر نجاست کوند دھونا اورای طرح نماز پڑھتے رہنا کروہ اور برا ہے۔ (نج اُبھی) اور تعلیم اناسلام شراقلعا ہے۔ معاف ہونے کا سطلب سے ہے کہ اگر اتی نج مت بدانا کیڑے ہے۔ تی ہواہ داران پر مدے تو آزار ہو جائے گی حمر کروہ ہوگی اور تصد آئی ہو سے بھی کی رکھنا جا زخیس ، مفر میں اور ورفتاری سی طرح ٹراز پڑھنے کو کروہ آخر کی اکستا ہے اور موالا تا تھا نوئی قرباتے ہیں مروہ تحر کی وہ ہے جو دلیل تلقی ہے فابت ہوہ اس کا انکار کرنے والا فائل ہے اور اس کا بغیر مذر کرنے والا گناہ گاراہ رہذا ہے کا سنتی ہے۔ (بہنچی کو ہر صفحہ ہوگاہی لئے احتاف ہیں ہیں یاک صاف ہوکر تھا نہ جے ہیں ، کر اس کندگی ہند کو احتاف کی یہ پاک فراز بہند کی ۔ وہ منظوں کو دفوت وہ جا ہے کہ گندے ہو کر تھا د پڑھوا کر چدفتہ منگی کے مطابق قر تر شریکاراہ رہذا ہے۔ یہ وگی جو کی ہو ہے ہو کہ بیا تر اور دفوا ہے ہے۔ وہوں وینا کس گند فراروج کا بی کام ہے۔ یہ وگ جنتی زاور سے پہلے تر ذی کوہ کچ ہیے۔ الم تر زین کی وفات کا معالمہ میں ہے اس جی خون سے بھی تر زاور تا مرددی تھی۔ کر ایسٹی علیاں نے کہا کہ اگر قدر ورہم ہے زاکہ ہوتو جب بھی تر زاور تا مرددی تھیں۔ کر ایسٹی علیاں نے کہا کہ اگر قدر ورہم ہے زاکہ ہوتو جب بھی تر زاور تا مرددی تھیں۔

شجا منت شقیف کے مسئد سے پہنے ریجھ کیں کرامناف طال جائوروں کے بیٹاب کونجاست نفیفہ کیتے ہیں فیکہ فیرسفند بن کی فقہ الحدیث میں طال جائوروں کا بیٹاب ، باخاند ند معرف باک ہے مکہ بوقت خرورت اس کا کھانا ہیز بھی جائز ہے۔(فیادی ٹیائیو د فیادی سناریہ)

اب اس مستے ہے اعتراض کرنے والے افرض تھا کہ وہ پہلے گھوڑے ہے ہا گئی اور تھینے کا ایک ایک گلاس چیٹا ہے ہی کر بھینس کا گو بر کھا کر اور ان کے چیٹا ہے ہے چرسے کیٹرے لیے بھت کر کے آتا اور پھر ہم سے پوچھٹا کہ اگر کس حتیٰ کی آتیس پ چوٹھانگ سے کم مکری کے بیٹا ہے کے جیٹے پڑے اور انو فراز کا کیا تھم ہے ، ہم بتائے که مکرده بـ (تعلیم الاسلام ص ۱۰) و کیسئے یہاں بھی حننی اپنی نماز کو مکرده کرنا تھیں عیاجے ، گناہ گار اور مغذاب کے مستقی تمییں بنتا عیاجے ،لیکن بیرنام نہاد الجحدیث الی نماز کی دعوت و بیے ہیں جو مکرده اور گناہ اور قابل عذاب ہے۔ نیکی سے بنا کر گناہ پر لگانا بیہ ہا الجحدیث کی وقوت واللہ تعالی ہدایت تصیب فرما کیں۔

ایک یاؤنجاست جائے کے لئے؟

(٥)..... یا نجوال مسئلہ: آب برھ آئے ہیں کہ شراب،خون اور قے احناف کے بال تجاست فليظ بيل، ليكن فيرمقلدين ك بال يديميول چيزي باك بيل - اب بحى مناچوسے دانوں سے خون نکل آتا ہے یا اس کے سفر میں منہ بحرقے آجاتی ہے یا كوئى شراب يے قواس كے مندكوجوشراب كلى باس كى وجدے ادارے فزويك مند نایاک ہے، غیرمقلدین کے ہاں خون ،شراب اور قے سے مجرا ہوا مندیاک ہے۔ اب انسان کے مند میں العاب کا چشمہ جاری ہے، اب وومسافر جس کے باس یانی نہیں کہ کلی کرے منہ پاک کر تھے، ووقعو کنار بتاہے حتی کہ خون یا شراب یاقے کا اثر بالکل ختم ہو جاتا ہے تو اب اس کا منہ یاک ہو جائے گا یانہیں ، پدلعاب دہن بھی یانی کی طرح یاک كنده ب يانيس ـ تو بخارى شريف كى حديث من ب: ام المؤمنين فرماتى بن ك كير _ يرجيش كا دهب بوتا أو بم تحوك _ ، اس كوصاف كركيتين ، اس حديث _ عابت ہوا کہ تھوک بھی یافی کی طرح یاک کرنے والا ہے۔ ای مسلد کی ایک صورت ببئتي زيور من ب جس كوانجهن الجعديث بإكستان في نهايت ناتعل نقل كيا ب-" باتهد يركونى جنس چيز (مثلاً شراب) لك كى اس كوكى نے تمن بار جاك ليا تو بھى باك بو جائے گا مگر جا شامنع ہے یا چھاتی پر بچہ کی قے کا دودہ لگ کیا پھر بچہ نے تین دفعہ چوں

كر **ل**ي لواقع ك مواليسا "(ان مامس)»)

ناطقہ مرگریاں کہ اسے کیا کئے

کند معے پر بھاتے اس کا پیٹاب ، پاخانہ العاب اور خون آپ کے جسم پر بہر رہا ہوتا ، آپ بہ نفر و نگاستہ اوے آئے تہ نہ حتنے نہ جعفی و انجر بہ کھر ہے کا کہ بنجیرہ لوگ ، کچھتے آپ لوگ کی پاک میٹیکٹے کی طرف کہتے کہے کندے مسئل مشوب کرتے ہیں ۔ آپ اس کی صربے صدیدی چٹی کریں کہ کئے کا لعاب، چیٹاب ، پاخانہ اور خون پاک ہے ، ہم چاروں کا ایک کیا۔ بیالہ آپ کی تقریریں کے اور اچی فقد کے مسئلے کو ظارفشلیم کریں گے ۔

ایتلاء نفاس ہے قبل ہی نماز معاف ؟

(۷)...... سائق آل مسئلہ: عورت کو حالت حیش و نفای بی نماز معاف ہے اور یورکو تماز معاف نیس میاں دواشوے سے پڑاوسکٹا ہے تو اشارے سے پڑاہ لے مینے کی ولاوت کی تکلیف میں خون نفاس آئے سے پہلے عورت بیار کے تکم بی ہوتی ہے یہ مسئد ہر کھر میں چیش تی تاہے واس کئے مغرورت کے تحت سنندڈ کرکیا تیا۔

مسئلہ: آوھے نے زیادہ پینکل آیا کین ابھی پورائیں نکد اس دقت جو است جو خون آ دے وہ بھی نفلا اس دقت جو خون آ دھے ہے کم لکلا تھا س وقت خون آ یا تو وہ استحاف ہے اگر ہوئی دحواس باقی ہوں قو اس وقت بھی آماز پر ھے، ٹیس تو گئا ہ گار ہوگی شہوتو اشارہ ہے ہی پر شائع ہوئے کا در ہوتو تماز بر ھے ہے۔ پر شائع ہوئے کا در ہوتو تماز نہ ہے۔ رہ مائع ہوئے کا در ہوتو تماز مربعے۔ (ج مائع مائع ہوئے کا در ہوتو تماز مربعے۔ (ج مائع مائع ہوئے کا میں کہ تو اس بھی مرب سے بینے مورت کے ہوئی وہ س بھی باتی ہوئے ہی اس کوئی زیاد میں ہوتو بھی اس کوئی زیاد میں مربع ہوتو بھی اس کوئی زیاد میں اور درام ہے تو تم فقت کے اس مسئلہ کوئی انتظام کر لیس کے آ ب نقاس سے بہلے میں اور درام ہے تو تم فقت کے اس مسئلہ کوئی انتظام کے بیاد

سمس حدیث سے نماز ساتھ کرتے ہیں۔ فقہ کے انگاد کے بعد سنوں کے ٹیموز نے کی دعمت تھی ٹیمرہ جب کو چھوڈ نے کی دعوت دی کیونکہ درہم نجاست کا دھونا داجب ہے۔ اب دیش زباز ہی کے چھوڑ نے کی دعوت ہے، نہ رہے بائس نہ بہتے بائسری۔ احماف کی حد میں خداور مول منطقہ سے بھی دھنی مول نے و۔ انتہ تو بے کیا تو نیش عطافرہ کیں۔ خمیر مقلعہ من کی سنت نہو گی ہے واضح دیشنی:

(٨)..... آنشوال مسكله: لقد منفي مين نماز عيل ننا، ركورنا بحدد كي تسبيحات تسمجي . تھے یہ اوروہ موعا سنت جیں۔ واجب کے بھو لئے سے بجدو کہ لازم آ تا ہے نہ کہ سنت کے ہو گئے ہے۔اہامٹ آیا '' '' '' ہوئے نئن ٹرائی ٹریف میں ایک سنتھ آیا اب با ندھا ہے: افل مات وي به الصلوة (ج الصيفوة) ال على عديث من المنظرة لات يل جم میں ندشا ہے ندرکوع کی شیخ شدقومہ کی شاہدہ کی شاہرہ ان کا ادرائ کو جا کز قرار دیا ے۔ عنود کیکٹے نے س محض کونماز مکھا کریٹیں قربایا کدائں نماڈ کے بعد مجد وسموجی کرنا۔ اگر نمبر مقلد بن حدیث مسئی العبوٰۃ کے بعد حضور عظیفے سے محدہ سہوم ہے کرویں تو ہم فقہ کے اس مئیہ کوغلو ہمی بان لیس کے اور ایک ہزادرو پیدانعام بھی دیں ہے۔ رہا ا من ف كالمش و أن كا ذكار برمواغب ثابت ب، من ليريم ان كوست كتب ين اور موافق حنت نماز بزينت مين برانجن الجنديث يأتمثان منغيول كوايك نمازييل مباسته سنوں کے چھوڑنے کی وقوت و ہے رہ ک ہے۔ سنت نبری کیلیٹھ سے انکیا وشنی کی مثال سِيدِ كَهِين نَظر خين ٱ فَي _ خود بهجنّي زيور ج الأمل 19 يوايك الماز كوخلاف سنت نكعا بي أمرًا الجمن الجديث باكتان كاكوني حوال مجى فريب وخيانت اور وهو يكريب بإك نيس. فردن نبوک کے مطابق خیامت کرنا منافق کی علامت ہے اہمیں آ ٹ تک ایس صدیعے

سیر فی جس میں آپ میکھٹا نے فراہا او کدخیانت پیشاکو ابحد ہے کہنا۔ المجمن الجحدیث یا کستان سنتوں کومٹانے کے لئے بنائی گئی:

(۹) نوال مستلدا العاری فقد کے موانق فرش کی تیمری پوتھی رکعت بی مورہ فاتھ بین مسلوا ، معنویت بی امام اسوا، ایر ازیر فعل سنے ان رکعتوں بین الحد شریف شیل پائیں۔ (معنف این الج شید بنا انس ایس الحد شریف شیل پائیں کو بھی نہ بوت ہے ، بال دوسری مطابہ کا اید قول بین ہیں جب بال دوسری احاد بیت ہے اس کے ہم فاتھ کوفرش کی تیمری ، پینتی احاد بیت ہے اس کے ہم فاتھ کوفرش کی تیمری ، پینتی رکعت بین ادر سنت کے مطابق نماز داکر تے ہیں ۔ میکن انجین الجد بیت یا کھن بیت ہیں ادر سنت کے مطابق نماز داکر تے ہیں ۔ میکن انجین الجد بیت یا کہنا الحد بیت کے مطابق نماز داکر تے ہیں ۔ میکن انجین الجد بیت یا کہنا الحد کی داور ہ

نمازعيد وقرباني ثين احناف يرستم ظريفي

(۱۰) وسوال مسئلہ: آنخفرت سلی الشاعلیہ وسلم اور خلافت راشدہ کے دور شرکسی ایک گاؤں مسئلہ: آنخفرت سلی الشاعلیہ وسلم اور خلافت راشدہ کے دور شرکسی ایک گئی اور والوں بر نرز و عبد ایس قربائی کے تین دن ہیں اور وان طوع گیر سے ایس قربائی کے تین دن ہیں اور وان طوع گیر سے باعد قربائی ہے تین دن ہیں اور وان طوع گیر نے اعد قربائی جائز ہے ایکن شہر میں چوکسٹید کی شاؤ واجب ہوگی آز کے بعد کرنے کا علم ہے قوجبال عبد واجب ہوگی آز کے بعد کرنے کا علم ہے قوجبال عبد واجب ہوگی تر بائز بعد شاوع کیر جائز ہوگی۔ چنا تی ایام فرقد کی جائز کی اور جہال نماز عبد واجب تیں وہاں بعد طنوع کیر جائز ہوگی۔ چنا تی ایام فرقد کی قربائے ہیں الل علم کی ایک جماعت نے گاؤں والوں کے سے شرح ہوئے کی اور جہال ایک اور کیا این والوں کے سے شرح ہوئے گاؤں والوں کے سے شرح ہوئے گاؤں والوں کے سے شرح ہوئے گاؤں ہوئے گاؤں

اب ان الحريظم والم ترفدى اور عبدالله بن المبارك برجمي تتوايدى كي معتق جارى بوكى المعرف من تتوايدي كي معتق جارى بوكى المعرف من بيتي ويوريرى رواد كهاجائ كا

انجمن الجحديث إكستان ملم حديث سے كوري ہے:

(۱۱) سی مربوال مستفدا جوت نسب کا سند بهت ایم ب رکی بینے کے نسب
کو تھے کرنا اس کو حکما تحق کرے سے برابر ہے کہ تک اب اس بینے کا کوئی تربیت کشدہ
باتی نیمن رہا۔ اس سے آنخسرت حقیقہ نے واشکاف اخاط میں فربایا
النو فلدللفوان ، کرمیا ای کا کہلائے گاجس کے نکاح جی مورت ہے اب اکر مورت
کہتی ہے کہ بینا میرے خاولا کا ہے، خاولد میں کہتا ہے کہ بینا ہمرا ہے۔ اب اس بینے کو
حوالی کہنا اس سے باب کو میمنلانا ہے اور اس کی بال پرفا کی تبست لگا ہے اور اس بینے
کو حکما تمقی کرتا ہے، من شخوں کے لئے کوئی دلیل شرق نیس، بال ذکر خاولد ہی انکار کر
وے کہنکہ محبت کا بینی علم صرف ای کو ہے تو وہ اس انکار نیس مورت پرفا کی تبست
نگانا ہے اس کے وہ عدالت میں انعال کرے وابعال کے بعد پیرکا نسب منتقیع ہو جانے
کو کہنا ہے شرح ربیشی زوید ہے نقل ہے۔

مسئلہ اول کاح ہو گیا لیکن ابھی روائ کے موافق رفعتی ٹیس ہو لی تھی کراڑ کا پیدا ہو گیا اور شوہرا نکارٹیس کرتا کہ پچر میرائیس ، قو وہ لاکا شوہر ہی ہے ہے جرائی ٹیس کیونکہ مکن ہے کہ کسی طریق ہے خفیہ طور پر خادند ہوی کے ہاس بیٹنی ٹمیا ہو اور گھر والوں کو یا فیروں کو اس کی فیرنہ ہوئی ہو اوروس کا حرائی کہنا درست نہیں کیونکہ ہے جا جست شرعیہ مرو کو جنوا نا اور مورت پر زنا کی تہت لگانا (اور اس بنے کو حکما قبل کرنا ہے اور جنوں کن و اکبر الکیائر ہیں) ہاں اگر وہ شوہر کانہ ہواور وہ جات ہوکہ یہ بچے بھرائیس ہے اور جس اس عورت کے پاس نیں گیا تو الکار کرے، الکار کرنے پر چونکہ وہ عورت پر زنا کی تبت نگا تا ہے اگر عورت اس الزام کوشلیم نہ کرے اور احان کی شرائط پائی جاویں تو نعان کا تقلم ہوگا اور بعد اعان بچہ کا نسب شوہرے منقطع کر دیا جائے گا۔

دوسرا مستلدمیان برداین من باوردت دوگی، برسی از رسین که کرنین آ یا اور بیبال از کا پیدا ہو گیا، تب مجلی وہ حرای تبیس بلکدای شوہر کا ہے۔"الولدللفراش" (الحدیث) کیونکه ممکن ہے کہ دو کسی وقت چے۔ کرا بنی بیوی کے پاس بیٹی گیا ہواور اس ے آنے کی خبر کی کون ہوئی ہو بیسے اشتہاری لوگ جہد کراسیے گر آ جاتے ہیں اور لوگول کوان کے آنے کی خبرتیس ہوتی یا بذر بعد سی عمل مشاہ تسخیر جن دفیرہ کے یا بذر بعد کرامت کسی بزرگ کے دوا تی بیوی کے پاس پینچ کیا ہویا اپنی بیوی کواپینے پاس بلالیا ہوادر کسی کواس کی خرید ہوئی ہو۔ پس جبکہ خادند اس بچہ کے اپنا بیٹا ہونے سے اٹکارٹیس كرنا لو كويا وہ وعوق كرنا ہے كه يل في اين يوى سے معبت كى ب اور يدشيد كدوه ردیں بی قا کیے محبت کرسکتا ہے اس لئے مجھے نیس کہ بذر بعد کرامت یا بذر بعد جن وفیرو کے ایبا ہونامکن ہے تو شو برکو جونا نہا جائے گا اور بچہ کو حرامی نہ کہا جائے گا۔البتہ چونکہ شو ہر کوعلم ہے کہ میں نے محبت کی ہے پانبیں کی اس لئے اس کو اٹکار کا حق حاصل ہے اس لئے اگر وہ فبریا کرا تکار کرے گا تو چونکہ اس ا تکار میں عورت پرزنا کا الزام ہے اس لئے اگر زوجہ زنا ہے افکار کرے اور ویگر شرائط لعان کی بائی جائیں تو لعان كا تحكم بوگا اور بعد لعان بيدنب شوبر ع منقطع كر ويا جائ گا- (ببشي زبورج ٢٠٤٣/٣٥ يضمد)اب بتائے كديد دونوں مسائل كى حديث مي كے خلاف بين، اجمن المحديث ياكتان جيے فقد سے جائل ب،علم حديث سے بھى كورى ب-اس كى

بیر اُنٹن کا مقصد اسلاف کے طلاب جاگمائی چیلانا سے اور جب کوئی صدیت سے دلیل ماریکے تو ہزیاتی ہے اور آتا ہے۔

محدها ورخز بينمك كى كان ش كركرنمك بن جائين توياك وطلال بين:

(۱۱)...... بار ہوال مسئلہ: تا پاک تیل یاج بی کا صابی بتائی جائے ہو کے ہو جائے گا۔ بیستیل ہو اے کا صابی بتائی جائے ہو کے ہو جائے گا۔ بیستیل ہو کا سیسٹیل ہو کہ بیستیل ہو کا سیسٹیل ہو کا میں ہو باتی ہو جاتی ہو باک اور حال ہے۔ (از ل اللہ براری اُس و کا اور حال ہے۔ (از ل اللہ براری اُس و کا اور حال ہو جاتی تو باک اور حال ہے۔ (از ل اللہ براری اُس و کا کا میں ہوگا۔ آپ کے باس فقہ کے اس مسئلہ کے خالف ہو جاتی تو ہوگا۔ آپ نے تعدد کے اس مسئلہ کے خالف ہو جاتی تو ہوگا۔

مئله كاحل وجواب تلاش كريس:

(۳) روس تیرہ دوال مستد: دفعوے احدا کری معنو کی نسبت ندوجون کا شہرہ و لیکن دو معنو کی نسبت ندوجون کا شہرہ و لیکن دو معنو تھیں تا ہو تھی ہیں گئے وقع کرئے کے لئے ہا کئی ہیر کو وجوئے ای طرح اضارح اضاف بھی آئے واقع کے دو میں گئے اور آئے ہیں مالٹ بھی آئے وجوئے دحوث کے احد میں شہر ہو قو مندوجو السیار اور آئر ہیں وجوئے کے احد میں شہرہ دو آئے ہیں وقت ہے کہ جمی مجھی شہرہ دوا ہوا در آئر کسی اور آئر کسی اور آئر کسی کو اکٹو اس حمر کا شہر ہوتا ہوا در آئر کی اور اپنے کی شہرہ دوتا ہوا در آئر کے دور اپنے کی کھوئی کو براح میں انہوں کی جائے ہیں میں میں میں میں میں اور اپنے اور اپنے اور اکٹر اور کی تاریخ کے مطابق ہے۔ دور کا ان کی میں اور اس جمان اور کر میں اور اس کے مطابق ہے۔ دور کا ان کی میں دیرے کے مطابق ہے۔ دور کی تاریخ کی میں اور اس کی کا ان کی میں اور اس کی تاریخ کی میں اور اس کی کا استان اور کر میک ہوا اس آئے موضو

عل ای شک مانا جائے گا ، اس سے پہلے شک اوا ی ٹیس ، آپ کی مربح مدیث سے اس سلاماطل بیان فرمادیں ہم ضرور تشیم کریں ہے۔

بلا عائل وخول ہے سلے عسل فرض نبیں ہوتا:

(۱۳) چود هوال مسئله: اگر کونی مرداینه خاص جھے پر گیز الیون کر جہاج کی سراے قو حسل فرض نہ ہوگا جہاج کی اس قدر سواہ ہو کہ جم کی شرارت اور جہاج کی فرارت اور جہاج کی شرارت اور جہاج کی شرارت اور جہاج کی شرارت اور جہاج کی خود سے محمول شاہر مجرکر احوظ یہ ہے کہ فیست حشق النہ ہو ہے ۔ قود آپ کی گا۔ (بہٹنی کو ہر اص عالم بہرا) بتا ہے یہ سنند کس حدیث کے خلاف ہے، خود آپ کی فرط در کھنے فرال الاہراد رج الحص محمد کی مسئلہ کھا ہے اور ایام بناری تو کیش کی شرط در کھنے ہیں شرائد ت وجرادت کی مود فریا ہے ہیں نیا حاکل دخول سے بھی فسل فرش ٹیس ہوتا ، فرد اوبال افزی نگاہے ۔ آپ نے بہٹی زار رکا مسئلہ بھی: کمل اکتماء مدیدہ المحمد مشابعی الروق ہے۔

 نماز برائعتے ہوئے ایسے کے کوافوای ہم کے منہ سے موب بہدم اِلقات ہم کا فراز جائز ہے۔

(۱۹) سواہوال مسکلہ : پرسٹار تبایت اعمل تھا ہے اور جہنا تھو دیا ہے کہ دور افراق حدیث تربیف ہے کہ دور افراق میں معرف تربیف ہے کہ دور افراق میں المعرف میں المعرف میں المعرف المن المعرف المن المعرف میں معمل آدمیا او حبوا فا طاحوا من طبعو وطاق و غیر حبا (جائز میں المعرف حدیث کی المی کی ترازی قرازی قرازی کی ایک آدی ایک کی طبعو وطاق و غیر حبا (جائز میں المعرف میں المعرف کی المی کی تربیف کی اور ایس کی تربیف کی جادر ہے حدیث اس کی دیل ہے۔ اب ذرا اپنی فقہ نبول کا مسئلہ بھی یاد کرئیں المان کی بہدم اور جب بھی المی بازد ہو ترب بھی ہے۔ اب ذرا اپنی فقہ نبول کا مسئلہ بھی بادر ہا دور جب بھی شائز جائز ہے (فرن المارواری المی میں بھی تھی ہے۔ اب ذرا اپنی فعہ نبول کا مسئلہ بھی اور کرئیں المان المی المی بیش ہے۔ اب ذرا اپنی فعہ نبول کی اسٹان تور کرے کہ گئی شائز جائز ہے (فرن المارواری المی بھی بھی تھی ہیں۔ المی حدیث باکستان تور کرے کہ گئی ہے۔ اب خران میں بھی تھی ہیں۔ کہ میکان بھی بھی کرئیں المان المی بھی تھی ہیں۔ کہ میکان بھی بھی کرئیں المی المی بھی تھی ہیں۔ کہ میکان بھی بھی کرئیں ہیں بھی کرئیں ہیں بھی کرئیں ہیں ہیں۔ کہ میکان بھی بھی کرئیں المی بھی کرئیں۔ کہ میکان بھی بھی کرئیں۔ کہ میکان بھی بھی کرئی المیان کی تھی ہو کہ کرئیں ہیں ہو کہ کرئیں۔ کہ کرئیں کی کرئیں کی کرئیں کرئیں

(۱۷) سترجھان مستند: اگر نماز پڑھنے کی حالت ش نمرز پڑھنے واسے کا کپڑا کی مو کھے فیس مقدم پر بڑتا ہو تو کوئی حرق نیس، اس مسئلہ کے نقل کرنے بیس مجل خیانت کی، مو کھے کا ناز جھوڑ وہ وراس کے خلاف کوئی حدیث بھی تحریج رئیس کی ۔ بہال نجاست نہ تو نمازی کے کھڑے وونے کی جگہ پر ہے نہ کپڑے کو تی نہ بدن کو تو نماز کیے بطی ہوگی، جیکہ آپ کے بال کپڑے ممکان اور بدن میپ کونچوست کی ہوتو بھی نماز جائز ہے (بدورا ماہلہ)

(۱۸) افور ہوال مسئلہ: بیبال ہی آپ نے کوئی عدمت ویش قبیل کیا کہ آیت قرآنی کا تعویز بناکر بیب پر باندھنا ناجائز ہے۔ اگر آپ کوئی سی مرتع عدمت الى چىش فرماوين تۇنېمىن تىلىم سەا تكارنىيى جوگا-

حقیقت برو پیگنڈہ:

فیرمقلدین دات ون بیرداگ الایت بین کدفتهٔ حدیث کے خلاف ہے، ال پیقلٹ سے بیرداز فاش ہوگیا کہ پہنچی زیور پیسی عظیم کتاب جو ہزاروں مسائل پر مشتل ہے اس میں صرف سر ومسئلے ان کو ملے، ان میں سے ایک مسئلہ کو بھی بیسیجے صرح فیر معارض حدیث کے خلاف ثابت نہ کر سکلے۔

واقعہ ایک غیر مقلدعالم نے کہا کہ فقائقی تو ساری قرآ ن وحدیث کے خلاف ہے، میں نے کہا کہ بیلوگ عربی تین جانے آردو جانے ہیں۔ آپ آردو کی سنى كتاب كانام ليس جوقر آن وحديث كے خلاف بوراس نے چھوشے بن بہشتى زيوركا نام لے دیا۔ میں نے کہا کہ سحاح ستاکا بھی أردو تر جمہ ہوچکا ہے۔ میں بہتی زیور ہاتھ میں لیتا ہوں اور بالتر تیب ایک ایک مئلہ برحوں گا۔ آب ہرم سند کے خلاف ایک مترجم قر آن ہے یا ایک منتج صریح فیر معارض حدیث مترجم سحایۃ ستہ ہے ان اُردو دانوں کو وكعات بيا كين اوران فلد مسائل كے مقابلہ ميں برمسله كالمح يحتم بھي حديث محج ، صريح، فیرمعارض ے وکھاتے جا کیں۔اب وورم بخو د قبار زمیں جدید نہ جندگل محدر دوسرے دن آیا اور کہنے لگا کرسب مسائل تو غلاقتیں ہیں، چھومسائل غلط ہیں، چھیتھے ہیں، میں نے کہا: ٹھیک ہے، تشریف رکھئے ، میں بہتنی زیور کے مسائل بالتر تیب پر معوں گا جو مسئلہ سیجے ہوگا اس کے موافق آ ہے سیجے، صرح ، غیر معارض حدیث لکھا کر اس کو سیج خابت كرتے جاكي اور جومسائل غلط ہون ان كے خلاف آب ايك ايك عديث يحى اسرتكاء فير معارض لکسائيں كے تاكه سارا بيتني زيور بھي چيك جوجائے ، آپ كے علم ميں بھي

رِ أنك بوكي والكه كم بني سن محلي في حاص تنجيه الجمن الله مديث ما أمنون على الك ا روه اگر خیرت بیتاتو او بناایک عام تورکرین، یافی هو وکان وکاریش با تا تربیب بہنتی زیور او منلہ پڑموں کو اور آسیا کا عالم اس کئے کے سامنے برمشہ پرائیں الیہ ا له بينه الآن أراب كار أمر بيطيعًا منعور ندايا فرسب برواهي بوجوب كا كرايل حديث ہے۔ کا مطلب سکی کہ ان کومہ بہت کا مع سے ، بلک ان کے اٹل مہ بہت کہتا ہے کا مطاب سرف نتها و کے خواف پیزو دئی مرتا ہے اور اس پہ



ایک غیرمقلداور حنفی کے درمیان دلجیسپ ملاقات

سيمر الله الرحسن الوحيس . الخفة لِلَّه وَسَلامُ عَلَى عِنادِه الَّذِينَ اصْطَفَى. امْابَعُه :

(عُ) غيرمقند ...الملامنيم!

(ح) الله الهنة واجماعة (حنَّل).... ذَلِيمَ الهام آئيةِ تَشْريف ريكية : جناب كالقدف؟

{خُ }.... بى عن افل مديث بود.

(ق) ماشا والتدا آپ تو محدث ہیں ، کیونکدائل حدیث کی فرقہ کا نام نیس ، آیک علی عبقہ جو حدیث کی امائید کے بارے میں مہارت نامہ رکھتا ہو آپ اصطلاح ہیں۔ محدث باائل مدیث کہتے ہیں۔

(ق) كَيْ نُعْلَى ، كَلِي قَوْلِالْكُلِ أَلِنَ بِرُحَا مُولِ...

(ٹ) ۔۔ بجیب بات ہے : چہلے عرف اس خفی کو صافتہ کہتے ہتے ہو آر آ من باکس جودا زیال یادکر لیٹا تھا۔ آئ کل ہراکن چہ اندحا حافظ کی کہنا ؟ ہے ، ای طرق اللہ چہ میکی علی حدیث کہلائے گئے۔ اوارا چینٹے ہے کہ جدی اسلام تا دیٹے تھی ایک حوالہ بھی ٹیمیں ملکا کر بھی کئی ہوں چاہد کے اٹل عدیدے کہنا یا اور ہے جا رویز بدئے الدین شاہ ، ہے جسندا ا اور مادی عبر القادر روچ کی مناظر وال میں ایسا ایک اولا کہی ڈیٹر ن کر سکے۔

(تُ). .. تي يم ال مديث إلى ليم قرآن ومديث كا وسية إلى و

(حَ) بِهِ كِيانِ اللهِ اللهِ الأنبية أنَّى والكي وثانُل جَنِي تَرازُ لِ وحديثَ وَنِين . ليِّيهِ

(غ) . . . کی بیراوگ الل صدید این مشخص که ۶ صرف قرآن و صدید کو با بیند جهاور بیاتر کن و مدید کے ماتو الله ایندار گاست اور قیاس کو گل این جیل خبله بم شافته کو باشند جس ندادماری آمید کوند قرس کوید

(ٹ ا ۔ اس کا مصب ہے ہوا کہ تیسے متحر این مدیدے سے ابغا نام المی قرآن دکھ ہوا۔ انگذا اس فرف سے چیل ہیل قرآن استی متمر مدیدے رقرآن میں استوال ہوا نہ مدیدے میں ان تاون کا اسمام میں اکی طرح افغی مدیدے ہمنی متعرفی متحراری کا انجرقیاس مترجی رہمی قرآن یاک میں ستوال ہوا نہ صدیدے میں نہ تاریخ اسلام میں ۔

(غ) .. . اس کا مطلب ہے ہے کہ " پ نے جمیم الجل قرآ ل بھنی عفر بین حدیث ہے طروقا ہ

(ٹ) ۔ ۔۔۔ بی بیدونوں فرنے انگریز کے دور بھی پیود ہوئے ، کی اسمای خوصت بھی پھیٹیٹ فرقہ ان کا وجود ندافوہ بلک ہوائٹ رین صدیت فو آ ہے ست بی بیدا ہو ہے۔ اس فرقہ کا باقی عبداللہ بھٹڑ انوی پہلے بیرمقلد بی تھ اور اس فرق کا سب ست بڑا رائٹر اسلم بچرا ڈیوری ، مونوی معامست اللہ فیرمقلد کا بی ٹرکا تھ بڑو مبلوی معد بی حسن سک است دوست ہے اور فدم احمد برویز بھی فیرمقلد ما کھان کا بی تی بچٹم و چرائے تھا۔

(غ). سامّ ب سنة ميمن فيافرق كيت كرد وياريم وأل عديث بين وبعب سند أبي باك

کی مدیث ہے ای وقت ہے ہم ہیں۔ کیا نبی پاک کی حدیث دور انگریز کی پیدادار ب۔ جب نبی کی حدیث کی ہے تو ہم بھی ہے ہیں۔ جب تک کوئی شخص نبی پاک کی حدیث کوچھوٹا ثابت شکرے ہمیں جموٹا ٹابت تیس کرسکا۔

(ح) اف یہ بیری جمارت ہے۔ آپ کے امانی اہل قرآن بھی یہی کہتے ہیں کہ ہم دور انگریز کی پیداوار قبیل، جب سے خدا کا قرآن ہے ای ون سے ہم اہل قرآن جیں۔ جب قرآن کو جنونا ثابت میں۔ جب تک تم قرآن کو جنونا ثابت نیس کرسکو گے۔
دکرو کے تم اہل قرآن کو بھی جنونا ثابت نیس کرسکو گے۔

(غ)....ابی آپ نے تو جمیب بات کی اہلی قر آن تو منگرین حدیث ہیں ، ووتو ایک نیا فرق ہے، انگریز کے دور ہے قبل ندان کا ترجمہ قرآن نے تغییر ندم کد ند مدرسہ ندم تجروبہ آپ خود جائے جیں کد الاجور میں بہلام عر حدیث عبداللہ چکر الوی تھا، وبلی میں اسلم جراجوری۔ اس سے پہلے ان کا نام و نشان نہ تھا۔ آج کی مظر حدیث سے اوچیس کہ اس کے شہراور اس کے خاندان میں بیفتندا نگار حدیث کب ہے آیا تو وہ انگریز کے دور ے پہلے ند کسی شہر میں کسی مشکر مدیث فرقہ کا پیدوے سکے گا نہ کسی خاندان میں۔ (ح) باشاء الله يجي طال آب كفرق كاب، آپ عي اين فرق كا ترجه قرآن ا تغییر، ترجمہ حدیث، کوئی حاشیہ یا نماز کی کتاب انگریز کے دورے پہلے دَصادی، کی مجد، مدرس، مقبره کا پند دیں جو انگریز کے دورے پہلے کا جو اور غیر مقلد کا جو۔ ایک خاندان ابیا بتا کی جو آگریز کے دور ہے تبل اسلامی حکومت میں غیر مقلد تھا۔ آیک شبر کا نام لیں جس میں ملکہ و کوریہ کے زمانہ سے قبل کی غیر مقلد کا پند چل سکے۔ ہال غیر مقلد کا مطلب بھی یاور ہے، اجتہادی مسائل میں مجتبد اجتہاد کرتا ہے، عامی اس کی تقلید

ا كرة ب، بون اجتهاد كى الجيت ركمنا بوز تقليد كرب افقد الجال ادر قياس كامتكر بوا أسه غير سقلد كين بين -

(پُنْ) آ بِ بِهَ مُين كيا محاله عن كونَى حَقَّى يا شانعي يا مالكي يامنتي ثقا؟ برَّرَ مُين ، تنام سحاله اور تالبين الل مديث تقيف

(7). ... بیکن میکو آپ کے بھائی کہتے ہیں کر محاب میں نہ کوئی بخاری پڑھتا تھا نہ ٹرندی، دوصرف قرآن پڑھتے پڑھائے تھے، اس لیے قام محابہ اہلی قرآن بمعنی مشکر میں ہے۔ تھ

(بُغُ) ... دورمحابہ میں قو کوئی محر حدیث نہ تھا، دواجہ بھٹ کو روایت کرتے ، ان پر عمل کرتے تھے، جبرایک محالیٰ بھی صدیت کا مشکر نیس تھا قو ان کو ہل قرآ بن بمعنی مشکر مدینت کے، بالک بھوت ہے ۔

(نَ) ... الرحر ن محاب اور تا بعین علی ہے ایک بھی افذ کا مشر ندتھا ، ندا جہا ہے کا انگار کرتے تے اند قیا کی شرق کا معدیث کی کتابوں کیاب الآبور ہتجہ بری اور کا جرب الآبار مصنف عبدالرزال استف این ابی شیب علی سخاب اور تا بھین کے ہزاروں کی وئی بین جن بھی شہ انو کی وسینہ والوں نے فتو کی کے ساتھ آیت یا حدیث کو بطور دلیل بیان کیا شامل کر ان ایستہاں انقلید کا وا وں نے ان اجتم وی فاو ک کی رئیل کا مطالہ کی ، جلا مطالبہ علی کہا تھی تھی اور اجتہاں انقلید کا مشر استفاد ہی جھنڈا اور بڑی کی ویسل مہدالتہ بہاولیوں مناظروں میں ایک سحائی اور تا بھی کا نام چیش نہ کرستے جس نے فتہ اور اجراع کا انکار کیا ہو واجتہا دکا واجیس اور تھی۔ کوشرک قرار دیا ہو اس لئے ان کو جلی حدید بھی مشرکر تقدر مشراجی اور اجس اور تھی۔

اجتهاد تحليد كبنا فهايت كندا جعوث ب.

(غ) آب سفه بسیم غیرمقلد کیون کها، هم آدانل حدیث بین ایم صرف قر " ن و حدیث کو مانند بین اور بمن .

(ح)آپ اگر صرف قرآن و صدعت کوی ماسنته بین قرآن و صدیت ست اینا نام می تابیت کرد چیچ کدانشد قبان اور رمول الدی آن کی آن نے فرایا ہو کہ برطانید کی غیر اسامی حکومت میں آبک فرقہ پیدا ہوگا جوفقہ اور اجماع اور اجتماع و تعلید کا مشکر ہوگا ، اس کا نام المل صدیت ہوگا ، وونجات یا نے والا ہوگا ، ایسا کوئی تجدیث ٹیس۔

(غ) ... ہے ایس پیلے آپ کی طرح حقی تفاریس نے صاب صان الجی ظہم کی ایک ۔.. ہے ایس بیلے آپ کی طرح کی آیک ۔.. ہے کہ برے حقیق کا دیس بغاری ہے کر آتا ہوں ہم ہیں ہوں ہے کر آتا ہوں ہم جائے ہوں ہے کر آتا ہوں ہم جائے ہوا ہے کہ آتا ہوں ہم جائے ہوا ہے کہ آتا ہوں ہم خات ہے کہ آتا ہوں ہم جائے ہوا ہے ہوا ہے کہ است میں کرفور آباز اور کیا اور وہ اسے علامہ وحیدائر مان صاحب کے نزیجے اور حاجے و کی بخاری شریف فرید کر لے آیا رآئی علامہ اصاب کی صاحب کی طرح میرا بھی جائے ہی شرح میرا بھی ہا ہوں ہے کہ کوئی مقابلہ میں آتا ہے ہی چوکھ آورو والن ہوں اس کے اردو طرح میرا بھی ہی شاہد میں آتا ہے۔

(ح) میچ بنادی الل انت کی حدیث کی کتاب ہے اور تعلیم ایاسلام الل الدن کی فقد کی کتاب آپ ہری بچ بنادی کے مقابلہ میں کی فیر مقلد کی حدیث کی کتاب لاکیں اور تعلیم الاصلام کے مقابلہ میں کسی فیر مقلد کی فقد کی کتاب لاکیں۔ عنامہ اصمان النی ظهیر کے دفتر کے ساتھ مشکرین مدیث کی کوشی تھی۔ آنہوں نے باد ہا تلمیر کوشینج ویا کہ اہم قرآن سائے کرآ ہے جی اہم فیر مقلد کی تعلی ہوئی حدیث کی کتاب لے کرآؤڈ کھرا صال

الخاية فرض مرير سائكر مركبار

(خ) یہ تو جہالت کی بات ہے۔ قرآن اور صدیث مقابلے کی کمائیں تھوڈا ہیں ،ان میں تو اجمال د تفعیل کا فرق ہے۔

(ے) ۔۔۔۔الک کی جہالت آ ب کی ہے، فقد اور حدیث مدخفا تلی تھوڑے ہیں، یہ تو تعییر وقتر کے ہیں۔ حذیث افغا فارسول کو کہتے ہیں اور فقہ مراد رسول کو جہتے کا اعلان ہے کہ ہم قیاس سے مسئلہ گھڑتے تہیں، ولک یوشیدہ مراد رسول کو خاہر کرتے ہیں۔

(غ) لیکن قرآن پاک کے بعد تو تفادی کی خرورت ہے، کیونکہ بہت می نفاصل قرآن پاک بھی نہیں ہیں ، تکر بھاری بھی تو تمام تفاصل موجود ہیں، اس کے بعد اللہ ایک بے خرودت ہز ہے۔۔

(ح) بہت ی تناصل بخاری بھی نہیں ہیں، جس کے سالتے ہمیں فلدگی خرورت ہے۔

(غ) یہ بات بالکل غلا ہے۔ اہام بخاری نے مرف قرآن د مدیث سے دین اسلام کے تن م مسائل مرتب فرما دیے ، ہم تماز روز و، قع ، زگز تا کے تمل مسائل بخاری پس دکھاتے ہیں بتم قاس اور اُبھاح اور فقہ کے اندھیروں میں تھرے ہو۔

(م) ... معلوم ہوتا ہے كرتم تے بخارى يا مح نيس .

(۱) منام بخادی تبهاری طرح فته کے منکرتیں دوہ حضور ﷺ کی اسادیث ہے فتہ کا خبر ہونا (ج الرص ۱۹) اور فقها مکا خیار ہونا (ج الرص ۱۹۷۹) کا بت کرتے ہیں۔ آپ بخاری شریف ہے ایک مدیدے کھی فقد کی برائی شرقیمی دُنھا کتے۔

(٣) اوم بنارى في محابدادر البعين كانتهى فراوى بار وكرويس بغارى من وكر

قریائے ہیں، خوابھی تراجم ابواب ہیں فقہ ہے کام نیا ہے۔ مشکرین فقہ کوامام بخاری ہے كيانبيت يدنبت فأكراياء لم ياك

آب کے فزد کی قریمی احتی کے تول کو لینا شرک ہے اس لئے امام بھاری معاذريقدنه صرف مشرك بلكهشرك ثرينكيابه

(٣) - آب نهارخ آمت کو جمت نمیل بائتے (عرف الجادی ص٣) ادم نفارتی ا بھاٹ کی اصادیت لیے جس (جھامی 200 مجا کا **/س ۱۰۲۵**)

(۴) - آبیہ قیال کو کام الیس کہتے ہیں، الام جغارتی احادیث لانے ہیں کہ خود آخفرت ﷺ قباس کرتے ہے(ج الزم الس ۱۰۸۸)

ہ ہے رات ون مجتمد میں برطعی کرتے ہیں جبکہ افاری کی عدیث کے مفابق مجتبدكو برحال بن ابترملنا عند الرصواب كويتيج قدد وابر ادر خطا بوجائ توجعي أيك (:-9r, //rz.) 21

(١) المام ہفاری نے اپنی کتاب میں خوارج اور جمیہ مگراہ فرقوں کے زو نک باب بالدهيم جن وانكدار حدكي فقداور ان كي تخليد كي زوش كولي باب نبيل بالدهاب

(ﷺ بے نے اتنی و تمی بیان فرماویں ، سیتاہیے کراجتماد یا تھنید کے ورے میں قبريا حشر مين سوال بيوكا_

(ح) ... تبريس سوال كاوتت توخفرے قبرين منائقين كى تباست تك فرشتے يناك تری کے قربر باریکیں گے لا شفیٹ و لا حزبت، خاتوصاحب درایت یعی جہتد تھا ا در نه بن صاحب تغفید به غیر مقلد دیاواب قیامت تک پیزه رود ۱۹/م ۱۷۸ اور قیامت كريركيِّتِ : و نع دورٌ عُ مِن جانا فَوْ كُنسًا لَسْسَعُ أَوْ شَفَقِلُ مَا كُمَّا فِي اصْحَابِ الاشتسبينسو المنافريم اللي مقمل واجتهاد كي ينته يا خودصاحب عقبل واجتهاده و ترقع آخ وورخ مين منه طلقه يهنا

(عَ).... مُندجِجَد مِن جَس تَو مِعَال احرام اور جائز ونا جائز کا . فعلّاف ہے۔ دونوں کو درست کہنا پر سلے دوبید کی جانت ہے۔

(ح)..... رفروقی اختلاف تو اعادیث شی مجسی ہے، محابہ میں ہمی ہے، قرآن باک کی قر اُلوِّں میں بھی ہے، خود غیر مقلد بن میں بھی ہے، محد تین میں بہت کی احادیث کے مجھے وضعیف ہونے بھی اختلاف ہے رقرم ن پاک کی بہت ی آیات کی تغییر ش اختلاف ہے تو کیا قرآن باک، اعادیث، سحابہ اور محدثین کو بھوڑ ویا جائے گا اور اس مک، مک تو صرف احماف جی میار و سوسال تک کوئی اختاا ف ند قدام یه خناوف آب نے بیدا کیا تو كَنْتِكُورَ آبِ بُوكَ شِرَكُونَ رَسِينَ ! آنخفرت عَلَيْكُ فِي لَيْكَ نَظُر دِمَازَ فرمايُ. لا بتصمين احدكم العصو الافي بني قويظة (شنق عايه) ك بزَّرُ برَّارَ عمرُى تمارُتُ يز منا تكريل تريط من راب جب معركة آخر واقت اوكيا توبي فكرابعي واحت من عن قعا تو انتلاف موكيا كرمعركي نم زواج بل وقت ير باهي جائد و تضاكر ك اوقرط میں بڑمی جائے ایک فریق نے داستہ ش بڑھ لی (کیوند قرآن یاک میں کلیے قائدہ ے: ان العنسانو فركانت على المَوْجِنِينَ كِنَابًا مُؤَوَّدُنَا. عِدَّسَهُ مَعَانُول يَمَادَ اسینے وقت پر فرض ہے) دوسرے فریق نے قشا کرکے بوقر بھا میں جا کر بیڑی (ان ك خيال جين آج كي نماز اس كليديت مشخي تحي) جب معترت القدس مُنطِيقُهُ ويهَ عِلاَو آئی رہی ہارائنگی نہ فرمائی۔ اگر اس زیانہ میں غیرمقلدین ہونے تو تھی کومنکر قرآ ل کہتے ، اس کو مشکر حدیث بناتے اور سنتے کہ اتنا بڑا اختلاف: وقت کے اندر نماز بر عن اور

جان لا ہو کر ہے واقت نماز پڑھنا دونوں کیسے (سی) ہو چکنا ہیں بھر یہ نوگ ایک یا تال چس کی یا کہ منگلینے کی احادیث سے انکار کرجائے جس۔

(ﷺ) ۔ آپ ہوتی ہوسات جارہ ہیں، یہ تانیے کہ بندری شایف کے ہوئے اور نے تعلیم الاسلام کی کیا شرورت ہے؟

(ح) (۱-۱) بنا ب من إتعيم الرسنام سني ۱۵۱ پر ايران كا تعريف درج ب، مخوصه ايران كار تعريف درج ب، مخوصه ايرن تغريف درج ب ايرن تغريف اورج ب ايرن شريف اورج ب ايرن شريف ايران ديم تغريف ايرن تغريف ايرن ايرن تغريف ايرن ايرن تغريف ايرن ايرن تغريف ايرن ايرن تعريف المران ايرن تعريف الربال ايرن تعريف المران ايرن تعريف المران تعريف ايرن ايرن تعريف ايرن تعريف ايرن تعريف ايرن تعريف ايرن ايرن تعريف ايرن ايرن تعريف ايرن

(غ) فردد بخادی چی کتاب الایمان صفیحال کسے بچھے ایک گھنے ک مہلت و تر۔

ا ب تلاش شراع بوئی ، ب جار ، ۱۰ نے بہت پاتھ میں اورے کم دیکھ بھیب لما شاجان جمل شاجان منعمل ، شاجان ، کفر شرک ، بوعث کی تعریف .

(5).

ر ۱۰۵)... ویکھا کافر کوسلمان ہم می کرتے ہیں، اب سلمان ہوئے کے بعد سب سے اہم قرش فرز ہے جس کے سے اذائ کہا جاتی ہے۔ تعلیم الاسلام صفی ۵ ریکھل اذائن باتر جمہ موجود ہے، آپ بغاد کی شریف میں کمل اذائن سے کلمات دکھا دیں۔ (ق)متریم بغادی میں کئیب الاذائن صفیہ ۲۰۰ ہے شروع ہوکرمنے ام ۵ میک می ہے۔ ان ۱۳۰۱ صفحات بیمی اور تو بہت بیکھ ہے تکر نداذان سے تمل کھاست ہیں نہ ا قامت سے ، جیکہ تعلیم الاملام سنی ۱۹ پر اقدمت کا تعمل خریف ہے۔ تحر چربھی ہم اوّک کی پاکستان کے طریقہ پر ہیں، کوئی ایک بات ہے کیں جو ہم میں ایک ہو کر گی ماک سے برد نہ ہو۔

....(2)

﴿ رَبُّ ﴾ آپ نے یہ گیارہ ہاتیں جوفرہا کیں واقبی آئن تک میں نے حدیث میں ان کا جوٹ ٹیمیں دیکھا۔

(ن)(۱۸-۱۸) ... اب اس نوسلم نے نماز کی تیادی کرئی ہے ،سب سے پہلے شرائط نماز کی خرورت ہے ۔ تعلیم الاسلام مقدم ہم پر نماز کی سامت شرطیں کھی ہیں جو زیاوہ سے زیادہ پانچ منٹ میں وہ یاد کرئے گا جنہہ بھاری شریف میں اس آ سال اور عام جم ترتیب سے شرائط ندکورتیں ۔

(عُ)انام بھاری کا اُردو ترجہ اے وید دیں گے، وہ ٹود شروانکا طائل کر لے گا، اگر پرجمیں آخیہ کئی __

(٢) وه در مديماري يز تذكر اور ساته تعيم الاسلام كو و يكوكر بريتان بوجائة كاء

أيونك كالش يول بوكا

(١) ---- تعليم الماسلام "إبران و يأك بومًا شرط هيا" (صفيه ٢٥) بندري: " فماز مي

آبِ اللهُ كَارِيم مِنْ مِاست لكسكي آب في مازندة زي (١٥٥م)

(۱) ---- كيزول كاياك بوناشرط ب (ص٥٦) تمازي كي پشت بر كندگي اور مروار

وْ الله وَ يَا جَائِبِ تُوْ مُمَا رَفْتِينَ تُوفِقَى ﴿ إِنَّ الْأَمْنِ اللَّهِ }

(۳) ---- حکمہ کا پاک ہونا شرہ ہے (ص۲۳) جانوروں کے چیٹا ہے اور گو برل میڈ برغماز جانز ہے والام کی نے جسمی (ریٹا ارض ۲۰)

(٣)---- ستر (ناف ہے گفتوں تک) جمیانا نرش ہے (ص ۴۴) ستر سرف آل اور

ویر ہے لیکن عمرف آلد توسل، تھے اور مقعد (تھیم الباری بن ارض ۲۸۳) اس متر کا وُصالکنا فرش تبین ہے (تیسیر الباری بن انوازی م

(۵) ---- وقت بھی شرط ہے (من ۴۳) ہفاری شریف علی کمیں وقت ٹوشر یا آرار انتخار رہا۔

(۱) ---- قبلہ کی طرف مند کرنا شرط ہے (۳۳۳) اگر کوئی نماز پڑھ لے اور اس کے کہرے کہرے میں خون انگا ہو یا کن گئی ہو یا قبلنے کے سوائسی اور طرف نماز پڑھی تب بھی نماز ند الوائے (تیسیر البادی من الرم ۱۱۱)

(4) - --- نیست شرط ہے (ص ۲۲۷) بغاری شریف متر تیم آردو بیں نماز کے ابواہ صفح ۱ سے صفح ۲۲۱ کیک جین دلیکن نیت کا شرط ہونائیں ہے۔

کیا آپ نے ایک دن ہی الک نماز پڑی کردہم پاک ہونہ کیڑے دیگر ندونت کی بایدی زقید کی دربیتہ کی ضرورت زمن و حکتے کی۔ (فع) آن تک تو موقع نیمی طاه احارے موادی ساحیان ویسے می جائے دے کہ تمیاری تماز بخاری والی ہے۔

(ح) (۲۰-۱۳) تعلیم الاسلام علی ہے کہ اگر سرد خورت ہے حجب کر سے قو مشاری شریف ہیں ہے کہ جائے ہے مشاری شریف میں ہے کہ جائے ہے مشاری شریف میں ہے کہ جائے ہے حسل فرش نہیں ہوتا ہے۔ از ال تد ہو (تیسیر البادی نجائی ہوتا ہے۔ از ال تد ہو (تیسیر البادی نجائی الب سوال ہی ہی ہے کہ شریف فرش نہیں ہوتا۔ اگر ڈائی زخ کرے ادر از ال نہ ہوتا حدول بسہ ہوگی یا مشیری ایک ہی ہے حدکا وجہ ہے دکھا کی۔

سن ، بعادی سے مدہ و دیوسیار مل ہیں۔ (ع) بین این کدائی اوسلم کو پاک ، ٹاپاک کے سمائل آپ کیے بتا کیں ہے؟ (ح) (۲۵-۲۵) تعلیم الاسلام بیں آیک ان چکہ تحریر ہے: آ دی کا چیٹاب پافات، جانوروں کا بیٹاب پا خاند اور حرام جانوروں کا چیٹاب اور آ دی اور جانوروں کا بہتا ہوا خون اور شراب اور مرقی ہور للخ کی بیٹ نجاست قلیظہ ہیں، طال جانوروں کا بیٹاب اور حرام پر تدول کی بیٹ نجاست خلیفہ ہیں (تعلیم الاسلام ص ۵۰)

محرتیم البادی سفیده ۱۹ پر ہے: کما پاک ہے، کے ادر حزر کا جوتا پاک ہے۔ مقدان کا برخان کا جوتا پاک ہے۔ مقدان کا برخان کا جوتا پاک بردوسرے آدمیوں کا قبال ہوسکا ہے (لیتی سب کا بیٹاب یا خانہ پاک ہے) معنوان کا پر سخوان کا پر ہے خون پاک ہے۔ مغدان کا برے کی پاک ہے۔ مغدان کا برے معال جانوروں کی لیداور پیٹاب مورت کی فرق کی رطوبت پاک ہے۔ مغدادہ ازری فنزین شراب اور مرفی دینے کی برے کوئی کی برید کوئی کی برید کوئی کی برید کوئی کی برید کوئی کا برید کوئی کی برید کوئی کا کا کوئی کا کا کوئی کا برید کوئی کا برید کوئی کا برید کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی کا کوئی کا کوئی کوئی کوئی کا کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی کا کوئی کا کوئی کا کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی کوئی کوئی کوئی کوئی کا کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی کا کوئی کوئی کوئی کوئی کوئی کوئی کا کوئی کا کوئی کا کوئی کوئی کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی کوئی کا کوئی

(۳۷) پائی کے بارے یمی تعلیم الاسلام میں ہے کہ تعودا بائی تجاست کے کرنے سے تاباک ہوجاتا ہے ، خواہ اس کا رنگ یا ہو یا مزہ ندید کے (ص ۵۸) لیکن بندری میں ہے کہ جب تک نجاست سے بائی کا رنگ یا ہو یہ و شدید کے (ص ۵۸) لیکن بندری میں اس کے کہ جب تک نجاست سے بائی کا رنگ یا ہو یہ اس دی جمودا کی دیر کے بعد ایک اور کے جا آئی ہی ذیک ہیالہ بیٹا ب ذائی دیں جمودا کی دیر کے بعد ایک آئی کو جا کہ کو جا کہ کو جا کہ کو جا کہ کہ کہ کہ تا دائی کا رنگ یا مزہ یا ہو گا ہو گا ہو تا ہو ہو گئی تجاست سے جدلا ہے وہ کے دیں کہ تا کہ اس میں ہو کر ہو گئی ہی ہے ، اس سے دوسور شمل کھا تا بیٹا سب بوئز ہے بی اور شمل آئیلیم الاسلام کے سائل پر سے ، لیکن غیر مظلد ہی ہم بخاری بخاری بخاری ایکا ہے ہے وہ وہ اگر نہیں تکر بخاری ہو اس کی سائل پر سے بیل سے وضو جا ترقیمی تکر بخاری ہو ہے۔

(۳۷-۳۷) قصیم الاسلام می نفزیده شکاری چواے کے جمع نے کو تاپاک کھا ہے اس طرح ملی جو با کھا کر ابنا خون آلود مند پانی میں ڈال دے قراس کا جموع می ٹاپاک ہے۔جس آ دی نے شراب کی موادر قوراً پانی کی لیا ہو اس کا جمونا میسی ٹاپاک سے (۵۵) مگر افسوس کہ بخاری میں بیرد ذاتہ بیش آنے والے سیاک می موجود نہیں ہیں۔ (۳۲-۳۲) تعلیم الاسلام منو ۵۱ میں پرتشمیل ہے کہ انتجاء کی فرض ہے تک

سنت ب ادر تمب مستحب ؟ محر بناري بن كوني تنسيل كين .

(۱۲۷-۱۲۷) تعلیم الاسلام صفیری، ۱۸۸ پر وضو کے فرائفش سفن استقبات، سمرہ بات اور تو تعلق کی تعمیل ہے۔ بغادی میں کچریمی کیں۔

. (۳۹) تعلیم الاسلام سلح ان برشع سوزه کا طریقه درج به جبکه می بخاری بی شی موزه کا خریقه برگزدرج نیس -

- (۵۰) نعلیم الاسلام صفحه ۵۱ پرستح سوزه کی حدیث کی تغییل ورج ہے، جبکہ پخاری شریعیت بیمن حدیث کی کوئی تغییل فہیں۔
- (۵۱) ۔ بخاری سنویس پر ہے کہ آنخسرت نافیٹ آیک ید پائی سے وضوفرمائے اور آیک صارع بال سے فسل فرمائے اور بیامی ہے کہ امراف سے سطح فرمائے لیکن آج کل تیرمغلد بن ٹوفنوں پروضو وفسل میں بہت امراف کرتے ہیں۔
- (۵۲) ۔ وقعومیں چیرہ کا دھونا فرش ہے اب یہ علی ضروری تھا کہ چیرہ کی حد کیا ہے؟ پیشیم الاسلام صفحہ ۸ برہے ، تفادل میں تھیں ہے۔
- (۵۳) ۔ وضویش بعش انعضاء کے دھونے اور بھش کے سمح کا ذکر ہے۔ مگر ان دونوں میں کیا فرق سب ہاتھیم الاسلام مقد ۸۱ ہر ہے ، بھاری عمل نیس ہے۔
- (۵۴) کانوں کا منع بالد تغاق منت ہے۔ تعلیم الماسلام منی 10 پر کانوں کے منع کا طریقہ درج ہے۔ بھر بخاری علی بیاد وزائد ہیٹن آنے والا مسئل نیس ہے۔
- (۵۵) تھی الاسلام سنی الا پر دخو کے تمام آ داب فدکور ہیں، بھاری میں دخو کے بعد کر شہادت اور دعا بھی فدکور تکل ہے۔ ہدوخو بوطو آ پارٹی مرتبدر دازان کیا بیا تا ہے اس کی تفسیلات بھاری میں نیس ہیں۔اب فرمائے ایام بھاری دخو کیے کرتے تھے؟ کوک تفسیلی سائل بندی میں نیس ہیں،اس کا ایک کیا جاب ہے کہ وہ فقد شافع کے موافق عمل کرتے تھے۔
- (ق) آ پ س پر بوا افز کررین چی کرامام ابوطیفهٔ نے سنت کی تدوین کی گروہ تو بدقی هی ۔ ساری دات عبادت کرنے تھے۔ کیا اس کا ثبوت آ پ چیش کر چکتے جین؟ کیا اس کا ثبوت ہے کے مشور منطقی نوائل جیں آئی شدت فریا ہے تھے؟

(ح)الله تعالیٰ قرآن یاک میں نیک بندوں کی صفات میں فرماتے ہیں۔ نیپینون لمرتبه مُ سَجِّدًا وَقِيَّامًا (سورة الفرقان) كدوه رات تمازيس كزارويية بين حضور علقة آخرى عشره عن رمضان على بسريرندآت تفريخاري حارص ١٢٥) آب نے ماری دانت میادت فرمائی (تبائی جا/ س-۷) آب علی نے ماری دات ایک آیت درائے درائے ازاری (این بدس عو) آپ تھے کے وال مبارک سوخ جائے تھے(بخاری) کیا غیر مقلدین ان آیات واحادیث پرقمل کرتے ہیں؟ ہرگز نہیں۔ بال عمل كرف والول يرطعن كرتے بيں۔

(۵۲) ایجا درایه فرمایتے که امام بخاری برحدیث نقل کرنے سے پہلے قلسل فرماتے اورودلل يرصعه مرسنت عابت يو بايومت ب

(غ) ہم تو یہ جانتے ہیں کہ جو گھن بخاری شریف کی حدیث پرعمل نہ کرے وہ كافرىء دائر واسلام ى خارىن ب-

(ح) آ پ نوے لگائے ش بہت تیز بیں ، تی بخاری ش الی احادیث بھی بی جن يرخودامام بغاري في علن فيس كيا-

(غ)ايا بركزنين جومكاء آب ايك مثال ويش كرين ، كيا جارے على بخارى شریف کامطالعہ تیں کرتے؟

> (ح).... ب مثق مر جو رضات بل بخاري آتا ہے بخار ان کو بخاری قبیس آتی

(۵۷) سنتے احضور عظی نے فرمایا: جس نے بھیشہ روز و رکھا، اس کا روز و نیس جوا (ج الص ٢٩٥) محرابام بخاري صائم الدبر تص (المير ان الكبري) (۵۸) - حضور مُنظِیُّ فریائے ہیں جس نے تمین دن ہے تم جی قر آن ختم کیا وہ ہے۔ ''جو ہے (ہے؟'می ۵۹ مے) امام بخاری روزائے قر آن ختم کرتے تھے۔

(بغدادي ج ١٢٠٥)

(۵۹) - صنور ﷺ نے تری اونیا کی معیبتوں سے تک آ کرموٹ کی تمنا نہ کرہ

(جَ المِس عام)، مام علاي في أما على الحجد رموت في (بغدادي جام المراس)

(10) - حضور ملکی نے فرمایا: کئے کے جمونے برتن کو سامت مرتبہ دھو دو، محرابام مقارق کئے کے جمونے ہے دخو جائز کتے ہیں۔

(11) ۔ اس مدین سے معلوم ہوا کہ وہ پانی ناپاک ہوجا؟ ہے جس جس کا منہ ڈالے مگر اوام بندری فرمائے تین کہ جب تک اس کا رنگ یا ہو یا عزو تجاست سے تہ بدے قو یاتی ناپاک نیس ہوتا۔

(۱۲) – بناری پس ہے کرحتود می گئے نے تماز انسسسد سے شروع کی۔ امام ثاقق بغیر ہم اللہ تر دکھیج ٹیس دیجے۔

(۱۳) - بخاری جی جو تیم کا طریقہ مدیث عیداً تا ہے ایام شائق کے زویک ای طرح تیم نیس ہوئا۔

(۱۳۳) - بخاری می ہے کہ جب امام بیٹہ کر زنز پڑھائے تو مقتدی بیٹہ کر زماز پڑھیں۔ نام شائن کا پر سلک نہیں ہے۔

(۱۵) سیناری میں میز رمجلس کی صدیدے ہے اور امام مالک خیار مجلس کے تاکل نہیں ہیں۔

(١٦) عارى من بركرة مخضرت على في جاتفانى مرير مع فرمايا، المام مالك

فرمائے بیں کرمیادے مرکامی فرق ہے۔

- (۱۷) ۔ بغاری میں صدیت ہے کہ جس نے بہم فک کا دوزہ رکھا ، اس نے آبی مکھنے کے سے خاری مدید ہے۔ آبی مکھنے کے خارج کے خارج کے بہتر ایک ہے ہے۔ کہا ہے کے طریق کی اللہ کی اللہ کے اللہ کی اللہ کا اللہ کی اللہ کا ال
- (۲۸) عزاری تا الرص ۵۷۵ فسائی قطرت می نعند الاید کے الفاظ میں کہ بغلوں کے بال آکھازو۔ آپ منذواستے ہیں۔
- (۲۹) بخاری ج ۶۲م ۹۶۳ پر باب با نده کرده با تعدید معافحه کی حدیث لائے بیں۔ آب اس کو بدعت کیتے ہیں۔
- (40) بفاری جا کر ۱۷۸ پر ہے کہ مردہ جو تیوں کی آواز منتز ہے، آپ اس مقیدے کو شرک کہنے ہیں۔
- (21) علاری جارم سوم پر طوی اور حانی تیبتوں کا ذکر ہے، جیکہ آپ آسٹی کی طرف نیست کرنے کھڑک کہتے ہیں۔
- (عُ)......(اسینا مولوی صاحب سے) آپ صب مسکم کی تصویر سے بیٹے ہیں۔ اپنی معید میں تو بہت شور کیاتے موادر بھاری بغاری بکارے رہے ہو۔ آئ مند میں مسلکیاں ڈال کر کیوں بیٹے ہو۔
- (ح)(۷۶)....اور شنے المام مغاری باب بائد سنے بیں بھی سے خاہر ہوتا ہے کہ ایک کلید سے تمن طلاقیں دی جا کیں تو نافذ ہوجائی ہیں۔ اس پر جار احاد ہے بھی لائے ہیں دلیکن آب اس سے محر ہیں۔

(۷۳) آپاؤٹ جو کچرک افاق ٹی انسعسنو ہ جیو من الدوہ کیتے ہو، یہ نفاری مراکعی تیم ہے۔

(۱۵۰۷۳) سند تعلیم الاسلام منی ۱۸۳۰ به اوقات نماز پوری تغییل سے درج ایس ایکن آپ مغاری سے مرفز نہیں اکھا تکتے کہ تم کی نماز کا وقت کسیختم ہوتا ہے نہ پہر وکھا کتے جن کے عمر کا وقت کسد شروع ہوتا ہے ۔

(۷۷،۷۷) تن ان من منج بنادی بی کوئی به وکها سکتا کیا که مغرب کا دفت کب قتم موتا بے اور منتاری کب شروع موتا ہے۔

(۱۵۸) - بناری ۱۳۴۰ می ۱۳۸۸ کی حدیث سے کتابہ ہے کہ کہ ہے گئے گی عادیت افر کی نماز روشی نئی چ سے کی تھی دگر خیر مقلدین دن کی ابتداء بی بخدی کی حدیث کی مخالفت سے کرتے ہیں دونماڈ اندمیرے بھی چ سے ہیں۔

(29) - بغدی سفیرے ۸۸ مند کلابر ہے کہ آپ بھانے کے تمبر کی نماز نیوں کا سامید برابر ہوئے پراور فر الکی رئیر متعدین مثل دومزکو وقت تغیر نیس تھی مائے۔

(۸۰) - تعلیم الاسلام سخی ۱۳۱۰ بیل نماز کے ارکان کی کھل تفصیل ہے، جبکہ بخاری شریف چرا ارکان کی کھل تفصیق مرکزتیں ہے۔

(A1) — تعلیم الاسلام سفی ۱۶۸ پر واجبات نماز کا تعل تنسیل ہے، جیکہ بغاری شریف جین نماز کے ورجهات کی نمبیل نمیں۔

(۸۴) - تعنیم الاسرام جنی ۱۲۹ پرسنی نمه ز کی تکمش تفعیل درج ہے۔ جبکہ بخاری شریف میں بسنون کی تکمل تفعیل درج نہیں۔

(۱۳) العليم والملام سني ۱۳۱ ير نماز ح مستبعث كي تيمل تفسيلي أب ويك بغاري

شريف مي ممل تنصيل نيس --

(۸۴) تعلیم الاسلام صفی ۱۹۷ پرمنسدات نماز کی تعمل تفصیل درج ہے، جبکہ بخاری شریف جس تعمل مضدات ندکورجیس۔

(۸۵) تعلیم الاسلام سفحہ ۱۹۸ پر تروبات نماز کی تفصیل درج ہے۔ جبکہ بخاری شریف میں تفصیل موجود نہیں ہے۔

(٩٢-٨٧) تعليم الاسلام عن قرض، واجب، سنت استحب، مهان مكروه، حرام

کی تعریفات، ان کے ثبوت کا طریق ، ان کے متکر اور بلا عذر چھوڑنے والے کے احکام درج میں۔ بخاری میں ان میں ہے چھوبھی درج نبیس ہے۔

(ع) (اپنے مولوی صاحب ہے) سرے! انٹی بوٹر کروائی، سارے وقوے غلط ہو گئے۔ اب موام کو کینے وجوکہ دیں گے کہ ہماری مکمل قمار میج بخاری شریف میں

-4.99.90

(ح)....(۹۳)..... پراييا مجمونا دنوي تجمعي نه کرنا آپ کامنفر د ادرمنتندي تحبير تحريمه

آبت كتي بين، اس كافيوت بخارى بن كبين فين

(۹۴) شاء سبحنک اللّٰهم جس کاحضور ﷺ نے تکم دیا، جس پر خلفا وراشدین کامل رہا تعلیم الاسلام میں ہے، بخاری میں تیں ہے۔

(90) شاآ ہت پڑھی جائے یا بلندآ وازے، بخاری میں امام کا آہت پڑھے کا ذکر ہے اور مسلم میں بلندآ وازے پڑھے گا۔

(٩٦) معتدى كا تا آستد يزهن كى حديث ند جنارى من ندكى اور كتاب مين،

البعاناني عن باعدا والسيدية عظ كى مديث ب

- (42) اکیلافازی تا آبیند پاحثا ہے تم ہلاک بیں اس کا ٹیوٹ بھی دل سکا بلک کی مدعث کی کاب بھی شال سکا۔
- (۹۸) ۔ بخاری علی نماز عمل باتھ باعدے کی مدیدے ہے محرکہاں باعدے مر پر یا کہاں جمعوما بیدی مراحد دل کی۔
- (99) تعلیم الاسلام علی نگا کے بعد تعوذ ندگور ہے اور سب چاہتے ہیں محر بھاری شریف میں طریعی نماز میں تعوذ کا اکرٹیس۔
- (۱۰۰) ۔ آ ب کے منفرد ، منتقدی اور امام بھی نماز عیں تعود آ ہند پزینے جی محراس کا شہرت بنادی شریف عیں برگزفینی ۔
- (۱۰۱) فمال ش قاتوسے پہلے سب بسسم اللَّٰتِ الوحسن الوحیم یہ ہے ہیں۔ علائی شریف بٹی طریق فاز عل بسم اللّٰہ تذکوری تھیں۔
- (ior) خیرمفندین انترتمازش بسسم اللّه الوحسن الوحیم بلترآ دازے پزشتے بین اس کا نبوت نفادی ش کی کی نیما۔
- (۱۰۴) خیرمقلد اکیلانمازی ادرمقذی پیشه بهم الشائریف نماز شد آ بسته پژمتا ب ایکن اس کافوت بخاری شرایس -
- (غ) ...(۱۰۲) ... (اپند مواوی سے) اور علامدا حدان الحی طویر ہے لوگ جسیں خلفہ اتوں پر نگا گئے۔ ہماری جسم اللہ فن بخاری بھی تیس ہے۔ اب تو فاقعے کا ذکر آ کیا ہے، جلدی سے وہ مدیث و کھا دوجس بھی آ پ عظیفہ نے فر مایا ہے کہ پوستنڈی مری یا جمری فراز بھی فود امام کے بچھے فاقعے فدیز جے اس کی فراز باطل اور سید کا دہے۔

میادی صاحب نے کہا کر پہناری شکافیزر ہے۔

(غ)(۱۰۵).....(بہت نصے ہے) مثلیا تائل ہوگیا جادے غرب کار انجا وہی صریف غاری وکھا دوجس جمل صفور ﷺ نے فرمایا تھا کہ سورۃ فاتحہ کے علاوہ باتی ۱۱۲ سورتیل امام کے چھیے پڑھنا ترام ہے اور پڑھنے والے کی تماز باطل ہے۔ بیالو بخاری شریف۔۔

اس مولوی نے کہا: رہنے دو، اس کا ثبوت مجی بخار کی شریف میں تہیں ہے۔ (ح) (۱۰۲) اچھا مولانا! جس مقتری کی ایک یا وو رکعت رہ کئی ہوں وہ امام کے جد کھڑا ہوکر میکل رکعت شریاتا ہ، تھول بشرید، فاقحہ اور سورة پڑ متنا ہے، دوسری رکعت جس فاتحہ وسورت آجت بڑ حتا ہے اس کا ثبوت بغاری ہے دکھادی۔

موادی ساعب بار بار بریشانی سے بسیدسان کررہے تھے گر جوت بیش ند کر سکتے تھے۔

(غ) ...(۱۰۹-۱۰۹)...(اپنا مولوی صاحب ہے) جب ہم اکیے نماز پڑھتے ہیں آئین پھیٹر آ ہستہ کہتے ہیں اور جب منتقل ہوتے ہیں تو کھارہ رکھوں ہیں آئین آ ہستہ کہتے ہیں اور آ پ بھی امام ہیں کر کھارہ رکھتوں ٹیں آئین آ ہستہ کہتے ہیں۔ اس کی تین احادے ہی دکھادیں۔ اوب مرنے کو کی جگرٹیں کھتی؟

مولوی صاحب نے کہا کہ الی کوئی مدیث تیں ہے۔

(۱۱۰-۱۱۱) اچھا ہمارے مقتدی روزاند صرف چید رکھتوں ہیں اور امام بھی صرف چیدرکھتوں میں آ بھن بلندآ واز سے کہتا ہے، بیل بغاری شریف بھی و کھاوو۔

مولوی صاحب: (جمنجلاکر) برکیا زن ہے مدیث دکھادو، بخادی جی دکھادو، بھن جی دکھاسکیا۔ (۱۱۳-۱۱۳) بیتو آپ کسی قرمادے تھے کہ بخاری میں فاٹو کو قرش ورسودت کوسٹ کھا ہے، میکی دکھا دو۔

مجھی کہاں ہے اُھادوں؟ ب رکوٹ کے ماتھ دفع یدین کا مسئلہ آ رہا ہے جو جادا مسرکت اماً را دمسئلہ ہے واس پر نہ ہے موز تی کروانا۔

(ح)(۱۱۳) آپ وگ دوسری اور پوکنی دکھنٹ سکے شروع میں رفع یو بن کئیں کرتے۔ اس سکے منع اور حرام ہونے کی عدیت او کمی تاکہ ہم جان لیمی کر آپ کا بیا منظ مذریف تفاری سنت تاریت ہے۔

(عَنَّ) أي توالية أم نه بخار كن من وثيل كرينكة وبي عدى و يو كر كهن اور هديد يدي ك " كناب ويل من ب

(ر یا) (۱۱۵) آپ جو کہتے ہیں کہ جو تبریری رکعت کے شرور ٹامیں رکع یو ہیں تہ اگر کستان کی نماز ٹیل ہوتی میں حدیث بخاری میں دکھ دیں۔

سر سندا می محاریال ہوئی میرحدیث بھاری اس دھا دیا۔ (رغ) ۔ ۔۔۔۔ بات کرجو رقع یا این مذکر سندان کی نماز تیس ہوتی میں بات کیا صاب اس کے ارشاری کیس ۔ ی رہے موادی صاحب بالکل فیر اسدواری سے کہدو سیتے ہیں والبند اس کے کرنے کا شوت بھاری سفیرہ واپر عدیث اللّٰج عن ابن تمریش ہے۔

(ٹ) (11)).... ایام بغاری کے داور آستاد ایام بالک نے سوطا کی اس کو موق فا روایت کیا ہے۔ دومرے واوا آستاد المام محکّر نے بھی مؤطا میں اس کوموقوفا بیان کیا ہے۔ امام اوواؤہ نے کی ری و مدواری سے کھناہے کہ لیس جعوفوع '' یہ ٹی پاک کی حدیث برگز چیس ہے۔'' امام بختاری نے خود بھی دلی زبان میں '' قرق فیصلہ بھی کھنا کہ وواہ معصوراً محتیٰ میں کو تیا یا کس کی معاہدے آرادشش دیا۔ (۱۱۷) آپ جو بجدہ میں جانے والی تجبیر کے ساتھ اور بجدہ سے أشخے والی تجبیر کے ساتھ بھی رفع پرین نہیں کرتے اس کے منع اور حرام ہونے کی حدیث بخاری سے وکھادیں۔

(عُ)ية ساف الفاظ بن ولا يرفع بين السجدتين

(ح) بھی اس کا تو ترجمہ یہ ہے کہ دو مجدول کے درمیان جاں آب وعارب اخفر لی انٹے پڑھتے ہیں اس دُعاش اِتحدثین اُٹھاتے تھے، آپ نے مجدوش جائے اور

أفض والى تجبيرات إلى كوكيع چيال كرلياء

(عُ) (۱۸۸) لجيد اركوع عن جائد والى تجرير كرساته اور أشية وقت آب المستخطية عيد ين كيا كرت شيد الروق كر جائد وقت تجريراور موقع يدين وولول جزون كا ذكر ب - خلى تجرير تو بيش كيت بين ليكن رفع يدين فيس كرت ، آدمى مديت برهمل كرت بين - آب تجرير كرساته بيشد كا لفظ وكما كين بم رفع يدين كرست المستخدين كرست المستخد كا الفظ وكما كين بم

(ح)مواد عال خسرتهوك ويح يكير كراته حسى فسارق المدنيا كالقطاميح

اب خود غیر مقلدوں نے کہا موالانا جلدی کریں۔ آپ بھی اس دفع یوین کے ساتھ حتی فارق الدنیا کا افظ دکھا کی ورند ہمارا تو بیز وغرق ہوگیا۔ (غ) بدرفع بدین آپ نے بحیشہ کی جودکوں کی رفع بدین ند کرے اس کی نماز برگردنیں جوتی یالکل یاطل اور ہے کار ہے۔ (ح) (119) بدیشہ باطل اور ہے کار اور نہ تو بے کا لفظ بخاری بشریف میں دكعا كيريرة ب حضود فليكنفه يرجعوث بول كرنعكان يجنم عن يناويب جيريد

(غ) بدا افاظ حدیث بھی تو نہیں ہیں ویسے ضریعی من ہے اُٹل کے ہیں، بد کوئی اہل مدیث بھاری ہے نہیں دکھا سکار

(ح) آپ اہل مدعث یا ال خد؟ آپ کا خدیجی جیب ہے۔ جب خد آ ت حیاتہ تی یاک پرجوٹ ہولئے گئے ہیں۔

(ع) ۔۔۔۔۔ عل نے دخ یوین کی حدیث دکھائی۔ آ ب اس سے ڈک کی حدیث دکھا تھی یااس دخ یوین کوشٹ مؤکوہ انیمن۔

(ح) (۱۳۰) براسول آب کا بناوٹی ہے۔ کاری سفر ۲۵ پر کوڑے ہوکر پیٹا ب کرنے کی مدید ہے۔ اس سے شع کی مدیث لاکیا منت مؤکدہ مائو۔

(۱۳۱) ماکند ہوی کی گود نی سرد کو کر آن پڑھنا باخی انترادی کے میذ ہے۔ تابت ہے (چاکس ۱۳۷) اس سے مع کی مدیث لاکیاست مؤکدہ افد

(۱۲۳-۱۲۳) عائد سے مہاشرت قربان (جائم ۱۳۳۰) نوای کو افلا کر فراز پوسانا (جائم مرابعہ)، روزو علی ایوی سے بیس و کبار کرنا (جائم مرد ۱۳۵۸)، حالت جنابت عمل مونا (جائم ۲۳۰)، میدافعال راحتی استرادی کے مینفہ سے قابت ہیں، ان کی منع کی حدیث لاؤ، ورشان کوسنت مؤکروہ افور

(۱۲۸-۱۲۷) من و مقو کے بعد ہیوی ہے ہیں و کنار کرنا و نماز شی کن انگھوں ہے واکی باکس و کھنا (نمائل) شی ماشی اعتمادی سے نابت ہیں اور ان سے مختم ہرگز نابت نیمیں یاسنے نابت کرو یا ان کوسنت مؤکدہ مان او سکویارٹنے یہ بن کا جوت بخام کی شی ان افعال سے زیادہ نیمیل ہے۔ (ح). ..(۱۲۹)... مولانا التاغسرامي نبيل فردان حديث كراوي عبدات الناعر رفع يه اين نبيل كرت من (طوادي وابن الي شيد مؤطامير)

(۱۳۰-۱۳۰) تام الل مریدرفع یوین دکرتے چھ(الدورہ الکیری) هفائے داشوین سے کی منج مندسے بردفع یوین ٹابت نیمس

(۱۳۳) کام مل کو دورصحاب نے کر پورے فیرائٹر دن میں بیاد تھے یہ بن نہیں کرتے تھے(بعلق الحمد)

(۱۳۳۰) اللي مكد كي اكثريت فيرالترون عن رفع يدين كو جاتل محي ندهي (ابوداؤو) نماني) كبار سنب لوگ كافر شخ

(ق)......ز ہری عن مالم عن انن عرشہری سند ہے۔ آپ رفع یوین کا قرک عبری سند ہے تابت کریں ۔

(ح)....(۱۳۵)....مندمیدی چانون عانه ایونندچانمی و پرای سنبری سند و بر برای

ے دفتے یہ بن کا ترک جہت ہے۔ (۱۳۷) - ابن عبدالبرئے ''الاستذکارا' عبی ما نک من بھیم المجر والب جعفرالقاری عمل الی جربیرة کی ڈیل عالی اورسنبری سند ہے ترک جاہت کیا ہے۔

(۱۳۷) - مندامام اعظم شرامام معاصب، حماده ابراهیم فخل، علقه والاسوده این مسعود کی نهایت سنبری سند سے ترک کی حدیث ہے۔ الغرض ترک رفع یو بن سنبری اسانید اور توافر قبائل سے قابت ہے۔ (۱۲۸) - معنزت بالک بن الحویرت کی مدیث الاقلب نامی کی مرکل ہے (الہائی۔ 'تقریب)اس کے دوجی جست فیش۔

(۱۳۹) - بناری (ش ۱۰۸) حفرت ایوکر دکوع نین سط (لیکن حضور ﷺ نے اٹین نماز زیرانے کا تحرفیل دیا) آ بیدنی دائے کا تھے دینے جی ماآخر کیوں؟

(۱۳۰۱) - تعلیم الاسلام شی دکوع کی تنبی سمان دبی اصلیم ہے۔ جس کا امر اور اس پر مواظبت تاریت ہے (ایرواؤد) نیکن بخاری جائم کیا ۱۹ پر جوڈ واسے شامل کا امر ڈارت مراظبت ، تسای خلاست واشد ہی ہے اس کا ع صلاحات ہوا۔

(۱۳۱۱–۱۳۲۲) آپ رکوخ کی تیج آ ہند پڑھے ہیں جس کی ند ہناری عمل صرف نے درکی اور مدیدے عمل البند نسائی عمل بلندآ واڑے پڑھنے کی مدید ہے، نسائی عمل بیمجی ہے کہ دکوج عمل تیج پڑھے بغیر مجی تماز جائز ہے۔

(۱۳۳) مستمع اور قمید کے آ ہندیا بلند آ دازے ہدھند کی کوئی حدیث بھاری میں تیس مل۔

(۱۳۳۷) - مجده لدر دکوخ کی تجیمرات عام بلندآ داز سے سکیدادر متعلق اور منفرد آ بست. آلاز سے دہی کا جوت بھاری چی تیمیں۔

(۱۳۵) - مجدہ کی بھی مشہور تیجے سیسیدسان دہی افاعد کمی بخاری بھی تخش ہے۔ جو بخاری بھی ہے اس پرموہ کھیت کابری کئی کہ منت ہو۔

(۱۳۷) - مجده کیاتیج آ بسته پزشندگی مدیث نه بخاری بین نهکی اود مدیث شاه. البرزنمائی بین باکوآ واز سندیز شندگی مدیث سیست.

(۱۴۷) والوں مجدول کے درمیان نمازی ممل طرح بیٹے، ب تقادی شریف عل

نہیں ہے۔

(۱۳۹۸) - دونوں مجدوں کے درمیان بیٹر کر کوئی ڈ کر پڑھے یاندہ پڑھے تو ہند آ واز ہے یا آ ہندہ اس کی کوئی تفصیل جماری ایس تیکن ر

(۱۳۹) - بخاری خا/ص ۱۵ ایر التمات تو ما محر آ بسته یا صفه کا جورت ندمه اید زمانی میں بند آ واز ہے بن صف کی مدیرے ہے۔

(- 10) - تعلیم الاسلام بیش درود ایرا تیکی طاء تکر بخاری بیش نماز کے طریقت میں سرے سے درود کا ذکر کی نہادی

(121) ۔ جب بخاری علی نماز کے باب عل درود ی نیس تو اس کے آ ہت رہ منے کی مدیت کہاں او آن مائیت نر کی علی بلتد آ واز سے رہ منے کی مدیت ہے۔

(۱۵۲) - التحیات کے فوراً بعد بناری میں وعا کا ذکر ہے ، تکروس کا شہوت نہیں کہ آ ہت پڑھے وابستہ نسائی میں بلند آ واز ہے ہیڑھنے کی صدیت ہے۔

(۱۵۳) سلام کاؤکر تو ملائکر بیر کدامام باند آواز سے میکی مشتری اور منفرد آبت آواز سے میکن مدیث شی نیس ملا۔

(۱۵۳) عفادی ج المص۱۱۱ پر ہے کہ آنخضرت مُنَافِئَةً فراز کے بعد بنند آ واز ہے وکر کرتے گر فیرمقلد: کر جبر کا بدعت کہتے ہیں۔

(۱۹۵) بخاری می تشید ش انگی سے اشارہ کرنے کی کوئی صدیمے موجود کیں۔

(۱۵۴) - غازول کی قفتا کے تعیبلی مسائل تعلیم الاسلام صفح ۵ کا ہے جیں ، جبکہ مجھے بخاری شریف میں اس سے مسائل نہیں جیں۔

(١٥٤) أنماز رَاوِيُّ كِمَلِ ساكَ تَعلِيمِ الاسلام مؤهدا إيرين جَكِر مِنْ جَعَاري شريف

آرادر کے مسائل سے منابی ہے۔

۔ (۱۵۸) ۔ یاد در ہے اوم پخارک قراوت اور تہجرا لگ ایک ج حاکر نے تھے (طلا مندامام بخدری درتیسیرا ابادی میں ایم)

(۱۵۹) - المام بخارتی تراوش کی جررکعت شن مین آیات پزست شخددد بودا قرآن فتم کریتے تنے (عراق) معنوم اوا کہ آپ آ ٹھ ترادی تیس پزستے تنے اورن بین آیات پڑھ کرصرف ۲۰۰۰ آیات فتم جول کی ترکیمل قرآن پ

(۱۶۰) - تعلیم الاسلام منفی ۱۸۳ پر قرآن کے چودہ مجدے فیکور میں انتیکن بخاری میں منفی ۱۳۳۲ پر صرف جار زندوں کا ذکر ہے۔

(۱۶۱) - تعنیم الاسرام منی ۱۹۸۰ پر مجدهٔ الادست کا ب*یردا طریقه در*ی سینه جبکه بخاری اشریف شن اس کا خریقهٔ تمیس بتایا ممیا-

(۱۹۲) - تعلیم الاسان معنی ۱۸۱۵ ۱۸ پر بیار کی نماز کے مسائل تنعیل سے درج جی ر

بخاری شد اس کا مشرعتیر بھی نیس۔ (۱۹۳۱) – تغنیم الاسنام منی ۱۹۳۰ ام ۱۹۳۰ پر نماز عید بن کا تکمش هر یفت وجود ہے، میکن بخاری

شريف بين فهازه ميدين كالممل طريقة فأورثين به

(۱۳۳۰) - تعلیم الاسر مستی ۱۹۵۵ پرتر زاجنان و کانگمل خرایشه ندکور به تمریخ جناری می نماز جناز و کانسل طراید تبیس ہے۔

لحلیشہ ایک فیرسنلہ کہنے لگا کہ بندری شریف جی ہے کا معنور شکانگے نے نجائی سکے جناز و پر جا دیکھیری کئن، علی نے کہا اللہ اکبر الندا کبر الندو کبر اللہ اکبر اور بی جا کہ آپ کا جناز و پڑھا جا چکا ہے؟ کہنے انگانیس ۔ (مَنْ) (۱۲۱۵) . المنصاري على ابتاز و على معرست النبي عباسٌ كا فاتحر ميز هنا لهجي فأكر النبط

(ع). آپ کے زوریک قو محالیٰ کا قول وہی جسٹریں : ۴ ہم چار مادتھیں کر آر جدیش فاتحہ جو مذفعی قرمناز و جوجائے کا نا

(غ)...... برگزشت ب

(ح)... (۱۲۱)....* ن ہے تقریباً جوہ ماں قبی جوان محمد صاحب مبتم میامید دید ' فقرکز دو ہے' امحتیار دیا کہ غیر مقلد بن جونماز جناز ویز جنتے میں دوائ کمل تر نہیے ہے کی صدیق میں تابت تمیں ہے۔ اگر کوئی تیم مقامہ تابت کردیے تو اس نووی خار أردي افعام وياجات كالمدينا نجد جلال وربير والإرمنافركز وادر فيعل آباء كالحير مقلد علاء واعدُر میں فرح ہوئے وہ وں تا مجمدا عمر ساحب نے فرمایا کہ آب لوگ میلی تھیس کے جد تَّنا، سبحانک اللَّهم وتعوذ التمير افاتي آهن اور مورت بزيخ بين روَّ ب أيك ميخ و صرتُ ، غیر معارض حدیث و کھائیں کہ منسور عیافتا نے کالی تعمیر کے بعد بائز میں یہ جو بیز ان برجمی ہوں بن میں سے ٹایاتھوز اور شمیہ امام اور مقبقہ میں نے آ بستہ برجمی ہو۔ فا تحداور مورت الام فے بلند آ و زیب بور مقتہ بیل نے آ ہت بڑھی موں اور آ مین بام ا اور متحقہ بوری نے بنتر آزواز ہے کہا ہواور سب سے ابید پر ہاتھ یا تد ہے ہوں۔ تین تھے تك قيير القلدين محديام تم وعلاه شودة محايث وسطيتن حديث نه وكها مَصَديد قيامين تیب دکھ شمیں ہے۔

(ن ۱۱) کیم مولانا محدا احد صدحب نے قربانا ایک می صریح صدیث ایک دکھاؤ جس میں بیاد کیآ تخضرت مطاق نے نماز جنازہ میں دومری کیب کے بعد فرص درود ابراہیجی بائلا آنون سند چرھا ہو وہ آپ سنگ مقتم ہوں سنے حاص دروواج انگی آبیت جرموا کو ہیں۔ مقعد ان مرمواد سالمی مدینے ایس شامکن سنگے۔

(۱۳۸) - بھر مور نامحد احمد صاحب نے کہا کرتم تیسری تجییر کے بعد چوسات و عاکمیں بلند آواز سے چاہتے ہو اور تمہارے محمدی آئنل آئن پکارتے رہیے ٹیں۔ اس کی اس ک صدیرے بیش کرور کیمن وہ بیش زائر ہے۔

(۱۹۹) - عجد موادنا محد العدائم عنها كه كيد كن صريح غير معارض مديث فيآر كراب كران م ك النفط جارون تكبيرون اورملام شد بلغدة والرائب كشير كالخفر البراور مقتلة عال المجلم البيار كتابيري اورملام آبهائدة والرائب كين المحر مقلد بن المن كالمرتبع مديث نهى ويش فدار مشكر المساسدة مود كالحواجم صاحب كوكامير ب قرار وجاور تمام ما عين السابقين كراج كرفير مقد بن والوي عمل جائد بنت شرد بالقل جموا على الم

(ج) ... (20) ... تی بعثد مولوق صاحب! آپ جب فرض است انقل فرزین پزینے میں آو ہر دور کھت ابعد میٹھنا دارس مکتبہ میں انگین وٹر کی دور کھت کے احد تعدہ وکو را جائز کہتے میں۔ اس کی محکی حریق حدیث ابناری سے دکھا کیں محرود شاد کھا ایک

(ج) ...(۱۷۱) .. غیرمقلد مین وقر بش رُول کے بعد ؤید کی طرح باتھو آش کروہ ہے تفایع اپنے بیننٹ ایس، مجرسند پر ہاتھ مجیر کر مجدہ میں جائے ہیں واس کا مُروت نہ زخاری میں ہے اور نہ می کی اور مدیرے میں۔

(۱۰) آپ وکساٹنا کی شِدۂ نا السلیسم ب عبد بیستی، دکورج پی المسلیسم لکت و کامست، مجدول بی السکیسم لکت سنجندت، ووثول مجدول سک درمیان المسکیسم اعدادی، ودود سک بعد المسکیسم الی طالعت وقیرودن کی پڑھتے بیں، ان دُماؤس بی

آب ويا كي طرع بالقد تين أفعات، تدبير مند ير وييرت إلى تكر وما ع فوت عن بالله الخاكر وعا ما يح اور يجر مدر ير بجير ي ين- يدرون في الل عري فير معارش عدیث ے دکھا میں۔

(۱۷۲) بخاری شریف ج الص ۱۳۱ پر ہے کہ حضور اقدی ﷺ نے رکوع کے بعد سرف ایک ماہ قنوت پڑھی تھی لیکن آپ ہیشہ رکوع کے بعد تنوت پڑھتے ہیں جو بخاری کی صدیت کے خلاف ہے۔

(١٤ ١٤) أنعليم الإسلام بين صفحه عاريفياز وتر كانكس طريقة موجود ينه وتبله بفارق بي نماز وتر کانگهل طریقه موجود نین-

(غ) ... (۱۷۵)... جب بناري شريف بن نه نماز كالمل طريقة نه وتر كانه جناز كا ر طيدين كاتوامام بخاري خودنماز وز معيدين اور جناز وكي يز من تنه-

(ح) ... (١٤٦) ... طبقات الشافعيد الكيرى جلد دوم ع ثابت ب كدامام بخارى شافی الدز بب تھے۔ اس لئے وہ یہ سب کام فقد شافعی کے مطابق کرتے تھے۔

(عُ)...(٤٤١).... بم قر آن وحديث كرموا بكونيس مائة .. آپ قر آن وحديث ے ان کا مقلد ہونا دکھا تیں تو ہم ماثیں گے۔

(ح) آپ نے امام بخاری کومسلمان اور محدت کیے مانا ؟ قرآن کی کس آیت یا من حديث في الديث

(غ) يوتو محدثين نے كت طبقات ميں لكھا ہے۔

(ح)جن کما بول میں ان کا مسلمان اور محدث ہونا نڈکور ہے، ان میں ہی ان کا مقلد ہونا ندکور ہے۔اب اٹکار کرنا ہے تو تینوں پاتوں کا کرواورا قرار کرنا ہے تو تینوں

-1.6

(۱۷۸) مسمح جماری شریف آرود می کتاب از کا دستی ۱۲۸ سے یا کرستی ۲۴ تی

ہ باسلوات پا بھیلی ہوئی ہے۔ گر تھیم الرسلام ایس ہفاری ہے تصلب ہے بھی کم سابق ک

سرف فاستخاب بإركونات ما في مين

العليم 111 ملا م صفح 119 من رُنوع الك فرض ووساني كي شرطيس ورج بيس. فرسمج مراه المراه والم

ا بخارق ثمریف شراط کی تنصیل ہے طال ہے۔ معارف شریف شراط کی تنصیل ہے طال ہے۔

(۱۷۹) - تعلیم الا عام صفحہ ۲۳ پر ان اموال کی تقلیل ہے جن میں زکو یو فرش ہے۔ جنید بھارتی میں پیمل تنصیل نیز بینتی۔

'(۱۸۰) - تعیم الاسلامسی ۲۶۳ پر (گوق کا موسے کا فسائیہ اور نقرق کا نسائیہ ورق ہے بھر نفاری ٹریف میں فیس مان

(۱۸۸۱) - تعلیم الوسلام مخد ۲۴۴ زاید که بانی نسباب میال مجرطیست بین درب تو زکو و فرش سنه جبکه بیا بهم مسئله تفارق شهانیس -

(۱۹۸۳) - تعلیم دلاسلام سفی ۱۹۳ پر زکواتا کے وقت تبیت کا مسئلہ وضاحت سے لکھا ہے، جبکہ بخاری شریف میں نبیت کی تفصیل نہیں ہے۔

(۱۹۳) - تعلیم الاسلام سنی ۱۲۵ می مصارف زکوی فی تنصیل کی ہے، جبکہ ہوری میں پینفسیل وصوف سے نین مکتی ۔

(۱۸۳) - تعلیم الاسنام سنی ۲۰۵ میں سازی اسلامیاکو زکوج دینا جائز کلما ہے، جیکہ بخاری عمل بیستلفیمل خانہ

(١٨٥) - تعليم الله للعيامة ٤٣٥ يران توكول كالتعبيل سنة بمن كوزكوة وينا بالزنبيل بمحر

وتفصيل بخارق تراجب يم كين فق م

(۱۸۷) - تعلیم الاسلام سنی ۲۳۳ پاین کاموں کو تعلیق سید بھی پرڈ کا ڈاکائی جائے تو زکو ڈاوائنیں جو آب رکھیل بخاری میں تیم سے ۔

(۱۸۷) - آملیم اماستام منی ۴۲۸ پر نصاب زگوی در نصاب صدق قطر کافرق واقعی طور برین دهم یاست زنبلد بنادی چی روترق ورن نمیس -

(۱۸۸) - ''مناب السوم میچ بغاری متر پر بر تشریباً موسفیات پر کیلی او کی ہے اور تعلیم الاحلام میں سرف ۱۹ مسحات میں ۔ خلیم الا سلام سفی ۱۹۸ پر روز و کی تعریف ہے کہ دور و میں سر

کے کہتے ہیں۔ بناری بی اس طرح صاف الفاظ بی بیتر ایف میں ہے۔

(۱۸۹) - تعلیم اداسلام سنی ۱۹۹۹ منام بر روز و کی تغلیم ہے۔ آئو تمون کی تعلیل موجود ہے جبکہ بخاری شریف جس می تعصیل نبیل ہے۔

(۱۹۰) - تعلیم الاسلام صفیه ۱۰۰ پر روز و کے فرض جو سفیڈ کی شرائکا ، روز و کی تارک اور مشر کا تھم سے جو بخاری میں نہیں ہے۔

(۱۹۱) — تعلیم الاسلام حقی ۱۹۳۴ پرساست مذر غدگور بیل جن کی جدست دوز و شد کھنے گ خوازش ہے۔ بخادی جس نیکمل تفصیر تمیش ہے ۔

مورت ہے۔ (۱۹۲) - تعلیم اللملا-سنی ۲۰۳،۶۰۳ پر دمغمان کے جاند کے بارے شرحی دیا تی

تفعیل درج ہے۔ دیکہ بخاری میں ریتھسیل نہیں ملی۔ نیٹ کے تعلیل سرکل جس قد : تعلیم الاسارم صفحہ ۲۰۱۳ مر ہی سمجے بخاری میں ان کی بخاش سے مود ہے ۔

(۱۹۳) - تعلیم ناد سلام صفی ۱۹۰۱، ۴۰۷ پر روز ہے کے سخبات انگرو بات استدات جس تفصیل ہے درج میں بخارق میں امرکزشین۔ (۱۹۳۰) - تقعیم ۱۱ سلام صفی ۱۹۸۱ و ۱۹۸۹ پر چوتنعیسل سے کہ کفار دواور تقدا دونوں کب اوزم میں اور سرف قضا کب میر تقعیمال جاری میں تیس سے - تراز اور دوز و کا فعالیہ ویٹا پڑے قراس کی مقدار کیا ہے؟ کے تعلیم الاسلام میں قریبے تحریجاری میں تیس ہے ۔

(198) - اعتلاف کی تعریف امرتقیم جس وٹ است سے تعیم الاسلام عیں ہے ، بخار تی شریف میں مزار سیں۔

(۱۹۹۱) — ميزة ف شند مباحات الروبات اور منسات كي جوتفعيل آهليم الاسلام جي هـ ابخاري جي اس كاوموال حصر بحن ثبيل .

(عُ)....(۱۹۲)... تمام أمت كاعقيده ب كرميح بخاري احسيع المكتب بعد محتاب اللّه ير.

(نَ)...... به بات ندقراً آن کی آبت ہے نہ تی بالدگی عدید تائیں جمینہ کا ارشارت خود اللم بھارتی نے بھی بہ دبوتی فرایا۔ بہ ایک شافی المحد بب مقادش این انصابات کا قول ہے ۔ اخذف کی کسی اصول کی کتاب جم اس کا ڈکوٹیں ، ایست شیخ این جائم نے تحریرالاصول ہواصول تقدکی مشہور کتاب ہے اس بی اس بات کو ٹاانسائی کی ہائے قرار دیا ہے اور نیخ انقد برین اگر سے ۱۳۱۰ جلی کیرصفی ۱۳۸۲، حاشہ بھاری رہ اگر سے ۱۵۸۱ انسانی شدید میں الدراسات صفح ۲ سے آب اس الدراسات نے ۲ اس ۱۳۱۰، ایمس الیہ الحاجة س ۱۳ اور تحریرالاصول مع التحریرین ۳ اس ۲۰ بریکی اس بے کا ڈو ہے۔

(غ) بینی ایس ایسلاح نے یہ بات انبر دلیل کے تیمی فرمانی، بلک فرمایا ہے کہ سمج بخاری توللتی بالغول کا شرف حاصل ہوا ہے اوراس کا انکار ممکن تیمیں ۔

(رَنَ) . . . (۱۹۸) - اس عِن شَكَ شَيْل كَدَسْجُع عَدَوَى شَرِيفٍ وَصَرِف مَدَ ثَيْنَ عِن

یا نج ال صدى كے بعد تلكي بالغ وال كائٹرف نعيب جوا ، جبكه ندا جب اربعه و دوسرى صدى ے آج کک خصرف محدثین على بكرفتها ، مفاطن اسلام، قضاة ، بايدين اور وام تك عمل الكن تلتى بالتول نصيب ہوئی جس كی مثال تيس لتى اوران جاروں خام ہب جس ہے نہ مب بننی کو آبولیت عامد کا جو شرف نصیب ہوا وہ باتی ندا ہب ہے بہت جو جائے ہ کریٹ اور خود چنخ ابن صلاح نے جس خرج کلتی بالعمول کی بنیاد پر بخاری کر اسم الکتب کہ ہے ای تلقی مالفول کی بنا پر رہم کہا ہے کہ خواہر اوبو میں سے کی ایک خدہ کی تقلید لازم ہے۔ اب ظاہر ہے کہ سیح بخاری شریف کوئلٹی بلقبول مرف طبقہ محدثین ہیں ہے۔ اگر کوئی محض ساری عمر بخاری شریف نه ج هے جیسا کدا کمز عوام غیر مقلدین کا حال ہے توامی کے اسلاکہ اٹول میں کوئی کی ٹیس لیکن اگر عالی آ وقی نقتہ برٹس نہ کرے تو اس کی اسلامی وَندگی کا نفرت ی مجرّ جائے گا، کیونک فقد کونلتی بالقول نام طبقات افس اسلام جس ے۔ اب آیک جزوی تلقی کوآب ایمان مجمعیں اور کی تلقی کوئم میکون ساانساف ہے؛ (غ) (199) ... جن تلقى بالقيال ال كتاب كوسب عن زياده نعيب بوئي تواب بخاری کی مدیدہ، کے خاف کس کا سے کی مدیث میں مانی جائے کی خواہ اس کی سند کے راوی کتنے ہی اعلی مول ہ

(ح)ا سابات کوش این امام نے زوفر ما دیا ہے کہ میکن شدن یات ہے ، اس کو ماننا جائز کیس۔ بال آپ بیفرما کی کہ جس طرح کتب حدیث بھی آن کیت عامر کا ذیادہ شرف بھاری فریف کو طاء آپ نے اس سے بیانتیج نکالا کر اس کی مدیث کے خلاف کوئی حدیث نیس مائی جائے گی تو کیا آپ سے اس افساف کی تو تی ہے کہ انتر ادجو کے خاہب بھی چنک سب سے زیادہ تولیت عامر کا شرف خاب شنی کونصیب ہوا ہے اس کے فرمیت منی کے مقابلہ میں باقی تن م اوم ہوئے منا جائے اور جب بانی خداہب مریز میں بوں کے قوآ پ کی لاشدادیت کا تو جناز ونکل جائے گا اور یہ بھی فرمائے جبکہ حضرت الو کر صدیق رضی القد عنہ بالا ثناتی تمام سحابہ سے افضل ہیں۔ اس سے آ پ نے میسی نے تیجہ نکالا کے حضرت الو بکر صدیق میں اللہ عند کی صدیدے کے مقابلہ میں مصرے عمر بلائے سحانی کی بھی صدیدے تھے لڑیں کی جائے گی۔

(غ)...(۱۰۰۱)...قرآن پاک کے بعد سی بخاری شریف ہی ویک ایک کتاب ہے جو اوہام اور اغلاما سے یا کل پاک ہے۔فقد کی کتابوں میں بعض ایسے مسائل میں کہ مکی الڈ رقمل کرنے کے ملے بھی تیارٹ ہوں تو کیوں ندانٹ کے مقابلہ عمل الی کتاب م عمل کیا جائے جس علی وہم وخطا کا گزر ای نہیں۔

(مع)مب مسلمان قرآن پاک کی علادت کرتے ہیں کہ بہ قرآن پاک متواتر ہے، لیکن اس متواتر قرآن کے خلاف بوی بوی کتب تغییر میں بینکڑوں نبیس بڑاروں شاذ و مندیف قرآئی ورج ہیں جن کی حلاوت کوئی مسلمان بھی نیکن کرتا۔ اب اگر کوئی اعمل اور ہے وقوف متواتر کر آ ان باک کے مقاطعہ میں ان شاؤ ومتا کے ثرائوں رہا علادت کی وقوت دے تو کوئی سلمان اس کو قبول کی از ہے گا بلا۔ می وقوت دے والمستأوقر آبن وثمن كباعه مشاكلا

الب ي كتب جديث بين يزارون احاديث ضعيف اورشاؤ مين برايل منت، سنت متواتر ہ کے مقالمہ میں بھی ان پرفمل نہیں کرتے۔ اب کو کی شخص مسلمانوں کوست متواترہ کے مقابلہ میں ان شوذ وضعیف احادیث رقبل کی دعوت وے و والے سنت اس کی دمجات کوان کے مند مرد سے بارس کے اور سانتہ متو مرہ کو برگز کین چھوا س مجے ای طرح کتب فقہ ٹیں ایک دوسائل ہیں جومفتی ہوا ہی ادر شروع ہے؟ بنٰ تک ہر جگہ احناف کا ان برمتوا ترقمل ہے۔ اس کے مقابلہ میں کوئی شاؤ اور متر ایک اندال برعمل کی دفوت وے قوائل کی جمالت ہوگی۔ ہال جمل طرح شاذ قر کتوں ہے متوافر قرآن کی صحت میں زرونج شک نہیں آتا، شرذ ومتراک احواجث کی وہ سے ملت صحیحہ مشتہ نہیں ہوتی ایسے علی ایسے فیرمفتیٰ بہارمتر دک اور شاز اقوال ہے فہ ہب خنی مرکوئی حرف تہیں * تا ـ غرب من معنى بيااد متومز سعول بها مسائل كا نام بير-

رہا آ ہے کا بیا کہنا کریچے بھاری شریف بھی قرآ ان پاک ک خرج سے۔ بہتم ے شک وہم ہے بالا ہے پیٹلو ہے۔

(١٨٢) - (١)امام :غارنٌ عطاء الخراساني وَ فودشعيف فر . تح بين منه مفارم فيرم في ا المام مر بنادی م مراس و این برای کی حدیث لیاسے۔

(۲۰۴) (۲۰) بایم بخاری تقسم کوضعیف فرماتے میں: اور مجمعتم عن ابن مماس کی سند سے مدیث بھی میں جاری میں لی ہے (میزان الاعتدال ج مرامی 1 سا) (١٨٠٠) . (١١٠) . اوب بن ها كذَّ وارجاء كي وجه مت ضعيف بحي في مان ب و المنتج بخاري

شردار سندند بندأي والبجاليين المعتاب والعمامية

والماء الأسهار الدسها فالقافي فالمنظم الاعتبية ويقم أن حبية للانال أبول الاق

مِن فَرَقَ كِيسَ كُرِينَ إِلَى وَهُمَ كَا فَكَارِهُ وَاللَّهِ فَيَا إِنْ الأَمْتُولُ لِينَ أَسُلَ عَلَاهُ أَو

(۱۰۰۹) - (۱۵) ... ایام بخارتی الجیالات الدانساری کوشیف بھی فرنات بیں (تہذیب بخارتی ۱۹۹۶) ورمیح بخاری جی گرفس میم براس اند مدین بھی لینتے میں

(عام) (۲) ... أوم بغارتي نے خاابس ۱۹۹۳ پر حضرت المن كے قول كو صديث رمول بناكر بيش كرد يا ہے (مقدمہ رفع الورق ئامارش ۱۱۹)

(Pan) ۔ (2) ۔ المام بنوری کے اُستاد ، م ابوریم نے مستقل کڑے والما وافغاری کھی ہے جس میں بتایا کر 224 راو ہوں تھے یا رے میں امام نفاری نے تعلقی کھائی

ے۔ (۱۲۹) - (۱۸) . المام وارتعلق کے ستعقل کی سیا انالزاء واقعیج کلی بخاری شریف ک ۱۶۱۸ نامه دیت پر اعتراض کے جین۔

(۱۰۰) (۹) ... امام بخارگ ئے تلطی سے صارت نصب کا آیک مشہور واقعہ معترت عدر کی طرف سندو بے آرویز (ج ۲/ص ۲۹۳ء رز ۲/عرب ۱۰۳۰)

(m) - (۱۰) ریابام ہمتاری نے «عزیت عبداللہ بین عبائی کی روزیت مطرت عبداللہ بریم کر کے نام سے روزیت کردی (محمالہ ۲۹ جم کے)

(۱۶۳) - (۱۱) - امام بفارتی نے تعلق ہے معترے منزہ کے قاتل کا نام تبدیل کرنے (بناری بع سرمی ۱۴ ۵ معنی ۱۱)

وے ویا (بخاری ص ۱۳۹ می ۵)

(rir) (rir) ...امام بخاریؓ نے ایک مدیث ش اللی سے شم انتصرف حتی

اتبی چوز دیاجس سے فی فی فاطمہ کے گھر کی جگد تاط دوگئ (ج الص ٢٨٥، صفحة)

(٢١٥) (١٣) امام بخاري نے ايك چيش كوئى كوا يے جيم الفاظ على نقل كيا جس

ے ال كے غلامونے كا احمال موكيا (ص ١٩١١م)

(٢١٦) (١٥) ... امام بخاري في حضرت ام رومان كوسروق كا أستاذ بنا ويا جبكه وه

سروق ك آنے كى مال بملے فوت ہو چكى تھيں (ع الص 24) مل

(سام) (١٦) ... امام بخارتی کے اساتہ و حدیث الوحاتم ، الوزرعد اور تھد بن مجل نے

ان سے روایت چھوڑ دی تھی (کماب الجرح والتحدیل ج عاص ١٩١)

(۲۱۸) (۱۲) ... امام مسلم کوامام بخاری کے محدّت ہونے میں تروّ وقفاء امام بخاری

ے أنبول في معلم عن كوئى حديث ندل-

(٢١٩) (١٨) ...امام بخاری سے امام ابوداؤد اور امام این ماجد فے اپنی کماب میں کوئی صدیث روایت نیس کی۔

(۲۲۰) (۱۹) ... امام بخارتی کی منجی صفحہ ۹ سے خلام رمونا ہے کہ وہ ہے قبل کو کافر کہتے

بیں مرج ام اس اس کو کافرٹیں کتے۔

(rr) (r) منفاری فی محمد عمر عوف اعرابی سے عدیث کی جو قدری، افضی

شيطان تقا (تهذيب ج ٨/ص ١٦٤) كر امام الوطيف عد مد يد لي

(۲۲) (۲۱) مناری فرح یز بن عثمان سے مدید، لی جو سے ور مرحضرت ملی

يرمتر بالمعنت أرة تها (تهذيب ن ١٠٥٥) تمرا بام معم ساوق عنديث ندل.

(٣٢) (٣٢). جريرين فيوافم پدجوه عزت معاوية كواملان بكانيان يَمَا تقااس ق

صديت في (تهذيب ج م أص عن) اور قائل ابو باست من عند در

(١٩٥٨) (١٩٨١) رعبو بن يعمّ ب جوعفرت عمَّانٌ كوكاليان يكمّ تقد عديث لي

(تَبَذيب عُ١٠٩ ص ١٠٩) كم المام تحديث ندل.

(۲۲۵) - (۲۲) ... عبدالملک بن اعین انبیت رائشی سے حدیث کی (تبذیب ن^1) ح-۳۸۱) نخرا بام زفر سے حدیث نسال۔

(۲۲) (۲۵) تحرین خازم نمین مردیا سے صدیت کی (تبلدیب ۱۳۹۵) اس

تحرا الم منسن بن زیاد ہے حدیث ندلی۔

محریم کیتے ہیں کہ جول اور خطاء سے باک ایک بی کتاب قرآ ان باک سے قلطی دوئم کی ہوتی ہے۔ایک وہ جو عام آمت میں چل جائے ایر تقصال دو ہے۔ ایک بیر کفظی یا بھول ہوئی فورا دوسرے نے القد و کراصلات کردی اور و وقلطی و جیل ختم ہوگی آگے چلی تیں۔ اس میں خطاد ارمعد ورب اور اصلات کرنے والا ماجور ب۔ ایک یا توں سے چاری کتاب کے ناط ہوئے کا فیصلا کرد النا تھا ہا سے تقیین تلاہی ہے۔ (غ) (۲۲۸) ہم تو و ین کو سیح بخاری میں بند رکھتے ہیں۔ جو اس میں فاہت ہوگیا اس پر دل و جان سے ممل کرتے ہیں، جو اس میں فیس آیا اس کے قریب بھی فیس جاتے۔

(ٹ) (۱)... بخاری تزجمہ وحیدالزمان پڑھے اجس میں مورے کے ٹیمر فطری استعمال کوفر آئی تھم قرار دیا ہے (ہے ۲امس ۶۲۹)

(۲۲۹) (۲) ... بیچی بخاری خ الص۳۶ پر اونوں کا پیٹاب پینے کا تھم ہے تکر جائے '' اور قبو وینے کا ذکر بخاری میں ہالکل نبیں۔

(۲۳۰) (۳) سیج بخاری خ۲/ص ۸۲۲ پرسینڈگ اور پکھوے کا طلال ہونا فدکور ہے تکر جمینس کے گوشت ، ووجھ بھی بکھین کا حلال ہونا مد کرفتاں۔

(۲۳۱) (۴) ... بخاری ج ۴/ص ۸۴۱ پر ہے شراب میں مچھلی ڈال کر وحوپ میں رکھو، چھر کھانا حلال ہے گرشر بت روح افزاو فیر و کا نام تک نہیں۔

(۲۴۲) (۵) بخاری ج اس سے اپر امام مالک اور دراور دی سے شہد کی شراب پینے کی اجازت ہے جب تک نشد نہ آئے۔

(۲۳۳) (۱) ... بخاری ج اس ۸۲۸ پر بعض سحابه کا الصف والطلاء جوشرایی جی ان کا چینا ثابت کیا ہے۔

(٢٢٣) (٤) ... جارى ين شراب سائد بهي آجائ تو بهي كوني معنن حدورج

نہیں ہے۔

(rma) (A) ... بخاری می قربانی سے جانور کی مرحمیا ہوئی جانے اس کی تفسیل درت سر

(۲۳۷) (۹)... بخاری شام ۱۳۳۸ پر ہے کہ حضور مطلق قربانی عبد کاہ میں کیا سرور میں میں اور میں کیا

کرتے <u>تھ</u> کر فیرمتلاین اس مدیت کے خلاف گھر پی قربانی کرتے ہیں ۔ مرتب کا تصویر میں میں میں میں میں میں میں میں میں تعصیل سے

(PP2) (۱۰) قربانی کا جانور کن جیوں سے پاک ہودائ کی تفصیل ہؤری میں ممین ہے۔

اس تم نی ماتوں میں ایا ہوا ب ہوکر تو مولوق بشیر الرحمی غیر مقلد کوجرا نوال ہے۔
یہاں تک کہر ویا تھا کہ آئر اختلافات تم کرنے بیں تو بھاری کو آ ک اگال بڑے گ

(آ آئی کدوہ امران) میرے خیال جم این کھی کر مشرین حدیث نے بھی تیج بنادی کے
خلاف ریمار کس تیں ویر ہوگا ۔ ہم ہے کہتے ہیں کہ اگر کوئی سننہ بخاری شریف میں شاؤش
جائے تو اس پر قمل مذکر تا جا ہے ۔ ہال جمن کا تعلق ایمتیاد ہے ہوگا وہاں صاحب کیا ہے کو
مرف معذور بلکہ ماجور مان جائے گا۔



نام الل حديث برايك دلجسپ مكالمه



نْحُمِدُهُ وْنُصِلِّي عَنْي وْسُوْلِهِ الْكُويْمِ. اثَابَعْد :

ہ زنے و لے بھی قیامت کی نظر رکھتے ہیں

اور قرآن پاک پرائیان رکھنے والے خوب جانتے ہیں کہ وہوے پھیلا کر چیب جائے۔ والے کوقر آن شام کہتاہے محقق میں کہتا۔

دوسری بات بیات بل می جناب مستودها حب کے انتهام است کے انتهائی کا داست باتھ سے نیس چیوز اجتیار بہا دنیوری محتق نے کالی کلونٹ کا کوئی لفتہ میس چیوز اجو کو کے تقم ہے ت ة يا دور الأرباليل بربيه وليور كا نام شاهونا قو تح الدين عدائر ميد يقين موة الب كه بيبال مرزا كاه ياني (سابق فير مقلد) كل روان كام كر رقل الصد الب مكامل جزائف الور نطف الدوز و مصف

مسعود ... آپاہ نام الل حدیث کب رما کیا

تحقق ببیاد پلاری بیسوال ناستول ہے۔ آپ قرال تھومردار بی ہے آ ان میں جنوال نے سوال کیا تھا کہ پنجاب کا ایم کمی سے دکھا اور کب رکھا۔ آپ جیسے مقل والے دنیا تیں کم می چیروجوئے تیں اور اگر پیوا اور اگری قریم ووظیف اور امام می نیخ جس فردا عت اسلمین اور الل حدیدہ اس ۴۹)

مستوج المراة بإكا كالهافي مديث س في رها"

منتقل مبیاه لیورگی.......(' کی بیفی بھی رکھا ہو)'' ویفنا پینچاہیج کی نام مزوں ہے ہو ''کن بہ اللہ سند کی مخطبے کا نام '' کھا'' کا فروں کے رکھاند اللہ سند کا فروں کے رکھے ''جوٹ نام کو قبول کر کے تھے دمول اللہ کا کل بنا ویز۔ اس سائٹ کرچھے نام اچھاہے 'گرچے 'کا فروں نے رفعا ہے ۔ قریم اللہ ماہو یا آپ یہ النجی موانات کیوں کر ہے تیں کر امل صدیدہ نام کمی نے رکھا اور کب رکھا، بینام کی نے بھی رکھا تو آپ ہے ویکھیں کہ نام چھاہے کئیم ہے''

مسعود ابل صديث كامعي كيز ب

محقق بہاو پیوری ۔ ان مدید عام معانی کا امر معنی ہے (من ۴۴) در مول الذین النظافی کی زندگی میں ساتھ والے والوں کو معانی کہتے ہیں اور زندگ کے بعد ساتھ والے والوں کو اہل مدیدے کہتے ہیں (مس ۳۹) مسعود آپ براپنافرقه واران تام الل حدیث وقر آن حدیث شن دکھا گیں۔
حفق میم دلیوری مسعود صرب! آپ کا پرسوال کراپنا نام قر آن وحدیث میں
دکھاؤ بالکن بوش ہے اور آپ کی ہے مقلی کی دلیل ہے (صرب) مسعود صاحب!
آپ کا سب سے بڑا وارائل حدیث نام پر ہوتا ہے، شیطان آپ کو برالقاء کرنا ہے کہ
تیری بھا ہت آسلین کا نام قو قر آن وحدیث میں ہے، اہل حدیث کا نام کمیں بھی
خیرں، یہ جاعت ابھی ہندوستان میں بی ہے تو اہل حدیث سے بی سوال کیا کرکھ آپنا
نام قرآن وحدیث میں دکھاؤ، وہ نہ دکھا تیس کے نہ تیرے سامنے دم مارتیس کے۔ مِس
بھرتیری فی تی تی دکھاؤ، وہ نہ دکھا تیس کے نہ تیرے سامنے دم مارتیس کے۔ مِس
رُسون فی تی تی دکھاؤ، وہ نہ دکھا تیس کے نہ تیرے سامنے دم مارتیس کے۔ مِس
رُسون فی تی تی دکھاؤ، وہ نہ دکھا تیس کے نہ تیرے سامنے دم مارتیس کے۔ مِس
رُسون فی تی تی دکھاؤ میں کہ آپ اپنا نام قرآن وحدیث میں دکھا کی (اہل صدیث

آپ ہم سے بدمطالبہ کوں کرتے ہیں کہ ہم اسپے لقب اٹل صریت کا ثبوت اللہ اور دمول کے حوالے سے دیں اور ہو دھا کیں کہ بیٹام بھی آنہوں نے ای دکھا ہے۔ پہلے آپ اپنی ڈگری نی دائیں ہی کا ثبوت اپنے والدین سے دیں و پھر ہم سے مسعا کے اھل حدایث کا مطالبہ کریں (جماعت اکسلمین اور افل حدیث صر ۲۷)

مسعود صاحب! آپ کلین ہیں کہ اٹل مدیث اسپے فرقہ وادات نام کا تجویت قرآن و مدیث سے ٹیس دسیہ عجتے۔ میں کہتا ہوں پر کبال تکھا ہے کہ نام و ای سج ہے جس کا تبویت قرآن و مدیث میں جواور جونا مقرآن و مدیث میں شاہوں و کھنا جائز نیس مسعود صاحب! اگرآپ ایک ویکل ایکی دکھا دیں جس سنت بہتا ہت ہو جائے کہ جونام قرآن وحدیث میں شاہودہ رکھنائے ہے تو آپ ہم سے فی ویکل ایک جزاد روپید اب سریش اور قرب دکھا تھیں اور آپ کمی ٹیمل و کھا تھے تو آباد میں جائے ہے قربان ہ آپ کا بہت برا دور دوگا فرایل مدیث کے تھائی ٹھائی ٹارونی میں ال

مسعون ما حب الآپ نے اپنی حرف سے میاستان اولا ہے کہ نام وہ ہو جو قرآئ و صدیمے جمل ہو۔ مسعود صدحب الآپ کا تھی مید جیب حال ہے اولا قرآئ کو سرائے ہے تا جانو بتائے جس اور الل حدیث پر احزائش کرتے جین کہ وہ قیاس کرتے جس یا گھرمود البیمی قیاس کرتے جس (جہا مت اسلمین اور افل حدیث میں کا

قياس:

تحقق معاجب عاجز آ کرتی س بر اُنز آ نے بی*ں کہ جس طرح قر* آن میں الل

سناب كا نقط ب الل الحيل كا نقط ب التي يرقيان أمرك بم الل حديث بين - تمر الوال ملى المصالة بيقيان مساست بينياش المسائل مع يث في أناب كالتوالد الراء عجيب بالت المساكد في الل الل كتاب الل الحيل، الل الترك التي الترك الل عديد الل يترب الل عدين الل بيت، الل الفظ بر كم الل العاد تمك كا لفظ بر كم الل حديد في من المساحة عن الل قرآن كا لفظ بر كم الل حديث في الله العاد الله التعاد الله المسائل حديث في

حديث:

قرة إن ياك على صديف كالفلا إلت كه حقى على به: هدل الناك حييث مؤسنى (٢٠:٩)، هل أفاك خيفت الفاجية (٢:٨٨) خديث صيف الراجليد. خيبيت المُجنّود فيرُعوْن وَتَمُوْد. حَوالِي كواساديث كياب. شاويل الاحاجيث. السانون كومديث كياب: وَجَعَلْنَا هُوْ أَحَاجِيْت. آيا قردَ أن سن جن كومديث كياب ان مب احاديث كومات كي بوست الل حديث بين.

مسئله قرأت اورجيلنج بازيال



الخشذ لله وشارم على عباده الذين اضطفى الثانقد

 مرجہ ایک رسالہ (ادار کاللہ) نکھا جس میں بٹانوی صاحب سے بید مطالبہ کیا کہ آ ہے اپنی شرط کے موافق ایک بیش کریں مدیث مثل علیہ تلقی الداللة ایک بیش کریں کرانام کے جیجے فاقور نہ ہے والے کی لماذ باطل اور دیا کار ہے توفی آلداللة ایک بیش کریں المان میں مدیث فاقور نہ ہے ہوئے قاش مرائے کے مسلماتوں جی تخذید والے اللہ المنت اللہ من الفعل پر فور فرد ہے۔ اس کے بعد بٹانوی صاحب تو ساری عربی ہوئے ، البت آیک من الفعل پر فور فرد ہے۔ اس کے بعد بٹانوی صاحب تو ساری عربی ہوئے ، البت آیک اور فیر مظلم می اس امرونی نے اس رسالہ کے جواب میں آیک رسالہ معیارے الاول تھی اس جس علی ایک آیت یا حدیث بیش کرنے کی بجائے بازاری کالیان دی ۔ قرآن و حدیث بیش کرنے گی بجائے بازاری کالیان دی ۔ قرآن و حدیث کے مقابلہ میں گالیان دیں ۔ قرآن و مدیث کی مالیہ ہوگیا

پچی ویں ہے مَاک جباں کا خیر تما ہے ادب بمرام بائد از فعل دب

حضرت فی البند نے جب ویکھا کہ آگر یہ بدلوگ دہوئی تو اتا ہوا کرتے ہیں کہ ہم قرآن و حدیث کو البند نے جب ویکھا کہ آگر یہ بدلوگ دہوئی تو اتا ہوا کرتے ہیں کہ ہم قرآن و حدیث کو اتنہ اربیع سے زیادہ مکھتے ہیں کھر بدتو میری کالب کی آددہ عبادت بھی تہیں ہیں ہوئے کہ ایشارح الاول رکھا۔ اس کے معبارح الاول کے مظاملوں کا جواب بھی دیا۔ اس کا نام ایشارح الاول رکھا۔ اس کے بعد آج کے کمی فیرمقلد دوست کو بہت ٹیس ہوئی کدایشا کے الاول کا جواب تھی۔ جب اس سنلے میں بدفرق کا جواب تھی۔ جب اس سنلے میں بدفرق کا جواب تھی۔ جب بسید ترکی فیاموش کی ہوجاتا ہمکی یا کستان بیش سنلے کے لیے میں ہوجاتا ہمکی یا کستان بیش کے اور آئے دن مناظروں کے ایک کی تو سے فیصد آباد ل کو الے فیار کردیے۔ اہل سنت

والجماحيث وتناتج مين قادياني فتنه فيضيء الل شأب ويدعينه الورمنكرمن حديث سك فتوں کے بتاتب میں معمرونے تھے کہ ان نتزی ہے اہل سنتہ کا ایمان محفوظ کیا جائے لار بہ قرقہ ان مب کوچھوز کر اہل سنت کو مناظر وں کا چیلنج دیتا تھے۔ جنا نیے مجبور اُن سے چیلنے قبول کرے معاظرے کے اسے سے بنجاب میں مافق عبدالقادر رویزی ادر بردفیم عبدالله بهاوليوري ومندحه عن وير بربع الهرين ثناه ويرة ف مبنذا اور موحد نتس مولوي عبد العزيز فررمتاني كو فاش فلك تول كالمندد كين يزار مناظرون بش فلكست ك بعديم انعامی چیلنے کے شتباروں سے قوام میں فقنہ چھیلانا شروع کی۔ جنانچہ راولینڈی سے بهادر بیک صاحب فی بین برادروی افعام کا اشتیار شاقع کیار فیعل آباد سے موادی ا شرف سليم ف بهاس برا، روي العام كا اختبار شائع كيا كد احتاف فيعل آبادك حوالت بھی ایک صاحت کی کابت کردیں کہ امام کے چھیے فاتح ٹیمل پڑھنی جا ہے تو ہم بي ك بزور، بيدانعام واي كاورمردد مفيد وحرى بينادر سامك لاكوروي افعام كا چینج شائع ہوا۔ بن چیانہوں ہے ملک میر ہمی اشتعال کے فقے کا یاتی جب سرے اور م ورق لكا تو ال سنت والجماعت فيصل آباد عدالت عن بحث برتيار : و محتر عدالت مِن بوري بحيث وتحيم كے بعد سيد عكمت شاوج في فيعلم احاف كے تن شي ديا ك حناف نے جو مدین بیش کی ہے وہ می ہے اور جو لوگ یہ مجتبے بیں کہ جو ایام کے وہیے فانحار بزعيراس كي فمازنين بوني بياحك عن فقت بسيلات والسنا بين وليكن هوالت انوام کی رقم اس وقت ولائے کی و مدوار ہے۔ جنب انعام کا وعدہ سرکاری اشام ہے ہو۔ صرف اشتهار برتبیل به بدایک قانونی و شایمتی تیکن بهادر بیک مولوی اشرف سیم ادر مهداهوية فورت ﴿ وَمِن كَرَا عِلَيْنِ عَلَى كَانِم إِيكَ لا كَوْمَ جَرَار دويره بيَّ بين،

''کیونکہ وجد و خلالی کرنا منافق کی علامت ہے نہ کہ اللی حدیث کی اور ان کا فرض تھا کہ وہ سوچے کے اگر ہم نے ریٹر خی اوا نہ کہا تا ہوری تر زیباز وجمی ما لات ہوگی بگر السوس کہ انجيل نداعده كالإس الناجناء وكي فمريد البنة مناظرون بثي بييدد. بيدخشوت اور عدالت ہیں س شدید ناکا کی کے بعدان کے بعض فرمہ اور لوگ موبیطے پر ججور ہوگئے۔ وہم افر نے قربانا تھا کہ ہم نے اہل احلام میں ہے کی ہے تین نہ جو رکھتا ہو کہ جے امام ہی یے قر اُنتہ کرتا ہواور متندی ان کے چھے قر اُنت نے کرے تو اس کن نماز باطل و فاسد ہے اور فربابا ک بدآ تخفرت فیضی بین اور بدآ سید کے تحایہ و کالبیمین بین اور بداوم والحب جن الل نحاز عين دور به الم موَّ ويَّ جن المل هما تي عين اور به امام اوزا نتي جن الل شام عين اور مدامام ہیں این معقّبیں اہل معرش ، ان جر سن کی سنے بیٹیس کہا کہ :سیدکائی محض نمازیز ہے اور اس کا امام جبری قرائت کرے ور مفتری فود قرائت نا کرے تو اس کی غماز باطن اور فاسد ہے (مغنی این قدامہ خااص ۲۰۹۴ شرح مقبع بن الرص ۱۴) ہے برفرق بھی اتنی شکستوں کے بعد اس بات برآ الیا۔ چنانچان کے فرد دار عالم مولا نامحہ محدیث کونیوی مؤنف نی انکام اور ان کے ذیبے دیشا کرومولانا ادائیدائی مثری کے تا می داندام بی شهیم فرما بیا کرامام بخادی سے سے کر قام محققین عواست دل حدیث یں ہے کی نے پٹین کیا کہ جو فاتھ نا پڑھے وہ سیانر نامیدہ کافر سے (قرقی الکام تَا/صَ عَنْ ﴾ الشرق مباحب للصح جن المام بخاريًا ہے سے كر دور آريب كے متعقبين ولل معديث تك كن كي تصنيف من به دمون لميس كيا كيا كه فاتحد نه بيث واست كي فها: پر طل ہے اور وو ہے نماز ہے۔ آئ جھن معزات رنے جو قدم أنحابا ہے، جماعت کے نامور ورهٔ ساو رهطرات مین جمی ان کاشه نمین دینا (توضیح ا کوم ج انس ۲۰۰۳) بھر تکھتے ہیں: '' فاتھ ندیج سے والے پر تکفیر کا قلا کی یاس کے بے نماز ہونے کا فتو ٹی نیام شاقعی ہے لے کر کسی محقق فسد دار عالم نے نہیں دیا۔''

(توضيح الكلام خاليس 44)

کار دونوں محتق آستاد شاگرہ تکھتے ہیں: ''جو یہ سجھے کہ فاتھ طلف الامام فرض نیس اور نماز خوا اجبری ہو یا سری اس میں فاتھ نہ پڑھے تو اس کی نماز یاطن نیس ۔''

(خيرالكام ص٣٠، لوشيح الكام جه الحق ٢٥٥)

براوران اسلام! جب اس قرق كرومه دار افراو في فيعله وسدوا توخير تحتق ادر فبر ذحد وارحفرات كواب بداشقال انكيز كامتم كردينا عاسب تقاء كم سولوي اشرف مليم موسوف نے اب بائے لا كدرو بے انعام كا جينے شائع كرديا جس كواس فرقہ کے غیر ذمہ دار معترات ہر گھر اور معید میں بھینا رہے جیں اور ذمہ دار لوگ ان کی بشت بناق خاموق سے کررہے ہیں۔ اس لئے ہم اس کے اس بھٹے کومنظور کرتے ہیں بعر ہلے۔ ده يا هج لا كوروپيه إي تج يز كره و عدالت عاليه لا بوريش جمع كرواكر عدالت عاليه يش كيس دائركرين در عدالت بعيل فيعل كي لئة طلب كريد عدالت بي بيليمولوي اشرف سلیم اینا دموی کدامام کے چھیے ، تی قرآن بز مینا حرام ہے اور فاتی بزمینا فرض ہے، جو نہ بڑھے اس کی نماز باطل اور بے کار ہے، اسپنے اشتبار میں تحریر کردہ آبہت فَاقَوْزُواْ مَا فَيَسُوْ مِنَ الْقُوْآن ب تابت كري كاور كراشتارهي وَي كروه صديت لاصلوبة لمن لم يقرأ بقانحة الكتاب خلف الاملم (بَيْلٌ) كاسترك محت اور اس کا متوائز اوراً ہے۔ قرآ ٹی وَادَا قُسویٰ الْفُوْان کے بعد اونا ٹابٹ کریں مے اور اہل سنت کے جو یائیس حوالے تقل کئے ہیں وہ ٹابت کریں کے کمیان کڑایوں ہیں مفتی بیاقول

یہ وہ رخ ہے کہ ادام کے جیسے والی قرآن پاسٹا جرام، درمنع ہے اور فاتی پڑسٹا فوق ہے ، جونہ پاسٹے ہے قداز ہے۔ اگر وہ یہ جہت نہ کر سکے اور ہرگز نہ کرسکن کے قوعدالت میں تحریری فلسٹ تکھیں ہے ۔ اس کے بعد ہم اپنا سلک ' قرآت کے بغیر ترازتیں ہوتی میشنا کو زباجہ اعت ہی ادام کی قرآت سب سے لئے قرآت ہے اس لئے ادام کی قرآت کے وقت مشتلی خاموش دہمیں' قرآن وجہ یٹ سے تابعت کرس کے۔

جساطری فعید کے بغیر ہو آئی ہوا اور خطیب کا فعید سے کی طرف سے
دوا ہو ہو تا ہے خواہ لی نے خطیب کی آ واڈ ٹی ہوا نائی ہوا اگر چدو، قطیب کی خطیب کی آ واڈ ٹی ہوا اگر چدو، قطیب کی آ واڈ ٹی ہوا اگر چدو، قطیب کی آ دی بیٹیں کہنا کہ
علی سے چونکہ خوا فطید نہیں با موائل کی ظرف سے بھی خطیبہ وجھیار کوئی آ دی بیٹیں کہنا کہ
علی سے چونکہ خوا فطید نہیں با حرائات شرق بادہ کر آ یا ہوں۔ ہم بنا سلک قرآن و
عدت سے تاہد کرنے کے بعد می وائر کرنے ہم سے کہنے ہی لاگر البین فر بدوسوں
کری ۔ اگر آ ج کی کا در تی الرحائی الباری سے سے کریوں وی الحجہ ۱۳ او تک یہ وائر کی الحجہ ۱۳ او تک یہ بیٹ کری کری الرف سے باز طریقہ میں وائر کرتے ہم سے فیصلہ نا کی جیٹ کر وائر عوالت جی کیس وائر کرتے ہم سے فیصلہ نا کی الحکہ 17 اور اور اور اور اور کی اگر دو پیدمون کی الرف سیلم سے ذریہ قرش ہوگا جس کو جا کا طریقہ سے مع فر جدوس کی کرنے کے تی ارد قرش ہوگا جس اور اور اور اور اور کی اخرائی اعرائے گا تواب اس فیصلہ کے لئے تی در کریں۔

محمدامين صقعار

الجامعة الاسلامية يؤدق ناؤان كرايق مع رمضاك أمية كسرة العالو

رحیم بارخان میں نام نہادالل حدیث نے بلاتکبیر ہی اینے مذہب کا جھٹکا کردیا

يسم الله المرحمن الرحيم () الحدد لله وسلامً على جباده الذبي اضطفى النابعان

رّ ہے والی بخاری رکھ لیتے ہیں۔ آ ب بمیں بھبیر تحریمہ سے لے کرسلام تک فماز کا مکمل طریقہ دکھا ویں، ہم آپ کے ساتھ مل جائیں گے۔ یہ آپ کی روز روز کی گالیاں ہم ے نہیں تی جاتیں۔اس نے لکے ویا کہ عن اپلی تعمل نماز صرف قر آن و حدیث سے ا تابت كرون كا اور تين جارون كے بعد كا وقت مقرر بوليا۔ اب وہ زميندار رجيم يار خان الله الك مولوى ك ياس مادا مادا واجب تحرير و يمية كمكل شاز كابت رفى ے تو انکار کرویتے کہ تو نے کیوں لکھ ویا؟ تھے کس نے بتایا کہ تعادا وین کافل ہے۔ عارا دین تو تین حارمتلول ہے آ گے نہیں پڑھتا۔ وو بے جارو تین حار دن بارا مارا تجرتا ربا، اپنے ہر مولوی ے الاتا پھرتا رہا۔ آخر مولوی محد یکی خطیب مرکزی جامع مجد مبارک رحیم پارخان کوز بردی لے کر آیا۔حضرت مولانا عبدافنی صاحب وقت مقررو پر نحیک ایک بچے وہاں پہنچ گئے۔ یہ حضرات تمن بچے وہاں بیجے۔ مصر کی تمازئنی امام کے بیجھے بڑھی اور بعد میں ووبار والگ بڑھ لی۔ اگر پہلی نماز جائز نہتھی تو بڑھی کیوں؟ اگر پہلی ہوگئی تھی تو عصر کے بعد نماز لوٹا تا کس حدیث میں ہے؟ پھر مقرب کی نماز تک میں منت ساجت کرتا رہا کہ ہمارا دین تو وہ تین مسئلوں کا ہے۔ آپ ہم سے بوری فماز کا بُوت نه يوچيس رسب لوگ جران تح اور بار بار پاري محت سے كه تيامت كو يورى نماز كا صاب ہوگا یا صرف دو تین مشلول کا۔ آخر مغرب کے بعد بری مشکل ہے مولوی محمہ یجیٰ تار ہوا اور کہا کہ نماز تھمیرے شروع ہوتی ہے۔ حضور علیقہ نے فرمایا: اذا کب ر ف كيسووا. "امام الله اكبر كيم مجى الله اكبركبور" مولانا في جها كه كياي كاريجى ترجمہ ہے کہ امام او کچی اللہ اکبر کے اور مقتری آ ہے۔ شام چو بجے ہے تو ج گئے۔ آخر کہا کہ ابد کر صدیق " نے حضور کے چھیے اونچی آ واز سے اللہ اکبر کھی۔ سب لوگ ہنس ح ہے کہ آ ۔ نے متعندی کے بئے آ ہمتہ بھیر کا اور امام کے لئے او کی بھیر کا جوت و ما تفاء آ ب ق أ بنے قال محے وال آ محدواتی نماز بدلیں والام آ ہنتہ کلیر کہا کرے اور مقتدی بنند آ واز ہے۔ بجرمولوی یجی صاحب زمیندارے لاین سے کہ جارا دیں تو دو تھی متلوں کا ﴿ إِن سِے إِنَّمْ نِهِ كِيول لِكُو وَمَا كُرِيمَ مُعَمَلِ نَمَا وَعُرِيتَ كُرِينَ مِحْدِ مب اللَّ منت اں کی فرئتوں ہے جیران تھے اور یار بارخدا کا شکر کررہے تھے کہ یا اللہ تیراشکر ہے کہ حضرت الام معلم كوتو فق وي كرافندك كوكال دية نماز كالممن طريق مرتب كروا محف المربم ان نومیں نے رقم و کرم پر ہوئے جو کھیر کا مٹلے بھی طل نہیں کر کئے اور ساری عمر نماز کا جنگا کرتے ہیں تو جارا کما حشر ہوتا۔ سب حاضر کن نے تحری طور برنکھا کہ حولوی محریجی خطیب و مع محد مرکزی ممارک الل حدیث مباری نمازق کمانجبیرتری به کا تحمل مئلہ مجی قر وّ ن وحدیث ہے تا بت تہیں کر۔ کا۔اب بدفرقہ رحیم مار خان میں نماذ کا بھڑکا کرنے والا فرقہ کے نام سے حمارف ہے۔ پہلے تھوڑ سے کی قربہ ٹی کرنے کی دجہ ے لوگ ان کو کھوڑ اگروپ کتے ہیں۔

دور برطانیہ میں اہل السنۃ والجماعة الجماعة المحماعة المحمدہ ہونے والے فرقے

بسبع الله الرحيان الرحيم ۞ المُحَمَّدُ لِلَّهِ وَسَلَامُ عَلَى عِبَادِهِ الْمُغِيِّنِ اصْطَعَى. أَمَّالِعَدَ .

براوران املام! بإک و بهنویش اسلام کی دولت انگ سنت وانجها عند احتاف ہی رائے۔ دور برطانبیش کیٹولوگ کٹ کروائی قرآن بن گئے، پیچمائل حدیث ، پیچرکی ک کیچراند نی۔

اللي سنت والجماعت بالترتيب جارولال شرعيه كومانيخ مين.

كتاب القدر سنت رسول الله أشاع أور أقياماء

بالذرائة من سند يجن ال معنول إلى يا غذاكى الموالى كذب عن المامان كيس الواريد الوار المامان العمل العاديث الترابع التراكي المرام علقط كي التوارا أو العالم الوراده والمان الترامة المرامة الترامين الرافق كرامة المدعن التي خود رائي العسجسات كان عند والى الوائية ، الوحد من أس يرام الرامة وأراش حديث كما التراجي

(۱) بیار مثن (اجر من کا اجرائی بنیک افرار راجد منتعلم علیهم بین شاش بیره است کی با مثن (اجرائی بیره منتقلم بنید به شیطان یک بیشان این بنیک منتقلم بنید به شیطان یک بیشان این به کست که معصوب برای در صافی بیل دو ماری آمت ک خلاف بیابهوت بیشان بین میکند بین که این به بین نے واسل بین میکند این منتقل بین میکند بین میکند بین میل بین میکند بین میل یک میل معموم بین ادر افر جیند بین میل یک میل این میکند بین میل یک میل این میکند بین میل این میکند بین میل و بین میکند بین میل میکند بین این میکند بین این میکند بین این میکند بین این میکند بین میل میکند بین این میکند بین بین این میکند بین میکند بین این میکند بین میکند بین این میکند بین این میکند بین میکند بین این میکند بین این میکند بین میکند بی میکند بین میکند بی میکند بین میکند بین میکند بین میکند بی میکند بی میکند

(۱۳۰) - ایستان کی سیائل میں مجتمد پر اجتهان وابنیب ہے اور غیر بھتید پر تقلید وابنیب ہے۔ جنید غیر مقلد پر تمویر والاب ہے۔ حقرت میں بانید السلام خود اجتماد فریائیں کے وواور آ ہے کا کوئی ایک ساتھی بھی اوغیب غیر مقلد شاہ کال موت بلے مدود گی ۔

(۴) ۔ انتہ اراب سے تی بلک ملک و کور یہ ہے کی زونہ میں نہ کوئی سرزائی اتوانہ ہو پرویزی نہ تیرمشد۔ کی آبیہ سمانی آمی ایک تالی آمی آبی آبی آبی تاہی ہمی ایک تی تاہی ہمی آبیہ انہیہ آب ایک سلطان اسلام آمی آبیہ مغمراً می آبیہ محدث کے بارے میں بھی آبی ایک ہمی معتبر حوالہ چیش نہیں کیا جاسکت کے دون این تبادی اجیت رکھتا تھا دور نہ تقییر کرتا تھا بلک فیر مقدد تھا۔ سوم کی ایتدائی بارد صدیجے میں فی صدی صرف ایک فیرمشد بین بارد موساں یں مرف بارہ غیرمقلدوں کا نام ٹایت کردیں۔

ن تیخ آھے کا نہ کوار ال سے یہ بازو بیرے آزیائے ہوئے ہی

المحمد بقدا آج اس بیدے ملک میں اسلام کی جوزوئی نظر آبری ہے، کروڑوں

روں کو اسلام کا کھے اٹل سنت والجماعت احتاف نے بی یوروں سرا روی ہے ، روروں کو اسلام کا کھے اٹل سنت والجماعت احتاف نے بی پردوں ہے اور وہ کروز ول کو فرائل سنت والجماعت احتاف کے بین رہنمائی الام کی۔ فیر سفلایت کا دور آیا تو کمن کافر کو تو کہا گئے۔ پڑھنے والے تم نبیت کا افکار کر گئے ۔ گفیہ پڑھنے والے بی افل قرآن بین سے ، گفیہ پڑھنے والے بی افل قرآن بین سے ، گفیہ پڑھنے والے بی افل قرآن بین سے ، گفیہ پڑھنے والے بی افل قرآن بین سے ، گفیہ پڑھنے والے بی افل قرآن بین سے ، گفیہ پڑھنے والے اٹل سنت والجماعت سے بائی بین کر الجمد بیھ بین سے ، کی آئے کافر کو بیے کافر کو بیے کافر کو بیے کافر کو بیے کافر کو بیا ہے۔

(١) أن ي السنطانية في وين كو كال فرمايا الهار الاستطار الكام على أبعن

سمّاب وسنت بھی بعض ادکام تصبیعاً جھے بعض تعلیل ۔ دوسری قتم کے احکام کو ایس و و آیاس نے فلاہر فرمالا۔ انگر نے صرف جاروں فتم کے احکام کومرتب در مدوّن فرمالا۔

(٨) تقديد فيرج تندير واجب ب_المام كا قول كفديد مي موجود بر

(٩) قربيكيرو بحكم معرب مغيروي بندجا راجين

(*) ۔ انٹراز اور کی تقلید اور فقد کا مشتر جماعت ٹاجیا اگر اسنت وانجماعت سے خارج ہیں۔

جناب حافظ محمد عبداللدروپڑی کے قرآنی معارف فرآنی معارف

دِ<u>حسم الألَّاف الأين حينين الأن حيم</u>ي 0 الْخَمَّدُ لِلَّهِ وْسُلَامُ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِيْنُ اصْطَعَى. اثَّاتِمَد:

مافقاصا دب مرصوف فرقد غیرمقلدین کے تدری اعظم ہیں جیدا کرائ فرق کے سنظم ہیں جیدا کرائ فرق کے سنظر اعظم بین جیدا کرائ فرق مسائل علیہ میں جن ب حافقا عبدالقدور دویزی کی شائع کرود کتاب اسمون دویزی کی جمیدات تظرا سے معلی مسائل علیہ میں بحد ثین وعلی آمت کی تحقیق اور تحدیث دویزی کی جمیدات تظرا سے معلی بوتا ہے ، کیونک حافظ میدائندوری کی نے میں جید ، شوکانی ، نفادی ، این جرید میاں تذری حسین ، ایونفس عالی ، چر براج الدین شاہ جرحینڈا ، امام ترزی ، مولا تا عظاء الله ، تحدیث اور تا میلا ، کو دی تام الدین الهائی وغیرہ جونا گڑھی ، واؤد غز فری ، شاہ الله امر ترزی ، عبدالوباب والوی ، نام الدین الهائی وغیرہ علیا ، کو دی خد شعلیاں لگائی ہیں اور عافقارویزی صاحب میکام بقول خود ، فی خدمت میک کر کرتے تھے ، چائی بیسے جان اور کا کی خدا میں اس اور نا ، اند) کوجی موزی کی خد ، کافر بک مقصود ہے ۔ مرف اغلام کی جد ہے ہم ان (نا ، اند) کوجی موزی کی برمظام موردی برمی میں موردی برمی میں موردی برمظام موردی میں موردی برمی میں موردی میں موردی میں موردی برمی میں موردی میں موردی میں موردی برمی موردی برمی موردی میں موردی میں میں موردی میں موردی میں میں موردی میں م

من درموُلغه مولا؟ نتاه الندام تسري)

- (۱) سوانا تناواللہ نے لوئی دیا کہ حالہ مورت زائیہ کا انکاع زائی ہے بائز ہے۔ رویزی صاحب نے فرمایا کہ بیٹوئی خلاف قرآن و حدیث ہے۔ اس کے جواب بھی مواد: اندواللہ نے کوئی آیت یا صاحت ویش نیس کی بلکہ سرف میاں نذار مسین کا قوال چیش کردیا (عن ۲۱٬۲۳۰)
- (۳) مولای شاہ اللہ امرتری اور ارام میں چینیاں الدور معادی عبدالواحد صاحب غرفوی نے تو تو ی دیا کہ بنگ کا مود لیٹا جائز ہے ۔ اس پر عدت رویزی نے اعتراض کیا تو مواد یا شاہ اللہ نے مرف ہے جواب ، یا کہ در پاری صاحب کو حرام مود کی تحریف نہیں آئی (مظالم رویزی س۳۴) کئین موفاع ٹا واحد نے مدحائی مود کی تحریف کی شراف کی معراف کی تحریف کی شراف کی معراف کے درام مود کی تحریف کی شراف مود کی تحریف کی شراف مود کی۔
- (۴) ۔ مولان ڈیدافقہ یہ اُفقی دیا کہ کافر کو ڈکون دیپنے سے مجی زکرہ اوا ہوئی ہے۔ جناب دوئزی نے ترکایا کہ رفق کی حدیث کے فواف ہے۔ کیونکہ صدیث میں

ے کر مسلمان کو جو ہے کہ اپنی کھانا مقل کو کھا ہے ۔ اس سے جواب میں موار نا شکا والفہ انھینے میں : حافظ عبداللہ رو پڑی صاحب کے قزار کیا مقل کا دائر و اٹھا تھک ہے کہ کو گی اور والر والٹا تھک نہ ہوگا۔ جی مسلم تو متنی کی آخر بیاں سے بالبدالیت خاری ہیں ، مسلم فرقول میں سے رافعی ، خارجی ، معتم ال رجمی ، کا دبائی ، هرش اور فرقی مسلم الوک نے متنی ہیں و متنا لم رویز می ہے سے) موار ناش واللہ نے کا ویافوں کو جی مسلمان بائن لیا ہے۔

بینتی دافته میداند رویزی ساحب ادر موانا شاء الله صاحب کی بعش اسائل پیس مشکش به پیدونون این آب کوهای حدیث کیتر تجه اور دیونی کرتے تھے کہ جم آمت محمد بدا کے اختیا فات منادین کے گمر براستے افتیا فات مجمی ندمنا سکے۔

بيون کی عظمت.

جینی میں بے نہ اس کوحسن سیح کہا ہے۔ رویزی صاحب نے شوکانی کی اندہی تھید میں ایک سائس میں چوجھوٹ لکے والے۔

متلة نور:

حافظ عبدالله رویزی صاحب ئے اپنے اخبار مؤرف ۲۹ ٹومیر ۱۹۳۵ء میں آیک افت شائع کی جس میں ایک شعریاتی ۔

> انت الندى من نورك البدر اكتسى والشمسس مشرقة بندور بها كا

ترجمہ: (آ مخضرت ملط کو کا طب کرے) آپ دہ جی کہ بدر (بائد) فے آپ کا اوراوز هاہ اورسورج مجی آپ عل کے تورے روش ہے۔

ال پر علاہ الل صدیت میں ہے موادی اجمہ اللہ مدری مدرسہ رسانے دیلی اور موادی محمد جونا گرجی نے فتوی ویا: "یہ موادی عبداللہ روپزی ساحب مجونے ہیں، بد عقیدہ ہیں۔ اسلم وین ہے بلاء گا ہم فقیدہ جونا اپنا ایمان برباد کرنا ہے۔ یہ فقیدہ مشرکانہ فقیدہ ہے۔ اس کا یہ قول سرح شرک ہے۔ اس کا وعظ ہرگز نہ سنو۔ بلکہ آگر اس ہوقو وعظ بھی نہ کہنے دو۔ نہ اس کے چیجے جمعہ بما علی وعظ ہرگز نہ سنو۔ بلکہ آگر اس ہوقو وعظ بھی نہ کہنے دو۔ نہ اس کے چیجے جمعہ بما عت بردھو (مظالم رہ بردی میں ۱۹۸۸) یہ شخص طحد ہے۔ اس سے قطع تعلق ضروری ہے جمعہ ارتبی مدسر میاں ساحب) وہ مسلمان نہیں، مشرک ہے (اجمداللہ، عبدالرحمٰن، عبدالشہ، عبدالرحمٰن، عبدالتہ، عبدالرحمٰن، عبداللہ، عبدالرحمٰن، عبداللہ، عبدالرحمٰن، عبداللہ، عبداللہ، عبدالرحمٰن، عبداللہ، ع

﴿ نُورِ فِي اللَّهِ مِن اللَّهِ مِن مِن الأرائعَ اللَّهِ وَقَلَمُ وَسَعَتُ ﴾ والله كالمعلا من الدراس أي الفقرار مي مَنازية هنا جائز اور ورسط أنين وشاس كالناز ، كيا جاوب اور نابق مسرانون كي قيرون عن فين أبن كيا جاوب (عن الشام بدائلي من مهرانون ومبراز الني المير بعراعت قريد الل حديث) بيرمشرك كافر خارف عن الاسلام بينة (عبد الرحمي) لا بيانا حوال جاند اور في وي سواد الله المرش في أي آلب عظام روية في شن ورق جي .

معارف قرآنی

سنان گامان استری ساسب فردت میں کوایک وقد مافظ عبدالشرائی ساسب مورد کی ایک وقد مافظ عبدالشرائی مورد کے ایک حدود کا شق بیدا ہوا تو آپ نے سب سے پہلے ایستان کا شق بیدا ہوا تو آپ نے سب سے پہلے ایستان کا شق کی الارض خلیفة المحتمیٰ کیا اور کی سے الاستان کی اید ایس سے بعد ایستان کی اید ایس سے بعد ایستان کی اید ایستان کا ایستان کی اید ایستان کی اید ایستان کی اید ایستان کا ایستان کی ایک کا ایک

" رم کی شکل آخر بیا صراق کی ہے۔ رم کی آر دن عواج انگل ہے آر رہ انگل ان عورت کی دو تی ہے۔ ہم بستری کے دفت آخیب (آلد سرد) کردن رحم میں داخل بحق ہے در اس رہے مئی رتم میں چیکی ہے۔ آگر کردن رحم در تحفیب لمبائی میں برابر بواں قاسمی درخا (عمبائی) رحم میں چیکی ہی سیدورت در ہے، ریمن ہے۔" شہر وہ سیا عورت کو اپنی گیاد و الکیوں ہے شادی سے پہلے دکھا کی آلت کو تا ہے لیات بیا ہے کہ یہ کی درما رحم کے بہتی تھے گیا تھیں؟ المادر بعض وفعد مرد کی کی زیاده وقتی (اردو) کے ساتھ انگے تا ہیں ائید قار جدوسط میں کنگٹ کا ہے۔ گر یہ طاقت اور قوت مردی پر سوقوف ہے '' (انتھیم فیاش ۱۹۳۶م میں کالم فیرا)

تتھرہ: ان کے مخان کا طریقہ لکے دینے تو بہتنے ہا کا جمعا ہو جاتا۔

'' رقم مثانہ (پیٹا ب کی تھی) اور روہ وسنتیم (پائنانہ نظنے کی انتزی) کے درمیان پٹھے کی انتزی) کے درمیان پٹھے کی طرح سفید رنگ کا گریب قریب آل درمیان پٹھے کی طرح سفید رنگ کا گردن دالا ایک شفو ہے جس کی شکل قریب قریب آلئی هروائی کی جلایا کرتے ہیں گر پردائنشراس کا قدرت نے خود مرد کے اندر مکا ہے۔ مردائی آلت (ڈکر) کو اُٹھا کر ہیڑو کے ساتھ لگا ہے تو آلت مع خصیتیں رقم کا پورا نششہ سے۔''

شيمره: نغشه مناويية توشايد مفيد بونار (شاءالله)

"آلت بعزلہ کردن رقع کے ہوا معتمین بھڑ یہ بھیلے حصر رقع کے ہیں۔
پہلا حصر رقع کا ناف کے قریب سے شروع ہوتا ہے اور تحصیتین بھڑ یہ کی قورت کی شرمناہ میں
دائع ہوتی ہے، چیے ایک آسٹین دوسری آسٹین میں ہو۔ گردن رقع پرزائد کوشت بھاہوی
ہے۔ اس کو رقع کا مند کہتے ہیں اور بیامنہ ہمیشہ بھڑ دہتا ہے۔ ہم بستری کے وقت آلت
کے اندر جانے سے مملل ہے یا جب بچتہ بھیا ہوتا ہے۔ قد رہت نے رقم کے مند میں
خصوصیت کے ساتھ مذت کا احساس رکھا ہے۔ آگر آلت اس کو چھوے تو سرد محدرت
دونوں محظوظ ہوت ہیں، خاص کر جب آست اور گردن رقع کی قبال کیسانی ہوتھ بیرم د

عموما تبعا گلاشته ای مورسته کی دو تی سهادر زیاده سه زیاده کیار دانگشته دو تی سهانا تشهیر وال به میچ تبج سهامه

" مندرہ کا طورت کی شریکاہ بھی پیشا ہے۔ سے مودائ سے ایک اٹلی سے پیکو گا ایکنے ہوڑا ہے۔

تهمره - عاده صاحب نے وق محت سے بنائش کی ہے۔ ۔ ﴿ ثَنَّا وَاللَّهُ }

''اہ را آگر کرون رقم کی کی حورت بھی وہ کس جائی۔ اور کی بھی ہ کیں جائی۔ مائل ہوت ہے۔ وقم کے باہر کی طرف آئر چدائد کی قرم میس ہوئی تغیین ہائیں اس کا نہایت قرم قرش دار ہوتا ہے تا کہ آلٹ (قرم) کے اقول کے وقت وہ نول محقوظ ہوں نے ایم از کی طرح محمجیجے سے محیجے جام ہے تاکہ جھی آلمت واقل عوالیّا ای حرحت جائے۔ انوار کی اور نوس میں وقم کے مند پر چکور کیس کی جوئی تیں جو ترکی صبحت سے بھٹ جائی ہیں۔ اس واز ان کا درے کھے ہیں۔''

(تنظيم الل مديث رويزي كم يون ١٩٣٢ وش ٢ و كالم فيره)

فارتحن تصوصاً علام العرفين ان معارف كوملا مظارك أمور فريل كما بابت

() كايد معارف قرآن جي يا كوك شاستر؟

اطلاح ومن كد:

- (٢) بيممارف آيه موموف سع معبط يوشكة بين؟
- (٣) سلف صالحین عیں ہے تھی چھوتے یو ہے مفسر نے ان معارف کو استبار کیا ہے؟
- (٣) آبیا عد مکرام جازت وی شک کدان معارف کوایک چھوٹے ہے رسالے کی

صورت میں تکھوا کراڑ کوں اوراڑ کیوں کے مداری میں وافل تعلیم کیا جائے؟

(مظالم رويزي ص٥٥)

ان معارف کو جناب مولانا محمد جونا گرھی صاحب نے بھی اپنے اخبار محمدی بی نقل فرمایا ہے۔ عنوان میددیا ہے: ''عبداللہ روپڑی ایڈ یٹر تنظیم کے بیان کروہ معارف قرآنی، اے کوک شاسر کمیں یالذت النسامیاتر غیب بدکاری؟''

ان معارف کا تحدیمی پڑھ لیں۔ محدث روپڑی فرماتے ہیں۔ الہم ہمتری کی روّی صورت یہ ہے کہ مورت مرو کے اوپر ہو اور مروچت لیٹا ہو۔ اس پٹس کئی فقسان ہیں۔ ایک تو انزال بٹس وقت ہے۔ ووم بعض دفعہ مرد کی شرم گاہ ہے منی پوری خارج خیس ہوتی ، بلکہ اندروُک کر سڑ جاتی ہے جو بیاری کا باعث ہے۔ سوم بعض دفعہ مورت کی شرم گاہ بٹس دائش ہوجاتی ہے ، اس ہے بھی بیار ہونے کا خطرہ ہے۔

اور بہستری کی بہتر صورت ہیہ ہے کہ عورت چت کیل ہو اور مرد اوپر ہو۔ عورت کی رانیں اٹھا کر بہت می چیئر چھاڑ کے بعد جب عورت کی آتھوں کی رنگت بدل جائے اور اس کی طبیعت میں کمال جوش آجائے اور مرد کو اپنی جانب کیمیٹے تو اس وقت وقول کرے۔اس مے مردعورت کا پانی اسٹے فکل کرعموناً حمل قرار پاتا ہے۔'' (اخبار عمدی ہا جوری 1979ء 17/مس11، کالم نہر)

یہ حافظ عبداللہ روپڑی تھے۔ اب ذرا علامہ وحیدالزمان صاحب کی بھی س کچے! ارشاد قرماتے میں کہ بہتر عورت وہ ہے کہ جس کی قرن تھک ہو۔ چوشہوت کے غلب سے دانت پر دانت رگڑ رہی ہو۔ جو جماع کراتے وقت کروٹ سے لیٹتی ہو۔

(افات الديث ج الص عد)

یہ دونوں صاحبان الی حدیث ہیں۔ ایک صاحب چت لٹا کر دان اُٹھائے کو پہند کرتے ہیں، دومرے صاحب کردٹ پرلٹا کر دانتوں کی ڈکڑ پر کان لگاتے ہیں۔

نظر افي ابني پيند اپي ائي

جناب وحیو بخرمان صاحب به محی فرمانتے ہیں کر آگر اپنا آل نٹائل اپنی ویر پی وافل کرے توھنس فرخ میں ہوتا جب تک افزال شہور

(نزل الايرار من فقد النبي العقار، ج الص مه)

و کیکے! قرآن وصدیت کتام پر کیے کیے تجربات کے جاتے ہیں؟ آپ زیادہ پر بیٹان نہوں کہ اگر اپنا آ لہ خاص آئی ، بریش کوئی نا تجرب کارد جل و کر سکوۃ وہ د برکا حق کیے اوا کرے ۔ آ اس کا حل بھی موجود ہے۔ مولوی عثمان صاحب الحل مدیدے بڈرایے اخبار حمری عجداللہ محدث روپڑی صاحب سے دریافت فرماتے ہیں کہ طالب علی کے زمائے عمی آ ہے علت اکمشارگ (مصولیت) عمل جاتا ہے، اب وہ عادت چھوٹ گئ ہے یا ایکی بائی ہے۔ قائدہ تو یہ ہے کہ جب تک آپ عمل موفیت باتی رہے میں اور اب بھی ترب شریات و جندا میریائی کر کے خدا ہے ڈر کے اس کا صحیح جواب و ایں اور اب بھی ترب کرلیں۔ (اخبار محدی و بلی ہا جوانائی ۱۹۳۹ء میں ہا)

عورتول كوخاص نفيحت:

جناب میاں تذریحتین صاحب نقل فرمانے ہیں: "عودتوں کے لئے موئے زیرِناف کے اکھاڑے سے اُسترے سے موٹ ٹا ایجا ہے، کی تک اکھاڑنے سے محل ڈ میلا موجا تا ہے۔ (فرآوٹی تزریدے ۲/ص ۵۲۱)

جناب محدث رويزى سف موادا على الله كوجمى رمعتونى وغيرو قرما يا تعارموا ؟

محد جونا مرجعی قرمائے ہیں: سولانا شاہ اللہ کو جہید اور معتزلہ کہنے والا کذاب مفتزی، دسال، خدائی مجرم، جماعت کا چورہ تمک حرام، النزاق پہند، شکاق دوست، منافق، الدائنصام، منسد ٹی الارش، بھکو باز رہمت طروز اور نسادی انسان ہے۔

(ٹُٹالُ زَاعِ مِن ۱۳۸ مؤلنہ محدث ویزی)

مولانا محد جونا گزشی صاحب محدث رویزی کے بارے جس مزید فرماتے میں ''ادنیا جس اگر کمی کوائل ترین ایش کی ضرورت ہوتھ اس چھوٹی کھویزی والی افسان ترا ''ستی عبدالقدردیزی کودیکے لیے۔'' (اشبار محری ۱۵ تمبر ۱۹۳۹، جس سے)

بیده بدانشه رویزی صرف جموت بوسالتی نیک از خود محریت بین اتبست تراشیع بین ر (اخبار محری ۱۵۰۰ آبرین ۱۹۳۹ مارس ۱۰۰)

میرا مشورہ تو یہ ہے کہ اٹنی (عبداللہ روپزی) کو بھول جائے، اٹین بکتے ویتیتے ، جو جا بیں کمیں ، جاندنی جب پھلتی ہے تو کتے بھو تکتے بی رہبے ہیں (اخبار فری کم ایرین ۱۹۲۹ء)

''روپڑ کا خوف ٹاک پھیڑیا'' کا عنوان دے کر بکھتے ہیں کہ روپڑی صاحب نے تمن مورد یہ کٹائیں تربے نے کے لئے اکتھے کتے اور باناؤ کا دہشم کر مجے۔

(اخبارقدل كم جون ١٩٣٩ء)

اعے با تو محفتم و بنم دل زسیدم که آذروه شوی درنه طن بسیار ست

مسعودی فتنہ کے بے دلیل سوالات کا جواب دلائل شرعیہ سے



اَلْحَمَدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِنَادِهِ الَّذِينِ اصْطَفَى. آمَّابَعُد :

(۱) اُصولِ و این الله کا الزاع: الله عُوا مَا اَلْوَلَ اللَّهُمْ مِنْ وُلِكُمْ عِيره کا كره اس کی جواللہ کی طرف سے نازل کیا تھیا۔

(۲) انتہارع دسول فحل إن تخفف فيجنون اللّه فاتبغوني قرما ويجن (الله فاتبغوني) قرما ويجن (الله ت الكُفّة) اُئرتم الله سے محبت كر سے بوتو برى تا بعدادى كرد)

(٣) انہائی ایری ایری اسے وضیق گینسائی انوٹسول بین بھید ما فیش که الهندی وینسے عَیْسُ سَبِیل الْحَدُوْمِیْشِ نُولِهِ خا تُولِی وَنَصَلِه حَلِیْمُ وَسَاءً تَ مَصِیلُ اللّٰہِ عَلَى الْعَدِ محص خالفت کرے رمول کی بعد واضح ہویائے جایت کے اور چھوڑ وسے دست موسوں کا (اُجراع) وہ دوزج میں حاسے گاہو ہرائی کا ہے۔

(۳) انتباع میجهم (اقبیع سیال مَنْ آناب اِلْیُ. اودهلیدکراس کے خاہب ک جوہری الرف رجوع کرتا ہے۔ (القبان)

بم مسلون بيعتبده ركعت بين كرقراً لن باك يرخوا راول العال الكافح في الم

رے بو محلی تمونہ بیش فرمایا آس کو سنت کتے ہیں ، آپ تا گانے نے علیہ کسے بسستنے فرما کر اس کو اا زم پکڑنے کا تھم ویا اس لئے ہم اہل سنت ہیں ، فیرالقرون ہیں ہی نام مشہور تھا اور اہل السنة کی روایات کو بی قبول کیا جاتا تھا (سیح مسلم ص ۱۱) اس کے بعد اجماعی مسائل کو مائے کی وجہ ہے جم الجماعة اور اجتہادی مسائل کی وجہ ہے جن کہلاتے ہیں۔ دور نبوت سے لے کر آئ تک اہل السنة ان جار دادائل کو مائے آرہے ہیں جو مسئلہ ان جاروں رابلوں میں ہے کی دلیل سے فابت ہواس کو شرق مسئلہ کہتے ہیں۔ مسئلہ ان جاروں رابلوں میں سے کی دلیل سے فابت ہواس کو شرق مسئلہ کہتے ہیں۔ اجماع مسئلہ میں اجماع ہیں۔ اجماع اور اجتہاد مراد وتی اور کا احتجاد مراد وتی اور کا اور کا احتجاد مراد وتی اور کا احتجاد می احتجاد مراد وتی اور کا احتجاد می احتجاد مراد وتی اور کا احتجاد مراد وتی احتجاد میں احتجاد مراد وتی اور کا احتجاد میں احتجاد میں احتجاد میں شرکتا کی احتجاد میں احتج

انگریز کے دور حکومت میں غیر مقلدین نے ابھائ اور اجتہاوکو مانے سے
انگار کردیا۔ غیر مقلدین کا بیر نیا فرقہ کئی فرقیوں میں بٹ گیا، ایک فرتی کا نام جماعت
خرباء الل حدیث ہوا ہو ۱۳۱۳ھ میں بنی۔ ای فرتی ہیں۔ ۱۳۹۵ھ میں ایک سے فتے نے
جہتد بلکہ ایک جائل مسعود اسمہ اس نے بیرجبوٹ گھڑا کر حتی ، شافی ، مالکی، جنبلی حضرات
جہتد بلکہ ایک جائل مسعود اسمہ ۔ اس نے بیرجبوٹ گھڑا کر حتی ، شافی ، مالکی، جنبلی حضرات
نے اپنے مسلمان ہونے سے انگار کرویا ہے۔ اس لئے اللہ نے ۱۳۹۵ھ میں میرے
فرقہ کا نام جماعت المسلمین رکھا ہے۔ ویکھوا خدا پر بھی جھوٹ پولا اور مسلمانوں پر بھی
کہ وہ مسلمان نام چھوڑ بچے ہیں۔ خدا پر بیدایا ہی جھوٹ ہے بیسے کوئی قادیائی کی
کہ دو مسلمان نام چھوڑ بچے ہیں۔ خدا پر بیدایا ہی جھوٹ ہے جسے کوئی قادیائی کی
میں دوجگہ
کہ دمارا ''ریو و' جو ۱۹۲۸ء میں بنا ہے یہ وہی ہے جس کا ذکر قرآن پاک میں دوجگہ
ہے۔ ایسے بی مسعود نے کہا کہ میرا بڑھتی فرقہ جو ۱۳۹۵ھ میں بنا اس کا نام خدا اور

براة المل حديث بير حجنثرا



ٱلْحَمَدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى جِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَعَى. ٱكَانِعُد :

عیدالفتی ۱۳۰۸ء کے بعد حضرت مولانا تیر مسلم صاحب قاکی برظلا کی معرفت ایک رسالہ "برا آ افل صدیت " آردہ طلہ جو دراصل ایک سندگی رسالہ کا ترجہ ہے ۔ اس عمل جو بدیج اللہ بن شاہ کی آیک آخر برشائع کی گئی ہے۔

پیربدیع الدین شاه پیرجهندٔ ا کامخطرتعارف:

سنده می الل است والجماعة کا ایک قدیم علی خاندان ہے جو راشوری خاندان کہ بہت علی خاندان ہے جو راشوری خاندان کی بہت علی است میں۔ بیسب سی حتی ہیں اور سندھ اور بیرون سندھ ہیں اس خاندان کی بہت علی سند بات ہیں۔ اس خاندان میں تقریباً سات بہت اور ایک بردرگ گزرے ہیں جو صاحب الروف کے لقب ہے مشہور تھے۔ آپ کا اسم گرای جناب ہیر راشداند شاہ صاحب قدس سرہ تھی۔ آپ کی طرف منسوب ہوکر براوگ راشدی کہلائے۔ برسب حتی صاحب میں بدلی الدین شاہ ساحب کے دادا جان حضرت ہیر رشداند شاہ صاحب قدس سرہ تھے، وہمی حتی شہر ساحب کے دادا جان حضرت ہیر رشداند شاہ صاحب بدلی سرہ تھے، دو میں حقرت میں مرہ تھے، دو میں حضرت مولاء ہی مناہ الدین شاہ صاحب راشدی قدس سرہ تھے، خان میں سب سے بات خاند اکبرا درگدی تھی حضرت مولاء ہی مناہ الدین شاہ صاحب راشدی قدس سرہ تھے،

جن شاخ زندا کم معفرت اقدی ویردیب اندشاه صاحب الا و السبت هسته بسوس عبد و صهیم مساوعة علیت آن کل بیربینند و شریف جن سامی و دگاه شریف جی می مب نما بعد میل منتی من -

حضرت ہے دشداللہ شاہ صاحب قدش مراف نے اپنے از تمرکی میں ہی اپنی ورا اٹت شرقی حصول کے مطابق اپنی اوارد میں تقلیم قرما دی تھی اور سب جینوں کے مطاور دیسے اندی تھیں مطابق مور نا ہے ضیار الدین شاہ صاحب قدش مرافی و بنام کیونکہ بات عدر بوریوں کے متفقہ تصدیدے مطابق آب ہی اس کے سب سے زیادہ اٹس تھے۔

حضرت موارنا ہیج رشد ہفتہ صاحب قدس مرف کے وصاب کے بعد ہاتی سب بھائی تو اسنے والد گرائی اور اسنے متنقہ فیصد پر قائم رہے تمرییر احسان اللہ شاہ صاحب ینے اپنے والد کرا می اور سب بھا تیوں کے متلق اٹھلے کو دینے ہے اٹکار کروہ اور جشرت 194 ما ہے تب والد من شاہ صاحب لڈس مرہ ہے۔ کدئی نیٹنی کے 20 ہے بین جمکز اکر وہ لگہ مقد مداری شروع تروی- موکر به تعربی ندی تحق اس با دار می میت کے بارے تھے متفقہ طور ایر و رابعنوم و بورند سے استفق کیا میں۔ وامانعلوم و بورند ہے فتویٰ آیا کہ عمری میں وراثت کی نوے کا المیت کو دیکھا جاتا ہے، پونک آ ہے کے والد صاحب ورسب بھائیں نے متفقہ طور پر مفرت مخدوم بیر غیاء الدین شاہ صاحب لقدس مرؤ کوئاں کا اہل قرار دیا ہے۔اب ان کے ساتھ جنگٹرا حائز نہیں۔ بدفقائی اس مجی ورگاہ شریف میں تنونا ہے۔ بیٹنو کی عضرت مولانا مفتی مزیز وارنس صاحب قدس سرہ کا تح برقرباع بواست ادراؤم العصر فنغرت موفانا علامه مبيدانورشاه صب تشبيري رجمت الله حدے بھی دیخط جیمار اس نوکی کے بعد جناب ہے اصال ابندیزہ میں صرف

فروقی ہے۔ آپ مشیور غیر مقلد عالم مولایا تھا، اللہ صاحب امرتسری کے شاکرد اور ٹائی۔ غیر مقلد تیں۔

مىلى ملا قات:

میری کیلی ملاقات جناب بیر بدنیج الله من صاحب ہے اس وقت ہوئی جب میں ذکلی دفعہ سندھ میں حمیا اور ہاتی منطق یو این کے قریب ایک بھٹی کوتھ مٹان مل کیریا میں یہ ی صاحب ہے بیرا تاریخی مناظرہ ہوا۔ بیمناظرہ چید تھنے کا ہے جس میں سنلے تھایدہ قر أت خلف الإمام أيمن برمناظره جوالوربير صاحب كالملمي بندار خاك جميال كمايه اس مناخرو کی کیشنیں مندھ اور ہیرون مندھ ملکہ حربین شریغین تک پینچیں ، کیشیں من کر اليون ادريكاتون سب كالمتنقذ فيعلمه يجاريا كدبير بدلخ الدين شاوكونهايت وكسد آميز تاریخی فکست ہوئی ہے۔اس مناظرہ کے بعد تقریباً جارسان تک تو ہو صاحب برموت کی می خاموش طاری روی۔ آخر ان کی جماعت نے منت تاجب کی کہ یہ بات تو آ نآب نیمروز کی طرح واضح ہوگئی ہے کہ آ ہے میں مناظرو کی املیت بافکل نہیں ہے۔ ان لنے آ ہید آ ئندہ مجمی مناظرہ کی نعطی شاکر پی کٹین تقریرہ وتو پر کے ور اید فقیار پرتیما بازی اور دن قب کی کردار کھی کی مجم کا آغاز فرمائیں۔ اس بیس ہم آپ کوسندھ کا صدر عاتے ہیں۔ بینا بی اب آب اپنے صدارتی فرائعل کی بنا پر سلف کے خلاف بر ممانی کھینانے اور برزمانی کرنے میں مصروف ان ۔ ای سلسلہ کی ایک کڑی ہے" رسالہ برأہ الل هو بيث^{د و} بيمي ست .

فرقه کی ابتداه:

يدايك تاريخي حقيقت ب كربعو سنده في اسلام الات واف، اسلام

انوٹ: ایباں فواب صاحب نے اس تاریخی حقیقت کوشیم کیا کہ ہندوستان کے فاقعین حکی تھے، جکہ حضور ملک نے فواد، بند کے بارے میں ویٹر کوئی فرمائی حمی ۔ (سند احمد بند کے میں ۱۷۸ بن می ۱۲۹ می ۱۲۹ می ۲۹ سائن کی کتاب اجباد کا یہ استان کی کہا عمد اقت کی فہایت روٹن الیس ہے۔

ابل اسنة والجماعة :

ابل اسنة والجماعة كالصاح بهيع كدوكل ترعيد جارجين

(۱) كَ بِ الله و(٢) منه ورمول الله و(٣) إيلام أمن و(ع) قيا مِه شرقي .

اہلِ قرآن:

انگریز نے اپنے دور میں اٹیلے فرق پہدا کیا جس نے کہا کہ ایکس شرقی صرف قرشن پاک ہے اور اُنہوں نے سنت رسول الشقظ والماع آست اور قباش شرق سک ولیل شرق ہونے ہے انکار کرویا۔ اس طرح ہے لیا فرق افل اللنا والجمالة سے خارج ہوگی ۔ لیکن عمام کو موکد وسیلا کے لئے وہ کہتے ہیں کہ جب سے قرآن سے ای وقت سے الل قرآن بمعنی متحرین صریف ہیں۔ قرآن کیا تو اٹل قرآن بمعنی مشریق حدیث مجی تع بالک کہتے ہیں کے سے فرتے حارب مختان میں ، وہ تعادا قرآن بار محتے میں اور بمیں بن عمراد بھی سیتے ہیں، نہ کوئی قرآن کوجھوٹا ؛ بت کرسکتا ہے نہ اہل قرآن بمعنی حكرين مديث كو- كميت بيل أي جي الل قرآن ہے، سب محاب بي الحل قرآن عظمہ سب اہل بیت ہمی اہل قرآن ہے بینی منکر تن حدیث ہے۔ قرآن کی بچھ سورتیں کی میں کچھے دنی جن_اس لئے ہم <u>کے والے ایم مدینے والے م</u>حاج سنا کے مولفین میں ہے نہ کوئی کی ہے نہ مدنی میدسپ مجل مازش ہے ۔لوگوں نے کے عدستہ کا دین جھوڑ كر بقاده نينا يود زند نساوكا مجي وين قبول كرايا بهدرمول باك عظ ف فرمايا: اے الراقرآن! وڑ برحور (ابن ماہر) تیزمغورﷺ نے فرمایا: الل قرآن اللہ کے خاص لوگ میں (این مایہ) حضرت الایکرصد الل رضی اللہ عنہ نے مدیقوں کا جمود جلا ویا۔ حضرت عمرؓ نے فرمایا: جمیں اللہ کی کتاب کافی ہے۔ حضرت فاطریہؓ نے ووافت کی حدیث مات سے انکار کردیا وغیرہ و حالانکہ بیسب یا تم محنی وجو کے اور فریب کی ہی، کیونکہ انگریز دور ہے پہلے اہل قرآن بمعنی مکئرین حدیث کوئی فرقہ تھا ہی تیں، نہ ان کا کوئی تربید قرآن، نه تعمیر قرآن انجریز کے دورے پہلے کی ہے بلکہ خود قرآن میں تحمیں رے ذکر نبیل کہ ایک فرقہ منکر میں عدیث کا ہوگا وان کا نام اہل قر آ ان ودگا وو نجات يإني والافرقية بوكايه

ايل صريت :

الل النه والجماعة ك مقابله عن ورمرا فرق المحريز ف بيدا كيا، جس ف كها كر صرف قرآن اور مديث كالزجم كافي بها التعاريج أمت اور قياس شرق كوجم وليل شہی آئیں یا ہے۔ فقد کا انکار کرتے ہیں اور آنہوں نے اپنا نام افل حدیث رکھ لیا ور توام انو احوکا وسیع سے کہ کہ جب سے حدیث آئی وقت سے افل حدیث، سب سحابہ کل فقد ان منتر ہے اس لئے اللہ حدیث تے اسب وگ جا، سے کان جی و صدیث کو جھوٹا انا اب الن سے جو چاند وقول سے بناوی عمل دینا ہے اعلائے ترمین شریقین نے اس کے کم کی کونو کی تھا۔ اللہ (اعمیر الضافین حراما)

خود فیرستلدی میں سے نواب صدیق کھی میاں نے اُبلا صفحہ اٹنا ہموادی محد شاہ جہاں بوری نے الارشاد محردہ ۱۳۱۹ء سطح جس پر مفیقی عالم محد مِقَّ نے اشکا نب اُمٹ کا الریسٹے ۱۳۵۵ پر املی محرسعہ کی نے فرآہ کی المائٹ حدیث ٹے عام 2 م اس محیّفت کوشکیم کیا ہے کہ پرفرق نوائیزا ہوا ہے ، بدیدار شرقی شیاد تھی ہیں۔

ميرى تقرير

میں نے پیر براج الدین شاہ میں حب کے نیوسمیدآ یاد میں آخر ہر کی اور پی بدی الدین کرچین دیا کہ .

(۱) تمبار سے فرق کا قو نام بی قرآن و صدیق عمی فیمل ہے بھی نے کہا کہ جمیل طرح قرآن پاک میں پیٹیس کہ ایک فرق شرین حدیث کا دوگا وان کا نام ایس قرآن اوگا وہ نجانت پانے والہ دوگا والی طرح قرآن و حدیث بھی کی ایسے فرنے کا ذکر فیمل کہ میری اُست بھی ایک آنے ہوگا جو میری اُست کے جمیشہ بی پر بہود کے اسبار ور بہان وال آیات چیاں کرے گا دمقلد بین کوشرک کہے گا واجہاج اُسٹ کو کمرائی قرار و سے گا ا برگی آنی اور پرزبانی اس کا شعار ہوگا ، اس فرق کا ۲۰ الل حدیث ہوگا۔ وی فرق نجات پانے والا ہوگا ، تم اس فرتے ہیں شائل ہوجانا۔ ہیر ساحب اپنی ہما مت سمیت آئی محک ایک آ بہت اور حدیث ہیٹر ٹیس کر شے ، ہیر ساحب برے جواب میں جینوں تقریری کر چھے ہیں جن میں سے تمن تقریری (۱) براکا اللہ صدیت ، (۱۹) ہیرت کا فونس حد اول ، (۳) ہیر سے کا فونس حد وہ جیسپ کر آچکی ہیں لیکس ہے ساحب میرے مطالبہ کے موافق کیک آ بہت یا ایک حدیث بھی ہیٹر ٹیس کر گئے۔ اس ہوئی کر

> مانا کہ فرحمیں ہو یہ دن سے کی فیل ماشق کے آک موال کو بورا نہ کر تھے

(۲) — میرا پینی برقا کرچس طرح ایک سخان بھی ایل قرآن بھی شوصہ بیٹ کش تھاء ای خرح ایک سخانی بھی اہل مدیرے بھی شکر فقدہ تھرا ہرا م اسکر اینے بھیس تھا دیو حد مسب ایک سخانی کا نام بھی چٹی ٹیس کر تھے۔

(m) ۔ بین نے تقربے میں ہیر صاحب کو خیروار آیا تھا کہ جس طرح قرآن پاک میں عظار ہوہ او چکہ موجود ہے تکر اس سے مراد قادنے تعال کا شہر رہوہ ہزگز خیم ، ای طرح قرآن و صدیت کے سادہ لیکن اسلامی کانہوں میں اٹل صدیت کا جو خفا ہے ، و اہل المشاہ والجماعة کے ایک معمل طبقہ محد تین کا ذکر ہے ندکہ کن خاتی قرقہ کا۔

(۳) ۔ بی صاحب سے بیامطالبہ کیا تی کرنسی اسٹائی کتاب سے صرف ایک عوالہ چیش کردد کہ چگریز کے دورے پہلے کسی آن پڑھ کو اس وید سے اہل مدیرے کہا ہو کہ بیافٹ کا منفر سے داور رام اور تیاس کو گھرائن کہٹا ہے۔ منفر تغلیہ ہے ایکن بی صاحب ایک حوالہ بھی

وش ته کرینکے۔

(2) جو صاحب ہے بوسطالہ کیا تھا کو قرآن باک کی مرف ایک آ بہت یا ہو ہے۔
 خیرہ صدیت ہے ایک عدیدہ ویش کروجس میں خدہ تھ کی یا صفور منظافیۃ نے فقہ کی برائی ہوائی۔
 بیان آر ، ٹی ہو ایکن ہیر صاحب بی قرض مجھی ٹیش چکا تھے۔

اس پر ہم نے پیلی فردار کہا تھا کہ دھوکا دینے کے لئے بیس شاکھ اکہ ام فقا کو بالنے ہیں۔ ہم قر افتار کئی، شانعی کا اٹکار کرئے ہیں، بیا بیا ہی فریب ہے وہیں کا کہ مقد قر آن کے جس قر آن کا انفار ٹیس کرتا میں قر قاری ماصم وفیر و کی قرائت کا اٹکار کرتا بہیں یا کوئی مشر مدیت بول فریب دے کہ جس حدیث کا انگار تیس کرتا میں قو تظار کی کی بدیشور کوئیس بانیا و فیروں

- (1) جیرس حب ہے ایک برمطالبہ کو تھا کہ آیک حدیث کی کتاب محام ہے منہ میں ہے۔ ایس چیش کروہس کا موالف نے چیند ہو تدستند ، بلکہ غیر مقلدہ وادراس نے چیند باب ہے۔ ایس چیند کا فیاب ہے ایس کا انسانہ ہو کہ مقلدین سٹرک جیں ۔
- (2) بلکہ بورے ذخیر ہوئے ہے میں ہے میرف آیک جدیث ایک چیٹ کروہ جس کی سند کے ہر راوی کے بارے بھی جریتی شوت پیٹی کردو کدراوی نہ جمتید تھا تہ مقفد، بلکہ فقہ کا منکر، وجماع کا مخالف، قیاس کو کاراجیس کہنے والا تھا۔
- (A) ۔ انگریز کے دور سے پہلے جس طرح منگرین حدیث اور قدایانیوں کا کوئی قرآن یا صدید کا تر جرنیس وای طرح انگریز کے دور سے پہلے کا قرآن کا ترجمداور تغییر نیم مقلدین کائیس، اگر ہے تو کیا نام اور کس قرکان سے ملکا ہے۔
- (۹) اگریز کندے پہلے سائے کی کا کہ اُرائی ترید فیرستلدین کا بیش کرد۔

(۱۰) - جھریز کے دور سے پہلے کوئی مجد ، مدرسے فیر مقلدین کا نہ تھا ، اُسر ہو ہ تاریخی مشدخور میں او

کنین ہیں صاحب نے الزواور مطالبات علی سے ایک کا بھی سی جواب حمیم دیا۔

لُطيفَهِ: " آيك گاؤل هِي بجيرسيد آياد خصرائيك ميراثي نجي سيد زن گيرواب اس كادل حالهًا قبا كه بين ميدشين جون به وون مجراية كول كوكبتا كه جارا خاندان مرادات بهبت مرانا ہے، کسی کتاب سے لفظ سید پرنظریز جاتی تو وہ شور مچا تا کر دیکھویہ ہماراؤ کر ہے۔ لیکن ماداون پیکنتین کرنے کے بعد جب دات کو پستر پر لیٹیا تو دل ما مت کر تا کر سازاوان تو نے جھوٹ ایواد ، نش علی مطمئن نہیں اوا کراتو سنید ہے، آد اوٹ کیے اہمئن ہوں ہے۔ ا تنظے دن جہاں دو آ دی گھڑ ہے یا تھی کر رہے جو تنے ان سے حا کر کہتا۔ آ ہے - بک مات ا کر رہے ہے کہ بھی سیونیس ہوں روہ کہتے نہیں ، ہم تو بید بات فیمل کر دے ہے۔ وہ کہتا بات تو آ ہے ہیکا کر دے تھے، میراول کہتا ہے۔انفرض وہ بے جارہ رات دن بھی كبتا كه بم يوانية ميد بين وليكن إس كا دل مطعمَن ته بوتا. بإلك يكي حال اس فرقه كا ہے، جب سے میفرق بنا ہے بزارول تقریبی بیننگزول اشتہار اور رسالے شافع کریفا ے گر وہ ابھی تک اپنے فرتے کو بھی معلمئن نہیں کر رکا۔ اس لئے ہر سال ای سوخوع پر تقرير ہے۔ يكن في سعيدة باديك بيالطيف منايا تقد اور بين صاحب في واقعي اس لطيق ير عمل كروكها يا۔ يہيم ايك تقرير كي جس بين ثابت كيا كر بيادا فرقد برانا ہے۔ وہ برأة الى صدیت کے نام ہے چمپی، حمر خود ہیر صاحب کے ول نے ملامت کی کراس ہے تو میرا ا بناول علمین نہیں ہوا ہا گلے سال پھراس سئلہ پرتقر بر کی جوسیرت کا نفرنس کے نام ہے

تیجی۔ ان کے اپنے دل نے اور حوار ایاں نے بھی طامت کی کہ ایمن صد دب کے دی موالوں جیں سے ایک کا جواب نہیں آیا، مجرائی تقریر کا کیا فائدہ کا مجرا گے سال اس مسئلہ پر تقریر فرانگ، وہ بھی سیرے کا فرنس کے نام سے جھی رکیکن جب اس کے استاد اپنے رمالوں اور تقریروں سے مفتن نہیں ہوئے تو با کیے عشقن ہوں تھے ۔ ۔ ۔

کیا شوخیاں وکھائے کا آے نشتر جوں مت سے ایک زقم قبر بی چھ نہیں

یمی نے اس آخر ہے تھی ہیا جی کوئی کیا تھا کردین اسلام بالا تفاق کا تل ہے اور عبادات میں فرز کو سب سے ذیاوہ ایمیت صفل ہے۔ بیکن چرصا حب فراز کے کھمل مسائل دائر کی شرائلہ وزیجات او کان بیشن دستجانت ، مباحات ، کرد بات اور مفسوات صرف حدیث تھے وصریح ، غیر معارض سے قیامت تک کیس دکھا کیس کے دیوصا حب نے اس پر بہت تھے و تاہ کھائے اور ایک رسالہ بنام فراز بوئ فیکھنے ورکھ بینا، لیکن مندرید بالا استفرارات میں سے ایک بات کا جزاب بھی اس عمل حدیث ۔ نے تیمی و یا۔

جیں نے تقریر بھی موض کیا تھا کہ بھی نے بیٹاور سے کراچی تک کے فیر مقلد بن کوچیلنی دے دکھا ہے کہ وہ آپھی کھل نماز سکھا دیں۔ ہم سوالات کریں گے وہ ہر سوائی کا جواب مرف مدید سمجے ،صرت کے فیر معارض سے عنایت فرما دیں۔ چند سوالات مجی بیان کردیئے تھے کہ:

- (۱) منفروادرمقتدی تنجیزتح پرتنج سته آوازے کہتے ہیں۔
 - (r) منفره برنمازیس آثین آبسته کبتا ہے۔
- (٣) منتذي مي ركعتون عن جيف بندة وازے اور كياره ركعتول من جيث ميت

آواز ہے آئن کہتے ہیں۔

- (۴) ہم منظرہ اور منتقری ہونے کی معودت میں روٹ اور مجدول کی تسبیحات بھیز۔ آ ہستما واڑے کرتے ایں۔
 - (۵) مم أخرى تشبد على جيئه وراوابراتين أجند آواز سے باطعة جي
 - (1) 💎 ہم منفر داورہ تلتدی جیٹ مماز کے دانوں سلام آبستد آواز ہے کہتے ہیں۔
- (۵) جم نماز فخر تک دوست مؤکده وظهر بین چیست مؤلد و مغرب اور مشا . بین .

دو ود سنت مؤکدو پڑھتے ہیں۔ ان کے ساتھ سنت مؤکدہ کا لفظ حدیث سے وکھایا حائے الیکن بیرصا حب اس قرض ہے بھی سیکدوٹر نیس ہوئے۔

وعوت برأة الل مديث ين ب

ہم آپ کوباد باروہ ہے ہیں کہ میرسد ہائی امواد ہوں کی باتوں کو آپ کے میرسد ہائی امواد ہوں کی باتوں کو آپ مجموزی، قرآن شریف اور حدیث کا تہا دی ایک زبان میں ترجمہ ہوچکا ہے۔ آپ کو چاہئے کہ آپ فودا ہے ہو تیس اوراس کے حاشے کونہ بزجیس (مم ہے)۔ بیرسا حب ایر قرآن ہیں خود دائی کی آئیوں نے تعلی کو چھوڈ کر قرآن ہیں خود دائی کی آئیوں نے تعلی کو چھوڈ کر ایک در حدیث کا انکار کیا جتم نوعت کا انکار کیا ہے ہم اور تا کی در حدیث اسلامی سے انکار کیا ہے ہما عدت اسلامی سے انکار کیا ہے گئی ہو ہو گئی ہو گئی

بھی امیر سے دوستے پر چا۔ حسواط الْدَبْرَنَ الْعَلَمَتُ عَلَيْهِمْ. داستران اوگوں کا جن پر تیرا انوام جوا اور وہ ج د جماعتیں جیں: انہیا واصدیقین و ٹیرا و عدامی اور عد لحین ۔ علاء کو مجھوڑ نے کی وجوت ورامش مرزو کیوں انہیر جس اور مشکر مین حدیث کی ہے فیفسسا بھے ہے فَکُوْبُھُمْ ، میرصاحب! علماء کوچھوڑ دوہ ہے کس آ بہت یا حدیث کا ترجمہ ہے۔

محدی جماعت:

كدعريندز

ص اور کھا: جاری نبیت کے مدینہ کی طرف ہے ، پیر صاحب اجموت نہ بولا اسریں ۔ مکامدینہ والوں نے آپ کے فرقے کو کمراہ قرار دیا ہے۔ دیکھوسنیر الضالین ۔ فیملہ کدیں تہ رہے آستان تا والف امرتسری کو کمراہ قرار دیا ہے۔ معاسے و ہر بند کے عقائمہ
کُ کُٹُ ہے۔ المبند پر علاء مُد محرمہ و بدینہ متورہ کی تقدیقات ہیں۔ اگرتم نے کہ حدیث کا نام
اخلاص سے لیا ہے تو آ و تم بھی المبند پر دسخط کردہ تبادا لڑکا نوراللہ شاہ کہ شریف پر
معلم کرنے والوں کا سر فنہ تھا۔ تبارہ وافلہ کہ یدینہ تن بند ہے۔ بھادی کمٹ بشرے فتا ہے
اور مشکوۃ شریف کی شرح مرقاۃ کمدشریف میں کئی کی اور دبیتی رسد یہ متورہ میں۔ آ پ
میں اپنی ایک تعلل کما ہے کہ بدینہ کی گئی ہوئی ویش کریں۔ آپ کے اُستاد نے آلا دی

ہُمتیوں کے چیچے ،

 شہوں کی طرف اور اُمنوں کی طرف کی ہے وال کے وروش کیا فوی ہے۔

شهر

آپ نے بیمی پیمی آزائی ہے کہ دیو بندا کی شہر ہے، اس طرف نسبت قابل استہزاء ہے۔ ویرصاحب میں ہن ری انرندی ان ٹی اور بھٹی دینی الیانیوں کس طرف میں اور کس آیت یا حدیث کے خلاف ہیں؟

وعويتكويت

آ ہے سنے دیج بندیت کی اصلیت پرائے دل کا عصد نکالا ہے، آ ب میں تقریر کا جواب دے رہے ہیں پہلے میری بات نقل کرتے ، چھر جواب دسیتے۔ میں نے عوض كميا تعا كه دمارا نام ولي الهنة والجماعة في باك منطقة كاركها مواسب (درمنش إركيكن الل مديث معضور علي كاركها موانيس - أم الن استه ين اس عد ماري نسبت أي الَّذِينَ عَلَيْكُ كُنِينَ تُعِدَ قَامُ مِهِ فَي جَسِ عِملِ و بِن كَ يَحِيلُ لا ذَكَرَ بِينِهِ بِهِم والجماعة عِسِ كمه سحار نے تی ملطقہ کی منت کوحضور ملکھ سے خوب سوج مجھ کر میا اور اس کو و نا میں بجيلايه ليسعب يحسني لمهديلي الاوطنء الراجه تتمكين ومن كاؤكر سنداود وادي نسبت سی بداور ازل بیت کے ساتھ قائم ہوئی دہم حتی اس نئے جی کرار م ساحبٌ جوتا ہی جی اُنہوں نے نبی یا کہ مُفِطُّ کی منت کی غروین فربائی ہے۔ محویا جارے مام میں و بن کی سکیل جنمین اور تروین کاسند شعل کے ساتھ بیان ہے۔ بان جس خرت ہوے رافشی کہتے ہیں کہ محارث نے کی منتقف کا وین مثالیا اور نیاوین بناکر بھیل یا ای طرح جھوئے رافضی کہتے میں کہ انکہ ادبعہ نے کہی کی سنت کومٹایا اور ایٹاء پن جایا انکی اہل استد کا اجماع ہے کہ محابہ نے کی کا طریقہ ہی پھیلایا، نمہ نے نجا کی سنت کوئ مرحب و مدوّن کو دایا۔ سف کی قدوین کے بعد اب سفت ہمل کرتا ہی ہاتی تھا، موسقا ہیں نے افت کی رہنمائی جس مرتب شدہ سفت ہم کمل کیا۔ ٹیکن سفت سے دھرف سے جملے کردیا۔ لا قدیب فیرسفا ہیں نے مشروک وسرجوج احادیث کی آفر ہے کرسٹوں کو مثانا شروع کردیا اور دومری طرف سے مشق دسول کا بھانہ بٹا کرسٹن کی جگہ بدعات جادی کونا شروع کردیا اور دومری طرف سے مشق دسول کا بھانہ بٹا کرسٹن کی جگہ بدعات سفت کے دان وشمان سفت کی دسید کا دیوں سے سنت کے مقدل چیرے کو صاف و آج گر کر کے دکھایا جائے و قوطا و دیو بند نے بھی کام سفت کے مقدل چیرے کو صاف و آج گر کر کے دکھایا جائے و قوطا و دیو بند نے بھی کام کون اس جادی مشال ہیں جادی ہوئے گئے جی دان ہے جس کو ملک کا بنگ اور و زار نے دیا ہے۔ فیر مقلدین کی مثال میس جادی فوٹ کی ہے۔ فیر مقلدین کی مثال مشوخ فوٹ کی ہے۔ ان سے بھی نیون کی مثال مشوخ ہے۔ ان سے بھی نیون کی دولت کی ہور انگر و دولت کی دولت کی ہور انگر و دی کردیا اور سفت کی دولت کی ہور انگر دی دے کردیا اور سفت کی دولت کی ہور انگر دی دے۔

اب ورحاص كافرق قا كراكا تهد سے جواب دیے كہ عساسكسے

السستى مج نيس اس لئے الل المت تركها و، بك عليه كم بعديدى باس لئے

الل مديث كما قر عليكم بالجعاعة مج مديث نيس به سحابكو شاقو الل بيت كو

ترمانو و اجراح كا انكار كرو الفاحكم المحاكم فاجتهد اور اجتهد بوالي مديث المرس كرمان تم في جواب مديث المرس كرمان تم الله المحاكم المحاكم المحاكم فاجتهد اور المحتهد بوالي مديث المرس كرمان تم مطابق تم في جواب المحتمد كرمان المحتمد المحتمد و إبراد كو تعليم دين كل المحتمد المحتمد و إبراد كو تعليم دين كل المحتمد المحتمد المحتمد كرمان المحتمد المحتمد كرمانوا ہے۔

اجازت تيس وقت على حديث محتمد كرمان و مديت دكھا ہوا ہے۔

معلوم دورت على المحتمد خال كا مقرآن و مديت دكھا ہوا ہے۔

جهالت

بو کی نے کہا تھے کی نے ہو ہما کہ آپ وہ بندی ہیں؟ علی نے کہا ہی سیدہ بادی ہوں۔ محرّم ایبال موف عام علی وہ بندی پر طبی کا انتظ سلک کی رہنمائی کرتا ہے۔ اگر آپ اپنے ملک کے فوف سے جائل ہیں ڈواس جہائت پر آپ کوشر سار ہوا جاہتے نہ کہ جہائت کوئی فوکی چڑ ہے۔ یہ الی جہائت ہے کہ آپ سے کوئی ہو تھے ا کر آپ نے بناری ہومی ہے؟ آپ کیس گیل میں نے کی ہومی ہے کوئی ہو تھے آپ نے ترکی ہومی ہے؟ آپ کیس جیل میں نے درنی چراہے ۔

الكرين

آپ قرمائے ہیں: اگریز کوقر آن وحدیث سے کیا واسطا اعفرت کی ایمی نے بیک کہا تھا کہ اگریز کوقر آن وحدیث سے واسط ہے۔ علی نے قو کہا تھا کہ اگریز نے ایک فرقہ بنایا جوقر آن کا نام لے کر اُسٹ کو گراہ کرتا ہے، ان کا نام اہل قرآن دکھا اور دومرا فرقہ بنایا جومد بٹ کا نام لے کرلوگوں کو گراہ کرتا ہے، اس کا نام اہل صدیحہ دکھا۔

وموسول كالمرجب:

ی صاحب کا غرب کھی وس نے ذائنا ہے اور وسوسا تھا ذی کا نام والوت قرآن وجدیت رکھا ہوا ہے۔ اہل الٹ والجماعة کو طاوت والا غرب کہنا ہے اور ولیمل ہے بیان کرتا ہے کہتم مجھی اوسٹیف کے قول پر کورنجھی ابو ہوسٹ کے قول پر توکی دیتے ہو۔ اس جائل کو قاتنا علم نیس ہے کہ ان سب اسحاب نے تشمیل کھا کھا کر بیان ویا ہے کہ ہے سب اقوال امام صاحب سے جیں۔ جس طرح اختلاف قرآت کے دفت متواز قرآت پر قرآن پڑھنا قرآن میں طاوٹ نہیں، اختلاف روایات کے وفت سیح حدیث پر قمل کرنا طاوٹ نہیں۔ ای طرح اختلاف اقوال کے وقت مفتیٰ بہ قول پڑھل کرنا طاوٹ نہیں۔ جس قرقے کا شیخ العرب والعجم ایسے آسان مئلہ سے جامل ہو دوفرقہ قرآن وحدیث کو تو سیحہ بھی نہیں سکتا چہ جائیکہ اس پڑھل کی وجوت وے سیکے۔ کیا آپ مختلف فیدا حادیث میں مجمی بھاری مجمی ترقدی ، بھی حاکم ، بھی نسائی کی روایت کوسیح کہتے ہواور قمل کرتے ہو، کیا اس کو طاوٹ کہتے ہو تے میں فقراء کی جدد حادثگ تی ہے کہ دین کی بجھ سے خالی ہو۔

جہالت کی انتہاء:

پیر صاحب ملاوٹ کی دوسری دلیل قرآن و حدیث ہے تیمیں اپنے جاہلاتہ قیاس سے یہ دیتے ہیں کہ گئی کی ملت، کسی کا غذیب، کسی کا خلیف، کسی کا مرید وفیرو، پیر ٹی بیداختہاری اضافتیں ہوتی ہیں۔ آپ کسی کے بیٹے، کسی کے باپ، کسی کے بھائی، کسی کے بیٹیجے، کسی کے بھائچ، کسی کے سسر، کسی کے داماد، کسی کے باموں، کسی کے پچل کہلاتے ہیں۔ کیا اس کوآپ اپنے نب میں ملاوٹ کی دلیل بچھتے ہیں۔ کیا قرآن پاک میں ملید ایراہیم کا لفظ پجردین اسلام کا لفظ نہیں ہے۔ جس شعر پراعتراش کیا وہ یہ ب

بندة پودردگارم أمت احمد أبي دوست دار بيار يارم تالع ادلاد على شبب خفى دار لمت حضرت ظيل خاكيائ قطب عالم زبر سابيه بر دل F-2

غەرچىنى:

وبوبندكا لقظ دكعاووا

جیر صاحب نے کہا ہے کر دیو بند کا انتخاد کھا دو ایک بڑا را و پر وصول کرو۔ کی و بو بند کا مدر بننے سے پہلے تنگی خاب کی تھا اسانگدا کی نے خو انکھا ، بیر '' بیا آپ کے آبلہ و کسبال موجوبیڈ کے شاگر دایام تھ جس نے اون نے خاب کو جع کیا ، دارا گ میں مرتب کیا دو قریباً 44 ہو تی فوت ہوا اس (۱۰ او) اور سنجہ 14 پر زور دیا ہے کہ

امام زهريٌ:

عمل این آپ نے موطا الم حقر کی ایک عمارت نقل فریائی ہے، محری یانت میں بہود کے بھی کان کنز ڈالے :

عن ابن ابي ذنب عن ابن شهاب الزهرى إذل سألته عن البمين مع المشاهد فيقال بمعة واول من قطى بها معاوية وكان ابن شهاب اعلم عند اهل الحديث بالمدينة من غيره (مؤطا) المجرم ٣١٣)

ترجہ: - این ابی اثبہ فرائے چی : یم نے این شہاب ذہری سے بے چھا کہ آگرا کیک حجال اورختم پر فیصلہ کرچی تو فرہا ڈیے برصت سے اور سب سے پہلے ایسا فیصلہ حضرت سعاہ میڈنے کیا تھا۔ امام ذہری عدید کے تھوجین جس بڑے عالم تھے۔

صحابہ کرامؓ:

قاضي ابولوسفٌ:

الاست الإيست في المحارد الله المست المستان ال

<u> فریب</u>:

لکھا ہے۔ تم کو احادیث الی صدیت ہے ٹی جیں؟ کیا تم کوتر آن اہل قرآن مین سکویں حدیث سے مدستے۔ ہاں جمیں اغاظ مردل محدثین سے ملے ایس اور مرد: رمول نقبا و سے لمی ہے۔ فیر مقلدین کے صرف وور پروگروم ہیں: کافروں سے جباد حرام ، مسمانوں سے فساد فرض۔ مواسے آمت محرب میں تشدوفساد کے کوئی تھیری کام فیر مقلدیں کی تسریہ عم نہیں ہے۔

اماً م مفيان بن ميينه :

ال مرستیان فردائے جی کہ دام اور نیف کا ذرجب کوف سے نکل اور فاق کی نیف انگل چکا ہے (من قب امام اور اور انجنسیان تا الاس معالی امام مقبان اور دسال ۱۹۵۸ میں شرا سے در زقول منیان نے القرون میں فرجب کی ورق دنیا میں گھٹل چکا تعاد امام مغیان کائل فرمان پہلی آ ہے درائی زیر کر صدیت الا صافو قالا مفاصحة الکتاب اکے امادی کے لئے ہے۔

مغت اور ابل حدیث .

ا التحقيرات عُلِظَتْهُ مَنْ أَجَات بِالْحَ وَاقَ عِنْ مِنْ كَانَ مِنْ الْمُ الذِنْ وَالْهَامِيّةُ فَرِيا إِ (رَاحَتُورَ نِيَّ ٢/س٣٠) اورت كيد قرول عدليد كنيم بسكتاب اللّه (حاكم نِيَّ الأصِّ ١٥٠) عدليكيم بسيستي (إنْ العمر ٩٣) اور جماعت أن يَجَى ؟ كيد قريانَ (خِيَّ العمر ١٥١) ورقريا إِ العلم تلائدة أبدة محكيدة وسندة قائمة وهريضة عادلة (الذي يَدِ) المرتجن فِي " الدي

محكم رسنت قائمً وقريض عادل ارحرجه يث ك بارويس فرمايا: اداكم و كنه ة الحديث عند (حالم ج الص ١١١) ميري طرف ے زيادہ حديثيں بيان كرنے ہے بجو اور فريايا كہ احلایث کوقرآن بر پیش کرو جوموافق قرآن ہوں وہ لے لوجوخلاف قرآن ہوں وہ چیوز دو (دارتطنی ، الرد ملی سرالاوژای) کچر احادیث کے بارے پس فرمایا که میری طرف سے مختلف احادیث بیان کی جائیں گی جوقر آن اور میری سامت کے موافق ہوں كى وه ميرى جن اور جو قرآن اور سات كے مخالف بوں كى وه ميرى سين (الكفايه للخطيب، دارتطنی) معترت عَلِيقة نے خود بهاں حدیث ادرسنت کو الگ الگ بیان فرمایا که بعض احادیث سنت کے موافق ہوں گی اور بعض نثالف ہوں گی۔ مولانا تھانو گا، حضرت جلائي "اورضرت مرباروي كي عبارات مين سنت اور حديث دونو ل لفظ جن تو وو احادیث مراد میں جن میں منت کا میان ہے، پھر آمخضرت عظیمہ نے فرمایا جب تمبارے پاس میری حدیث بیان ہواگرتم اس کو پہلے نئے ہوتو اس کی تقعدیق کرواوراگر فيرمعروف بوتواس كوجهوناسمجھو(دارتطنی)

پين گوئي:

سوائق قرآن احاریث ہے تھل جیز واکر خالف قرآن احادیث برشل کی وطوت دینا ہے موافق سنت احاویت ہے قمل ترک کروا کر مخالف سنت احدویث برعمل کی دعمت وینا ب- جواحادیث فتباء کے بال معروف بیل ان سے عمل جیشروا کرشاؤ وستشراحادیث عمل کی وعوت وینا ہے۔ جن احادیث کوخبرائقر دن کے جمبتدامام افظم الوضیفہ نے رائے قراد رے کران نے موافق عمل کا فتو کی دیا ہ کیم ہزاروں محدثین ، بزر دوارافتہا ، بزاروں ادب وابند بینتلزوں - ملاخین اسلام اور کروٹرہا موام نے جرزیانہ میں الن کے موافق کمس کیا ان برعمل بھوڑ کر ہر جوج اور متر وک انعمل احادیث پرممل کی وفوت ویتا ہے۔ جو تھی حوّار قرآن ماک کی عدات ہے جا کرشاہ اور مزوک قرآنوں پر لگاتا ہے دوقرآن کا وَحْن بِ وَإِسْتِ كُوكُمُ اوْكُر فِي وَالا اور أَسِت مِن فَتَدَوْ اللَّهِ وَالا سَبِّدِ السِّيدِ فَي جُوسَنتِه اورسواد المقم سے بنا كرشاذ اور سرجوج روايات برعلي كى وعوت ويتاہے وہ محل سنت كا وَحَمْن ہے اور اُمٹ کو محراء کرنے وفل اور ان چی فئٹ ڈا نئے والا ہے اور وہ میں لا تم ہمید فيرمقعد بن كافرز ب جس كي ترقي يافته اقسام تجيريت ميرويزيت اورقاديا نبيته بين-نوٹ : ''جس خرج اعادیث کی محت وسقم کا فیصلہ ماہر میں ٹن کر کئے ہیں، ہڑس و نائس کاکام نیں ، ای طرح یہ فیعلہ کہ کوئنا کا حدیث قرآ ان کے خلاف ہے ، کوئن کا سنت کے قفاف ہے ، کون کی معمودف اور کون کی منظر ہے، فغیاء اور الل فن عی کر سکتے جِن رحمي ذابل كِراس جِن فِض السينة كاكوني العقيارتين.

<u>تحریف قر آن</u>:

روائنس کی طرح غیر مقلدین کا بھی عقیدہ ہے کہ قرآن پاک ہی تو یف برچکی ہے، بوے روائنس کہتے ہیں کرمھا یہ نے تحریف کی دچھوئے روافنس کہتے ہیں کہ

حناف ہے کہ بیٹ کی ۔ بامند معرف یہ ہے کہ نیسے کرن فرعاٹ کمک قابری صاحب تھا ألوني آيت بلديزه بينات تو فيه مب الوكتية جن أقريف كوفي منزن أبتاء الي طرية تفینے بھی اگر کئی آیت میں ایک تنظی جو مائے تو اپنے کا کانٹ کیتے ہیں تحریف کمیں كيَّة برمجة أورنطة وبيادونا مريد بين كوي كيِّس، ويُنسا لا فيها وحدثما انْ فَسينَة الْ الحيطانية الدرآ تخترت في في أربات شهر الله تعالى حدّ ميري أمت حدة فطاءا ورنسان کے مرفع علاق کا فرما دیا ہے (منتعلیٰ) ہیں بدینے الد ان نے جو تین مثالیس وی جس و د تين الوكات تع يوارست كرد ب كنار جا أي اليناح الادر جوانج العِمَا على الدور جوانج الع - حيد مُثِقَ ئے کراچی ہے شائع کی ہے اس میں اس میو کاتب کو درستے کروما کیا ہے اور میر ق النعران مكته صعداته المان نے شائع كى آئى مالوں ہے اس ميں مو كا تب كر درست ا روما کیا ہے اور محقیق رفع ہے میں کے بیلے افرایشن کے بندی کے فرانت ہونے تھے ''زاک سمبو کانٹ کاعم ہوا تو اُت قلم ہے ارست کروں ٹیو اور اور ہے ایمیشن جی حصائی میں مجمی ہے درست کردیا گئار ایباسمو کا تب تو بسا اوقات نووقر آن ہاک کی <u>جمیاتی میں ہوجاۃ ہے۔ کیا پیرصاحب اس کوخدا تعالی کی کلطی کہتے ہیں یا کا جب کی ؟</u> پیرسا صبالاً میں ہیں اگر ہمت ہے تو کی سمہ کل محدث ہے دکھا کمیں ک

پیرساحب: آب عمل اگر ہمت ہے تو کی سعمہ تل محدث ہے دکھا کیں کہ قر آٹ یا کتابت میں کو آقع بیف کہا جاتا ہے ورند مید یا رکھی کام ہو کا نب کو تو بیف سب ہے پہلے یاوری فائڈ رنے کہا ہے۔ آب ال کے مقلع ایس۔

> میرے مل سے حمیا ہاا ستم حمر سے ہیاا مل کئی او غیرے کجھے تحراب نعمت کی سزا

پیرما حب! آپ کی کتاب عقید سدیدهی ۱۱، ۱۳۰ ۱۳۳ او ۱۸۷ م۸۱ ۲۳۰۰.

۲۵۸ پر جوآ یائ آن خارد میں دوسب سرد کات میں یا تحریف قرآن ہے۔ آپ ئے علد تاریجی اگایا ہے مگر ان آیائ کو خلا ناس میں بھی سیح شیس کیا۔ الفرش سرد کا تب کو تحریف کرنا قرآن وحدیث کی دموت لیس بلکہ یادری خانفرر کی تقلید ہے۔

جشن د يوبنداورا ندرا گاندهی:

ورصاحب فے برے مرے ہے یات بیان قربائی بے مگراس بادے میں ووقرآن وحديث كأعلم بتائيل كه الركوني فيرسلم عاكم ان بالم يحكى عام جلسين آ جائے تو اس کو بھی سے والے کو کتن گزاہ ہے۔ ملکہ بلتیس کا معرت سلیمان علیہ السلام کے پاس آنا، مهاجرین حبشہ کا مجاشی کے پاس جانا بھی دنیال میں رہے۔ آپ قر آن و حدیث ے اس والناہ مونا اور اس الناه بر کتنی شرق حدی بیان فرما کیں۔ ہم منظر بیل اور ذرابی بھی بتانا کہ جب السعو ویدیش پنذت نہرا کی ہے کے نعرے گلے تھاس وقت آب كيال عند؟ اور غير مقلدين في جب ملك وكؤريه كاجش جو على منايا تها "أيك ببت براورواز وبنایاجس برلکھا تھا"ول سے بروعائے الل صدیث بجشن جو بلی مبارک مو" اورساس نامد فيش كيا تقا" كنور فيش كني ركوكين والوريدوي أريث قيسرة بند بارك الله في سلطنجا جمميران كرووافل حديث اين كروه ك كل التحاص كي طرف عن حضر والا کی خدمت عالی میں جشن جو بلی کی ولی صرب سے مبارک باوعوش کرتے ہیں۔ آپ کی سلانت میں جو نعت ند تی آزادی کی حاصل ہاں سے میر رووا پنا خاص أمير أفهار بإب- وونهموست يرب كديد في آزادى ال كرودكو خاص الرسلطنت يم حاصل ہے، بخلاف دوسرے اسلامی فرقول کے کدان کو اور اسلامی سلطنق میں بھی ہے

آ زادی حاصل ہے۔ اس خصوصیت سے بیافین ہوسکتا ہے کہ اس گردہ کو اس سلطنت کے قیام واسخکام سے زیادہ سرت ہاوران کے دل سے مبارک باد کی صدا کی زیادہ زور کے ساتھ نعروزن ہیں''(اشاعة السندج السلام)

اصول كرخى:

(الاصل) جو آیت جارے اسحاب کے قول کے خلاف ہوگی تو اس میں۔ تاویل ہوگی یا شخ یا ترجیح۔

تاویل کی مثال:

تاویل کی مثال یہ بے کدایک آدی کوقیلہ میں اشتہاہ ہوگیا، اس نے کافی سوچ

و بچار کے بعد نماز پڑھی، لیکن قبلہ اس کی پشت کی طرف تھا تو ہمارے زو یک جائز ہے۔
قرآن پاک کی آیت فولوا و جو هکم شطرہ کے بظاہر بین ظاف ہے کہ وہاں قبلہ کی طرف مند کرنے کا تقلم ہے اور اس کی پشت قبلہ کی طرف تھی تو ہم تاویل کریں گے کہ اس

قریت کا مخاطب وہ محتم ہے اور اس کی پشت قبلہ کی طرف تھی تو ہم تاویل کریں گے کہ اس

آیت کا مخاطب وہ محتم ہے جے قبلہ کا علم ہواور جے قبلہ کا علم ند ہو وہ تھی کرکے نماز

پڑھ لے۔ فائین ما تو گوا فائم و جاف الله پڑھل کرلے کہ جس طرف مند کرو، خدا اوج

ن کی مثال:

اب مال غیمت تقتیم کیا جائے تو ذوی القربی کا حصر خیس نکالا جاتا، حالا کا قرآن پاک میں ہے: ولسوسولد وللدی القربی، ہم کہتے جین اس کے منسوخ ہوئے رصحابہ کا اجماع ہو چکا ہے۔

ترجيم کي مثال:

قرآن پاک کی ایک آبت ہے ہے کہ جس حورت کا خاد تدفوت ، وجائے وہ جائے ماہ دس دن عدت گزارے اور دومری آبت ہے کہ جس حورت کا خاد تدفوت ، وجائے ہے جہ بہ بی بید بعد اور اس ایک تحص فوت ہوا ہائی ان جوی حامد تحی اور اسکانے دن ہی ہدا ہوگیا، اب کید آبت کے محابق آبھی جار ہوا آگئے دن ہی بدا ہوگیا، اب کید آبت کے محابق آبھی جار ہوا آگئے دان عدت باق ہوا ہوا آگئے دن جو کا داک ہوا ہوگیا، ابنی محابق آب کی عدت خوا در اس کی جو کی واک واک ، وکا اس قد واب ایک اس حدت باق ہوا ہوا ہوا گئے ہوئی وار کی جو کی اس خورت کر اس کی حدت جار ماہ دی جو کی اور کی کو اس کے محابق آب تھ داوے) اس صورت میں ہم نے بچر بیدا ہوئے والی آبت کے وہ دائی تراز اور بیا، کیونکہ حضرت عمراللہ اس کی حدث میں ہم نے بچر بیدا ہوئے والی آبت کے وہ دائی بیون نے اور حضرت میں کہا گئے گو ای اس کے دونوں عربی میں گرائی جا کہی گو این کے دونوں عربی میری کرائی جا کہی گی ۔

کے دونول کی تاریخ میں اشتہا ہے مواس کے دونوں عربی میری کرائی جا کہی گی ۔

الماصل :

جروہ صدیت جو اور سنداسحاب کے فلاف ہوگی تو اے نئے پر محول کیا جائے کا یا ہے ہوگا کہ اس کے فلاف کو کی دوسری دلیل ہے واس پر ادار المس ہے اور اصول کے مطابق ترجی یا تعیق ہوگی اور ہے سب کچھ دلیل شرق سے ساتھ دوگا۔ اگر نئے کی دلیل ال گئی تو مضوع کہا جائے گایا ترجی تعیق کی دلیل شرق کو او کو کیا جائے گا۔

منسوخ کی مثال:

خان کچر کے بعد مورج نکلنے سے پہلے منت پڑھنے کیا حدیث منسوخ ہے اس متوام حدیث سے کہ کچر کے بعد فازئیس جب تک مورج نہ نکھے۔

معارضه کی مثال:

حضرت المن کی ایک مدیدہ میں ہے کہ حضور مالی الله ماری افر نماز کجر میں توت پڑھتے دہے اور دوسری میں ہے کہ ایک ماہ بھد مجھوڑ دی، بے دراؤوں افغارش کی جہہ ہے ساتھ ہوگئیں اور حضرت عبداللہ بن مسعوۃ وغیرہ سے ہے کہ ایک ماہ بعد آ ہے مستخطیۃ نے چھوڑ دکی تھی وال پر بم نے عمل کیا۔

تاومل کی مثال:

قبال الطبحاوي كتب الى ابن أبي تور يحدثني عن سايمان بن

ماتحة بلاكر كمابون كوهدة ل كرامار

ندوين فقدحنى

عسوان حدثنی اسد بن الفوات قال کان اصحاب ابی حنیفة اللین دؤنوا الکتب اربعین وجلا فیکان فی عشوة المتفلمین ابوبوسف وزفر و داؤد الکتب اربعین و جلا فیکان فی عشوة المتفلمین ابوبوسف وزفر و داؤد السطائی واسد بن عموو وبوسف بن خالله السمتی وبحیی بن زکریا بن ابی زائدة و کان یکتب لهم تلائین حند (الجوابرالحفی ن ۱۲مم) مربحین بن الحاب امام شی سے ترجمہ: امام طحاب امام شی سے چالیس آدی جی جنہوں نے آئی مند کے ماتھ بیان کیا ہے کہ اسحاب امام شی سے الطائی داسد مین عمود وسری دوایت شی ہے: الطائی داسد مین عمود وسف بن خالدادر کی بن ترکریا شے اور دومری دوایت شی ہے: وکان اصحاب ابی حدید فالدادر کی بن ترکریا شے اور دومری دوایت شی ہے:

ولسكيوا. (حسن القامق عمية) يعني الم صاحب في واليس بزيد بزي ماتعيوس كو

2142

- (۱) تاضی ابو پوسٹ کی ولاوت سمجھ قول کے مطابق ۹۳ ھے ہے۔ ۱۳۳ ھ میں آپ کی عمر و کا سال تنمی (مسن المقاضی)
- (+) المام مخر الماء على يدا اوت (من قب وين س ٢٤) الماري الأسال
- کے تھے۔ آپ نے پیکو کتابیں براہ راست امام سے لکھیں جن کو کیبر کہتے ہیں، مثلاً جامع کیبر وغیرہ اور پیکھامام الولوسٹ کی روایت ہے جیسے جامع صغیر وغیرہ۔
- (۳) امام زفرائن بدیل ۱۱۰ه ش پیدا نو نے (این خاکان ج ۱/ص ۲۰۹) پیه ۱۳۳ه هـ
 شرحه سال کے تھے۔
- (۴) حبان بن مندل الاه میں پیدا ہوئے (تقریب) ۱۳۳ھ میں ان کی ممر ۲۳ سال کی تقی۔
- (۵) مندل بن ملی ۱۰۱ه میں پیدا ہوئے (تقریب) ۱۴۳ه میں ان کی عمر ۴۰۰ سال کی تقی۔
- کی بن زگریا بن افی زائدہ ۱۹هش پیدا ہوئے (میزان الاعتدال) ۱۳۳۱ھ میں ان کی عرب ۲۲ سال متھی۔
- (2) امام حفص بن غیاث ۱۱۵ ه طبی پیدا ہوئے (تقریب) ۱۳۴۴ ه بیران کی عمر ۲۸ سال تھی۔

محمہ بیسٹ ہے پوری نے تو امام طوادی کو شامل کرے اپنی مزید جہالت کا شجوت ویا ہے۔امام طحادی ان شی شامل شہ تھے بلکہ ناقل ہیں۔ الفرض ان جالیس میں ہے سات کی عمر پر بیری بدلج الدین کو اعتراض تھا، باتی پر کوئی اعتراض نبیس تھا اور اس سنة من أو من مجى بير مد صب كا وقعر مطالعد ب ريمن قرق شدن ايها وقعل اعمر شُخ اعرب والجم بود سعان المحد ثين بود دكين المحققين كهدشة بياس فرق سكانمي - جاليد كي دليل سيار

ابنی مکہ ہے فریب کی بدترین مثال

ہیں جدیثے امیر من نے شنج محمد بن محبد العزيز الحجوج الحجي الدرشنج وابطی القدری المتحی اکنی کی عمادات سنی ۲۷ ایس و آنشند میں پیش کی جس کیالقد تعافی نے کئی کویے تشاف ' منیں دی کہ واحقی یا شاقی یا وہی یا طبل ہے اور مجمائے کر بی نے تعد اگر کرایا۔ یہ عارضيًا كريث من وزما مب ية وكري فيانت في جهيز لا الماء الا المله عن ے وئی لا الله فعل كرد كرك ولى معيود نيس تمر الا الله فعل نه كرے وبيعے يهان فلى ك جد اٹیات ہے ان عمارات بیل بھی تھی کے بعد اٹیات تھا، وہ عدرت یہ ہے۔ ہے۔ كلفوهم بان يعملوا بالمسة ان كانوا علماء ويقلدوا عمماء ان كانوا جهلاء (شرح مین العم خالص ۱۳۸۹) بلکهانند تعانی نے به تکیف دیا ہے کہا کر وولوک ہما، (جميّد ين) جم تو (اينه اجتماد كن ردَّى مين) منت يرسُ كرين اوراْلر (اجتماد ب) ہواقف میں تو علاء (جمبران) کی تھید (شی سنت برمل) کریں۔ بور کی! کیا اس بدویاتی کا تام آپ نے دموت قرآن وحدیث رتماہ یہ بکسر ان القارق اُتحلی اُسک نے سے دوسرے وسالہ رو قان میں مکھا ہے " بیٹی طور پر داہب ہے کاتھنید کے سے ایک غرب کومعین کرتے اور بیات کرے کہ ہر غرب ہے وہ سنکہ لے سے جو اس کی خوابش كرمفايق بور أكريهم جائز ركيس تو وين من طبيانهم بوكر خبل آبيات كاود " تعیف شرق باهل موجائے کی۔ آیک چیز ایک مجتمد کے بال حرام ہے دوسرے کے باب

مائ ے اب وقعی ایک ی مت می ایک ہے اور علان میں ایک اینے کوارام میں سمجے کا اور علان میں ا اجماع ضدین ہے ہوئال ہے یا کمی چم کو زملال سجے کا زحرام تو تکلیف شرق ماطل موگی اور جب دین کی حفاظت اور آکیف شرقی کا باتی رکھنا واجب ہے اور و، اب تھلید تخفی کے بغیر ممکن کیس قوات پر اجماع ہے کہ مقد مدواجب کا واجب ہوتا ہے۔ تعلید تخفی ویک و بن کی مفاظت اور کلیف شرق کے قیام کا مقدم سے واس نفتے ندیہ معین کی القسدواجب ہے" (رسالہ رہ قفال ملضو)

مثال: ﴿ يَهِ بِالسَّالِي فِي هِيهِ لَهُ مَا تَعَالُ مِنْ كِي لَوْ يَكُمُ مِرْلَا فِينِ وَإِكْدِ بِعَارِي أسلم ترقدي البوداؤ ورنساني وابن مجروتيني وبالقلني وحاكم ومقتلوة وبلوخ المرام ميز هنا ووحوالمه یں رواہ ابخاری، رواہ الترندی کہنا جگہ سب کو رسول کی اطاعت کا تھم دیا ہے۔ عمر اس دور عمی تمب حدیث و فقہ کے بغیر احاجت رمول ممکن الانسیں ، جانکہ اطاعت رمول واجب سے اس لئے مقدمة الواجب واجب كے تحت ان سنب سے بھى استفاد و واجب ے۔ ان حضرات کا مقصد یہ ہے کہ اوقف لوگوں کے لئے تقلید مطلق واجب بالذات ے اور تھلید محتمی واجب بالنی ہے۔ جس طرح نماز میں سورۃ فاتق پڑھنا واجب بامذات ے اس بر نقاط واحراب فکا اواجب بالغير ہے، كونكر عجى لوگ اس كے بغير سورة فاتح نٹیں پڑھ کئے۔ مدید اور رسول کا مانفا واجب بالقراحہ ہے اور سند کی تحقیق، اصول حدیث و جرح وتعدیل واعل الرجال کاعلم واجب بالغیر ہے۔

ان معزات کا سبک بیان کرنے میں یہ بدورتی سے سے پہلے ' معاداتی '' بیں میاں نہ برحسین وہاوی نے کی۔ بھراس کی تعلیہ فتنی جس محرحسین بنالوی ، فورحسین گرجانکی ، صاوق سیالکونی وراب بیر بدیج الدین شاه نے کی ہے اور پھر مجنی این طبیعتال کا ۱۰ وجویت قرآن و حدیث رکعا عداست ایل کند نشاقه ق و دباره محقابه فی تفصیل بیکنسی دونو امهمند و سویدهشایین دارمانت فرید کویت، مش اُسین دورها م مسلام مین دیکنیس به

مخطمت قرآن:

کاملی قال میں ہے ''ایک آدی نے کھار آن میکولیا، بھر سے فرمت فی ہو قرآن باک کی تعیم کو کمل کرے، کو لاقرآن باک کی تحیل فرزنقل سے ہفتل سے اور بعض قرآن میکھنے کے بعد علم فقد احکام شرعیہ کا میکھنا باتی قرآن کے میکھنے سے اصل ہے (نامنی خان ج مائی معہ کے)

ٹیٹن کریں ۔۔۔ بٹ تریف بھی تو نہ ں تنگ ہے کہ ایک مخص کوٹر ڈن یاک ٹیمن آ تا تھا، اس نے معرت ملک سے عرض کیا آ ہے علک نے سیان اللہ والحدوث الح یاو کرا کے فرالاس نازيزه لإكرو (مقلوة) ديميئة حنور مُلَكِنَّةُ نے تو جدے تر آن ہے پہلے نماز متکھا دی واس لئے آ ب فقہ دھنی میں مسئلہ بچہ بھی نہیں ہیکے ۔ اس کے بعد تو نشرم و حیاء کی جادر آتار کر یہ تکھ دیا ہے کہ احماف کے بار خون اور پیٹاب سے قرآن لکھنا جائز ہے اور بنیعی بتایا کہ اختیار اوراہنطرار کا کیا فرق۔ ویکھنے ؛ حالت اختیار میں ثراب کا ایک قطرہ حرام معروار اخوان وفتر ہر پاکس حرام دلیکن اضطرار میں قرآن ان سے کھانے کی ایبازت دیتا ہے۔ اب تیرے جیبا بیالی بول عنوان باندھے'' قرآن میں خزیر کی منظرت'' اور یوں بھے کہ'' فزر کھ ناقر آ ن نے جائز کیا ہے''،اییا جموث تو شیطان کو مجی نصیب نیس دوار ارے جالی: حتی ندہب میں حالید اختیار میں رہے وضوقر آن بِاک تَم إِنْهِ لَكَا بَكِي عِا رَبُينِ، مَا إِنْ فِي حَالتِ مِن قَرْ آن إِكَ رَبِالَي يَرْصَا بَعِي مِا رَ نہیں اور قرآن یاک کی عظمت کے خلاف اس یاک متاب کی بے مزتی کرہ اسے نجاست ہے دکھنا ایدا بی گذاہ ہے جیسے بہت کومیرہ کرنا یکی ہی گوٹس کروینا، خاند کعیہ کی تو بین کرنا (شای ج۳/م ۴۸۲) باق حالت اضطرار نی جیسے بھوے کو مردار اور ختر ر کھنا: جائز ہے، پیاے کو شراب چیا جائز ہے، ایسے ہی اگر اضطراد کی شرائط بائی جا کمیں ادراس مصاشقا متعین ہوتو یہ جائز ہے یاتبیں ؟ بعض کہنے میں مالت اضطرار بھی بھی اید کرنا چائز خیس ۔ اس کو درمخار نے جارا فاہر غاجر غاجر او باہتے۔ اور ایو کر اسکاف کہتے ہیں کہ بھی محے زویک الی حالت ش جواز ہے اور اس برفتو کی ہے مگر بر ضعیف قبل ہے۔ شامی نے ہمی" آقی" کے ساتھ تکھا ہے۔ آپ کے تبہب میں لا خون ہمی پاک ہے اور مطال بالوروں وائدان کے دووج پیتے ہیے کا پیٹاب بھی پاک سبے اور کی ایک ہوار گی ایک سبے اور کی جمل بڑا ہے ہیا ہے ہیں ہور بھی بڑا ہے ہیں ہیں بھی خون اور پیٹ ہے آپ کے خریب کے مطابق تو جات اختیار ہیں بھی خون اور پیٹ ہی ہے ہیں ہے ہیں ہے ہیں ہیں جار دور آپ کا ایک جن فران ہے جات خوار کے ایک محت جارے ہیں مسلمانوں اور تکسور کا فران ہے ۔

عظمت حديث

افی الدند والجماعت کے بال قرآن پاک کے بعد سنت و کیسا ٹرقی ہے است متواز و کا متحر کافر ہے، کیونکہ اس کا عم بیٹی بدیس حاصل ہوتا ہے اور مدیدے میٹیور سے علم عما نیب حاصل ہوتا ہے، اس کا متکر آمراہ ہے اور فیر واحد پرشن واج ہے اس کا تارک فائش ہے۔ مدیدے کی جس فدر کی جس جو وہ یا متندین کی جمع آمرہ جین یہ جمہد ین کی و فیر مقلوین کا حدیث کا میکی جما است کا فاعدہ میں نیس ۔ ان طرع محد آن بھی چار عبق س میں تقلیم جیں: طبقات عانیہ، عبقات بالکید، طبقات شافعی، طبقات منابلد طبقات قیر مقلدی نای کوئی کتاب کمی مصنف سفاتین کھی۔ اگریز کے 10، ہے پہلے کی فیر مقلدی کی شکس کتاب کی شرح ہے شدہ اٹیر شاقر ہمدا گر آج کل جمل طرح اہل قرآن قرآن ہے فامیانہ قبلہ بنات ہیں، ای طرح اہل آئیوں نے اس حدیث ایک میرک ان گریز سے الذب کروائے صدیف ن خاصیانہ قبلہ کرنا جاتا ہے گئے ہیں اور اللہ میں ایک خرید سے بھری و نیا فسال وصول اللہ میں گئے ہی کی صداحت فیش باب دول ان کے بار صدیف کی منظمت قبل ۔ اس پر مانشیم کی رہی گا ہے ہے ہیں کہ ان کے بار صدیف کی منظمت قبل ۔ اس پر مانشیم کی رہی گا ہے ہے۔ طالب العدیث حوقہ المفالیس (بعنی بدادا طلب العدیث و قد المفالیس (بعنی بدادا طلب

تر جمعہ: العدیث کا ظلب کرنامظلیوں کا کام ہے (میتی جب مدیث کوطلب کرے اور ان الی مجھ حاصل ندکرے)

بريمت شم موجود عبارت ورص حب في شميل في آخضرت كي في أو المحارث كي في المراح المحارث ال

المام شعبة فرمات بين. يحصرب سازياد وخوف الربات كاسب كا يحد

حدیث آگ (دوز خ) میں ڈال دے گی۔ امام شعبہ آئی فرماتے ہیں کہ قیس بن رقع جھ ے مدیث کا غذا کر وکر تے تھے اور مجھے میے ڈر قفا کہ جست گر کر ہم دونوں کو مارنہ ڈالے۔ امام عبداللہ بن اور لیس :

ا مام عمداللہ بن اور پس فرماتے ہیں کہ ہم (محدثین) کہا کرتے تھے کہ حدیث كَ زَبَادِ فِي وَيِواكُلُ ہے۔ امام حبدالرزاق " كيتے بين كه بم تجھتے بچھ كەمدىپ فجر ہے مگروہ تو شرتقی۔ امام احمث فرماتے ہیں: ونیا میں احتاب العدیث ہے زیادہ شریر کوئی قوم تین اور امام النش فرمائے اکائن میرے باس کتے جوتے توشن اسحاب حدیث پر کتے مجھوڑتا۔ این جرائے کہتے ہیں کہ ہم اعمش کے پاس ارتوقو اس کا کتاب تھا جو اسحاب مدیث کو کا فٹا تھا، وہ کٹا مرگیا تو اسحاب حدیث امام اتمش کے پاس آئے ،امام اتمش ان کود کچھ كرروني لكي اوركت بيجة بائع ميراكما جوام بالمعروف اور في عن المنكر كرنا تفاوه مر کیا۔امام ابو بکر عیاش فرماتے ہے کہ اسحاب العدیث تمام محلوق سے زیادہ شریر ہیں۔ بیر تمام عبارات كسى منفى كماب كى مبين بلكه بير بديع الدين شاه كي محوب ترين مؤرث خطیب بغدادی کی تاب شرف اسحاب الحدیث ش بین ۔ بی تاب بیر صاحب کے یاس بھی ہے، برأت اہل حدیث سفح ۱۱ براس كتاب كا حوال بھى ہے، ليكن ويرصاحب كا مطالعہ نبایت ناتص ہے کہ اس چھوٹے ہے رسائے کو بھی بورانبیں بڑھ سکے اور اگر یہ سب پچھ بڑھ کر بھی عالمگیری کی عمارت پر اعتراض کیا ہے تو بیر ضدہ تعصب اور بٹ وهرى كى ائتباء ہے۔ امام شعبة فرمایا كرتے تھے: مجھے سب سے زیاد و بغض اہل حدیث ے ہے اور ﷺ عمرو بن الحارث قرمایا کرتے تھے: مسا وأیست علق اشسوف واهلاً اسخف من اصحاب الحديث. لعِض اسحاب مديث فقدت استخ كورت تق كد

ائتني اكرك بغير والموكة وتريز عن اور عديث من است وسي فيليو تهو بيش كرت (تائيب) رايت اسحاب الحديث كوفقه الحديث من طلس كبنا كون كاللطى ب-

فقة حَنِّي مِينِ انساني زندگي ڪِتمهل مسائل کاحل تناب وسنت کي روشني ميں چیش کیا گیا ہے۔ یہ فقہ الکوں مسائل پر مشتمل ہے، ان میں سے تین مسائل پر ج صاحب في اعتراض كيا ب كدان عن امام الوطيف عظاء وفي عالاتك محتد ك بارے میں خود پین صاحب بھی مائے ہیں ا''اگر اجتباد شن خطاء واقع اولی تو مجھی ایک ا برط كا اور فظاء ال يرمواف ي كما هو نص الحديث " (تفيد مديد سخوا ١٠) نحو وسفحہ ۲۲۰)۔ جب خدا تعالی نے انہیں چھوڑ دیا تو تو کیوں معاف نبیس کرتا۔ ہیں اعتراضات کوئی ویرصاحب فے عے تین تکالے، ان کا جواب ویر کے دنیا میں پیدا ہوئے ہے صدیوں پہلے احتاف دے میلے جیں۔ ویرصاحب ان اعظے نوالوں کو دوبارہ کمارے ہیں۔ پہلامسلہ جری طائق کا ہے، امام ابوطنیق سے پہلے معزت عبداللہ بن عررٌ، إما شعبي "معيد بن جبيرٌ، إمام أعملٌ " وإمام إبراتيم فني أورامام قنادة (عبدالرزاق ١٠٠/ ص ١٦٠) حضرت معيد بن المسيب"، حضرت ابوقلا بيَّاورة النبي شريح " بهي ال يح قائل جي (ماثيدز جاجة الصاح ج ١/ص ٢ ١٥٠) اوران حفرات كا احتدال مديث سے ك آتخفرت عَلِيْقِ لِـ فرمايا: ثبلاث حدهن جدوهذ لهن جدالطلاق والنكاح والسوجمعة (ابوداؤد،ائن مانه)اوراس كى تائية آن سے بوتى بي كول خطاء ش ویت و کفارونص سے واجب ہے اور اگر جبرا کسی کوکوئی جماع پرمجبور کرے تو اس مجبور یر بالا بھاع مسل فرش ہے۔اس کا روز وٹوٹ جائے گا ، حج باطل ہوجائے گا۔الغرش پیر لوگ قرآن مدیث اوراجهاع سے بیاستلداستنباط کررہے جیں اور و وصریح حدیث بھی

اس فی تا تبید آرتی سے کو ایک عورت نے ہوئے ہوئے فاوالد کے مطلع پر جمری رکھ آر سے طواق پر مجود کیا دال نے مجودا علاق و سے دی۔ همور تنظیق نے س طواق کو تا فاد قد باید آب ہے جو حدیث لا طلعاتی ہی اعلاقی فیز کی ہے دو ناسند کی ہے نامون سرن ہیں آ ہے انہ اور پر فی سے اور کی سے کہا ہے انہ دوسری حدیث ہیں معرب اور کا طلاق حالتو الا شرح عرب اور براؤ سے مروی ہے کہا تخصرت تنظیق نے قریدہ کی طلاق حالتو الا طلاق المسمعیو و المسمعیو و علاق (مندار مراطلم) اور حمرت بواز ہے مرف فا مروی ہے اکسی طلاق حالیٰ و طلاق المسمود و ایس الی تبید) ان احادیث ہے محتین ہوئی کہا انہ ان سے مراد طواق معمود ہے کہا تھا آیک حدیث و دری حدیث کی تمیر آرتی ہوئی کہا انہ ان سے مراد طواق معمود ہے کہا تھا آیک حدیث و دری حدیث کی تمیر آرتی کی اور اس کا نام و موت ہوئی کہا تا اور اس کا نام و موت

محدثين ئي كتا<u>ب الصنوة</u> .

میرا مناب تق کوانگریز ک دارست ف پانی منت پہلے آبائسی او گزار کا منت پہلے آبائسی او گزار کا مکمل کا آب کی شدہ کی فیار کا کہ انگریز کے دور سے اس او کشاب فیل کرتے ہے بالکل ما این المیار نے کہ کا کہ الکتاب العملود الکسی تقی ۔ موافا المیل ایک ایک ایک ایک بارک کی ساتھ المیل ایک ایک کا بات کرد کا این المیل نے بارک کا براستاند میں کرد کے ایک دو اور کھی مسالی جس میں شما نے کا براستاند اور کھی دارگ کی مواد کے ایک مواد کی ایک میں میں شما نے کا براستاند ایک جس میں شما نے کا براستاند اور کھی دو آپ نے تعلق دھو کر کے ایک نام انگھا ہے ۔

حجوثي گواهي:

یہ ستار اہام محرکی کتاب سے تو نقل کردیا گر اہام محرکی الیسوط میں روایت موجود ہے کہ یہ فیصلہ خلیفہ راشہ دھرت علی کرم اللہ وجبہ کا ہے۔ تو آ سے حضرت علی اور ان سحابہ پراعتراض کرتے جوائی فیصلے پر خاموش رہے اور جو صدیت آ ہے نے لکسی ہے اس کا تعلق اموال غیر سے ہے، اس مسئلہ ہے اس کا کیا تعلق؟ ہے موقع حدیث لکھتا آ ہے کا بی کام ہے۔

زى

اگر صفور مَنْ الله على شان على نازيا الفاظ كي تو أس يُوتور رفكائى جائے گى: وفعى المحاوى المقدمسى ويؤدب الدمى و بعافب على ب دين الاسلام او النبى او القوآن (الحرالرائق ع٥/ص١٥) اگر مقاد جوتو سامة اس كاقتل كرنا واجب ب(عمدة الرعاب ن ٢/ص ٣٣٤) أن تخضرت مَنْ الله في السام عليم كنته والول كوتل شيم كروايا ـ

معود تين:

معود قین والا اعتراض شیعد سے چوری کیا ہے۔ آپ فرمائی کد حضرت عبداللہ بن معود کے بارے ش کیا فتوی ہے؟ جن کے بارے می ارشادالحق اثری نے چرازور مارا ہے کہ ووقع و تین کے قرآن میں سے ہونے کا اٹکار کرتے تھے اوراس کاب پرآپ کے براور آگری محب اللہ شاہ راشدی کی زبرست تقریظ ہے، این عماکر والا واقعہ بالکل بے سند ہے۔

ختم نبوت:

میری ایک آفرایر کے جواب کے لئے آپ نے کچھ اعتراشات شیعہ سے
پوری کر کے بیان کردیے، یہ اعتراض کہ علماء او بائد فتم نبوت کے مگر ہیں، مرزائیاں
سے چوری کرایا ورندای تحذیر الناس میں صراحت موجود ہے کہ فتم نبوت نہ مانی کا مشر
کافر ہے۔ حضرت نانوتوی کا وصال ۱۲۹۰ ہیں ہوا۔ اس وقت سے لے کر حمیارے
اُستادوں میں سے تسی فیر مقلد نے حضرت نانوتوی کو فتم نبوت کا مشخر قرارت ویا۔ آپ
نے تمام فیر مقلد علماء کو ہے تبحرقرار دیا اور مرزائیوں کی تقلید کرلی۔

کلمهاور درود:

پوری تقریر میں ایک بات بھی تحقیقی نیس ہے، شیعہ اور مرزائیوں نے جو اوم اصات اہل النا پر کئے بتے وہ اکشے کئے ہیں۔ افترا اسات کے لئے بھی بھیک ما تی ہے۔ اس افترا اسات کے لئے بھی بھیک ما تی ہے۔ اب آخر میں یہ بھی ارکاری فقیرہ بر بلوی صاحبان کے وردازہ پر بجدہ کررہا ہے، کیونکہ یہ واقعہ ۱۳۳۱ ہے کا ہے، ۱۳۰۵ ہے کئی فیر مقلد عالم نے اس واقعہ کو قابل اختراش شیر الله یہ بھی الله یہ بھی اور کا سے گلائی آفتائے بھر رہا ہے۔ یہ وہ اختراض ہے جس کا بھوا ہو بھی الله ین کے پیدا ہونے ہے بھی پہلے علائے دایو بندوے بھی ہیں۔ آپ بھوا ہے بھی کہنے علائے دایو بندوے بھی ہیں۔ آپ بی فرمائی خواب میں کوئی زنا کرے یا گلہ کفر زبان پر آئے تو آپ اس پر زنا کی صد بادی کریں گے، اگر خواب میں کوئی کئی کی بینی بادی کریں گے اور ارتدادے ادکام جاری کریں گے، اگر خواب میں کوئی کئی کی بینی ہے۔ اس بردی کریں گے ساتھ روانہ کردے گا اور بیدادی سے شراوی کریں گے ساتھ روانہ کردے گا اور بیدادی میں ہے اختیاری سے کوئی کلی قربان سے نکل جانے جیسا کہ ایک مدیث پاک میں ہے

کدائیک محض کی زبان سے بے افتیاری سے پیکھہ آگا: السلھ است عسدی و انسا

دیک اسا اللہ او مرابتدہ ہے، میں تیرارب بوں۔ تو کیا ایسے آدی پر گفر کا فتو تی

قر آن وحدیث میں ہے۔ حدیث کے مطابق تو سویا بوا اور ہے افتیار مرفوع افتیم ہیں۔

جب وہ مرید خواب اور ہے افتیاری سے زبان پر پیکسات آئے سے رورہا ہے، قبہ

استغفار کر دہا ہے تو اس کو تعییہ کی ضرورت کیا؟ بال بید فرما دیا کہ بھی میں تو تشج سنت

بول، نی ٹیس، نی کا تابعدار بول، بھیک ما بھ کر ایسے افتراض کرنا اور اس کا نام

وقوت قر آن و حدیث رکھنا یا ملی دیوالیہ ہے۔ آوا آئ قبط الربال کا دور ہے کہ شید

کے درکا فقیر اور سٹلنا شیخ العرب والیجی ، مرزائیوں کے درکا گدا سلطان الحد شین ہے اور

دیارہ کیسٹ میں من کر اس کا جواب ویں۔ گالیاں اور تیرا بازی میری تقریر کا جواب ٹیس

دوبارہ کیسٹ میں من کر اس کا جواب ویں۔ گالیاں اور تیرا بازی میری تقریر کا جواب ٹیس

ہے۔ میرے مطالبات قرض لے کرم و گئو جنازہ بھی جائز شہوگا۔

آخر میں پیر بی کو پھر یاد آیا کہ میں نے تواہے فرقہ کا نام اہل حدیث قرآن ا د حدیث سے ثابت کرنا تھا، وہ تو نہ ہو ۔ کا، لوگ سجعیں گے کہ اس فرقہ کے مزد یک جوٹ، خیانت، گالی اور مغالط دہی کا نام عمل بالحدیث ہے تو قران وحدیث کی بجائے ولانا عمدالی تکھندی کی ایک عمارت تعدیمین کی تعریف میں ڈیش کردی۔ یہ ایسا بی فریب رہ جیسا اہل قرآن کوئی ممارت مفسرین کی تعریف میں لکھ دیں۔ یہ دھوکا دینا کہ مولانا عمالتی نے فیر مقلدین کی تعریف کی ہے خالص فریب ہے۔ وہ تو تجے یوں کا دو کرتے دوئے لکھتے ہیں: واحدوانھم الاصاغر العشہورین بغیر المقلدین اللدین سموا انفسهم باهل الحديث وشنان بينهم وبين اهل الحديث (الاعلام الرقوع مولانا مبدأي رئية القدعايس ٢٠٩٨) يعني أيجريول كرجيون بعائي فيرمقلدين جواية آپ كوائل حديث كيترين حالا كلدان عن اوراش حديث (محدثين) عن كوئي مناسب عل كوائل حديث كيترين حالا كلدان عن اوراش حديث (محدثين) عن كوئي مناسب عل كيس الحسوس كدين صاحب وهوك س على شروع ووقع كيابي آخرية م كا-



جواب برأة الل حديث بيرجهندًا

يعالما المراج

الحمد لله وسلام على عاده الذبن اصطفى المابعد

فقہ پراعتراضات کے جوابات

(۱) او کاڑو کے لآتا ہب فیر مقلدین میں ہے کسی ختاس نے ایک ایسے ملّہ میں جہاں سب حقٰی آباد میں بعض درجہ حفظ کے مجوئے کچوئے طلباء کے ذریعہ دوورق ایسے بیسے جن میں فقہ حقٰ کے شاذ ادر غیر مفتیٰ بہا اقوال میش کر سے محلّہ ادرشیر کی فضاہ کو مکدر کیا اور فساو فی سمیل اللہ کا فریضہ ادا کیا۔

ان کے جواب بی سرف ایک سفی بی ۱۳ سائل فیر مقادین کے بیعیے گئے
اور ۱۲ سوالات مرف اس فرض سے بیعیے گئے کہ ملک بحر بی فیر مقادین اپنی کمل نماز
احادیث سیحدے تابت کرنے سے عاجز بیں اس لئے بجائے فساد پھیلائے کے اپنی
ممل نماز احادیث سے تابت کردو۔ ان سترہ سوالات میں نہ کوئی گائی تھی نہ فترف اوک
بات نماز کے بارے بیں ۱۵ احادیث ما تھی تیسی جن میں سے ایک بھی ہیں نہ کرنے
اور تابت ہوگیا کہ اوکاڑہ کا بہتے ہوئی فیر مقالد تو اپنی نماز بھی حدیث سے تابت کرنے سے
عاجز ہے جیے سارے ملک میں اس کا فرقہ عاجز ہے اور نماز تابت کرنے ک

میں فتندہ فساد بریا کرتے رہے ہیں۔

(۲) میب پر الازم تھا کہ جواب تھے وقت سیدے پہلے بیگفت کہ ہم نے شہر کی فضا کو کھ وکرنے کے لئے وہ ورق بھی کرفساہ شروع کیا تھا اور بدایک ورق اس کے جواب بھی ہے کم جیب نے حق باقی کی جو درامش یہود کی عادت ہے۔ شہر بھی فساد ک ابتدا وکرکے اس کمناہ کو درمروں برتھو جا بھی مبتان ہے۔

(٣) مجیب نے اس درق (غیر مقلدین کے شرمناک مسائل) کو دیکے کرفرزا منافقین والی آیت کلے دی۔ مجیب صاحب! فساد کی ابتدا رقو آپ کی طرف سے ہوگ۔ اس دفت ہے آیت آپ کو یاد کیوں شدآئی؟ مجیب نے تعلق تغییر بالرائے کے طور پر آیت ہم پر چہاں کی جس کو جیب جانب ٹیم استحدہ پر صریحاً ممناہ اور جہنم علی جانے کا فرد بد بڑی ہے۔

(س) کیا مشور کی نے برقر بایا تھا: البادی اطلام ما لم یصد السطاوم او کسید السطاوم او کسید السطاوم او کسید قبال مشافق بوق مجیب جو بادی ہے اس کا تھم کیا ہے اور سنافق ہے کتابہ ترب کیا ہے۔

(۵) بجیب فی مقدما ہے: جارا سنگ کتاب وسات ہے تہ کد آپ کی طرق اتحد کے اقرال (ص۵)۔ بجیب صاحب ایک جموعت قربر غیر سفلہ بدل ہے، باتھی کے والت وکھائے کے اور کھانے کے اور ویکھوائم تو کل کے بنچ ہو، حسفات الاست ان اور مستفہدساء الاحسلام (بخاری) کے معداق ہو تیمارے آیا واجداد وجیدائر مان، فروائش، مدریق الحمن خال، حیدالتار دیلوی، میال فرید سیمن، یہ بھی اوکوں کو بیک کیا کیے شرمناک سرائل لوگوں میں پھیلاتے رہے اور قرآن وحدیث کے نام سے لوگوں کو دھوکا دہتے رہے۔

(۱) ان ۲۳ مسائل کا جواب تو پیتھا کہ جیب ساحب سلیم کر لیتے کہ ہم تو ابھی عظ من اس فرق میں واقل ہوئے جیں۔ واقعی ہمارے بڑے ایک طرف قیاس کو کار شیطان کہتے رہے گر اپنی کتابوں میں قرآن و صدیث کے نام ہے ایسے قیاس کرتے دے کہ شیطان کے بھی کان کتر گئے۔ دومری طرف تقلید کو شرک کہتے رہے گر شوافع مقلدین کی کتابوں ہے مسائل چوری کرک ان کو آن و صدیث کے نام ہے پھیلائے دے اور ہمارے باقی علماء السسا کت عن المحق شیطان احوس کا کرواراوا کرتے دے۔ ان کی تروید میں کتابیں لکھ کر بھی ان کے فریب کا پردہ جاک نہ کیا۔

(۷) جیب صاحب! آپ ان کو مانتے بھی ٹین اور ان کی طرف سے جواب میں الاستحات ساء کے جیب صاحب! السخات ساء کے جیب صاحب! اس دورگی میال کومنافقت کے این ۔ اس دورگی میال کومنافقت کے این ۔

(۸) بجیب صاحب نے تکھا ہے کہ شرح وقایہ کے ترجمہ کے دفت وحیدا ترمان حنقی تھا۔ بجیب صاحب ا تھا۔ بجیب صاحب اہم نے ترجمہ شرح وقایہ کا تو کوئی حوالہ ہی نہیں دیا، بجیب صاحب ا اس کا شہوت بیش کرو کہ ریزنرل الاہرار، تراجم حدیث، بعیبۃ المبدی اور کنز الحقائق تکھنے وقت بھی حنقی تھا۔ ان کتابوں کو تو آپ کی جماعت نے اہل حدیث کی علمی خدمات تشلیم کیا ہے۔ جیب صاحب! ان کا قیاس شرح وقایہ کے ترجمہ پر کر کے جناب نے اس قیاس شرا بلیس کو بھی مات کردیا۔ تیاس تھاوڑ وہ شہوت دو۔

(٩)كيا مير نوراكس خال مجى عرف الجادى لكعة وقت حتى تقاءاس كاكوكى ثبوت وتو

ضرور پیش کریں ، جن کو بیجائے کے لئے تم جھوٹ بول رہے ، یو وہ سیدان قیامت میں جناب کے تکی کام نہ آ کیں گے۔ان کے چھچا پی عاقبت خراب در کرو۔

(١٠)كيا واقعى نواب صديق الحن خال بدورالابله اور البنيان المرصوص لكيت وقت مجى حنى تفا؟ شبوت لاؤ، جموت بولئے ، ونيا بھى برباد ہوتى ہے اور آخرت بھى، خسر الدنيا والآخرة كامصداق بن رس بو_

(١١)كيالهام جماعت فرياء ابل حديث بحي فآوك ستاريه لكينة وقت حتى تقا.

(١٣) كيا وأقى ميال نذ برسين في بحى فنادى نذيريه جب لكهادو تفي تعاـ

جب بيسب لوك فيرمقلد عقر، ان كا فيرمقلد مونا تاريخ ابل حديث مولانا سپالکوٹی و تراجم علائے حدیث بند، ہندوستان میں اہل حدیث کی تلمی خدمات اور نزیۃ الخواطرىب آپ كى مىلمەتارىخى كابون سے ثابت ہے تو ہم نے بھى يېي عنوان ديا تھا " فيرمقلدين ك شرمناك سائل" اي منوان يس كياللطي هي جوميب ساحب آي -リナクショナナト

(١٣) مجيب كى منافقت أري عالم بكدان مواديون كو ماخ بحى شيس اور چھوڑتے بھی نیس، ان کی طرف ہے کوئی جواب بن نبیس بڑتا تو مخبوط الحواس ہوكر كاليون برأتر آع بن (١) تطيد نامران (٢) تطيد صداق فيصًا ذا بنعُدُ الحق إلَّا السطيلال، (٣) تعليد كناه كبيره، (٣) مقلد محق كبيل بوتا ككير كافقير بوتا ب، (٥) مقلد كأب وسنت كالتيونيين موتا-

کیا تھید ہجتد کے یہ یا نجول تھم قرآن میں خاکور ہیں یا عدیث میں؟ تو آپ نے وو آیات واحادیث کیول نقل ندگیس؟ حقیقت مجل ہے کہ آ پہمی این برول کی



طرح قرآن وحدیث کانام لے کرجموث بولتے رہنے ہیں، بیصرف جیب کے دل کا گندے۔اگرچہ گندو مگرا تھاد بندہ۔

ال پر بھی جیب کوشر م بیس آئی۔ تکستا ہے کہ جارا مسلک تو کتاب وسنت ہے، کتاب وسنت میں بیر ترافات کہاں جیں؟

مجیب صاحب اید ساری عمارت جناب کی نابینائی کی نظر ہوگئی۔ اب ترجمہ کرتے وقت ذرایہ خیال رکھنا کہ من غیو حجہ جو جار مجرور ہے دو قمل مے متعلق ہے یا قول سے اور لسکن جوحرف استدراک ہے اس کا کیا مقصد ہے۔ مجیب صاحب ااگر جواب نیس آتا تھا تو ان کو مجھوڑ دیتے ، اپنا ایمان تو خراب شکرتے ، شاتو آپ نے لا ایمان لمن لا امانہ له کا خیال رکھا اور شدی آپ کو یہ یا در ہا کہ منافق کی علامات میں اخا اء تمن خان مجمی آیا ہے۔ (10) تقليد كي تعريف يش قرآن وحديث كو يجود تاكن عبارت كالر برب اليا منافق كي مارات بين اذا حدث كذب توس بزحار

(۱۹) اصل جواب سے فراد کرے تقلید کی طرف آئے ، ایال بھی خیانت اور گائیوں کے سوا تجرب بنا۔ اب اپنے دل ماؤف کی جزائی یوں ٹکائی ہے کہ جوقر آن و صدیت کی طرف آئے گا فیر سقلدی ہے گا۔ جناب نے بات گیر اُدھوری آبھی۔ پوری یات آئی تو فیر مقار کیوں ہوئے ۔ اگر مسائل کا اشتباط جبتد کرے گا تو دو ہر طال میں ماجور ہوگا خواہ آئیک اجربے کے یادو (متنق علیہ) اور اگر جائل کرے گا تو صلف او استفادی ہوئی خواہ بہارے یووں نے قرآن وحدیث کا عاصدات ہوگا (متنق علیہ) یور گیموا تمہمارے یووں نے قرآن وحدیث کے تام پر کیے شرمناک مسائل اوگوں میں پھیلا دیتے ، خود بھی کم اہ ہوے اور اوگوں کو بھی گراہ ہوئے۔ اور اوگوں کو

(1) بيب ائي برول كى مقائى عابر بدامل موضوع عيما كرائد جبتدين كى تقليد كفاف قرآن إك كى تغير بالرائ كرك جبتم كاليندس بنا السفوا ما أنول النكم من ربكم يعنى الفوآن احلوا حلاله وحرموا حوامه ولا تسعوا من دونه لا تعبدوا من دون الله اولياء ادبائا من الاصنام قليلاً ما تذكرون ما تنعظون بقليل ولا بكنير (تغيران عاس)

(۱۸).....اس آیت میں آپ نے بیان لیا کہ اتباع اور تقلید دونوں ہم معنی میں، جبکہ تمہارے پیریا تلی کے مناظرو میں اس کے متلز تھے۔

(١٩) مسا انسول مراوقر آن ب ياعام مرادب كه جومسائل محصيصاً ول يا تعليلا تو فقد يقيدة اس مين شامل ب-

- (٢٠) مىن دويه اولياء شريش وليه كاذكر بير ولى الله بيريا ولى بن دول الله؟ رفرق مناظر ب عن تيرب يركيمي نيري؟
- (۲۱)کیا بیالوگ جمبتدین شے؟ ان کا جمهتدین ہونا تابت کرد، چراستدلال کرنا، ورزنشیر مالوائے کے جرم کے بچرم ہو۔
- (۱۳) ۔ ۔ ۔ اس میں تھلید شخص کا ذکر ہے یہ ٹیر شخص کا ؟ اگر شخص کا رو ہے تو قر آن ہ صدیت سے تابت کرد کہ دہ کس کس بجبتہ کی طرف منسوب ہوکر کس کس لقب سے پکارے عاتے تھے؟ کہونکہ تھلید شخص والا اسپنا جہتد کی طرف منسوب ہوکر شنق ، شافعی وغیرہ کھیلاتا ہے۔ اس طرح ان کے القاب تم بھی قرآن وجدیث سے بیان کرو۔
- (۱۳۰)...... میب نے اس سے فقد کی مراد لی ہے (اس)۔ کیا واقعی نزوں قر آ ان کے وقت فقد کئی تھی جس بر عمل سے روکا ممیز ؟
- (۱۳۳) بقیناً وه وگ جال خواد شرکین ان جبلا ، کوانها روی ها لینته نخو هبیها کر فیرمقلدین اَن کل جبلا ،کوانهاری بند لینته میں .

حوال عَلَ کیا ہے، محر آخری مطرین جموز دی ہیں۔ میرا بحروسہ الشاجی جالا ہے ہے اعترل ملک العربی کلیا چیش نظرے ، باب نام مبدی آئیں کے اس وائٹ آئاب ک مسیح حالت معلوم ہوگی (حیاسہ احیدالر مان اس ۱۳۴۴) مجیب نے یہ ساری میارت جھوڑ وی اور ریکھی خال نہ کیا کہ صدیت یا کہ بین خونت منافق کی علامات میں ہے ۔ (عام) بدید الهدی میں صرف مسائل میں الائن تبین ، علامہ وحیدالزمان کے نظر یہ میں امام مدوی ان مساکل رعمل کریں تھے اور کرائی سے بھور وہ وصیعائر مان کے عقلہ ہوں ہے، کیونکہ ہمیب نے تقلید کا مطلب بھی بیران کیا ہے۔

(٢٨). . . . وديداز بان نے سنوں کو نامس کھو دیا ۔ مجیب خوش ہے پھوئے کیں اواتا ۔ آ تخفرت مينية توعيليكي بستني فراكي روحيالهان صور ينينة كفاف ان كو ن عبی کے۔ بہب نبی تفایق کے خالف وسیرانر مان کی تفلید ہے خوش ہو۔

(٢٩). . . . تا ب كا طاهد والبدالز مان له غرب غير مقلد فينه ك بعداي ب وك بوكميا اتها كه حضرت امير معاويةً كي تبعث كلمات تعظيم مثل حضرت بعني الله عنه كينغ كوخت وم_ي ق اور ہے یا کی بھت تھا(صات وحیدالز مان ص ۱۰۹)

(مسر) ... ، محلی این حزم کے جواب میں موانا نامحہ عن صدیقی کی کر بہا کا حوال دیا ہے۔ آب تو مرف قرآن وسريت كو ماسنة جي وان كيا ب وليل بات مان كرهنيد كيون كرفي؟ اب آگر آ ب نے اہل تھوا ہر کو بچوڑ ایا ہے تو ظاہر کا کہا ؟ می چھوڑ دیں جو صدیث سے عامت فيمار

(۳۱) افرف الناوي اور بدور النهذ ك حوالون كاجواب ديا ب كدوه فقه حتى سيد التي ين . اولاً توجاب كالبعوث انبول في برُرْنبين تكما كريم في فقر حلَّ سه لله

یں ۔ پھر آٹر انہوں نے ایس کی ہوتا تو ہوا ترم تھا کہ قیامی مسائل کوٹر آ ان و عدیت ، ویاد کھٹل ان کا دعوی ہے ہے کہ ہم قرآ ن وجہ یت کے سوا کھٹیس وسنڈ۔

(۱۳۲)...... بجیب نے تعمام با بدودا ابلدین تعمام کوشراب میں سے ان کے گئیں ا پھر جواب ویا ہے کہ میں بھی بھی بھی میں تعما ہے ۔ بجیب صاحب آنہاں تو جناب رئے ہے جو باش و ہر چہ توای کی ہر جور چوا محل کیا۔ سفتے اتنہ وسے خاب و صند ہاہے کہ اف حد صدر طابعہ را کشر الحق کی میں ان مزئ از براری ایس جور بھی جا ہے ۔ جودرالابند میں ہا) کر ملیا و انسین بھی ہے کہ بوست فیلیڈ بھیسے چاکان بیٹیا ہا رشون ا شراب کے کا گوشت انتز مرکا کوشت اور اس کے تمام اجرا و (منیا انسین صفح میں) ملی الاواس کوشل ول تجاست فیلٹ کے کرتو یہ کے کہ بان پاک نعما ہے و لعدہ اللّٰہ علم الکا فرید ر

۵ ۳۳).... بچیب نے نکھنا ہے کہ بدورالدید علی شر ب کو ترام کھند ہیں آ ہے دیے نگھ ویا ہے کہ اس کتاب کا ماتنا شرودی ٹیس ، بھرآ پ کو گفظا ترام کا کیا ڈر؟ آپ ٹورڈ کڑل نما براد کن فقد النبی الحقاری المحصاء ۵ برطمل کر میں سے کہ شراب عیں آ نا کو ندھ کر دوئی ایکا کر کھالیس کے ، لیجنے اب ترام کا کیا ڈر رہا۔

۔ (۳۳)۔۔۔۔۔ بجیب نے شراب کو پاک بان لیا ہے کر دلیں قران و حدیث سے ٹیمی وی۔ فقد کئی کی کئیب ملیہ المنسق پر جھوٹ اول دیا ہے۔ قریکے پاک ہونے کی صرت کے حدیث دکھا و اور تشہوراد بو کی قمل و قدیمت تقش جھوٹ ہے۔۔

(۳۵).جیب نے مردار کوبھی پاک مان ایا ہے ادراسے پاک فارت کرنے سکے گئے اللہ کے بی پرچی جماعت بول ویا ہے۔ بھری والی صدیت عمل کس لفتہ کا قریمہ ہے کہ وہ سروہ کوری پاکستنی بھک وہ حدیث تو ہُڈ تی ہے کہ اس کی تھال تنگ ناپاک بوگی تھی۔ سی سٹے تو وہ شت کا تشم دیا ہے۔ وہ رق حدیث بھی ہے: اسسا اھناف وہ علقاط طہر جب وہا خت سے جد کھال پاک ہوگی تو پہلے ناپاک ہوڈ خاہر ہے۔ عرف انجاد کی وغیرہ معمل تو مردار کو پاک کہا ہے ، دہا خت کا ذکری فیمیں۔

(۳۷) پھر پاک اور حلال کا فرق بیان کیا ہے۔ فرق بھی ذمین آسان کا گر شا قرآن کی کو لی صوت آ آ ہے بیش کی ہے اور نہ بی کو ٹی سیچ صرتے صدیق مصلوم ہوا قرآن و حدیث کا نام محنی مسلمانوں کو دعوکا اسینا کے لئے ہے۔ صرف قبائی ڈھنگو سلے بیان کٹنا میں اور قبائی مجیب سنگ ندمیب علی کار شیطان ہے ، تیکن میفٹ ضرورت وو اس منصب بربھی فائز ہو تک جاتے ہیں۔

(24) کفتر ہے جوکر پیٹاب کرنے کی مدیث بھی بخاری بٹن ہے دور رقع یوین کی بھی بخاری میں۔ رقع یوین کوسٹ کیا جانا ہے گر س کفتر سے جوکر پیٹاب کرنے کی سٹٹ کوزندہ کرنے برزورکیس ویا جانا وقا خرکیوں ''جیافر کی صدیت سے شازر

(۱۲۸) انتخ وہزری تو مقلد کی کتاب ہے ، ان کوئم نے قرآن مجھ کر فرق کیا ہے یا این بچرکورسول مجھ کر۔

(٣٩)سى به كوفائل آب كى كتاب لمبيان الرصوص على كهامي ب، استنفرالك دل سے بيرتو اس مارے تدب سے توب كراور

 (۳۱)......هروین نین اصفوری فهارت کهی به ای افا لیم بیصلین قبلو اعساس به تسبیعه او اعتبال ۵۰ قشل وقو امراهٔ وبه بعنی البود کندا فی المدود المستغی ۱ روانگ د) به به شدیمی آنیدگونتر زآنی ب

(۴۲)....... آپ صرح آیت یا تیج صرح مدیث فاتی گری کوسب سے عبداؤے ہاتا ہے ، بم تشکیم کرلیس کے کوسٹلہ فلط ہے ۔

(۴۳). الله تما تى يوجعوك بولا الصال عن تدال كما فى دولت كى صواحت خدامه. الوائد الأرقل معلن فقد كالتكم سعد

ه ۱٬۳۳۱ ما ۱٬۶۶۱ مخترجه المُقطّ كوالهام للم كتب عقويا بومنافق را منا كتب عقويًا ان مب وَقُلَ مَنْ كَا تَعَاقَ وَجُوتِ دور

(۱۳۵)..... بجيب الك خرف كبنا سيد بم قرآن است سكسوا كل يزنيش ماست مك المست مكسوا كل يزنيش ماست مك المست مكسوا كل ين المين ال

وصلى الله عنه أنه يكن من اهل الاجتهاد كفا في البيانية (الخي في ثرباً التهاية) - مراهمة على باري فهم تداهيت الله هجوز على كالآرة لا هيمن للمس لا هجامة الهاأن. براكر أنها

و و من السريجيب ك ول مين جو او مرسد حب كالجنف نجرا بيا الخفا اب ووزامور برسانكا: الميناور اوم معادم ب ك خلاف اليساطيم و الراسات

وكم من فوج محصده المستعدم فل حرامه بابي حديد
 الرائم كالكرائم تجول بين الماجيسة في كالجداء الدايام العم بالما تواند.

ے عابات سے راس کے خلاف مجبول آ وکی کا متوارقر آ من الارصابیت سے اسا فاتھ ہے۔ سے عابات سے راس کے خلاف مجبول آ وکی کا متوارقر آ من الارصابیت سے اسا کا فاتھ ہے۔ ہے جمعت رہے انگر سنیاں

> یہ فظائد ٹور الک او او کند بن کے ادا طائف فود فو کند

(۵۷) پجری جمهول شاعر نے بھی ایک مند بھی بطور مثال بیٹر مخت کیا کہ خدا کے فلاں حرام کوار مزینے ملال قرار ویا۔ اگر بھی جس ایک ذرّہ بھی حیاست قرام مجبول شاعر سے اس کی صرف ایک بی مثال ہوستہ کرد ہے۔

(ra). . . قمر وتشداین السکیت

حسيسي من اليخيسرات منا اعددته يدوم النقيامة في رضي الوحسان ديسن السنسي منحسد حيار الوراي النم اعتبقنادي مقعب التحامان

(کتاب اتعلیم بمنی ده ۳۰۰

تمہارے مولانا عبدالنان وزیراً بادی کیا کرتے تھے: جو تھ اند وین اور تصوصاً ادام ابوطنیفاً کی ہے اولی کرتا ہے اس کا خاتر اچھاتیں ہوتا (کاریخ الل عدیث ص ۱۹۵۸) دیکھوا عبداللی نے تم ہے کم کتائی ادام ساحب کی شان میں کی تھی ، او آخر مرقہ باوکر مرا (واؤو فر نوکی صفح ۳۸) تمہارے میال نڈ برحیمین تھے بھیے انکسائی ہے ادبی کرنے والے کو چھوٹا رافعنی کہا کرتے تھے (کاریخ اہل حدیث سلے ۸۰)

(۳۹) تو یہ بھی نہیں جانٹا کہ حرام شرم کا ہوں کو طائل کرنے کا شیکر تو لا غابب تم الی غیر سفاد بن نے سلے رکھا ہے ، قرآ ان کہتا ہے کہ ایک دانت میں جاد سے ذیادہ جو یاں ایک مرد سکہ نکار میں نیس رہ مکتب ، لیکن غیر مقلد بن نے جار سے زائد کو مکی طال کرویا (عفر الملائی سنی اسان مرف الحادی سنی الل

(۵۰).....غیرمقلدین کے زویک جس فیص نے کی عورت سے زنا کیا ہے وہ فیص اس کی لڑکی سے لگاح کرسکتا ہے۔ اگرچہ وہ لڑکی ای زنا سے پیدا ہوئی ہو (عرف الجادی عن ۱۰۹)

(۵۱)......اگرگونگفش اپنی بیدی الوفری کا فیرفطری مقام استعال کرے قواس پرا نکار جا ترمیس (بدیة الهدی جامس ۱۱۸)

(۵۴) متعدا حادیث واجماع کی رو ہے حرام تھا، نیبر مقلدین نے صاف تکھا کہ حد پر انکار جا زئیس (مدیة البهدی خ اراض ۱۱۸)

(۵۲) اگر کوئی محص اہل کوفد کے قول پر عبید فی لے ، اہل مدید کے قول پر گانا کالے بامن مے اور اہلی مکد کے قول بر متعد کر لے قوبالکل ورست ہے۔

(بدية الهدى خ1/ص١١٢)

(۵۳). بھی چھٹی آگر کی فورے سے زنا کیا تو اس فورجہ کی ماں بٹی سے تکات طال سے (نزل ان برادری انجمرہ)

(۵۵),.....ا المحمل في البينة بالبياني وي (مان) سانة الرئياقة وهاب برج المؤليل. البولي (المزان الاجرار ج الرس ۴۸)

(81) المرتمين آمان اليك محدث ذاوتدى المصاحب كرات و بها حقوق الموادي المصاحب كرات و المهام و الموادي الموادي المرادي المر

(عدد) واذمی والا بابا بھی بہتان نوش کرسکتا ہے (کتوبز النظر، روسند الند پر ص به ۱۲ دنال ۱۱ وارث ۱۲ سر عدد) جبکہ بیرسب عورتین امام صاحب کے نزویک فرام جی تو فرام شرم گاہوں کو دارل او مرصاحب کے کہا کا نہ جب جوائی فیرمقلہ میں ہے۔

اند کے با تو تعقم و غم دل ترسیدم س دل آزردو شکی ورنہ مخن بسیار منت

(۵۸) ... بہیب کا تو اوڑھ تا بچھونا جھوٹ بن کیا ہے۔ اب چراکھوہ یا کر کنز اُمتنا کُلّ امیدائر بان نے اپنی دونے کے زبانہ ہم تکھی تھی، حالانک یہ بالک مجھوٹ ہے، اس ''مَاب کا نام کنز احتا کُلّ کی فقد قبرالخلائل ہے۔ اس کما یہ مسلک اہل حدیث کے مطابق طروری مسائل کو احادیث ہے مستبط کر کے مرتب کیا ہے۔

(حيات وحيدالز مان حر ١٣٥٤)

(64) ہیں چھر مغلوب انفیب ہوکر فقہ حتی کو کوسٹا شروع کردیا ہے۔ سو ٹی عورت اور مجنونہ سے جماع کیا گیا تو روز ہے کا کفار وٹیٹ ، روز وٹوسٹہ گیا۔ کفارہ اس لئے نہیں کہ ان کا اداوہ شاتھ۔ مویا ہوا جسیہ تک نہ جائے اور بھٹون جب تک ہوتی میں شاقے کے مرقی میں شاقے کے مرفوع انتہاء کی ان مرفوع انتہاء کی ان مرفوع انتہاء کی ان مرفوع میں ان کہ ان مرکفارہ سے فارت میں کہ ان مرکفارہ سے فارت میں کی ان مرکفارہ سے فارت میں کی سے تھی سے قر مستون لا مانتہ نہ ہوگا۔ سے تھی سے قر مشمد للط فارستہ نہ ہوگا۔

(۱۰) . . . و کسه عسد طبقوع الفجر وان امنی بعدائنوع الاحد کالاحدادم ولمو مسکنت حتی امسی او لم بتحرک قضی فقط وان حرک نفسه قصی و کفوه (درمخارخ الاس ۱۵) بر کمت ش موجود میارت کا از جماش آی کیا میدفیانت عربا اس کا چشت ـ ـ

(۱۱)... رای بورے سنٹر کے خراف کید میچ موزع غیر معارض مدیدہ ہیں کروے ہ جماعتہ کرلیں مے کہ مشد خان ہے۔

(۱۳)مای اور داماد کی از تی کا ذکر ہے، کن مدیدے سے سائی کو جھوٹا کہا جائے مجاد و مدیث چیش کرو، ہم شنیم کرلیں گے۔

(۱۳). ... رناب کے قدمیہ میں قوس میں دارہ سے زنامیں کرائے تو والماد کا نکائی برقر ارہے (نزمل الا بربارج مائمس ۲۷)

ر ("") باتحد من قالت كي كوشش كرنا حرام هيد اكر الزال معقد ووزه قاسد ميد وريتين _ اصل عبارت : و كفا الاستعناء بالمكف روان كر ه تحريفا لحديث ناكح الهد ملعون (﴿ مَنَّ الْحَنَّ الله) رواست عنى يكفه او بعيا شرة فاحشة والو بيس السعو أنيس في نزل قيله للكل حتى لو توينزل له يفطر كما من (ورائ ر من الصواح 60) و يجهن الإراستلاية كرشت وفي كرود تحري مهاور شت وفي كر فق کی کا شت نے جموعہ ، جادیا تی ، کھال جی محمیس جی یا لباطش رسب کی ہے۔ علی تھی رہا ہے ۔

(۱۳۵) اس شد بعد مجیب شد نکعا سه که مند درست سه (زفر ، شرق وقاید ص ۱۳۶۹)، چی کبتا بودن المعسد المشد علی الکافیین ، شرح وقاید شیاقو نکاح مند کو باطن قرار دیا ہے (شرق وقاید ج ۱/می ۱۹) گرفو مجبوعه کیالعنت سے نشا چیت ہے تو شرع وقاید کے متن کی اصل عہارت مربل کھ کر بھیج ۔ تو قیامت تک تیس المجیح سے گا اور قیامت تک جموعت و فی العنت کا فوارہ جھوی پر برمتر رہے گا۔ فقد کی مند میں کتنی تعاشیں عدواشت کررہا ہے ۔

(11) پھر سنو ۱ پر کھن ہے: کرمات (مین جو بیش ترام جیں، ماں، بکن، پھوچکی اور خالہ وغیرہ) سے حرام جان کر بھی ذکار کر سے تو صدفییں (ابوطیفہ) (ور بختار جا اُ اور خالہ وغیرہ) جس طرح شیطان ما والحل کی میٹنگ سے درمیان سے کوئی بات اُ چک این تو اور بھر کی حجوث ما کر بات کو بھیا تا تھ وائی حال فقد کی کم بول کے ماتھ س جنمی کا اور بھر کی حمید ہے۔ جب اسے فقد کی مجند ہی تھیں تو اختر اخل خاک کرے گا۔ جو اُدود مبادت تکھی ہے میدود مشارک کس عربی ہو شیطان کی طرح اور دو مبادت تک خرج ہو اُدو مبادت کی طرح اور خواہش کے مطابق مطاب کھڑ کر فقد کی طرف منسوب کرد بتا ہے۔ اگر اس جیب کو دول ہے کہ اس نے ماسے دول کی اس کے سامنے

رتھیں کے دووائنس میارے ہو جا ہے ہے گا دس کا تبدیر کے اور فقہ کے اس کا اور فقہ کے اس وب کے ہر ہر سند کے خلاف ایک ایک دیک میں جائے جس کے جس کے دیس معارض پیش کر سے گا۔

(۱۷) درجی رئیں مال مین میں میں خالات کان کا حرام ہوتا صواحقاً نکھا ہے جو تعلق پید کہنا ہے کر فقائم کی کے مطابق ان سے نکان جا تر ہے واس سے بروا جھوتا اور منتخ محتمل و ندیش کوئی تیں۔

(۲۸) ... حتی غیرت بھی ہے حرمت اتنی آھی ہے کہ ان سے نکاع کری تو کو سرف زبان سے نکال کو طول کیے و سے تو وہ کافرہ مرقہ دور واجب انتقل ہے (طحادی ج۲ ص ۹۹ مرفع انقدار جے نام ۱۳۱۰)

(19) ، ، ، ، ۴ ندب غیر مقند کن کن معتبر کنب بین بیاستد نیس کدان سے نظر طال جانے والہ مرتد واج ب المحل ہے، ہوؤ عبارت تحریر کروں

(من).. ... او فی نکاح کرے وظی کوے تو بینکان باطن شہر سے وائیس و آیا ک بیکٹرا سے کر بینکا معدم سے شرکش محرصہ یک ایستانا اسواقا محصصت بعیس افاق والبھا فلسکا معد جامل ماطل باطل (شرعی) اور این بابرش تو ذاعبیکا لفظ ہے، چھڑھی اس پر معدکا ڈکر تبیمی بلک میرودائے کا ڈکر ہے۔ تو آمام صاحب نے اس معدد بھی کی دجہ سے تی کی کوچھڑ ویا اور نکارتی باطن کوشید مان لیا۔

(۱۷) ۔۔۔۔۔۔ آپ کے پاس کوئی مدین میچ اصرت کو فیر معارض ہو کہ نکاح اعلی شید کینے۔ بن سکتا تو ضرور ویژن کریں ، ووشد آپ کا قیاس جست نیس ۔

(24)اور شرے بھی حدیث و ہاہمان آمت حد ساتھ ہوجائی ہے (در رہید شوکائی، والروشة الند بيصديق الحن من ٢٥٥) آپ وئی حديث وثيا كريما كريما

عد ما قطأتك بولي ر

(۵۳) شیدگی اور ذیا سوجب مد ۱ رزیا موجب قدیر کی جائی مانع آخریف قران و حدیث سے تکھوہ فقد یا اسول فقہ سے چور کی تدکر نادتم سادے کی کرجمی قیامت تک ند گرسکو کئے۔

(20) ... جب شری بورت صرما قدا ، وکن تو اس ز، پرتغویر نے گیا و بستکسون التحریر بالقتل کمن و حدو حلامع احوالة لا نحل لد (درمخارج الام 20) در ان کوتوریا قس کردی جائے گا مجیب بالک اندها ہے کہ التے تعریکا تھم تفریک تیں آیا۔ (20) مجیب نے اپنے کمر تظری تیس ڈائی کو لحظ کی جس مجی اس مستندیں ایک تول صدنہ ہونے کا ہے ، دیال کیل ٹیس برنا؟

(14) الا فرجب بيرتو وضح ربت جي كدفنان منظم إلى حدثين، بجرعوام عن بيرا جهوت إلا سنة جي كدمد شامو في كالمطلب فقد في كتاب عن بيراونات كد كنا وأبيل اوراس باكوني مزوفتش، حالا تكدفق في كس ساب عن حدث الموسف كالمطلب بيرفيش كد كنا وأبيل ياكوني مزائيس اكوني لا فرجب آيا مت تك كسي فقد في كتاب سام بيرمن البيل الحالية في

(ے ع) .. . بیانر مائے کہ ویٹاب پینے ، یاف ندکھانے اسود، فزیر ، مردود، فزولٹیر انڈکا کھانا کھانے پر کھنے کوڑے صدیب سطح حدیث سے نابت کریں ۔ اگر حد الابت ندکر سکو اور قیامت تک ندکر کوشکے تو اعلان کرد کہ ندان پر کمان ہے تدمزا۔

(۷۸) رسلی کا پرکھا ہے جوروزے یمل زنا کے ڈر سے جلق لگائے اور مٹی ڈکال دے تو نمید تواب ہے (بدایدی انس ۸۹۳) لعند الله علی الکا ذہبین، بدلیدے مثن کی اصلی عربی عبارت کلھوہ جس کا بیاتر زیر ہوا ورزیم اس است سے تیا میت تک کیے افل مکتاب

(۸۰)... این ندها و درختاری بی نظرت این الاست مناه حواج و دیده النعویو که مشت زنی حرام به این نام می و درختاری بی نظرت این الاست نام حرام و دیده النعویو که مشت زنی حرام به این خش به تغویر اگائی جائے گی مسب ختی ای به یعیا مواق به به فول و یا ادر حرام به بنا غیرب فرقه بیدا مواق به به فول و یا است زنی کرے کی تکال دینا (عالبًا عودت کے است زنی کرے کئی تکال دینا (عالبًا عودت کے لئے ہے) ضرودت کے دفت مہاری ہے ، خصوصا جب نظر بازی کا خوف ہو قد مستحب ب اور س کے بغیر کون سے دینا مکن نه دوتو مشت زنی واجب ہے دستار کرام بھی مغر و فیرہ اور سے دور مرے مودی تندا ہے کی طرح این تکی اور ایس بھی کوئی استحب و دواجب کے دور مرے مودی تنداری ص عدم این تکال اور سے در داجب کے حری شیمی مندان کی حری شیمی در داجب کے حری شیمی مندان کرائی تا کہ ستحب و در داجب کے حری شیمی مندان کی حری شیمی در داجب کے

ادہ کرنے پر ٹولپ مقانب یا محتاہ ہوتا ہے ہے ہے ہے ہے۔ اس کئے بہت سے معد، وہر ڈنی اسٹنٹ ڈنی کے شرقین متعیف چھوڑ کر فیر مقتد ہن جاتے ہیں۔

(۸۰) من المنهم المبرا إلى تعلق ب القريق اليور عدد وي منى وعزات أليس ال مند عنه القليت في منام مورد في المن مند المنس عنه القليت في منام ورد من كتاب منية المنس عن القليت في منام ورد المنس عن المنس عن القليت في المنام ورد المنام ورد والمنام ورد المنام والمنام وا

ی وہ قرافات ہیں جی کو قرقان وصدیت کی خدمت کا نام دیا جاتا ہے۔ ایک ای کو اسات کو خدمید الل صدیت کے زندہ بادر سنٹے کا حیب مجھ جاتا ہے۔ بنجائی شخ الحدیث اور سندگی جرامی بگار آفتے ہیں ہی جمودا زندہ بادہ ایک کہتا ہے: واو سنٹے محورے! خوب جموت بول کہ خدمیہ حملی میں مشت زنل سے دوزہ کا تو اب برجہ جات ہے۔ دومرا کہتا ہے کہ واوار یا خاتے والاسکاری کرتھ نے اسٹے جموٹوں ہی وہ اضاف کیا کے شیفان مجی داد دینے لغیر شارہ منگے۔ تیسرا کہتا ہے، والدینے بحودے! مسئلہ کی تشریق تو ایک گئری نہاں ہے کی کر معدے کی ساری نلاعت سندے دالا گل کر دکھوری۔ (Ar) ۔ ۔۔۔ ، آ ہے کہ اگر قر آ ان وحد بہت یاد بہتا تو آ ہے کو پیتا ہے۔ ابتد تقونی نے قربیہ: ایک انجمن بنا بھی تھی جو ایک موسلای کا تستو دوستی ایکر ت بھے۔ ابتد تقونی نے قربیہ: اندا محضدنا کے افلہ ستھو نہیں جس طرح و اسلام کو تقصان کہیں بہتی تھے نے نے ای طرح آ بن مجی کوئی محزوان شاہاند العزیز اعتمال کے کہ نہ دکار تھے گا۔

(۱۳) الاحتراز المن الك فرائة الي اليك مخرد النبرا ألا محرود النبرا المراكز الله كالله كالمن الله المسافر النبرا الله محلال المسافر المسافر الله المسافر المسافر

(۱۸۳)مین العلی کی جس عبارت کاششوخ نے آڈایا ہے اس بھی تہ یا خار کا لفظ شاخر مگاہ کا ، مجھے خدا کا خوف تو نہیں تھا ، کیا انسانوں کی بھی * - ایکل بھی کر نے۔ کوئی ابو چھے گا کہ بینیانداد رشر مگاہ کس لفظ کا ترجہ ہے تو کیا دکھاؤں گا۔

(٨٥)...... وإن لواستخياء كاستئر سي كماستنجاء كم في كم مقرح بيض منفرجا اي - مشوسًا بيس وجليه ويوخي مقعدة ما امكنة مبالغة في الشنظيات الا ان يكون - مسائمة علايشفرج ولا يتوخي مقعلة كيلاينفذ الحلة الى الداخل فنفسف صومه (مدیده انسل مع معیدی) جماستها در ولند تمن از بیشی تا اند مغال ایم خرن روب نه دیان روز و دار رو تا اتا کل از و تینت را بیان بوک بانی کی تر اربیده اندر گوز کر بات و روز و لوت جائے رو تیعتی الکاند بھی ماتحد می صغیری شربا ماید جی خالور تھا، تا بے گونند کیس آیا ۔

(۸۹۱) ۔ برآپ کے ہائی اول کلے حدیث اواک اور سے کے نموذ سے رور و کائن آو گا آج جمر خدر کائن کو این کے ریان میں کے کیا مسئلہ کے سبین

(عه) آخت من مَنْظَنَّهُ فَيْ قَبِلَا العا الالفطاد عما دحل وليس مساحوج (الوقعل) عفرت فيهات من مُهاكنّ المكرسة و في العصوم معا دحل وليس مسعب عسوج (فادق في الم 190) عفرت عباصران العصوم عما دحل وليس مسعب عسوج (فادق في الم 190) عفرت عباصران العصوم عما دحل ليس معا عوج وليس عما دعل والفطر في المصوم عما دحل ليس معا عوج (ميدارات) المحترب على المعتبدة في الاستنشاق الاان محون عوبالمستال الإو فادفر فرى وقال بالمعديث المائن على الاستنشاق الاان محون عبالاستنشاق الاان محون عبالاستنشاق الاان محون عبالاستنشاق الاان محون عبالاستنشاق الاان محون عبالاستال الإو فادفر فرى وقال بالمعديث المائن عبالا كيت محول وقال في مائن على المائن الم

(۸۸).... صفری برخراب جاست کا مشارتها ہے تا اس بھی مجی شیطان کی طرح شاہ مطلب نکالا ہے۔ مشلہ بہ ہے کہ جس عرح بائی یاک اور پاک کرنے والا ہے اس طرح تحوک بھی ہوت خودرت پاک کرنے الا ہے۔ چانچیان الجاشیدی ہے۔ کسسان بعد من امتهات المتوصین فنفوض الدم عن ثوبها بودفها۔ خود نظاری خریف ہیں ہے کہ معترت عاکث کے گیڑے کوچیش کے خون کا دعیہ لگا تو آنہول نے تحوک سے صاف کرنیا۔ معترت بھڑاد رمعترت من ہن گئ نے خون کوٹھوک سے صاف کیا (ہین ائی شید) معتوم ہوا کوٹھوک طاہراد رمعنی ہے اس سے نیاست صاف ہوجائی ہے۔ شید) معتوم ہوا کوٹھوک طاہراد رمعنی ہے اس سے نیاست صاف ہوجائی ہے۔

(۸۹) آب نے احتراض کس طرح کیا جیکر آپ کے غریب میں افخر (شراب) پاک ہے (کنتر افختا کُل من ۱ ارزل الابرارج المس ۲۰۵ عرف الجادی صفحہ او بدورالابلد صفحہ (۱۵) آپ نے خود بھی بان ایا ہے تو آپ کے باتھ پرخر (شراب) کئی بوقو باتھ بھی پاک ذبان سے جانمی تو زبان بھی پاک مند بھی پاک۔ آپ کوئی مدیث بیش کریں کہ پاک جزئو جانا متع ہے۔

(۹۰) ہمارے قد ہب میں فرچ کھ نجاست غلیظہ ہے، اس کئے اس کا ایک تھرہ کوئیں میں گر جائے تو سارا کنواں کا پاک ہوجا تا ہے، اس کا پانی بیٹا تو کہا اس سے نہاٹا اور کیڑے دھونا مجی جائز نمیں ہے۔ جب ایسے پانی کا بیٹا جائز قبیل جس میں ایک قطرہ شراب کا گرا ہوتو خاص شراب کا جائزا کہتے جائز ہوسکتا ہے۔

(۹۱) ہاں آپ کے ذریب جی حلال جانوروں کا پیشاب پاخاتہ بطور دوا استعمال کرنا جائز ہے (فرآوئی ستاریہ بڑا اس ۵۱ وج اگر س ۸۹ فراوئی شائیے ج اس ۱۵) اور ایک قول بٹن شن کھانا بھی جائز ہے (فقہ تھے ہے جائس ۴س) فذا بھی لڑتی دوا بھی۔ (۹۳) آپ نے اپنے جواب کو تھونے چیے ہے تشہیدوی، آپ کے 19 صفحات بھی صرف جک ایک بات بھی ہے، کیونک آپ ان ممائل بٹن سے کسی ایک کا جواب بھی کئی دست منتقب حال تک ان کا جواب آسان تھا۔ آپ بھارے شکر گزار ہوئے کہ ہمیں دست منتکر کڑار ہوئے کہ ہمیں دارے اگا پر ان ج بھی بھارے اگا پر کے مسائل سے آپ نے آ کا وکیا ہے، واقعی یہ بھارے اگا پر ان ج بھائل تھے۔ ہم بھی اب جو کے خطبات میں ان وا اعلان کریں کے خود بھی کمل کریں سے وادمروں کو بھی وقامت وہی ہے۔ میٹی جو بھادے ہم خربیب ہوں گے۔ یا ان کا بھائے ہیں، جب بھارے ان ا کا بر نے قرآن وجہ بہت کے نام پر برجم سے مسائل ہیات بھی بچا در ہم ہے بھی بچ جاؤ۔

یاای کا جواب برتھا کہ جارے آگا ہو آیا ہو کا میطان کہا کرتے تھے، تحرفوہ شیطان کہا کرتے تھے، تحرفوہ شیطان سے بھی برقر تیاں کیا کرتے تھے۔ برجو جان چھڑائے کے لئے کہا ہے کہ ہم ان کوئیس مائے ، پھڑان کی تعایت بھی سوزم فعات مغلظات بھی لکھی ہیں، برکھی سازفت ہے کہ ان کو مائے ہی ٹیوں کھی میں ان کا میں ہے کہ ان کو مائے ہی تھی ہیں تھی ہیں ہیں کہ ہیں کہ جواب لکھیں ، جس کا ہمیں کی جواب لکھیں ، جس کا ہمیں قامت کے انتظام رہے کا جس

(۴۳) آب نے لکھا ہے '' آج حتی دوستوں سے بنگ جاری ہے اور این شاہ القداس وفقت تک جاری رہے گی جب تک احماف اپنی لندکوچھوڑ کر کتاب وسنت پر نہیں آجاتے۔'' اس پر بھی ہے کہوں تھ

ایاز قد دخویش بشناس کیا بدی ادر کیا بدی کا شور بد برخوردار؛ ایمی تک قرفت حق کوتم است مدادی سے نیمی نکال سکے ، فقد حقی خود تمہارے عادی چی تجہارے میضے برحونک ول رہی ہے۔ ایمی تک قرق تم اسپ فرادوں سے فقد حقی کو خارج نیس کر منکے، افاوی فرانو یہ افاوی ثنائید، افاوی سروی، افزون عفاسیة حدیث علی فقد منگی کے عوالے موجود ایس راج کا مقبار سے بروں ہے تا ہو رکا ووقركرو كير

(۱۳). ﴿ أَبِ وَقِلْهُ بِهِ فَتَى كَامِعَىٰ كَامِعَىٰ مُعَنِيكِ أَنَّار الْمِبِ عَلَى أَن مَا مَلَ كَا يَاسِي چومنتی بہا میں اور ہر مجکے منی ان برقمل کر دہت ہیں۔ ان مسائل بر "ب تو کیا " ب کے ہیزوں ہے بھی کوئی معقول امتراض نہیں ہوا۔ بان جس طرح قر آن باک میں بعض شرۃ قر أتي الحياجل جن في كو قاري مجمي نبيل إنه عظه بالضعيف و شاذ احاديث جن ابن مركن ملاقبہ کےمسلمان ممل ٹبیس کرتے وای طریع فقہ کی بڑ کیا کنابوں میں بھٹو انسعف اور شہ اقوال میں جن بر کمی عالقہ عمل بھی احناف کاعمل کیں ، کیونکد و ومفعل باشن ہیں۔ جو آب توکیا آپ کی حکومت برطان ہے بھی پہلے بھی طاف کافلس کابت ٹیس ایسے خلاف نرهب شاذ الوال پر اعتراض ندهب مننی پر اعتراض نبیس به بیت اتوال برتم آن اعتراض کر رہے ہوان پر نہ استاف کا فتوی و نے کی علاقے میں ممل انگیزیتم ایل جہالت ے ان کو نہ ہے حق بھتے ہو۔

(90) ول نقطى اكرآب الم عيم العلامة والبيد عين أوس كالمريد والمباكد ور مختار، عالنگيري، مدية المسنى جن كتابول و قب بم سے فيترانا عائية بير بم وه كتابي کے کر بیٹنیس سے اور ترب وار ایک آیک مئلہ آ ب کوم ٹی جی لکھوائیں ہے۔ آ ب ہر برستلے کے خلاف آبک آبک آبت قرآ فی جومریج ہوڈی فرماتے جائیں یاآیک آبک حدیث میچ مرت و فیرمعارش ویش کرتے جا کیں اور قرآن احدیث کے علاو کی اُسی كرة ل كا يم محى شاليل - اس طرح كمل فلاحتى كواب چيك كردادي، بهم وعد وكرت جیں کہ بم فقد کی وجیدہ ویں سے انگیاں آپ ایدا کبھی تدکر تکس سے قائیر اس حم کی ان تراقوں، شیخیوں اور شوخیوں سے باز آؤر جب تک فقد سے جرستند سے قلاف مج حدیث ویش ند کراواس وقت تک چھٹی نیس سے کی واب ایک کتاب جینہ العبدال سے چھواور توالے کو کس۔

(۴۶) بير كتاب جديد المهدى القد تغانى كالهام سي تكمى كى ب الدالمام مهدى ك لي مديدي كتي ب (ج الرص)

(92)اے القد اس تمای کا ایف اور بحیل بی انبیا مینیم السلام اور صالحین اور الله ما الله ما اور صالحین اور الله مقربین کی ادوات سے میری حدد فرما ، خصوصاً امام حسن بن علی کی روح اور الله عبد القاور جیلانی (مقلد حنبی) اور مجد الله عال (حنبی) کی ادواح سے میری دوفر ما (جا المحمم) محتی مقدی کیا ب سید ایساک نسستعیس کی ادواح سے میری دوفر ما (جا المحمم) محتی مقدی کیا ب سید ایساک نسستعیس کی بوری الامیر -

(۹۸) یہ کتاب خدا کے البام ہے الل حدیث کے لئے تکمی گل ہے (جا/ ص ۱۳۱۳) اللہ مجترین کے اقوال کو اوٹ کا پاد اور گدموں کی جہوا برے کہتا ہے (جا/ ص ۱۰۱۳) مقلدین کو گدموں ہے تشبید و بتا ہے (ج الم ص ۱۰۵) مینی عالی اور متعسب خیر مقلدے۔

(۹۹) فير مقلدين كے ذريك اللہ تعانى ان مقات سے موصوف ہے: الاستھواء والسسمورية والمسسكو والمتحداع والكيد. ليخي ضماندا ق كرسة والا محرود مكارد فري، دھ كے باز (جية المبدئ خالى 4)

(١٥٠) فيرمقلدين ك نزديك خداجس شكل ير، جاب ظاهر بوسكا ب(١٥٠)م، ٩)

(۱۰۴). به خیر مقلد این کے فرد یک رام زندر ، چھمی اور کوئی آبی ہیں وال پر انجان الانا واجب سے فرق ارس چاری

۱ ۱۹۰۱)... - مسعمان انبي بينيم اسلام ڪنامور پرنام ڪئے جيں۔ پير مقلد بن کوچک البيط نام دام بيندود پيممن ۽ مرتن دڪنے جي مين ۔

(۱۰۳)...... ثاه د لی اللهٔ اوراین جربرطبرتی نے جو خدا کی مرکعت و انقال کا و کار کیا ہے۔ میران کی تعلق ہے (ج/امرہ)

(۱۰۵) ۔ با خدا تھائی مجمی حوادث کا شکار ہو شکتا ہے۔ اس کا اٹھار تو کی مروزی این فورک اور ففاسفہ کی خراف میں (عزائر میں ہو)

(عادا) ... فير مقلدي كنزويك عبدالعين مقدامل الديان بالمراق المراق المراق المراق المراق المراق المراق المراق ا سنة بالرمول الله والحل بالمرور كراره بالداره بالمراده بالمجوب، يا خوث بعي بمعاركة شرك البرتيس ب (جربة المبدى خ الرص 1) (١٥٨) .. . في مقد ين كرد يك جوانيا وروايا وصال فرما يك قل إلى الناسط مد

ما مُناا من مقيد و يه كريس الربن خدائ أكسا وجلاك اورسقمو نيا كودست السنة كاقبت

عطائی ہے ای افراق ان کوئل مراوینے کی قوت ہے، تترک تیس (ن اوس ۱۱ اے ا)

(109) غير مقلد ين كے نزو كيا والد شهدا والي قبور شرا زندو بين وال سنة

استدات اوراستفاظ به نزیت (خانه ۱۳۳)

و - 19 ﴾ . . . فيه مضد بن سَينز و بك غير الله كومطلق بيكارنا خواد زعمو و يامروه ميانز سے ا

يسياكن بين في مناور الله كالمركبال مديث بن مركد يدا عبداد المد اعسومي

ا هزت عمر ف الوالمستعدم الله الإلاالار عفرت الديس قر في في معرت عمر أن وقات التي بعد بالحرايا عمر يكارا (مدية الهيدي الالرسوم)

ر in) غیر مقلد بن ت بالی مهانی خواب صدیق اُسن خال و کانی شوکالی امرازن

الشَّمُ وَكَارَا كُرَتْ عَلَيْهِ

قبّل دیں عدی کعب ایمال عدی این قیم عدی قاضی شکات عدی

(بدية الهدى الأنس ٢٣)

أ (ar) عام اوك جويا رسول الله و إلى ويا فوث وكارت إن محل المث الله عنده

مشرک شبین ہوجات۔ کیونکہ خود رسون القدس فلکٹھ نے بدر کے ٹر ہے شب کافروں کو

فإرادرناي في فسور منظيك كريكرا (فالصهر)

(۱۱۳) غیرمقلدین کے نزدیک اُسر کوئی خص ٹی میں، ول کو اساعقیدے ہے

بھارے، کہ ان کو غدائے ایک قوت سال وی ہے کہ وہ ساری فیشن سے جہاں کو کی

يلاسبك فيك تيرة بافرنسكارا مها سدق ١٥٠٣)

﴿ ١١٣ ﴾ يُو مِقلد يَن كَ وَلا يَعِلَ إِن أَو يُومِن الْمِيرون كا عواف كرما شَر سأتين،

العلق <u>ك</u>رز ديك جاء بيداد راهف كرز وكيت سرف ترووي

(مرية المهدى تأال^ال ٢٩)

(1:4) فيرمقلدين كے زوكيل الام مؤلى كاللم كى قير يروما بين جلد تول بوتى

ہے۔ ادام شائق، دام بوضیعہ کی قبرے تیرک رمل کیا کرتے تھے۔ معزے لیا لی

فالمرا شهدات أحدكي قبرون رباكرة عاكيا كرني تحييل (بدية المبدى ت الرصوم)

(41) فيرمقعدين كے زو كي ملك فلف مب، تيك لوگوں كے نشانات ، كؤور،

عِنْمُون ہے تیک عاصل کرتے تھے (ج الرس ۳۲)

(Ale) قیم مقلوین کے فزو کے سید احمد تبیر کی گاہئے ، میٹن صدرالدین کا کیرا ، اوبیالا

شاه کامر عا اگر اللہ کا : م فے کرون کیا جائے تو طال ہے (جدیہ المهدی ع) اُرس ٢٩٠)

(١٨٨) قير مقلدين كيزويك كن ياول سي بون وَعَا كراب كرتم وَعَا كرا ك

خدا ميري قلال حاجبت بوري كروسه واكر حاجب بوري موكي الواليك بجرا صدق وول كا،

يرباك وتزير (بية المهدى نااس

(۱۱۹) غیر مقلدین کے نزویک علاء اور امراء کے سامنے زمین چومنا حرام نیمیں صرف کروہ ہے (یق /مس)م)

باقی ان شاماننه بشرط زندگی نیمرموش کرون گا۔

موضوع بحث منجانب الل السنة والجماعة (مئلة تقليد)



الحمد للموسلام على عناده الذين اضطفى الهايغدر

مسائل میتادید میں جو فود اینتیاد کرسکتی ہوا ہے جہتد کتے ہیں روس پر دہمتیاد کرنا و جب ہے۔ جو فض خود جیتیاد کی اہیت مند کھتا ہوائ پر تقلید واجب ہے وائ کا مقلد کتے ہیں۔ جو فخص مند خود اینتیاد کی اہیت رکھتا ہو، شاتھید کرے آس پر تعزیر واجب ہے وائ کو غیر مقلد کتے ہیں۔

۱۳۴۵ الدیش علیات ترجی شریقین سند مواسنهٔ و بویند سند چند موادات بو تیجها جن چی موارز نمبر ۱۹۸۹ به قدار

سوال سند تمام اصور افروع می جاد ایندون عمل سے کن ایک نام کا مقلد بن جا : درست ہے یافیمن؟ اور آفر درست ہے تو مستحب ہے یا واجب اور تم ممل امام سے مقلد ہو؟

جوامیہ اس زمانہ میں تبدید شروری ہے کہ جار اماموں میں ہے کس ایک کی تعلید کی جائے ، مکد الجب ہے کونک ہم نے تج یہ کیا ہے کد انٹر کی تعلید چھوڑ نے اور ا بین تقس و بواکی انباع کرنے کا انجام الحادہ زندہ کے گزیھے میں جا کرنا ہے۔ اللہ یزہ میں رکھے اور بایں ویہ ہم اور ہمارے مشرکخ تمام اصول و فراح میں امام اسلمین ابھنیڈا کے مقلد ہیں، خدا کرسے ای پر ہماری موت ہوادر ای زمرہ میں جمارا سٹر ہو (المهند علی فحف مین علی کہ طائے اہل المن ویج بند سٹوسلام) اس پر ۱۳ متنف شن علامال عالمت ویوبند اور یام متآخرین علی نے اہل المنت ویج بند سکہ و سخط ہیں۔ اس کے بعد اس جواب پر ملائے ترجیح شریفین علی نے اہل المنت میں علی بھی احدیقات تکھی تمکی اور سب نے علی و بند کوانل سفت قرار ویا۔

بعد ازاں جب حرجن شریعین جی موجودہ معودی حکومت قائم ہوئی تو اس حکومت نے بھی تھلید کے خلاف کوئی علم نافذ ندفر، یا بلکہ صفرت امام عبداللہ بن شیخ الاسلام محد بن عبدالوباب رحمداللہ نے مکہ ترمد میں اعلان فرمایا۔

بمارا مسلک:

ہم قردی مسائل علی امام احرین خبل کے طریقہ پر میں ، پینکہ اخد استداریہ (ایوسنیف مالک ، شائلی راحی بن طبیل) رحیم اللہ کا خریقہ سندید ہے ، اس لئے ہم ال کے کی مقلد پر اٹکارٹیش کرتے ۔ ان کے راجوالہ اور لوگوں مثل روائنی ، زید ہیا ، ارسیہ وفیرد کے خاص سندید میں اس کے ہم الن کو تسلیم نیس کرتے ۔ ہم لوگوں کو جود اگر سے میں اس کے ہم الن کو تسلیم نیس کرتے ۔ ہم لوگوں کو جود اگر سے میں کرتے ہم لوگوں کو جود کرتے ہیں کرتے ہیں اس کے ہم الن کو تسلیم نیس کرتے ۔ ہم لوگوں کو جود سالم کی تعلیم کرتے ہیں کہ دو کر جدر تحد وابد اسلام کی تعلیم کرتے (البدید السلام مؤلفہ عمامہ سلیمان بات معمال نیس کا فردو کر جدر تحد وابد اسلام کی تولیم کا ا

عیم پاک کہ کرمدش جب جا۔مصلے نتے تو بھی غیر مقلدین کا مصلیٰ و بال نہ تھا، اب ایک مسلیٰ ہے تو بھی منابلہ کا ہے رکہ غیر مقلدین کار غیر مقلدین سے شُنْ الکُل نی میرادائتی باردوم که علاه بر ب که عای پر جمیدالل الدند که مطلق تقلید واجب ب اورخینی میراز (می ۱۳) سولانا تحریسین بنالوی (۱۳۳۸ ه) نے اشاعة الدند جی، سولانا فی رابطه الرتسری (می ۱۳۹ ه) نے اخبار افل حدیث بین و مولانا محمد ابرائیم سیالکوئی (۱۹۵۹ ه) نے باریخ بالا و کا مولانا محمد الروز فرنوی (۱۹۳۸ ه) نے اواؤ و فرنوی (۱۹۳۸ ه) نے اواؤ و فرنوی (۱۹۳۸ ه) نے اواؤ و فرنوی (سالا ۱۹ ه) نے اواؤ و فرنوی (سالا ۱۹ ه) نے اور فرنوی (سالا ۱۹ ه) نے اور فرنوی (سالا ۱۹ ه) نے اور فرنوی (سالا تا تا میں اور اور اور نے پر القائی رہا ہے جس طرح بر نے اینا سفک اپنی مشتد کتاب سے حوالا سے تھید سفک اپنی مشتد کتاب سے حوالا سے تھید کے جارے بین فرن کے مدکم کر ساور مدید مورد و سودی مکومت کا مسلک اور فرود و ایک کے جن علاء نے ایک اور موجود و سعودی مکومت کا مسلک اور فرود و ایک کے جن علاء نے ایک و فرند کے آئیں ؟

نوٹ: آب کی جماعت کی مشتد کتاب سے حوالہ سے بغیر کوئی تحریر متعلق علم تعلید مطلق ، تعلید شخصی برگز معبول رر موں۔



مث**رائط مناظره** مابين ابل السنة والجماعة وغير مقلدين (مسئد تقليد)

بالمجالة والمحت

أتخمذ لله وشلام على جباده الذين اضطفى أشابقد

دلاكل:

:/[

(۲) جس خرج حشرين سند كوفرة إن نے يھى اہل قرة إن ثيث كيا، ابى طرح

متحرین اجارتی و آباس و فقت کو قرآن و صدیدے ہیں کمیں الل حدیث کیں کہا گیا۔ غیر متعلد ہن کئیں کہا گیا۔ غیر متعلد ہن کے زود یک چوک قرآن و حدیث سے حالاہ کوئی دئیل شرک ٹیکر میں لئے وہ الل صدیدے نام استعمال ٹیک کم ہیں گئے۔ کوئک قرآن و حدیث سے ٹاہت ٹیک۔ الل المدن ہنے کا مشود کھی نے تھم دیا: عدید کسے بسستی (الحدیث) حسن و غسب عس سستی فلیسی مدی (الحدیث) اس سے الل الدنہ واجماعہ نام ہم استعمال کریں گے۔ فلیسی مدی (الحدیث) اس سے الل الدنہ واجماعہ نام ہم استعمال کریں گے۔ والی الل الدنہ ہمی دیکن اس پاک کا نام الل قرآن ہمی گئے ہیں، الل حدیث ہمی دی والی آبی الل الدنہ ہمی دیکن اس پر سب کا اتفاق ہے کہ اس کھک جس قرآن پاک الل الدنہ ہی تا آبی الل الدنہ ہی تر آن پاک الل الدنہ ہی تا تو ایک الل الدنہ ہی تر آن ہی موجود ہیں لیکن والل تر آن ہو ایک الل الدنہ ہی تا تو ایک اور ہے جو آبی تر جد یا تشہر یا حاشہ قرآن ان تکریز کے دور سے پہلے کا نہیں۔ نیکر یہ جو قرآن بہاں پڑھا جا دیا ہے وہ قرک عاصم کوئی کی ترکید اس ور قاری منابع کوئی کی دوارے ہے۔

۵۱)..... ایم فیر مقلدین کی دو کتابش ان سے مقابلہ میں چش کریں سے جن کا فیر مقعہ ہوتا ان سے اقرار کاریخی شمادیت سے ڈابٹ کریں گے۔

(1)..... مناظرہ معرف تحقیق دفائل کا : مردوہ ہے، اس کے تحقیق دلائل ۔.. آئے نیس بر سے گا۔ الزامی جواب سناظرہ کا حصہ نتین ہوتا، اس لئے افراقی جو بات کی بجائے تحقیق جوابات می ہوں گے۔ اگر غیر مقعد مناظر تحقیقی جوابات ہے کریز کرے الزامی جوابات برآیا تو ہم اس کے مقالے میں الزاما ہر غیر مقلد کی کتاب پیش کریں کے خواہ وہ تحقید چھوڈ کر تیجری بنا ہم یا چکڑ الوق، کا دیائی بنا ہو یا لا غرب۔۔

(4). خلط محت خیس موجی زیر بحث مسائل اجتمادیدین مجتمدین کی تقلید ب جر کتاب دسنت برفکارنے والے بین دوس تھید سے بھائک کر کفار کی تقلید کی طرف جانا جو کتاب دسنت سے بٹانے والی ہے خلط محت بوگا اور یہود کی حرح تحریف وتلوس ہوگ جو محتسب کی علامت ہوگی۔

(A)وقت من ظرہ وہ محضنے ہوگا۔ پہلے تھنے ہی غیرمقلد مناظر سیائل اجتہادیہ میں مائل اجتہادیہ میں عالم مقالہ مناظر سیائل اجتہادیہ میں عالی کے بنے تقلید مطلق کا وجوب اورشخص کی ابادت کا بہت کرے گا ، پھر فیصلہ تعما جائے گا کہ کیا ہو اتھی قرآن اور اٹی حدیث کی کڑب ہے اس نے ابنا دعوی ٹابت کرویا۔ دوسرے کھنے میں اٹل المدن مناظر ٹابت کرے گا کہ مسائل اجتہادیہ میں عالی کے لئے جمہند کی تقلید مطلق داجب باخیر ہے ، پھر فیصلہ تکھنا جائے گا کہ اٹل دامنت مناظر نابت کو دیا بایس ہے ۔ پھر فیصلہ تکھنا جائے گا کہ اٹل دامنت مناظر نے این کرے گئے۔

غیرمقلدین سے دین سے تعلق دوسوایک (۲۰۱) سوالات

مِيشِ لفظ:

آن کل ہر باطل فرقہ کی طرف ہے الل فق ہر موالہ مند کی ہر اور رہتی ہے الل فق ہر موالہ مند کی ہر مار رہتی ہے اللہ فق اور خلا سوالہ من کی ہوئی اللہ مروری ہے ، اصول مناظرہ می ہو وضاحت ہے کہ سناظرہ می وو فریق ہوتے ہیں، حدی اور سائل مائل و این کو کہتے ہیں جو کی تا افزار سائل اور سائل کی صرف تھی می فقسیں اس کو کہتے ہیں جو حدی کے وقوی کا افکار کر رہا ہو۔ اور سائل کی صرف تھی می فقسیس ہیں۔ جانع، فائش ہور معارش۔ الفرض سائل کے سوانا مند طاف کا تعلق حدی کے دوی ک

مشالی: انبیا ملیم السلام و وی نبوت کرتے تھا ب مشرین کو سوال کا حق تھ مخران موالات کا جو دھوی نبوت سے متعلق ہوں میکن کفار آپ میکٹیٹے سے ایسے سوالات کرتے تھے جو دھوی جوت کی بچاہتے دعوی الوہیت سے متعلق تھے کر ہم برآ مان کرا دو۔ الفارے سائٹے ؟ امان ہر جو کر آماب لاؤ وقیرہ۔ پاسالات فاط تھے کیونکہ آپ کھیگا۔ سکے موق سے مطابق نہیں ہے۔

مثال: ﴿ وَلِيهِ فَحَضَ كَا وَمِ قِي هِ عِيدٍ بِي مِن صِوفَ قِيرًا أَن كُو مَا نَنا جُولِ سِنت كُوشِين ما فنا ترجم ان ہے موال اس طوع کریں ہے کہ کر قرآن ، ک ہے گھھے کا علال یا جمام ہوتا وكلاؤه مرف قرآن باك ستكس فمازكا غريقة وكعاف كالمادي بيموالات ورمين یں کیونکہ بدوں کے جوجی مضامطان میں میلی اگر کو کا منتحل بدوجوجی کرے کہ بھی قرآن اور حدیث کو مانیا ہوں تو اس ہے مہ موال کرنا کہ تعمل نیاز صرف قرآن ہے و کھاؤ مہ سال ناط ے کیوک اس کے دموق کے فلاف ہے۔ بال اس ہے مجمح سوال بول موما کر الله نماز كاير برمنك جوجهم يوجيس اوروه بالت تحمان يطمل ثلن بوات كاجواب مرف قرآن یا صدیت ہے دور اگر آپ نے کیا ایک جزئی کے بھی ابھائی یا قان شرق کا سارالیا اور آئی کے قبل ہے احتدال کیا تو آپ کا دفوق جمونا ہوجائے گا۔ اس ہے معلوم ہو کہ غیر مثلدین کے آکٹر بلکہ تمام سوالات خلط ہوتے ہیں کیونکہ ووثنتها مسائل یں ہوں موال کرتے ہیں کہ اس کا جواب قرآن یا حدیث سے دو حالا کہ جس نے امول نقد کی پہلی کتاب اصول الشاشی بھی بیٹھی ہو وہ جائنا ہے کہ اصول فقہ جار ہیں۔ (۱) كمّاب الله (۲) سنت رمول الله ﷺ (۳) إيماع امت (۴) آياس شرق برين ئے قتمی مسائل میں بدموال کرنا کرمرف قرآن یا مدیث ہے دکھاڈ ایبا می غلو ہے جیے ٹیر مقلدین کا بہموال کرنا کہ تمام مسائل صرف قرآن یا حدیث ہے دکھاؤ۔ اس ہے لاخیاب فیرمقلدین کا فرض ہے کہ سوال جادے دعویٰ کے موافق اس طرح کیا کری که اس نقبی سننه کا نبوت قرآن یاک یا سنت نبوبه یا اجهام است یا قیاس شرقی

ے ویں ورد وی کا موال علی تعظ موقف میلیسول کا ان اس کوے اگر آیس میں بائن ہے كرم ف قر أن كافي ہے تو موال كاحل منت ك باعث والے و عداد بيات أو آخضرت على نے واسے اس سے آپ کے بارے میں باحرتیب سوالات کرت جائیں اور ووسرف قرآن یاک سے ان کا جواب دے، اُرتھل نماز کے موالات کا جماب اس نے قرآن سے دے ویا تو دو سجا ہو گیا، شددے سکا تو اس کا دمجائی جموع ہو گیا۔ ای طرح ایک جنمی واوئ کرے کر تماز اور دین کے تمام بزنی ساک مروا تح أن اور حدید میں مرج غیرمعارض سے داہت ہیں، ہم اس وائ کے منکر میں کیونکہ بہت سے منائل مادے زو کے سراحة قرآن وصدیت سے ثابت نیل بلد اعال یا آیاس شرق ے ابت میں قو موال كرنے كا حق عارا موكا جم فرز كا اور دين كا ايك أيك مسكدان ے یو چینے جائیں کروہ برسندی فیوت حرف قرآن باک یا صدیت می حرج فیر معارض ہے وسینے جائمی، اگر ان سب سوالات کا جواب وواسینے دموی کے سوافی دے كا تو ال كا وموى يج موكا ورند معونا.

اس لئے ہم نے نماز کے بارہ بنی زیادہ تر موالات لکے ہیں جو اکثر روزات برنمازی کو چی آ کے جی۔ افل سنت والجماعت سے درخواست ہے کہ اگر ان کا کس مشکر صدیث سے بالا بڑے تو میک موالات اسفرح کریں کہ ان کا جواب صرف قرقین سے دو ان شا ، اللہ العزیز اس کا دھو گی جوجا جارت ہوگا اور وہ برگز ان سوالات کے جواب قرآن سے ندوے گا ادراگر آ ب کا واسط کی لا خریب فیرسقالہ سے پڑے تو اس سے ترتیب وار یہ موالات اس طرح ہو چیس کہ برسوال کا جواب ضرف قرآن کی آیت یا حدیث میچ صرح فیر معادش ہے و سے انشاہ اللہ العزیز آ ب ساتا بدہ کر لیں گ کہ وہ لاتھ بہب لا جواب اور جموع خاہت ہوگا اور انکی ساری بیٹی کو آمری ہو جا بیگی اور اس کا دنوی تھیں ۔ گھ بہت ایسان ماعل ہوگا جسے مشر مدیث کا دنوی عمل مائٹہ آس باطل ہے۔ استکہ قرآن یا سنت یا دجماع است یا آیاس شرق سے خاہت کریں ہم ان شا مائٹہ العزیز الن کی خدمت کے لئے حاضر ہیں۔ زیادہ تر سالات تماز کے بارے ہی ہیں باتی دوسرے موضوعات سے متعلق ہیں۔

محد الثن صفدرُ

سوال!: کیا قرآن باک بمی نماز پزهند کانتمل هرینته بالترحیب و بالتغییل موجود ہے؟

توٹ : بانتھیں سے مرادشرائلا ، ارکان ، واجبات اسٹن مؤکدہ ،ستجات ، میں مات ، کروبات اور مضدات ہیں۔ ان میں ہرائیک کی تعداد ، ہرائیک کی تعریف ، ہرائیک سکے عمدا اور میوانجوٹ جانے کا تھم مراحظ موجود ہوتا ہے ۔

سوال ۱ مرا: مسائل محج بندری شریف می نماز پزینند کا تعل طریقه بالنفسیل و بالزنیب مرجود ہے؟

۱۶۶۳ کیا تھیج مسلم شریف میں نماز پڑھنے کا تھل طریقہ بالشفصیل و بانتر نیب موجود ہے؟

وروري سنن نسائل عن نماز يزيضة كالحمل طريقة بالنصيل و بالزنيب .

موجود ہے؟

مراء مي باسع تردى عن المازيز عند كالممل خريقة والتعليل ووالزنيب

بوجود ہے؟

۱۹۰۶- كياستن افي داؤه جن فراز يز حضاكا كمل طبريق بالتنصيل و بالترتيب ۱۹۰۶ سيد؟

۱۸۳ ـ کیا سنن ایمن ماجد پیش تماز بز هن کانگمل طریق بالتنصیل و بافز تیب موجود ہے؟

توت: جب محال مندی سے کی ایک کاب یں ہمی آباد کے عمل مسائل بالنفیس و بالترتیب موجود ہمی ہیں تو یہ چے محدثین آباد کس طرح پڑھا کرتے تھے؟

سوال ؟: سیستیا تمن مسلمہ نحدث نے کوئی نماز کی ایک جائع تآب مرتبہ فرمانی ہے جس بھی فرز کا حریقہ کمل بالنفسیں و بالز تیب ہو، اس جی ہر ہر سئلہ مج مرتح غیر معادض احادیث ہے چیش فرمایا ہو۔ اور اس کتاب کی صحت پر کوئی آیت یا حدیث مرتح دئیل ہو؟

سوال ٢٠٠ : ٢٠٠ كيا آخضرت علي نام كري در محروني كوئي دي كالب مرب كروائي جس شي فرز كا تعمل طريقه بالنعييل وبالترتيب دري مواور ووكماب آج عك ومت بي متدادل مود

سوائل 2: سسم کیا ملفاہ راشدیں پیلا ہیں ہے کی طیفہ داشہ نے اپنی زیر جمران کوؤ ، نمازکی اٹسی جاس کماب مرتب کروائی جس کوآئ تنک است میں کلتی بالقول کا شرف مامنل ہو؟

سوال ۲: ان امت عماسب سے پہلے کس نے مازکو بالشعبل و بالزتیب مرتب کروایا بمن کی مرتب نماز آج تک امت جی متداوں ہے؟ توث: آخضرت تنظی نے فر ماہ ہے کہ قیاست کوفرائش کا حساب ہوگا؟ دوران میں اگر کی ہوئی تو نوافل میں ہوری کی جائے کی معرمت مریقی نے اپنے قطیہ میں قرائش اور منتوں کا بیان افرایا ہے؟

المَارُ بِرَاحِهُ مِن مُرَاعًا اللهِ ال المُنِيّةِ إلى المُدارِعِدِ فَي فقد و يَقِيعُ من بِيهِ جِلاَ مِن كَرَامِنَ كَا اجَارَا مِن كَرَامُولُ فِي اللّ المُحَوِيرُ لِنَا جِل -

سوال ۸: آپ ہے بیان قرادی کرفاز کے ارکان کون کون سے ہیں۔ دکن کی تعریف کراہے۔

سوال العمل: ﴿ آبِ كَ نزديك نماز بمن كنّ كام منتجب بين اور منتجب كي تعريف بحي بيان بور قرآن وصح عمرة فيرمعارض عديث ہے

الوہ: آپ کے زویک نماز علی کتنے کاسرباح بیں اور مہان کی تعریف بھی ویان فرما کمی؟ قرآن وسم حری قیرسوارش صاحت ہے

سوال ١١١٠ _ آپ ك زديك كتى جرول عار كرده دولى بادر كرده ك

تعریف مجی بیان کریں؟ قرآن و سطح مرت غیرمعادش صدیت ہے۔

۱۱۲۲ ۔ آ ب کے مال نماز میں کتنی یا تیں نماز کو فاسد کرتی ہیں۔ ماطل اور

فاسد کی تعریف مجی بران فرہ کیں؟ قرآن ماستج میں تخیرمعایش صریت ہے۔

موال ۱۳ ایرا: 💎 کمبید کے بال فجر کی نماز کی تنفی رکھتیں ہیں۔ سنت اور فرض کا لفظ

سراحة حديث تيل بوج

١٨٥٣ آپ ڪ بال نماز ظهر کي تمتني رکعات جي منت فرش يانفل کا لفظ مسراحة مديث ثيريوج

٣/٣- آپ کے بال نماز عصر کی کتنی رکھات جیں سنت اور فرخ کی صراحت عديث کي او؟

15/9ء آپ کے ہاں ترز مفرب کی کھٹی رکھائت جیں۔فرض و منت کی تنصیل مراحة مدرث بجريوج

۵/۹۳ آپ کے بال نماز عشا ، کی کئی رکعات بیل فرض ، سنت ، نفل کی الفعيل مراحة عديث مين أوج

سوال ۱۲: تب ك بال يوجينون محدثين اورديكر مسلمان تمازكي شرائلا،

ارکان دواجبات رسنن اکر د بات، مفیدات نئے ٹائل ہیں د ومسلمان ہیں یا کافر؟

سوال ۱۵: مستمبرتم برفرض ہے یا داجب یاسنت یاستھے؟ تھم صراحة آیت یا

عديث على بذكوريور

سوال ۱۲: آپ کے بال تحمیر تحریمہ امام کے لئے بلندآ واز سے کہنا سنت سے اور مقتری کے لئے آہتہ آوازے۔ بیعدیث میں دکھائیں۔ و کیلے نمازی کے لئے محبر تحریر بلد آواز سے سنت ہے یا آبت حوال ڪا: آوازے ۔ قرآن باعدیث ہے دکھا کم ۔

سوال ۱۸: ۔ تھبیر تحریمہ کے ساتھ رفع یدین فرض ہے یا سنت مؤکدہ۔ قرآن ما مدیث ہے دکھ**ا** کم ۔

تحبيرتم يمدي مانحه كررفع يدي ندكر بانو فاز باطل بوكي ي سوال 19: ا کروه؟ قرآن یاحد بیشه سننده کها نمی به

النبيرتم يمه ك بعد ميزير باته بالمعنافرض ب ياست مؤكده؟ موال۴۰:

جودگ ناف کے نیچے ہاتھ باندھتے ہیں ان کی نماز باطل ہے سوال ۲۱: 50,56

سوال ۲۲: التحديدُ تدهين كر بعد ثناه يرحمن آب كر إل فرض بيء واجب باستت؟ مرح مديث لائس.

سوال۳۳: (ادم کے لئے) اُناہ باند آواز سے ماسنت ہے یا آہند آواز ے بڑھا سات ہے۔

💎 کمیائمی حدیث باک بھ آ تا ہے کہ آنخفرت میک ہے گئی سوال ۱۳۳: مقتول نے دعائے اعتفار بلند آواز سے بڑی ہ آپ نے اس فوٹی فہری سائی کہ وره فرشية تيرق وعا كول عارب مع رسي تعيد خر غير مقلد مفتدى اس حديث رجمل كيون خیس کرے اور ٹناہ ہلند آواز ہے کیوں ٹیس پر ہے؟

سوال ۲۵: 💎 کړ کمي همچ مرخ فيرمعادش حديث بيل مثلة يورا کوريتم موجود

ہے کہ دو نا و آبستہ پر میں؟

کیائمی صریت عمل آتا ہے کدمحالی نے آنخضرت ﷺ کو ثناء حوال ۲۲:

ح مصفح منا جس من المام كالإمنغ وكالبلند آواز من نَّاه مِن حنا كابت وو؟

سوال ١٢٤ 💎 الخضرت ع 🗗 عناه كهاره ميغ الدين بين ميرب عالي یاد کرنی مشروری جن یا یک آوجہ یاد کرلینہ کافی ہے، آخفرت ﷺ نے اس بارہ میں کیا فرمايا ہے؟

سوال ۲۸: ان دعاؤل کس سند سبحامات اللهم کے باعث کا تو آپ نے القيم ويؤ كيامي أوروعا كالجمي تقم ويا ب

موال ٢٩: - آب مَلَكُ الدآب مَلَكُ كَفْد ردا تُدين نے باللہ

انسلیب کے سواکسی اور دینا پر مواظبت فر مائی ہوتو ایس کی سی صریح فیر معارض حدیث عالم فريا تعرية

سوال۴۳: المركوني هخص ثناء تدييز حصرتواس كي نهاز باطن بيوكي و مكروه؟ قرآن بالعديث ميح مرز فيرمعان وثِل فرا كمير.

اكركوفي فخص تنامى فيكربهول كرالتيات يزهد الحرقر فمازده باره موال اس: يزهے إنجدو بهوكرے؟ قرآن ياصديث وهما كي۔

کیاکی میج مرزع فیرحارش حدیث میں بیمراحت رہے کہ سوال ۱۳۳:

ٱلمُحْفِرِت عَلَيْقٌ ثَنَاء كَيْنِصِولَ بِعِد اعود باللهُ من الشيطن المرجمة بيُريخ عَجَّهُ؟

مرتعود بإحنازض برواجب الاجت باست جمم تركي عديث سردها سوال ۲۳:

يتعوز أتخضرت وللطنة في محاليكونماز بي ببلي سكوريا سحاب ويا سوال ۱۳۳۳:

نے تماد عمل آپ ملک کو بڑھتے ساتو نماز عل تعود کا بلعد آواز سے بڑھن سنت ہے یا

آجته أواز سے احری حدیث لاکی ؟

سوال ۳۵: کمپا دومری، تیری ادر چوشی رکعت بیس مورة فاتحہ سے پہلے تعوذ منابعہ میں میں م

الشيف الرجيه كيا ثابت موثا ع؟

سوال ۱۳۷۱: ﴿ ﴿ وَمِنْهُمَا عَدِيثَ عَنْ أَيْ سِنِهِ كَامِعَوْتَ مَيْدِ اللهُ بَنْ زَيْرِ عَلِيدٍ لَيْ جماعت كرائي اور هودُ ينز آواز سن مِنْ على معترت فيد اللهُ بن زَيْرِ مِنْهِداور آب سكة

مشقد بول كى يالماز مح بولى يا كروه الصدية صريح سي علم بناكين-

سوال ١٣٤ 💎 بعض فيرمقد بن كوجها عد كرات ويكما كيانان كالمام قوبهم الله

الرحن الريم بلند آواز ي بوحق ب الدستندى آب وآواز ي كيامى مرح حديث

یں بے فرق موجود ہے کہ امام کے لئے تشمید ہندآ واز ہے انت ہے ادر مقتری کے لئے ۔ -----

آ ہند؟ وازے منت ہے؟

سوال ۱۳۸۸ - آخفرت ﷺ اور آپ کے علقا درا شدین عظائہ نے جراتمیہ پر مواللہت فرمانی باسرشید برا

سوال ۱۳۹۱ - کیاکی مدیت بش ہے کہ ہماللہ بانچر برعث ہے اور مخاب منافیہ

کو بدعت سے بہت بغض تھا کیافتل دسول پٹھٹے کو بدعت کینے واسلے ،ورفعل دسول

عَلَيْكُ سِيقِينَ ركت والمصحاب عِينَ كاش الايمان تعد؟

ِ سوالی پیم: کیا حضرت میدانفدین زیر میبیدنے میم انفد بالحجر کو جگلیوں کا ۴۰۰ - فغل قرار دیا ؟

مقلد مورت فاتح المشركر آن يا قرأت بوئے سے انفار كرے وہ مسمعان ہے يا كافر، $S_{i}^{*}=\{0,1,\dots,n\}$

سب حدود سے آیا م راوع جو وی فرمنیت تابت ہے کیا کسی آیت میں صراحة نماز میں موریت ناتھ کے فرض ہوئے کا تبویت ہے؟

سوال ۱۷۲ - کیا قرآن یک بس کوئی ایک صریح میت موجود ہے کدامام کے جیے میرت فاتی بڑھنا فرض ہے جو نہ بڑھے اس کی ٹروٹیس بول اور باقی + اسورتیں المام کے چیچے یز هنامنع اور حرام ہیں؟

سوال مامع: 💎 کیا بخاری اور مسلم میں کو کی ایک ہی صریح حدیث و جوہ ہے کہ ا الم كن ويجه فاتح يزهمنا فرض ب اور باقي قرشن مع اورخوام ب وفاتحان يزيعة والسا متندی کی نماز باطلبادرے کارے؟

موال ۱۳۵۵ — آیت و ادافری لفران کی *گرنگ* مدینه و اذا نیرا مسانصنوا ے ہوتی ہے بائیں؟ کیا کی صدیت میں یہ ہے کہ آ بہت و اذا سری العبر ان آباذ کے بارے علی نازل ہوئی؟

ا کیا مکن محدث نے یہ وقوق کیا ہے کہ اس پر جماع ہے کہ و اور سوال ۲۳۶: فری انفران نماز کے بارے بھی نازل ہوئی ہے؟

سوال کیما: کیاکم معجم مرتخ مدیث می آیاے کرآیت و ادا غیری طفر آل کوفروں کے لئے نازل ہوئی ہے،مسمان ٹمل نہ کریں؟

قرائت آہت کرہ ہے ان علی امام کے فیصے مورت فاتحہ ج من مرص اور باتی فرآن مقتدی کو برحنا حرام ہے؟

سوال ۱۹ سم: سیم کیا کئی سیح مرج صدیث میں آیا ہے کہ آتھنرت مکھٹھ نے اپنی زندگی کی آخری نمازیں جوحشرت ابو کرصد اپنی طرفان کے پیچھے وافر یا کی ان میں آپ مکھٹھ نے معرت ابو کر چڑھانے کے بیچے سورت فاتھ پاچی تھی۔

سوال ۵۰: سند کی جرفض آخفرت کافٹ کے جیجے رکون ش شرایک ۱۹ جس نے اس رکعت بھی نہ خودسورت فاتی ہزگی شاہ م کی کی الیا آخفرت میں فیڈ سفاس کو دورکعت دہرائے کا تھم دیا؟

سوال ۱۵: سیان مدیده می مدیده کی مرزع فبرسمارش ایک وژن فرد کی کدا کیلے نمازی کے نے آئین میسند آواز ہے کہذا منتصری کدہ ہے۔

سوال ۵۴ : ایک بی صدیده محیم مرتع فیرمد دش ایک بیش فرد کی که مقتدی کو ایام کے میچھے چھ رکھتوں میں بند آواز ہے آ بین کہنا سنت سؤ کدہ ہے اور تمیارہ رکھتوں میں آ بستدة واز ہے کہنا سنت مؤ کدہ ہے۔ سوال ۵۶: ایک حدیث می مرت فیرسوارش این ویش فرائی کی که بخضرت انتخافی نے اسپنے مقتریوں کو چورکھٹوں میں بند آواز سے اور کیارہ رکستوں میں آستہ آوازے آئین کینے کاعلم دیا ہو۔

سوال سے: ﴿ اِیک فی حدیث محج مراح نیر معادض ایک فیش کریں کر آخضرت میکٹی نے فرایا ہو کرامام کے لئے بھیٹ چیورکھٹوں میں بلند آواز سے اور کیارہ وکھٹوں میں آ ہستہ آواز سے آئین کہنا ہتھ ہے.۔

سوال ۵۸: ایک بی میچ مرتع غیر معارض صدیت ایک چیش فرما کیں کہ کئی طلبقہ داشد سے امام بن کر آیک ای دن چی رکعش جی بلند آواز سے محیارہ رکعشوں جی آ ہند آواز سے آئین کی ہو۔

 اور ایک وفعدا نی فاتحہ کے بعد آ ہند کواز ہے۔

موال ۲۰: 💎 ایک مرزع مدین د کی که زم کے ملام کے بعد متنفی جو ركفتين يزهان عن آمن آمندست سار

موال ۲۱٪ 💎 آپ کے (لانہ ہوں کے)مشہور مناظر مستری ٹورمسین گھرجا تکی (محوجرانوال) اینے رمال آخل بانجرص ۸ م لکیتے ہیں معتریت عبداللہ بن مرہیش ہیٹ آئین بالیمر کھا کوتے تھے اور لوگوں کو بھی بھی کہا کرتے تھے کہ آئین بلند آواز سے کہا کرو (بخاری من ۱۰۸ ج اور) - مذا تک رسفید حجوت ہے بخاری کی اس روایت میں جبر کا کوئی لفظانمیں (آپ ثبوت میں کریں)

موال ۱۹۴۴ 💎 بیمی مونوی صاحب م ۲۰۱۴ در معزت این عیامی، معزت ائس، حضرت عائشہ اور حضرت معاذیبن جبل بہنی اللہ تعالی منبم ہمجین ہے احادیث نقل ا كرستة جي جن كا فارمد يا ب كديمودي مسلمانون بي آمين بانجر وسدانك المحمد اور ملام بر صد کرتے ہیں داار تک ان میں ہے نہ آ کوئی حدیث مجھے ہے اور نہ ہی ان میں ہے کی بھی آئین کے سرتھ جم کا فقط موجود ہے میداللہ کے ٹی اور محاب مان برجموث ہے. (موجود و غیرمقلدین ثبوت ڈیٹر کریں)

سوال ۲۴: ا نماز مغرب، نماز عشاہ، نماز خیر کے وقت میودی بازار میں نہیں بوتے ظیر عصری وہ بازار میں ہوتے ہیں تحران دونوں نمازوں میں غیر مقلد ہمین باند آواز ہے تھیں کہتے کر یہودی ڈر مش تاہو جا کیں۔

سوال ۲۴: 💎 نا ندہب مورتی گھروں میں بلند آواز ہے آ بین فیس کہیں آخروہ يبود كوكيون ناراض كرناتيين عاجنين_ مون ١٥٥. عادة عبد الله رو پائ مشهور غير مقلد مناظر افي كتاب" الل عديث ك الميازي مسائل من ١٥٠ مير لكون بين .

ابو ہر برور فقائد سے روایت سے کہ رسول اللہ فلکتے جب غیسر انسسہ عنوب عسلہ السند عنوب عسلہ برائے ہیں گئے جہاں تک کہ مجھی مف جی جو آپ کے خود کی استہ برائے ہوئے ہیں ہوئے ہیں جو آپ کے خود کی جو تے من برائے دوایت کیا اس کوابو داؤ و نے اور این علیہ نے مجد شری جر جد ہو جا تا۔
کہا کہ میکن صف من لیتی بیال تک بہت آ واز وال کے ملئے ہے مجد شری جر جد ہو جا تا۔
کیل الا وطار میں ہے اس حدیث کو دارتطن نے بھی دوایت کیا ہے اور کہا ہے کہ اس کی استہ کی ہے اس موریث کو دارتطن کیا ہے اور کہا ہے کہ اس کی استہ کہ استہ کہ جا در ایس کو من کہا ہے کہ والہ جس کے در برائی ہے اور ایس کو من کہا ہے جہوں گال اور حافظ میداللہ دو برائی نے اس دوایت کیا ہے اور اس کو من کہا ہے جس اور تین جو د جو الے جی ۔
نے اس روایت کے تی روایت کیا ہے اور اس کو من کہا ہے جس اور تین جو د جو لے جی ۔

ا۔ این باید عمل اس مدیت عمل بیالفاظ جی فصر ک الساس انتظین جمل ہے۔ معلوم ہو: قا کر محالیہ حافظہ کا بعین کا اہتماع فق کردہ آئمن بالچرفیس کہتے ہے بیافقرہ حدیث کا فقر مشکل کیا۔

۱۔ پہنیں بتایا کے س کی سند کا راوی اٹیر بن رافع نمایت ضعیف ہے۔ سر پینیں بتایا کہ اس کی سند کا ایک راوی جمبول ومستور ہے۔ پرتین وہ کے نتے اور تین جموٹ یہ جیں۔

) وارتعلق میں سرے سے بیا ہر بطے والی حدیث ای تیمیں چہ جائیکہ اس کی اس اور ان کردوں

(٤) مقدرک حاکم جن سرے ہے بیاحہ بیٹ بن کیس چہ جانکہ اے بخار کراد

مسلم کی شرمایر سیج کیا ہو۔

(٣) يمكن شرب بي يدهديث في فيل جديها نيكه الم حسن سيح كهابور

سوال ۲۲: پاک دہند جن باروسوسال سے اسلام آیا ہوا ہے بیبال کے سب

بادشاد قاضی ہفتی ،محدث منسر، علاء محام آ ہستہ آواز ہے آبن کہتے تھے کیا ان یار : مو مال کے سنمانوں کی نمازس ماطل میں مانکروہ۔

سوال ۲۷: منیرمقندوں کے مثہور مؤرخ امام خال نوشیری تکھتے ہیں۔

" مولا: شاہ فاخرال آبادی نے مہلی دفعہ جائے سجد دلی میں آئین بالجر كہة كر

تقلید کی یکارت زاک کی" (نقوش ایوالوفاص ۳۳) اس ہے معلوم ہوا کہ پہلی دفعہ آجن ا الحج انگریز کے دور میں ہوئی۔

سوؤل ۲۸٪ 💎 انگریز کے وور شن دومری بار آئن بانچر حافظ محمد یوسف پنشتر

(انگریز ملازم) نے کمی (نقوش ابراء فاص ۴۱) ۔ یہ آئین ۱۸۹۰، ش کُی گُل کھر یہ

حافظة عمد يوسف مرزائي بوكرم إر (اشاعت النام) ١٠١٣)

سوال ۱۹: مئله آجن رجینی بازی کی ابتداء مولای محتصین بنانوی نے کی اور

ہے بردگ مرز افلام احد قاد بانی کی بہت الداد کیا کرتے تھے اور ان سے دعا کرایا کرتے

<u>تھے (اخبارال مدید امرتبرص کالم ایا جنوی ۱۹۰۸)</u>

سوال• کے: 💎 مجرای سنلہ ہر ملک بحریبی فتیہ مولوی ٹناہ اللہ نے اٹھایا جس 🕯

غرب بدتھا کہ:'' بیرا غرب اور ممل ہے کہ برکلہ کوئے چھے نماز جائز ہے جاہے و

شيعه بو يامرزاني" (اخبارافي صيرت مي ١٣٠٦ ايريل ١٤١٥)

سوال اے: چراس سکلہ پر مافق عبد اللہ روبزی نے زور درا جن کے باروش میں میان

شرف الدين صاحب قرمات بين كدوو لاعلم، وسد و خود فرش ، كافركر ، صراء متعقم سے مغرف فعا (فغاوي څا زيم ااو بواو ج امغضا)

سوال ۲۷: مرام عمر یا معرش مورد فاتحاد رسورت بلندا کوازے پڑھ لے تواس کی نماز فاسد ہوگی یا کمروہ می**ج** صریح فیرسدارض حدیث چ*یش کری*ں۔

سوال ۲۲ : ﴿ أَكُرُ فِي مَرْبِ، عَنَّاهُ عِنْ المِ آسِنَدُ بِرُو لِي فَوْ زَارُ بِاقِلْ إِ محرودا مصرعت لائميل ر

سوال ٢٤٠ - اگريول كريبل نسل هذه الله بعد ش مدرت فاتى يزيد ل توميره سهودا دب بوكايانيل . محج مرتع غيرمدارش حديث وثي كري .

سوال ٢٥٠ - مورت فاتحر كے بعد سورت لانا فرض ہے يا واجب يا سنت ياتقل، تحكم صريح عديث ثير، ور_

سوال ٢٠٤ - قرات كى كياتمريف ب،اورجرادرسركى كياتمريف ب،مديث منجے مریح غیر معارض ہے بتا تیں۔

سوال 22: ﴿ فِرَى سَوْنَ مِن قَرَاتَ لِلْدَاوَادُ عَصَلَتَ هِ } آبت آوادُ ے احدیث مرتبح ہو۔

سوال ۷۸٪ 💎 لجر بح فرائض اگر اکیلا پزیجیاتو قر اُپ بیند آواز سے سنت ہے یا آب ندآ وازے ۔ میچ مرتع لیرمعادش مدیث ویں کریں۔

سوال 4 کے: 💎 (الف) آخضرت ﷺ ہے بعض ادقات ہیں بعض خاص سو رتمی بڑھنا کابت ہے۔ (ب) وہ سورتمی ان تمازوں میں پڑھنا سنت ہے یائیں اور

آگر ان کے علاوہ کوئی اور مورت میز ہاتی تو یہ لماز خلاف سات ہوگی یانبیں، جواب مجھ

صررك مديث سيعنايت قرماكيل

سوال • ۸: منازیں امام پرتین مکانت ایک فاقدے پینے آیک فاقدے کے بعد ایک سورت کے بعد واجب بین یانمیں۔ جو امام مکانت ندکرے اس کے جیجے نماز

خلاف سنت ہے اِنہیں ۔ مرج میج غیر سعارش دریت بیش کریں۔

سوال ۱۸۲ : جھنٹی بیدنے یوین شکرے اس کی نماز ہوج تی ہے یافیس اعرج حدیث ہے تھم بیان کریں۔

سوال ۱۸۳۰ منیر مقدین کمتے میں کدرخ یدین کیا چار سواحاد دی و آنا رہیں ، ان چار سوسی بدکے نام بتائے جا کمی۔

سوال ۱۸۴۰ - جو غیر مقلدین کئے ہیں کہ عشرہ میشرہ سے روایت ہے کہ سخفرے میکھ آخر عمر نک بیار فع بدین کرتے رہے ،عشرہ بیشرہ کی بیار دایت میچ سند سے بنو نیش دوایت چیش فر باکمیں۔

سوال ۱۸۵ - ایک محمح حرج غیر معارض حدیث چین قربا کی که ادام کے کے رکوع کی تجبیر بلند آواز سے سنت ہے اور مقتدی دور منفرد کے لیے آبہتر آواز سے سنت ہے۔

سوال ۸۲: - آیک مدیده سمج مرزع غیر سعارض بیش فرمائی که دکرش ک تسیعات آباد، با مناسفت ہے۔

سوال ۱۸۷ تخضرت علی سے دکور میں سات افزار مروی میں ان میں

ے موانلیت تمن مرفرمائی۔ حدیث لائمیں۔

حوال ۸۸: اکیا آعت نسب با سم ریک العظیم کےنازل ہوئے کے بعد

آ ب مَلِيْنَةُ لَے سبحان وہی الا علی کے عادہ و کم بِرُحاد

ِ مُركِي فَحْضَ بِحِولَ كُرِيكُ عَ بِينَ سِيحَانَ دِينَ الأعَلَى بِيَّ **= لِي**َةً سوال ۸۹:

مجده مهورزم بوكا يانبيل والمدرث مائمي

سوال • 9: اگر کوئی محض رکوع کی تنبیج بلند "واز سے برے لے تو اس کی فراز

باطل بهوگی با نکروه په احدیث لا نمن په

ركول سے كمرت بوكر قور بن باتھ بائد صاحت بي باتھ سوال ۱۹: لاکا نا؟ منجی مرزع مدیث ویش فرما کیں۔

سوال اهُ: ﴿ اللَّهِ عَدِيثِ مَعِي مِرتَعَ قِيرِ معارض فِي فرما مِن كرمنز و اورمقذى

کے لئے قور کا ذکر آ ہتہ پڑھنا سنت ہے۔

آگر کوئی مقتدی قومہ کا ذکر ہائد آواز ہے بڑھے تو اس کی نماز سلت سوال ۱۹۶:

ے موافق ہوگی یا فلاف سنت ۔ سمج حرج فیرسعادش حدیث لاکیں ۔

سوال ۱۹۴: الركوني فحض ركوع يا قوسر جي تجويد يزهي توان كي نماز باهل

ہوگی یا تھرہ وہ مرزع حدیث بیش فر یا کیں۔

سوال 90: وتريش وعاكى طرح باتحداثها كرتوت ياعنا اورمنديه وتعديجيركر

بحدہ کی جاناتمی مدیث کی ہے۔

سوال ۹۲: ایک میچ مرزع فیرمعارض مدیث بیش کویں کہ بجدہ کی مجیر امام

كے لئے جرا اور مفترى اور مغرد كے لئے آستد منت بـ

سوال ١٩٤ - ايك محج مرزع غير معارض مديث وثي فرما كن كرمجده على جائة

اور مجدہ ہے سر انٹونٹے وقت رفع پرین کرنامنع اور خرام ہے۔

البَيْسَ فِي صريحٌ غير معارض عديث وَثِن قرء نمن كه محده أن تهيجات حوال ۹۸:

آ ہے۔ برھنا سنت مؤکدہ ہے۔

سوال99: ا أَمَا عِدِينَ لا مُعِمَا كَا أَمْرَ عِدُو كَا يَعِينَاتِ بِلْنِدِ أَوَازَ بِيَ

يزهي جا ئين تو نماز بإخل ہوگي بائفروہ۔

سوال ۱۹۰۹: ووٹول مجدوں کے درمیان جو دعا پڑھتے ہیں ایک حدیث مجھے

مرج فيرسوارض سے دكھائي كرائل دماكا آبات پر مناحت ہے۔

سوال اما: 💎 ایک مدیدہ تھے صریح فیر معارض ویش فرمائیں کہ بیادیا فرض ہے ياسنت ياواجب يأنل به

أيك حديث يحيح سريح فيرسعارض ويني فريائي أمركوني مخص مروعا سوال ۱۰۶: حان ہو جو کرنہ پڑھے تو اس کی ٹماز باطل ہوگی یا کمرہ و۔

آلِك مديث يحيح حررًا غير معارض اليي يثيّ فرما كي كدا أركوني سوال**۱۰۴**: هخض بمول كرندية معياتو مجدومهووا جب بوكا يانيمار

سوال ۱۰۴: کیا کسی حدیث میں ہے کہ دونوں مجدول کے درمیان انگل ہے

اشارو کرنا محمل ہے۔ مند حمد کی جس حدیث میں اشارہ کا ذکر ہے اس کے مواتی آپ ا کہ کو منت مو کنوہ مجھ کرنگس کیوں نیس کرتے۔

کیا کی گئے جدیث علی ہے کرجلسا اسٹرا ادمت سنت موکد و ہے۔ سوال۵۰۱:

سوال ۱۰۱: کیاکس محکی صریح غیرسعادش حدیث بی ہے کہ جلسۂ اسراحت

کی مدیث میں ہے۔

سوال ۱۰۰۷ مامنعی تابعی فراحے میں که معنرے عرادر معرت مل رض اللہ تعالی عنما جلسة استراحت نبیمی کرتے جھے (این افی شیر) کیا ان خلفاء راشدین کی لماز خلاف سنت تھی۔

سوال ۱۰۸: « «عزمت نعمان بن افی میاش یوند قروتے میں کہ بین نے بہت بے محالیہ کو تماز پڑھتے ویکھا، دوجلت استراحت نیمی کرتے تھے (ابن افی شیبر) کیا ہے سب محالیہ خلاف سنت نماز بڑھتے تھے۔

سوال ۱۰۹: ابوقلا به کابیان ہے کہ تمرہ بن سفیہ کے سواجی نے بھی کسی کوجلسۂ استراحت کر سے تماز پزیجے نہیں و یکھا، یہ عمرہ بن سلیہ یوز سے بچھ (بغاری) تو کیا سب سیارہ جاہیین، تج تا جین خلاف سنت قماز پڑ ھاکرتے تھے۔

سوال ۱۱۰: کیا کسی سی صرح غیر معارض مدیث میں ہے کہ دوسری رکھت کے سے گفزے ہوئے وقت امام کے لئے بلند آواز سے تکبیر کہنا سفت مؤکدو ہے اور مقتد کی اور منفرو کے لئے آ ہستہ کہنا سفت ہے۔

سوال ۱۱۱: کیا تمی مجمع سریح فیر معارض مدیث علی ہے کہ دوسری ریمت کے شرور کا میں وقع پدین مجمع وحرام ہے۔

سطام و ما ما و ما الماديد من ميشين كه آخضرت علي براد في في براد في في بررفع يدين كرح تصدان برآب كاتمل كول بين؟ كميا الخضرت المنطقة في ان الدويث كو ضعيف لدو: كانل ممل قرار ديا ب؟

سوال ١١١٠ م يا دوسري ركعت كرور عي ثناء يزعمنا من به اكركون يده

کے تو نماز ماطل ہوگی ماکروہ۔ سمجھ صرح غیرہ دارش حدیث ہیں کر ہی۔

۔ دورکھت کے بعد قصد ہ کرنا فرض ہے ماواجہ ی^ج سنت ہے مانغل؟ سوال ۱۱۱:

ملیح مرت فیرسوارش مدیث فوش کریں۔

سوال ۱۱۵: اس تعدہ میں تشہد بر صنافرش ہے یا داہسیہ؟ سنت ہے یا تعلی؟ میمی مرزع غیر معارض مدیث چین کریں۔

سوال ۱۱۲: المر فقد و میں بھول کرتشید کی جگہ الحمد شریق میز ہو کی تو نماز ٹوٹ حائے ٹی باخیں ۔ سینچ صرتیا غیر معارض صدیث پڑے کریں۔

ا الركوني تخص تشبد بلندآ واز سيديزه في فو نماز نوت جائع كي يا سوال ڪاا: خيرا_

سوال ۱۱۸: افادی تائی ہی دو متفاد او سے ایک فتری ہے کہ درمیانی تشہدے بعد بھی درود پر مناسف ہے۔ دوسرانون ہے کسنت نیس مرب حدیث ہے فعلانتاكس_

سوال ۱۱۹: ا تبری و کعت کے لئے اشتے وقت ایام کے لئے تھیر بلند آواز

ے كہنا سنت مؤكدو ہے اور مقتدى اور منفرد كے سئے أبسته واز سے سنت وكدو ہے، ا یک محج مرزع فیرمعایش مدیث دائمیں۔

سوال ۱۲۰: الركوئي فخف تيسرى ركعت كمشروث يثل رفع يدين شاكرت تو لال كي نماز نوش جاتي ميم يانبيل. ايك مجم مرتع فيرمعارض مدينه بيش كرير.

سوال ۱۲۱: ۔ تیسری رکھت کے شروریا عمیا ثناہ پڑھ لینے سے نماز نوٹ جاتی ہے

یائیس ۔ ایک سیح صریح فیرمعادض مدیث ہیں کر یہ ۔

موال ۱۳۴: منزے دیداند ان مسعود بند تیسری، چوتکی رکعت ش اکینے بھی فاقر ادر مور متاثیس با بیٹ تے (رواواحد) کیاان کی نماز باطل ہوتی تھی و کلرووں

موال ۱۲۳ حضرت على يبير فرمات تنظيم في وركه تول بين قرآن بزم مجيلي . دوركه تول بين صرف تشيق بزمو (ابن الي شيب)اس طرح فماز بو موتى ب يائيس -

سوال ۱۲۷۷ - فرش کی تیری آور پوشی دکست میں فاقعہ کے بعد سورت مانا جائز ہے مائیس میرج مدیت السی -

سوان ۱۳۵۵: سند منه اور نو کن کی تیسری پاتگی رکھت بین سورت ۱۶ جائز ہے یا خمین سرتع مدیت لائیں ۔

سوال ۱۲۲: ﴿ وَهِمَى رَحْتَ مَ شَرُونَ مِنْ رَكُونَ وَمِنْ اللَّهِ فِي مِنْ مَنْ الدِرِحَوَامُ بِعِنْ فَيَ فَي حديث وَثِنْ فِهَا أَمِن -

سوال ۱۳۵۵ - چوتی رکعت کے بعد العدہ فرض ہے یا دا جب یا سنت ہے یا آئل'' صرح مدیث چڑے فرمائیں۔۔

سوال ۱۳۴۸: ﴿ مِنْ مِنْ رَحْت مَدَ بِعِد أَكْرِ بَغِيرَ قعده مِنْ يَا تَجْدِيل مَلت مِنْ مَعْز البو جائے تو یاد آئے ہے جنہ جائے یاضی اور مجدہ سے واجب ہوگا یا نماز باطل ہوگی۔

سوال ۱۲۹: سیر پڑتی رکعت کے بعد تعدہ کیا دور تشہد پڑھنے کے بعد بائیج بیا۔ رکھنے کے لئے کنزا ہوگیا اور بارائے پر میٹھ کیا تو مس طرح نماز پورک کرے؟ طریقتہ سمج حدیث سے تاکمیں۔

سوال ۱۲۳۰: جوهی رکست کے بعد شدہ کیا چربھول کر پانچ ہی دکھت میں کھڑا موٹریا دور رکھت پری کرنے کے بعد یاد آیا توا پی نماز کس طرح پوری کر ہے۔ آخری تشهدی درود برحناست بے یا فرض مصدیث صریح ہے سوال ۱۳۱۱:

علم دكما كيل-

سوال١٣٣: ورودشريف آبت آوازے ياصنا سنت بي بابلند آوازے انتح

صريح حديث لا تعيل.

ورود ایرانیمی بردهنا مجول آیا اور سلام پھیر ویا قو اب کیا کرے، سوال ۱۳۳: فماز دوبار و بن مع با کیا کرے۔ بھی حدیث لا تھی۔

سوال ۱۳۳: ورود کے بعد دعا پڑھتا فرش ہے یا دارہ یا منت، تکم صریح

حدیث ہے وکھا تھیں۔

وروو کے بعد والی وعا آبت ریز هناست ہے یا بلند آواز ہے، سیج سوال ۱۳۵:

حديث لائمي-

سوال ١٣٦١: يدعاباتواله أكرادرمند يرباتو بيمرا بال مي باتوالهانامع ب-

سوال ١٣٧٤: " كيا المخضرت ﷺ نے حضرت عبداللہ بن معود ﷺ، كوفر مايا قبا

كه جب تشبه ختم بو جائے تو نماز يوري بوڭن جائب ميضے جائب كفرا بوركيا وأتى آپ اس مدیث پر عمل کرے ورود، وعا اور ساام کے بغیر انخد جاتے میں یا حضور اقدس عظافے

نے اس حدیث پر قمل کرنے سے روک ویا تھا۔

سوال ١٣٨: اليا حديث كى كتابول مين كوئى اليى حديث موجود بك المخضرت علين اور معفرت على منطق في فرمايا موكدالتيات ك بعد الرحدث (ياد مارت یا آسته آوازے ہوا خارج کردے یائی پیشاب) کردے تو اس کی نماز پوری ہوگئی۔

سوال ١٣٩١: أماز ك آخر من ساام فرض ب يا واجب يا سنت يالل اصريح

حدیث پیش کرایں۔

سوال 🕶 ان کی مرح نیر معارض دید بیش فرما کم کر دام کے لئے

العالم بلندا والراب عنده وكرو بنياته وتشاكي اورانقروك الكاتبيت والرسوسات بيد

سوال ۱۳۴ 💎 يا انخفر عليك في زائد جرك كرائد يشقر اب كن

ت منسولاً بايا

موال ۱۳۳۷ - آیا مخترے ترکیجہ نماز کے بعد ہجے افدا کر دما ہے میں کیا۔ کرتے ہے۔

سوال ۱**۳۳** از ساکر آفضرے میکھ فراض کے بعد کی تنفی سجہ میں بڑھا اس کے تنے کی ماکر

سوال ۱۳۴۷: سیم بی قل جن لاگول نے شقی پڑھنے کا منتقل معول مجدیں بنا ایا ہے بدعانا سے بانا جائزہ

موال ١٢٥) 💎 آخضرت تلط فيري نمازك بعدروزاندوري قرآن ديا كري

ہے تو اس کا جوت مدیث ہے ایں ورف بتائیں کہ پیلم بیٹائٹس کا لگا ہے کتا مرصہ

عرشرون والورجائز باياء مت

سوال ۱۳۳۱ – جب معید یا گهرش لوگ نر زیاعه به جون قرر د دادهٔ تیگر پرنقر برمنا معاد

جس ہے تمازیوں کی نماز شرشل واقع ہوائی کے جواز کی تنگی سرت کے بدیدے فیٹر فرما کیں۔ سوال 1742 سے زید نے ایک مرد برزنا کی تہدے لکائی تو اس کا کھٹے کوڑے مدسکتے

كل مصاف مرديرتهمت كالتم بوداورت يرقيان شاكيا جاسفات

سوال ۱۲۸ 💎 کلب معلم کے ساتھ شکار کرنے کا تھم قرآن و صدیت میں مذکور

ے اگر کوئی فخص شر ، جیتے ، بھیٹر ہے اور خنز پر کو تعلیم دے یا بندر کو شکار کا طریقہ عملات تو ان جانورول كا مارا ووا دكار حلال وكايا حرام؟ يه حلال حرام كا صاف علم اور ان ورندول کا نام حدیث شریف میں ہوتا جا ہے اس کے بغیر جواب تا تکمل ہوگا۔

موال ۱۳۹: پوہاتھی میں گرجائے تو اس کا تھم مدیث شریف میں فرکور ہے، ليكن اگر بلي كا بيچه كتة كا بيچه بندر كا بيچه چينجلي، سانب، كېچوا، چيوني، بجز جينتش نزي، آک کا نذا تھی میں گر کرم جائیں و تھی کا کیا حكم ہے؟ ياك ہے يا تاياك ؟ سي مرت حدیث پیش کریں۔

سوال ۱۵۰: اگرتیل، دوده، شربت، سرکے، شیرے، کی ادر عرق میں چوہا گر کر مر جائے تو اس کا حکم حدیث صرح وصح ہے وکھلا کیں ۔ تھی پر قیاس نہ فرما کیں۔ سوال ١٥١: كيا يع العب بالربيب جائز بي يا ناجائز؟ سيح صريح مديث ي

جواب دیا جائے وقع الرطب بالتمر برقیاس نہ کیا جائے۔

سوال١٥٢: تخضرت على في ارشاد فرمايا كسوف عامدي كرجول مين کھانا حرام ہے۔ کیا سونے جا تدی کے برتن میں بانی لے کروشوکرنا بھسل کرنا ،اس میں ے تیل لگانا، اس کے قلم ہے لکھتا، اس کی سلائی ہے آتھوں میں سرمہ ڈالنا، اس کی عطردانی سے عطر چیز کنا، سوئے جائدی کے ورق کھانا بیسب جائز جیں یا تا جائز؟ سیح صری حدیث پیش کریں، قیاس سے کام نالیں۔

سوال ١٥٣: آخفرت على خام ديا بكر جب تم رفع حاجت ك لئ جاؤ تو ساتھ تین پھر لے جاؤ۔اب اگر کوئی شخص پھر کی بجائے کچی مٹی، کپڑے،روئی، اون، ریشم کے چیتوزے، گھاس، نشو پیم اور درخت کے بھوں وغیرہ سے استخبا کر لے تو

كيا ال فخص كا استنجا بو جائے كا ياشين؟ جواز وعدم جواز اور ان اشياء كے عام صريح احادیث ے دکھلا کی، پھر پر قیاس ندکریں۔

موال م 10 : اوغ يوں كے بارے يص فن تعالى كاارشاد بك اگر دو ب حياتى کارتاک کری توان برخف عذاب ہے۔ اگر غلام بے حیاتی کارتاک کرے تواس کے الني مرا وظلم صرت آيت يا صرت حديث سے بنائي - فورت يرم ركوتياس شكريں -موال ۱۵۵: الله تعالى ارشاد فرمات بين كه أكرتم حالت جنابت ش وداور ياني ت على تيم كراو، الركولي مورت بيض يا نفاس عد فارخ موفي موقوا ع يتم كي اجازت ے یانبیں بصریح حدیث لاسیں۔

سوال ١٨٦: حق تعالى كارشاد كراى يك كراكركوني فخص ياخان عارفي مو اور یانی ند مع تو تیم کر اے، اب اگروٹ یا آب کہ فیمب یوس ذکر یا مورت کے میونے سے وضواوت جائے تو یافی نافے کی صورت میں وہ میم کرسکتا ہے یافیس؟ صریح حدیث سے جواب ویں ، یافاند پر قیاس شاکریں۔

سوال ١٥٥: الله تعالى فرات بين كديانى تدسطة يم كراواكرياني باس موجود بي يكن وشوكر اليقو راسة عن يين كيلت إنى شد الحركايا جانور بياسار بكايا آثانيس الدھے گایا پانی کے استعمال سے بیار ہوجائے گاتو ایسے مخص کے لئے ان حالتوں میں تیم کرنا جائزے یانیں ، جواب سی صرح صرح مدیث ہے ہونا جاہئے۔

سوال ۱۵۸: الله تعالى فرماتے جي "و ان كنتم على سفر و لم نجدوا كائياً فرهن مفوضة " أب يه سوال ي كداكر كاتب يكي جوتورين ركمنا جائز ي يأتيس الور ا اُرسِفر میں نہ ہوں تو گھر میں بیٹی والن میں رہن رکھنا جائز ہے یائیلں؟ سیح صرت حدیث

ہے جواب دیں جوائی آیت کے بعد کی ہور کا کٹائنخ الحدیث بالآمیا ' کا خدشہ نیار ہے۔ سوال ١٥٩: 💎 الخفرت مُلَكُ نه ارث أرابا عبد كدا كريمي ين في الريمي أر یز ہے تو اسے غوط و ہے کر ہاہر پھینک وورا ب عارہ فیرمقلد بنا فرمائیں اور تلائیں کہ آگر چيوني، مجمر، بحز رمجنو، چنگاه بهنگلي، بجها، سانب و فيره ياني مين گر مو نمين تو کيا يا أن ياک رے کا یا تایاک وال جانوروں کے نام مراحة حدیث یاک علی وکھا کی ، کھی پر قیات نەفرمائىس_

حضور عليك في بغلول ك بالول كه أكهار في كاعم ويا بياتي سوال•۲۲: کل سوفیعید فیرستلد سترے ہے جنگیں صاف کرائے ہیں اور موفیعید تم متعلد عورتی بال مفا یاؤڈر سے بنتیں صاف کرتی ہیں، اے فیر مقلدین "ب عشرات سمج صرت کے صدیت کی نخافت پر کیوں ڈینے ہوئے ہیں استرہ ادر بال مغایاؤڈ رہے بغلوں کے بال صاف كرنے كى كوئى مي مرج مديث بيش قرما كيں ورتدائي س ففل برشرا كيں۔ آ بخفرت کیلئے نے مورث کے موکے زیر ناف کی حفائی کے لتے استرہ کا ذکر فرمایہ ہے لیکن آن کل سو فیصد غیر متلد عور تنرا یا دوریا کریم استعال کرتی جن،ای بارے بی تی تیج صدیت جیش فریا کھی۔

سوال ۱۹۲۱: 💎 الله تعانی فرمات بین جوهنم حالت احرام می کسی جانور کوتش کر وے یا ٹاکارکر کے من فتلہ منکے متعمد ۱۱ اتوان پروم ہے اب موال میرے کہ اگر کم آ صيد خطا بورو کيانهم ہے ، مرتج ضج حديث پيش کريں ، ممريز خطا کو تياس ندکريں۔ آن فل سب غير مقلدين جينس كا دوده پيتے جيما بھي كھ كے سوال ۱۲۴: یں، وی اورلی استمال کرتے ہیں اس کے لئے کوئی صریح آبت یا سیح صریح مدیث التي في المن الونت والشاع وغيره من قلياس منه كم إياب

ائل تعالیٰ نے قرض کے بارے میں نصاب شودت یہ بیان فرمایا حوال ۱۲۳: ے کہ وہرویا آیک مرد دو تورتھی۔ اب موال ب ہے کہ میراٹ، ومیت الائٹ فحصب اور و کیز مالی معاملات کے بنے تعالب شیادت بھی بھی ہے یا کیماور ہے؟ جو ساتھج سریج حدیث ہے ویں مان قرام معاملات کو قرض پر قیاس نے ماکیں۔

سوال ۱۲۵: 💎 آخفرت ﷺ ارشاد فرمات میں کہ کما برتن میں منہ ذال دیے تو سات مرند دهولو، اب موال مديه كه أنر كما برتن بين بيت ب كروب ما ما غانه كروب ما نے کر دے یا خون برتن کولک جائے تو تھتی سرتیہ بھوئے۔ حدیث صریح ہونی جاستے العالب مرقوص شاكيا والمستأر

سوال ۱۹۶۱: 💎 منخصرت مَلِّقَةً نے دیائی مانگ مانگ کر مزت حرفوں پرقر تن یاک کی می ونندگی اجازت واصل کی مربع مربع علی میں سحابہ کرام پیشانے بالاتفاق آلیا۔ فرف بریز ہے یہ جمال کرایا، آبائسی آیت کریمہ یاسیج صرح حدیث بھی آیا ہے کہ عمد فاروقی تک تو قرآن کریم سات حرفول بر برها اور پکرتا قیام قیامت ایک عرف بر يز صنَّه هيديريز هن مفتوخ موجائع كا_

سوال ۱۹۷٪ 💎 خضرت میک کے عبد میزک میں شراب کی کوئی ایک مدمقرر نه تنمی کیمجی تھیٹر مارے جاتے ، کوئی کیٹر اہارتا ، کوئی چیٹری اور کوئی کوزے ، معترت تمریز پہنے نے محالہ کرام پڑھن سے مشار و کی وحفرت کی رہانا ہے اپنا قیاس بیان فرایا کہ جب شرانی شراب بیتا ہے تو اس کی مشل زائل ہو جاتی ہے اور کھروہ افتر ا، کرتا ہے اور ایک غاص افترار کی حد (فقرف) ای (۸۰) کوزے میں لیزا ای کوچی ای کوزے کی حد آگی جاہیے۔ سب سحابہ کرام میں نے اس پر افغال فرمایا ،کیا کوئی سمجے صرز کا صدیث ہے کہ عبد صدیقی تک تو تم میری حدیث پر عمل کرنا لیکن فاردتی عبد میں شرب کی حدے بارے میں معنزت ملی معنظا، کے قیال سے میری، حادیث کوستون قرار دیتا اور قیاست سمی معنزت ملی بین کے تیال کو قانون بتالینا۔

موال ۱۲۸ تعرب عبرالله بن عباس بن في حدد و معرب و بن الما الله الله و عبدالله بن الله بن الله الله الله الله ال منظ يو عبدا كرايك مورت فورت بوق به الله فادنداد و بال باب زنده إلى قودافت كي تعميم بوگى، شهول في جوابا فرما إنسف خاد تدكوه باقى كا نكث مال كواد و باقى باب كو معرب سه يو جها ميا كريومنارك ب الله سه ماخوذ ب اعفرت تران ياك كي فرايا في بر ميري راسة به الله منك كري يا غلط بوت كا شوت قرآن باك كي عرب قايد يا حديث من مربح عبر معارض سه بيش في اكل بو

سوال ۱۹۹: ۔ زید نے کرکی دو داڑھیں آؤٹر دیں، زید پرکٹی ویر : آئے گی؟ بواب مدید کیج صرح فیرمعارض سے دیں۔

سوالی ما 1: نق تعالی ارشاد قرباتے ہیں " وحیت ما کشم غولوا و جو هکم شعطرہ " اور رسول کریم بھیلی فرباتے ہیں " وحیت ما کشم غولوا و جو هکم مشعطرہ " اور رسول کریم بھیلی فرباتے ہیں کہ تفاع حاجت کے وقت قبلے کا طرف ند مذکر و نہ پہت بلکہ شرق یا مغرب کی طرف مند کرو (بغاری) اب اگر کوئی پاکستانی کئے کہ حدیث بغاری ہے چہ جم ہے کہ قبلہ مغرب کی طرف نیس اور اہلی جغرافیہ کہتے ہیں کہ قبلہ ہیں کہ قبلہ میں اس جغرافیہ کی بات حدیث بغاری کے مقابلہ میں نہیں بات مدیث بغاری کے مقابلہ میں نہیں بات، بھے مجے بغاری کے علیہ کا قبلہ میں طرب کی طرف ہے۔

سوالی اسما: مند تعالی والدین کے بارے شروفریا ہے ہیں ویلا نفس نہدنا وہ اللہ ہیں ہے۔ مند مد ہے کہ والدین کو اللہ ہیں کا اللہ ہیں کا اللہ ہیں کہ مد پر تھو کے یہ ہیٹا ہے ڈال وے اللہ ہیں کہ ہم ہم ہم کی ترک ہی کہ اللہ ہیں کو تکلیف ہوئی ، آپ لوگ ہوئی تیاں کو کار اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مال باب کے مند پر تھو کئے یا چیٹا ہے کرنے کے منع ہونے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مال باب کے مند پر تھو کئے یا چیٹا ہے کرنے کے منع ہونے کی اللہ ہیں کہتے ہوئے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مال باب کے مند پر تھو کئے یا چیٹا ہے کرنے کے من ہونے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مال ہوئے ہیں ہوئے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مال ہوئے ہیں ہیں ہوئے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مالے ہوئے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مال ہوئے ہیں ہوئے کی ہوئے کی ہوئے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مالے ہوئے کی اللہ ہیں کہتے ہیں اس کے مالے ہوئے کی ہوئ

سوال 121: قرآن پاک کی سورہ اور سی لااور الاکلے حصر کے ساتھ ان او اور الاکلے حصر کے ساتھ ان او اور الاکلے حصر کے ساتھ ان اور اور کا ذکر ہے جن سے پروہ فرض نہیں اور ان کے سامنے مند کھونا میا تو ہے کمر ان جی نہ ساموں کا ذکر ہے نہ بچا اور شایا کا الحاجر آن سے قریبہ کا آتا ہے کہ ما مول و بچنا اور تایا کا الحاجر آن نے نہ کورہ افراد میں علمت کو میت کا سرائے انکا لیا اور کہا چونکہ ماموں و بچنا اور تایا تھی محرم جی اس لئے ان کے سرمنے چرہ کھولنا جائز ہے ، معرات غیر متعلد بن سے سوال ہے کہ آپ قیاس کو قریبار اس لئے ہیں اس لئے مرش کا رابلیس کہتے ہیں اس لئے مرش کا رابلیس کہتے ہیں اس لئے مرش کا ایر ایکس کی مرش کا یا اور چیل ماموں کے سامنے چرہ کھونا جائز ہے۔

سوال ۱۱ کا ان مسترت عمر میں نے کسی عورت کو منزا کے لئے بلایا اس عورت کا خوف سے حمل ساقطا ہوگی و مسترت عمر ہیں نے سحابہ کرام ماچ کو تنع کر کے ان سے مشورہ قربایا مسترت علیان میں نے قربایا آپ تو تحش تاویب جانبے تنے اس لئے جس طرباً آسی کی بیوی یا بیٹا خوف سے مرجائے تو کوئی مزانیش آپ بری جی، مسترت کی میں نے قربانے کرآپ کو کناد تو نہیں ہوگا تحریہ الترقم کی خطاسے ملکا جاتا ہے اس لئے آپ ب

دیت آئے گی، حضرت عمر عظمہ نے احتیاطاً حضرت علی بھر کے قیاس کی اتباع فرمائی۔ حضرات فيرمقلدين عاسوال يدب كرآب حضرات تو قياس كو كارشيطان قرارويا كرت بين الل لئے قياس كى بجائے مديث مح صرت ويش فرما كيں كدا كر كنى كى ۋانت ا بٹ ہے اس کی بیوی یا غلام یالز کا فوت ہو جائے یا کسی کاحمل ساقط ہو جائے تو اس کا شرق علم كيا ہے؟ خود قياس كرنا ياكسي المتى كا قول چيش كرنا فير مقلديت كے مفہوم و معنى كو بعول جانا ہے۔

موال ١٤١٢: آخضرت مَنْ فَقَ قرات بين لا يقضى القائسي بين النين و هو عصصان الل قياس يدكيت بين كرفص سے جاكدول ودماغ مثاثر و تي اورسوج سنجی نبیس رئتی اس لئے اگر کمی کواپیا قم نگا ہو جو نقل و گفراور ذبمی و ذکا مریرا تر انداز ہویا اليها خوف سوار ، و جائے يا سخت بيوك اور پياس ميں اس كا دل مشغول ، و جائے تو ان موافع کی موجود کی میں قاضی فیعلد شرے۔آپ حضرات چونک قیاس کے مظر میں اس لے ایسے فم و خوف اور ایسی شدید ہوک اور بیاس کے وقت قاضی کے لئے فیصلہ کرنے کی اجازت یا ممانعت کی سی صرت حدیث ے تابت فرما کی۔

سوال۵۷۱: ایک آدی نے فتم کھائی کہ جھے پر تیرے گھر کا ایک لقمہ اور ایک گونٹ بھی ترام ہے اس کے بعداس نے اس گھرے نہ کوئی لقمہ کھایا نہ کھونٹ بیا۔ ماں ان ے دویے لئے ، سونا، جاندی لیا، مال مولی گئے ، اہل قیاس کہتے میں کداس روشم کا كفاره واجب ب- آب جعزات چونك قياس كونين مانة اس الح كسي مح صريع حديث ے ثابت کریں کہ ایک تتم کے بعد سوتا، جائدی وفیر و لینے ہے گفار ولازم ہے یانہیں۔ سوال ٢ كنا: ﴿ أَيْكُ فِعُلْ فِي صَمْ كَمَا فَيْ كَرَفْدًا كَوْتُمْ مِن زَيِدِ ﴾ إت فين كرون

گا ، اس کے بعد اس نے زید ہے بات تو نہیں کی قراس کے ماتھ کھ نے ، پینے ، ٹادی بیاہ علی شریک رہا، اہل تیان کتے تیر کرشم کا کفارہ لازم ہے۔ آپ سی حد مدیث ہے بنا کی کہ کفارہ لازم ہے یانیس ۔

سوال کے گا: آگر کوئی خورے خون انتخاصہ کی اجہ سے معقد رہو، اس کا نظم قر حدیث شریف جی موجود ہے لیکن اگر کوئی مرد، تنہیرہ ریان، بواہیر ہسسل جول یا تک نا مور کے بہتے رہنے ہے معقدور اواس کا نظم اہل قیائ تو انتخاصہ پر قیاس کر کے معلوم کر بیعتے ہیں آپ کے نزدیک چونکہ تیاس کا داہلی ہے اس لئے ان معقدور داں کے لئے حدیث کیچ صرت کا موفوع غیر منظوع جی فرنا کمیں۔

سوال ۱۷۸ : زید نے زینب کو تین ٹری طاقیں ویں اس نے بکرے ناخ کراپر بکرفات اوکیا یا زینب نے بکرے ضع کرنے باعدالت کے قرید بکرے نکاح کنج کرالیا تو عدت گزرنے کے بعدوہ مجرزیہ سے لگان کر مکتی ہے باٹیش مطاق پر قیات زیکریں پیمریج مدیث بیش کریں۔

موال ایما: علام ایک وقت میں جارعورتوں ہے فکاح کر مکتا ہے یا وہ ہے، حضرت عمر رہائیں کے زیاد میں محابہ کرام رہائی کا اس پر اجماع ہوگیا تھا کہ غلام دو ہے زیادہ عورتوں سے فکاح تمیں کر مکتاء کیا ہے تھم قرآ آئی ہے یا حدیث میچے صرتع یا اولا ک کی مدیر تیاں۔

ر ہو ہے ۔ سوال • ۱۸: منام تین طراق کا محترب نے دو کا فرٹیز ہو کا د جواب سمج سرت حدیث سے دونا جاہئے۔

سوال ۱۸۱: 📄 لوغري كي هلاق كي عدت تمن حيض بيديد ويض يا ويره عيض،

جواب سی صریح صریح حدیث سے دیں۔

سوال ١٨٢: الله تعالى قرمات إلى بنا ايها الذين امنوا اذا تكحم المومنات

شم طلقتموهن من قبل ان تعسوهن فعال کم علیهن من عدة تعندو نها ال آیت کریمہ سے مومنہ مورت کا حکم تو معلوم ہوگیا، اب آگر کوئی فخض کسی پیودن یا عیسائن سے نکاح کرے اور رفعتی ہے قبل اے طلاق دے دے تو اس مورت پر عدت ہے یا نہیں، صبح حرج عدیث پیش کریں، کافرہ کومومنہ پر قیاس نذکریں۔

سوال ۱۸۳٪ آیک مورت کوطلاق بته دی گئی تھی وہ ایجی عدت پیں تھی کہ اس کا خاوند فوت ہوگیا، حضرت عثمان نے اس کو دراخت کا حصہ دلایا اور تمام صحابہ کرام ﷺ نے حضرت حثمان میٹ کے اس فتو کل ہے انقاق کیا۔ (اعلام الموقعین ص ۲۰۱۰ خ۱)

حضرت عثمان على المي توقع كى كس آيت يا حديث يحيح صرق سے ماخوذ ہے۔ سوال ١٨٣: ايك هخص نے اپنى يوى كوكها كوتو جھ پرحرام ہے۔ حضرت ابو بكر، حضرت عمر رفيق اور ان كى تقليد ميں حضرت ابن عمال رفيقان فرماتے ہيں كديد تم ہے۔ حضرت على اور حضرت زيد بن ثابت رضى الله عنما فرماتے ہيں كديد تمن طلاقيں ہيں، اور حضرت عبدالله بن مسعود بي فرماتے ہيں كديد ايك طلاق ہے۔

سب نے بید مسئلدا پی دائے سے بتلایا ہے، آپ حضرات رائے کو کفر وشرک قرار ویتے بین اس لئے کوئی سیح یا صرح عدیث پیش فرمائی تاکد فسان تنباز عتم فی شی دفودوہ الی الله و الرسول کے قانون پر مسئلہ کا فیصلہ ہو سکے۔

سوال ۱۸۵: مسواک کرنا وشویس سنت ب یا وشو کے بعد، نماز کے وقت یا دونوں وقت سیج صرح حدیث چیش فرما کیں۔

سوال ١٨٧: سواك كر بغير وشوكر ك نماز يزه لى تواس سنت كرو جائد

ے وضو مو کیا یائیں۔ سیح صرت مدید النس

سوال ۱۸۵: ﴿ وَهُو عِنْ مَتَى يَوْرِينَ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ وَعِلَمَا اللَّهِ عِنْهُ وَوَعِا ہے امریکی حدیث لاکس ۔

سوال ۱۸۸: کیا موجود و برش (نوشھ بیبٹ) کر لینے ہے سواک کی سنت کا تواب بل موج ہے اپنیں مرتجد ہے ہے لائیں۔

سوال ۱۸۹۱ – آگر آمی نے لیک ہی چلو سے ٹین بار ناک میں بائی چر حالیٰ قر سنت مثلیت الاہوکی بالنیں؟

جوتم بھی ہوسکتے مرس صدیت ہے تی فرا کیں۔ سوال ۱۹۲: ﴿ فَرْبِرِ كَا جَوْمُوا اور فَرْبِرِ بِاك بِ بِا مَا بِاك؟ صرح عدیث لا كیں۔

سوال ١٩٣: كَ كَا يَمِينَاب إِمَانَ إِلَى مِهِ إِلَاك ؟ مرت مَعَ حديث ع

جواب ديں۔

سوال ۱۹۳ - ایک کاکس میں ایک ہی کواں ہائی میں کما مرابزا ہے، کندگی بڑی ہے، بیش کے بیٹر سے بڑے میں کیا اس کویں سے پائی بیٹا، وشوکرنا جائز ہے یا کیس ایسی صرح مدیث درکارہے۔

سوال 190: سسکوں کی جیزے ناپاک بھی ہوتا ہے یافیس؟ اگر تاپاک ہو جا تا ہے قاصیح مرت صدیدے ہیں کے پاک کرنے کا طریقہ بیان فرما کیں۔

سوال 19۲ : ووره على ديوائ في ميثاب كردي جمل عددوه كات ريك

بدر شامرہ ندیو، وہ دورہ یاک سے یا نایاک؟ میچ صربے مدیث سے جواب ویں۔ جو اں کو یاک کیے اس کے بارے میں حدیث کا کیا تھم ہے۔

ا أيك كلاس شربت عمل دوده يينية النيخ النيخ بينتاب كرويا ودودها كا سوال ۱۹۷:

ورنگ بدلا ترم و فد اور كو ال كافية جائز منه يا ترام؟ مديث من ين جواب وال

سوال ۱۹۸۱ - عورت کافرج کی دطویت باک ہے یا ناباک اس کے رہے مرسم صديمة كانتم بالنافر ما ^نين -

سوال 199: 💎 شراب (فرهبق) باک ہے یا باک؛ صدرہ سمج حرق سے جواب ویں، بواسے یاک کے اس کا حدیث میں کیا تھم ہے؟

سوال ۲۰۰۰: فون پاک ہے باتایاک؟ حدیث پاک ہے مردد ہے وکھا کی ہے۔

موال ۱۴۹: زید نے زینے ہے تاکہ اس تاکے نعف سے بیر ال از کی پیدا

برئی کیاڑید کا تکاح میرد سے طائ ہے؟ کیاز باندرسائٹ یس ابیا کوئی نکارہ ہو۔

ب سوالات کی میلی قسط ہے دوسری اقساط یمی کے بعد دیگرے اشاعت پذیر بوكر منظرعام برآ في رجس كي -

ناظرین کرام! وعاؤل على ياد رکيس اور مواقع ك ادهاع ك رايز قلى دما تمن قرمات رہیں۔

والخراديونا إرالحمد لله وب الطلسور

ا تواث: ﴿ ﴿ وَمِرِي لِمَا بِعِنُوانَ * فِيرِ مَعْلَدُ عَلَيْهِ مِنْ عِلْدِ مُومُوالِنَاتُ * أَسُ كَمُ تَعْسُ بعد الماحظة قروتني با

غیرمقلدعلاء سے دین مینعلق تقریباً جارسوسوالات



- (۱) یکہ صدیث سیمج صرح فیر معارض ایسی چیش فرد نمیں کدارہ کے لئے تکمیرتم پر بعند آواز سے ملت سے اور مقتری کے لئے آ ہشد شنت ہے۔
 - (٧) اَيُكِ مَحِي مِرْزُ عِدِيثِ بِيشِ فِرِيا مِن كَرَفَاهِ بْن تَعُودُ آبِتَ بِإِمَا مِنَا مِنْ بِي
- (۳) لیک مدیرت بیچ مرتع فیرمعادش پیش کریں کرا کیلے تمازی سے لئے ہیں ''بہت کہن سنت مؤکدہ ہے ۔
- (۲) ایک حدیث محج مرزع فیر معارض بیش فرما کی کدهندی کو چو رکعت می آین بانجر سنت ہے اور کیارو و کعنوں می آج تد سنت ہے۔
- (۵) ایک ہی گئے مرق فیر معارش مدیت ایک پیش کریں کہ آنخشرے منطقہ کے پورے تیکیں ۴۳ سال دور نبوت میں مرف ایک بی ان محاب بابر نے آپ منابط کی چھیے چھرکھتوں میں بند آواز سے اور کم رورکھتوں میں آہت آواز سے آمین کی دو۔

- (٧) مرف ایک می سخ صراع غیر معارض حدیث عیش کریں کہ ہیا۔ یہ تیمی ۴
- ۔ الدرور خلافت راشدہ میں ایک ہی دن کمی ایک فلیفدراشد کے کی ایک ہی مقتری نے۔ حدر کھٹوں میں بلند آواز ہے اور گہارہ رکھٹوں میں آ بستر آواز ہے جمین کی ہو۔
 - ﴾ (2) ایک بی سمج مرت نیر مدرض مدیث پیش فراکی که آنخضرت می 🚣 🗓

قر مایا ہو کہ امام کے لئے جمیشہ چھ رَحقوں جی بلند آواز ہے اور کیار و رَاحقوں جی آست۔ آواز ہے آبین کہنا سنت مؤکدہ ہے۔

- (A) ایک می می صورت فیرسوارش صدیت ویش فرما نیس کرکی طیف را شد نے امام بین کر ایک بی دن ایسے دور خلافت میں بید رکعت میں بلند آ واڑ ہے آ میں کی بواور حمیارہ رکعت میں آ ہند آ میں کئی ہو۔
- (4) ایک بی صحیح مرتع غیر معارض مدیث ویش فره کی که بوشندی اس وفت رفاعت می شریک بوجب او مرتصف بے زائد فاقع پزھ چکا ہوتو اس کے لئے دورفعہ آمین کہنا سنت مؤکدہ ہے ایک دفعہ اپنی فاقعہ کے درمیان ونندآ واز سے مراکب دفعہ اپنی فاقعہ کے غاشہ برآ ہوتہ آواز ہے ۔
- (۱۰) ۔ ایک می سمجھ صریح غیر معادض حدیدے ایسی فیٹل فریا کیں کہ جو مشتری روح بھی لیے اس کووہ رکھت دہرانا فرش ہے۔
- (۱) فیک عاصمج صریح غیر معارض حدیث بیش کریں دکوع کی تشیعات آست.
 بیاحناسنت بین.
- (۱۴) ۔ ایک بی سی مرح مرح فیرمعادش مدیث ہیں کریں کا دُوح کی بھیرامام کے لئے جرآ اور مقتری کے ہے 7 ہند مجماعت ہے۔

- (۱۳) ایک بی محیح میراع غیرمعایض مدینه ایک پیش فرمانمن که مقتذی کے لئے ، بدا لك المعدد ^ميسترع منا منت ہے۔
- (۱۳) انگ ہی گئے سرت غیر معارض حدیث پیش فر مائیں کے وقر میں رکوع کے بعد وعا

کی طرح باتعدا نعاکره داسته تنویت بزحیاه در محرمند بر باتعد پیم کرینده چی جانا سنت سید

(13) - ایک ای سیج صریح نیم معارض حدیث ویش کریں که ان کے لئے دعائے

قنوت جبرة اورمقتى في اورم نغرو کے لئے آہند ملے منا سنت ہے۔

(۱۴) - الک بی مدیث منج مرزع نیر مهارش پوش کری کرمجدوں کی تبییجات آبہت مزهن ستنة مؤكده جن .

(۱۷) ۔ آئیک علی حدیث بھیج صریح فیرمعارض چیل فرما کیں کہ ود بجدول کے دومیان د مَا أَ بِهِمْ إِنْ مِنَا سَتَتِ مُوْكُدُو كِ ـ

(۱۸) ۔ ایک بی حدیث سمج صریح غیر معارض پیش فرما کمیں کہ دکورع کے بعد قومہ میں

باتحواذكا ناسنت من إباته يبينه مر إنوهنا كيزكد ويرجعندا صاحب باته باعرجته بي اور

بنجاب کے فیرمقلدین ہاتھ اٹکائے میں اس کئے حدیث مرتبح ہوتی جائے۔

(19) - الک ی تیج مرتع غیر معارض حدیث پیش قرما کمی کر تحدوں کو جاتے اور عجدوں ہے سر اٹھات وقت رقع پدین منع ادر حرام ہے۔

(۴۰) ایک بی منج صرح فیرسعارش مدیت وژن کریں کہ درسرق اور چوتی رکھتا ک ابتدا وهي رفع يدين منع اورحرام هيا.

(۱۱) - ائیک بی میمج صرح غیر معارض مدیث بیش فرما کمیں که نماز بیس ورودشریف

آبته برمزاملت ہے۔

1919) - الکیک تن منجع سرت غیر معارض مدیث فیش فریا کی کدرروز شریف کے بعد

والل وعا آم شدع هنا منطامؤ كبروستان

(۲۴) - الیک قال سمج صریح صابت وش فرما کیل کدارم کے بینے ساہم وکند آواز ہے

اور مقتد بول کے لئے آب کا واڑ نے کہنا سنت ہے۔

(em) - تو المامعة إلى من قراء من تين فهادي الكيام براياست (بيناب الباقاب الباقات

انون کیش) نگا ہو ہوتو کئی آباز باش کیس ہے۔ (یہ مرااہ ایک عمل ۴۹)

(NA) - تواب نورامحن هامه مدافره ت جهر نالأك كيترون (جهن برييناب، بيانات

غون جيفي (گاه جو سب) جي فريز آئن سند. (حرف ليدي عن n)

(٣٦) - فماز نان مرد یا هوت کی شاه کاد علی رہے ڈائھی کارزیکنے ہے۔

(قرف النادي من ۱۱ مرور ابيد من ۳۹)

(عا) آراز کی جگہ کا یا کہ برنا آراز کے کئے اور نے سے شروز کیس ہے۔

(بدار ادیله ، حرف افا ق ش:۱)

(۲۹) - أم عمر كے اقت الك بال كميز اواقو عصر كَمَا أَرْ الحمير بِكَ وَاتَّتَ مِنْ مِنْ كِيرِي

(فَهَارِي ثَهَا كِينَ فِي السِّرِيةِ السَّرِيةِ ١٣٣١)

(۲۰) - جمع مخابق بالنب ما تھا انکاری حرام سے (بال المئن اپنی المار) ان کا سارا مجمع

سوائے کیل دیا زگاہ کچھ جائز رہے۔ (حرف الحادق می**اد)**

(٣٠) - فواب وهيدارون صاحب فيحة جن تم ايك فورت كروش كي فرن فك جوجو

شہوت کے مارے مت رکز ری دوو دیو ہمائے کے بقت کروٹ ہے گئی ہول فرے ایپر ہے)

آویث سر منظرتها ۱۵ تا ۳۵ پیچی حدیث سیج صرح بری قابت قرما میں۔

حصيه دوم

(m/l) قرآن پاک کے بعد شخ کتاب بخاری ہے یہ خدا تعالی کا ارشاد میں میڈ شد

ے یا ی معموم علظ کا۔

(erd) من المياني عن اليك وكانت كالمل طريق بيت ب-

٣٣/٣) کيا تقاري کي ب حالث الفهم، سنجان ربي افعاليم، منجان

رى الاعمى إتشيد مين ورود شريف كاذكر ب.

(٣٨/٢) - كما يقارى شريف على ينفي ير بيش وتحد بالدسط كي حديث شراف ب-

(ra/s) جاری شریف علی اوشی کا بیشاب پینے کا تھم سے اس پر

فير مثلدين كالمل كيس مرجيس كادوده ين كاول مديد نيس ب-

(۱۳۹/۹) جزاری میں بغلوں کے بال اکھاڑ نے کا علم سبتہ (ان اص ۸۷۵)

ليكن فيرمقلدا مترب سنامنذ والتي بين يس فكاكو في حديث فيس.

(١٧٤/٤) 💎 أنخفرت عِنْظُةُ فرمات بين بحمل سنة بينت دوزه وكما وَاسْ كا

روز و قائبي جوكار خاص ١٥ مراهم ري ري خود ميشدور و م تعد

(۴۸/۸) تخفرت تلی فرمات بین کرکونی تحص مصیبات کے وقت ایک

موت کی تمن بر مرز شکرے (بغاری ج ۲ س ۸۴۵) تحر اوم بخاری اس صدیث کے

هَاف اللهِي موت كي وما ما كاكرت تصر (عربيةً بغداد منا المحرب ٣٠٠)

(١٩/٩) تخضرت مَنْ فَي فراح بين كدين على الكي قرآن يزموادراس

ې زياده مت کرو ر (بخارق ټا ۴ س ۲ ۵۵) بعض جن ځل دن اور بعض جن پاڅ دن م

ممی آیا ہے مگر اکثر میں مات ون ہے (بغاری) مرامام بغاری اس می صرح صرت سے

کے خواف دمضان شریف بھی روزان کیا قرآن مجید ٹنم کرتے تھے۔ (کارٹ بغداد ج ۲ ص ۱۱ وطبقات بمل ج عمر ۱ والطوص ۲۴)

ا غیر مقلد بن کہتے ہیں حدیث عائلتہ رہنی منہ عنبا بخاری ج ص ۲۲۹ ہے تابت سے کہ تر اوس اور تبجیرا کیے نماز ہے مگر امام بخار کی رمضان شریف میں

تراوات کے بعد تبعد بڑھ کراس سجع حدیث کی مخاطب کیا کرتے تھے۔

خود امام بخاری نے مدیث روایت فرمائی ہے کہ کما برتن عمل مند

ة ال والماق مهامت مرتبه والولو كالبراج كما كنة كم منه واللة منته ياتي كالدركك بدلياً ب مناحرہ اور ندای ہو ہوتی ہے محرارم بناری اس می صدیت کے ظاف کتے ہیں ک

جب تک دیگ دیو معروش بدید که ده تا یا کستین بهزی (بخاری شام ۴۹۰)

صديث عندي بت بوتا هي كه ركية كالجمولة ناياك بير (مع اص ٢٩) (m/m)

محرامام بخاري اس كے قلاف كتے كے جموئے بالى سے وقع بر أو كتے جس ر

(かん)

المام ہفاری فریاتے ہیں کہ نمازی کی بیشت پر کندگی اور مردار ڈال (m#/im) ديا جائے تو نماز نبيس أرثي_(بغاري ج اص ٢٥٠)

المام بخارك كروك ران تقديول تو نماز جائز مصاري اس (rr/r/)

قیرمقلدین کے نزد یک متی یاک ہے۔ (عرف انجادی حص ۱۰ زنرل (ro/lo)

الذيرارية عن ٢٩١ مُنز الحقائق من ١٦ ميزور الأبلد من ١٥) الن يرشح عديث لا تيل.

جب من ياك ب تواحيل فسكم الطبيات كموافق اس كاكمانا (44/44)

مجی طال ہے یا حرام سیح مرتع فیرمعارض حدیث سے جواب دیں۔

ایو اُسن فیرمقلد نے فقہ مجہ یہ (جّاص ۴۶) پر جو لکھا ہے کہ (14/14)

مارے ندجب میں ایک قول بر کھانامٹی کا جائز ہے اس کی صریح دلیل بیان کریں۔

نواب وحید الزمان صاحب فرماتے ہیں کہ مورت کی پیشاب گاہ (MA/IA)

ے جو رطوبت گلتی ہے وہ پاک ہے۔ (کنز الفائق ص1ا، زنل الا برابر جاص ۴۹،

تیسیر الباری ص ۲۰۷ ج۱) اس کی محج صریح غیر معارض حدیث پیش فر ما ئیں۔

(ra/19) جب بدرطوبت یاک ہے تو اس کا پینا طال ہے یا حرام۔ جواب

سیج صریح فیرمعارض حدیث ہے ویش کریں۔

(۵۰/r۰) آپ کے ذہب میں چیش کے خون کے سوا سب خون یاک

جِن _ (كَنز الحقائق ص١٦، زنل الابرارج إص ١٩٩، عرف الجادي ص١٠) اس مئله كي

دلیل حدیث سیج سرت فیرمعارض سے پیش فرمائیں۔

كاياك بـــــ (عرف الجادي س٠١) اس كا كوشت ، خون ، بذى ،

بال، پیننہ یاک ہے۔ (بدورالاہلہ ص۱۷) اس کا پیٹاب یاخانہ یاک ہے۔ (جربیة

المبدي ج٣ص ٢٤) كمّا يوي كوحق مبرين وينا جائز ہے۔ (مُحلِّي اين حزم باب المهر)

جواب سي مريح مديث عديد

خزیر یاک ہے۔ (عرف البادی ص ۱۰) اس کے بال، بڈی یاک

مِيں .. (كنز الوقائق عرب ١٠) اس كا حيونا ياك ہيد (زرل الا برارج اص ٣٩)

(ar/rr) الخريعي شراب ياك ب- (كنز الحقائق ص١١، زن الا برارج ا

ص ٢٩. عرف الجادي ص ١٠) اس عن آنا گوند د كرروني يكالي جائة تو كلمانا حلال ہـــ

(نزل الإيرارج اص ٥٠)

(or/rr) پیٹاب ہرطال اور حرام جانور کا پاک ہے سوائے ختر ہے اس میں اختلاف ہے، ایک قول میں وہ بھی پاک ہے۔ (نزل الا برارج اس ۴۹) كونى مردارنيس شيس _ (عرف الجادي ص١٠) ان سب ساكل كى (00/ro) ایک ایک حدیث سیج صریح غیر معارض پیش فرما تیں۔

ان مندرجد بالا مسائل كا مطلب صاف بي كدا گرمني، مردار، خون، (01/ry)

تھی جانور کا چیٹاہ،شراب،خزیر، کتا اگریانی ٹس گر جا کیں خواہ کتنی ہی مقدار میں جوں تواس یانی سے وضو کرنا ، عشل کرنا، اس کا بینا، اس سے کھانا بگانا سب جائز ہے یعنی آپ کے ذہبے۔

مندرجه بالاچیزیں بدن ، کیڑے یا نماز کی جگہ پرخواہ کتنی مقدار میں (OL/TL) مول تماز بالكل جائز باس كاحكم حديث س وكهاؤ

مندرجه بالا باك چيزول سے أكركوني فخص قرآن و صديث لكھ تو (DA/tA)

اس کے جوازیا عدم جواز کی سیج صریح غیر معارض حدیث وی کریں۔ اگر فنز برشک کی کان میں گر کرشک بن جائے تو اس کا کھانا حلال (09/r9)

ے۔ (نزل الا برارج امن ۵) اس کی سیح صریح غیر معارض عدیث بیش کریں۔

ایک کویں میں خزیر، مردار، چش کے چیترے، اشانوں کا (1./r.)

پیٹاب پا خاندرات ون گرتا رہتا ہے وہ کوال پاک ہے یا ناپاک۔ حدیث صرت مح

(١١/٣١) ناپاک كوير كاپاك كرنے كاطريقة كى تتج صرح حديث سے پیش فرما كيں۔

حصهرسوم

حفرات بلز الل حدیث ہے گزارش ہے کہ وہ مندوجہ ذیل موالات کے جواب مندوجہ ذیل موالات کے جواب میں ایک میں اس کے ایک میں اس کے ایک میں اس میں ایک کی مرتبع خرا مار اس کا انسال اور اس کا میں اس کی تو بیش مستد کا انسال اور اس کا شدوز و صف سے ساتم ہوتا ہیں ہے تر اس کو تراب ہوتر آن پاک کی مرتبع آیت یا اس میں مرتبع مرتبع غیر موارش نے جوالا سے نہ ہوکا وہ مردود ہوگا۔ اللہ تعالیٰ آپ سے علم میں برکت عطافر ما ہے۔

(۱۶/۱) میں میں اُن کہتے ہیں کہ خدا تعالیٰ بھی علیہ اسلام کی صورت میں خاہر ہوا ہ بندو کہتے ہیں خوار کی شکل میں فاہر ہو اور مولان وحیدالزیان خان فیر متفد فرمائے ہیں کہ خدا جس معودت میں جائے خاہر ہو مکتا ہے۔ (ہینہ والبدی خاص کا وقع علیہ) (۱۳/۷) میں فوالے وجیدالزیان قر، کے جس کہ اُرام جندر کچھی کرش وزرا تشک ہ

م ہر تما بدھ پوسب انجنے وصافحین میں سند میں اور جم پر واجب ہے کہ ہم خدا کے سب رمولوں پر بلاقفر کی ایمان لائنیں۔ (بویت اعبیدی نجامی ۸۸)

(۱۳۴۳) کی آر من کی بیافقید در کھے کہ انہا و دولید کا مانا عام لوگوں ہے وتاخ ہے۔ کی کہ اپورٹی زبین سے ہر میکہ دور نزاد کیا ہے وہ کن پنجے بیر او پر عقیدہ شرک نبیرے (بدیة انسادی جام ۱۳۲۶)

(ساُرہ 19) ۔ ۔ ۔ اس مند ہو ہالا عقیدے ہے کوئی یا رمول احد میا علی ویا خوت (اعظم) کیے تو شرک نہیں ۔ (ہدینا العبد ی بڑا من ۱۳) (۱۹/۵) نواب میری حسن خان صاحب ال مقیدے سے راکھینہ بڑھا کرتے تھے

ا قبلاً وس عدوی اسکوایمان مودی

ائن قیم مددوے 📑 قاضی شوکائی مددد ہے (تام اس ۲۲۰)

ابن تیم، قامنی شو کانی فوت شدہ مجی تھے اور روز بھی محر نواب مید مق مسن

خان صاحب ان سے استمد ادکیا کرتے تھے۔

(۱۷/۱) جب آب کے مقیدہ بکل رام چندں کچھن کرشن جہاتی ہو ہمی کی جل

اور ہر تی دورز دیک ہے بکارسنتا ہے تو آپ کے فدہب میں المرام چھد مدد دے والمجھن

عدوے میا کرش ندود ہے، یام ہاتھ آباد ہدودے" کا دفیقہ میز همنا بھی تکن ایمان جوا۔

(١٨/٠) . الله و الدها كدم زا قادي في قاديان كوقيله و كعية راد وي دي

یجے اور نواب مدیق حسن خان اڈیدیٹ قاضی شو کائی بیٹی کو قبلہ کعیہ بنا رہے تھے تو قرآن وحدیث کی رو ہے زیادہ تواپ کم اکول رہا تھا۔

(11/۸) ۔ انواب وحید الزبان وغیرہ مقلد کا حقیدہ ہے کہ جو ہوئا موتی کا

الفاركرة من ووا أحديث فيس معتولي ب(بوية الهيدي من ١٠)

(۷۰/۹) تخضرت منطقهٔ ما نمی نی ون کی قبر مادک کی زمادت کی نیت

ے سفر کرنا جا ٹرنئیں ، بدامور جالمیت میں ہے ہے۔ (عرف الحاوی می•1) اور اس کو

جا کر تابت کرنے والا خدا اور آخرت ہر ایمان ٹیس رکھتر اور ملاوت ایمان سے محروم

ہے۔ (عرف الجادق من ۱۹۰۳)

(١٠/١٤) اور الركوني فعل مدينة منوره ينتي جائ تو اس مر واجب المعاكد

المختر بالنبط المنظة كرونساطير توكرا كرناك كه براير كروب (عرف الحادي ص1٠)

رام چندر، پھمی وکرشن و میر تما ہدید ہے آئی مہت اور آ مخضرے میں گئے ہے آئی غرت کہ ۔ روندا طبیری فشان و کیل مجمی کوارائیس ۔

(الالاس) اگر خیر مقد مین برسر حکومت آنیا کمی قروه پیلا تعلیہ بندوستان پر کریں کے جہبندو درام چندر دکرشن کچھن اور میں تماہد دوجیے نیس کے جو وکاریں یا کد تحریب پر کریں گئے جہاں کے لوگ مقلد میں ورمرکز اسلام کوشٹرک مقلدین سے خان کروا میں گئے۔ (۲۲/۲) اگر غیر مقلدین برسم الکترار آگئے تو مقلدین سے ذکر قوصول کریں کے یاج ارد قرشن وجد ہے ہے تھم تنائمیں۔

(۲۵/۱۳) (۲۵/۱۳) : - - فونب وحير الزمان صلاحب فرمائة مين كه جو باتھ بجوڑ كر تماز بز هجان برد عارب وشخص - (جمية انهيد كياس ۱۸۸)

کر نے ان پر انکار جائز تھیں۔ (ہمیۃ المهدی ص ۱۱۸) (۱۱ کے 22) نواب معامب لکھتے ہیں جومردوں کے دسیلہ ہے وعا کرے اس پر انگاد جائز تیس۔ (ہمیۃ المهدی حر ۱۱۸) امید ہے کو جو دالجوں ہے اپنے ان مسائل کا تبویت بھی کسی آیت قرآئی فاحد ہے میچھ مرزع غیر مورض سے بیش فرء کی کے کوئلہ ہے مسائل فقائد ہوں کے بین اور اس کر ہے ہیں جس کا نام لاں اربراد من فقد التی انتقاد ہے بینی بید سائل فیر مقلوین کے تقیدہ میں کی فقد نے سائل ٹیس بیر بین جس کا ہے۔ خصابی و سکتا ہے مکہ می معسوم میدا سوام کی فقد نے ہے خط مسائل ٹیس

ا کم فخص کاشہوت ہے منی خارج ہونے گی اس نے عضوغاص کو (4A/14) زور سے پکڑ لیاسکون کے بعد منی خارج ہوئی تو قسل فرض ثبیں۔ (نزل الا برارص ۲۳) اگر کسی مرد نے کسی چو یائے (بھیٹر، بکری، بھینس، گدھی، کتیا) کی (49/IA) شرمگاه میں دخول کیا تو مخسل فرض نیس _ (نزل الا برارج اس ۲۳) اگر کسی عورت نے کسی چو یائے (کتے، فٹزیر وغیرہ) ہے یہ تھل (A-/19) کروایا تو اس بر مسل فرض ہے یا تیں ۔ حدیث سیج مرت سے جواب ویں۔ اگر کمی مخض نے زندہ عورت کے ساتھ صحبت کی اور انزال نہ ہوا ہو (AI/r.) توامام بخاری کے نزد کے علسل فرض فیس _ (نزل الا برارج اس rr) (۸۲/۲۱) اگر کسی مخص نے اپنا آلہ تناسل خود اپنی دیر میں داخل کیا تو انزال کے بغیر منسل فرض شہوگا۔ (نزل الا برارج اص ۲۴) اگر کسی نے مردہ عورت ہے صحبت کی تو رائج سے کے کھسل ضروری (AF/FF) نبين _ (نزل الايرارج اص ۲۴) (۸۴/۲۳) اگر کسی حورت نے غیر آ دی (کد ہے، ہاتھی ، کتے ، خزیر ، بندر ، کموزے ، ريچه وغيره) كا ذكرا بي شرمگاه مي وافل كيا توخيل فرض نبين _ (زن الا برارج اص ٢٣) (۸۵/۲۴) اگر کسی مورت نے مردہ مرد کا آلہ قامل اپنی شرمگاہ میں داخل کیا تو ای مرهنسل فرض ثبین .. (مزن الا برارج اص ۲۴) (۸۱/۲۵) اگر کی لاکے افاام بازی کی تو مسل فرض فییں۔ (ترل الابرار ع اص ٢٣٠) اف دريث كي آر عن كيا ميكو بوريا ب

ل اولئك أبائي فجتني يعثلهم

(شان الل مديث)

(۸۷/۲۷) 💎 الْكُرِّسَى حورت نے وَكِّلَى استعال كَى تو هسلى فرش نيس - (لزل

الا برارم ۲۴) آء کی معموم کی ظرف کمیلی فقد منسوب تروی کی ہے۔

(۱۹۸/۶۷) 💎 اگرنسی مورت نے نکزی وفیروشیوت رانی کے نئے استعال کی تو

عَسَلَ فَطِينَ مِنْ إِسِيانِكُ الزّال تدبور (ززل از برارجٌ اص ۴۳)

(۸۹/۲۸) 💎 اگر فورے نے نکزی شرمگاہ میں داخل کی نکزی اندر چلی گئی محر ہتھ

شرمة وتوثيل مجانة وخويجي نتيل نوعانه (نزل الابراريّ ص٠٠٠)

(۹۰/۲۹) کی مود نے کواری لڑکی ہے محبت کی حدوہ صاحب موقی محر کوار

يْنْ دْ ٱلْ نِيسِ بِهِ فَيْ تَوْقِسُ فَقِيلٍ مِي وَلَانِ الدِيرَادِ مِنْ الْمِيرِيمِ } .

(۱۳۰۸/۱۹) 💎 اگر محق خیال ہے شہوے آگ اور تنی خارج ہوگئا تو خشل فرش

نیم _ (زن ۱۵ بردرجامی۴۳)

(۱۳۰/۴۰۰) 💎 اگر شمی مرد به مورت ت نکزی او بایا کوئی اورانسی چیز اینی در ش

راطل کی اور و وخشک نکل آگی تو وضوت کے فرزے (نزنی الا برادے اس میرا)

(٩٣/٣٢) 💎 اگر بوابير السائه البيد مو يك ي خوداند راځل كي تووخو

نُوت كي اوراً كرخُ واخُ وواقِل بوكيَّا تُوصَوْلَيْن فَوْت (لَا فِي الابراريَّا عن ٢٠٠)

(۹۳/۳۳) 💎 اگر کوئی تخص اپنی بیوی کے فیر فطری مقام کوا شعال کرے و دے

اران این روانا کوان بر الفارنگی و گوگین. (جویدان از فران ۱۳۰۰)

ه جهزی و) 💎 کرونی کارت هند کرداین (بینی ایرت نے کرزی کرداین) تو

و مد د تعوير بكذا من يرازيار بمي جا ترخين - (جدية السدل خ اس ١٣٤)

(41/10) من زيد شي كن خورت منت زير كي الله فعل سي لا كي بيدا بولي تواس

بئی سے زید باب نکاح کرسکتا ہے، یہ جائز ہے۔ (عرف الحادل ص 1 ما) (۲۱/ عدد) کے گئر بازی سے ایجے کے لئے سنت زنی واجب ہے۔

(فرف الجادي ص ١٠٥)

(۹۹/۳۸) - بعض سحاب مذه بجي مشت زق كياكرت تقرر (عرف الجادي ص ٢٠٠٠)

(١٠٠/٢٩) مشت زفي عن كوفي حرج نيس ميس بدن كي دومري موزى فعلاس

(باخات بيتاب) كالشفش كوئى حرج نيس . ("ف الجارى ١٠٠٠)

(۱۰۱/۳۰) مشت زنی کرتے والے یا شاصاب شاتعور۔ (عرف انبادی من ۲۰۸)

معزات براہ کرم چھل اور دیت ان سائل پر چیش فر، کیں البین ہوگئے۔ ہیں یہ جواب دیتے چی کہ ہورے علاء المحدیث یہ سب سائل حدیث کے خلاف کھتے چیں ان کے تعالیٰ کے والت اور ہوتے جیں اور دکھ نے کے اور اس لئے اگر یہ بات کی سپے کہ وہ حدیث کا نام بھی جموث موت لیتے جیں اور یہ سائل خلاجی تو براہ ٹوازش جر مسکل کا غلط ہوتا کی ایک آیک مح مرج غیر معارض حدیث سے جرت فریا کی اہر مال ان کے موافق یا خالف عالمیں اوادیت چیش کریں۔

حصہ چہارممسئلہ تغلید

<u>تقلید کی تعریف:</u>

تھلید کہتے ہیں کسی کا قول محض اس مسن ٹلن نے مان لیٹا کہ بیدونیل سے موافق متلا دے گا در اس سے دلیل کی تعقیق نہ کرنا۔ (فاوی ٹنا شیدے اس ۲۹۹ء ج اس ۲۳۰۰ء ج: عمل ۱۳۷۴ء کا عمل ۱۳۷۹) کتاب وسنت سک ماہر کی روشمائی شرع کتاب وسنت پڑھل میں کرر ر (مقتد الجدید شاہوی وشاعی ۱۳۵۰)

تقنيد كي تغنيم:

تعلید مطلق بہ ہے کہ بغیر کی تغیین سے کئی عالم سے سند ہو چے کر عمل کر لیا بیات جو بہلید بٹ کا غیرب ہے اور تقلید شخص یہ ہے کہ انکسار بعد جمل سے ایک اوم کی بات مانی جانے جو مقلدین کا غیرب ہے (آفادی فی کیونی اص ۲۵۱)

معرفت وليل:

اس کو کہتے ہیں کہ دلیل کو پورے طور پر جائنا۔ بالفاظ دیگر یہ جائنا کہ اس کا معارض کو لگ تیں اور یہ منسوغ مجمی تین وغیرہ ایسا جائنا تبتید کا خاصہ ہے۔ یہ بالکل تی ہے (الآوی ٹٹائیدج امن ۳۹۳) لیکی دیمل میں تین باقیل شروری ہیں (الف) ہوائٹ سے سر تم ہولیجی اس کا ثبوت تو متر یا اندیکھ ہے ہور (ب) و فقض ہے سالم ہوائی کے مند بات فار تیجہ کی والمت وکون پر واقع ہور (ن) دو معارف ہے سالم ہولین کوئی دلیل اس کے مورض شہو)۔

تقليد كائتكم:

تقلید مطلق واجب ہے (سیار ائن من ۱۳۰۷ درنغ البحدیث من ۱۳۹۰ واؤد غرائوق من ۱۳۵۵) تقلید مختل مہاج ، ہالیتی اس پر کوئی کناہ مرتب تبین ہوتا وہ یہ کہ مقلد ممن ایک ایام کو محقق مجھ کر ہمیشد اس کی بات ماشا رہے تھر اس کقین کو فقع شرق ن مجھے (زناوی شائید بن اس ۱۳۵۲، مسیار الاق عن ۱۳، تاریخ ابلودیث من ۱۳۵۰ واؤد غراؤی ص ۳۷۵) ہم نے غیرمقعدین کا مسلک تقلید کے بارہ میں ان کے عناصر ادبعہ بلکہ امّد او بعد مواد کا نز مرحمین صاحب والوک بھول کا تھر ابرا ہیم صاحب سیا لکوتی ، مواد کا نگاہ اللہ صاحب امرتسری ، مواد نا واق دفر نوک سے باحوالہ ذکر کیا ہے۔

اب متدرجه ذيل امور جواب طلب جي.

(۱۰۲/۱) واجب كي تعريف كيا هيه اوراى ك تارك كا كياتهم بي، وونول

یا تھی کی مدید می مرتع فیرموارش سے بیان کریں۔

(۱۰۳/۰) تظیرمطلق کے داجب ہونے کا ثبوت آیت قرآن یا مدیدہ میج

مرج نيرمعارش ے پيش فريا كير.

(۱۰۲/۳) بب آپ کے بال تعلید مطلق واجب بدر آپ مجمی مقلد ہوئے

آپلوگ اپ چپ کوغیرمقلد کوں کہتے ہیں؟

(۱۰۵/۶) مبارح کی کیا قریف ہے اور اس کے تارک اور عال کا کیا تھم ہے

فی بات مدیث سیح مرج فیرمعارض کے حالہ سے میان کریں۔

(۱۰۲/۵) معلی محص کے مہاح ہونے کی دلیل قرمن باک کی آیت یا حدیث

صح مرج غیرمدوش سے بیان قرمائیں۔

(۱/ ۱۰ عام کوسنله بتائے واقت بر بر منله پر دلیل تام (دیکھوتبرو) کا

بیان کرنا قرض ہے یا واجب اوراس کی ولیل آعت یا صدیرت بیان کریں۔

(۱۰۸/e) مدیث کی مشہور کتاب مصنف فید الرزاق بی صحاب مشاه رتابسین

کے تقریباً مترہ ہزارہ وہ کا الآوی جی جن میں محاب عظاور تابعین نے نوی کے ساتھ کوئی آیے یہ قرآئی یا حدیث دلیل میں میان نہیں فرمائی تو دو فرض و واجب کے تارک اور

"كنه كاربوئ يانبير)؟

(۱۰۹/۸) ان ستر و بزار ۱۰۰۰ عا قرآوی ش سوال کرنے والوں نے بھی ولیل

کا مطالب میں کیا تو ان کا مطالبہ بلادلیل ان مسائل کوتشایم کر لیز تھلیدی ہے ، کیا رہ محابہ معمد مصرف المدر میں میں کا مصرف کے اس کا مسائل کوتشایم کر لیز تھلیدی ہے ، کیا رہ محابہ

مل اور البعين ويل كا مطالبه شكرنے كى وجد سے فائل موست يا كافر وليل مديد مي

ے ہو۔

(۱۱۰/۹) کا بربرمای دی کو بربرد فی سندی دلیل تام جانا ترش ب

ِ واجب اور اس کی کیا دیش ہے، مدعث میں بن فرما کی۔

(۱۱/۱۰) آپ کے اکثر موام اپنے علامے سنلہ یو چید کرمل کرتے میں اور

ولیل نام کی تحقیق نیس کرتے وہ عوام ان علاء کے مقلد ہوئے پانیس۔

(۱۱۲/۱۱) آپ کے موام ندوی علاء سے متلہ ہو چھتے ہیں نہ بر بلوی

علاء ہے، وہ مرف اپنے علاء ہے مثلہ ہو چھتے ہیں تو نیرا کے موالل پے تقبیر فخص ہے یا

فرخنی مطلق - کابر ب کرایک ی فقد کے مسائل بر جانا تعلیہ تعلی ہے۔

(۱۳/۱۲) 💎 ندسیانی چی اکٹرمسائل پرفتوی امام اعظم کے قول پر ہے بعض

-ساکل بھی صاحبین کے قول پر ہمن بھی امام زفر ۱۰٪م حسنؓ کے قول پر اس کو آپ کی تعتیم نبرہ کے موافق تعلید تھی کہا جائے کا با تعلید مطلق۔

(۱۱۳/۱۳) 💎 چونکه زیر بحث تھید جہندگ ہے اس لئے قرآن وصدیت کی روثن

می جیند کی تعریف بیان قرما کیں۔

(١١٥/١٨) آرآن و حدیث جمل جميتد كي شرائط كي جير، ان كو وشاحت ہے

ييان فرما كيں۔

قرآن وحدیث ہے بیدوضاحت فرمائیں کہ ججبر کا دائر و کا رکیا ہے۔ (117/10)

تقلید کی اس تعریف کے مطابق جونمبرا برگز ری، خدا اور رسول علیہ (114/11)

کی بات کو بلامطالبہ دلیل با ننا تقلیدے یانہیں۔

(IIA/IZ) اس تعریف براصول مدیث کے قواعد کو بلا مطالبہ دلیل مان لیڈا تقليدے بانبير

اصول مدیث میں خاص شوافع کے فرقہ کے اصول کو ماننا اور حنفی (119/IA) محدثین کے اصول کونہ ماننا تظلیہ شخص ہے یا تطلید مطلق۔

اساءالرجال کی کتابوں ہے جرح و تعدیل کے اقوال کو بلا مطالبہ (Ir./14) دلیل مانتا تقلید ہے یانبیں۔

(۱۲۱/۲۰) جرح و تعدیل میں شافعی فرقہ کی تنابوں کو بلامطالبہ دلیل ماننا اور حنى كتابول كونه مائنا تقليد شخصى ہے يا تقليد مطلق ..

كتب خانه من مفكوة كو ماننا اور زجاجة المصابح كونه مانناء بلوغ (irr/ri)

الرام كوما ثنا اورمستداات هفيه كونه مانناه موطا امام مالك كوماننا اورموطا امام تخر كونه مانناه

ترزي كوماننا اور طحادي براعتاد ندكرناه جزه القراءة كوماننا اوركتاب الآثار كوندماننا كتاب القراءة

كو ما ثنا اوركتاب الجيد على اهل المدينة كونه ما ثناية تقليد مطلق ب يا تقليد شخص كا اثر ب-

حدیث کے سیح یاضعف ہونے میں صرف اپنے فرقہ کے مولوی پر (IFF/FF)

امتاد کرناحنی محدثین برامتادنه کرناتقلید شخص ہے یامطلق۔

(۱۲۲/۲۳) يبودي اين احبار ورهبان كي تنايد مطلق كرت تن يا تنحنى جواب

قرآن یا حدیث سی ہے ہیں۔

اگر و و تقلید شخصی کرتے تھے تو ان کے مجتبدین کے نام جن کی طرف (Irs/rr)

فرقے منسوب تھے قرآن وحدیث سے تحریر کریں۔

مشرکین جوایئے آیا، واجداد کی تقلید کرتے تھے دوتھلید مطلق تھی یا (ir 1/10)

تقلید شخصی قر آن وحدیث سے جواب دیں۔

(۱۲۷/۲۹) اگر دو تقلید شخصی کرتے تھے توان میں کنے فرقے تھے ان کے نام

قرآن وحدیث سے بیان فرمائیں۔

(IFA/ra) محدثين في جو مديث كي فتمين اور بر برضم كاظلم بيان فرمايا ب

بدرب اقسام صراحة قرآن وحديث مين جن يا إن امتيول كي بنائي جو في قسمول كو بلا مطالبه وليل قرآن وحديث مان ليا بق يتكليد ب مائين -

(۱۲۹/۲۸) جب تقليد مطلق واجب سے اور تقليد مطلق كے دوى فرد بيل تفنى

اور فيرتضى تؤوجوب كاحكم دونول كي طرف يكسال بوگا پھرايك كو داجب دوسرے كوميان

کہنا یہ پانگل غلط ہوا، جس طرح متم کے گفارہ میں کھانا کھلانا، کپڑے ویٹا، روزے رکھنا

تيون برابرين اب جس طرح بھي ادا كرے گا تو واجب ہي ادا ہوگا۔

(١٢٠/٢٩) كيا آپ كرزويك برآدي جمبتد بي ابض جمبتد اور بعض غير

مجرته رقر آن ياك نے تو دونوں درج بتائے۔ ليو ردوه السي الرسول و البي اولي

الامر منهم لعلمه الذبن يستنطونه منهم اورف استلوا اهل الدكر ان كنتم لا

تعلمون - كياآب ان آيات كومائة إلى-

(۱۳۱/۳۰) اب فير مجتهد دوحال ے خالى نيس يا تو آپ اس كواز خود ادلية اراجه

ے اخذ احکام کی امازت ویں گے یا کسی جمبتد کے اخذ کردواحکام بِقُل کرا میں گے پہلی

صورت یمی ود مجتبد موا اور دوسری صورت شر، مقلد اوراس شری چونگ شرا کط ارتبهاد زشمی اس لينداس كالاحتماد البياني باطل بواجيعيه وفعاز باطل بي جس على شرا أكافرز شديا في جا كمير. نہیں یا تو ایک جمبتد کے غاب کو وقل ندا ہے ہر رائع سمجھے گا تا وہ کلد شخص کرے گا کیونکہ مرجوح مرعمل بالا جماع ناجا کز ہے۔ یاسیہ کو داہر مجھ کرنمی ایک رفس کرے گا توسيمي ترجي بامري ہے جو جائز نبيل ۔

(۱۳۲/۳۴) 💎 تھليد فيرخنى كى كيا مورت ہوگى دائر فير جميّد سب جبتہ بن 🗠 غابب كوساوى جائے كا قراضًا في ساك بن ايك جيتواليك جيز كومنال كبتا ہے اور دومرا ترام کہتا ہے اور ای (غیر جمتہ) کے زود یک سب جرایہ جی تو کوئی چیز اس کے لئے شحرام ہوگی شہ طلال ماہر چیز حال ل مجھی ہوگی اور حرام بھی ادر یہ بالا بتدائے باخل ہے تو مب كومسادي مجمعة بعي بالإجماع باطل بوايه

(۱۳۳/۳۳) 💎 وگروه غیر مجتمد جارون غراب کوسیادی انترک والقول با نتا ہے تو تکلیف نثری وطل ہوئی، نہ تیجوفرش، مانہ فرام رہ بلکہ اگر جاسے تو حلان کی طرف ڈکل ء وائ يا بي توحوام كي طرف مأل ء وجائ جربه تعليد مجتد كي تو ندري بلدا بي تحايش نشائي كي تخليد بوكي ـ قبال الله تبعالي و بهي لنفس عن انهوي فان الجنة هي المساوي اور الهيعسب الانسيان إن بنير لا سندي كامعيدا قي بيرگا مجيِّد كا 1م توخيض وحوك كے لئے لے گاہ اپنی خواہش نفسانی کی تعلید کو ا نباع قرآن وحدیث کا نام دے كر ممراہ ہوگا جیسا کہ زائد حال کے اکثر فیرمقلدین کی حالت ہے۔

(١٣٥/٣٣) 💎 اَگر کوئی خِير ججبّد بيدوه کي کرے کہ چاروں شاعب سے جس کا

منظر قرآن وحدیث سے ذیا دو اقرب ہوگا اس کو زینے دوں گا قرصی غلط ہے یہ ایسا بی ا ہے کہ کوئی مریض کے کہ جس ڈاکٹر وال کے شخول کوفود پر کھول گا جس کا تسخد ڈاکٹری اصول سے اقرب ہوااس کو استعمال کروں گا یا کوئی طائع کے کہ جس بھول کے فیصلوں کو قود پر کھول کا جس جسٹس صاحب کا فیصلہ کا توان سے اقرب ہوا اسے شئیم کرنوں گا کہتی جمیب بات ہے کہ ڈاکٹری سے جالم کو تو ڈاکٹروں کے بیک کرنے کی دجازت نہ ہوا در قانون سے اوافق ماری کے بیک کرنے کی دجازت نہ ہوا در قانون سے اوافق ماری جسٹس صاحبان کے فیصلہ پر کاری کی تو جین عدال سے قرار یا ہے جمر ایک جائل ہوائی کو افتیار دیا جائے کہ جمیزین پر کار جین کرے۔
جو شرائط اجتماد سے قالی ہوائی کو افتیار دیا جائے کہ جمیزین پر کار جین کر سے۔
جو شرائط اجتماد سے دیا گا ہوائی کو افتیار دیا جائے کہ جمیزین پر کار جین کر ان سے جھے تو اسے اور کارائے سمجھے تو اسے

رائع برعمل کرنا لازم ہے کیونک غدیب مرجوح عش منسوخ کے ہے، اس لئے رائع کے مقابله میں مرجوح کو اختیار کرنا با بھاع امت باطل ہے ہیں اسے داتے برغمل کرنا ہوگا۔ اب رما بيسوال كدستلدر ج كيد د ع قورج كي دوطرية (12/rt) جں ایک ریکہ ہر ہرمسئلہ بھی تداہرے اوبیدے دلا**گ**ی کا تنصیلی علم عاصل کر سے بھرا کیے کو ترجيح ويرتو بيمي مقلد يا غيرمقلد كي بس كي بات تين، أكر كو في غير تقلد ابيا رعوي كرية بم اے كيف ما آخل تقد كے فقف ابواب سے ايك سوسائل بيش كريں مے وه غيرمقلد برمنك م جارون ائدكا مسلك تائ كا بحربر برمنك يرجادون الماسول ہے دلاکی بیان کرے بھران بر خانسین سے امتر اضات کفل کرنے ہر آیک کا جواب دے اور المرتبح صرح احادیث سے ترجع وے ، ہم نے بدت سے خبر مقلد بن کو یہ وعوت دے رکمی ہے بھر کوئی غیر مقلد اس کے لیلئے تیار خیرا، پس پی طریقتہ تو مکن تیک (اور دوسرا طر بیزے ہے کے متلد کی تریخ اجالا ہوئی ہے جیسے کوئی مریش کی ڈاکٹر کے بر برٹستو کو

چک کرنے کی اہلیت تونییں رکھتا تگر اجمالاً جانتا ہے کہ فلال ڈاکٹر صاحب کے ہاتھوں الله تعالى نے بزاروں مریضوں کو شفاء بخشی ہے اور علاق مجر کے بڑے برے واکٹر اس ے مشورہ کرتے ہیں اور بڑے بڑے واکٹر اے اپنا امام مانتے ہیں بھے گئی حاتم کو، پېلوان رستم کو محدثین امام بخاری کو، جمته ین امام ابوحنیفهٔ کونیوی خلیل وانحنش کو اینا امام مانت میں ،ان محموار شہادتوں سے اس کی افضلیت کا یقین ول کی مجرائوں میں از جاتا ہے ای طرح عای آ دی کے ول میں ایک امام کی افضلیت کا اعتقاد آجاتا ہے اور ال ك ندب كورائ مجمتاب- (يى تقليد فخص ب)

(١٣٨/٣٤) و يكيف عام مقلد بهي تحيى بناري كى حديثول كودوسرى حديثول ير ترج دیا کرتے ہیں، ظاہر ہے کہ انہوں نے بناری کی برسند اور برراوی کو چیک فیس کیا بلکہ ائنہ فن حضرات محدثین ان کواپتا امام مانتے ہیں میکی دلیل اجمالی عامی کے لئے وجہ ترج بو اى طرح امام الوعنية كوائد فن في امام اعظم كالقب وإب جس عوام بربھی آپ کی افضلیت عمیاں ہے

(۱۳۹/۳۸) بعض اوقات موام ك ك ويد ترجيع عن سيات وق ب جس طرح صوبہ یمن ش حضرت معاذبین کے اجتہادات سیل الحصول تنے اس لئے یمن کے اوگ آپ کے بی فاوی پر باا مطالبہ ولیل عمل کرتے تھے بیمی تعلید تحفی ہے، اس طرح ياك و بنديش حتى مسلك كي مفتى برجكه موجود بين اوريجي فدبب بيل الحصول بات الت ان ملكون ك تمام محدثين ، تمام فقها ، تمام مضرين تمام سلاطين تمام مجابدين امام صاحب کی تقلید کرتے رہے ہیں اورشاہ ولی اللہ اپنے رسالہ "الانساف" میں قرماتے میں کہ اس ملک میں امام اور حقیقہ کی تقلیدے باہر اللمنا شریعت محدیدے باہر الله کے

مترا ف ب

عرام الل السام سابحي جاسخة مين كدا ممّان واين و ونيا مي (17-/59) مُ بِينَ مُعَمِّرِ ﴾ اورا تَعَالَ عللوب ومرغوب ﴾ و تَحِنُّ أو وَٱلْخَصْرِتَ عَلَيْظَةً لِيَرْ فِي ال المنتل نماز وه به بنس کا قیام نسا بواد. قر آت قر آن زیاده پوتر بعب هنرینه معاذبیده. کے کمی سورت پاہنے ہے جماعت ہے ایک آوقا کٹ آما و آنخضرت ﷺ نخت ناداض ہوئے اور معترے معاؤ بھے کو فتنہ میداز تک قریا دیا (بغاری) انفرش آپرانک واجب سنده والمربئة المناه ووطريق بول نكر أبك طريقة بثن امت كالقال ربتا بواور و دمرے مریقہ شہا خشاف بزن زوتوجوطریقہ اللاق دار ہوگا دی متعین رہے گا، جوگہ اس ملک میں شرور کے سب لوگ منگی مسلک بر دہے ہیں اس سے اب موام سے لئے مجي ترقيح اي ندب و والله - كيونكه الناسورت في الفاق ربية ب، ويناني مشابداد. متواثرے کہ ایک بزارے زائد مومد تک بہاں مرف منی تھے اور بالک اٹناق تھا، میا جد خالص عوادت کا و تھیں رکوئی کڑائی جٹمٹرا نہ تھا اور سربھی متواتر اور مشاہد ہے کہ جب فيبعثله بن نے اي الله قبائونتم كيا اى دن سے اختارف كا جنم كرم ہوئے، برميد مید نے جنگ ناناحتی مینکنزوں معجداں کو تالے الگے، بترا دوں دو نے مسلمانواں سے مقدمات میں کئے اور بعض مقد سے ما نگھورے سے ڈر دکر پر ہوی کؤسل اندن تلک مینے اور یہ فقط مرف تلید امام ہے آخراف کے تھے۔ یمن غاہر ہوئے اس لگئے اس ملک ایس ایک عالی نے لئے بیا تعالی دلیس کا تی ہے کہ مستعقبے ہے بھی تھاتی ہے اور اس کے ترک میں انسلاف استفارے

(۱۳۱۶) مستح بنادي شريف ي تابت بركه الخضرت من كان روست

ولی نوابش تھی کہ خانہ کھیکو بناءایرا آبی پرتقبیر کرواویں تحراس نوف ہے اپنے اس اراد ہ سے کے عظافے باز رہے کہ بچھ لوگوں کے دین سے بیزار ہونے کا ڈرتھا اس سے معلوم بوا که اگرکسی طریقه سے دین بیزاری کا خعرو ہو اور دوسرے طریقہ میں خطرہ نہ ہوتو جس طریقے میں خطرہ ہو وہ یا جائز ہوگا ، ای مرح ٹرک تعلید کے تیمیں سایہ دور میں کوکوں عیں آئی دین ہیزاری پیدا ہوئی جس کا بزاردان حصہ بھی تقییدی دور میں نظر نہیں آتا تو ایک عامی آدی کے لئے بیا جمالی ولیل کانی ہے کہ ایک غرب کو جموز نے میں دین بیزاری کیافت میلی ہے اور اس سے تفاقعت حصار تھی ہیں ہے۔

(۱۲۳/۲۱) به بالکل ظاہر بات ہے کردین کی گرفت جس قدرمنبوط ہودین کی عظمت قائم دہتی ہے، اگر عوام اپنی خواہش ہے خاہب ادبعہ سے سائل انتخاب کریں مے تو دین کی گرفت فتم ہو جائے گی اور نفس ٹراوی کے عنوان ہے وین کی تمام منطقوں کو ہر باد کر دے گا اور جو بات و بن کی ہر بادی کا سبب ہوائ کے ناحا کر ہوئے میں کوشہ ہے ۔۔۔

زیدے وانتوں سے خون نگلی آیا اس نے کہا نام شرفیل معاجب (lett/er) كرزويك وضوئيل ونا جراس في الين عمو تاسل كوهموليا اوركبا كرامام ابوعنيفاك نزد کی وضوئیں ٹونا اور ای طرح نماز بڑھ کی کیا اس کی نماز ودکی یا تعلید مطلق نے عبادت ضائع كردي_

ابکے حتی کونچرمفید نے جمابول کے مسج پر نگا دیہ اب وہ وضو ہی جرابول پرمنح کرنا ہے اور امام کے چیجے فاتحزئیں پر متااب حلی کہتے ہیں وویے وضوقا اس کے فراز تیمیں ہوگ اور فیرمقفد کہتے ہیں فاتحہ ٹیس پڑھی ٹماڑ نہیں ہوگی تو اس کو

آ زاوی اورتغلید طغتی کا میں نبید: ہے کرا بیا کراد یا ک ، ایسا بٹا اس کی نماز باحل ہوگئی۔ (۱۳۱۵/۱۳۱۳) ۔ انساد کا لفظ تغلیہ طلق پڑر مجمی آیا ہے اور تعلید تمنی پڑے تھی مُرتب مفعق ُ وو جب كنته وتت آبِ بمحل يأيس محمّة كرتفايد كالفاقر آن وحديث بمن انهان کے لئے ستول نیں بردامی لئے تعلید بھق کو وجہ نہیں کیا جا سکا گر تعلیہ بھسی کی بجث بیں اس انظ تقلیر کے بار وہی اپنے زمیود وسوالا نے افغائے جاتے ہیں

(۱۳۲۷) 💎 تقلید کا "تی کنته کاریز کیاج تا ہے از فرکوں کی صدیمے میں یفرق ہے کہ آخیہ مطنق میں بہ معنی نہ ہو ، کئے کے لئے وائسان کے کلکھے کے لئے واجسپ قرار ا یا بار یا واور تخلیر تخلیل میں بیالفظ فرام ور شرک بنتا جائے مساماتا کے لئے توال استعان في شاريع به

(۱۳۷/۳۲) 💎 عام حور نے ٹیم مقلد کن کیا کرتے ہیں کہ تشہدان زمد ہمانست سے ان مقد وبل موتات تو تقليد علق أن أوه رب كروانات أن بان تاري مي كان تقليد ت كياتهيد معتق الدب والمناخ ميامتي بيئاك بالمرار وناوامب بالوقعين كرناح مستبد عامرهور برنج وتعدين كواكب كالشبير كالتنبيد كالمعنى ساقران و (100 Page) حدیث کے عارف کی بھی کی بات پہل کرنا تو اس کے ماتھ ہو کہنا کہ تھے مطاق وابلب اليراكا قوايا معنى بواس فرآن وحديث يرض كرنا حرام مصا كونك تقليدجو والإن تنفي ون وجب فالترك له زم آبو ودعرام ہے۔

(۱۳۹/ ۱۳۹) 💎 الک افرف فیره قلد از آقاید گوامنت کتے جی دوسری طرف گفتید منطق کو داد با باید برای براه عنه کو کیورگزار نے گان کہ بیادمت کا حولی کو دن میں ال وربیوان ہے۔ ہزائر افرات مشاطول کوکرون کے نکالٹا فرام ہے کیانگی اس ہے ڈکٹ

واجب لازم آتا ہے۔

(١٥٠/٢٩) ايک طرف تقليد كوشرك لكها جاتا ب، دومرى طرف اس تقليدى

شرک کوامت پر داجب بھی کیا جارہا ہے۔۔۔ (۱۵۱/۵۰) فیرمقلدین کہتے ہیں کہ آیک امام کی تقلید شرک ہے ادرائندار بعد کی

مطلق تقلید واجب ہے اپید سکار کسی حدیث سمجے صرح کے ثابت کرویں۔

(۱۵۲/۵۱) اوركيا پريسي بيكرايك بت كوجدو كرناش باور چار يول

کو بار باریجده کرنا واجب ب، جواب صدیث سیح صریح سے دیں۔

(۱۵۲/۵۲) اگرایک امام کے سارے اجتمادات کوشکیم کرنا شرک بو کیا می

بخاری کی ساری حدیثوں کو سیحت امام بخاری کومصوم عن الحفظ ما تنافیس۔

(۱۵۳/۵۳) بعض لا فرب كتبة جن كه تطييه كا لفظ استعمال كرنا على ناجائز ب،

کیا گئی آیت یا حدیث میچ صرح غیر معارض میں اس لفظ کے استعمال کامنع آیا ہے اور میں جہ معالمات استعمال کا منابع کا منابع

كياتقليدمطلق كواجب وفي يركوني سحيح - بث موجود ب

(۱۵۵/۵۳) بعض جابل كها كرت بين كه به لفظ اس معني مين قر آن وحديث

می نیس آیا اس کے ناجاز بات بات کراصول مدیث کام الفاظ ، مدیث ک

اقسام اور جرح وتعديل كى تمام اصطلاحات النبي معنول بين قرآن وحديث بين بين اگر

نہیں ہیں تو ان کا استعمال بھی حرام و نا مبارّز ہے یاشیں۔

(١٥٦/٥٥) جب بدلفظ قرآن وحديث شران اسطلاحي عنول مين نيس يق

ال كاظم شرك حرام وغيره آپ كهال سالات بيل

(١٥٤/٥٢) لحض الذب كباكرة بن كدائد اربدكانام مديث عن وكماة

تو میسے وہ ائر سماح ستاکا نام ہی : هادیث میں دکھا ویں

(۱۵۸/۵۷) 💎 لعنس لاند ہب کہتے ہیں ہوایہ و قدوری، عامکیری کا ۲م حدیث

یں دکھاؤ تو عرض سے کرتم محاج ستر کا : م مدیث بی دکھاؤ۔

(۱۵۹/۵۸) مند تعالی نے جب فرشتوں کوئلم دیا کہ آ دم کو بحدہ کرو رہ تھم تھا اس کی اس سے مماتھ ولیل نیقی نؤ بلامطالبہ ولیل سے قرشتوں نے اس تھم کی تقبل کی اس کا

نام تنقيد ہے اور شيطان نے تنليد كا باد محلے من نہ والا تو اللہ تعانی نے معنت كا طوق اس

کے کلے بی زال دیا۔

﴿ جُونُمُوهِ شَيِطَالَ مِنْ لِكَامِا قَاالُمَا خِيرِ مِنْ هُ وَيَأْحُرُواْ مَنْ بِرَغِيرِ مِثْلُدِكَا (M./09)

کیوں ہے آپ محار میں کے اتوال ڈیٹن کریں تو رو کہنا ہے انا حیر منعہ

اگر شیطان خیرمقلد کمیس نما تو بنا کمیں کہ وہ کس کا مقلد تھا حوالہ (171/14)

قرآن دهدیت ہے پیش کریں ۔۔۔۔۔۔

ا بعض لا مُهب كنة إلى كرشيطان في قياس كيا تحاجيها كرجهزين (in/ni)

نیاس کرتے ہیں قو سوال ہے ہے کہ کیا واقع شیعان مجتمد تماریکل قرآن ہے دیں۔

(11P/1F) ا اُگر واقعی شیطان جمہد ہے تو بھی حدیث بخاری شریف اے اس

اجتباديرا بكيساجر ملناضروري فقائه كه يعنت كاطوق وكيا شيطان كواجز ملاسا

کیا واقعی ائمہا، بعرآب کے نزدیک شیطان کی طرح لعنتی ہیں یا (197/9m)

اس ہے زیادہ کیونگ اس نے ایک سنلہ میں تباس کیا اور انکے مجتبدین نے ادکھوں مسائل

این قیاس کیا ، جواب مدیث تلیم مرتع فیرمعارض سے متابت قربادی،

ا شیطان نے جو تیاں کیا اس کواٹنا ہی تمناہ موا اوراس کی تعلید نیس (mr/am) ہوئی لیکن اخر بجتمد من نے فاکھوں قبائی کئے ادر کروز ہا لوگوں نے ان کی تقلید کی۔ ان ا کروڑ یا مقلدین کے گناہ علی بھی انکہ جمہترین شریک و بیں مے پاکیس ہے ۔۔

(١٦٢/٦٥) فيك المام ك تقليد تنفي حرام ب، ال بركو كي آيت با عديث سيح صریح قیرمعارض ہوتو پیش کریں ور اپنی طرف ہے حرام طال بینا پی تشریح جدید ہے ادر بیود و نصارتی کے احبار و رحبان کی تعلید وطریقہ ہے ۔۔

(١٩٤/١٩) من كالتليد تنس ي الين كالتي برستار كالتي وم بدانا فرض ے لین ایک منذایک امام ہے ہونے قوجائز۔ اگر دومراجی ای ہے ہوجولیا قومرام تو ان علم جواز وعدم جواز برآیت قر آتی یا حدیث محج مرح غیر معارض پیش کریں۔

یا آپ کے زو یک فرق وفرنیا کے حماب سے ہے کہ ایک ون المام ہے منتلہ او چھنا فرض ہے دوسرے دن اس الدم ہے سیاک ہو چھنے حوام اور روس ہے ہے بو چینے فرض، تیسرے دن پہلے دونوں سے مسائل ہو چینے فرام ہیں تیسر ہے ے یو چینے فرض، جنی ہر روز ایک امام تبدیل کرنا فرض ہے تو براہ نوازش اس کی ولیل قرآن کی کس آیت با حدیث سیج سرت فیرمدارش ہے چیش کریں۔

(۱۲۹/۲۸) یا آپ بکنزویک منتدان کی ایک ایک باد سے کرایک باد ایک ا مام ہے سنند ہم چینا جائز دومرے ، وائن ہے حرام ،ای طرح ہر ، و نیا امام ہویا ہر سال نیا امام ہولا ۔ مدمت آیت قرآنی یا مدیرہ محج صریح غیر معارض سے ویش کریں۔

(۲۹/۱۹) 💎 نماز بین قرائت قرآن فرش ہے تو قرآن کی سامت حواز قرآتیں بین تو بر برقر اُت سیکسنا فرض ب اور برقر اُت یا نماز می قرآن یا منا فرض ب، اگر كوئى سارى عمرتمازكى بيافرض قراكت اليك على قرائت يين واكري قو ١٠ كافرمشرك حرام

كارة وكالياتين

(ويمُراعه) ﴿ جِهِ مُوَارَ قُرأَتِي مِن يَنِ وَ الْكِدَرُ أَت رِوْقِ فَارُاهِ ا

مكرائ والساكا بورا فرض او جوابه ساقوان حصر فرض ادا بوا

(اعارات) من الركوني تورت به يج كه مطلق فلات سنت ب تحرساري عمر أيك ي يحد فلات عمد ربنا حرام ب كونكه به فللدخندي كي ما نغر ب

(۱۵۳/۵۲) بب فیرسقدوں کے بال ثان میں جائز ہے اور متد بھی ہوئز ہے واگر کوئی مورت صرف تکاخ میں زعاتی گزارے و متد وال آیت اور حادیث پر ساری مرغمل تدکرے قودہ تنبیکا دیوگی یا شد؟ اور جو محرت آیک باد تکان میں دہے اور دوسرے باد متعد کرائے واس طرح ہر ہر باہ باری باری واوں نعوش پر عمل کرتی دہے اس کو بینی عورت سے کئے گنا زیادہ تواب کے گا۔

(۱۷۴/۵۳) آرآن پاک می ہو ادبع ملا الراهیم حنیفال منیف کومفات مسئد میں شاد کیا ہے جس طرح منیف کی دخاہوتا ہے ایسے ای تقلید شخص کرنے اللہ می کیک دفاہوتا ہے اور خداکی مجاوت واطاعت میں کیک دخاہوہ خداکو بیارا ہے مرام نیس ۔ (۱۳۵/۵۳) منیف کے مقابلہ میں بخضرت منگری فرائے بیران شہر الساس عسد اللہ ہوم المقیامہ خو الو حہیں۔ تقلید تخصی انسان کو ذوالوجھیں سیننے ہے دوگی ہے اور تقلید فیر شخصی میں جب تقس برتی ادر مہل انگاری شائل ہوجائے تو انسان کو ذو وجھیں عادیق ہے

(2.4.4 عا) قرآن پاک نے کوفروں کا طریقہ بتایا ہے بسعدون سے حاسا ہ سعد موالہ عدما و دالیک مال ایس کوحال کچھے دوسرے مال فرام کچھے ڈھیے ٹھی انسان ا واس بدعادت سے بچائی ہے اور غیر محمل میں جب نغسانیت شائل ہو جائے تو انسان کو اس بدعادت کا عادی بناو تی ہے۔

(۱۱۵/۵۱) - آخضرت مین کے منافق کے منافق کے میان میں اس کی ایک برمادت ہے۔ میان قرمانی: الالی حالا، و الاعلی حوالا، کمارٹر ایا کہ محالت از اعلاء میں العسیس

^{عق} تظیمتخص ای منافقات عادت سے جہائی ہے اور تظیمہ فیرشخص انسان کواس جا عاد مند کا خوکر بناد جی ہے ۔

(۱۷۸/۵۷) مسمجتد کی تعلید تعلق کی بنیاد مست ظمی پر ہے جب کد فیر جمیندین کی تعلید تحقق سف سے بدتمانی اور بدزبانی پرہے ، اول مطلوب کافی سیوب ہے .

(14-1/29) جس طرح منفرین مدید کتبے میں کد صدیدہ آجے ہے۔ واحد مجت نہیں ای طرح فیرمقلدین کیتے ہیں کہ تعلیہ مطلق تو جست ہے بھر تعلیہ تعلق جست نہیں دونوں کا ایک علی طریق کارے درندہ بہ فرق بیان کریں۔

ل المخل شاد الراس من الراس على المركزي جواد كرون كروسيان بريتان بوك كالمراج المال

(۱۸۱/۸۰) مرتقله تخص حرام ہے تو کمی لاغیب کو (بیخی غیرمقلد کو) کیاہ کیفنے کا کوئی میں نمبیل کیونکہ و اکتا ہے اس کی تحقیق محنص ہے اپنی تحقیق تحقیق مرکوئوں کو لگانا اورا بي تحتيق تحفي ان برمسلط كره لوگول وحرام يراگانا ہے اور غير مقلد موام كا اے قبال

کر لیا ہمی ترام ہے

آلر تقلد تخفی قرام ہے تو ل ندوب خیر مقلد کودری دینا آقر رکرنا

خواو جمع میں ہو یاسیق پر معانے وقت طفیاء کے سامنے ہو یا بھی حرام ہے اور س کوشلیم الرنائبي هرام أيونك يتحقيق تحفي وثي كرر باب الارد وقبول كررت جي ..

(۱۸۳۸۲) 💎 اگرتکلیدنخشی این سلنے نترک پیرام ہے کہ پمیند مصوبینیں تو بیار فیر

معسودوں کی تشدید باری باری کیول جائز ہے جب کر کانی المام بھی کی سنگ عی معصوم منیں (ہراکک کی انفر دی رائے ہے)

(١٨٢/٨٣) 💎 اگر جُمِيّة كي تقليد تحقق الل النه قرام ہے كه جُمِيّة معموم تيل أو راويان

مه بيت بحي تو معصيم نيس ان كي رواوت كيے جهند بن جا نميں گي ، آپ كا اور منكر بينا ققه ومترين حديث كاليك قناطر يقدب بك جال (اليك إحال)

(۱۸۵/۸۴) 💎 اً أرجمته کی تقلیر خمنی اس کے ترام ہے کہ وہ مصوم میس تر محدثین

ک تھے وقع میں احادیث مجی ان کی رائے ہوئی ہے۔ اس رائے میں مجی وہ معموم ٹیم ، آیاای کو جحت مانا کی شرک اور حرام ہے و فیش ال

💎 اُگر فقد ان لئے مجموزی جائیات کرنگنی ہے تو گزارش ہے کہ فقہ

کے اچھا کی مسائل تو تھنی نہیں کیونکہ اہماع معسوم عن انتظاہیے تو اپھا کی مسائل کو چھوڑ نے والے کا کہائتھ ہے العادیث میں بھی تو متواتر بہت کم بیں اکثر احادیث میحد بھی اخبار آحاد

ورتلنی میں وال ان تحل کو کیول تعلیم کیا جاتا ہے ، جواب فیره قلد نینا کے مرقرش ہے۔

حصبه ينجم

معزات ماہ وکرام اولی عمل دیئے گئے موالات کا جواب قرآن پاک کی صریح آیت ایاسچے صوت نیے معارض احادیث سے عن بے قرء ایس کے فکہ فیر مقلدین کا دموق ہے کہ ہر ہر مشتر صراحت قرآن وحدیث عمل موجود ہے اُسر جواب قرآن وصدیت انہاں وردع قرآنی لیکنس ہوگا۔

(١٨٧/) من الما قرآن و حديث من أناه كي دولتنميس "لناه كبيروا أنناو صغيره

مان کیا<mark>گی ت</mark>یداد نبان

١١٨٨/٠ 💎 كناه كيه و مدر كناه متجره كي تحريف جائن ما لكي قر آن پاك كي

آبت إله بدي كان على أري أكن عني كافري والدين

(۱۸۹/۳) من محرو کہ وی وی سوال کی کیا ای مقتم (مین حد) ہے یا واقعین

(حداه رقعزی) میں جواب بشرائط بالاقرآن وجدیث سے دیں۔

(١٩٠/٠) 💎 حداد تعزم کی تعربیت جائے ، کئے قرآن و صاحت است جال

فربائين، تني امتي غير معوم كاقول فيشانه ترين.

(۱۹۱۸) کیا تُرہات کے صورت تو جوہاتی جات آن و جابت

ئى كىرىي.

(191/1) من شبه كَا تَعْنِي النَّمِين بين ادر برتهم كي جامعٌ ما تَع تعريف قرآن ا

حدیث سے بیان فرما تی ۔

(۱۹۳۰/۷) ترزری خ احی ۴۱۹ این اج عین ۱۸۰ پر بیرد بنت ہے میں دی

بنیسه داد حد علیه مینی بس فختی بن فور (گائے بینیس، بری ایسیس، بری بینیس، بری بینیس، بری بینیس، بری ایسیسه داد حد علیه مینی بری بینیس میرس به بینیس میرس به بینیس میرس به بینیس بری با ایسی کار دخترت این میاس بنید. امام تردی می میاس بنید ایسیس بری داموش بین این سب سے زو یک بریام طال اور جائز بین .
طال اور جائز بین .

(۱۹۳/۸) جول نے فرض روز ور کھا ہوا تھا فادئد نے اس سے محبت کر لی، ب محبت حرام سے یا طلان، دونوں کوسنسار کیا جائے گایا تھی یا کیا مدے۔

(١٩٥/٩) يوى يقل عقى اس عميت طال بيا حرام ادر محبت

كرفے پر دونوں بركيا مدسكھ كى مصب يانكيں

سی بروں ہے وہ ماں وہ میں جو کار ہی تھی تو حالت احرام عمل خاوند سے معبت کر لی

وونول پررتم يا جلدي سے ولتاك صدبارى مولى

(۱۹۸/۱۳) ایک آدی نے فقہ میر علی باحا کرخی کھانا جائز ہے، اس نے

منی کمالی اس پر کتے کوڑے مدجادی کی جائے گ

(٢٩٩/١٣) ايكفس في ودكاييه كمايا جويقية قلى قرام بهاس يركت

کوڑے مدہے۔ ...

(۱۲۱/۱۲۳) ایک فخص نے بادا مطراد خزیر کا کوشت کھالیا قرآن وحدیث بش

اس پر کھنے کوڑے مدے

(١٠١/١٥) أيك آدي فون لي جاء ہے۔

(٢٠٢/١٦) ودرايتاب لي لتا بـ

(۱۰۳/۱۷) تیرا باخاند کھالیتا ہے ان سب پر قرآن دھدیث بس کیا حد ہے۔

(۲۰۱۳/۱۸) 💎 زنا موجب حداددزنا موجب تتویرکی جامع باخ تویشب قرآن

وصعفے میان کریں۔

(٢٠٥/١٩) قواب صاحب مرقد الجادي عن ١٠٥ الي لكن بين كرابك فض ف

ز نا كيا اور الى تفقد سے لا كى بيرا بولى دولا كى جوان جوڭئى تو زانى باپ كا الائ اس اپنے نفقہ

کی بن سے باتز ہے، اس استار کا ثبوت کمی مجمع صرت فیر معارض حدیث ہے بیش کریں۔

(۲۰۱/۲۰) واب صاحب قرائ بيل كدا بي عودت يا نوشاي كي وبر ذفي

مرف وابل برانگاریمی جائزشن .. (بدیه امحد ی ن اس ۱۲۱)

(۲۱/۵۰۱) قواب وحيد الزمان صاحب فرمات بي كرمند برا الكاريمي جائز فيل

فين كوئى فيرمقلد عورت مند كراني ومرية ومديا قعز رية كلااس برا نكارتك جائز تين

(۱۰۸/۲۲) 💎 کس مورت نے ولی کی اجازات کے بھیر نکارٹ کیا، حدیث میں

اس فکاح کو باطل کہا می ہے (ترقدی من ۲۵۱ این مابد من ۱۳۹) اس کے بعد صحبت کی

توالنا دونوں برکون ی حدداجب ہے رجم یا سوسوکوزے۔ بواب حدیث سح سرع غیر

معارض سنندوجي

(۲۰۹/۲۳) مناف كي فقه كي كتاب التخ القديرين ۵ س ۱۳۳ درمديد يي كي كتاب

طاوی ج ۲ ص ۹۹ میر ب کداگر کوئی تحقی ، ل ، بهن وغیره محروست سے فکان طال سمجھ تو

وہ مرتبہ اور واجب اِنتقل ہے چمر غیر مقلد ساء کیوں بہان بالدھتے ہیں کہ فقہ حتی ہیں

ون سے نکائے میں م^{اقع} ماہتے ہ

(Pilifra) - حدیث میں بقع میں بات و سرام وافالو مسیح شید یا خیف ال کی حداث اول میاد و باز الصور السائیل بین کی جیسیا اور دفاد الله الحسین عمل نکم و د کے باد دسمی تاثیق تاریب فرو کیں

(etrice) — الحق مديث عمل فالت كواست لكان كالأرب و والكان الحاكة وريق عديد التواد، يسراحت مديث كل سد يأمي -

(۱۳۳/۲۰) 💎 شمل طاری میں پاپ کی تاجہ یا عائدی کا سات والے کی آن

والركاء الانتفاد الرب يصامد الأبياء مرف الكان كال

(١٩٣/١٨) 💎 کيان ئے ليان کے بعد ميت کمي کو گئي و گئين ہيا جمال

ما ربعة في من أنه معارض بنه في أمريه ما

يارات عن مداك والاب ومات كي تولي من معايش عديث وقوع أجراء

ہے و یقور کس مدید کئے سرت غیرہ حارش کے غلاف ہے۔

(سند ١٠) 💎 بهب كه فيم تلدين كي تلب فرف الووي ك مواقع زناك أناه

ب در توریده امناف شده ویک نیسانول تاراها در ایک نوار سر آنویز سر وقل تک

بي آب كس مند الناف يراعز الن كرت إلى -

(۲۱۸/۳۲) جبآب كى كتاب زنل الديرار في اس يرب كد منعد كا عاز قرآن كى قطعى آيت سے ابت باور بدية الحمدى جاس ١١٨ ير ب كد حدر رف کرائے پرانکاربھی جائزنبیں جہ جائلکہ عدیا تعزیر ہوادرا حناف کے نزو کے ایزت دے كرزناكنا كناه كيروب جس كامزا أيك قول من حدب والدين وجوب الحد كسالسنساجيرة للحدمة ورفقارج ٣٠ ع ١٥٤ اورايك قول من تعوير ي يجرآب احناف يركيون احتراش كرت إين اكيا آب كوخطره باكدآب كي عورتين حديا تغزير کے خوف سے متعد کرانا نہ چھوڑ ویں اور کارہ بار میں کمی نہ آئے۔

(۲۱۹/۳۳) عرف الجادي على عنه مر يكلما ي كه الرفظر بازي كا خوف بوتو مروكو باتھ سے اور مورت کو پھر و فیرہ سے منی نکالنا واجب ہے، بدمسئلہ کس حدیث محج عرب فير معارض سے ثابت ہے۔

(۲۲۰/۲۳۳) عرف الجادي ص ١٠٠٠ يرب كر بعض صحاب ١٩٦٥ مشت زني كيا کرتے تھے ان صحابہ پڑکے اساءگرا می حدیث سمجھ غیر معارض ہے چیش کریں۔

(۲۲۱/۳۵) عرف الجادي ش ۲۰۸ ير ب كه جومرد يا كورت اين باتحد سيني

خارج کرے ندان برحدے نہ تغزیر بلکہ ایسے باقصیت سلمان کوایڈ انہیجا ؟ حرام ہے،

اس کا ثاوت کی آیت یا حدیث سیج صرح نیر معارض ہے ہیں کریں (۲۲۲/۳۱) عوف الجادي ص ۵۲ ير ي كرمان يمن عي ك صرف قبل ويرك

دو سوراخ چھوڑ کر ہاتی سارا جسم و مکینا بھی جائز ہے اور ہاتھ پھیرنا بھی جائز ہے اس

مئلہ کا ثبوت کسی آیت قر آئی یا حدیث سی صریح غیر معارض سے چیش فرمائیں۔

(service) 💎 جب آپ میکاند بهب علی در زانی به نزومند جانزاس براهتراش رَ آنِ ، نَكُرُ المناف كَينُوهِ بِكَ عَلالِيدُي شَرِطَا مُرَوِيتُمْ فِي يَجْتِهِي النابِرَاعِيّرَانس به كيوب ب (۱۰٬۳/۳۸) . . . ایک شخص نذر نفیج الله کا کهرز کها لیتا ب به سر شخص پرقر تان و عد بن بن کئے گوزے عدمتم ریسے۔

الوث: ١٠ مندريه و ١٨٨ مولادك كـ جوابات الله والوث يكسما في قرآن وك كي سریج آیت باء عادیث سیحت بی قبر معارف سنا پیش کریں اور قبر مقعدین کی آبادیں ر ہے جو اسال کیسے جس اگر آپ کے فزو کیک دوناہ جس تو ابن کو ناماز جارت کرنے کے لے الدورے میں چش کریں ورند یہ تینت واللے وہ فیل ہے کہ فیر تعدین کی سب ا خاجي قرآن وبديث ك فادت جن اه ريامه أل ك محيح بوت يا خلط او يتديرة آن وجه ري بين من مند كريكته.

حصهضتكم

أنيا بخاري وسلم توسيعين القامعاني في قرمايات يا أمخسرت منينة (rra/r)نے دکیا ان ووٹوں سکاول کو معمون نہ مائے والاقر آن کا مکر ہے و مدیث رسول اللہ عظمت کا ية قبل أراضع الكتب بعد كماب القدالهاري تعج البناري باقرائن كي (rr=/+) آیت ہے یا متحال ستا کی حدیث الیال کاسترخدااور رمول منطق کا مقر سندج مَنْ فِي مايداحاديث كوابن ملان شرفتي موجب المرتظري كمتب جي (rnz/r)اور علامه قوء تی شأمی قرمات میں کے موجب علم شیس ہیں، عنامه قرشی الجواہر العضيد عیں، علامہ ذہبی اور این امرنی ہے کئی کرتے ہیں کدا وی شاقتی بلم فقہ ہم حدیث بلم اللت

ا در مکارتر کریں این ملائے ہے بہت بعد ہیں (ان جس ۱۰۳ میں سادب ہو سادب ان موسی ۱۲۸ حاشیہ) اور بیکی تون اکٹر محققین کا ہے، آپ لوک قرآن و حدیث کی روش ایس کس کر رائع قرار دائیج میں

ے ندائیب ارجہ کے اجماع کی مفت سیمیں پر ڈیٹ ٹیس ہوتی (۲۰۰/۱) میں امام افاد کی کی احادیث میں ہے الااحادیث پر تفید ہوئی ہے۔ سی کی احادیث پر تفید ہوئی ہے۔ سی مسلم کی احادیث میں میں احادیث پر تفید ہوئی ہے۔ اور امام برقارتی نے ۴۵ سال

راویوں سے صدیرہ ٹی ہے جنتا ہے امام مسلم نے مدیرہ نہیں ٹی۔ اور ان جی ہے ۹۸ راوی سے مدیرہ نہیں گی۔ اور ان جی ہے ۹۸ راوی سے معلم نے جین سے امام مسلم نے جین سے امام بخری کے دراوی سے معلم نے جین، (اسمان والغر میں سے ۱۹۴ راوی پینلم نے جین، (اسمان والغر میں سے ۱۹۶ راوی پینلم نے جین، (اسمان والغر میں سے بالخی یا مات میں کاروالا کھنوں کے باروالا کھنوں کے بار مسائل جی باروالا کی دلیل ہوئی بائیس ۔

(brise) من عام بوطنية وبعين ش العالي ورامام بغارت الا وموسم تي

تا يعين من بين بحي فين عن إدرايا منها هيأ و صديبين المعومية لأحمد (و سب الله ا مسيسير الکي بنتارت عمل شوال خيرالفرون کي اداويث کے مصدات نيز پاتو بفاري المستم ے آئنس موے ماند

(۲۳۴/۸) معرب العرب الوكر صديق رمه الاقرام امت ب أغلل دوز منصوص -ا مام وفتهم کو مالعد کے نستید ان ہے افعن مورنے پر انسانو النائی اور امام نفاری کا ریعہ ے وید ٹین سے بلغس ہو: مقدر نے کا تول سے این ملائے وقیرہ کا ایکن عفرے ابوک سد اق بن کی انفلنیت کا به قاب تن به با تا که است اوگیر بند . کی دوایت گراه مدینے کے مقابل کی کی مدینے نہیں کی جائے کی الام ابوطیقا کی افغیت کا پرمنتاب نھیں آیا باتا کہ مسائل ایشیاوں میں نام صاحب کر اجتبادیں جائے قوان کے مقابلہ میں نسی کا انہجاد آبول نہیں آبیا جائے گالنیس امام افار کی کے بارویس فیم مقعد بن با مقیدہ ر کھتے جیں کر ان کی روایت کے مقد بلد ایس نہ ان ان سے پہلے اُ تبدیکی روایت وائی جائے کی پرون کے نام عمر کی ندران کے رحد والوں کی آتھے جس کی آپ کے یا ان قرآن ا عدیث ہے کیا وکیل ہے

(۲۳۳/۹) 💎 امام ومحظم الوصنية كي التاريم فمن كر 🗅 ۹۸ فيصد الن سنت و ا آبیا عت تعلی نماز ادا کر رہے ہیں آ یا د نیامیں سرف نئیسآ دی کا اس بیش کیا ہو مکت ہے بيوسرف بطارق كومنائين ركار ترميرف أيك راعت مرزع حاكر اكلام عديد

(۱۹۲۰ م) 💎 سيدة الامراغيم 🚅 في وبُوتيتي وهيال كو ترف حاصل ہے مكن اس کا کوئی یہ منی ٹیم لیتہ کہ ہیں ہر جزائی سنلہ کوئنٹی باشول کا شرف حاصل ہے لیکن بخاری مسلم کے بارے میں یہ کہنا کہ ہر حدیث کوتلتی بالقول کا شرف حاصل ہے بالکل غلط اور باطل ب بانتين -

(۲۲۵/۱۱) کیا مجیح تظرید یونیس کدامام صاحب" کے قدیب میں جو سائل ا بنها على جين ان مِقْل كرمًا بإلا بنهاع واجب بإدران كا مخالف ابنهاع كا مخالف اورجن مسائل پر اجماع نبیں ان پر التزام قدیب والے کوهمل واجب ب نه که غیر حتی کوه ای طرح سجعین کی جن امادید پر غاجب اربعه کا اتفاق عمل ہے ان پر بالا نقد وتبعر وقمل واجب ہے اور جن احادیث پر بعض غدایب کاعمل ہے بعض کا تبیں ان بران احادیث کو ترجیح ہوگی جن کوصاحب فدہب نے اختیار فرمایا کیونکد صاحب فدہب کا اجتہادان کے اجتماد ہے اعلیٰ وار قع ہے۔

(۲۳۱/۱۲) کیا میسی بات نیس که علامه ذہبی فی میزان الاعتدال میں اور حافظ ائن جُرِّ نے تہذیب العبدیب میں بہت سے راواول کے بارویس امام بخاری کے مقابلہ میں دوہرے ائمہ کے اقوال کوئر جیج وی ہے۔

(۲۲/۱۲) مستح بخاری کے اصح والے بر شوافع مظلدین نے خوب زور دیا ہے ﷺ ابن العمام حتی، علام علی حتی ،علامہ بحراعلوم حتی اس کی پرزورتر و پد کرتے ہیں (ما تدس البه الحاجة) مرغير مقلدين اس كا انكاركرني والول كو بدعتي اور ممراه مجهة میں لیکن خود تظلیر شخصی کوشرک و بدعت قرار دیتے ہیں جس برامت کا اہماع ہے اور ہیں ر کعت ر اور کے اور ایک مجلس کی تمن طلاقوں کے تمن ہوئے بر صحاب رائد کا اجماع ہے، غيرمقلدين ان اجهاعول كمتكرجين تو ووبدعتي اور كمراه كيون نبين الكياكي حديث يحج صریح فیر معارض میں یہ آیا ہے کہ صحابہ ﷺ کے اجماع کو ماننا کمرای ہے اور چوتھی صدی کے ایک وجہ رخ کو ویمان آبھٹ اور دوسر کے کوئنز قرار دیا۔

(۱۳۱۶) ۔ ''کیاد جدے کہ فیرستلدین بخاری کی تعلیقات کو جمت استے ہیں۔ منیس مرسطات تا بھین اور بالا فات مجزئو جہت نہیں ، نئے حالا نکہ مرسل کے بعث : و نے پر دوسوسر ل تک اجماع و باہے ، آخر یہ فرق مس حدیث منجے صرف کے قابت ہے۔

(۱۳۰/۱۹) کیا ہ جہ کہ غیر مقلہ بن بخاری مسلم کے راویوں پر جب وہ ۱۷ فاف کے دائل میں آئیں راے دن نہایت علا انعاز میں بڑح کرتے ہیں لیکن اگر کوئی حتی بھاری مسلم کے راوی پر جرح کرتے تھ ان سکرتن و ن کوآگ گٹ جاتی ہے۔ (۱۳۱/۱۵) کیا وجہ ہے کہ ارم مسلم، ایا مرابع داؤد، ایام این باہر نے اپنی صحیح

کتابوں بی انام بخاری کی مند ہے ایک صدیدہ بھی روابعت نیس کی اور انام نسائی نے ا

صرف ایک مدید ان سے دوایت کی ہے۔ (۱۳۳/۱۸) کیاوجہ ہے کہ ادم ڑھائی نے فقیاء کے قراب نقل فرد کے جرب

ر ہے۔ حمرامام بڑارٹی کے خارب کوٹل فیس کرتے جس سے صاف کا بر ہوتا ہے کہ امام بڑارٹی

كوامام ترفدني فتيرفيس بجحظ تقي

(۲۳۲/۱۹) مام زدی این کتاب می ویکر انترے برح و تعدیل کے اقوال

بكثرية نفش كرية تين محرا ام بخاري ب صرف والتمن جدُنقل كيا، يه كيون.

(۲۲۳/۴۰) 💎 کیا و جد ہے کہ بخاری معتزل قدریہ جمید ،خوارج روافض وغیرو

برتی راوول کی روایات کا ملوبے

حصهبفتم

دا**/ھے) . مرا**ب مصوبی زبان میں فرکھتے ہیں اس فرھیتی کی جامع ، خ

تعریف کمی آیت یا عدیث سے میان فرما کیں

(۲۳۱/۴) مركانظ مازى مى يى استال بوتا بيديار اكرورا بيات

محن معنول بل

(١١٤٤) كي احاديث عن فيركوشوت عند ويكف، بات كرف، بات

لگانے وغیروکوز تا کہا تمیا ہے، ان احادیث عمل زیاحتیقی معنوں عمل ہے یا مجازی معنوں میں ، اس فرح کیا فریعی کیازی معنوں میں آیا ہے بیٹیس

(۱۳۸/۳) بدایافته شنگی می ب کوفر که ایک قطره پینے پر صد ب کیکن بخاری

ع السریان الرحضرت ما نب بن بزید اور حضرت کل دخی افتد عنما ہے دوایت ہے کہ استخصرت ملکتے کے زیانہ میں تحریر کو کی مدمقرر نرحی

(۱۳۹/۵) تمام الل سنت والجماعت كا ابتماع ب كوفر پينے كى حد (۸۰)

کوڑے ہے اس مدکی بنیاد کوئی آیت قرآ لی ہے یا صدیث مرفوع یا دائے اور قیاس، مصرف

جواب کی میں مرزع غیر معادض مدیث سے چیش کریں ۔۔۔۔ دین

(١/٠٥٠) فقد حقی: براي عالمكيري وغيره بي ب كه الخرك ايك تطره كو

علال تھنے والا کافر ہے۔ آپ کے فرو یک بھی کافر ہے اِنٹیس جسی معتبر کماب کا حوالہ معتبر استخداد معتبر استخدالہ معتبر استخدالہ میں استخدالہ میں استخدالہ میں استخدالہ میں استخدالہ میں استخدالہ م

دیں۔ نیز حق مسئلہ کا مجع یا خلا ہونا حدیث مجع صرح فیر موارش سے نابت کریں۔ (عاد ۲۵۱۱) کیا مجع کا در ک جی ہے کہ شراب ہے والے پرلس فلن کرنا بھی مکر واسے۔

(۱۵۲/۸) بداید عالکیری و عیره میں ہے کہ مین فرحزام ہے بیعنی خواو ایک تطرو

ے خواہ نشر آئے یا نہ آئے ، اس کامنچ یا غلط ہوتا حدیث سے دکھا کیں، نیز اپنی کمآب

مے حالہ سے می تھے تھے۔

وجدید ہے کدوہ اللہ کے ذکر سے روکن ہے اور آئیں جی دھتی ڈائن ہے اور برآ جارتشہ

ے ہیں تو کیا اس آیت ہے ہی تھنا کہ جب تک نشرند آئے شراب حرام نیس قلا یا گی اس کی تغییر حدیث مرفوع ہے بتا کس

(۲۵۳/۱۰) بدایه عالمگیری می تکها ب که الخراکی آن نجاست فلیظ ب جیسے پیشاب نیکن آپ کی سی بور در الابله و حرف الجادی ، کنز الحقائق و رزل الا براد میں تکها سے الدحد ملاو خریاک ہے جنی فقہ کا مشارکس حدیث سیج صریح فیر معارض کے خلاف

(۲۵۵/۱۱) فقد حقی کی تمایوں میں جائیہ ، عالمگیری وفیر و میں لکھا ہے کہ الخرکی کوئی قیت فیمیں ، اگر کوئی فخص کی گی خرافہ بل دے تو اس پر کوئی مطان فیمیں آئے گا ، اس منا ہے افاد یا سمج جونا کسی عدیث سمج صرح فیر محارض سے ثابت فرما کیں اور اپنا مسلک

(۲۵۱/۱۲) فقد منفی کی تمایوں میں لکھا ہے کہ فحرے کی طرح کا فائدہ حاصل کرنا حرام ہے، آپ اپنا مسلک کی معتبر کتاب ہے لکھیں۔

(۲۵۲/۱۳) بداید میں لکھا ہے کہ اگر تالمی میں فرکی تجھٹ لگ جائے تو اس

ے بالوں کو تھمی کرنا حرام ہے، اس بارہ میں آپ اپنا سیج مسئلدا پی مشتد کتاب کے حوالہ کے تعیس اور فقہ کے اس مسئلہ کا سیج یا غلط ہونا کسی سیج صریح حدیث سے ثابت کریں۔

(۲۵۸/۱۴) برايد ين لكها ب كدشراب بينا تو كاكس زهم بيروني يرجمي خراكانا

حرام ہے، آپ کا فتوی اس بارہ بین کیا ہے کی مشد کتاب کے حوالہ سے تعییں اور فقد حنی کے اس مسئلہ کا غلا یا سمجے ہوتا کسی سمجے عمر شک غیر معارض حدیث سے ثابت کریں۔

(۲۵۹/۱۵) خنی ندب کوخرے اتنا بیر ہے کہ فرے ساتھ ایمد کرنا جمی جائز

النين (مراب) آب ال سننه كالتم إينًا جها حيث في منتها الإمعتير أمّاب بف جوابه التيانيين الرافق منتی کے اس منتقد کا خلط و صحیح ہوتا تھی صریح میں مطابقی صدیدہ ہے۔ تا بت کر ایس المنى فلا ك مطابق مسمان كونو اوا ك طور يرشر يين حرام بيدي. مسل ن کوتر اتنا بھی اجلات تیس کہ کسی وی کافریا کسی جانور (گائے بھینس، نیس میکری) کوئل دوا کے طور پرخم بے وے ، میٹر ام ے ،آپ اینا مسئلے کسی مشتد کتاب ہے تعییں ۔ (4 / 17 *) ﴿ حَتَىٰ مَدِيبَ مَنْ مِوافَقَ شَرَابَ أَنْ نَبِيتَ مِنَا أَكُورُ كَا مُنْتَ كَرِمَا بكي كرده ٢٥ (قاضى خال) آب ابنا مسَدكى مشتر آماب سے تلعیں . اکر شریب میں آئی و مدھ کر روٹی بکائی جائے تو خلی ہوہ ہے (marán) موافق این کا کمیانا کاجاء بینه (جوابه)لیکن آمید کی کنامبه قزل الابرار میں مکھناہے کہ وورول لمانة طال ب آب على مستدكا غطاء وتاهراب مستدكا مج بهزا مديث سن وثي أراي . ا فقد منگی کے موافق ابو ولاپ کی نہت ہے صرف نم نوو کھیتے رہانہ مجی (tyr/ja) علار نہیں (الوہیز) آب این سنلہ کس مشتر کتاب کے موال سے نکھیں اور فقہ کئی کے اس سنلہ کا تنج ما خلا ہوہ کی سی صراع غیر معارض حدیث سے جاہت کریں تهام الل حديث علاء جوائي تغريرون تحريرون شي ياجهوث بوليلت (caries) میں کہ بدید میں جارتم کی شرابوں کا چنا مغال مکھ ہے و مہان ہے جو میارت ویش کرتے ہیں اس میں مرے سے فمر کا نفطا محافیص فا شراب کس غلا کا تر ہمہ کرتے ہیں ہ اس عمارت سے ایک مطر میلے بیاڈ کر ہے کہ گخر کے احکام فتم ہو چکے اب ماسوی دال مرين لاعتبرية فمريك مواياتي تمام مشروبات هجا وفام شروع بوسق بين الب ماموي الخركا ترانب تراب كرة كيَّا ديمل وفريب تبين ، يكرا تحقيه منى برمثن المن نبيذ كالقفاموجود

ب، خود وحيد الزمان خال في بحى بدية المهدى من ١٢٠ يدائ كوفيد كا مسئله بى بتايا ب
اور حضرت بيران بيل في بين هنية الطالبين باب التبلغ من اس كوفيد كا مسئله بى قرار ويا
ب، اب فقذ كى كتاب مين الرفيد كا ترجمه شراب آب لوگ كرتے بين تو كيا حديث كى
كتابوں ميں بيمى فيد كا ترجمه شراب كريں گے اور بين احاديث مين المخصرت والله اور
سحابه بيشكا فيد بينا عابت ہے تو كيا معاد الله ان احاديث كى بنا، ير المخصرت والله اور
سحابه بيشكوش اب توركبنا بائز بوگا، چرصاحب بدايد في جو روايت وليل مين بيان
قرمانى ہے حور سے المحسر العبيها و المسكر من كل شواب اس سے بھى ماسونى الخر
كوش باب توركبنا اور فقد شنى
كوش باب توركبنا اور فقد شنى

(٢٦٥/٢١) کثر غیر مقلدین رات ون میجوث بولیج چین کدفته ختی می تکسا ہے کہ اگر 4 پیائے شراب بی کی جائے اور نشر نہ آئے تو حدثین، ووشراب میں لفظ کا ترجمہ آمر سے چین، کیافتہ شنی کی میارت میں لفظ خرہے۔

(۲۲۲/۶۲) سمجے بخاری ج ۲س ۸۲۷ پر لفظ فحر ہے کہ فحر میں میجھی ڈال کر وحوب میں رکھ دو پھراس کا استعمال جائز ہے واس کا کیا تھم ہے۔

حصه بشتم

حعزات ملا کرام ایا تو ایک حقیقت ہے کہ باک و ہند میں انگر مز کی دور ہے مِلے سب اہل سنت والجماعت مسلک من کے بابند نئے وان کیا مسامید انتقاف وافتر ال ے بائل از آشاقیں، ان مساجد میں درس جہانہ بند کر کے جنکز افساد بدوا کر سٹ کے نے ایک از نہ ہے تر تا بیدا کیا گیا، ال فرق کے وکیل مودی محد معین بنالوی نے مرز صاحب کی خوب بعرینسی کمیں .. اور جہاوتو وتھر ہیزے خاف حرام قرار دینے کے لئے ا عَنْ إِمَالِ اللَّهُ تُعَالِ فِي مِمَالِ الجِمَالَ عَلَى أَوْرِ يَكُاوُ مِنْ كُلُونَا فِي عَلَمْ تُلُو عِيمَة لئے محنت کی اور بہنت میں وہ مرز ا ساجب ہے جس بازی لیے میا اور مکومت برطانیہ کی طرف ہےاہے مام کی بھی کمی بھران نے مسلمانوں میں فعاہ ڈا بنے کے لئے دُن موارث ا کا شتہ را دیا اور وہ میں کل جو قبر القرون ہے امت میں متو اترا استعمول بہا تھے ان کو عوام میں مشکوک کرنے نے کے جو اپنے آپ کو بارہ موسال کے تمام طاہ وحد ثبان ہے ہوا تھات کرنے کے لئے اپنی تواری تا تا تھا ہے ہوا ہے مرجب کے اندر یافعہ ماہی شراریان ترسوال کرے کا کاظر بھتا اس نے مرزا تا دیائی کی تھنیہ تھی میں اختیار کیا، وہ شرط بقی کران مسائل کے لئے کوئی آبیت باحد بٹ تھے جس کیصت میں کسی ڈکٹام نہ براہ رووای میں میں جس کے بینے بیش کی روے نفر مرز کا تنفی لداالمنا، اور حاکم نے میں ہے کہ دیمانتہ میں بیان کی تعین (مقدمہ نودی شربا مسلم) اساشرہ نے نوشم تی سیج مدیثوں کو ہائے ہے انکار کرایا۔ حدیث من لذات ادر مس لغیر ، جو والا تعال مجت تغیم ان عے قبول کرنے ہے اٹکار کرد ہے اوقطعی اور تیج والت کے ملاوہ ہرتیم کی

ولالقول کو ناشیج ہے انکار کر ویا، اس طورت اسمام کے علمی سرنیہ یعنی صدیت کے ۹۸ فیصد کا انکار کرو دان کے علوہ برتو اس کی می ترکت سے میں کا حالی مرکب ہونا طاہر ہو گئا اور پیغا چلا کہ مدوین کا جہما ہوا وشن ہے کر بعض جانل لوگ اس کے دام قریب عمل ''مجے اور و خبر لٹرون کے مسلک ہے مخرف یہ آٹراس کے تقلید کا دم مجرنے کئے الکیں چونکہ وہ رہن کے مسائل ہے دافق نہ تقاام لینے بن کی تفقی شاکر رکا تو وہ ملف ہت بیزار لوگ قاد پر نیب اور نیجر بات کی ٹرود میں بیلے مجھے اس ملر بیا اس مخص نے عِلموں آومیوں و خیرائقرون کے سعک سے برقل کرکے دین می سے بیزار کہا اور وہ بارا فرکفر و ارتداد کی دلدل میں ما کرے معان نے طبقہ علام تایا میں کی جیامت فاہت کرنے کے لئے اس کی شرط کور سے رکھ کران ہے مدموال کما کہ(ا) تم ابی شرط کے موافق کوئی آیت باضح حدیث اجس کی سحت میں کسی کو کلام ندود اور دوای مینند میں جمل کے لئے باق کی جائے تھی آفھی مرتج الدیالت بھی ہو) وہش کرو کہ ولیل شرقی عرف ورصرف ولیل کا ای ایک تشم میں ای مخصر ہے سکین وہ مخص وراس کی ساری جناحت آج نک عاج اور ذکیل ہو دی ہے اور اپنی جہالت کاشلیم کر رہی ہے اور عمار نے موام میں اس کی جمالت قابت کرئے کے لئے مجھی اس سے مندرہ والی سوالیات کے تھے، ان مولات پر ایک موساں کا عرصہ کز ، رہا ہے تکرتمام لا زیب غیرہ تقعد مولومی ریقرش مرابر ہے کہ ہی مرت جارہ ہیں، اب جوزندہ میں ان کی یاد دونی سکے لئے بھر ہم گزارش کررہے ہیں کہ خدا کے لئے ان سوالات کا جواب دے کر اپنی جد عت کو مطمئن کریں وونہ آپ کی بھاعت کے جس آدی کو یہ ہے چل باتا ہے کہ موسال ہے جاری جماعت ان موالات کے جواب سے عاجز ولا جارادر ہے بس ہے تو وہ تا دیائی، کننے کی اعظر میں حدیث کی صف میں جا کھڑا ہوتا ہے اس سے خدارا ان موالات کا جواب اپنی شرع بازیاد کر کے ویں مندرج والی مسائل میں کوئی صاحب کوئی آمیت یا حدیث مج جیش کرے جس کی صحت میں کسی کو نکام نہ ہواہ روا اس میٹلے میں جس کے لئے ویش کی جانب انسان میں تفطعی کہ اوائٹ جی مو

(٢٩٩/١) محترب أينك كا وكول بالقدار وكول بيد مرافعات وقت اليشاري

ے این کرنا

(١٥ - ١٥) مخضرت للنظمة كالبيث بميث يبيني باتح بالده كرنماز يز حند

(١٤٠/٣) مخضرت ليلخو كالميث بميث برنماز بمن أمّان بالجر مُنار

(۱/۲/۱۳) عديث قرأت ظائمه المام كاليت و الزفري حقر أن كالعدم وي مود

(42 1/4) لند قبال با آخفرت مَنْطَة كارتبار بولين مصكى كي تقليدش كارت كرزر

(۲۷۳/۱) کناب وسنت التارین و قبیاس کافرام دولار

(عُدُنْ ۱۵ مَا) مَنْ اللَّهِ فِي وَ مِنْ لِدُونِ عَلَا مُرْتَ لِيَعْمِونِ مَا قَالَ شُوبِرَا وَلَيْ سَنْرُاوِ عَلَيْهِ - تُرَاوِ عَلَيْهِ

(۱۰۱۸ م.) اینهٔ اخداد ابد این تیمید داود کام کی داین فزم، شوکل زیری کی تحدد کافرش بود:

(۱۷ ما ۱۷) ۔ وہ ویٹ کو بچارج سے میں افتحار مجھٹا اور مواسط ان سکے دومرک حدیدجے کی آبادوں کا اشار شکر نا اور ان مدیری کو نہ یا کا د

(۱۰/ ۴۷۸) سال پرفتن دور بی برفتنی عالی کا قرآن و صدیث پر در تعییق عمل حمرنا اورای کا موگول دهم دینا (۱۱/۱۵) بينور كي عدر رشري مراجع يين احلوجي الدينة الرام والك وقت

شك اورمغرب عشاءا كيد وقت جم يزمنا-

یں ان کو بابعد فیرانقرون والوں کے قوال مصصیف یا تعدوثی مجملا

(Mi/ir) ماجيل كا زيارت قبرشيف لبولي ﷺ كي ليت مي زيارت

كرف جان كوشرك روم جاليت وحرام ومكرو وقرار وياد

(۱۸۲/۱۳) مرمن شریفین کے قدم مقد بن کوشرک اور بدی محسار

(۲۸۲/۱۵) قرائت الكامات بنازت عن كياعم ب

(۱۷ 👭) 💎 وفعو کے بعد سرمنڈ دایا اب تجدید وضو یا سر پر دوبار وسنج کرنا قرطی

ہے واکٹ ؟

(١٨٥/١٥) 💎 وباقت سے فزیر کی کھال، مائب اور چوہے کی کھال باک

مرجاتی ہے پاشیں ؟

(۲۸۹۸۸) یال کتندور جوتو شکم کرنا جائز ہے۔

(١٨٤/١٩) جر الخفي كو ياتى ادر مني بيسر ند جوده فرز كيم بإسع

(مندة قدالطبورين)

(١٨٨/٢٠) مقطوع اميدين ووزجلين وجراح وجد كاكيافكم عدده بدانسو

المازية مع ياميم كرب يا تيم كرك فازية هي 🔻 🤋

(توٹ) ان سوالات کے جوابات اب موسال بعد اکر کوئی صاحب دیں تو ایل شرط کونشرور کمح فارتھیں نیز لہ خواب کو چاہئے کہ اپنے کی اپنے عالم سے جواب تکھوا کمیں جس کے جواب کو ساری جماعت آپ کی تشکیم کرتی ہو کیونکہ جس طرح متحرین حدیث اپنے علماء کی سب کتابوں کو پوفت بحث قرآن کے مخالف قرار دے دیتے ہیں اسی طرح آپ کی جماعت کا ہر فرد اپنے بڑے سے بڑے عالم کو قرآن و حدیث کا مخالف جاننا ہے اور اپنی کتابوں کا اڈکارکر ویتا ہے کہ پیسب کتابیں قرآن و حدیث کے خلاف ہی ۔

حصدنهم

یاک و ہند میں صد بول ہے اسلام آیا اور پھیلا ہے تگر انگریز کے دور ہے يهلجه غير مقلدناي كوتي فرقه مسلمانول بثن موجود نهاقها چنانجه نواب صدايق حسن غير مقلد لکھتے ہیں''خلاصہ عال ہندوستان کےمسلمانوں کا بیہ ہے کہ جب سے بیبان اسلام آیا ے جونکہ اکثر لوگ بادشاہوں کے طریقہ اور غرجب برہوتے ہیں اس کو پینٹد کرتے ہیں ان وقت ہے (صدی اول ہے) آج تک (انگریز کی آمدتک) یالوگ ندہب خلی پر قاتم رہے اور جیں اور ای ند بہ کے عالم و فاضل اور قاشی ومنتی اور حاکم ہوتے رہے یہاں تک کہ ایک جم غیر نے مل کر قباوی ہندیہ جمع کیا اور ان میں شاہ عبد الرحیم صاحب والديزرٌ لوارشاه ولي الله صاحبٌّ وبلوي تجي شريك تقصهُ (تربهان وبابية م•1) فيز تواب صاحب بن فرمائے میں کدہ تدوستان کے سلمان جمیشہ سے ند ہب حقیق اور حقی ر کھتے ہیں (تر جمان وہابیص۱۲) اس ہے معلوم ہوا کہ ہندوستان میں جب ہے اسلام آیا ہے سب مسلمان حظی 3 جب کے عامل تھے۔ عوام ، علاء، اولیا، الله، قاضی، بادشاہ سب سے مب شنی ہوتے رہے ہیں، اس کے برنس تواب صاحب فیر مقلد نے اسپنے فرقد کے بارہ میں صاف لکھا ہے کہ اس دور (انگریز) کے زماند میں ایک شہرت پہندریا

يعضرور بتائيس..

کار فرق نے جنم لیا ہے جو باوجود جاتل ہونے کے براہ راست قرآن وحدیث پرعلم ، قمل کا دعویٰ کرتا ہے۔ بیٹرق اسلام کی مغمال سے عمرہ م ، برا استعسب ، عالی منظار لی در فات کے دور ان اور ان کا اور ان کی در فات کی اور ان کا ان کا می شیطانی تھو بلات پر عامل ہے (عمل ۱۵۳ کا ۱۵۸ مان ۱۵۸ مان کی معموات ہے اگر او کی معموات ہے اگر او کی در مندرجہ ذیل موالات کا زواب معجز اور منظو تاریخ کے حوال سے دے۔

(۲۹۱۰۳) من انگریز کے دور سے پہلے پاک و ہندیس احناف نے لغات مدیدی کی دو کتاب مرحب فرمائی جوآئے ہمی عرب وجھم جس متداول ہے لینی '' مجمع بحار الاقوار''

آیزی ب ادران منج الدریث با تیرا تشد ہے ان میشوع بریکی جماعت کا قاعدہ میح تین اکھار (rager) من القريز كرودرين يملي إمناف في حديث شريف كروون کے ملسلہ میں انھنی محصول کڑے لکھی جو آج بھی قوب وجھم میں متداول سے لیکن کھی سرزائی مشکر صدیمی ماغیر مقصد نے ایسی کی سائیس کنسی ماہر سے قریروہ کیابوں جو تغات ورواق بمول ان کا زم و پند مما کیں۔

(۱۹۳۰۵) ۔ آگریز کے دورے پہنے باک وہند علی منگلوۃ کی شرح اسات التنفي منتكونة كا قارى زجمه العد اللعمات و زفاري كي شرع توسير القاري بموطا امام مالك كَيْ تَرْح معنى اورمسوق ومثلوّة كالردورْ جمد مفاهرين تكيير مجيّة جواج تخب عرب وقم میں متداول میں لیکن کسی مرزائی ومشر صدیت یہ فیرمقلد کیا کوئی ایک حدیث پاک کی خدمت کا بت نبیس، کیا کوئی غیرمقلد محمر یز کے دور سے پہلے اپنی بناری کی شرح اسحطا کی شرق مطلوٰۃ کی شرق یا ترجمہ کھا کتا ہے جو یاک و مبتدیں کتوب ہو کر مرب وجم ين متداول بويه

اتھریز سے دور سے پہلے ہ مرجب کردہ فاوی ماشکیری آن بھی عرب وہم میں متداول ہے لیکن کوئی مرزائی ہمشر حدیث یا غیر مقلداتھم یز کے دور ہے يبليهُ كا كوفَى اليهامنعمل فلَّاوِي بيشِ فهيس كريكنة جو ترب وتجم عن منداول وورويده وإيور آنحضرت ملك كي سيرت ياك ير مدارج المغوت جيسي مسوط (r46/4) سمّاب احناف ہے لکھی جو آج بھی عرب وجم میں متداول ہے لیکن کوئی مرزائی جنگر حدیث یا نیرمقلد انکریزی دور سے بہلے کی سرت یا تھی گن افی کماب وی نیس کرسکار کیا کوئی غیر مقلد بنارش میں مید الحق سے پہلے، بھویال میں (PAYA) صدیق حسن خان سے بینے وہلی عمیا نذر حسین سے بہلے ، مدراس عمر فطام الدین سے پہلے، لاہور میں غلام نبی چکڑالوی سے پہلے، کی قیر مقلد کا وجود نابت کر سکتا

کیا کوئی غزنوی غیر مقلد مولات عبد انقد غزنوی سے پہلے، کوئی (444/4) تکعنای غیر مقلد عافع محمد صاحب تلعتوی سے پہلے اکوئی رویزی ٹیر مقلد مولوی قطب الدين سے يسلم اسے خاندان جن كى غير مقلد كا: مريش كرسكا سے کوئی قادیانی یا کوئی غیر مقلد انگریز سے اس ملک میں آئے ہے (FEA/IA)

یا پچے منٹ پہلے کی اپنی نماز کی کتاب ثابت نہیں کرسٹنا واگر دوتو اس کمل زماز کی کتاب کا

عام اور پينده ين.

(۳۹۹/۱۱) فيرمقلد شخ لورث امحاب محاح تك جوايل هديث كي سنديش کرنا ہیں اس میں دور برطانیہ ہے تہلی کر یوں کامسلمہ تاریخی شہاوتوں ہے فیر مقلد ہونا عابت نبيس كرسكنا

(۱۰۰/۳۰) جس طرح باک د ہند هی انگریز کے دور سے پہلے کی مسابید بھی موجو: جیل شنا شای مجد لا دوره شای محد و پیال بور، شای مجد چنیوت، شای مجد و بلی، شای مجداً گروه مجه وزيرخان الهوده اور يرمسلمد تاريخي بات ہے كہ برسب مساجد احزاف كى بنائی ہوئی ہیں، کیا کوئی غیر مقند و تحریز کے دورے میلے کی کوئی مشہور محدید انا سکتا ہے جس کا بائی تاریخی شروت سے فیرسقلہ ہوالیکن کوئی فیرسقلد ۔ تابت نہیں کرسکتار (۲۰۱۸ ۲۰) 💎 انجمریز کے دور ہے بارو موسال پہلے ہے اس ملک ٹی مسلمان آباد عظمه ان باره سوسال میں غیر مقلع بن کی کوئی نماز کی آشاب بھی تھیں ملتی حمر انجریز

ے دور میں مدور بائد مانوں میں ایک بزار کے قریب کیا ہی لکے کر چھوا میں ہ آخر (الف) اتی الزوں کے لئے اس نومهلود قرقہ کے باس قم کمال سے آئی تھی۔ (ب) ان بزاروں کمایوں بم سے آیک کمآب بھی الی میں جے قیر مقلد بن الل منے دسية نصاب عن شائل كيا بود ان كا موضوع صرف تغريق بين أسلين في الدبس-(نَ) بِالدَّرِب ان عَي كَمَا بِل مِن إِلَى وَجِنْد كَ بِرَشْرِينَ وَقَافَسَاد كَرِيَّ جِي لَيكن جب مناظرہ کاوقت آئے تو ان سب کمایوں کا انکار کر جاتے ہیں، جیسے مناظرہ کے وقت منفرین مدیث اور کادیا کی بھی اپنی کر ایس کا انکار کر جائے ہیں ہے تیجوں فرنے اپنی جركاب اورائية برمولوي كوجونا مان كرائية تدبيب كالمجونا مونامان ليت بين مسهد ا آتریز کے دورے میلے بورے بارہ موسال تک فیرمقلدین کا (repur) کوئی اخبار پارسااین تھالیکن محکر ہوئے دور میں ان کے 184 شیار اور رسائے جاری تھ جن کی فیرست ان کی کتاب مندوستان شر، طاء مدیث کی علی خدمات عمل ہے، ان ر سالوں ہیں انگریز کی جا پلیسی اور نقبیا ، وجمبتدین کوگالیوں ہے یاوکیا جاتا تھا۔ آخرات ر سائل کا فرج کہاں ہے ما کا تھا ﴿ مُلَدِهِ كُورِيہ ہے جومرزا قادياني نے بھاس جاءي مُلَعِن كاكها تعالن بي بانج و مرز من في الكوري باقيون كافرية شايدان كود با بور H-A) اتحریز کے دورے پہلے بارہ موسال تک اس فرقہ کی ایک ریوک (P+P/IA) مبر کا نشان بھی نہ قیا تمراتحریز کے ور میں ان کی نو پریسیں تھیں جورات دن انحریزی حكوميت كوخده كي دحرت بثاقيق اورفقا كوعجي سماءش اورتعوف كوبندواند جوكب قراد ويتي آ فراس نومولود فرقه كوفر مريش كياس سے مطح منتے ...

(۲۰۱۷) کریز کےدورے میلے ہوے باروسوسال جی فیرمقلدین کے

الك وعظا كالمجسى ية نبين جليًا يـ صرف ٢٦ سالون بين ان كي ٢٠ آل اخريا كانفرنسين بوني میں جن کی فوست کیاب فرکور میں ورج سے آخر ایک نومواد فرق کو ان آل اشا کا فزنسوں کے لئے قارون کا خزانہ کہاں ہے کل گیا تھا

(١٠٥٥) اي كتاب مين بي بحيي درج يه كدان مين آل الذيا كانفرنسون مين چھا اللہ بزاریا فی سود ١٩٥٠ كا بي منت تقسيم كى كئيں، آخران كے لئے رقم كبال سے

(١١٨٠) ان ١٦٥٠ كايون ين عن ركوني كاب الكريز ك ظاف عي د عیما تون کے خلاف بلک بیسب کی سب کتافی حفول کے خلاف تھیں، آخر حفول کے خلاف اس منظم سازش کی قیادت اور فری کے بارے میں ذرا وضاحت فرما کیں (٣٠٤/١٩) أگريز ك دور ي بيل بورك باره موسال تك ياك و بند مي غير مقلدین کا ایک بھی مدرسہ ندتھا مگر انگریز کے دور میں ان کے دوسو باکیس مدرے بن گئے وآخر ساٹھ سال میں احتے مداری کے لئے خرچہ کہاں ہے آتا تھا۔

(۳۰۸/۲۰) ۱۹ حتمبر ۱۸۵۶ کو جب انگریز دبلی بر قابض جوا تو دال بول کے کہنے کے مطابق تین بزار آ دمیوں کو بیانی دی گئی جن میں ہے انتیس شاہی خاندان ہے تعلق رکھتے تھے اور بقول تیمرة التواریخ ستائیس بزار مسلمان قبل ہوئے ، سات دن تک برابر قتل عام جاری ربا (شاندار ماضی ص19) این وقت میان نذیر حسین فیر مقلدان غازیوں اورشہداء کو بافی قرار وے رہے تھے اور ان کے مدرے ہے بیافتوی جاري ہور ہا تھا كہ بيلوگ حفى المذہب ستحل ألدم بيں بعني بلاو جہ ان كاقتل جائز ہے، ان کا مال مال فتیمت ہے اور ان کی جویاں ہمارے گئے جائز میں (وبلی اور اس کے

:حراف عمل 14،14 موب موال یہ ہے کہ (الف) جب سرارے دیل میں تمثل عالم میں مور یا ا بخذا تو انذ مرحسین کا محلّه کیون محقوظ ریا (انعاب جند ا**نمهات من 1 سرا**غ همری نذیر حسين فيه مقلد الأب)جب أمجر بإحساما ول كالألوث رباتها تؤلد يرحمين فيرمقله أنكرج ہے ہے وسول کردے تھے کمی جارہ مدرد پید کمی سامت صد (الحدیث بعد اُم) ہے اُس ۱۴۰) (نَ) ينب ان غازيون اورشيداه كي يو يول رقم أو والقا وَ نَرْ رحسين المريز لميا كي سرّ مینس کی حفاظت کرئے برطانہ ہے وفیغہ اور خطابات حاصل کردیت نیے ۔ (ص ۲۵۹) الكريز نے تن مام كے بعد مسلم نوں يرمقد مات كا مسلم جاري كيا عَا تُومَقُد مِهِ مِن زَمْ النَالِيَّةِ 1 فِيهِ مِعْدِ مِهِ مِنْ يُمْتِيرُوا الأِنْ مِقْدِ مِهِ مِنْ مقدر بازش مرن کل وعها، مقدمه مردش مرمد (عن اود ان بهرایت ش ا مناف کو جانی مال پریٹ نیول میں بیٹار کہا گہا ، بین اسی دور میں غیر مقلد ان نے امناف کی مساعد میں دلنج پیرین مسیمین ولیج امر وفکا نساد کر کے مساحد کوسیوان جنگ بناما اور ا «ناف كومقد مات شر كلسينا، جناني المرتسر كالمقدمة بينا أست في إيل ونك ويلي وفي ئے مقدمات ۵ جنوری مید 10 اور عیم میرسود ایک چلے اضیر آباد کا مقدمہ اس اکتوبر ١٨٨٣، كتب جارال آباد بانيا كورند بش مقدمه قوم و٨٩١وتك جار يريق تُوش لندان میں ۳۰ جنوری ل^{ه ۱}۸ مادور ۱۱ قروری ل^{ه ۱}۸ به تک مقد مات <u>صل</u>یماور غاز کی نور میں مایو سریش چند. بون کی عدالت مین ۲۳ فروری ۱<u>۸۹۳ او ۵ نومبر ۴۹۸</u> و محک مقدمات مط (الایشادم ۲۴) آخر کماد می تھی کہ مساحد میں نساد کی ایشرامجھی غیر مقلد من کریں رور ا بعله جي ان ڪيائڻ بل بن جوان نومو ورفر ۾ کولند ن تڪ مقد بات رئيس کے سنديد ا (فۇرەت اللي مەرىث) أبيال يتصوقما قنا

(۳۱۰/۶۳) کیا اگر پڑ کے دور سند پہلے باروسو مال کی تاریخ میں مرف ایک ای ختال ڈیش کی جائنگی ہے کر کئی اسلائی حکومت کی عدالت میں اقلد تھے مقد کا مقد س وائر ہوا ہوا در غیر اقلد کامیاب رہا ہو۔

حصددہم: نجاست کا بیان

غیر مقلد: بینتی زیورس کلما ہے کہ باتھ پر نیاست کی ہوتا ہا تا جاتا ہے۔ حقی ' ہے بالکل جموعہ ہے است الله علی لاکا دس تا بہتی زیوراور وہ ان کتب فقہ کی گذاب میں یہ سندہ وجود ہے کہ نجاست جا انا جا تر ہے ۔ پہتی زیوراور وہ ان کتب فقہ میں یہ سند کلما ہے کہ اگر چاک پائی میں نجاست ہا جائے تا اس سے نہ وخو و خسل پھر بھی ورست نیس ۔ وہ نجاست تھوڑی جو یا بہت (بہتی زیور جا می عام ، جاری خاا میں ۱۸) جبکہ فیر مقلد کن کے زو یک اگر پائی میں نجاست جا جائے تا ہے نے تو جہ تھے تجاست سے اس کا رتھی وطرونہ زیر لے دو یاک ہے ۔

(عرف الجاوئ بسلوج رسول من عند بده راا بلد ص الدران الإبراريّ اس ال (ارااس) الكيف بالني دود حديث أنراكيف آخره بيتاب كالإرابية جمل على دود هاكا تدريّك بدالاند عرد شديو بيدا موليّ الواجات خاجب يش ال كالوائد الام بك ووجهم إلا يأكير من يرقف جائب تو بداد موسئة خاذ ما جائز البد غير مقلد ف بال ال كالجاء بالأراث خيس آفر جرف بديرة كول مال كالمل في مقدد التي كن معتبر الكالب سيداس كالت بينا الابت كران ديو و بديد كيا في مقلد كوليا منافظ كين آبا

(٣١٥٠٢) بيثني كوبرس دير يستدلكها باليسالياك بإني كاستعال مِس

کے تینوں وصف لینٹی عزور اوا ملک تھاست کی وجہ ہے بدل مجھے ہواں کی طرح ان سات تعبیل نہ جانو رون کو جانا ورست ہے ندمنی وغیروش ڈیال کرمگارا بنانا جائز ہے ۔ بھوال ورمخنار تناص عوامه و مجيئ الارب مذرب مين فرايسے يائي كا جائوروں كو يا) تا درست اليم اور في على الدكر كارا بنانا تك ورست في بديها تبك كا أسان كو جائن كي اجازت دی وات اب آب میں اگر ہمت ہے تو اپنی کی معتمر کتاب سے ایسے باتی کا جانورل کو يلامًا إمن عن ملانامًا جائز ثابت كروين.

(mr/r) 💎 بېنځې ز پور ټاص د پرکنها پ کړانمر پاته بيل کونی نجس چېز کلي تمي اس کوکس نے زبان سے واٹ اپر تمن دفعہ تو بھی یاک ہو جائے گا محر جا نامنع ہے یا جِعالَىٰ ير بجيدُ لي تے كو دود هالك كيا بجر بج نے تين دفعہ جون كر في ليا تو ياك بوكيا. واٹنے کی ممانعت مسائل کھی ہے۔

(١٣١٨) الكيد مورت كي وقل عن مولى لك كن فون فكل آيا اور وفكي عاليك وو سنَّىٰ اسْ مورت نے ووقین مرتبراہے جائٹ مُرقع کے دیاشنی قدیب میں اس کو جا ٹاکٹنے تماه اسے جائے کا تماد ہوا مر بنب خون کا نشان تک ندر ہا تو انگی یاک ہوگی، اگر آپ سمی تھنج مرتبح نیرمعارض عدیث میں انگی ہے نگلے ہوئے اس خون کا تھم اس کے خلاف وکھا دی بینی ہوٹا تا ہو کڑ دکھا ویں یا خون کا اثر فتم ہو جائے کے بعد بھی تا پاک ربنا ثابت كر دين تو بم مدر يس كري هي بلكه مناف حتنيم كرليس هي كه بيامنله واقل هج مدید کے فلاف ہے۔

(۱۰،۵۰۵) میں کے قدم بیش آو قون دیے ای یاک ہے دمرے سے اتھی نایاک نونیس ہوئی، کمن سمج صدیث ہے خون کا یاک بونا نابت کرور

(۲۱۲/۲) ایک محف رائے میں گنا چوستا جار با تھا کراس کے وائتوں سے خون نظل آیا یانی وغیرہ قریب نیس تھا آپ کے غرب میں تو خون یاک ہے اس لئے اس کا خون آلود منہ یاک ہی ہے لیکن شفی فدہب کے موافق اس کا منہ نایاک ہو گیا ہے، اب وه خض بار بارتھوکتار ہا بیبال تک کہ خون بند ہو گیا اور مند میں خون کا نشان بھی باقی ندرہا تو اب اس کا مندیاک سمجھا جائے گاءاگر یہ مسئلہ حدیث کے خلاف ہے تو ایک ہی حدیث محج صریح فیرمعارض چیش فرمائیس که فون آلوده مندیجی یاک ہے یا ایک حدیث پیش کرو کہ بار ہارتھو کئے سے خون کا اثر مٹ جائے گے بعد بھی منہ ٹایاک ہی رہتا ہے۔ (١٤/١٤) ايك بلي في جوب كا شكار بيا اور بلي كا مند خون آلود جو كيا تو وه انجس ب اگرائ وقت وو بلی کسی برتن سے دور سایانی لی لے تو باتی بھا ،وادود ساویانی نایاک ہوگا اگر چیشون ہے اس کا رنگ یا مزوادر بو پچوبھی ٹیمیں بدلالیکن فیرمتلدین کے غرب میں وہ دودھ اور پانی پاک ہی رہے گا اگر چداس کا رنگ و بواور مزہ بدل جائے اگر وہ بلی جوہا کھانے کے بعدا پنا منہ جاٹ جاٹ کرصاف کر لے کہ خون کا نشان تك باقى ندر با مواور پحر دوده يا ياني لي لي قرباقي ميا موا دوده يا ياني تمردو موكار

(٢١٨/٨) أكرآب كى سيح صريح فير معارض حديث ساس مسلد كالحكم ال کے خلاف دکھاوی کہ بلی خون آلود مندے وود چنے یا جائے کرخون صاف کرنے کے بعد نے ہر حال میں بھا ہوا دورہ یا یائی پاک ہے تو ہم ضد شیس کریں کے ضرور تشکیم کر لیں کے اور آپ کی حدیث وائی کی داویھی ویں گے....

(۳۱۹/۹) ایک شرانی نے شراب بی ۔ حنی ند ب می شراب ایس بی نجاست نلیظ ہے جیسے پیشاب، اب اگر فور آاس شرالی نے دودھ پیاجب اس کے متد کوشراب لکی ہوئی تھی تو بچا ہواد و دویتی ہے لیکن اگر اتنی و پر تھی ا مہا کہ تھو کئے ہے شراب کا اثر زائل ہو گیا قو اب شراب کا اثر زائل ہونے ہے اس کا مند چاک سجھا جائے گا، بال آپ کے زو یک شراب می چاک ہے تو زمانہ کا یک اوا شدائ کا جھوٹا اُٹر آپ اسپے دبوی عمل یا غدیدے میں ذرا بھی ہے جی تو ایک ہی میچے مسرک فیر معارض مدیدے ایک چیش تر زر جوفق کے اس مسئلے کو خلا کا بہت کرو ہے۔ اور آپ اسپے مسئلے کی محت پر بھی بھے ہی تھے۔ مرزع فیر معارض مدیدے چیش ترین۔

(۱۲۰۰۱۰) آپ کے نزدیک ہر طال جو اور کا بیٹاب پاخان پاک ہے اور جوفت خرورت کھا ؛ بینا بھی جائز ہے (فقاوی سنادیون اس ۱۳۳۷) کی شریت بغشد ند پیز کانے کا بیٹاب نی لیا۔ مجون فلاسفر کی جگر بینس کا کو ہر جائے میز، فولین کی کولی کی جگہ اونٹ کی اور بکری کی میٹنی جیائی، فرقی کی میائے می کی تلفی کھائی ، دودھ میں اثنا پاخانہ حل کر کے جس سے رنگ ، برہ حروز ہائے تاشہ کر بیا۔

نماز عیادت ہے آگر نماز پڑھنے ہوئے کوئی ایسا کام کیا جو افعال نماز علی ہے فیار عیادت ہے آگر نماز پڑھنے ہوئے کوئی ایسا کام کیا جو افعال نماز علی ہوتا و بھی جائے گی اور اور می آگیر ہے تا نماز خاصد ہو جائے گی اور اور می آگیر کی بڑھا قرض ہے فسانسر و اسانہ سر میں الغرائی لیکن افرائن کی نماز علی ہوتا الفرائی لیکن افرائن کی تو ایسان ہوتا ہے آخضرت الرائن فعال کو الله بوائد ہوتا ہو الله بالله بال

تاکیوعین این عباس مطابقان بهاسا امیار السومین عمر میان نوم نشاس می السصحت (دواه این این داؤد، کنز العمال ۱۲۰ ص ۲۶۱) تجر(۱) - اگرقرآن تمازی کرمانش لک راجواد نمازیش کوئی مفیاند تیمی _

(بوارج اس ۱۳۸)

غبر(۳) - اگرقر آن پاک کود بکها اوراس تخریرگودل هی مجمد بھی لیا قو نماز فاسد نیمیں۔ (جامیعی ۱۶۵۰۰ عاتشگیری ص ۵۳،۵۰۱ ها جند)

نبر(۳) اگر قرآن إک کو دیکھا اور زبان سے برحا بھی محر ایک آیت ہے کم برحا تو بھی نرز فاسوئیں (مانگیری میسان) کیونکہ ان سب مورتوں بھی نمازی کاعمل عمل تھیل سے ذرکہ تیزر۔

نبر(م) اگراکی فخص کوفر آن بالکل یادئیس ماس نے قرآن نماز پس انعایا اور پڑھا اور اوران بدنیار باتو اس اتعالے اور اوراق الشنے سے مس کیٹر کی وجہ سے تماز فاسد تا جائے گی۔ (مدارین اس ۱۳۷)

نیرون) اگر قرآن سے ویچکر پاسااور تعلیم حاصل کی تو بہتایم و تعلیم علی کی جر بوکر سفید نماز ہے۔ (جائیے قاص سالا ، ما تشیری عن ایج ہوئے ہیں متواقر پاستانیس ہوتا ال ح وتعلم علی بیرفرق ہوتا ہے کہ تعلیم وتعلم علی ہیجہ ہوئے ہیں متواقر پاستانیس ہوتا ال ح م داور یہ تعلیم وتعلم مضد نماز ہے شاقر آن کی طرف نظر مضعر ہے نہ علاوت فرآن مضعر ہے بلکہ واقرض ہے ، ہاں اگر کوئی محتمی حافظ قرآن ہوا در محل تھیل ہے استعانت حاصل کرے فرمضد نمیل ۔ عودت کے بارہ جس احادیث میں اختیاف ہے میجی مسلم جاتا تمازي كي فمازتوت جاتي سنة ورابوداؤ وائن ماجه بالبياسية بلغطه العبيوة تين ابن حماس میں کی مرفی کے حدیث ہے کہ جا ہنے مورے نمازی کے سائٹے آئے تو نماز نوٹ جا آل سے اور مستد احمد علی عائش دھی اللہ عنہا ہے مرفق نے دوایت ہے کہ عورت آ کے آہے ۔ المَارُلُوكَ فِيلَ هِي مِنْهُ وَلَقَالَ مَحْمَهُ الْرَّمَالِدُ مِنْ مُونَا مُعَارِدُ مِو هُمَا رَجِهُ ریالی جنا میں ۱۹ گاک کے برخاف بخدی نامی افتاء مم ناامی شاہ پرتعزے عائش رضى الله عنها كالبصح ليزواور بخاري خاص من رسلم جانس ١٩٨ يرهفرت ميمون کا مائھے ہوئے کی حالت ہیں آئے لیٹنا ٹابت ہے ایدونو ل کٹم کی احادیث متعارض ہیں اس ملکے علما وان میں مقلیق وسط میں کہ اصل نماز تونییں ٹوٹی البعثہ نماز کا خشور آ فتم يوجاتا ہے كيونك النف عالن الله قاعم منتوع ہے (زيلتي من اص ٨٩٠٨٨) اب کوئی منفرصہ بٹ اور دیث کا نول نداق از اے کہ معلمان خدا ک عمیرات بول کرتے ہیں کراچی کیش کے خون سے آلودہ بیوی کو آٹ کا ناتے جیں، اس کے یاؤی کرتھہ ہو ہ یلے اتھ لگانے میں واس اُر مجدو بھی کرنے میں اور اس کی تھی جانے بھی کرتے میں قرب ایک محبث باللمن کی دلیل ہے۔

يهبلا حجفوث:

ک فقد منی میں تراز کے وقت مورے نکی کر سے سرے بھو نا مغروری ہے ہیا۔ بالکل جموع ہے استفارتو اچا کے نظر کا ہے استخطاع فرائے بین مورت ساری پردے کا مقام ہے جہ اس کو ہاتھ لگنے ہے تر زئیس ٹوکن تو نظرے کیے ڈٹ وے کی بیمل قبل ہے استدنماز میں امثال ہے تھے روز وکی صالت میں کھا کا بین حرام ہے کھانے بیٹے سے روز و فاسد ہو جاتا ہے اور تھا ، کے ساتھ کفار وہمی لازم آتا ہے لیکن کھانا پینا سامنے رکھا ہو روزے دار کی نظر بھی بڑے اور ول میں کھانے کی خواہش بھی ہ آ جائے تو بھی اتنی بات سے روز ولیس او لاڑ۔ غد ب منتی میں تو اگر مورت مرد کے برابر جهاعت میں کھڑی ہو جائے تو قماز فاسد ہو جاتی ہے احسر الما ابو حدیقة عن حساد عن ابراهيم قال اذا صلت العرأة الي جانب الرجل و كانا في صلوة واحدة فسلت صلوته (كتاب الأثار امام محملًا ص٧٧) و قال به نأخذ و عو قول ابي حنيفة آپ جھزات سے گزارش ہے کہ مندرجہ ؤیل مسائل کا جواب مدیث سیج صرتع فیر معارض ہے ویش فرمائیں۔

(١٧١١) أيك مخفل فمازيزه رباتها كداجاتك مائة كنا كتياهاك جفتي ش آكتے، تمازی کی نماز ٹوٹ گئی یانیوں

(٣٢٣) الكِ تَحْقُ ثماز بِرُه د بالقا كه اچا تك سائة نظر بِرُ ي تو آيك جورُا زنا يس مصروف تفا نماز توث كى يانيين.

(rrr/r) قاز يوسة ورع افي ياكي فيركي شرمكاه يرنظر يوجائي تو تماز ٹوٹ جاتی ہے ماشیں

مرد فمازير مدر باتفا كدوي في الكابوسية الياتو فماز فوث كي يأتيس. (FREE)

يوى قمازية ھەرى تقى مردئے بوسە كے ليا قماز توت كى يانتين _ (rra/s)

مال تمازير هدري تحى سنج في كوين بيشاب كرديا نماز توت كن ياشين. (FFY/Y)

ماں فماز پڑھ رہی آتی ہے نے آ کر چماتی ہے دودھ پیتا شروع کر (rt/L)

د یا نماز توث گئی مانییں ۔

عورت نماز پڑھ رہی تھی ہٹریا اہل گئی اور قراب، ہونے کلی وہ تماز (FFAA)

توز کر ہنڈیا کو درست کر نے یانیس

(۲۲۹/۹) م ت نماز بره ري حي ، كما دوده ك برتن ي و حكمتا الارت

لگا، ووفر زقوز کراه امر سنبول کے باضیل

(۲۳۷۱۰) نید آبی نماز پر صرباتها مرمروس کی جوتی ملے جدا کا بیماز قرار

ترجرتي حامس الساياتين

(۱۳۳۱) - ایک مختص نماز پر هاریا تھا غیر عرم عورت کے گانے کی آواز کان عمل آری سند ۱۱ ایک بھی کی رہا ہے نماز نوٹی یاشہ

(۱۳۳۸) ۔ ایک تورٹ نماز پانداری تھی، بچے نے اس کی اوز عنی تھی کر پھیک دی اب عرب کی فرز فوٹ کی پائیس ۔

(۱۳۳۶) - عمرت زاز پڑھاری ہے اور جو کی گار مار کر مجینک رہی ہے۔ اور کا زاز فرے کی تھیں ان

(نُوٹ) - مندید بالا مسائل کا ہواب مدین سمج مرزع غیر معارض سے دیا جائے درنہ قابل قبور نمیس ہوگا

حصه ياز دجم

(۱۳۲۶) اس اس مکند علی بارہ موسال سے اسادہ آیا ہوا ہے محرسب لوگ زیر ناف باتھ باندہ کرفراز پڑھا کرتے تھے، انگریز کے دوریش جہاد کو ترام قرار اینے کے لئے الاقتسان سے درمال کھی کر جا مجرحاص کر کرنے والے نے سماجہ عمل فساد کے لئے اشتہار ویا کرزیر ناف باتھ باند چھنے کی آیت یا حدیث میچے متنق علیہ تھیں الدالات ویش کرور فی حدیث وی دوید انعام ویا جائے کا جب خودان سے ثبوت با نکا عمیا اور فی عدیث و آیت میں روسے انعام کا اشتہار دیا گیا تو کہا گیا۔ قرآن ۔ معرت ملی ہے سردی ے كرآيت فصل لربك و افعو كاستى كرتے إلى كرتماز يرحوادر بيندير باتھ باندھ

(فَأُونُ عَلَاهِ مِدِيثِ مِنْ ٢٨س ٩٥ ، فَأَوِيُ ثَالَيْ يِنَا مُن ١٣٣٣)

ہے م باتھ باندھنے کی (۲وقات نماز ٹیں)روایت بخاری مسلم (PPO/F) اوران کی شروح میں بکشرت میں (فآوی علاء حدیث جسم ۱۰ و فآوی ثنائیہ) حالانکہ

ند تفاري من مديث تدمسلم عن اورت على عاوقات كالفظ كى شرح عن ب برايها مجوث

ے جیما مرزائے کما کر مح جماری میں ہے کہ آسان سے آواز آئے کی مدا علیفة الله

المهدى

می بناری جی بھی ایک ایک حدیث آئی ہے (کر حضور ﷺ (アアヤノア) بالموجود يرياعه من يقيم) لأولي الراحد بث ني الراس الأولي ثمانيه

سیح این فزیر ش بیز ب_راتھ باندے کی حدیث ای مند ہے (rr2/r)

سيهم علن عفان عن همام عن محمد بن حجادة عن عبد الجبار بن واتل عن عسلفسه بن واتل و مولمي لهم عن ابيه (فأوكما علاء مديث ريّا اص ال) اس جوث كما مثال ند مرزا الاه ياني كي كرايون ش التي بهاور ند سواي ويا تند كي كرايون ش......

> ائن فزیر نے منورب بالا مدیث کوسی کیا ہے۔ (FFA/A)

(ٽياوڻ علاوجد يث ج سهن ٩٣ ۽ قرآوٽي ٽائيه)

میدے باتھ باتھ شنے کی (فرکورہ بالا) مدیث مجھے ہے (ہوئے (654/4)

ولرام، فآدي ملاه حديث يُن سهم ٩٥ ، فآدي ثنا سُرِم ٩٥)

بدایه می اس کوسی کهاید (اختلاف است کاالید ص ۹۱) (rr+/4) (۱۳۶۱) پیدیز بر باتند و ندست وانی مدید محیم مسلم می دهن کا این باجه مس ۱۶ در رقی می که در دارتیکنی رقیامی هذا را ایووانا دینی امن مهدار جز زفاری هی ۱۳ در شد د حدیث ۱۳ می ۱۳۷۷ مرتب الاصلیح هم ۱ ۱۸ در بر شکی هی ۱۳ اور مختلوق بر ہے۔ اثبات رقیم چرزن می معمد وسمی کرون پر مجموعات ہے۔

(۱۳۸۶۹) 💎 متفاحم ش بهایش به عنی صدر د (مصد استد)

(الْمَاوِلُ عَلَى مِن بِهِ عِنْ ١٩٣٥)

(۱۳۳۷۰) - ازیر تاف باتو باند منت کی حدیث تعیف ہے (شرح التابیا) (انتقابات کالدم ۹۰)

(۱۱ رسیس) ۔ زیر زف باتھ و تدھنے کی حایث شعیف ہے (موایس ماہ ماہ اختیاف مت کالدیس ۴۹)

(Prail) بارای رئید کازار رند مس کیا تھا اس نے ازاق بند باندها تو امام ہو ایوسف نے توک دیا کہ آئندہ فازیش باتھ ڈف ک کیتے ہاندھا کردر

(۲۰۰۷) 💎 خنی نماز نین باند آیدنامل بر باند هنه تیما (قرمان سماه ۵)

(۱۳ اسه ۲۳۷) ۔ مقدم سنز پر ہاتھ و نہ ہینے ہے فیار تو اے جاتی ہے تیوس انتظامی مشہد میں ہاتھ والوں پر ۔ ان مب جھوٹوں پر بروہ ڈالنے کے لئے تم فرق میدو + جانے کا عدید شاند رکھاؤں

قاضى عبدالاحد خانبوري كي شهادت

() الل زماند من جموعة الإندائية منه الله كالفين من حالين جوار الليقت ساحة بدالوسول من جاش تين دوائر سول الل مفت عن وادث اور طايف

ہوئے ہیں شیعہ اور روافش کے۔جس طرح شیعہ پہلے زمانوں میں باب اور وہلیز کفرو نفاق کے تھے اور ملاحدہ اور زنا دقہ کا تھے ۔۔۔۔۔ ای طرح یہ حامل پرنوتی الجامدیث اس زمانہ میں باب اور وہلینر اور پینٹل ہیں۔ ملاحد و اور زناوقہ منافقین کے بعینے مثل اہل تشجع ے، دیکھیو ملاحد و نیچر یہ جو کفار ہیں اور منافقین ہیں وہ بھی انہیں کے باب و وہلیز اور بدشل ہے داخل ہوئے اور انہیں کو گمراہ کر کے ان ہے اپنا حصہ مفروش کامل اور وافی مثل شیطان کے لے گئے پھر ملاحد ومرزائہ قادیانیہ ٹکلے تو انہوں نے بھی انہیں کے باب اور ولمیز اور مدشل ہے داخل ہونا اختیار کیا اور جہاعت کثیر ہ کوان میں ہے مرتد اور منافق بنا دیا۔اور جب ملاحد و زنادقہ چکڑالویہ نکلے تو وہ بھی انہیں کے دہلیز اور در واز وے داخل ہوئے اور ایک خلق کو انہوں نے مرتبہ بنا دیا اور جب بیہ مولوی ٹناء اللہ خاتمیة الملحد من لکلا تو وہ بھی انیس جبال الحدیث کے باب اور ولینرش وافل ہو کرکیا جو کیا، مقصود بدہے کہ دافضوں میں ملاحد تشقی غلام کر کے حضرت علی ﷺ اور حضرت حسین ﷺ کی غلو کے ساتحة تعريف كركے ملف كو ظالم كهذار گاليال ديں اور پھر جس قدر الحاد و زند قه پھيلاويں كوئي برداه نبين اي طرح ان جبال، يدمِّق، كاذب ابل حديثون مِن كوئي ابك دفعه رفع یدین کرے اور تقلید کا رد کرے اور سلف کی ہتک گرے مثل امام ابو منیفہ 'کے جنگی امامت فی افقہ اجماع کے ساتھ ٹابت ہے اور پھرجس قدر کفر بداعتقادی اور الحاد و زندیقیت ان میں پھیلاوے بری خوشی ہے قبول کرتے میں اور ایک ذرو چیں بجیس بھی نہیں ہوتے۔ اگر چہ علاء اور فقہاء اٹل سنت ہزار دفعہ ان کو متنبہ کریں ہر گزنہیں ہفتے ۔ مسحمان الله مها اشبه الليلة بالبارحة اوريراس كابيت كدون ترجب وعقا كدافل سنت والجماعت ہے نکل کرا تاع سان ہے مستنگف وستکمر ہو گئے ہیں فسافیہ و تدہر

(كتاب التوحيد و استة ج١ ص٢٦٦ غير مقلد)

نمبر(۴) مولانا محد حسین بنانوی فرماتے ہیں'' پکھیں برس کے تج یہ ہے ہم کو یہ بات معنیع ہو گی ہے کر جو لوگ یاوجود ہے ملمی کے جمہتر مورمطلق تقلید کے نارک بن جاتے ہیں وہ بالآ فر اسلام کو بی سلام کر بیٹیتے ہیں، ان عمل سے بعض عیسائی ہو جائے ہیں اور بعض لاغرب جوكى دين وغرب ك بإندئيس ريع ادراهكام شريعت ي فق و . خراجٌ قو آزادی کا ایک اونی کرشمہ ہے مان فاستوں شریعین تو تھلم کھلا جعد ہما عت اور نماز روز وجموز بھتے سود وشراب سے بر بیزنیس کر کے اور بعش جو کسی مسلحت د نبوی کیاوجہ سے قبق ظاہری سے بچے میں وہ قبق نفی میں مرتمرم رہیتے ہیں، ناجائز طور برعودتوں کو نکاح بھی پینسا لیتے ہیں اکترو ارتداد اور نس کے اسباب و نیا بھی اور بھی بكثرت بي محروين وارول كے ب وين موجانے كے لئے ب نكى ك ساتھ ترك تقلید بزا بھاری سبب ہے، محروہ الل حدیث میں جو بے علم یا تم علم ہو کر ترک مطلق تھاید کے مدی میں وہ ان متائج ہے اور یں اس کروہ کے محام آزاد اور خود محار موجائے ہیں: (اخاد النه ۱۸۸۸)

نبر(۳) مولانا مجوب احرسات امرتری تقع بین" جهال تک جھے علم ہے وہ بے ہے کا امرتر و اردوان میں جس قدر مرتد میسائی جس بے پہلے فیر مقلدی ہے " (الکاب الجید میں)

قبر(س) مولانا محدکمنوی صاحب افی کتاب دونعیری میں فریائے ہیں......... الجیس ہزاراں سالال کوشش کر کے علق چیٹائی المجال جیست سالال ویو چرکیتی اس قیس ودھ کمائی الجیس نادان ہے علماں ٹول دی محمرائق پایا احتمال اعلی علم دا کرختاس دین ایمان محوایا

> آکٹر غیر مقلد خال کر انہاں دے گے جہاں اعد دین تلو یا سنتی عادت کیڑی اک

محمر بینے جع فرازاں کردے سفرتے عذر و ماکیں چوست کوہاں تے پڑھن دوگا ندستی جنہاں اداکیں

> تھید قابیب الل منت چھڈ کے کم انہاں دے اس خاب تھیں بہتر بین مظلم سے درجیاندے

ایہ مافخ کیا جمان یا فیٹی کر دا غیب بازی شبک غیب نے تشریب کماوے ہزی (ٹوٹ) انگریز کے دور سے پہلے کاکئ فیر مقلد کا نہ ترجمہ قرآن ہے نہ ترجمہ حدیث اور نہ بی ان کیکوئی فراز کی تماہ ہے۔

حصددوازدهم

اہمی امبی آیک فوٹسٹیٹ کانٹر پرنظر پڑی جس کا عنوان ہے '' اسپنا علماء کرام ہے وضاحت اور ولی الحمینان کے لئے دس موال نجائب ادارہ تحفظ متنوق الی سنت و الجماحت پاکستان ' موال پڑھنے ہے چہ چانا ہے کہ کی پزدل منافق انا تدہ سید نے الل سنت والجماحت بھی قیمن والے نے کئے اسپنا آپ کوالی سنت والجماعت کی جرکر سکر ہے دجی قریب کیا، کردکار برفوٹو سلید کھیلائے والا المی سنت والجماعت کے خصب ہے ا تنائی جابل ہے جتنا سوامی دیا نئد قرآن ہے اور پادری فائڈ راسلام سے جابل تھا کیونکہ پوری ونیا کے اہل سنت و الجماعت اس کے قائل ہیں کہ فقتی مسائل کا شہوت (اصول اربعہ) جار دلیلوں ہے ہوتا ہے۔

(۱) كَيَّابِ اللَّهُ (۲) منت رمول الله (۳) إجماع امت (۴) قياس شرقي _ یہ بات الل سنت و الجماعت کے اصول فقہ کی بر کتاب میں موجود ہے بلکہ تواب صد اق حسن في السحاب الركوم عل ٣٢٨ وص ١٠ اور ثنا والله امرتسري في الل حدیث کا غرب م ٣٣ پر مجمی يمي لكها باس لئے سائل كا اپنے آپ كو الل عث و الجماعت كبنا اليابي جبوك ع جبيا مرزا قادياني كااية كومسلمان - جس طرح ختم نبوت کامنکرمسلمان نبین کبلاسکتا ای طرح اجهاع امت اور قیاس شرقی کامنکر برگز برگز الل سنت والجماعت نيس أكرساكل على ذرو يعربهى حيا وشرم بإذ الل سنت والجماعت کی اصول فقہ کی کسی معتبر کتاب ہے اجماع اور قیاس شرقی کے منکر کا اہل سنت و الجماعت بونا ثابت كري ليكن بدمنافق قيامت تك ايناالل سنته والجماعت بونا ثابت نہیں کرسکتا۔ جس طرح یہ جاتل اہل سنت والجماعت کے معنی ہے بھی جاتل ہے ای طرح بدسوال معنی سے بھی جاتل ہے کیونکہ سوال جمیشہ مدعی کے دعویٰ برکیا جاتا ہے جس طرح کوئی جاہل یہ موال کرے کہ ظہر کی رکعتوں کی تفصیل قرآن پاک ہے دکھاؤ تو بدسوال غلاب كيونكه سوال كالمتح طريقه بدي كدابل سنت والجماعت علاه فلال مسئله كا ثبوت این دموی کے موافق جاروں شری دلیلوں میں سے کسی دلیل سے ویش کریں تو ابل سنت والجماعت عالم كا فرض بي كدكتاب الله ياسنت رسول الله يا اجماع است يا قان شری سے اس مسلد کا جوت وش کرے۔

الماز من مورتوں كا سينے ير باتھ بائد هنااجماع امت سے ثابت ے (الله على غابب اربعه) اور مردكا ناف سے فيح باتھ بائد ما عديث على الله ك مطابق سنت ہے (منداحمہ) (الف) اب لا فرجب کوئی ایک آیت یا مدیث سمج صرت چیں کرے کہ مورت ومرد کی نماز میں کوئی فرق ٹیس۔ (ب) کوئی اا قدیب ناف کے علاد وکسی جگیہ ہاتھ باندھنے کی حدیث میں سنت کا لفظ وکھا دے (۲۲۹/۲) دعاء توت ع يميل رفع يدين كرنا حفرت عرب عابت ب (بڑے رفع یدین بخاری) اور ابراہیم تخفی کا فتوی ہے (طحاوی) اور عبد صحاب ، تابعین اور تع تابعین میں کسی نے اس پر الکارشیں کیا تو گویا اجماع ہے اور نسائی شریف میں حديث ب كد نماز ين حالت قيام عن الخضرت علية باتحد باعدا كرت تع أنوت بحى حالت قیام میں ہے اس لئے اس مدیث کے موافق خفی ہاتھ باندھتے ہیں (الف) اب اں لاند ہب میں اگر جراُت ہے تو قر آن وحدیث ہے قنوت سے پیلے رفع پدین کامنع ہونا خابت کروے۔ (ب) اب بہ لانہ ہب رکوع کے بعد کی وعا کی طرح ہاتھ اٹھا کر قنوت بر حنا اورمنہ پر ہاتھ پھیر کر تعدو میں جانا کی آیت یا حدیث سے ثابت کردے۔ جس طرح قرآن ياك جل فاقدوا ما نيسر من الفرآن- كالحكم ے اب سات قر اُتوں میں ہے جس ایک قر اُت برجھی ساری عمر کوئی قر آن کی تلاوت كر _ دواى آيت رهل ب،اى طرح عاى كوعم ب فاستلوا اهل الذكر ان كنتم لا تبعلمون اب ووائمدار بعد من اے جس کی بھی تقلید کرے گا ووقر آن کی ای آیت پر مل ب،ای پراجماع ب

(الف) اب بدانذہب بتائے کہ ساری عرایک قرآت برقرآن باعنا کفروٹرک ہے

یا حرام قرآن وحدیث ہے جابت کرے۔

(ب) ۔ یہ می پر مجملہ کی تعلیہ تخصی کا تخروشرک یا حرام ہونائم کی ایک ' یت قرآ ٹی یا ایک علمجے صرتے غیرمعارض مدیث ہے تاہت کرو۔

(۳۵۱/۳) تقلید ایک اسعادی لفظ ہے صرف ونوہ اصول حدیث، اصول تغییر اصول فقہ کی بنتی بھی اصطلاحی چیدان جی سنت کوئی بھی ان خاص سنوں جی قرشن وحدیث بھی استعال جیس ہو کی رہاں ان کا ستعال ابھرع سے ٹابت ہے۔ (الف) اب لازب ترکن وحدیث سے اسیخ فرقد کا نام'' الل حدیث 'وکھائے پا

سیام مچموڑ و ہے۔ (ب) - قرآن وعدیث ہے انسان کے ملکے نفظ تقلید کامنع ہوتا ٹابٹ کرے ورندا بی

طرف ہے منع کر کے ہے و پینا نہ ہے۔

(ج) سیدلاند بهب اصول صدیت کے تنام اصطفاحی الغاظ قرآن و مدیث سے وکھائے است

ورندتمام بعمول حدیث کوچھوڑ و سے درندای حم کے دجل دفریب سے باز رہے۔ (۲۵۷۵) تی بال عورث کوسمت کرمجدہ کرنے کا تھم سے اور بیرحدیث شریق، ش ہے

ریکمومندا مام اعظم ، مراسل ابودا دُر، بیتل «استا ابی شیبه میدلاند بهب ان احادیث کا مجی منتر سر

اب لا غدیب کوچاہیے کہ دہ مرف ایک آیت نے صدیدہ میچ مرزع بیش کرے کرمردا ورعورت کی نمازیس کوئی فرق نیس فصوصاً مجدد سے بارے بھی۔

(۳۵۳/۱) مثلاب کرجب تک تفاق کا خون جارگ زیو یا پیدائش زیو جائے قماز فرش ہے دیمشلہ صدیت کا ہے۔ اب بدلا غرب ایک آیت یا مدیث پیش کرے کہ تھائ کا خون آئے ہے۔ آئی می نماز کی فرطیت ساقد ہو جاتی ہے۔

(Parx) عفرت على علاست روايت ب كريا ول يمل جو فرض أيس.

(عيدالرزاق ابن الي شيبه)

اب ہولاند ہب مرف ایک آبت یا ایک مدید سیج مرزع چی کر کر کن کہ قلال گاؤں میں حضور ﷺ کے تھم سے جمعہ جاری ہوا تھا ۔۔۔۔

(۳۵۵/۸) امام صاحبٌ کو یا کی اد که احادیث یا دقیمی (کمانپ انومیة) ادکام کی چالیس بزارا حادیث آپ کو یادتیمی - فریل انجوابر ص به پیما ، (ان عمل سے چار بزاد حون آپ کو دغذ ہے - مناقب موافق)

اب يالقهب إن كي لا فرم كالآنا ما فقامه كالمت كرب

(۳۵۱۶) کام موجود ہے گر سوائے انٹراد بورے کی کافذ ہب کمل حدول ہی ٹیس ہوسکا اس لئے عالی کے لئے ان بیار کے موانمی اور جمہد کی طرف تمام مسائل عمل رجوع تمکن ہی ٹیس۔ ای پرتمام الل سفت والجماعت کا اجماع کے بیدخدا کا امریکی بی ہے۔

(الف) اب بدلاندہب بتائے کہ مات قرآ تھی جو تواز ہیں ان مات قارج ل کے نام عام تھم کس حدیث جی ہے کہ ان کی قرآت برقرآن بڑھنا۔

(ب) لا غدیب دیمی بتائے کہ محاح سندے پہلے اسلام کمٹی تھا یا تہیں، کیا حقود علیدانسلام نے ان اد موں کا نام کے کرتھم دیا کہ ان کی کتابوں کو محات سند کہنا اور ان کو مجھوڑ نے والا اسلام کو چھوڑ نے والا ہوگا، بیعد بے لاؤ ورند دہمل وفریب سے باز آؤ۔

مناظرہ طے کرنے کے لئے ضروری باتیں

- (1) من تروق تحرير جماعت كاند برمول
- (1) منتلج وینده مناظر کا بینی قبول کرنے والوں کے فہدے سے محکس ہے وہ تنا

جوشا^فق کارڈیچ ہوں صاف میاف ہوں <u>ہے۔</u>

- (۳) کام مناظرہ ماہین الل منت و انجماعت حتی (حدیث التماع) ہے ہے تام عامت کر زیر
- (٣) وعوني من وينادمي الهي كتاب كيمواله المه تصريبان كارتباعت عن سلم مور
- (۵) داونی ش تقم کی صراحت او که په فرض اواجب منت بنش ،مهاج ، تحروه حرام

كياسب بحواله كثاب معترب

- (١) ارتحم كى جامع وفع تعريف بيندب كاكتاب ...
 - (٤) ال عَم كَ مَتْر ادرة رك كاعِم بحور كناب.
- (٥) وماكل الل سنت؛ "مُلَّب عنه العند رمون الله يَكُلُّكُ . وجداع أمت: قَيْاتِ

شرى البيادول مي تحقيقي وزال اورغير مقلدين كي كماب بطور الزاي وليل ..

- د) ولائل اد مدہب: قرآن مدیث الدیب کی ائنی کا قبل فیز کی کرے گا۔
 - بي بور مي تقيق و ماكل اور فقة حقى كالمفتى بيقول بعور الزاع ويمل.
 - (١٠) سوال کی تیمنانشمین به نز بون کی وسطح و بشخص و معارضه به
 - (۱۱) جَكَرْخِيرِ جِالْبِدارِ جُولَّ ..

できっかい (4)"

حصد سيزدهم

سائل قربانی:

كيا فرمات جي علاء وين مندرجه ويل مسائل جين

تواف: برسوال كا جواب قرآن باك كى صريح آيت يا حديث سيح صريح غير معارض عديا جائ ورنه جواب قابل قبول نيس جوگا

(ادعام) قربانی فرض ب یا دارب یاست یانفل صریح علم قرآن وحدیث عدد کھائیں۔

(۲۵۸/۲) اگر قربانی د فرض ب ند واجب ندست نظل تو جن محدثین نے

ال كانتكم لكها ب(فرض يا داجب) ودبد في جي يا كيا-

(٣٥٩/٣) قرباني كرف والي يس كون كون كاشرائط موفى جايئيس، صاف

قرآن وحديث ے دکھائيں

(۳۷۰/۳) ضروریات سے کتنے ہیے زائد ہوں تو قربانی کرنا ضروری ہوتا بوصاف قرآن وحدیث ہے دکھائیں۔

(٣٦١/٥) وو كون كون كى ضروريات جين جن كى قيت كا حساب قبيل لكايا

جاے گا، جواب قرآن وحدیث ہے ویں۔

(٢٦٢٦) زين مكان وكان وكان وكن قيت كاحساب وكايا آمدني

كا، جواب بالاشرائلاك ساتحة او-

(٢١٣/٤) جوملمان وست كي باوجود قرباني ترك اس كوشرى عدالت

کتے کوڑے میر لگائے کی۔

(٣٦٢٨) جو يكرك، اونت ، كات جار، جو، آخو دانت وال مواس كي قرباني

ممی مدیث ہے جائز ہے۔ *

(٢٧٥/٩) مينس كا دوده يينا، دين بلعن الحي كمانا لبي بينا، كوشت كمانا كس

سیم مرع عدیث ہے تابت کریں۔

(۳۷۷/۱۰) مسینس کی قربانی کا جائز یا ناجائز ہونا قرآن و مدیت ہے

بالوف حت ميان فره نمي ـ

(۱۱۱۸ سے کائے البینس واونٹ وغیرہ کے حصول میں کمی حتی وہ بندی یہ

بربلوك كاحمد شال كرناجا تزييه ياناج تزيه

(۳۱۸۸۳) 💎 کیا عدقریان کے دن مرنے کی قربانی جائز ہے قہ اس کی کٹی عمر

او فی جائے واب مدے سے دیں۔

(۱۳۱۸) مرفی، نیخ، بیزیا کے اقدے کی قربانی جائزے یائیں، جاب مرج

حدیث ہے والیں۔

(۱۳۷ م ۲۷) مستموزے کی قربانی جائز ہے قواس میں کھتے ہے وارشر کیا ہو سکتے

جیں (محوزے کا کتا اور کیا شروری ہے)

(۱۷۵۱م) برک قربانی جازر بو کتنے جھے دار شریک ہو مجتے ہیں اس میں۔

(الالالاع) ويدفوت موكن الى في يول، بيناء كان يجوز ل مال بيخ ف

ا كائ كران د عدل جائز بالارد

(١٤٤٦) عص وارول وكوشت لول كرنتيم كرنا جاين يا الدازي ي

حدیث ٹریف ٹس کیانتم ہے۔

(۱۲۷٬۲۸۸) کیا قربانی کا محوشت کی حتی دو یو بندی با بر بلیان کو دینا جائز ہے،

جواب مرتع مديث سے ويں۔

(۱۹۷۵) مید الانتخا کے والے حنیوں نے مید پڑھ لیکھی انجی اجمد بٹوں نے از میں میں اس میں الانتخا

نمازگٹن پڑگائی کی الجدیث نے بیا*ن کر کے مید* کی فرز ہو پاگیا ہے اپی قربانی فرز '' کر ل شریع میں قربان میں میں میں میں

تواس كى قربانى موكنى وتهيل؟ جواب مديث ، وي .

(۱۲۵۱/۲۰) 💎 نماز ميد پڙه لي آهي اور قربانيال وَنَ کرليس بعد شي پيد چو که ايم

ن ب وخوعيد برسال تحي قربانيان دويد وكرنا بزي كى يانين .

(۳۷۷/۲۱) قربانی کا جانور کی حقی مدیویندی یا برطوی نه وزن کرد. مقربانی

چائزے اِٹین دست میں تائی اور میں میں میں ماہی ہے۔

(۳۷۸/۲۲) - قربانی کے جانور میں کس بے تماری کا حصہ شرق کر ایار قربانی

سب کی ہوگی یانییں

(٣٢٩٠٢٣) 💎 اگر كمي جانور كے تيمرا مصدكان كے دوئے دول قواس كى قربانى

جائز ہے یافیس....

(٣٨٠٠٣) بن جس جانور كے پيدائي كان ند مون واس كي قرباني وائز سے يائين _

(۲۸۷/۲۵) معترت عمره حفزت عبدالله بن محره حفزت على جعزت عبدالله بن

عباس، حضرت انس، حضرت الله جريره كال فريات بين كد قرباني ك تين دن جي جبك

المحديث جارون كے قائل إيس تو كيا مندوجه بالاسحاب كرام 🚓 مديرث كوتين است تھے،

اتبول سف برفتوك إلى واست مديايا كيا ... اورجن كوبهادون والى مدرث يادتى

انہوں نے بیدمد بہند (جارون والی) ان حمایہ (قائمین سون) کو کیوں نہ سنائی کیا سحایہ کرام بھ حدیث کے مقابلہ علی ٹی رائے پٹل کرتے تھے۔

الك قرال ك ماؤرك ورك موال باس كر قربان بالزيد (PASES) نھیں جواب سیجے حدیث سے دیں۔

(۲۸۲۷۱۷) 💎 جو جانورخسی نه دواس کی قربانی جانز ہے یا : چانز جواب حدیث کئے سے وائی۔

جس جانور کے پیدائی دانت شہوں اس کی قربانی جائزے یا تا جائز۔ (FAP)PA)

کائے کو ذریح کرنے کے نئے لنایا گائے قابوتیں میں می متنی اتفاق (FA0/14)

ذرائے سے بہیر جمری کائے کی آ کھ میں لگ گیا اور وہ کائی ہوگی آؤ ب اس کی قرب فی جائز ے وئیں

گائے کوتر انی کے لئے لنایا گرنے میں اس کی تا تک پر جائے گی (アメリンデル) ادردولنكرى بوكن اب قرباني جائز ب ياسيس

عيدك نماز دوكل ادرايك آدى عيد جيس باعد سكا اب دو قرباني (FAZZFI) كركية وكرك

ایک اہل صدیث نے حنفیوں کے چیسے چیر بحبیروں کے ساتھ عمید (MAA/FF) یزمی واس میر کے بعدہ وقر بالی کرے تو جائزے پائیس۔

وَ بِحَ مِينَ مَتَنِي رَكِيسِ كَانِمَا شَرِعاً صَروري فِينِ، ان كي تعداد اور نام (MADEE) مویٹ میج سویٹ سی ہے دیں۔

> فشاب کواجرت می کوشت این جائز ہے اینیں (mq + pm)

(٣٩١/٣٥) ترباني كا كوشت مقلدين تصوصاً حقيون كو دينا جائز ب يانين

جو ب معریث ہے وارا۔

(١٠٠٠) 💎 قرباني كي كلمال كاكون كون أقل جير والإحتى مدور عن كمال

وينا باكريت جواب مديث سنعاديمات

(٣٩٣،٣٤) من قرول كى كهال المام مجدكة تخواه عن دينا جائز ب، اكر كى ف

دے دی تو اس کی تلاق کا حدیث میں کیا طریقہ ہے۔

تيت اوا كروى بيقرون جائزت والنين

(۳۹۵/۲۹) ۔ ایک دربرقربانی کے لئے تھائی کی ٹوٹ کئی،اس کی قربانی ہے تو ہے انہیں

(۲۹۲٫۳۰) 💎 حدة عدم من العسان شن جذب كا الخالق ود تين اه كے سيج پر مگل

اونا ہے یا نیس واس کی تغییر صدیث مرفوع سے میان فرمائیں۔ بھیز کا ایک وہ ماہ کا بچہ از کا کیا تو تر بی او جائے گی یائیس۔

یاد ریکھتے ہوسنٹے کا جواب سرف آیت قرآنی یا حدیث کئے صریح خیر مدرض ہے دیں اگر بخاری ہے دکھا سکوقرز یادہ بہتر ہوگا۔ ۔ ۔ ہوا نو جروا

حجوب كابول ككل كبيا

برلی کے نووں کا سنتا ہے بھاؤ کر کچتے ہیں کوڑی کے اب تین تین شدا نے یہ کہ کر آئیں ڈھیل دی واقعہ ہے گھنے ان کیا ہوی خیشس

مسئة الدولياء مثان عن كم- دوابريل 2000 وكوانتر ينتقل كى كانفرنس منعقد بوئى وجس كى نورانى بريلوي بإرثى نے برزور خالات كى۔ اس كى كانفرنس عن مجر جم مصطفائى كى طرف سے معاد الل منت كى تحفیر كے سلسد جس ایک اشتہار بزاروں كى تعداد ش تغتیم مواد اس شتہار كويز كر جناب ظفر تلى خلان كى دبا كى بادة مخى۔

فرا<u>گ تھ</u>

کوئی ترک کے حمیا اور کوئی ایران کے حمیا کوئی واسمن کے حمیا کوئی گریہاں نے حمیا دو حمیا تھا نام باقی اک فقا عملام کا دو بھی ہم سے چمین کر حالا رضا قال کے حمیا

الل مك من اسلام مائے والے الل منت والجماعت على تھے۔ انہول نے اس ملک میں صدیوں تک وسنای کا نون بھٹر سے فتہ شکی نافذ رکھا۔ جب انگریز اس مک جیں آبا تو ۱۸۵۷ء میں انگریز کے خلاف الی سنت نے جنگ آزادی تری کری۔ اس وقت رضا خانی پر بلوی فرقہ کا نام ونشان تک۔ زباش ٹیس تعاری مجاہدی سنے ۱۵ کرم ۱۲۸ ہے سطایق ہے، ۱۹۷۷ء کی حنل بدرسہ دارالعلوم ویو بند کی بنیاد رکھی۔ انگر پز حکومت نے اس کی بدر ساکوید نام کرنے کے لئے ایک واقعنی احد دضا خان ہریلوی کیا خدمات حاصل کیں۔ احر رضا نے <u>وہ اس میں</u> دیوبند کے ٹی علاء کی تکنیم پر ایک فوٹی بنام المعتمد المسین سرتب کیا۔لیکن کی ایک کی مسلمان نے بھی اس پر توجہ نہ دی۔ دو تین سال کی تا کا بی کے بعد وہ سرجھوٹا فنو کی ہے کرحرمین شریفین آبیاء جہاں سب مسلمان سینے گناہوں ہے تو برکرنے جاتے ہیں۔ اس نے وہاں جا کرجمی کی علام پر جھوٹ ہو لیے افترا ا با تدھے اور حسام الحرثين ؛ ي فؤى لا ياء من كے جواب من عطرت مدنى "ف احصاب الماقب لَنعَى اورعلاء ديويتد کي عقائد کي شفقه وستاويز ''المحدد على المفند'' تصميم تي، جس ير علا ، حرمین شریفین اور معروشام وغیره کے عمام نے تصدیقات تکھیں کہ علاء دیوہند سیجے کیے سي مسلمان جي اوراس كتاب كانام "التعديقات لدفع المسيسات" ركعا ثمية والإجاثق ہے کہ موای ویا تندینے بھی جموعہ بولے تکرونل میں اینڈ کرے مرزائے بھی جموعہ ہولے گر فاریان میں۔ مکد تکر میداور یہ بینہ متورہ ہیں بھی جھوٹ بی پولنا یہ جسارت صرف اور صرف احدر شانے کی ۔ آج بھی اس کے ہرائمتی کوال دستاویز کے جھوٹی ہونے کا یعین ہے۔ اس کے حسام الحریمن کی ترحیب وارعبارات میکن عدالت میں ٹیس دکھا سکتے کہ ایک غرف حسام الحرثین میں ہیٹر، کردہ عبارت کا متحد فوٹو مٹیٹ کرادیں اور ووسری

طرف ما و دو به توکی تحول کمای کاسٹی فوٹو مٹیت کرادی۔ اور عدالت اس پر فیصلہ وے

آر واقعتٰ اس رحنا نے عیادت عمل کوئی شیاعت ٹیس کی۔ رضا خاتی زہر کا بیالہ فی کر ہم

سند کا الا کیا ہے اس کو دھوٹیس سکٹے ساخت الا عدمطابی سیسے الا کوڈا کٹر طلاسہ اقبال ، بائے

مذر کا الا کیا ہے اس کو دھوٹیس سکٹے ساخت الا عدمطابی سیسے الا کوڈا کٹر طلاسہ اقبال ، بائے

دو بند کو لہ بود میں بلایا ، تا کہ بریلوی علماء واج بند سے خلاف اس من علماء یہ پلی اور کی علماء واج بند کے خلاف اس من علم اس کوٹوئی حسام

دارہ من میں ورٹ شدہ الزمارے کو اس ترجیب سے ان معتم اسے کہ مراہے کھی اور کی

علماء واج بند ان الزمارے سے ابی صفائی بیان کریں۔ وہاں بھی بریلوی سو فیصد عاج اسے میں مرکزہ انتخاب کی مراہے کھی اور کی

مدہ ویٹری کی ۔ فیم اس کو اور جہ نداور بریلی کے مزاد کی صفائی صفر کرت انتخاب کے نام ہے تحریر

ماری کی ۔ فیم اس کو اور جہ داور بریلی کے مزاد کی صفائی معرکزہ انتخاب کو نادیا ہو

صدیت قدی ہے کہ اند واول کوستانے سے اند تھائی ان ستانے والوں کے مناف اعلان بھگ کروستے ہیں۔ بھی کچھ یہاں ہوا کہ منا وج بند کوستاتے والوں کو اند تعالیٰ سف است اسے تحریم فرا دیا۔ وہ ند قرآن و صنت اور فقد حتی کی عدامت سے تحریم فرا دیا۔ وہ ند قرآن و صنت اور فقد حتی کی اشاعت میں کوئی فدمت انجام دے سکے شرک بوسنت اور فقد حتی کے مناوم کا کوئی ایک بھی ایسا کامیاب مدرسہ بنا سکے جس سے دیا کے ہر لمک کے لوگ سنتفید ہو دے ہوں۔ دیا ہے کہ وہ علا ہے اور اور شروح وہوں کی مسلمان لیس سے دو علا ہو اور ہند کی قاسیراور شروح وہوائی ہز ہتے ہو جاتے ایس سے دو ایس میں جو گرائی پڑھی دو ہی میں ہوگرائی ہیں جو گرائی ہیں ہوگرائی ہوں گے۔ دواری ہیں جو گرائی پڑھی در جو ان اور میں ہوگرائی ہیں جو گرائی ہیں کے دو الله میں میں ہوگرائی ہوں گے۔

انگریزئے عیسائی پادر یوں کا فتند کھڑا گیا۔ وواسلام پراعتراضات کرتے۔ ان کے جواب میں بر بلوی بالکل عاجز رہے۔ جیکہ حضرت مولانا محمد قاسم نافوتو کی مولانا رحت اللہ مہاجر کی مولانا ابوالمصور ، مولانا سید محمد علی موگری نے اپنی تحریروں اور تقریروں میں ان مند زور پادر یوں کو ایسے دندان شکن جواب دیے کہ وہ ملک مچھوڑ کر جما گے اور جرشی واڈکلینڈ مرکز وٹن ہوئے۔

جب الكريزى شريرة ريوں نے اسلام ك خلاف شدهى كى تحريك شرول كى
اور كفركا سياب الله آيا تو رضا خانى بريادى اس ك مقابله ميں ايك قدم بھى شالفا كا۔
ويوبند ك من علاء نے اس سيالب كرخ موز ديئے اور اس تح يك كوجنم رسيد كرك وم ليا۔
بحب الكريز نے اسلام كے خلاف قادياتى قتن كو كھڑا كيا تو رضا خانى چو ب، وم
و باكر بلوں ميں تحس كے دويرند ك مى علاء نے اس فتنہ كے ايے تھے أد يرك كد
قرم عن جاكر بھى يہ فتندان زخوں ير تي رہا ہے جو ديوبندكى سيف زبان اور نيزة
قلم ے انسيس كے بيے م

تیچریت اور فیر مقلدیت کا فتنداشا تو رضا خانی ایک منت بھی ان کہ آگ نظر سکے گر علاء و ہوبند نے ان کو چھٹی کا دود دھ یاد کرادیا۔ سیاس تح بیکات میں مسلم لیگ مطالبہ پاکستان کے کر کھڑی ہوئی تو ہر بلویوں نے مسلم لیگ کو کافروں اور مرتدوں کی جماعت قرار دیا اور اس کی وجہ سے بتائی کہ مسلم لیگ کے جلسوں اور جلوسوں میں اشرف علی زندہ باد کے فعرے لگائے جاتے ہیں۔ جب پاکستان بن گیا تو مشرقی پاکستان میں پر چم کشائی مولانا ظفر احمد عثانی دیو بندی نے اور مغربی پاکستان میں پر چم کشائی مولانا شہر احمد عثانی دیو بندی نے گی۔ سے ہر بلوی بھی بل بے قدرت خداوندی کا تماشا و کیجتے مات اگر جیاحمہ رضا ہے قبیش کوئی کی تھی کیا کہ ماہیے و نو بندیا کی وجو سے بند ہوئی اور الل سنت في ترقي وه في الطفاطات عن ١١٨ من الأخروج في في ما كم لك عن وب شی کوئی تحریک اخلی قر آبادت بمیشر هها ه دمیرند ک و تحدیدی به به بیار به نظیمی بن کر ساقيم لَكَ عائبَ يَعِينَ الإيلامِينَ مَم بِكُ مُنْ نبوت عِل قيادت معزية البيرين مهروي . الله الناه مناحب بخاري ويو بغدي كيديال رقيء بالنيل من كراً ميني إلى الإيوار كواقب قرر الله في كما تُولِيد عن قيادت محدث أحمر فقط بين موادي ماه رائير مرسف وراثي و برندی کی ایل یا پیشنی آپ انگر نورانی ساح به جند نوی وشونو می آیا در و و تینر س خَاكِ الْظَلِينَةُ مِينَ عِلَا يَكِينِّ لِنَفَاهُ قَالُونَ الطَافِيِّ أَنْ تَحْرِيْكِ مِينَ فَإِلَا تَا مُرَتِ وَإِلا يَا مُغَيِّ مُعُود صدحب کے بائے واقال ہے والینٹی قر کر کھڑ ہے او کے تمریحی کسی کا وضوٹوٹ رواج رکھی کسی کا خط ، ہوجا تا۔ آبٹا دن تھر ڈرتج مک جمادیش خدانے کن کوقیوں فرمان دنشن سے ماحواد ا کنار کے مداری اور کن کے زباعہ زینا کو دہشت کرد کر رویا جائز ہا ہے۔

شاه باش و شاه زنی دل مرزمین ویویتر مرکی مخلصت سے ہوا اسلام کا برنیم بلند

آتی ملورے ہمیشا سروح بیمیلامہ ور رضاحاتی بر بلوی سازا زور مسلمانوں و کافیر

ت يرفري كرات رسولان

الازوأر ولم رشا خال آلے پرفت کا کائے فاست الناكل بي مجدد وحد ان كن الم الاف و تُحِيثِ کے کفن مار ان ہے۔ اول ہے۔ اولامار تخ ک اتّی برلی کا به بذها نور باف

ان وفر سازی بین شاه متعیل اسید، سیداند شهید بر بلوی به مولاتا شاه کرامت علی صاحب جو نیوری، مولاتا شاه کرامت علی صاحب جو نیوری، حاتی امدادانله مهاجر تخو، مولاتا خیدالباری اور ویگر سب علیا و قرتی محلاه مندوق محل، مولاتا سید محد علی مولاتا شاه فضل الزمن سخ مراد آبادی، وارالعلوم ندوق العلماء که تمام ممبر ، ملامه شیلی نعمانی ، مولاتا الطاف مسین حالی ، ملامه و آکم اقبال، سیرت مسئر محد علی معلی مسئر محد علی مسئر محد علی جنات اور تمام مسلم ایک کو کافر قرار دے ویا گیا ہے۔

ناوک نے جیرے سید نے چیودا زیائے میں ترب ہے مرغ قبلہ نما آشیائے میں مربوعات علی مربوع علی مربوعات علی الم

مولانا عبدالماجد بدایونی ، مولانا فیمنی جویم ، مولانا شوکت علی ، مولانا آزاد سجانی ، مولانا عبدالماجد بدایونی ، مولانا عبدالندیه بدایونی ، مولانا عبدالماجد بدایونی ، مولانا عبدالمحین الدین ایمبری سب کافر ، اعتباری شاختی و کیف و الے کافر ، جزل شیا ، الحق ، جزل سوارخال ، اعتباری تا می تاریخ المحید به با حقد خرما کمی و الحر رضائے بیافتوکل و یا کہ جوعلاء و دیو بند کو کافر شد کیے وہ بھی کافر گر مولانا غلام محمد محدود کی ، مولانا مشاق احمد بیشتی ، حضرت مولانا بی مهر علی شاہ صاحب ، خواجد سید غلام محمد مولانا میں شیر محمد ساحب سیادی ، حافظ غلام محمود میلانوی ، جناب شرقی مولانا می مولانا و نیو بند کی تحفید شاہ و اور بندگی تحفید شاہ کا میاس شیر محمد ساحب سیادی ، حافظ غلام محمود میلانوی ، جناب شرقی میدالنبی کوکب و نیوریم نے علاء و او بندگی تحفید شاہ کو تو بیسی احمد رضا کے فتوئی سے فاضی عبدالنبی کوکب و نیوریم نے علاء و او بندگی تحفید شاہ کو تو بیسی احمد رضا کے فتوئی سے کا فرقرار مائے

مشغلہ ان کا ہے تنگیر سلمانان ہند ہے وہ کافر جس کو ہوا ان سے ذرا بھی اختلاف معیارہ سے معیارہ ہوگئی ہے۔ پوری صدی گزرگئی۔ بریلوی جن عقائد کا الزام علا ہو دیو بند پر فکارہ ہیں جن عقائد کا الزام علا ہو دیو بند پر فکارہ ہیں انزام ہی ہے۔
میں دیو بندی نے اس کا آئ تک النزام بنیں کیا کہ واقبی میرے وہی عقیدے ہیں۔
آ و ا بریلوی فقوی فروش نے بچھے کافر جانا
اور کافر یہ کہتے ہیں کہ مسلمان ہوں میں
اسالزایات کی حقیقت ماد حقافریا ہیں ۔

معزت قطب الارشاد مولانا رشيد المركنكوي جنبول نے رمضان ٢٥٢١هـ یوہ ۱۸ وجی انگر بروں ہے جہاد کیا۔ پھرائی جرم میں جیل رہے۔ان مراحمد رضا نے بہتان باندھا کہ وہ خدا تعالی کے بالنعل جموت بولنے کے قائل میں (حسام الحرمین ص١٠١) اب ايك سوسال بعد محر جم مصطفا في في تويامان ليا كداحد رضاف واقعثابيه ببتان بائدها قعابه مطرت تو لکھتے ہیں'' ذات یاک حق تعالی جل جلالہ کی یاک ومنزہ ہاں سے کہ متصف بصف کذب کیا جادے معاذ اللہ تعالی اس کے کلام میں برگز برَرُ شَارَدِ كَذَب كانبيل. قبال المنه تبعالى ومن اصدق من الله قبلا. بو تخف ت تعالی کی نبت بالقیدور کھے یا زبان سے کے وہ برگز مؤمن نبیں، وہ تطعا کافر ہ، ملعون باور مخالف قرآن اور مديث اور اجماع امت كاب وو بركز مؤمن نيس -تعالى الله عما يقولون علوًا كبيرًا (فآونُ رشيديات ١٨، ١٥) بياوَك قيامت كو بھول بچکے ہیں۔ جس مقیدہ کو حضرت کفر فریاد ہے ہیں بیال کاان نے بہتان ہاند در ہے إلى اور بهتان بھي مکد تکرمد ش جين کره بدينه منورو ش جيند کر۔ پياتو اتني بوشي جسارت ہے کہ کئی کافر کو بھی ایسی ہمت تیں ہوئی۔مسلمانو! غور کروقر آن پاک میں ہے کہ وہ

لوك كافرين جوكيت بين كدمريم كابيناك خداب راب كوئى يادري بول كي كدقر آن میں لکھا ہے کد مریم کا بیٹا کتی خدا ہے تو یہ قرآن پر کٹنا بڑا جھوٹ ہوگا۔ اس سے برا جھوٹ وہ ہے کہ جواحد رضائے بولاء کیونکہ یا دری نے پیچھوٹ یہاں بولا اور احمد رضا ئے حرمین شریفین میں۔ اس جیوٹ کی ٹوست سے بڑی کہ بدلوگ اعتبار ہاری تعالیٰ کو نہ سجه سكاوراس كوجهوت كانام وييغه على مندان عثل كواندها كرديا_ (۲) محدث كبيرشارح الوداؤدولي كاطل مولانا فليل احدساحب يربيالزام نكاياك شيطان كاعلم فخر دو عالمٌ سے زيادہ ہے معاذ الله عالانكه حضرت لكھتے ہيں: "اور ہمارا یقین ہے کہ جو مخص کے کہ فلال مخص نی کریم علیہ السلام سے اعلم ہے وہ کا فرے اور المارے حضرات ال مخص كے كافر مونے كافتوى دے يكے بين (المحدد ص ٥٥-٥٥) اس ولی کامل پرحرمین شریفین میں بیٹھ کراحہ رضائے جو بہتان باندھااس کی سزایہ ملی کہ بیعقیدوان کے قلم سے نکھا گیا اور وہ ای فتو ٹن سے کا فر ہو گئے ۔عبدالسیع را مپوری لکھتا ب' اور تماشا بد كداسحاب محفل ميلا د تو زمين كي تمام مبكه ياك ناياك مجالس ند جي غير غربي من حاضر بونا رسول الله صلى الله عليه وسلم كالنيس دعوي كرت، ملك الموت اور ابلیس کا حاضر ہونا اس ہے بھی زیاد و تر مقامات پاک ٹاپاک کفر غیر کفر میں پایا جاتا ہے (انوارسافعه)اوراس كناب يراحد رضاكي زبروست تقريظ بـ ويجموطك الموت اورايليس ا بين يركوه خورك ببت زياد ومقامات يرحاضر ناظر مانا ـ تولاز ما علم يحى زياده مانا كيا ـ احد رضائے حسام الحرمین میں حضرت حکیم الامت مولانا شاہ محد اشرف علی تحانوی پر بہتان بائدها كدانبوں نے معاذ اللہ حضور صلى اللہ عليه وسلم اور بچوں يا يا كلوا يا ك علم كو براير كرديا (حدام الحرين ص ١٠٩) جب حفرت س ان ناياك الزام ك

ورے تیں بوال ہوا تو آئے ہے نے صاف تم مرفرہ یا کہ زوھنیں نے بات کئے بیس ای کو خاری از اسلام کھتا ہوں (مید انبتان) ۔ باسراحت آ ہے نے شعبان واسلام تیں فر مانی ۔ اس کے بعد احمد رضا تمیارہ سال زئیرہ رہا گئین اس بیٹان ہے تو یہ کی تو پُٹی پ وَوَلَى مِنْ قُرِيهِ ٣٢ حِيشِ أَرْتِ بِوَكُولِ الرَّحِرِ إِلَى فَتَشَوُّ بِمِيثُ مِنْ لِيَ فَرُنَ كُرِينَ مِن لِكُ ٨ اصغير ٢٣ إله وكواهم عن قعاتوي عن عمارت يون تبديل فريادي " مُركبعض عنوم خيبه مراد س تو اس بمن حضور عَلِيقَةً كي كما تخصيص مطلق بعض علوم خيد تو غير انها ويليم السلام يُوجِي حاسل جي۔ آھ جي ہے کہ سب کوعالم الغيب کمريات (تغليرالعو الناص ١٨) اور برجمی ہنایا کہ ایسی میارت اہام ریشاوک یہ کے مطاقع الانظار سی ۲۰۸ اور قاضی عشد <u>ے 2 ہے</u> دینے مواقف اور علامہ جرجائی 1 ایم دینے شرح مواقف من 2 ہے ارج سے رقاعی ہے۔ آب یا غرے تو ان تین کوجمی کافر کبواہ جنہوں نے ان کو کافر ٹیس کہا ان کوجمی کا فرکیوں اس واقعہ کے ۱۴ سال اور احمار مناکی وفات کے چود وسال بعد اس کے ہے علد دخنا خان نے بھراس فقے کرتازہ کیا۔ چنانچہ ہو، ۲۲،۲۹ محرم ۱۳۵۳ کو کواس مبارت مما ير بي ش سناظره جواج موراسناظره" فقر برلي كالكش نظامة" ك نام سے ميسيا جوا متا ہے۔ اس میں بانی مناظرہ سید رفاقت میں شاہ صاحب نے بیری نیصلہ ہا کہ ب حطرت تھانو کی یہ افزام ہی افزام ہے۔ اب ہر بلوی مناظر مولوی سردار احد محورا اسپوری نے اپن خفت بعمار نے کے لئے کہا اگراس عبارت می حضور ملطقہ کی و بین نیس تراحید یکی عمیارت تم مولا کا تھا نوٹی کے لئے لکھ دو۔ ہم وٹ نیس سے کہ وہتی اس ممیارت میں تو بین تیس اور بیا ازام اور بہتان قبار ساتھ تی اٹی شروندگی جمیائے کے لئے کہا یہ ہی یاک منگافت کی تو جن کر کھتے ہیں۔ لیکن مولانا تو نوئی کے لیے بھی پر اکھ کرٹیل ویں

كرمون معظور احد تعماني أف في وقت ووتعل عبارت مونا ؛ تقانوي كم نام ب تح بر فرہادی۔ متح مر ۲۵ محرم یہ ۳۵ اے کو دی ۔ نگر فوے بدرا بہانہ بسیاد تین ماد کے بعد علد دخیا فیاں نے ایک دیمال شریع کیا چھن کا تا مقان ویوبند ہول کے سکتے بیننام موجہ '' ادراس میں رائکھا کے مونا نامنظور احمر نعمان نے حضرت قد نو کی کے نام ہے جو مماد ت الکی کر دی ہے اس میں تفافوی صاحب کی تو ہین ہے اور نعمانی صاحب اس عورت میں میرا نام لکو کرشائع کریں و میں ان پر جنگ عزت کا دعوی کروں کا۔ اور عدالت میں ا بنت کروں گا کہ اس بھی تو ہین ہے۔ مولاء نے ؟ ساہ روئے شود ہر کہ دروغش ماشد ریج النَّانی ۱۳۵۲ ه کے بابنات الفرقائن کے آخری میروالے تعلقی پر ماہد رضا خان کے نام سنت سایح زمت شائع کردی اور چور کو گھر تک بنائیائے کے ہے الگ تعتبار بمل مجمی وہ عبارت حامہ رضا خان کے نام ہے شاقع کرائ ۔ اس اشتہار کا عنوان رکھا '' بامائ رضاخانیت ک^{وچنم} کی بشارت ^{۱۱} اور یار ب_{ار}چینج دیا کرطه رضا ایس تم بهشسل جنابت بھی حرام ہے اور کھانا بینا بھی جب تک مرالت بٹس تھے ہم اپنی جنگ عزمت کا مقدمہ دائر ت کرے لیکن رضا خانوں کی بولتی بند ہوگئی۔ اور وہ بیاتر خی سریر نئے ہوئے شرم سے منہ جمیائے ونزاے ی ہاں ہے۔نعمانی صاحب ریشعر پڑھنے رومجنے جنازہ روک کر جیرا جائے انعاز سے بولیے

کل بی نے کبی تھی تر قودنیا جوڑے ہوتے ہو

(۳) معفرت قاسم العلوم والخيرات مولانا فحد فاسم نانوه کی فرمات میں الفیادات سے اگر ممتاز ہوئے میں نو علوم علی میں ممتاز ہوئے میں۔ باقی دہا عمل اس میں بسا اوقات بظاہر اسمی مساوی ہوجاتے میں بلکہ برعہ جاتے میں (تحذیرالناس ص2) خود

ا آخر ، کرزم ملیم الصلوٰ فا والسل می کو و کیکھوائٹی ہے۔ اوقات پی مدہ و ریاضت بھی ان ہے پڑ ہے ہوئے نظر آئے میں باگر مزند میں نہاں کے زاہر نہیں ہوننچ (محمۃ الاسمام ص ۱۸۸) جب کمال ملی اور کمال ممکی وونوں میں آپ کینا تنظیاتو کیم آپ ندتم درووں ت اورکون ہوگا (آبنہ نماش علا) یاد رہے جس طرح آ ہے نے فرمان کہ آلر بھرا سحال ایک المحجور فیرات کرے اور فیرمعمانی احد بہاڑے برایر سرنا تو بطاہر سوے کی خبرات مثلی ز ان ہے۔ تھر سمانی کی مجھور کے مقابلہ میں پکو بھی نہیں۔ ان حرین آپ ملطقہ نے ایک ے فریا، لارابام اصلم ابوطیفائے بھین کی کئے۔ نظاہر تمنی میں پھین ایک ہے وہیں کیا زیادہ سے رحم اوم معاصب کے 24 فی مرتبہ واٹا اب میں آئے کی ایک تھے کا مقابلہ بحي نُسِي أَرْ لَحَتْمَة عَضُورُ لَقُدَى مَنْ لِلْكُنْ مِي إِنْ فَالَّذِينِ معرِيٌّ فَي رامت فَرْضَ جو مِن راقب لَے تَعْرِیبًا ٣٣ سال نمازي گاند اوافر ماڻ اورا مام بَعْلَمْ کے تم ازتم ٣٣ سال نماز ﷺ کانہ ادا قرمانًا _ تو مبتا ہر تنتی شما ایام صاحب کی نر زیر زیادہ بیں۔ کیٹن حضورا قدس ﷺ کی ا کے تحمیر کا مقابلہ بھی نمیں کرسکتیں ۔ رسول اقدائیا ﷺ نے تقریبا ۴۰ سرال رات کی ٹماز ہوا نے بانی اور امام صداحت کے بیسر سائیء شاہ کے بضو سے فجر کی نماز اوا فر دئی آئنی بھی بھیا ۴۰ زیاد و به ۲۰ سے تربہ جالیس مال کی رات کن عودت آنخضرت میان کی ایک تجمید کا مقابلہ بھی نہیں کرمکتی۔ اللہ تعالیٰ نشدہ جریت آنصب او جھوٹ و بہتان ہے بھا تھی۔ (۵) - معترت تطب الدرثاد مولانا كتكوي مقرس سروح بدائرهم نكايز كد معاوات حمنور عصني بيئي المربيط وكانتها كي ميلاومنات بسي تنجيروي بت بيالزام بهي احمر رضا نے انکا پا خلاا درائی زیانہ میں گھند انک اس کی بے ذور تردید کروی تھی کہ سیدالرسل منطقتہ کے وہ بُل عالہ ہے جن کو رموں اللہ عَلَيْتُ ہے قرر سالھی عادی ہے ان کا فائر عام ہے

فن نیب نبایت اینه بده اور علی ورجه کا مسخب سے به حواد و کر دار دینه تر یف و یا آب کے ایس و براز آنندت برخاست ور بیداری و تواہد کا تذکر و ہو(اُلمحند ص 10) ہے۔ ۔ کیسنے ہیں کہ مفترت کا ذکر ولاوت تھوے تر اور اُفٹن ٹرین مستحب ہے۔ گھر کھیا معمون کی خرف را کے وکر کان ہو مکتا ہے کہ مواڈ اللہ بون کے کرڈ کر دلاوت ٹر بینے تھی کا راک مشاہ ہے (انموند اس ۱۷) جمع الزامات کی تروید نعام اہل مفت و یوبند سو سال قبل اكريقي بين اور مذيوح بالرجم نتي مجي الن الزمات كوغاط قراروب كرمه وووي بندكوها عود بيكا بل سنت قرده و يا بيجه أنيكن رشا خاني ولزام تراشي وربيتان بازي بين سركرم دي ب (1) - اعتربت موراة محمدة من تأوتوي مع احد رشا قان نے میازام ڈکانا تھا کہ آپ ر مول قبرس ﷺ کو آخری کی اس معنی ش آئیں یا نے کہ آ ۔ سب بہوں کے بعد اس و نیاش پیدا ہو ہے'۔ اور آ ہے۔ کی شریعت میں سب کے لئے میٹنے ہے۔ اس افرام تراہی کے لیے اور رشا کو مختی محلت کرنا ہوئی حضرت موادنا محم فائم ساحث کی آسکا ہے ا تحذیرہ بنائی ہے آ دعو فقر وش ہو ہے آ دھ فقر وس 🗚 ہے اور نکب فقر وس ۳ ہے خواکر اليله مسلمل مبارت تزيرك وراس كاعرني فيساتر جهيمي بالكل عندأ يا ادريه كاردوائي مكد اور مدینة میں کی رعاد ہوائی سنت بار بار مطافیہ کرتے رہے کہ ایک حرف صام احربین کے اس منڈ کا فوٹو شیت کرا کر جواجہ رہنا نے بغر جغرب سکے سامنے نیٹل کیا۔ ور دوسر می عبرف تحذیرا مناس کے من صفحہ کا فوطنیت کرائیں جس پرموادی احمد رضا کی ویش کردہ منتس مفارت ویکن منصف کے آرک حیور یہ وزور فیصدر نے کہ واقعی یہ عمارت مسمل تطریران میں کیا ہے رائم موسال ہوائیا کوئی رضا شائی سمارٹ کے چیز ہے ہے جهوب بہتان کی یوکا لک وحوثیں منار تہارا حترت ہے گا آرینہ زمانی کے متحرکو ساف

صاف كافرتكعات (تخذريالناس م ٩) اب بحي كوني الرام تراش به مياف وكيا و _ ك مولانا خاتمیت زمانی کا انکار کرتے میں تو احد رضا کے چیروے میں جوٹ کی ریاجی دعوسکتا سب لیکن آئ سے ایک صدی میلی بھی ہوت ی تو اور آئ بھی جوت ی سے مو سال سنة جھونوں پر نھانت زری ری ہے۔

(٨-٨) براللها ب كرهمز يت مسين تواب رسول كي فاتى كا لهانا اور كيل كا ياني مرام ے اور ہندوؤل کی د بوالی کی بوریاں کھانا جائز ہے۔ سنٹ یہ ہے کہ تفرعیان ت ہے اور فیرانشکی نزد کا کمانا ترام ہے۔ اس بھی اختلاف ٹیس اور کافر کا ڈیجے ترام ہے۔ اس کے ہاتھ کی کی اول اوری حرام تھی۔ یالیا تل ہے کہ ایک رضا خاتی کس کا بحرا چوری ا كريك ذراع كريد الدريكاية قو ال كالكلانا حرام يدر بحر كافرون كي تياركرو ووائيان جن على كوئي حرام جيز شال نه وكهان جائز ہے۔ اب كوئي رضا خالي شور مجائے كرديكمو مسلمان كالتياد كرد وكفاء حروم كرد يالدر بتدوول كي بنائي بوكي دوالي جائز كرديء جهالت، مند العسب اور فوف خدا سے عاری ہوئے والوں کا اس و برامی کوئی علاج تیس

المرجم مصطفائي آئده بميتن كانزنس بي سب رضا فانيور كومرف كوا کلانے کا اشتبار دے تو ہم آپ کی کمآبان سے اس کا طال ہوا وکھا دیں مے۔اب اگر اس نے این مال کا طال دود یا یہ تو فوراً اعدام پر بیٹر پہیں ویں اور کوا خوری کا عوصله بورا كرليل.

الدوسك بيدول سند جوميكل لكائي جائد إلى كالتكم فقد كل شركيا بيها بدجم مصفقائی صاحب باحوالہ تنائیں اور بیعی تنائیں کرکھری کے کھرفتم و سے کر اس کھانے کا كمانا بينا احدرشا في ادكام شريب على جائزتكما برسية آب يا فاكارتهم كرمج بير.

(۱۱) جو پائی کیٹر ہو وہ نجاست کے گرنے سال وقت تک اپاکسٹیس ہوتا جب تک اس کا رنگ یا کہ کیٹر ہو وہ نجاست کے گرنے سال وقت تک اپاکسٹیس ہوتا جب تک اس کا رنگ یا ہو یا مزان ید لے۔ یکی مسئلہ بر بلو یوں نے بھی سی خفی فقد سے تجایا ہے۔ ہاں بھی مصطفائی صاحب العمد رضائے قاوئی افریقہ بی جو مسئلہ لکھا ہے کہ اگر تھی بی خفر پر گر کر مرجائے تو اس تھی کو پاک کرنے کا جو طریقہ اتبد رضائے تھا ہے کیا ہی مرہ ہوکہ آگد میں مندویوں کو جو سالن ویا جا۔ ایس خفر پر مار کر تھی ہو پاک کیا جائے۔ اس تھی کو پاک کیا جائے۔ اس سے مندویوں کا کھانا تیار ہو۔

(Ir) فادي رثيديه إمراض كياب كد حضرت كنكوي في لك ب كد الخضرت الله رمة العالمين بي اليكن بية ب كى صفت خاصرتين رهم بيان ما ير بلولول في تو با تؤعد وصدرالدین گورشة لاهالمین بنامجی لیا ہے۔ چنا نیدان کامشزورشعر ہے۔ يرائے چتم مِنا از مدينه برسر ملتال : بشكل صدر دين خو در تمة للعالمين آيد (۱۳-۱۶) خمارت ۵،۵،۵،۱۳،۱۲،۵۱ به میارات شاه ا تامیل شهید کی جں۔ آ ہے، ۲۴ ڈی قعدہ ۲۳ اے مطابق ۱۸۳۱ ھے کو سکوں کے باتھوں بالا کوٹ میں شهید ہوئے۔ اور دارالعلوم و یوبند کی بنیاد ۱۵ محرم ۲۸۴ یه مطابق کے ۱۸۲ و آپ کی شبادت کے ٣٩ سال بعدر تحق من اور احدرضائے ان کی تنابیں بار بار بر سے کے بعد بھی ان کو کافرشیں کہا۔ بلکہ دوسروں کو بھی کہا کہ آئیس کافر کہنا خلاف اعتباط ہے اور وجہ یہ بتائی کہ ان کی عبارات کا سیح اسلامی مطلب بھی ڈکٹا ہے اور اسلامی مطلب تنقی کمزور تاویل سے جو وی غالب رہتا ہے۔اب جم مصطفائی ہے ہم میں یو چھتے ہیں کہ اس کے اور احمد رضا کے زو کیا ، معاذ اللہ نبی یاک منطقہ کے خیال کو گدھے بیل کے خیال سے برتر کہنا ، حضور ﷺ کے بارہ میں ہے حقیدہ رکھنا کہ دہ مرکز میں میں اس کے بھی ہو گئے میں ، معاق اللہ وہ جمار ہے بھی زیادہ ذکیل میں۔ وہ قرمہ ٹاچیز ہے بھی سم کم تر ہیں۔ ان سکے چاہیے ہے کی کئیں ہوتا۔ وہ انار ہے بھائی میں وغیرہ ان عبارات میں ہوا ملائی میلوموجود میں وہ بیان کریں؟ اور اپنے ان اسلامی تعقید دل کو برخی کا نفرنس میں تقلیم بھی کیا کریں ۔ اور اگر ان عبارات عمل اسلامی چینو کوئی تیس تو احمد رضا کو کافر کئے ہے۔ کیا کریں ۔ اور اگر ان عبارات عمل اسلامی چینو کوئی تیس تو احمد رضا کو کافر کئے ہے۔

(۲۵-۲۰) سیرمت نبر ۲۵ - ۲۵ سیر ۲۵ - ۲۵ سیر بارات علیا و دیوبندگی نیس جی ۔ بال میہ بات یا د دے کہ جب نجد کی حکومت نے حزادات مقدر کا گرائے کی میم شروع کی تو بھی رضا خالی وقتی نے ان کونہ روکا۔ بال دیوبندی علیاء کا وفد معترت مواد کا تشہر احمد عنائی آگ کی تیادت میں حمیر و دان کو دائل سے قائل کیا کہ میدود مست تیس ر پر تنظیمل خلولات علید انورشاہ مؤلف میداحد رضہ بجوری جی قائل مطالعہ ہے۔

احردضا ضدائى شكنج ميں :

حدیث قدی کے مطابق انشہ دالول سے عدادت رکھنا انتا ہوا جسکہ خود انٹہ تی تی اور کے طاف اطان جنگ فرما دیتے ہیں۔ احمہ رضائے انگریز سے جہاد کرنے کی دجہ سے انگریز کو خوش کرنے کے لئے ان جاجرین اور شہدا ہیر وہ کند سے افزامات لگائے کہ معفرت آ دم علیہ انسلام سے تا ایندم ایسے بہتا تا ہے بھی بھی کمی سے اویا داللہ پرنہ لگائے۔ ''بھی کیا تھا رہ دسے نے مت تھے' بیالیا برحواس ہوگیا اور اکسی عیادات کی تھی کہ کیا ہے اسے ہوتھام ایرانیات سے انکار کرے نہ ہدا ہوائی وہ فود کافر

انبیاء پر مندفرشتول بر، نه فیامت برمنه جنت و دوزخ م ایمان دیکے ایسے کافر نه کبور جو کے قرآن میں سادہ شرک ہے سارے نبی اور فرشنے شرک عماتے تھے می ۳۹-۳۹ است كافر زكور جو كير فدا مجوت بولّ بير، كما تا، يتا دسونا، باخاز يعر، يدير سكرتا. چاتاء ذوینا مرتا ہے ص 14 اے کافر نہ کبور بوضا کا اناتھنا، بہکنا، بحولنا، یوی بنا ہونا۔ بندول ہے ڈرٹا ،نے است کافرنہ کیومی ۱۷ء جرفتم نبوت زبانی کا انکار کرے جعنور کے بعد کمی کوصاحب شریعت نبی . نے اسیر کافر نہ کار ۱۹۰۱۸) جورموں باک منگفتا کی شان على صريح محملة خيال كرے، كالياں كيا، چه بڑا چھار كيے، آپ سے خدال كو کہ ھے کے خیال سے بدتر کیے اس کو کا فرنہ کیو۔ بہسب یا تیں۔ الکو کہۃ الشیاب اور تمہید المان عن بین ۔ احمد رضا ای کفر بین دے کر مرکز اور آئے تک کو کی پر بلوی ای کو کفر ہے فکال نیٹن سا جوان عمارؤں ہیں۔ سمامی پہلو حاش کر کے بناوے یہ لیز واحمہ رضا ا بنے فتوٹی کے معابق ایسا کافر مرت ہے کہ جواسے مسلمان سمجے دوہمی احر رشا کے فتوٹی ے ایسا کافر مرثہ ہے کہ اس کا نکاح کمی انسان حیوان سے حائز نہیں ۔ محبت زنا ہ خالص اوراولا وولد لحرام ييهيه

اعتراف حق :

نوائے وقت 2-اپر ٹیر منطق میں جمیت علماء پاکستان کے جائٹ سیکرٹری علامہ شعبے احمد ہائی نے اعتراف کیا کرمنان ائٹریشنل می کانفرنس بھارت کے اشارہ ایرو پر ہوئی۔ اس کا مقصد مسلم نوں میں افتراق پیدا کرہ ، اسٹای جہادی تنظیموں پر پابتدی لگوانا تھا۔ اللہ تعالیٰ ایسے وین دئین اور مک دشن مناصرے جمیں محتوط قرما کیں۔

متعد کے بارے میں شخصی انیق قائلین جواز کا مال جواب

KDSDOWN.

سوال:

حد أيون بالزنبين ب ينك أن كل ك دورين و نزيون في من استدر حد كوكون جائزة (روسية جي الرجودي مرف سدان كاليا هاب سيال وضاحت فرما كرم تنفيد فرما كي رجوا كم الله حيوا .

(أمستعن ميدالبعيرسال تيرزعت بينادر)

الجواب

حاصدًا و مصلباً و مسلما، تعابعد - الداتوال في انسان كواشر في انخلوقات بنايا بيء الله كل بنياوي شرورتيل ويتم كل جيل جلب سنفعت اور ونع معتمت - جلب منفعت كاسطلب من كرانسان كوجن شرويات منه جاء ونيس ال و واسلما نيا جاسة اور وقع معترت كاسطلب بيا ب كرانسان كونتسان بنجائد والى يا بموساشر وريات عمل مكاوت في والى جرجز إلى جيل الله مند كمل طرح بها جاسة - ال وونول تتم كن ضروریات کے لئے اللہ تعالی نے انسان کو وقتم کی قو تیں عطا فرمائیں، قوت شہویہ جلب منفعت کے لئے اور قوت غسضیہ دفع مفترت کے لئے وال کو جذبات بھی کہتے ہیں کیونکہ یہ تو تیں انسان کو دفع مصرت یاجلب منفعت کے لئے آ مادہ کرتی اور محینی ہیں۔ پھر قوت شہور کی بھی دونتمیں کردی گئیں: ایک شہوت بطن جوانسان کی بقائے اصل کے لئے ہے، انسان کو جھوک لگتی ہے پیاس گتی ہے، وہ کھانا پیتا ہے اور اس سے اس کی زندگی قائم رائ ہے، دوسری شہوت شرمگاہ جو انسان کی بتائے نسل کے لئے رکھی گئی ہے، انسان اس شہوت کی تسکین کے لئے لکاح کرتا ہے اور ای سے توالد و تاکل کا سلسلہ شروع ہوکر خدا کی زمین بھی آیاد ہوتی ہے۔ ان جذبات میں افراط وتفریط اور بے راہ روی ے انسان بلک اس کا بورا معاشرہ برباد اوتا ہے اوران جذیات کے فوائد بیچے رہ جاتے ہیں اورمفاسد سے بورا معاشرہ جاہ ہوجاتاہے بلکداس بے راہ روی کا بعض اوقات انتاشدید روهمل موتا ہے کہ وین ووینا دونوں پر باو ہوجائے ہیں،اخلا تیات تباہ موجاتے میں اس لئے ان جذبات كو باراه روى سے يجائے كے لئے عمل اور شريعت کی نگام دینا نہایت ضروری ہے۔

:26

اس شہوت كى تسكين كے لئے شراعت فے دوطر يق بتائے بيں اللہ بجائد وتعالى فرماتے بيں: ﴿والسفين هم لفروجهم حافظون الاعلى از واجهم او ما مسلكت ايسمانهم فانهم غير ملومين فين ابتغى ورآء ذالك فألنك هم العادون ﴾ (المومون 2 _ المعار ق ٢٩ ـ ٣١) "اور جوا في شبوت كى جكركوتها متے بيں

''مراچی عورتوں پر وابینے ہاتھ کے مال (باتدیوں) پرسوان پرٹیس کچھالزام ۔ پھرجوکونی ڈھونٹر ہے اس کے سونہ مو وہی ہیں صدیبے بڑھنے والے ۔ ایعنی جوالی منکو یہ اور باند ک تے سواکوئی اور راستہ فغلائے شہرت کا ذھونڈے ، وہ حلائ کی جد ہے آ مے نکل جائے والاسبء اس مين متعده زاره لواهلت واستمناه بالبيد وغيرو سب صورتين أحمرني _ خداويد لکہ دس نے ان دوسورتوں کے طاوہ کوئی اور راستہ تلاش کرنے واسے کوجہ سے گزرنے والا فرباد تمر شیعہ نے کل الاعلان اس حدکوتوڑ کر دوکوجار کرلیاں چنانحہ این باہور أتمتات اسباب حل المراءه عشدنيا اربعة النكاح وملك اليعين والمتعة و المنسحة لمبيل (اعتقادات ابن بانوب) جزرت بال عورت كے مغال بوئے كے ميار ا مباب بين: ١- الكات، ٥- ملك ميمين لعني بالدي جوناه ٣- حده ٣- تخليل، الن كو عارية الفرخ بھی كيتے جيں لين الحق اللي بهن بغي وغير وكو ادھار كھاتے جي مفت بطور احسان سی اور کے سلنے على كرد يند شيد في اس منته يمن قرآن وك كى كلى كالفت كى ہے کوکہ جس فورت ہے متعد کیا جاتا ہے وہ زقر ہوئ ہے کیونکہ زمرد پراس کا نان و الفقة فرطن ہے نہ ہی اس کے بیٹے طلاق نہ مدت اور نہ بیرات اور نہ وہ یاندی ہے ، آپوئند نداس کی فرید وفراخت جائز ناکس کو بهبراً نا درست نداس کو آزاد کرنانتی به جب برتورت زيوي بنائد فالازاق والحالية فليمن البنطي وراأه والك فبالنك هم السعاد و یہ بھیں ٹرانل ہوئی ۔ اس لئے شعبہ احکام شرعیہ ہے تجاوز کر نا اور حلال کو جھوز کر حرام میں بڑتا ہے، اس کئے متعد کے حرام مونے یہ محابہ کرائم اور تابعین کا ارتباع ہے اور حاروں انتہ جمتد بن اس کے حرام ہونے پرشنن میں ۔ دوسری میک خدادند لایزال قرائة بين الجولات كمرهوا لحنياتكم على المبغاء كه (التوسُّ)" اورندز بردك كرو

ائی چھور یوں پر بدکاری کے واسطے" عبداللہ بن الى رئيس السائقين کے ياس كنى لوغر پال تھیں جن ہے وہ بدکاری کرا کر رویب حاصل کرتا تھا، ای بدکاری کوجس کوقر آن نے بغا، کہا ہے اس کا نام شیعہ کے ہاں متعہ ہے اور قرآن یاک کے خلاف ان کا کہنا ے کدمتعہ سنت موکدہ ہے تگر مخافقین نے قتلم وعناد ہے منع کیا، اس بارے میں احادیث صححہ وارد ہوئی ہیں۔ منجلہ ان کے بیال ایک حدیث کا ترجم نقل کیا جاتا ہے جو حضرت سلمان فاری، مقداد بن اسود الکندی اور تمارین باسر ، روایت کی گئی ہے، راویان عدیث کہتے ہیں کہ ہم لوگ ایک دن خدمت باسعادت حضرت سرو راصفیاء محر مصطفیٰ ع من حاضر تھے کہ آپ خطبہ کے لئے کھڑے ہوئے اور فرمایا حمدوثنا وخصوض خدائے باک کے لئے ہے چراہے اور درود بھیج کر ازراہ التفات اپنا روئے مبارک ہاری طرف پھیر کرادشاد قرمایا: اے گردومرد مختیق که آیت ﴿ فِسِمِ السندمنعت ﴾ الْخُ كا تخذ لے كريروروكار عالم كى طرف سے ميرے بھائى جرائيل جى يازل ہوئے۔ غدائے واحد نے ایسی فعت ہے ہمیں سرفراز کیا جوپیفیبران ماسیق میں ہے کئی کوئییں بھٹی گئی۔ میں تم کو متعد کرنے کا تکم دیتا ہوں تا کہ میرے بعد اور میرے زمانے میں میری سنت رہے۔ جومیراقول قبول کرئے اس پر عامل ہوگا اور اے رواج دے گا وہ مجھ ے ہے اور جس نے امور متعدیس اختلاف کیا اس نے علم خداوندی کی مخالفت کی۔ عِتْنے لوگ اس مجلس میں میں آگاہ ہوجا ئیں کہ مجھ سے عداوت رکھنے کی وجہ جواس کی تكذيب يا اے معطل اور برطرف كرے ميں اس يرحفزت رب العزت كو گواہ كركے کہتا ہوں کہ وہ اہل جہنم ہے ہے اور خدا کی اعنت اس پر ہے جس نے احکام متعدیش میری مخالفت کی _ کویا وہ خدا کا مخالف باور دشمن خدا دوزی ب- واضح :و كر مخسوس

کیا خدا تعالی نے متعد کرنا میرے اور میری امت کے لئے اس شرف کی میں ہے۔ جواومروں کے مذیفہ میں جھے حاص ہے۔(کالد حسنہ ترجمہ د سالہ متعہ مل و قرمجانی صورول) شاہد کین دوارت یا حاکم کی شجلے نے کہدوا تھا:

> منتور ہے کہ ہم تنوں کا وسال ہو ندیب وہ چاہئے کہ زنا ہمی حلال ہو

متعه.:

هند کا خاد ستان سے اشتق ہے جس کے معنی تعوز اللہ کا دو حاصل کرئے کے بین در چنا نچر آخرے کی میری زعر کی کے مقابلہ شن اس اینا کی چنوروز و زندگی کوفر سن نے منا کا فرای ہے ، مؤاملہ ما ہداہ السحیو فالدیما مناع کچا مطاقہ صاحب کہ جو کیڑوں کا جوڑا دیا جاتا ہے اس کوچکی متعدان لئے کہتے ہیں کہ بمقابلہ مہر کے دونغع تنیل ہے جیسا كرافذتما في في فرايا: ﴿ فَسَعَدُ عِنْ إِنْ الرَّرِيانِ ﴿ وَلَسَلَمُ عَلَيْهِ مِنْ إِنَّ مِنْ الْحَ بالععووف كي بي طرت لكاح بوزندگي كا معابده سيدام سكرمة بكري وريت سيقوث ا تفع حاصل کرنے کو مجی متعہ کہتے ہیں اور اس کی دہشمیں ہیں:

ا ... انکاح مولت کرایک مت معینہ کے سے کو ہوں کے سامنے کمی فورت ے از دوائی تعلق قائم کرلیا ہ ہے اور معینہ بدت گزرنے کے بعد یا طلاق مفارقت ہو جائے لیکن مفارقت کے **بعد استبراہ رم کے لئے ایک ماءواری کا انت**فار کرے تا کہ دومرے کے نطفہ کے ساتھ اختل ملاہے محقوظ رہے ۔ یہ نکاح سونت کا خریقہ عرب میں اسمزم ہے پہلے رانگا تھا۔ لیےمغر یا دوس کا ملک علی تجارت یا جنگ وغیرو کی وہ ہے کچھ حرمہ آیام کے لئے بیر طریقہ استعال کر لیتے تھے۔ جس طرح اسلام سے قبل لوگ مود لینے تھے شراب ہے تھے تحران کی نرمت اسلام تھی بھی شروع میں بی نازل ند ہوئی تو بعض اوگ اسلام مائے کے بعد یعی اس عادت پر رہے، بالآخر اسلام نے ان کو حرام قرارہ ہے ویا۔ ای طرح میرمت بمعنی نگاح موقت جو بالمیت ہے وائج تھا اس ہے ارتدائے اسلام میں ای منع شکرا کیا بلکہ بعد میں اس متنہ کی حرمت کا اعلان عوااور اب و پیلرخ امیت به قیامت تک حرام ہے۔

الى بىن دوسرى فتىم متعدى يەب كەيلىية تى كىلىنى مورتى معدى الأسس كىر ، زارنسن میں بیننه حاتی ہیں یا دینا الگ کاروبار جلاتی ہیں چونکیران ہے بھی **اوگ** منکوجہ ے مقابلہ علی بہت تموزا کھنے اٹھاتے ہیں اس سے اس کوجی حد کتے ہیں لیکن پہ حد خالعی زناہے صرف نام کا وحوکہ ہے جیسے کوئی عنز ریکا نام بگراہ شراب کا نام نثر بعث اور موہ

که نام قیمست دکھ کے کوئل زنا ان کو کہتے ہیں کہ دیکا حودت سے چنس تسکیل کرنا ہوئے بیوی ہو نہ بالدی اور متعد والی خورت نہ ایوی ہے اور نہ بالدی۔ حصر کی روقم چوز نا کادومرانام ہے بیکن وین بیس مجی جائز ناتھی۔ اسمام نے سود، جوا اور شراب کوئو کچھ یدے تک برداشت کیا شراش متند کواسایم نے بھی بجی برداشت نہیں کیا۔

ففائل متعه:

اس منتعہ ہے سب دین پیزار ہیں تمر روافقی کے باں سے مرف حائز قوانہیں بکیدائک ہمیت جو می عروت ہے اوران کے تواب کو نہ کماز سے بچھے مکتی ہیں نہ روز ہے نہ زکواج اور نه نج چنانی ما باقریجنسی نقل کرتے ہیں '' مصرت سلمان فارسی ومقداد ہیں الووكندي اور قاورت يالروض المذمتهم حديث تتح روايت كرتي بين كرجلك فتم الرملين نے ارشارفر بابا كه بوخنس اين زندگي بحل ايک دفعه متعه كرے گا وہ اش بهشت میں ہے ہے، جب معد وبلی مورث ساتھ ماتھ معد کے اوا وسانہ کے ساتھ کوئی چکھا ہے تو ائٹ فرشتہ اتر تا ہے اور جب کئی اس جلس ہے وہ ماہر نہیں عاتمے ان کی مفاقلت کرنا ہے۔ دونوں کا آئیں بیس محققو کرنا تھج کا مرحد رکھتا ہے۔ جب دونوں آیک وومرے کے ہاتھ کیزئے ہیں تو ان کی تکلیول سے بن کے گن ہ ٹیک پڑتے ہیں۔ جب مردعورت کا بوسہ نبتا ہے خداتھا تی ہر اوٹ پر اُکٹی ٹواپ کچے دھرو کا بخشا ہے۔ جس وقت وہ میش مما شرت میں مصروف ہو تے جس بروروگار عالم ہر ایک لذت اور شہوت پر ان کے حصر میں بہاڑوں کے برابر قواب عظام کرتا ہے۔ جب فارغ ہو کر تنسل کرتے بن بشرطیکه وه دس کاممی بقین رکتے ہوں کہ ہمارا خدیق جاندوتعالیٰ ہے اور حند کرتا

سنت رسول ہے تو خدا تعالیٰ ملائکہ کی طرف خطاب کرتا ہے کہ میرے ان بندوں کودیکھو جوا نھے ہیں اور اس علم ویقین کے ساتھ حسل کررہے ہیں کد میں ان کا پرورد گارہوں، تم مواہ رہو میں نے ان کے گناہوں کو پخش ویا ہے۔ وقت مخسل جو قطرہ ان کے موئے بدن سے تیکتا ہے جرالیک بوئد کے عوض وی وی ثواب عطاء دی دی گناہ معاف اور وی وس درجه مراتب ان کے بلند کے جاتے ہیں۔راویان حدیث (حضرت سلمان وغیرہ) بیان کرتے ہیں کدامیر المومنین حضرت علیٰ بن ابی طالب نے متعد کی نضیاتیں س کرعوش كيا: اے حضرت تحتى مرتبت ميں آپ كي تصديق كرنے والا جوں۔ جو محض اس كار خير من می کرے (کمیشن ایجٹ ہے) اس کے لئے کیا تواب ہے؟ آپ اللے نے فرمایا: جب وہ فارنج ہو کرمنسل کرتے ہیں تو باری تعالیٰ عزاسمہ ہر قطرہ ہے (جوان کے بدن ے جداہونا ہے) ایک ایک فرشتہ پیدا کرتے ہیں جوقیاست تک خدا کی تنہیج و تقدیس كرتاب اوراس كا ثواب ان (كميشن ايجنول) كو مُنْتِمَّا ہے۔ جناب امير المونين فرماتے ہیں: جواس سنت کو دشوار سمجھا دراہے قبول نہ کرے وہ میرے شیعوں ہے نہیں ، میں اس سے بیزار ہوں۔ حضرت سید عالم اللہ نے فرمایا: جس نے زن مومنہ ہے متعد کیا گویا اس نے ستر مرتبہ خانہ کعبہ کی زیارت کی۔ جناب سید البشر شفیع محشر نے فرمایا: ا _ عَلى! موننين اورمومنات كورغبت دلاني حابية كدونيا سے اٹھنے سے بيبلے متعد كرليں اگرچدایک عی مرتبہ ہو۔ خدائے باک نے اپنے نئس کی تتم کھائی ہے کد آتش دوزخ ے اس مرد اور عورت پر عذاب نہ کروں گا جس نے متعد کیا ہو۔ پس ایک دفعہ متعد ، كرف والا نارجنم سے ب خوف رب كا ، جودو مرتبه متعدكر ، كا اس كا حشر نيك بندوں کے ماتھ ہوگا۔ تین مرتبہ حد کرنے ہے جنب کی سے نعیب ہوگی۔ جس نے اس کارٹیر میں زبادتی کی ہوگی مرور وگار عالم اس کو مدارج اعلیٰ عطاء کر ہے گا۔ اے علی! تیامت سے دن اس مرد ادر مورت کے لئے الی نورانی سوئریاں لائی حاسم می جن سے یاؤں مروار پر کے کان زبرجد مبڑو آ تکھیں باقوت مشکم لؤلؤ اور م حان کے بول ہے۔ ۔ لاگ بیکل کی طرح کی مراط ہے گزر جائیں ہے۔ ان کے ساتھ ساتھ سز متر مفیں فرشتوں کی ہوں گا ، و مجھنے والے کہیں سے بہلوگ شاید خدا کے مقرب فریتے ہیں یا ہی اور رمول ہیں فرشتے جواب و یہا کے بیارہ لوگ ہیں جنہوں نے سنٹ بٹیبر (سند) کی اجابت کی مصاور وہ بجشت عی اخر صاب وائل ہوں ہے۔ یامان ا براور موس کے لئے جو (کمیشن ایجٹ بن کر) کوشش کرے گا ان کویمی انیس کی طرح نواب لیے گا، یا تلی! جب وہ تسل کر ہیں ہے کوئی تطروان کے بدن سے جدانہ ہو گا تکر ۔ کہ خدا تعالی ہر بوند کی قعد نوش اے فرشتے پیدا کرے کا جو تیج تقریس باری خیالی عمالہ کراس کا تو اب انبیر بخشی مے۔ (کارنا نعص ۱۵۱۰)

ایک ڈاکر نے یہ مدیث منا کر کیا: لوگو! خودکرو۔ سب نی اور انٹر معمومین میدان قیامت میں باتھ ملتے رہ جائمیں کے ادر ایران کی طوائفیں ادر مجڑ ڈے کس شان ہے ملی صراط بارکرے جنت میں وائل ہوں ہے، دومرے صاحب ہولے آئیل ہے می ای کی تعمد بق ہوتی ہے کر سویاں سب ہے پہلے خدا کی بادشاہت میں داخل ہوں گ انجیرا بولا ای من کا نام مند کی دشن نے رکھ ہے، مند کامنی تحوز افراندہ اخری ہوتا ہے۔ بیمان تو انتا فائدہ ملا کون ہے جو ایک علی بیشہ ور طوائف کے تج اور عمروں کو تار ' کرنے اور خانہ کعہ کی ہر وفیدستر بار زیارت کا ٹواپ شاد کر شکے؟ آیک خواکف جم سے یں کارخیر کے لگے زندگی وقف کرد**ی ہے اس کے م**رتیر کے مسلوں کے ہر قسرے سے بِيغِرْ شِيعَ بِيدا ہوئے ، ان كا شاركون كرسكة ہے؟ يو تھے صاحب بولے البحي تو آپ بنہ وہ حدیث تیانیں کی ہے جس میں جناب ہی الدیر منگلے سنے قرمایا کہ جب دونشنل کرتے ہیں تو ان کے جم ہے گرنے والے اٹی کے ہر آخرے سے ایک قراشہ پیداہونا ہے تکم بعد میں انٹر کرام کے زبانہ میں الشاقعائی نے اس تواب میں حزیدا ضاف فرما ویار نام بعض صاوق یا نے قرمان جو مخص مند کرے پار مختسل جنانت کرے وافی کے ہر تطرہ ہے جوائں کے بدن سے گرے خدانعان سترستر فرشتے بیدا کرتاہے جوال حنس کے لئے قیامت تک دعائے مغفرت کرتے رہنے ہیں۔

(پرمان المعبد ص ۵۰مؤنفه سديلي الحاتري)

ورجات عاليه:

ر مول الشَّقِطَةُ لِينْ فرمانَ وقِعْم أيِّ وفعه منعه كرات ودجه الم من كاليات، اہ دور فعد متعد کرے تو درجہ اہام مسینا کا حاصل ہو ، تین دفعہ متعد کرئے ہے علی کا سرتیہ الع أور جاروفد مندكرة والارمول باك في كالهم مرتبه وجانات (فل فسيسر صهب الصلاقيل ص ٢٩٣/ن٤) بروايت ك كرانيساطيف كو كني لك الروايت عن ا بک کی روگئی۔ آخر میں برا شاقہ ہوتا جائے تھا کہ بڑویا کی مرتب حد کرے اس کا ارجہ الله بخالق جيها بوگاه تا كه منعه كي عفهت وشان يورے هرينتے ہے تابت ہو۔ (تحذ الله عشر بیص فااے)اس پر ووسرے صاحب ہوا گد جو طوائف عمر تجر محد میں معروف رہی

وہ کب حضرت ادام صبی یا حضرت علی یا حضور مقابطة کو خاطر میں لاسٹ کی و بید حضرات تو جشت میں اس کا مقام : کھنے کو تر ہی جا کیں ہے۔ خیراس متعد کا اوّ اب تو فتم ہوئے والا شہیں میں ویک حدیث اور من لیس۔ تسفیسیو منہج المصاد قین ہیں ہے کہ ''جواس وی سے فوت ہو گیا اور اس نے ایک وفعہ بھی متعد تہ کیا تو دوز قیاست وو نہا ہیں بدھنی الفان جائے گا۔ اس کے کان اور تاک کے ہوئے ہوئی عول ہے۔ (می 1947 کرے ا)

فداسواف کرے ان دوایات کی روشی عمی آو یکی معلوم ہوتا ہے کہ بہ تعرات معاون اللہ معاون ہوتا ہے کہ بہ تعرات معاون اللہ تعرات انبر معمودین ہوں کے بمن سے بہ کار فیر ایک و فد بھی تابیت نہیں۔ واکن تجائی جس کی کائیں آن کل شید نوب پھیا رہے ہیں وہ بہلے تی مائی تعااوراب بزی تحقیق کے بعد شید ہو گیا۔ اس نے اپنے شید ہونے کی اسمل وہ بھی کامی سے کہ جب میں کائی میں بڑھتا تھا اور دہاں گلو العلیم تھی۔ شب دروز فوجوا توں کا میل جو لی تھا تو ہمرے دل ہیں ہے بات بار یاد المحق تھی کہ ایسے معاشرے میں جنی تعلقات پر حدود و فیرہ اور بابند کی ایک تھی ہے۔ اس کے دل ہی بی بیات فی ایس ایس کے دل ہی بی بیات فی ایس کی ایس کے دل ہی بی بیات تھی ایس کے دل ہی بی بیات اور اتا اجرو تو ایس کے دل ہی بی بیات تھی ، اب اس نے کابوں کا مطالعہ شرور کیا۔ اسے جنی آ زادی کی اتن کھی پھنی اور اتا اجرو تو اب سے دیو کے بال المائہ ہود کیا ہی سے دیا نور آگا ہو تا ہی ہو ہو کی ، اس پر شید معرات نے معد ذکہ و باد کے درے دائلے اور صاد بی تو ان کے دائلے اور صاد بی تورات کی دیا ہو کہ اس پر شید معرات نے معد ذکہ و باد کے درے دائلے اور صاد بی تورات کی دیا ہو کہ اس پر شید معرات نے معد ذکہ و باد کے درے دائلے اور سیوں نے قس کم جہاں باک کے۔

عيعه كي دليل:

عيدكة بن كرثرة ن باك عل عندكاتم ب: ﴿ فَعَمَا اسْعَمَعُهُ بِهِ

مَنْهُنَّ فَالْمُونِفُنَّ أَجُوزُهُمَّ فُويضة ﴾ "كه تن سنة تم متعالروان كومتعدكي اجرت د ب ۱۰، ممروس استدلال میں شیعہ نے قریت کوسیاتی دسیات سے بالک کاٹ کر ایسا بی اشدلال کیا ہے بھیے ایک ہے نمزز نے استدلال کیا تھا کر قرآن یاک میں مدف اور سریج آیت ہے کہ ﴿ لا تُنفُسرُ لِمُوا المصلوف ﴾ آنماز کے قریب بھی نہ حاور " اور انتظ سند مدنساع ہے فاص محد مراویتا ایباق ہے جیے میسائی قرآن یاک سے معرت المعمل كاخام دوناس بت سرايات كرق بين مؤ فيفسوت فريف لام خليه بك حالاتک بیبان غلام محمی زرفر پوکسی نے شہیں کہا۔ اس آبت ہے میلے نکات اور خریات کا بیان چلا آ دبا ہے۔ بن مورد کر سے نکار ترام ہے ان کی تنصیل بیان کر کے ابتد خولی نے قربال وأحل فك يُرهُما ور آءَ ذَالِكُ وَأَنْ تَبْسَغُوا بَامُوَ الكُوهُ مُخْصِبَيْنَ غَيْرَ مُنصَافِحِينَ ﴾ " اورهال إن تم كوسب مورتين ان كيسوا بشرطيك طلب كروان كواييخ ول کے بدیے قیدیش کا نے کونہ سخل ٹکالئے کو۔'' علامہ مخافی فرماتے ہیں۔'' بعنی بمن عودتواں کی حرمت بیان ہونچی، ان کے سورسب طال جی جار ترطوں سنتہ۔ اول میا کہ طسب کرولیج فی زیان منعه ایجاب قبول دونول طرف سنه بود جاسته - دومری مدکه ول میمن مېرو بنا قبول کره په تيسري په کهان مورتون کو نبه ميس لا نامنتسود موصرف مستي نکالن اور شہوت رائی مقصورت ہوجیہا کہ ز: علی ہوتا ہے لیکن میشہ کے نے وہ اس کی زور ہومائے، چھوڑے بغیر بھی شاچوئے مطلب یہ کہ کوئی مدت مقرر شہو۔اس ہے متعد کا شرام ہونا معنوم ہو گیا جس پر الل حق کا اعمال سند اور چو تھی شرط دوسری آبت ﴿ وِلا خشبخسان ب المفادان كي ش ب كفي طور يردوى مد جويين كم ازم وومرد ما ألك مرواور ا وعورتمن اس معاملہ کی مواہ ہول۔ نگر بدوں کا ہا کے ایجاب وقبول ہوگا تو وہ انکاح

ورست ند ہوگا ، اُرہ سمجھ جائے گا۔ انفرش جب آیت سے پہلے نکاخ کا فرکر اور مند جوسرف من الل الحد ك الح كيا جاتا بان كرامت بواب استعاراً عامق ته لئے وال متد کیے مرد ہوسکتا ہے کیونکہ یولی کا ذکر چکی دیا ہے: ﴿ فَعَمَا استعماعتم بِهُ عنهن فاتوهن اجور هن فريضة إليه كن بهب يه يون كوتم تيدش . تيجه يو يُكرمن كاتم کام میں السیکان (منکوحہ) مورقول میں ہے تو ان کوئان کے حق (میر) ہومقرر ہوئ ہیں۔ لین نفاح کے بعد جب ایک وقعہ ہی وہی یا شوٹ میجند ہوگئی تو اب اس زبوق کا میر ع الازم يوكيا - بجراى عن مبر كي بالنه يوري كركيان أنه في فريات جي: " اور جوكو في قم میں نہ رکھے مقدور کہ لاکٹے جی لانے بیبیال مسمان تو فکاح کر لے ان ہے جوشہورے باتھ کا مال جن جوتمبروی آ ہیں کی وغربان جن مسلمان 🚜 جنی جس کو اس بات مج مقدروند ہو كدآ زاد كورت سے نكاح كر مكے اور اس كے مير اور ففقا كا قبل كر سكے تو بہتر ے كراييا تخص آيال بى كى كى مسلمان لوغ كات تكان كر كے كران كا مركم بوتات اور نفظ میں ہمی بر مہوت ہے کہ ہالک نے اگر اس کوائے بہاں رکھا جیدا کہ اکثر موت ہے توزوج اس کے نفقہ سے قارق البال رہے گا اور اگر زوج کے حالے کرویا تو مجی یہ أويت فروكة تخليف الفروروك ألياب

اس ہے قوصاف مصوم ہوا کہ ہوآ زوجورے کے مہر وفقت کی قدرے نہ رکھتا ہو اس کے لئے ایک ہی عربیقہ ہے کہ مسلمان لوش ک سے نکاح کرے جس کا مہر وفقتہ کم ہے۔ آگر مند کی ہمی محج مُش ہوتی تو اس طرف وہنما کی ضروری تھی جبال مرہے سے نفقہ کا ہو جہ ہے ہی تھیں اور اس ہے آ کے ان محرق ک ہے شعم کیا جوسرف مستی فکالے والی اور بھی یاریاں کرنے والی ہیں اور مسب جانے ہیں کہ متعدولی مورث مرف منتی فکالے والی اور جیسی یا ریاں کرنے والی ہوتی ہے۔ جب آیت کے بیاتی یہ کی متعد کی حرمت ہے اور سیات یم بھی تو ورمیان سے آیک گوا کاٹ کر سیاتی و سیاتی کے خلاف حدد کا جواز فکالٹا کلام الی کی تحریف ہے۔ وہ بیعنو فنون انسک لمسے عن مو اضع میں یہود کی عادت تھی۔ اس عادت کی مشق ہے لوگ کر رہے ہیں۔ جب قرآن پاک کی اس آیت سے یہ مسلم حارث نیس ہوتا بلکہ می کے میاتی و میائی سے متعد کی حرمت واضع ہوتی ہے قر متواز قرآن کو تھوز کر حضرت مجداللہ بی سسوڈ کی آیک شاذ قرآت کا مہادا لے کر حد میں مسمود ھفد شافذہ لا یہ حدج بھا فو آناو لا عبر اور وی می م عام ہے ا) لیمن حضرت محیداللہ بن مسمود کی بیقرآت (جس ٹی لاج لے حسف فی ہے) شاذ ہے۔ شاد قرآن سے مشاہد ہے کہ شافہ ہے۔ شاد قرآن ویک کی شاد ہے۔ شاد قرآن ویک کی ایس مسمود کی کھ نے شاذ قرآنت اس سے بحیشیت قرآن ویکل کی جائے ہے نہ بحیشیت صدیت کے کھ نے شاذ قرآنت

حرمت متعد کے دلاکل :

قبال معسمید اخیر نیا ابنو سنیفة عن سماد عن ابر اهیم عن این مسعودٌ فی متعقالنده و قبال الدما و عصت لا صحاب معمد مَنْظُ فی غیز فقالهم شیکوافیها المصووبة ثبع نسبختها آبة النکاح و العیوات والمصنای (کتاب الآثار ص ۲۹۳) "امام تِرْزُوات بین کرام ابوطیف نیمی فیردی حادث ادر آمیوں نے ابرائیم تخی سے اور آمیوں نے این مسعود سے کرم وقی سے متدکی رفعت محاب کے لئے ایک تروہ عمل فی جس عی آمیوں نے بحرد ہوئے کی الکایت کی تو آیت نکاح آیت میراث ادرآیت صعال نے اس کومنسورخ کردیا۔ 'ایس ے تو معلوم اوا کر معترت عبداللہ من مسعود آ آ ن یاک کی تین آیات ہے عند کو منسوٹ مانتے میں اور فرماتے ہیں کہ متعہ ہے نکاع کے مقاصد پر ، و ہوتے ہیں کیونکہ نكاح كامتعد عفاظت فمس ركز مباتع عفاظت نسب وعفاهت نس جح ببيد جب كوئي تخف مُلَدُ تُلَدِ بِسَيِّ سِنَّى وَلِكَ مِنْكَ مِنْكَ مِنْكَ مِنْكَ مِنْكِ مِنْكِ أَوْلَ لَوْ اللهِ إِنْ عَلَ ہے گا کہ وال کے المف کے گل ہوئے کہاں کہاں کھٹے چاہ ٹال ہمی جائے تو سب کواچی زيرة بيت دكوكران في هناظت كييركر _ گا؟ لا كالدا يسير بيج آ داره كردول كي طرح لیلیں برحیں کے جومعاشرہ کے لئے ستعنی ہاسور بوں مے اوران میں بیعنا لڑ کہاں بھی ہوں کی تو دورجی مصیبت کہ ان کے لئے ہم قوم، ہمنسل اور ہم کنوشو ہر مناتھور میں بھی خبین آ سکتابه نکاح میں اولاو کی تربیت کی زمیدواری تنی معصد میں اولاد کی تامی وہر بادی ے۔ مجرحد کی صورت بھی فود نکاح مجما تو خراب ہول کے۔ ایک آ دلی سنر میں کیا دی ۔ خلد متعد کرنا حمیا۔ بندرونک سال بعد دولز کیاں جوان جو چکی جس جوامی کے نطف ہے پیدا ہوئی لیکن کس کویاد ہے کہ بیالون ہے واس کا بیٹا جا کر لگا ہے کر ہے خود باہیے ہی متعد کے وسنے سے اس سے جانگرائے ، نب باپ کی بٹی ہے، بھائی کن ہمن ہے، بیجا کی ہیتی ہے مامول کی بھا گئ سے کہ بھیز ہوری ہے۔ ممر ات کی حریش بابال ہوری میں والا ترواد مود سے میں سے میں متعدے محكومة ماك لے معرب عبداللہ ان مسور آیت نکاح ہے جعہ کومنسوخ مان رہے جل معورت کا مہر بھی اس کی شراخت کا آ کینہ دار ہوتا ہے۔منعہ نے اس کا بھی منیاتان کر دیو اور میراہے کا مسئلہ ہی نا قاتل عمل ہوگیا کیونکہ حدد کی اوا و نہ وارث بن سکے گل نہ مورث ماس کومعلوم ہی تیس اس کے

باب بھائی کون کون جی اور کہاں کہاں جی اور جب نگ تمام درج ، کی تعداد کا پہتا ہے۔
اور جرات کیے تشیع ہو سی اور کہاں کہاں جی اور جب نگ تمام درج ، کی تعداد کا پہتا ہے۔
اور جرات کیے کون مرد اور وہ کتنے جی جب بحک پیٹھیں معدم شاہوتو بیرات کیے تقایم
جرات کا برباد کرنے والہ قرارو سے کر خرصت معد پر لیک وشل کا تم فر مالی کہ سب کے
میرات کا برباد کرنے والہ قرارو سے کر خرصت معد پر لیک وشل کا تم فر مالی کہ سب کے
سب جون معد اور بائت معدل کر بھی اس کا جائے تیس، سے کے اور جرائی ہے کہ اس

متعه وطن میں یا سفر میں:

آشان وطن عمل رہے ہوئے نکارے بھی کرتا ہے اور پوشتہ خرور یہ مکہ بھین ہے بھی تعلق رکھتا ہے، لیکن کسی سی بی سے ابتداء اصلام شرو بھی تاریخ تیس کر کسی نے وطن جس وسینے ہوئے متد کیا ہو۔ حالۂ ککہ کہ وہ یہ بھی حالت قیام عمل ابتدا، وسوم عمل شروب چینا کا بہت ہے۔

قبال الإصام أبوج عفر الطحاوى كل طولاء الدين روواعن الدي صلى الله عليه وصلم اطلالها اخبروا أنها كانت في سعروأن النهي لحقها في دالك السغر بعد ذالك فينع منها وليس احد منهم يخبر انها كانت في حصور (تغير قرض عن الاارت) "اوم الإعقرطاول (١٣١ه) فريات إلى ك جنة لاكول في عدل رضات كابيان كيات سيد في ادتفاق يك بيان كيات ك یہ آئی رفعہ میں فقط مراحت عقر میں فوٹس کی ہے اور وکار پر بھی بیان کیا کہ ای عقر میں رفعہ میں کے بعد مشعل فررون متعہ کی ممالعت کا اماران مود ورالیک داوی بھی ایسانیس کہ جو بے بیان کرنا ہوکہ معرک و افتد جھز میں فوٹس آیا ہو با ا

ای طرح این طرح این مازی (۱۹۸۰ه و) مجی جملے متحد کے طمع فی المستقبی و باسته جین : و انسان کان دالک فی استفاد هم و لو بیلفنا آن النبی مُذَاتِبُ ابنا حد لهم و همه فی بیسو تھیا ۔ (۱۳۰۷) ۱۹ شیاری ۱۹ مازی ۱۰ محد کا جوافقہ مجی اواوہ بزائی قدمت که سرمی دو ایسر تم کو کی ویل راول سے میر قبر تین گزی کر آئے تحضر مشابقت سے کھر اور والی جی دینے کی ماات میں بھی متعد کی جازت وی دو بھی ایسا کھی تین ہوا کہ وقت میں رہ کر کی ۔ کے دید آباد ہو ا

حرمت متعد كابار باداعلان:

محد كالمرسط المالية على المراد المالية المراد المالية المراد المحسد فال المحسد فال المحسد فال المحسد فال المحسد فال المحسد المالية والمحسد المالية وعن منعة النساء وسول الله يتم عاد غووة حبر عن فحوم المحمد الأهلية وعن منعة النساء وما كننا حسافحين _(كرب الأوار المراوع) المحرك الموالة بن محرس الالالية والمحرس الموارث المحرك المحرك المحرك الموارث المحرك الموارث المحرك الموارث المحرك ال

حضرت على :

پہلی روایت ہے معلوم ہوا کہ تجبر بٹی متعد کا کوئی واقد شیں ہوا، البتہ نجبر بٹی مال نتیمت بکٹرت ہاتھ آیا اور بہت کی لوغریاں ہاتھ آ ٹیس تو احمال وقوع متعد کا تھا، اس ان وقوع ہے قبل ہی حرمت کا اعلان کروادیا۔

عن على أبي طالب كرم الله وجهه قال بهى يسول الله المنطقة عن المستعة قبال وإنسما كانت لعن لم يبعد فلما أنزل النكاح والمعارق والعدة والمعبرات بين الزوج والمعرأة نسخت. (كتاب الانتبارس ١٣٩) المعنرت لل عن روايت ب كه جتاب رمول الدي تقلقة في مورة ل كراتي ماتي متعد كرف سي منع قرباديا - يه أس وقت تحاجب مقدرت ترتحى - جب ميان يهى كرميان ثكات، طلاق، عدت ميراث كي وضاحت بوكي تو متعدمنسوخ قرادو ب ديا كيا - ان احاديث على ماف طور يرمعلوم بواكد حضرت على كرم الشر تعالى وجدمتم كومنسوخ بالنا عادي ساف طور يرمعلوم بواكد حضرت على كرم الشر تعالى وجدمتم كومنسوخ بالنا عاديك

عند کے شیدائی اپنی مستق کے جوش میں دیان کی سفتے میں مدیر کی تھا تھا۔ قد دس کی ۔۔

عدن شعلیہ بن الحکم أن النہی النہی یوم خیبو عن المعتقد والد المنطب النی فی الا وسلط ۔ (مجمع الزوائد ک ۴۲۹/ن س) '' معرب تھلر بن الخام سے روایت ہے کہ کی اقد ک الحقیقۃ نے قیبر کے دن حمد سے منع فرما ہے۔ دوایت کیا اس کولم وائی نے اوسل میں۔''

فؤادہ توک رجب اور کے بارے میں مفرت آبو ہری اور مفرت جاتے ہے۔ احادیث مردی ہیں کرا سین کی نے کیموں کے پاس کچھ کورتوں کودیکھا، بچ چھا: بہاکان اور تیں ہیں؟ ہم نے دوش کیا ہم نے ان سند مند کیا تھا (مجمی پہلے) قسال فیفسسب وسول السامہ النجیج حتنی احسرت و جنناہ و تغیر لمونہ واضعہ غضبہ و قام فینا خیطیہا فیمہ داللہ و انتی علیہ نے نہی عن المعتعہ ۔ (مکاب الانتہارہ ۱۲۰۰) کی آ تضرب تَنَافِظَ عَدَدِينَ آ کِنْ بِهِ إِن تَحْدَدُ وَقَدَ مِنْ رَضَارَ مَهَا رَبُولَ مِنْ الْوَرَقَدِ وَمَنَا وَالْمَالِمُ عَلَيْ الْوَرَقَدِ عَلَى الْمِنْ اللّهِ وَهُو اللّهِ عَلَيْ اللّهِ اللّهِ عَلَيْهِ اللّهِ اللّهِ عَلَيْهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ا

جِنَاتِجِ عَلَمَ طَارِّيُّ (١٩٨٥ هـ) فرياتُ مِن. قبلتها يسق اليوم في ذالك خيلاف مين فيقهاء الأصصدار والنجة الأحة إلا شيئماً ذهب إليه بعض الشيعة وكتباب الإعتبار فين الناسخ والمبسوخ من الآثار الأسيار مشرول ے انتہاں اور اور اور میں کے اور موں میں معداد ام جوٹ میں کوئی افغانا ف گزار ہے جائے۔ رائد شیعہ کے مالا

رتخ تهت ا

المناه المناه المناه إلى تعيير المليثي إلى ألى جعفر نقال له ما تقول في منعة النساء فقال أحل الله في كتابه وعلى لسان نبيه فهى حلال إلى برج الفياحة فقال بنااب جعفر مثلك يقول هذا وقد حرامها عمر ومهى عند فقال وان كان فعل فقال أعيذك بالله من ذخك أن تحل شيئاً حرامه عمر قال فقال لعقائل عمل فال فقال العقائل على قول رسول الله آلاً أن فها على قول رسول الله آلاً أن فها مناطق ماقال في حيث قال فاقلل ماقال على قال فاقلل عبدالله على في المساحك أن بساء كان مساحك قال فاعرض عنه أبو جعفر حين وسناده والمادة عمه (قرم فرا في في مناه في حيث عند حين التحريم عنه أبو جعفر حين في المناه في ولئات عمه (قرم في في مناه في حيث الله في المناه في في المناه ف

المعبد الله بن عبر ليتى الاسرباقرات بيس آبادر الإجها كه آب سعد ك بارت باراد الإجها كه آب سعد ك بارت بيس أبا قروت بيس أبا قروت المسابقة التي الآب بيس أبادر بي الآب بيس الورائية في الآب بيس الدرية في معتد تحسد موال بها - السائل المائية المائية المسائل المائية المائية المسائل المائية المائية المسائل المائية الم

مراق نے فرمائی اور عرکا قول باطل ہے۔ تو عبداللہ بن عمیر امام کی طرف متوجہ ہوا اور کہا:

کیا آپ کو پیند ہے کہ آپ کی عورتیں، بیٹیاں، بیٹیں، پھوپھیاں یفل کریں؟ تو امام

باقر نے اس سے مشر پھیر لیا جب اس نے آپ کی عورتوں اور پھوپھیوں کا قرکر کیا۔''

ہم دعوی سے کہتے ہیں کہ یہ قصہ یارلوگوں کی بناوے ہے اور کھن ناط ہے۔

اكر امام باقر " معاذ الله متد ك است عى قائل بوت كداس كوست رمول على اور قیامت تک جائز مجمع تو پر موران کا ذکر آجائے پر کیوں تنظی آجائی کدایے خاموث ہوئے کہ کوئی جواب نہ بن بڑا رہے جمیب بات ہے کہ جس فعل کا اتنابزا تواب ہووہ مردوں کے لئے قیامت تک حلال ہواور باعث ٹواب ہواور فورتوں کے باعث شرم وعار ہو کوئی تھم اسلام میں ایسانییں کہ مرد کے لئے مباح اور عورت کے لئے حرام ہوراس سے ثابت ہوا کہ متعد مردواورت کے لئے بکیان حرام برنا متل اے ورست مانتی ہے اور نیکل سے اسکا شیوت ہے۔ بہرحال امام باقر" ایسے لا جواب ہوئے کہ اس کا اثر ان کے صاحبزاد و پر بھی رہا۔ چنانچہ مفضل روایت کرتے ہیں کہ " میں نے ا مام جعفر صادق سے سنا ، وہ قرباتے تھے، متعہ چھوڑ اور کیا حمہیں شرم نہیں آتی کہ کئی عورت کی شرمگاہ ویجھواور اس کا ذکر اینے بھائیوں اور احباب سے جا کر کرور'' (فروخ كافى ص١٩٢/ ٢٠) اورامام الولحن نے اپنے بعض خدام كولكسا كر متعد ير اصرار تذكرو حرف سنت بجالا وُ اوراس مِن مصروف مت وه جاوُ تا كهُمَ ايْنِ منكوحة ورتول اور كنيزول ے بٹ جاؤ اور وہ معطل رہیں اور وہ ہمارا گریبان پکڑ لیس اور ہم راعت برسائیں (كيونكه بم في متعد كالحكم و يركزان ياك بازون كي حقوق تلف كرائ)."

(فروع کافی ص۱۹۲/ ج۲)

فطرت سليمه.

آ ب نے بیز صا کہ مفرت یا قرا بی مورقول کے بارے تک متعہ کا ذکر آ کے ی خاموش ہو میخد ۔ امام جعفر صاوق مجمی تشلیم فرماتے ہیں کہ محد سے ترمی اور ہے حالی الله ووحديث يأك ثمل ت المسجواء شعبة من الإيعان. " فيا وايمان كا ايك تُعير ے۔ المام اوائس بھی اینا تج بہ یک مثابت بیں کہ متعد باز اپنی پویوں کے حقوق کان ا کرتے ڈیں اور وہ تیجاری عک آبد ڈیگ آ یہ کے باقب شیعہ مفتان کرام کا کر بیان آئجز تی ادران رامن طعن ترتی ہیں۔ آئ بھی آ ہے تج بہ کر ہے و کہ لیس کے ہرشر ہیں۔ اہمج سلیم الفطرت باغیرت انسان افی بنی اور بهن کے نکان کے اعلان کو کفر محمتا ہے اور فكيت مسرحته اورا بساط كے ساتھ وليمه تكاح برا قارب اوران ب ويد توكرتا ہے بخلاف متعدے کہ ان کو جمیاتا ہے اورا بن بنیٰ بہن اور ہیں کی طرف متعد کی نسبت کرنے ہے عاد محنوس کرتا ہے۔ آٹ تک کسی اولی غیرت مند بلکے تھی ہے غیرت کے متعلق ہمی یا شيش سنا كها كداس شنة كى بجلس عن بطور فخر بالطورة كراى بديكها يوك يري بي بين اين الدر تیری مان نے آئی و فعد متعد کرایا۔ نیز ترزم حقلا و نکاح پر مرومورت کو اور اس کے والد ان كوسادك باد دسية بين كلم متعد بركميش مبادكباد وسية تيميل حنا كيار الخم د مال يمن ايك والد يزه كالكعنوُ تر اليك شيدلاك كي شادي تمل بادات الى بهت تكانب ل تها-ا کان بڑھا کمیا۔ تھائے بیٹے ہے فارغ ہوئے میارت والوں نے کسا کہ دلہن کوجید تیار كروي تاكه بم جله محمر بيني و تيل- كل باريه كالحمر وبال كوني تياري نظر نه آتي تحقی ۔ آخر بار باہر کے اصرار سے لیان کے والدین کے بارات والوں سے معذرت کی ک آ ب حفرات آین الکرنشریف سالے جا نیما کیونکہ دلین حصر کے مقدمی حمل سے حاملہ ے جب ایش حمل ہو جائے گھر آ کر لے جانا ۔ یہ سنتے بی بادات پر ق سنانا چھا کیا اور دولها میال کے قوتن بدن کو آگ گل گئے۔ اس نے کہا کہ اب اس کو متعد بی کے لئے رکھو، وہ نکاح کے قابل بی تیس میں ۔ لیک ورساتھوں نے کہا: ان ما شعر قوتیں جا ہے، اگر حد یہی قوسند میں قرارت کھیں ہا ہے قد جب پر احت بھیں آ خو حد یہی قوسند رمول اللہ علیہ کو بھی ہے قیرت تا جہ کیا جانا ہے اور اس نے میں جل سنت والجی عنت قبول کر لیا۔ اقیقت کی ہے کہ کسی کی قیرت یہ گوارا اللہ علیہ کو اللہ میں کرتے ہے کہا ہے کہ کسی کی قیرت یہ گوارا اللہ علیہ کی گھرے ۔

بحث دمناظره:

 حسنت انتفاه علیه وسدید (بخاری مسلم از داوه تر زی اندائی) ہم نے تماین وژ آمیل که فرا زلال کر پزهیس به دو تسنے لؤ ک فرر لکیو کر دو که مه حدیث ان کتابوں میں فیس سے اور اُل ہم نے وکیادی آ جہیں شید دونا م سے جار ہم نے تکھا کہ آ مختر ہے مرکینے منتخف سے محملی عورت سے مجمعی متعد تیس آمار نہ ہی سحال منتہ میں کوئی ایری جدیث ہے۔ اَ مرکونی صاحب وَلَعَاد ہِل تَو ہُم ان کی ہر بات ان لیس سے۔ آ قریس نے کہ ہمیں ۔ حدیث نکال کرٹیں اکھ کیں گے ، بال یورے علاقے جم شور کا کیں گے کہ ہم محات منا کی مدید منا آے ہیں۔ میں نے بخاری مسلم از فری ہے کوں کر دُھایا کہ یہ صديث كمّاب الحج من سناوم الإداؤ دامر فماني عن كمّاب الون سكنية هي بن ينووقر آن وأكباش ے، واقعس المنع بنالحمر قاإلى الحج فما انتيب من الهدى إذ (۹۲،۴)'' اور جوکوئی فائد و افغائے عمرہ کو ملا کر جج کے سرتھے تو ای مرے جو کچھ میسر جو قربانی ہے۔" تو پہنچ ع کی ایک تم ہے۔ آپ مکٹ نے خ فہنچ فر ہا تھا نہ کو آپ عمرت کے ساتھ معاذات متعد کیا تھا۔ س برق برطرف سے احت احت ہجوئے بھوٹے۔ دیکھومندکی محبت میں نجایاک عظیمت کے جمون ہو گئے سے قیمن شریائے۔ یں نے کہا لوگوا جعد کہ شیدائی نے متعد کے شوق میں خداونہ قدوی نے مجموع بولا ورحمت المعالمين للصحة بريموت بولا والب مدفقة حكَّى برنجي مجنوب بوسيلة كاله الب ووثَّ مان چیزار با تفاشر ہارے ساتھیوں نے کہا کہ حوالہ بتاؤ۔ اس نے کہا جمہ جوا معرف وڑ وَانِ کا ﴿ وَهُوا وَانِ كَامُتِينِ _ ہِم نِے كَهَا جِلُو بَائِي وہ _ اس نے مو كه فقة مُثَلَّى وَالمشبور كيّاب بدار میں تعدا ہے کہ حدد واجسیہ ہے۔ جس نے بدار شریف کوئی اور سب کوسنار دکھایا ک بیباں مکھ ہے کہ کسی عورت ہے نگام ہوائیکن میرمقر مہیں تھ اور زخعتی ہے قبل اس کو

طلاق ہوگئ تو اس عورت کوایک جوڑا کیڑوں کا دینا واجب ہے۔ اس جوڑ کے کومتعہ کہتے ہیں۔ قرآن پاک تی ہے: ﴿ فسمنعوهن ﴾ اس کا اس حدے کیاتعلق؟ بس اب کیا تخا الله جادہ جا۔ انہوں نے اپنی فیرای میں مجھی۔ اہل جن ان کے دحوکوں ہے امھی طرح آگاہ ہو گئے اور ان کے لیے ذات اور رسوائی کے سوا پھو شدر ہا۔ المجاء المحق و ز هق الياطل ان الباطل كان زهو قاله كا ظار واوكول في المحول عد أرايار آخری سیارا:

چندروز بعدوی ڈاکٹر صاحب آئے۔ کہنے گلے کہ حضرت عبداللہ بن عیاس اُق جواز متعد کے قائل تھے۔ میں نے کہا حضرت مبداللہ بن عباسٌ پیدائش ججرت سے ایک یا دوسال پہلے کی ہے ادرآ شحہ یا نوسال کی عمر تک و داینے والدین کے ساتھ مکہ تکرمہ میں بی رہے۔ فتح کمہ کے بعد ۸ ھ میں جب حضرت عمامیؓ نے مع اہل ومیال ججرت فرمائی تو ابن عبال اسينة والدمحرم كے ساتھ مدينة منورو ميں حاضر ہوئے اور غز و و نيبر (جس یں حرمت متعد کا اعلان ہوا تھا وہ آپ کے مدینہ آئے) سے پہلے ہوچکا تھا، اس کئے انہوں نے متعد کے بارے میں خود حضور اللہ ہے کہ نیمن سنا، دوسرے سحابہ ہے سنا ادر قرآن يرها يرتدي شريف من ب: عن ابن عباس وطسى الله عنه قال إنها كانت المنعة في أول الإسلام كان الرجل يقدم البلدة ليس له بها معر فة فيتنزوج المرأة بقدر مايري أنه يقيم فنحفظ له مناعاً وتصلح له شيئه حتى إذا نولت الأية ﴿إلا على أزواجهم أوماملكت أيما نهم﴾ قال ابن عباس فكل فوج سواهماحوام (ص٢١٣/ ١٥) "حضرت عبدالله بن عبال فرمات إل كەمتعەشروخ اسلام بیس قفائے گوئی آ دمی ایسے شہر میں جاتا جہاں كوئی واقفیت نه ہوتی تؤ دہ

فنال الخطابي فهذا بين لك المصلك فه مدهب القياس وشبهه ما لمصطر إلى الطعام الذي بدقوام الانفس وبعد مه يكري التعف واسما هذا من باب علية الشهر أه ومصاهر نها ممكنة وقد تحسر مادتها مالصوم والعلاح وليس أحدهما في حكم الضرورة كالاحرواليه أعلم. (آلَ بِ اللَّمْ إِلَىٰ إِمَا)

'' نظائی نے کہا کہ اس سے بیادت واکٹی ہوئی کہ دو (معنوت ایک مہاں) اس مشدیس قیاس پر بھا جی اور اس و معند طرائی الطعام کے ماتو تنجید دی ہے ، عالائی عمام بھات میات کا فرزید ہے اور اس کے افیر موت واقع ہوہاتی ہے تُر بیا اسلاط پائیوٹ سے حفلق ہے جس ہمبر بھی تمکن ہے اور اس قلیہ شہوت کے دوہ کوروز و اور خان سے توڑا بھی جا مگتا ہے واس لئے اس واٹول سنگوں میں فارق سوجود ہے۔ انکیہ کو دوسر سے بیر تی س تیس کیے جا سکا ہا ا

خفاصہ یہ ہے کہ را آخل جی رائ الوائٹ میں فاض میں اللہ الوائٹ میں قاص 2 ہیں۔ اس آن آئ وین اور آئ زمانہ بین جائز ہونی دیا ہے بچ چین کہ متعد کیوں جائز تیں الاجس کہ آئ گئے کے اور بین جائز ہونا چاہئے الیا ہی ہے جینے گوئی او جیمے کہ زما کیوں جائز تیں اور جی کہ آئی قل دور میں جائز ہونا چاہئے۔ جانوک خداے جمیعے کے زومتھ کو ام قربایا ہے۔ فقت وین ایم

محمد النگن صفور او کا فروی ۱۹همان ادون ۱۸ سود

'''معرت دین حیات سے جوجواز مند کا آبل منقال ہے وہ کمی منتظر کے ہے ہے اور احد میں انہوں نے اس سے بھی دجوج کر لیا تقالوران کہ جائز کئے ہے رک <u>گئے تھے۔</u> الجواب صحیح

احقرمجمرا أورعني المقدعت

مقدمه انجيبل برنساس

بسائله الخزالوب

انجیل کے معنی خوشخبری کے جی- اہل اسلام کے نزویک انجیل اس وہی اللی کا مام ہے جو خالق کا نکات کی طرف سے حضرت عیدی علیہ السلام پر نازل ہوئی۔ و آئیداہ الاسحیال ۔ یعنی ہم نے حیثی علیہ السلام کو انجیل دی۔ اور عیسائی ہر اس کتاب کو انجیل دی۔ اور عیسائی ہر اس کتاب کو انجیل کئے جی جس جس میں مسیح علیہ السلام کے سوائ مری نہ کور ہوں۔ پہنانچہ لوقا اپنی انجیل کے دیباچہ میں گفتا ہے: "چو کہ بہت ساروں نے اس پر کمر ہائد ھی ہے کہ جو انجیل کے دیباور میں اور عیان کریں۔ جیسا کہ انہوں نے جو باتری ہاروں نے جو شروع سے خود و کھنے والے اور گام کے خادم سے ان کو ہم تک پینچالے۔ اس لئے اے معزز توسیطلس میں نے بھی مناسب جانا کہ سب باقوں کا سلسلہ شروع سے تھیک ٹھیک معرز توسیطلس میں نے بھی مناسب جانا کہ سب باقوں کا سلسلہ شروع سے تھیک ٹھیک دریافت کرکے ان کو تیرے کے ان کو تیرے۔ گھیک ان کو تیرے کے لئے کہا کہ کو ان کو تیرے کے لئے کہا کہ کو کا دریافت کرکے ان کو تیرے کے لئے تر تیب سے تکھوں۔ " اور قاداد ۲۰۱۲)

مقدس او قائے اس بیان ہے معلوم ہوا کہ بہت ہے لوگوں نے انجیلیں کاسی تعین اور یہ بھی معلوم ہوا کہ جس قدر انجیلیں کاسی بیش اور یہ بھی معلوم ہوا کہ جس قدر انجیلیں کاسی گئیں وہ ادھراہ حرب می سائل بالاس کے باقل کو جمع کیا آیا ہے۔ آئ کل میسائل ہو و عوی گرتے ہیں کہ یہ انجیلیں روح القد س کے المام ہے تاہی گئی ہیں کیے و عوی غلط ہے۔ میسائیوں ہے ہمارا پہلا سوال اس بارہ بیس کی ہے کہ وہ جرات اور ہمت کرکے چاروں مروجہ انجیلوں ہے ایک ایک آیت ایک قبل کر بیش کریں جس میں ان کے مصنفین نے یہ وعوی کیا ہو کہ ہم نے ان انہی تابوں کو روح القد س کی تائید ہے لکھا ہے۔ جب ان انجیلوں کے مصنفوں نے بھی

ایدا و عوی شیس کیا میک او قائے سب کے متعلق یہ شادت وی ہے کہ یہ انجیلیں می الله او علی شیس کیا میک او قائے سب کے متعلق یہ شادت وی ہے کہ یہ انجیلیں می سائی ہے مند باتیں ہیں ، قو جہا کیوں کا یہ وعوی ہے ویلی بلکہ طلاف ولیل ہے۔ ہیں نے اان چاروں انجیلوں (متی مرقر) او قائی او حتای کے فیرالهای ہوئے کو پر زور ولا کل سے این رسالہ میں جاہت کیا ہے جو بفضلہ تعالی انجین نظام العلماء پاکستان کی طرف سے شائع ہوچکا ہے۔ اس محت کو فوب ہے تقاب کیا ہے۔ اس وقت بھی صرف مقدس برنیاس کی انجیل کا تعارف کرانا ہے جو اس وقت آپ کے باتھ میں ہے اور میں انتاء اللہ بوری کوشش کروں گا کہ برنیاس کا تعارف غیر الهای کماوں کی بجائے صرف جبائیوں کے مزعوم الهای محیفوں سے کراؤں۔

انجیل کے مبلغ:

او قائل آناب اعمال الرسل سے صاف پند چتنا ہے کہ ابتدائے سیجیت میں انجیل کے برت ابتدائے سیجیت میں انجیل کے برت مسلط تین دی تھے: (ا) مقدس پطرس (۲) مقدس برعاس (۳) پولوس۔
ان کے علاوہ کسی کی تبلیقی خدمت اعمال کی آناب میں مرقوم شیس ہے۔ اب میں میسائیوں کے الهائی صحیفوں کی روشنی میں ان تینوں کا تعارف کرواتا ہوں تاکہ اصل بات کے سیجھنے میں سوات ہوں۔

يطرس:

اس کے متعلق خود بھری کے شاگر و مرقم نے اپنی انجیل کے آٹھویں باب میں الکھا ہے کہ یہوں کے اٹھویں باب میں الکھا ہے کہ یہوں کے دور ہوجا انجیل مرقم ہے کہ یہوں کے لیون کے بھر است سے دور ہوجا انجیل مرقم (۳۳:۸) بلکہ یہ بھی فرمایا کہ تو خدا کی باتوں کا خیال رکھتا ہے (مرقم ۴۳:۸) نیز بھری نے مسیح علیہ السلام کی گرفتاری کے موقعہ پر اان کا انکار کردیا تھا (اناجیل اربعہ) جب بھری بقول مسیح علیہ السلام شیطان ہے اور بھوالہ انگیل مرقد ہوگیا تھا اس کے بولوس نے اس کو روبرو طامت کی تھی (دیکھو گلیتوں باب) تو اس کی انجیل نا قابل قبول ہوئی۔ چنانچہ بھری کی انجیل کا تذکرہ ہی پرائی کتاوں

عي لمثالث النين وه أن تعمل صورت عير ونيايي • وزوه نعي جي-

<u>نو</u>لوس:

مسيحيت نے ابتدائی اوم کادو سرا مبلغ میں مستجما جانا ہے۔ لیکن وس کی یوزلیٹن افت مغدوش ہے۔ یہ مخص مسیح مید العلام کا خت ترین و خمن تقابعیدا کہ خوا اس کے تُناكره وقائدًا في كتاب إلمال من للعامع: "اس في مسيح عبد العادم في يرزور كالفت كَلُ مَكِن وَسِهِ مِن الْحِي أَعْلَى كَالْفَت من مسيحيت كو تقصان تد بمعجا سكانة وس من منافقت اختیار کی اور منافقان حور بر و من جیسوی میں وافعل ہو کر میسویت کی جڑیں کھو تملی نرک "**.**6

يولوس منافق تفاء

جِنائج خود لکھتائے: "میں میں میں ایس کے لئے بیودی بناا آگ بیودیوں و مہینج اوّل ا ہولوگ شریعت کے ماقعت میں ان سے لئے میں شریعت کے ماقعت ہواہ کا شریعیت کے ما تون کو تعینے لاؤں اوکر چہ خوو شربعت کے ماقت نہ خاا ہے شرع ہو ّوں کے لئے ب شرخ بنا ' ٹاک ہے شرخ نوگوں کر ممنیج ہوئ ۔ میں سب آومیوں کے لئے سب بھا بنا ہوا ہوں۔" إلى مرتق بلب ٢٠٠١ اور يوس كا شأكرہ اقرار كر كاست كر اوكوں ف بيا و س كى زبان درازى و كيمه كراس فالتب جرئيلس ركها نفال ۱۱۳:۱۳ ورايك نبك خود لكعنا بيدائي بولوى جو تمهرت واروع فالدور بينم فيكي تمرير البرجون الااكراني ١١٠) اور ايني ممالية خوري كالتذكره خودان الفاط شن كرناستية كه غرب كي تبلغ دو خوه بمائے سے ہویا سیائی سے ایس اس سے فوش ہوں اور رہول کا فلون ایدا)

ا ہے مشن کو پھیلائے کے لیے وہ جموت بوانا نہی جائز سجھت**ا تھ**ا بکہ ہر ہرا آل کر تا تفاریدانی مکھنا ہے: "اگر میرے جمعت کے سب سے خدا کی محالی اس کے ہول کے واسطے زیادہ طاہر ہوئی قر پھر کیوں کنٹھار کی طرح جھ پر تھم کیاج کا ہے۔ ام کیوں برائی نہ أ فرين كه بهمال في بيدا أو " (روميون سن)

ان عبار ڈن ہے معلوم ہوا ک بولوس منافق مبائے خور ' زبان دراز اور جمون آدی تھا۔ این زبان وروازی اور زبانہ سازی کی وجہ سے اگر یہ اس نے این کچھ اعتمار العالميا تحالمنين جب من نے مسيح عليه السلام كو علقي كه (ويكھو كلينون milm) تو تواريوں تَ الطعلاس كاسرتهم (جعوز ويا ادروه يميله كي طرح بمجر مردود قرارياليا.

مقدس برنباس:

جس بزرک کی انجیل اس وقت آپ کے باتھ میں ہے یہ سیحیت کے ابتدائی دور کا سب سے بڑو انجیل کا ایکٹے تھا۔ "رموون کے افغال " بو پرنیاس کے مخالف و آیا نے کہ ہے ہے اس بیں بھی جس قدراس کی عظمت ہیں گیاہے وو تملی کی منیں گیا۔

برنیاس کی شخصیت :

مقدس برزان کا امنی نام و مف تفاه منج علیه السام کے حواریوں کے اس کا عب برنیاس و حالہ برنیاس کے معلی میں تصیحت کا فرزند (افحال ۴۴٫۶) میں ہے آپ اندازہ لگا کئے میں کہ و سانوں کے بن ، دہاس کی متنی قدر و منزات متنی یہ سے رسولوں کا متفقد طور پر اس کوید اعزازی فطلب ویتاصائک طاہر کر نایت کہ وہ اس زمانے میں اپنی نظیر آپ قدمہ وی کئ کو مشتوں سے مسیعیت نے ساری ثرقی کی۔ کونی محتص یہ طابت نہیں کر سکنا کہ اشتے بڑے معزہ لاتب کامستحق س مگو ہریک دانہ کے بعد ایک بھی ہو!

برتباس كادو سرامعنزز لقب

عقد می برمای کے اخلاص اور گراہ ہے کو و **کی** کریس ذمانہ سے وگوں نے برنیا ہی أنو اليب اور معزز خطاب بخشاهس كاذكرا عمال ۱۳۹۳ بيس ب لوك برتباس كوويو تا مجحة تھے اور اس کے نام کی قربائیاں کرنے کو تیار ہوجاتے تھے۔ اس زونے جس سے بڑا وی تا زبوس نامی تھا' چنانجے ان لوگوں نے برنیاس کو زبوس کامعزز خطب بھی دیا جیسا کہ ا فرارے واب سی میں فرکوں ہے۔ برتہاں کی معرفت بہت بوسے نشان اور جیب کام طاہر

روست او کیلوا قرآن ۱۳۵،۱۵

پرنیاس کی عظمت :

مقد ان برنهای کا عظمت به این کاد شمن مصنف تو قامیمی پردونه ژال سکار چناخچه آمهند به ۱۳ دو قبک مرد اورامیان اور روح القدس سید معمور تمامهٔ ۱۳۳۴ الال ۱۳۳۶)

معلم میتحیت :

معلم میں میں میں اُروں کی سب سے زائی کیلیسیا انصاکیہ میں تھی۔ یہ سیجیت او مرکزی دوران الینے تھا اور کوئی تونس ایں قابل نہ تھا کہ اس کا معلم سیٹا بگا۔ اس کا معلم بریزس تھا در کیمو افول مطانی اور جس طرح مستحی غریب کا مرکز انطاکیہ تھا اسی طرح سب سے پہنے مستحی لقب کی ایٹراء بھی انساکیہ تو کی کیلیسیا ہے یہ آب جہائی۔ اوقائے لکھا ہے کہ انٹراز و پہلے انسانکیہ جس می سیجی کملائے۔ اوا عمل العام العامی

برنباس کو روح القدس کا مخصوص کرنا<u>:</u>

جب وہ مبادت کر رہے تھے تو روح انقد س نے کہا میرے لئے برنہاں اور ممادک کو مخصوص کردو جس کے واسعے جس نے ان کو بلایا ہے یکی وہ روح القدس کے تھیے ہوئے سلوکیہ کو منے واقع الاحمال سوم ۵) اللہ اللہ کتنی بری عظمت ہے کہ رمولوں کی موجود کی میں برنہاں کو مخصوص کیا ج ہے۔

برنیاس کی انجیل ہی اصلی انجیل ہے :

ا بن المستخدم المستخ

ہاتھ پر ہوات ہوے فتان اور جیب جیب کام طاہر ہوئے۔ برناس ہی وہ شخص ہے جس فسے ہر موافق و خالف ہے جس کے ہر موافق و خالف ہے جرائے تھیں عاصل کے۔ برنہاں جا او خص ہے جو مرکز مسیح کا موافق و خالف ہے جرائے تھیں عاصل کے۔ برنہاں جی وہ شخص ہے جو مرکز میسائیوں کو مسیح کا معزز القب عطافر ایا۔ برنباس جی وہ شخص ہے جس نے مسیحات میں اسلام وور ان کے جواریوں نے بھی کلہ جوت کیا۔ برنباس جی وہ فیض ہے جس نے مسیحات میں میں میں میں میں میں اسلام اور آپ کے جواریوں کی شان می گستانی نہ کی۔ برنباس می وہ شخص ہے جس کے شخص ہے جس کے خواریوں کی شان می گستانی نہ کی۔ برنباس می وہ شخص ہے جس کی تقدیم و تبلیغ کو نہ مانے والوں کی شان می گر بگارے تھے۔ برنباس می وہ شخص ہے جس کی تقدیم و تبلیغ کو نہ مانے والے کو ابلیس کا فرزند اسکار و شرارت ہے بھوا موان کی کا بر خس کی تقدیم و تبلیغ کو نہ مانے والے کو ابلیس کا فرزند اسکار و شرارت ہے بھوا اور انہاں کی انہ خصوب اس موان کی انہا کی کا برخس کی تعدیم و تبلیغ کو نہ مانے والے کو ابلیس کا فرزند اسکار و شرارت ہے بھوا اور انہاں کی انہا کی کا برخس کی تعدیم و تبلیغ کو نہ مانے والے کو ابلیس کا فرزند اسکار و شرارت ہے بھوا انہاں کی انہاں کی دور انہاں کی انہاں کی دور انہاں کی انہاں کی دور انہ

برنباس جو اتن خوبوں کا مالک ہو ' سرایا تفیحت ہو ' اگر اس کی انجیل اصل نہ ہو گی تہ اور ممس کی و تجیل اصلی ہو کی جائیا متی ' مرتس ' کو قا اور یو حناکی ایجیل اصلی ہوں گی ؟ جنوں نے بھی وجوی العام نہ کیا ' نہ ان ہے کوئی اججاز طاہر ہوا۔ جن کو مسیح نے مامت کی ہو ' ہر اعتقاد اور کجرو کہ ہو اجمن کی کتابیں خطوں ہے بھر پور ہوں 'جن کی کتابیں اختلافات ہے ہم ہوں دو العالی ہو سکتی ہیں؟ ہرگز نمیں ان کی بوری حقیقت میں نے اپنے دو سرے رسالہ میں بیان کردی ہے۔ انجیل برنباس کو نہ اسنے دالا واقعی ان الخاب کا مستقی ہے جو جی نے الحال سانے ۱۲۰۰ کے دوالے ہے داور ذکر کئے ہیں۔

الجيل برنباس كي صحت د مدافت بر

مسیحیوں کے اعتراضات اور ان کے جوابات

انجيل پر پهلااعتراض :

معزز قارئین!مقدس برنیاس نے مسیح ملیہ السلام کی تعلیم کو اپنی انجیل میں بدی وشاحت سے نقل قرمادیا۔ مسیح علیہ السلام کے متعلق اٹل کتاب نے جو افراط و تفریعا کی بھی کمی نے رہ ۔ و اپن احلہ کیا تھا اور کسی سے نبوۃ باتنہ ولدوائرنا تھرایا تھا کئی ک عبدا ٹیواں فی مروب مناقبل میں بھی مسیح علیہ السلام کو احتی مثروب ساز اعتراب نور اور بدکار تابعت کیا کہا ہیں۔

مقدس برناں نے میچ مسلک کو پیش آباد مسیح ملیہ انسلام کی شان وعظمت کا بيان وشاحت سن أيالة طابرت ك اخراط و الغريط أرف والى وونول بارتول كى طرف ب و أنيل برنياس برق من من من من من من برنياس برقوي حمله له كريك البندية كمدويا کے اس انجیل کی نسبت برتباس کی طرف صبح نمیں ہے الکین اس کی کیاد لیل ہے؟ وہ ونیا ال تحویلاری کے باس نہیں ہے۔ جب ایک محفور کی طرف ایک تکب مشہوب ہو تو بلادلیل اس سے انکار کرنا تعلیا قابل ساعت نہیں ہو تا۔ بہت سے لوگوں نے تورات کی نبیت کو مولی ملید السلام کی طرف علط تکسات اور برمنعهم انگشتان کے بیش 3) کڑ اک ڈبلیے بارٹر (E.W.Barnes) نے باقی مشہور کہا۔ "The Hise of Christianity" میں مکھا ہے کہ بیوع مشیح کے دور کے واقعات ے لئے حقیقا ہمارے ہیں صرف ایک مرقس کی شد ہے (ص 4) لیکن آگے ہیل کر من ۱۰۹۱ م لکمتا ہے: "ک جم حتی طور یہ نہیں کد سکتے کہ مرقس کون تھا۔ " اب و کھتے بہت مادب آب کی مردب جاروں انحبلوں میں سے کسی کی نسست کو صحح مسلم تیں کرتے۔ تم بقرر ظلم ہے کہ برنباس کی مخصیت مطوم و متعارف ہوار راس کی انجیل الهای ند ہو۔ ایکن پائیل کی مندرجہ ول کھیوں کے مصنف بھی نامعلوم ہیں ' زمانہ تصنیف کامچی علم نمیں اور مقام تعنیف بھی اکثر کا مطوم شیں ہے اکترن میسائی اور يمود أن جرود فرق ان كو العالى مات بي-

(۱) تؤرات :

قورات کو بردہ فرقے موئی طیہ السلام کی کایف خیال کرتے ہیں الیکن اعتقاء کے آخری باب سے بنہ چانا ہے کہ یہ قورات کس نباز میں تکھی مخی ہیں۔ جب موئی علیہ السلام فاکیا موٹی طیہ السلام کی قبر کا نتیان جی کسی کو یاو زر دیا تھا او یکھو اعتزاء ١٥٠٥، ١١) موئي مليد السفام ك التا مرصد بعد يد كس ف تكفي ؟ دنيا آن تك اس ك مسنف سے تاواقف سے کمال کلمی کی؟ یہ جی کی کوعلم سیں ہے۔ کیا لکھنے والا تی لَمَا ﴿ وَلَيْ عَلَمُ سَينِ سِيمَ اللَّهِ عَرِنْ سَلِبِ يَتُومُ إِلَّا شَعْ... ـ

(r) كَتَابِ يُوشِّعِ إِيثُوعٍ:

والنائب بنوا کا مصنف مام روایت کے مطابق ایک کی ہے جس کا عام ماا علوم ب-" ا کانمولک بالنبل) چه مجب مصنف کانام دمتام معلوم نسی ب کنگین به معلوم بولياك ووني تولد

(۳) تضات:

ا مناب ذا كامسنف مجي المعنوم بالنين بعضون في رائ به كر موكل في ے اسے کلم بند کیا اکا تحولک اینبل: ان اہم نے ہی کوئی دلیل مقل میں کی اور یہ ا علوم معنف كَ كَلِ المالي يَعِيمِ مِن حَيْ الأيون عَجوال بهو في ؟

(۳) راغوت :

اس كامعنف نامعلوم ب اكاتمولك باليل،

(۵) سمو کیل اول و دوم:

مرف یہ ید ہے کہ اہمام کے زمان میں تکھی منی۔ کمی نے تکمی ؟ نامعلوم وكاتحو لكبره

(۲) ملوک <u>ما</u> سلاطین اول و د<u>وم:</u>

بن كامسنت بعي المعلوم ب بمي كالمام يتين معلوم نسير بوسكا

(4) تواريخ اول و دوم:

ان كوا خبار الايام بعى كمت بير. ان كامسنف كوئى لادى مجما جاتا ب اكاتحولك)

: レグ(^)

نحصياه كاسمنف يمي كوئى ناسطهم لاوى ب اكاتمولك باقبل)

(9) طوبيت :

محمى مالى زبان يس تكمى تني المصنف تا علوم و كاتعولك إ

(۱۰) يهوريت :

ا یک ویں دام یہودی نے تکھی (کا تھولگ) اس فائلم دمقام کیا تھا؟ کب ککسی ؟ نا علوم۔

(۱۱) استیر:

ا تى كَتْلْبِ كَالِمِي كُولَى مصنف بِيتِني طور يَ معلهم نمين بوسك

(۱۲<u>) ايوب</u> :

{ ۱۱۰ واؤوبادشاء 🛚

دد بست ہے مزامیر کا مصنف تھا۔ یاتی مزا میر منتفرق العالی شعراء کی تصنیف ہیں' لیکن بیٹین نمیں ہو تک۔

(۱۳) امثال :

منی مولف نے سلیمان کے امثال تکھے ہیں اور الن کے ماتھ متغرق زمانوں کے متفرق العالی شعراء اور اپنے کلمات بھی داخل کئے ہیں (کاٹھولک) نیکن اس مصنف کا نام مطوم میں ہے۔

(١٥) جامعے کی کماب :

اس کتاب کے الباق مصنف نے تیسری صدی کیل از مسیح بیں سلیمان یاوشاہ کے نام سے یہ کتاب تکھی اکا تحولاک، مصنف کا نام و مقام نامطوم تمر والباق ہونا معلوم ہے جیب معر ہے۔

(١٦) تمكت :

وسری معدی مجل از مسیح میں کسی ند معلوم مستف نے علیمان بادشاد ک شخصیت می کسی، کانمونک،

(۱۷) يىثوغ بن سيراخ :

ہ میں کتاب کا مصنف مطوم ہے لیکن براسند قرقہ اس کتاب نے انسانی مائے کو تیار تنیں ہے۔

فرش کمکی نک تک تکھا باے کہ ان تراوں کے مصنف بالکل نا معلوم ہیں۔ وہ مری انہوں کی فہت سکنوک ہے۔ آ اگر یہ استانس اس قاتل ہے تو یہ سب کمائیں ہائیل سے خاص کردو۔ یہ جمل نے ہر سیل لکھا ہے اور نہ کوئی دلیل اس بات پر شیس ہے کہ برنہاس کی طرف اس انجیل کی نہیت مفتلوک ہے۔ وہی پر واضح و صاف والائل کی صورت ہے، وجیمائی قیامت تک پیش تھی کرکتے۔

دو سرااعتراض:

بادری ہو کہتے ہیں کہ اس کتاب ہیں بھش مقباطن یا کل نفاہ ہیں اور دوسری اسعبلوں سنگ خاوف ہیں۔ اس سلتے ہو کتلب ہر کا ماشنے کے لائق شیں۔ ان مخالف مضاعین میں ایک ہو ہے کہ مسیح مید واسلام کے بعد ایک ٹی کے ڈیٹے کاؤکر اس بھی بنا با آ اب جن کانام محدد مول اللہ ہے (افتیل برنہاس فعل ۲۲۱) عالا تک یہ لانا ہے۔

الجواب :

یا تی توسب میز نے تھے۔ اصل میں رہی ۔ سول و شعبی اس کمکب کے انکار کا باعث مولی۔

کیلی بات : باوری صانبان ای خوائے کو دو سری انافیس کے فارف کہتے ہیں ' عدا تک خلاف شیس زیادہ سے زیادہ ہے کہ شکتے ہو کہ دو سری انافیل سے زوائد ایک بات ہے قابیہ انکار کی دید شین ہو کیکو بہت سے واقعات انجیل متی ہیں مو زائد ہیں دو سری انہیل میں شین ہے شااتجو تی کا عہد دکرن 'مسرا کو جانلہ اور انجیل می مناکے واقعات تو دو سری انافیل سے ملتے می شین ہو کیا ان زائد باقوں کی دید سے ان انافیل کا انکار اگروہ کے جامل بات یہ ہے کہ کمی انجیل اور تین نے یہ موٹی شین آجاتہ میں نے مسیح مید انسام کی چورتی تعلیم نقل کی ہے ' ہم انجیل میں افض واقعات دو سری انہیل سے زائد اور معنی کم ہیں۔

ذا ... و کیکھے بہانی کا وعظ میچ سے السارم کی تعلیم کی جنن ہے الکین اس کو صرف متی اللہ اللہ النجیل میں بورہ نقل آبائے۔ او قات پند منت متقرق نقل کے بین مرقس اور ابو حنات اس وعظ کا ذکر تک خیس کیا اور اس اہم جھے کو تظرائدہ و کردیا۔ و اس بنا ہے آب اس جی متی اور لوقا کو جھوروار تھرائیں گئے جنوں نے مسیح ملیہ السلام کی تعلیم کو نقل مردیا مرقس وج مناکو جنوں نے اس قدروارم تعلیم کا جمعہ جھوڑ رہا۔

و السند ای طرح میچ علید العلام کا آخری دعظ جس تنسیل سعد انجیل یو مناجی ہے باقی شخول انائیل میں شمیل ہے۔ تو آبال ان زائد و مظ کی دید سے یو مناکو بھرم خمرا آلراس کی مانیوں رو کردی جائے کی یامتی الوقام مرتس کو بھرم سمجھ جائے گاکہ انہوں نے مسج علیہ مالسوام کے آخری محبت کے بیٹام کو بھی این انائیس میں شمیل نکسیہ

ر سادن سام بری عورت کا داخته او رزامیهٔ خورت کا داخته صرف بو مناجس ہے۔ باقی تینوں انابیل وس سے خانوش ہیں۔

ر الله الدوليون كے سجد اگرے كاؤ كر عرف الجيل متى بين ہے آباتی تيوں الاديس اس ہے سائٹ ہیں۔ غرش بہت می مثالی جی ایمی کئی تک مرض کروں ! ق ای طرح اگر مقد س برنیاں کی اقبیل میں سیج علیہ السلام کے بعض ایسے و مقائد کور بوں بہن بیں قرف دیا د بھیر کی وی گئی تام کے ساتھ فرمائی وہ اور دو سری انائیل میں از کر دند وہ من ہے السلام کے نہیں بلکہ فرات ہے اور اس میں جی م ان او گوں کا ہے جنوں نے مسیح علیہ السلام کے سے و مقافی انائیس میں نقل نمیں فرم نے نہ کہ مقدس برنیاس کا در انتقاف قرب و با کہ کمی انجیل ہے و کھیا جا گاکہ مسیح علیہ السلام نے فلال موقع پر فریا تھ کہ میرے بعد کوئی جا ہی نہ آک کا ملائ کلہ مسیح علیہ السلام نے کھی ہے نہ فریا۔ بلکہ انائیل ہے ہو بات نابت ہوتی ہے کہ مسیح علیہ السلام نے کھی ہے نہ فریا۔ بلکہ انائیل ہے ہو

ال ---- کیونکہ مسیح علیہ اسلام سکہ آئے کے بعد بھی میودی وہ آبی آنخضرت مرابعی اے متنظر تھے (بو مناورہ)

و ۲۰۰۰ میں علیہ العلام کے رفع آ-افی کے بعد بھی بروشتم میں اور تی ہے جو انطاکیہ آئے اور ویش کوئی کی۔ (افعال ۱۲۵۰-۲۸۷)

وس) ۔ ۔ اور بست سے تھی دوسے جن کاؤگراہ کراتھ باب ۱۳ ورس ۴۴-۴۹ میں جذب اور میں نے کیا ہے۔

اس) سايود اواد ريلاس بهي تي تقوا اثلاث ۴۳،۵ ادر تي المرتزة باب ۱۲:۳۳

ا ۱۵۰ --- مستح کے بعد پولوس کو رسول ان لیا۔ طاحظہ جو ۲۰ کرفتھیوں باب ااور س ۵۰۔ ' ب ساف قلام ہے کہ برنیاس کی میہ منقولہ اپٹن کوئی قص ۲۴۱ مستح کی کسی تعلیم کے نا اف تمیں ہے۔

كيامو دو دوانا ديل بن حضور ما التيل كم متعلق كوئي ويش كوئي مواد ي

اس موضوع پر بہت ہے علوا اسلام نے مستقل تسانیف ککھی ہیں اشد کر اللّٰہ سعیصہ الجھے اس وقت صرف اشارات کرنا ہیں۔ کنین اس سے پہنے کہ جی اہد اشارات نقل کروں ایک دو شرو دی ہاتھی ذائن نشین کرانا چاہتا ہوں۔

ا . . کمی مخص کے رعویٰ فیوے کی معدالت کے لئے یہ شرہ شیں ہے کہ اس کے

متعلق جملی کہ بھر چیں اوئی ہو۔ ویکھو ابرائیم طید السلام افوح علیہ السلام استحاق میلی کہ بھر جون علیہ السلام اجون علیہ السلام اجون علیہ السلام اجون علیہ السلام احتقال علی السلام المحتقال علی المحتقال المحتقال علیہ السلام المحتقال المحتال المحتقال المحتقال

اب دیکی اس بین نظر نام ند کورے اند مقام شد نبوت کاؤکر انگین او مقال کے است بیت کاؤکر انگین او مقائے۔
ایسے سند بیت بیلا کہ اس میں کوئی چین کوئی تھی۔ اس طرح مسیح علیہ السلام کے متعلق اس قد دوئیں کوئیاں حد مقبل سے میسائی تقل کرتے ہیں ان جی سے کسی جی مسیح کا نام یا لقب یا نبوت یا مقام کاؤکر شیں۔ مقلامتی نے یہ چین کوئی نقل کی ہے۔ "اب میت تم یہوداد کے ملائے قویمود او کے ملائول اٹل ہرکز چھوہ شیمی اکو قل تھی سے ایک مردار نظے گاڑو میری احت اسرائیل کی قل بائی کرے گا۔"

اس میں یہ سیج کا نام نہ مقام مسرف آیک سردا ماکاؤ کرہے۔ مردار کے اس بیش کی کے گئے جستے ہیں۔ ایک دید ہے کہ ان ویش کو نیوں سے جن کو بیسانی عل کرتے ہیں بیودی بیوع مردد شہیں لیتے اور دانکار کرتے ہیں۔ لیکن میسائی ندو اور عافل الویٹیں کرتے ہیں اور بیود کی تاویلوں کو ہر کز شہیں بائے۔ اب سندے کے ایو کی ملیہ انسازم نے کمی نی کے آئے کاؤر فرایا ہے ؟

حطرت مسيح مايه السلام فروت بين

ا ... اگر تم چھ سے محبت رکھتے ہو تا میرے حسکسوں پر عمل کرونے اور چی ہیں ہے۔ در خواست کروں کا کہ وہ جمیس وہ مرا مدد گار بضنے گاک اید خف تسارے ساتھ رہے ا میٹی روح حق شے دخاصاصل شیں کر کئی واقیجل پون ۲۰۱۴ - ۱۵

۳... یہ باتیں میں نے تمہارے ساتھ وہ کر تم سے کیس انٹیکن روح القدی کیٹی دوگار نئٹ باپ میرے نام سے بھیج وہ ہی حسیس سب باتیں بتائے گا اور ہو کچھ میں نے کہا ہے وہ سب حسیس یاد ولائے گا۔ (انجیل بوحنا ۴۲۰۳)

ه ... اس کے بعد میں تم ہے بہت می ہاتمیں نہ کرماں گاگی نگ و نے 6 سروار آنا ہے ور جھو میں اس کا بکھے شمیں اسوء ۱۹۰۶ تی کے متعلق ہو حناسنے کما تھنا انگرزہ زور آور ہے وہ آئے والا ہے میں اس کی جوتی کا آئے۔ کوئے کے اوکن نہیں وہی سادہ شمیس رور ''اخد س اور آگ ہے سنسید ورے گاراو تا ۱۹۶۴

ے ۔۔۔ کیکن جب او روح القدس (مروکار: آے گا جس کو جس شمارے پاس باپ کی طرف سے جیجوں کا چن روح حق ہو باپ سے صادر ہوتا ہے تا وہ میرق مواہی دے گا را کیل بو ۱۳۷۵ ا

ے... کیکن میں نے یہ یاتی اس لئے تم ہے کس کہ جب ان کا دفت آئے قوتم کو یا د آیٹ کہ میں نے تم ہے کہ دیا تھا ور میں نے شروع میں تم ہے یہ باتی اس لئے نہ اس کہ میں تسارے ساتھ تھے۔ تحراب میں اپنے بینچے والے کے باس جا تاہوں اور تم میں ہے کوئی مجھ سے تمیں بوچھ کہ و کسل جاتا ہے؟ بھہ اس لئے کہ میں نے یہ باتیں تم ہے کس احسارا وں تم ہے بحراً یا لیکن میں تم ہے کے کتابوں کہ میرا بونا تمارے سے فائد سے مند ہے کیونکہ اگر میں نہ جاؤں کا تو وہ عدد کار تم رہے باس نہ آئے گا ایکن آلر بائوں کا تو اسے تم رہے باس بھیج و وں کا وروہ آگر دنیا تو کتاہ اور راست ہاڑی الا رمدالت کے بارہ میں تموروار فعراے کا محتاہ کے بارے میں اس سلے کہ وہ کھے پاس جاتا ہوں اور ایمان خمیں التے راست باذی کے بارہ میں اس سلے کہ دنیا کا سردار بحرم تحرایا آ بیا ہے۔ تھے تم ہے اور جی بہت ہی ہاتھی کہنا ہے گر ب تم ان کو برد اشت شیر کر گئے ' لیکن ایب وہ چی روح ان آپ کا و تمہاری سادی جائی کی رادو کھائے گا اس کے کہ وہ اپنی المرف سے قدائے کا اور تنہیں ' تحدو کی خبری دے گا اور میرا جان کھاہر کرت کا وہ کیل ہو شاہ سو میں

اب و کیموان قیات مدری و ایس میچ ملید اسلام نیز برے جدو بارس الله طخیر فی فیروی ہوں ہیں۔ مدری و ایس میچ ملید اسلام کے جمل جمل آبات ہائیں مدرا کار کا غذا آبا ہے دو درا صل کسی جم کا زنامہ ہے۔ اصل عربی و جہل مطبوعہ لندن استان المجان اور مجان محاوی الفظ فیر فلیدنا ہے۔ اردو انائیس جس کسی فار فلیدنا گھے۔ استان بعد اس کا بھی ترجمہ کرکے در کار اور کہی دیکل انجی تھی تھی۔ اسل و بانی روی انتقاد کی ایمی دوی انتقاد کی ایمی دوی ترجمہ کرکے در کار اور کہی دیکل انجی تھی۔ اسل و بانی روی انتقاد کی ایمی دوی انتقاد کی ایمی دوی کر اور کی کہ انجیل کرتے ہیں ہوگی ہی دی اور میرجمین کے خلط سلط ترجموں کا فیاری کی دو انتقاد بی اور کی دور انتقاد ہی انتقاد ہی میں ترجم کے دو انتقاد بی دور میری انافین جو گفتہ ہوگی انتقاد ہی میری میں انتقاد ہی دور انتقاد ہی انتقاد ہی دور انتقاد ہی د

ہنئے! مقد می بطر می فرمائے ہیں ۔

" ضرور ہے کہ دو (مسیح منیہ العلام، آنان میں اس دفت تک رہے جب تک وہ سب چزیں بمال نہ کی جائیں جن کاؤٹر شدا نے اپنے پاک توہوں کی زبانی ایا ہے او دنیا کے شروع سے ہوئے آئے ہیں۔ چنانچہ موئی ملیہ السلام نے کہا کہ خداوند خدا آسارے ہوں کیوں بیس ہے تسارے لئے ایک آبی جمعے سے پیدا کرے کا۔ ہو یکھ وہ تسب کے اس کی منمااور ہوں ہوگا ۔ جو تحفی اس ٹی کی نہ نے گادوامت میں سے نبیت و يو. كروما حديث كاله (الحالي ١٣٣٠-١٣١)

۔ کیلیتے یہاں بھی بھریں نے مسیح کے آسان پر جانے کے بعد فرمایا کہ مسیح کے زول ثانی سے بہلے مقروری ہے کہ وہ تی جس کی موٹی علیہ السلیم نے چیش محوتی فرمائی حقی آئے۔ای ہے مندر یہ ذال باتیں اعلوم ہو کس ا

ا مسجع علیہ واسال سے زول علیٰ ہے مسلے اور رفع جسمانی کے بعد ایک تی کا تنا ضرو ری ہے۔

٣ ... دو ني منها رموي او کائين صاحب شريعت العالب جماد العالب اجرت مساحب ازواج وقيريه

م وہ تی بی سرائیل کے بعد کوں جن بی احالیں طب السفام (بعد انش ۱۹۳۹ ۱۹۵۵) ے آئے گا۔

٣٠... جو فخص اي ني كونه بات گاوه خواك جماعت 🚅 خارج كره يا جامح كله

وہ نبی ایل فاران ہے ہو گا(اعثرناء سیسوس)فاران مکد معظمہ کا نام ہے اپیمی وہ ٹی الله على الشارة كالمركز المناع المان المن المراجل المناكزة كالمواد والمساور كباد يكم ہوں کہ ایک سفید کھوڑا ہے اور وس پر ایک سوار ہے جو سچا در برخل ملا تاہے اور وہ رائق كالماتيم الحاف ورطاني كرتاب (١٩١٩)

حیا صادق کا ترزمہ ہے اور برخل اٹن کا نٹنی آئے والے نبی کو لوک عدوق اور ا این سکالقب سے یاد کیا کریں گے۔ اس کے سریر بست سے آئٹ مقصہ اس کی ران اور الوشاك بياب بالمركك تقدياه شازون فايارشاه أقداو زوره كاخداء بدائشتن ورتمي بازع كالريت ا و کلا پینے افوا و تیں ہے کوئی معشرات میسل مایہ السلام آلوئی سٹی جیسے مو سی طایہ السام ا الوقى منذر جيست نوخ عليه المعلام ألوني مناظر جيسه از الذبر عديد السام الوقى فولد جيسه والأو عب اسلام! بغین حصور مؤمیم النبخ ان سب خون ب کے دیک اولین و آخر ہے کو بر المورث وله توريك من أب ولا يُلكُّرُ مِنْ ويت من الموسك

> هسن موسف وم حيني بد بغلا واري أتجيه توبال جمه وارتد تؤاتها واري

اس طريق مكاندهه وب الأي أيلي سات آيتني اب والعيل بس بين أيعال منه أيت كالأراب أنَّ لَهُمَّا بِ الربين _ أيك الدرفرنت أو أمن كَ يَحْ مِن ارتَّ ا کچھا جس کے باس رمین کے رہینے واٹوں کی ہر قوم اور قبیعہ اور الل زبان کے لینے اور امت كے مثالث في الله الله كان كيك المرق فو شخيري (الأنيل) تقي اور وس في برقي اور زين أما أنه غيرا النع لأرواور الرزك أممية أرواكيونك في عدالت أو**وث أب**اليّات وراي أي مبارت آرو جس کے آتان اور زیمن اور سد ریور بیل کے بیٹے پیدا کئے اور سدر یور بیل کے بیٹے پیدا کئے اور ہدینیہ الة <u>كا</u>

غرنسكه جس كي كانه مهارك موجود (ويدا قراعته في كيل فارونسته ااحمداس با لقب مهادق ادر اجن له کور زوبه اس کا قام به النف نه کور زه کیخی فاران (مکه تحریبه) ایس يَى فَهِمَ لِذَكُورِ مَهِ الْعِنْ بِينَ الْأَلِيلِ أَلِي سَهِ وَلِيلِكِ لَذَكُورِ بُولِ مِهِ يُرْجُعِي كُر اس كي كُو ی مالی نہ مالیں اور اس الدی انجیل قرآن جمید ہر ایمان نہ نائیں قوجیر ما یہ نورس نے کہا ووالوك فلوالل عندان بالمان كالشاجائن كسادور آمريني تنام بيته كالزمنة ابيير يهودي عالمون جينه مبدالله الذين مه مرعور العب النماراً في أو رعيباتي عالمون جينه رثيرا رائ ہے" وہرتا ہیں تو قبل " سینط را راا ہے ہا اور متوفقہ _ و انجائش وغیرہم سے صاف جالا آ نہ جمیں کیاب کا انتظار تھا۔ ہزاروں نیسل ایمان انسٹ اور بہت ہے نیسائی بواوس کے ت و صل کرے وک اوق قرشتہ میں اور الکیل مناہ والمعین جوا نام اور المحاص

اور حسب المديدة والأحو فا كالمعدال بيئة كانه الموال برنوال منه مقدي المية المام كادا وافقا أنقى فرمايا وومرون مناتش وأبياقا أن فاقصور بنازاكه برنواس كال الميسرا المنتزاض منا

المنظمة المستحدة المتفاض من المجل بالياب الرابس من من طير المامات المنظمة المامات المنظمة الم

العواب :

چو آلہ اس منتلہ میں انجیل برن میں اور قرآن پاک کا بیان بالک ساف ہے ' اس کے قرآن پاک کی ان آیات کو بھی بھنل ورن کررہ اوں 'کیونکہ اس سے بھتر فیسلہ اور کوئی نہیں : و سکتا۔

وس اصدق من الله فيدلاً ومافندود وماصدود ولكن شده لهد وان الدين المختلفوا فيد نفي شدة بهد وان الدين المختلفوا فيد نفي شدة منه مالهد به من علم الانداع الفلس ومافندود وماصدو علم الانداع الفلس ومافندود في الدين المدين المياء المام كوندا أمول في المام كوندا أمول في كيادر ما صليب وإليا للكدان كواس واقد بين المسباء وكياد وهي تك وهالهذ تك بين بين النهاء وأن أن كواس المياء المام كونيا ورج تقي مام مين به يقد محمل المكل في يورس اور يقي المن بيت الدان كو يركز قل مين المياء الله الله الله تعالى ناف الله الله تعالى ناف الله تعالى ناف الله تعلى ناف الله الله تعالى ناف الله تعلى ناف الله الله تعالى ناف الله تعلى الله تعلى الله الله تعلى ناف الله تعلى الله الله تعلى ناف الله الله تعلى ناف الله تعلى ناف الله الله تعلى ناف الله الله تعلى ناف ت

قرآن پاک نے مود کاس وجوئ کا اکار فرمایا ہے کہ انموں نے سی علیہ انسام

ئو مولى پرچ حاليات اور به هايا هيئ كه اس، هوى پر ان كه پاس كوئى و ليال موقى و لياس كوئى و ليال شيرس سيند وه از و قائب اور از آلمان و انساند كى كار يك واد يوس مين افتاك ريس جي -

وب ہم میسانیوں ہے۔ بھی اس د ٹوئل پر دلین خلب کرتے ہیں کہ کون اس واقعہ الابینی شلد ہے۔ ایک ہمی شمیں۔

آیے ہم ان و کوں نے کواموں کو پر کھویں: افا مقد س کئی ہے کھھا ہے کہ سیج کو صلیب دی منی (۲) مقد س نو کا (۱۳ مقد س مرفس ا ۴۲) مقد س بیوحنا (۱۵ مقد س موادی ہے۔

۔ آپ دو گواہ ہیں لیکن ان میں سے ایک ہمی اس واقعہ میں حاضرت تھا تو یہ کوائل مس بات کی دیس شے۔ کیا آن کی ٹیسائی عدالتیں ایکی گوائل تھول کرلٹی ہیں کو الواہ واقعہ میں موجود نہ ہو اور اس کی گوائل قبول ہوجائے؟

میہ مسلم کاریخی و بقت ہے کہ جب یہود اس اسلام کوئر فار کرنے گئے فررات کارائے تھا مواری سب بھاگ گئے تھا اس پر سب شاگرد اے چھوڈ کر بھاگ گئے۔ اسرائس معددہ انتہا متی بلب ۲۹ درس ۲۵ اس کے طبیہ السلام نے بھی فرایا تھا 'و میکسودہ کوئری آتی ہے بلک آ کچی ہے کہ تم سب پر اُندہ ہو کر اسپتے اسپ کو کی رادادے اور بھی اکمال چھوڑدو کے تر بھی میں اکمال نہیں :وں 'کو کھ بلپ میرے ساتھ ہے۔ ایو شا

پی معلوم ہوا کہ ایک شاگرہ ہی ساتھ نہ رہا تھا۔ یمان سے یہ بھیا معلوم ہوا کہ
یو منانے ۱۳۹۱ء ۲۵ میں ہو ذکر کیا ہے کہ ایک شاگرہ صلیب کے پاس تھا قلط ہے اور فود
مسیح علیہ السام کے فربان اور متی و مرقم کے بیان کے خلاف ہے۔ مرقم نے یہ جال
کیا ہے کہ ''بہ باتی سے شاگرہ جاگہ سے نمر ایک دوئن اسپنے شکھ بون ہے مسمن جارہ
اور ھے ہوئے اس کے چھپے دولیا اسے اوکوں نے پیزا تمروہ جاور چھوڑ کر تھا جھاک
اور ہے ہوئے مرقم سجاے اس کے جھپے دولیا اسے اوکوں نے کی المروہ جادر چھوڑ کر تھا جھاک

اب فَاكِرُهِ لَهُ وَإِلَ مُوجُود مَدَ عَصَدَ بِمُودِي إِنْ كُوفَارَ كُرِينَ كُلُ عَلَيْهِ وَوَ مَسَيْحٌ كُو

نجیائے نہ بھے 'ای گئے قانموں نہ میں والا کو تھیں دوپ رخوت وی کہ ووان کو جائے۔ اور جب وہاں چینچ میں گئے آن سے کہا: "کے کس کو ڈھونڈ نے ہو ؟" انسوں نے کہا: "میں ع ناصری کو "اس نے کہا: "وہ میں ہی جوزے" ووجیجے کر چاسے پھر پوچھا!"کس کو ڈھونڈ تے ہو؟" انسوں نے کہا کہ میں گو۔ اس نے کہا میں نے کہ کہ میں ہوں۔ ایو ننا 400 ہو:

دیکھوا کیک آ رات کا اندھیم افغا دو سرید مکڑنے والے پیچائے نہ تھے۔ اوحر سیج علیہ السلام کی صورت تیہ بل ہو پیکل تھی۔ او کیکھومتی عاد ۲ سرقسی، ۳ کو تا ۲۸،۹۴

اب صاف بات ہے کہ حواری بھاگ کئے تھے کچڑنے والے بھیاساتنا نہ تھے' مات کا اند جرا تھا ' مسیح علیہ السلام کی صورت تبدیلی ہو بیکی تھی اور آسمان سے فرشتہ ان کی عدد کے لئے نازل ہو کیا۔ چہانچہ لکھا ہے کہ:'' آسمان سے آیک فرشتہ اس کود کھائی دیا کہ اے تقریصہ دیا تھا۔'' الوقاع: ۴۳)

متحق طیہ الملام کے لئے فرشنوں کی در کا دیدہ پہلے ہی ہوچکا تھا۔ یہ فرشنہ اس دعدہ کو ہم داکرنے آیا تھا۔ آپ دہ دیدہ بھی من لیں: "دو تیری بابت اپنے فرشنوں کو تھم دے گادر دور تھنے ہاتھوں پر اٹھالیں گے۔ ایسانہ ہو کہ جے پاؤں کو پھرسے تھیں گے۔(دیکھوستی کی افجیل موہ 'لو تا کی انجیل مہرا)

اد حرسیج علیہ السلام نے کمل و صلب سے نیکٹے کی دعا بڑی ، بڑی سے کی متحی (متی ۱۳۹۶۳۳ مرقس ۱۳۵۶۳۳) اور مسیح علیہ السلام کی بیہ و ما خدونے من کی تھی متجول فرہائی تنمی ۱ عبرانیوں باب ۲۰۱۵

خلاصہ یہ کہ او همرده اشنباه بین جٹلاشے او عربیہ مسیح علیہ السلام کی دیا تیول ہو پکی ''تی۔ اللہ تعالیٰ نے آب کی تقویت کے لئے فرشنے نازل قرار پیئے بھے کہ ''مسیح علیہ السلام کو باتھوں پر افعائر نے آئیں اور اس کو پھڑکی تھیں بھی نہ نگے۔ نتیج صاف ہے کہ وہ کوگ مسیح علیہ السلام کو ہرگز ضمیں پکڑھئے۔

مسيع عليه السلام كي الجي شعادت :

بھی سروار ہجنوں اور قر نیسیوں نے اے پگڑنے کو بیاوے جیجے۔ نیون نے کیا۔ ''میں اور تھوڑے والی تک تسارے پاس ہوں۔ بھراسیے چیجے والے کے پاس چلا '' میں اور تھوڑے ویک میں میں تھا ہے ہیں تاریخی سے اور میں اور تھا ہے۔

باؤں گا۔ تم یکے و عود وکے عرف باؤے اور بھال میں ہوں تم شیں آ کئے۔ "(ا کیل یو منا باب سے ورس ۱۹۰۰ء) اس نے بھر این سے کما اسیں جانا ہوں اور تم تھے و عود وکے اور این کناویس مرد کے اجمال میں جانا ہوں تم شیس آ نینے۔ "نیس مود وں نے کمالیادوا مین آب کا ماروالے کا دیو کتا ہے جمال بین جانا ہوں تم تسیس آ کئے۔ اس

نے کما ان ہے کئو' میں لیچ ہے ہو 'میں اوپر کا بیون 'تم دنیا کے جو میں دنیا کا کئیں ا^{و ت}خیل او جا ۱۹۰۸ء معود

اوی کے دونوں تو اول ہے ہیات صاف ہوگئی کہ سیخ ملیہ السلام نے ساف میٹن کوئی فرد دق تھی کہ تم مجھے نہ پکڑ سکوگ۔ انجین یو متناہاب ما درس سہ میں ہے: اوگوں نے اس کو جو اب دیا کہ ہم نے شریعت کی ہے بات سی ہے کہ سیخ ابد تک رہے گا۔ اور زیور اہو ہم میں ہے: "اس نے تھی ہے زندگی جاتی اور تو نے اس کو عمر کی درازی اور تک مجتی۔"

ان دونوں اوالوں سے صاف طاہرہے کہ شریعت ٹیل یہ بات اس قدر مطهور تنی کہ عام اوگ بھی بائے تھے کہ مسیح کی زندگی ابد تیسہ دراز ہوگی۔ تواس سمح مفتول یا مصلوب ہوئے کا موال ہی بدائیس ہو تا۔

بيوع ف اب توجيع الياديوع بياتي كمدكر جلاكياد دان ساسية آب الوجياليادا تجل بوحاء ١٠٠٤

اب سارا خوامہ چروہ کن اللہ کے مسئے علیہ السلام نے بیانگ والی ہے بیش اوکی فرا دی تھی کہ تم جھے نہ پکڑسکو کے اور ان کی دعا قبول ہوگی اعمروراز ال کی ا انہوں نے اپنے آپ کو چمپالیا صورت تبدیل ہوگی اور پھانے تک نہ نے اور پکڑنے کی کوشش کر رہے تھے۔ خدا تعالی فرشتوں کو بھنے رہا تھا کہ اس کی عدد کرو کہاتھوں پر انفاز اس کو پھرکی تھیں نہ لگے۔ اب بات یالکل صاف ہوگئی کہ سمنے علیہ اسلام کو تھ فرشتے ان کے گر فآر کرنے سے پہلے ہی باقعوں پر افحاکر لے مجھے اخدائے ان کی عمرہ داز فرمائی ' میکن دوا نجان بیمودی کمی اور کو لے مجھے اور اسے صلیب دیا۔ چنانچے اعمال میں لکھا ہے ''''ا'' اور میں تکھا ہے اس کا عمدہ دو مراسک لے۔'' اوفال 20-1) اور بوحنا نے اپنی انجیل باپ کا 'بہت ''الا عمل لکھا ہے کہ بلا کمت کے فرزند کے سوا ان میں سے کوئی بلاک نہ دوا۔

ظلامہ یہ ہوا کہ قرآن پاک نے جو فرایا ہما فنلوہ و مناصلہوں یہ باکل درست ہے ' مستح عید السلام توز وہ پکڑ شکے اور ان کو تو پھڑی بھیں ہمی نہ لگ سکی 'چہ جائیکہ سلیب ' اوران کی جگہ بلاکت کافرز بربلاک ہوا۔

نوت :

یں نے جن باتوں سے استدمال کیا ہے وہ ملکوک رواد ت نہیں بگا۔ سیج علیہ السلام کی وسنج چیش کو کیاں جی-

اختباه وشك :

قرآن پاک نے دوسری بات یہ بیان فرائی ہے کہ وہ او کہ اشداہ اور فیک ہی جہا تھے۔ قو ہیں نے بادوالہ یہ بات عرض کردی کہ دو پکڑنے کے لئے گئے دہ مسج علیہ السلام کو پھیا نے نہ تھے ای لئے میموداہ کو رشوت دے کر ساتھ فیا 'جب وہاں پہنچ ہی جمی نہ بھیاں سکے 'اوھر رات کی کارکی تھی' مجر مزیر ہے کہ بقوال انجیل مسج علیہ واسزم ک صورت تبریل ہو چکل تھی۔

أكري اوريوماف بوچاك اشتباده ثك بهت قرائاتم اي كالمخال سيح عليه الملام كا يش كون العظ بور يتاني على المجل ملوم ۱۹۲۹ و يست بن جا محيستان قال فهم يسموح كلكم تشكون في هذه الليلة فاحلب بطرس وان شك فيما لحميع فاتي لا اشك فيك ابدا قال له يسموح الحن اقول للا شد في هذه الليلة قبل اي يصيح ديك ثلاث مرات (المجل مثل باب ۳۵:۳۱-۳۵ أنجيل مرقس باب ۱۴ درس ۲۲

اب دیکھو ہالکل واضح بیش گوئی ہے۔ چنانچہ حواری بھی ای شک میں جتا رہے اور یہوع علیہ السلام کو پکڑنے یا صلیب وفیرہ کے جنتے واقعات انجیل ٹوئیوں نے نش سے جیں وہ شک واشتہاہ کی راہ سے لکھے جیں نہ کہ علم یقین سے۔ اس کئے ان کو دلیل میں چش کرناورست شمیں۔

اب دیکھنے مقدس پہلرس بھی مسیح علیہ السلام کے مصلب ہونے کا قائل شیں ہے۔ پادری قد کور نے میہ حوالہ نقل کرنے کے بعد اس کے دوجواب لکھتے ہیں۔ وہ بھی س لیجنے :

(۱) مرقس ۱۶ میں کھا ہے کہ مسج صلیب پر مرکبا۔ اس کئے بیلزس کی انجیل میں جو کچھے ہے وہ فلط ہے۔

جواب الجواب :

مرقس نہ اس زمانے کا آوی ہی شیس ہے۔ بیلرس حواری ہے اور مرقس کااستاد۔ نو جیب بات ہے کہ استاد غلط کے اور شاگر و ٹھیک ایشیناً پیلرس کا قول درست ہے۔

ریب بوت به سراہ کہ غیر مسیحی مور خوا سے بھی مسیح علیہ السلام کا مصلوب، وناطنزاؤ کرکیا

ہوں ہوا ہے ۔ بواب ہے کہ بیود نے چو تک یہ افواد مشور کردی تھی کہ مسیح علیہ السلام

مسلوب ہوگیا اور صرف اس لئے کی تھی کہ مسیح علیہ السلام کو اعنی اور جمونا علیت

مسلوب ہوگیا اور صرف اس لئے کی تھی کہ مسیح علیہ السلام کو اعنی اور جمونا علیت

کر حکیں تو مخالفین نے طبخ آؤکر کرنائی تھا۔ اگر بیوویوں کی بات ہی باتی ہو قودتو مسیح

کر رفع بسمائی کے قائل شیں چیں اوجارہ زیمہ ہوئے کے قائل نیس چیں اس کا بھی

انگار کردو اور بیودی مورر قریوسیفس عام کی گئیب جس سے مسئلہ الحاقی ہے۔ اس کا

اقرار جیسائیوں کو بھی ہے۔ ویکھو تخریر بائیل رومن سکات ڈاکٹر لارڈنز ایش وار برشن اس کا جارئ کیاں۔

اب ای واقد سے متعلق اناجیل مروجہ کے انتقافات ملاحظہ فرمایتے:

ا.... ایک طرف تو متی ولوقای بد ہے کد مسح علیہ السلام کو فرشح باتھوں پر افعالیں عے چقر کی تغییں بھی نہ گلے گی۔ وو سری طرف ہے کہ مصلوب ہوا۔

 ایک طرف یہ یو حنا ہے میں نے پہلے نقل کردیا ہے کہ می علیہ السلام نے چیش گوئی فرمائی تقی کہ مجھے پکڑنہ تکیں گے اور دو سری طرف یہ آتا ہے کہ می علیہ السلام کو انہوں نے پکڑلیا۔

سے ایک طرف قریہ آتا ہے کہ می علیہ السلام نے اپنے آپ کو چھپالیار او حنا ۱۳ دیسے اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ ا اور (او حنا ۱۸ ۱۲) میں ہے کہ نکل کر سامنے آگئے۔

٤ _ وقت صليب مين اختلاف ہے اور پسرون چڑھا تھا جب انسوں نے اس کو مصلوب کيا (مرقس ٢٥:١٥) يد فق کی تياری کاون تھا اور چھنے گھنٹے کے قريب تھا کہ لے گئے اور جاکر مسلوب کيا۔ (يو حنا10:14-12)

٥ ... صليب كس في الحداقي؟ شمعون قري في (ويكمو متى ٢٤١٧) مرقس ١١١٥٥

ا تجل لوقا ۱۳۴۳ النکن موحنا کی انجیل میں ان تیوں کے خلاف ہے کہ صلیب نور سمیح عنبہ السلام نے اٹھ تی (ویکھوموحنا 1928)

۲ انجیل متی ب کریو دو ڈاکو سیج علیہ اسلام کے ساتی مصلوب اوٹ دورو نول میج کو برا جسا کتے تھے اور طعن کرتے تھے (۲۰۳۰ء کیکن لوٹاکی انجیل میں ہے کہ ایک نے طعن کیا دو سرے نے میج کی صداقت بیان کیا چنانچے اس کو فرودس کی بشارے ل

ے۔۔۔ انگیل متی باب سے جوری انھیٹ ہے کہ پکڑوائے والے پیوداو نے تمیں روپے مردار کابنوں کو والیں دے ویئے اور خود اپنے آپ کو چوٹی دے گی۔ لیکن اقبال کی کناپ میں ہے کہ اس نے ان روپوں ہے ایک کمیت خود تربیدا اور دوسر کے بل کو پڑا اور اس کا جیٹ بہت کمیا اس کی انتزیاں باہر نکل آئیں اور وہ مرکب (اٹھیل ایسا ۱۸۱۰)

۸.... مسیح طید الطام کی صلیب برجو کتب نظامات کی عبارت میں کی دیکئی ہے۔ بو صاحب نامری کانفذاہے اور مری انجیلوں میں شیں ہے۔

۶... کفن میں انتقاف ہے۔ موٹی کپڑے میں دیا امنی کے جابھ کا کتان کے کپڑے میں دیا الوقة استوسان

۱۰ . . زنده ۱۰۰ کریسکے کسے و کھائی ایا؟ حریم گائیتی که احرائی ۱۹۳۱ ۱۹ حرون که یا شدندین کر (و قام ۱۹۳۳ ۱۹۳۱)

ال ... مریم گلافینی نے خود دیکھا(انجیل یو مناه ۱۹۳۷) کیکن او قابیں ہے کہ خود نہ دیکھا' فرشنول سے من کر خبردی (۱۹۳۲-۱۹۰۹) مریم نے شاخود دیکھا' شاکوئی فرشند دیکھا بلک قبر خلک دیکھ کروائیں جل کئی(انجیل موصله ۱۲۰۱۳)

۱۱ ... قبر پر فرشتوں میں اختلاف: وو فرشحة قبر پر ویکھے ایو مناکی انجیل ۱۲:۴۰) وو مخص ویکھے الو تا ۱۲:۱۲ کیک همنس ویکھا دو بھی قبرے اندر: مرقس ۱۲:۱۲ کیک قرشند ویکھا قبر سے باہر بقرر تھا سحی ۱۴:۲۸

المان يند فورتي مليب يدور كنزي تمين النبيل متى ١٠٢٨ ع مرتس ١٥٠١ ا١٠٠

باس خمیں دانجیل مع حنا ا

اس وفت تآریکی بھی تھی تو دورے ان کو کیا انظر آیا ہو گا اور ان کی شادت پر انس بقین کی بنیاد ہوگیا۔

مرقس اور انجیل و مناهی صرف مریم مجدلی کا ذکر ہے کہ دواکیلی قبررِ مُنی ایاب ۱۹:۲۰ در لوقا بہت می حورتوں کا جانا نقل کرتا ہے۔ بسرمیل کیلی شدادت ان ہی حورتوں کی تقبی گان می حورتوں نے رسولواں کے پاس میج علیہ السلام کے زندہ ہوئے کی شدادت دی ممکن رسولوں نے ان کی باتوں کو معمل جانا اور انسوں نے ان کا بھین نہ کیا (دیکھو انجیل کو قام میں اللہ ہے۔

اب فلاہرے کہ حواری تواسی وقت بھاگ گئے تھے جب والوگ بیوع کہ پکڑنے آئے۔ اس کے جعد صلیب سے دور چند عور تیں کھڑی تھیں 'انہوں نے بھلا آر کی بیں کیا دیکھا ہوگا۔ حواری اس وقت بھی ندیتے ' بھر قبریس ریکھنے کے وقت بھی حواری ت تھے 'نہ قبرے اٹھنے کا معاملہ حوار ایوں کی تظروں کے سامنے ہوا' ملکہ یہ سنا کہ وہ قبریل رکھا گیا قبلہ اب شیم ہے تو وہ ویکھنے گئے 'نہ ان کو کسی ایسے نوشنے کی اطلاع تھی کہ منج مردوں سے زندہ ہوگلہ رہی عورتوں کی شمادت 'ان میں سے بھی کسی سے مسج سلیہ السلام کواچی آ تھیوں سے قبر میں رکھتے یا اٹھنے نہ ویکھا۔ مزید پر آن اس قدر اختلافات جو خدکور ہوئے لیکن اس کے بعد بھی اس کو بھٹی واقعہ سمجھاجات تو تھیں کا معنی ان کے ہاں کوئی نیا ہوگا جس سے ونیا بے خبر ہے 'ورنہ ایسے اختلافی بیان پر بھین کیا۔

يولوس اورلوقا:

او قائے نقل کیا ہے کہ لیلرس نے کہا کہ جم سب بینی کیارہ حواری اس کے گواہ میں کہ مسج مصلوب دواادر تیسرے دن تی افحا(اعمال ۱۹۰۹) '(۱۹۱۳)

حلاقلہ بھرس کی اپنی انجیل کا حوالہ میں نے لکھ دیا کہ دو مسیح علیہ السلام کے مسلوب ہونے کا قائل ہی نہیں ہے۔ نیز کسی انجیل سے طابت کرتے کہ بھرس نے یہ واقعہ اپنی آ تھوں سے دیکھا۔ ہرگز نہیں ایہ اوقا کا محض جھوٹ ہے۔ رہایہ کہ مرقس نے مسیح کا حواریوں پر ظاہر ہونا تھھا ہے تو اس کا دوباب اٹھاتی ہے جیسا کہ بادری قائلار سائب نے اپنی مشہور و معروف تباب میزان الحق میں ۱۳۳ پر تکھا ہے۔

پولوس کا بے پناہ جھوٹ :

اب بولوس کی بھی نے جائے اس نے ہو دکھ کرنٹھیوں کو لکھا ہے اس میں لکھتا ہے: اور کیفا کو اور اس کے بعد ان بارہ کو دکھائی دیا۔ اس کے بعد پانچ سوے زیادہ بھائیوں کو ایک ساتھ دکھائی دیا۔ اکثر ان میں ے اب تک زندہ میں اور بعض سو گئے (ا۔ کر ٹھ باب ادر س ۲-2)

پولوس کا جھوٹا اور دعایاز ہونایس حواوں سے البت کرچکا ہوں کاش کہ بولوس کے حامی اس بارے میں کوئی ثبوت مجم پنچاتے اور اس کو سچاکرد کھاتے۔ یہ تو سمج علیہ السلام کے شاکر دہمی نہ تھے۔ خلاصہ ہے کہ قرآن یاک نے جو ہاتیں بیان فرمائی میں دہی حق میں اور بھین کے قابل بین- منج علیه السلام برگز مصلوب شین ویت- ای واقعه مین نافلین سخت اشتباہ اور شک میں مبتلا ہیں۔ ان کے یاس کوئی علم یقین نسیں "محض الکل کے تیم ہیں۔ صحح بات یہ ہے کہ مسیح علیہ السلام کو اللہ تعالیٰ نے سیجے سالم افعالیا۔ مسيح عليه السلام كومصلوب مانے كے تقصانات:

ا... جن اناجیل میں مسے ملیہ السلام کاصلیب پر وفات بانامتقول ہے ان میں ہیہ ہے کہ ميح عليه السلام في مرت وانت به كها: الحي- الحي لهاسيقة الى- (الجيل متى ١٩٠٤-١٣٧) ۲ اس قطے سے کا خدا کے بارہ میں شاکی ہونا مجھ میں آتا ہے۔ پیٹیمر مجھی ا ہے مالوی کن اللمات زبان پر شین لا سکتا۔ جو صلیب پر مرحمیا وہ خدا شین موسكا- لااحب الافلين-

٣ كنى ايك وثيل كوئيال بالكل غلط تكلق بين جن يرعن يسلم لكنه وكامول-س سے بری بات ہے کہ مسیح کو لعنتی مانا بڑا اجیسا کہ گلینوں باب ۳ورس ۱۴ میں

جاراعقبده:

جارا عقیدہ یہ ب کہ حضرت مسیح علیہ السلام حضرت مریم کنواری کے بطن سے بن باب پیدا ہوئے۔ پنگھوڑے سے بی کاام فرائے گئے۔خدا کے داست پاز بندے تصدیق اسرائل کے لئے خدا تعالی نے آپ کو رسول بناکر بھیجا تھا۔ رسبو لا الٰمی بنمی اسر البل- آب في اب إحدايك آف والى تفيم كى خوشخرى وى جن كانام ناى اسم اگرای احمد ہوگا۔ میود نے آپ کو مصلوب کرنا جایا لیکن اللہ تعالی نے آپ کو بالکل باعزت طریقے سے بہود ہے بہود سے بحاكر أسمان پر افعالیا۔ ان كى كوئى مدير كار كرند موئى بلك الناالله تعالى في ان كوشك والحقاف واشتباه من دال ديا- آكده زمانه من ان کانزول ہو گااور نازل ہو کرمیسائیوں کو مجرم تھبرائیں گے مسلیب کو تو ٹریں سے 'خنزیے

کو قتل کریں گئے۔ دین اسلام کوسب وجول پر خالب کردیں مجے اور کن ہوں سے معسوم جیں۔ آب نے بھی اپنی عبلات کا کسی کو عظم نہ ویا۔ ان کے متعنق جو باتیں جی نے انجیل وغیرہ کے حوالہ سے نقش کی جی وہ محض نیسا کیوں کی تقابوں کی حقیقت و کھانے کے لئے کی جیں "ورنہ مسلمان تو ان کو معموم فغیر شلیم کرتے جیں۔ اور حقیقت یہ ہے کہ مسج علیہ السلام کی حقیق شان قرآن نے جی جان کی ہے۔ کی وجہ ہے کہ دہب جسائی مسج علیہ السلام کی شمان دیلی کرتے جی او قرآن سے کرتے جیں۔ چنانچہ ان کے رسانے اسمیح علیہ السلام کی شمان از روئ قرآن "اور الوسلام جی سے علیہ اسمام" و نیرہ اس

فرض النجيل برنوس مين عند كد كاؤكر بدو وبالكل حق بين - النجيل برنواس كا ورب برطن منه ويكر الماليل منه بست مى بلند منه - يكى النجيل الممكوم كوفى او القواور تحريف منه محفوظ منه - المالين ارج مروج من خطرناك تحريف به اور تحريف بوتى رئتى منها - جيساك مكر ديكا عيد كيول كادس النجيل منه الكوفيات كي نشائي به - بيناني كالتمولك باغيل من نساو تكيول باب التيت من مك عاشيه يه تكميا ب " قيامت كاروز د المساكلة بمن النسار هو من من المراس من المناس منه النارة التراس من المدهود المناسة المناسة والمناس المدهود المناسة المناسة والمناسة والمن

(كاتخونك بالتيل في عند ١٣ مهرجايد مطوعا الإسائق آف يعت بإن رديا ١٩٥٨) و المحر دعوامة الزام حمد ليه و سالفلمبس -

محمدا بین صفر را و کا ژو ی ۲۸ د تمبرا ۱۹۶۶

